विज्ञापन ॥

प्रकटहो कि यहवैद्यकविद्याका अपूर्वग्रंथ निघण्टरत्नाकरनामक जो कि प्रथमसंस्कृतमेंथाइसकारण उसकोकेवल संस्कृतहीकेपठनपाठन कर्त्ता पुरुष पढ़सक्केथे और उसके याथतत्थ्य मतलबको समझसक्के थे परन्तु भाषाके पठनपाठनकर्त्तापुरुषों को उसको अवलोकन कर उससे अपना तथा दूसरोंका हितकरना अत्यंतकठिन था इसकारण सर्व्व साधारणके उपकारार्थ यन्त्रालयाध्यक्ष श्रीमान् मुंशी नवल किशोर (सी, आई, ई) ने रोहतक प्रदेशान्तग्गर्त बेरीग्राम निवासि पण्डित रविदत्त वैद्यसे श्लोक २ का पूराउल्था संस्कृतसे देशभाषा में कराय स्वयन्त्रालयमें मुद्रित कराय प्रकाशित किया इसपुस्तक में नाड़ी परीक्षा से लेकर रोगी परीक्षा औषध परीक्षा औषधगुण रोग निदानादि वैद्यकसंबंधी यावत् युक्तियां हैं वे सब बिस्तारसहित कहीगईहैं-हमयह कहसक्तेहैं कि वैद्यकी सीखनेके लियेतो यह पुस्तक अद्वितीयहै ऐसीबात कोईनहीं है जोइसमें न हो केवलइसी पुस्तकके देखनेसे मनुष्य वैद्यकी में कुशल होसक्ताहै आशाहै कि जो पुरुष इसका अवलोकन करेंगे प्रसन्नतासे ग्रहण करेंगे इसके सिवाय इस यन्त्रालयाधिपने अपनेही व्यय और परिश्रमसे और भी बहुतसी वैद्यक व पुराण स्मृति उपनिषद् और चित्र विचित्र काव्य की पुस्तकें उल्था कराकर स्वयंत्रालयमें छपवाई हैं और नवीन २ उल्थाहोकर छपतीजाती हैं वह प्रत्येक महाशयोंके दृष्टिगोचरहोंगी ॥

मैनेजर अवध समाचार
संपादक लखनऊ हज़रतगंज

निघण्टरत्नाकर भाषा के प्रथमखण्ड के प्रकरणों का सूचीपत्र ॥

सं०प्र०	विषय	पृष्ठ	पृष्ठतक	सं०प्र०	विषय	पृष्ठ	पृष्ठतक
१	ज्वरप्रकरण	१	२१३	१९	दाहरोगकर्मविपाक	४४४	४४९
२	अतिसारप्रकरण	२१३	२३९	२०	उन्मादरोगकर्मविपाक	४४९	४५८
३	संग्रहणीकर्मविपाक	२३९	२५८	२१	अपस्मारकर्मविपाक	४५८	४६२
४	अर्शयानी बवासीर प्रकार	२५८	२८४	२२	वातव्याधिप्रकरण	४६२	५२४
५	अजीर्ण कर्मविपाक	२८४	३०६	२३	वातरक्तकर्मविपाक	५२४	५३०
६	कृमिनिदान	३०६	३१२	२४	ऊरुस्तंभनिदान	५३०	५४१
७	अथपांडु कर्मविपाक	३१३	३२४	२५	आमवातकर्मविपाक	५४१	५५१
८	कामलाकर्मविपाक	३२४	३२८	२६	अजीर्णशूलकर्मविपाक	५५१	५७४
९	रक्तपित्तीकर्मविपाक	३२९	३४३	२७	आनाहउदावर्त्तकर्मविपाक	५७४	५८१
१०	क्षयीकर्मविपाक	३४३	३७९	२८	गुल्मरोगकर्मविपाक	५८१	५९०
११	कासीकर्मविपाक	३८०	३९८	२९	हृद्रोगकर्मविपाक	५९०	६०२
१२	हुचकीकर्मविपाक	३९८	४०३	३०	मूत्रकृच्छ्रकर्मविपाक	६०२	६०९
१३	श्वासकर्मविपाक	४०३	४१२	३१	मूत्राघातनिदान	६१०	६१४
१४	स्वरभेदप्रकरण	४१२	४१५	३२	पथरीरोगकर्मविपाक	६१५	६२०
१५	अरुचिकर्मविपाक	४१६	४२३	३३	प्रमेहकर्मविपाक	६२०	६३५
१६	छर्दिकर्मविपाक	४२४	४३०	३४	मेदोनिदानप्रकरण	६३५	६३८
१७	तृषाकर्मविपाक	४३०	४३५	३५	उदरकर्मविपाक	६३८	६७२
१८	मूर्च्छाभ्रमनिद्रासंन्यास	४३६	४४४				

इति निघण्टरत्नाकर भाषा प्रथमखण्ड के प्रकरणोंका सूचीपत्र समाप्त हुआ ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा के प्रथमखण्ड का सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
दूतपरीक्षा	१	छायापुरुषलक्षण	१७	अपरऔषधरेचनपर	७१
दूतलक्षण	〃	चिकित्सालक्षण	१८	रेचनपरअभयादिकमोदक	〃
अयोग्यदूत	〃	वैद्यकर्तव्य	〃	रेचनसमयसाधना	〃
दूतशकुन	२	वर्ज्यपदार्थ	६१	रेचनदेनेपरवेगनहोयतिसकेउ-	
दग्धादिकदिशासंज्ञाशुभाशुभ	〃	प्रथमस्नेहपानक्रिया	〃	पद्रव	〃
दूतकेकहेहुयेअक्षरशुभाशुभ	〃	स्नेहभेद	६२	अथ दुरेचनयत्न	७२
दूतशुभाशुभ	〃	स्नेहपानक्रम	〃	अतिविरेचनउपद्रवयत्न	〃
दूतलक्षण	〃	स्नेहमात्राप्रकार	〃	अतिविरेकमेंउपद्रव	〃
दूतकेकहेअक्षरशुभाशुभ	〃	मात्राप्रमाण	〃	स्पष्टविरेकलक्षण	〃
रोगीके पास जातेहुये वैद्यको		दोषोचितअनोपान	〃	रेचनपरवर्जित	〃
शुभाशुभ	〃	अपररोगोंपरघृत	〃	रेचनपरपथ्य	〃
रोगीकेपासजातेवैद्यशकुन	३	तैलयोग्यरोगी	〃	वस्तिकर्म	〃
वैद्यकोअपशकुन	〃	स्नेहसेवीकोवर्जितपदार्थ	६४	अनुवासनयोग्य	〃
वैद्यगमननिषिद्धकाल	〃	स्वेदनविधि	〃	अनुवासनअयोग्य	७३
वैद्यरोगीविषयकनियम	〃	स्वेदविशेषकर्त्तव्य	〃	पिचकारीनिर्माणविधि	〃
निषिद्धवैद्य	〃	स्वेदअयोग्य	६५	नलीयोग्यअवस्था	〃
वैद्यकर्त्तव्य	〃	अल्पस्वेदनविधि	〃	नलीछिद्रप्रमाणऔरनिर्माणविधि	〃
रोगीकेलक्षण	४	ऊष्माविधि	〃	व्रणादिपिचकारीप्रमाण	〃
परिचारकलक्षण	〃	उपनाहक्रिया	६६	वस्तिगुण	〃
औषधलक्षण	〃	उपनाहमहाशाल्वणक्रिया	〃	वस्तिसेवनकाल	〃
निषिद्धरोगी	〃	द्रवस्वेदविधि	〃	वस्तिकर्ममेंन्यूनाधिकमात्रादोष	७४
रोगीकीपरीक्षा	〃	वमनविधि	६७	वस्तिउत्तममात्रा	〃
स्वप्नाध्याय	५	वमनयोग्य	〃	स्नेहमेंऔरद्रव्यमात्रा	〃
रोगीकीअष्टस्थानपरीक्षा	८	वमनअयोग्य	〃	विरेचनपरवस्तिप्रकार	〃
नाड़ीपरीक्षा	〃	वमनकेपूर्वउपचार	〃	पिचकारीपीड़नप्रकार	〃
मूत्रपरीक्षा	११	वमनयोग्यपदार्थ	〃	वस्तिऔषधगिरानेकायत्न	७५
मलपरीक्षा	१२	वमनमेंऔषधक्वाथकाप्रमाण	〃	निरूहवस्तिविधि	७६
जिह्वापरीक्षा	१३	वमनकरनेकीरीति	६८	निरूहवस्तीविधानं	〃
शब्दपरीक्षा	〃	वमनकोपलक्षण	〃	अच्छीनिरूहलक्षण	७७
स्पर्शपरीक्षा	〃	वमनउत्तमहोनेकालक्षण	६९	अशुद्धवस्तीलक्षण	〃
नेत्रपरीक्षा	〃	वमनपरपथ्य	〃	निरूहस्नेहशुद्धवस्तीलक्षण	〃
मुखपरीक्षा	१४	वमनातिविरेचन	〃	निरूहवस्तीदानप्रमाण	〃
स्वरूपपरीक्षा	〃	वेगकहेंदस्त	७०	दीपनाशकद्रव्य	〃
आयुर्विचार	१५	रेचनमेंक्वाथादिप्रमाण	〃	निरूहणवस्तीप्रमाणविधि	७८
स्वल्पायुःलक्षण	१६	रेचनमेंद्रव्यप्रकार	〃	विशेषविधान	〃

निघंटरत्नाकर भाषाके प्रथमखण्डका सूचीपत्र ॥

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
उत्तरवस्तीविधान	७८	समगंडूषलक्षण	८६	आगंतुकऔरक्तशोथपरलेप	९१
मात्राप्रमाण	〃	लेपविधान	〃	व्रणपकानेपरलेप	〃
स्थापनविधि	〃	दशांगलेप	〃	व्रणफोड़नेपरलेप	〃
स्त्रीकीउत्तरवस्तीविधान	७९	पुनर्लेप	८७	व्रणशोधनलेप	〃
स्त्रियोंकीवस्तीकीमात्राप्रमाण	〃	कांतिकारकलेप	〃	व्रणशोधनरोपणपरलेप	९२
उत्तमवस्तिलक्षण	〃	लेप	〃	कृमिनिवारणलेप	〃
नस्यकर्म	〃	व्यंगरोगपैलेप	〃	व्रणशोधनरोपणपरलेपन	〃
नस्यमेंनिषेध	८०	मुखपरकीझाईंपैलेप	〃	पेटपीड़ापरनाभिलेपन	〃
रेचननासविधि	〃	तारुण्येपिटिकपरलेप	〃	वातविद्रधीपर	〃
रेचनकाप्रमाण	〃	रूखीपरलेप	〃	पित्तविद्रधीपर	〃
नस्यद्रव्यप्रमाण	〃	दारुणरोगपरलेप	〃	कफविद्रधीपर	〃
मस्तकरेचनविधि	〃	केशवर्द्धनलेप	८८	आगंतुकविद्रधीपर	〃
अवपीड़नयाप्रधमनविधान	〃	इन्द्रलुप्तपरलेप	〃	वातगलगण्डपर	〃
रेचनसंज्ञकनस्य	८१	केशकृष्णकरण	〃	कफगलगण्डपर	〃
पुनःप्रकार	〃	बारंगिरानेकालेप	〃	अपचीपर	〃
पुनःतृतीयप्रकार	〃	सफेदकुष्ठपरलेप	८९	गण्डमालाअर्बुदगलगण्डपरलेप	〃
प्रधमननस्य	〃	सेहुआंपरलेप	〃	अपबाहुकपरलेप	〃
बृंहणनस्यविधान	〃	नेत्रलेप	〃	पीलपांयपरलेप	〃
प्रतिमर्षयोग्य	८२	खजुरीपरलेप	〃	अण्डरोगपर	९३
अकालमेंक्षेपपाकपरनास	〃	सुखीखानपरलेप	〃	उपदंशकहेगरमीपरलेप	〃
नस्यविधि	〃	रक्तपित्तपरलेप	〃	अग्निदग्धपरलेप	〃
नस्यसाधारणप्रकार	८३	उदररोगपरलेप	〃	योनिसंकोचलेप	〃
नस्यमेंवर्जित	〃	वातविसर्पपरलेप	〃	पुरुषइन्द्रियकठोरकरनेकालेप	〃
नस्यमेंशुद्धआदिभेद	〃	पित्तविसर्पपरलेप	〃	देहदुर्गन्धनिवारणलेप	〃
अतियोगलक्षण	〃	पित्तवातरक्तपर	९०	वशीकरणलेप	〃
धूमनलिकाविधान	८४	नाकरक्तस्रावपर	〃	मस्तकमेंतेललगानेकीविधि	〃
धूमपानदवर्कविधान	〃	वातजशिरोपीड़ापर	〃	शिरोवस्तीप्रकार	९४
कल्कधूमद्रव्यानि	〃	पित्तसंभवशिरोरोगपरलेप	〃	शिरोवस्तिप्रमाण	〃
बालग्रहनिवारणधूप	८५	कफसंभवशिरोपीरपर	〃	शिरोवस्तीगुण	〃
धूममेंपरिहार	〃	सूर्यावर्त्तआधाशीशीपर	〃	कर्णोपचार	〃
गंडूषकवलप्रतिसारविधि	〃	शंखकअनन्तसर्वशिरोरोगपर	〃	कर्णमेंद्रव्यधारणप्रमाण	〃
उभयोर्द्रव्यप्रमाणम्	〃	पुनःविधान	〃	कर्णव्यथापरऔषध	〃
पुनिप्रमाण	〃	लेपनिषेध	〃	कर्णशूलपरदीपिकतैल	९५
वातरोगमेंस्नेह	〃	रात्रिलेपनिषेधकारण	〃	कर्णनादपरतैल	〃
कवलविधान	८६	रात्रिकेलेपकीविधि	९१	कर्णनादपरअन्यतैल	〃
प्रतिसारणप्रकार	〃	व्रणोपचारसप्तप्रकारलेपक्रम	〃	बधिरत्वपरअपामार्गक्षारतैल	〃
प्रतिसारणचूर्ण	〃	व्रणमेंवातशोथनिवारणलेप	〃	कर्णव्रणपरसम्बूकतैल	〃
गंडूषादिहीनवृद्धभयेसेउपद्रवकेलक्षण	〃	पित्तशोथपरलेप	〃	कर्णस्रावपरऔषध	〃
		कफशोथपरलेप	〃	कर्णकीटपरतैल	९६

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
रुधिरमोक्षप्रयत्न	९६	पिंडीविधान	१००	नेत्रदाहपररसक्रिया	१०५
रुधिरमोक्षणकाल	”	सर्वाधिमंथपर	”	वह्निरोगपररसक्रिया	”
रुधिरगुण	”	विडालविधान	१०१	तिमिररोगपररोपनीरसक्रिया	”
रुधिरदुष्टहोनेकेलक्षण	”	सर्वाक्षिरोगपर	”	अंजनान्तेअनोपान	”
रक्तवर्द्धनेकालक्षण	”	अर्मलेप:	”	नेत्रस्रावपररोपनीरसक्रिया	”
क्षीणरक्तलक्षण	”	प्रतिसारणअंजन	”	पुनःनेत्रस्रावपर	”
वायुकरिदुष्टरक्तलक्षण	”	तर्पणयोग	”	शिरोत्पातपररसक्रिया	”
पित्तकरिदुष्टरक्तलक्षण	”	तर्पणवर्जित	”	धुन्धपररसक्रिया	”
कफकरिदुष्टरक्तलक्षण	”	तर्पणविधान	”	लेखनचूर्णअंजन	१०६
दोवतीनदोषकुपितरुधिरलक्षण	”	तर्पणमात्रा	१०२	रतौंधीपरचूर्ण	”
अतिदुष्टरक्तलक्षण	९७	तर्पणमेंकफाधिकउपाय	”	सर्वनेत्ररोगपरमृदुचूर्णांजन	”
शुद्धरक्तलक्षण	”	तर्पणमेंदिनप्रमाण	”	सर्वाक्षिरोगपरसौवीरअंजन	”
रक्तमोक्षणयोग्य	”	सम्यक्तर्पणलक्षण	”	शीशशलाकाविधान	”
रक्तमोक्षणप्रकार	”	अतितर्पणलक्षण	”	प्रत्यंजनविधि	”
शिराछेदनअयोग्य	”	हीनतर्पणलक्षण	”	सदोषनेत्रपरनिषेध	”
दोषाधिकमेंरक्तनिकारनेविधान	”	नेत्ररूक्षस्निग्धयत्न	”	प्रत्यंजनचूर्ण	”
सिंगीआदिसेरुधिरखिंचनेका		नेत्रपुटपाकरसधारणविधान	”	सर्पविषनिवारणअंजन	१०७
प्रमाण	”	स्नेहादिभेदपुटपाकक्रिया	”	पंचकषायक्वाथ	”
शिरारक्तनदेनेकायत्न	”	लेखनपुटपाकयथोचित	”	चावलधोवनकीक्रिया	१०८
रक्तमोक्षणकाल	”	रोपणपुटपाक	१०३	आसवकल्पना	१०९
रुधिरनथमनेपर	९८	संपक्वदोषमेंअंजन	”	सुराप्रसन्नादिभेद	”
दग्धक्तेरोगयाति	”	अंजनभेद	”	चूर्णअवलेहगुटिकाअथवाकल्क	
रुधिरमोक्षणपरदोषकोप	”	अंजनप्रकटगोली	”	चूर्णअवलेहगुटिका	११०
रुधिरमोक्षणपरपथ्य	”	अंजनअयोग्य	”	घृततैलसाधना	”
सम्यग्रक्तमोक्षणलक्षण	”	शुष्कविरेचनांजनप्रमाण	”	पुनर्विधि	१११
रक्तमोक्षणपरनिषेध	९९	शलाकाप्रमाण	”	ज्वरप्रकारण	११२
नेत्रोपचारप्रकार	”	अंजनसमय	”	वातादिमलकोपकाकारण	११४
सेकभेद	”	चन्द्रोदयावर्ति	१०४	दूसराकाढ़ा	११५
वाताभिष्यन्दपरसेक	”	शुक्रादिपरलेखनवर्ती	”	ओषध्यादिपाचन	११६
पित्तरक्तपरऔरअभिघातपरसेक	”	लेखनीदन्तवर्ती	”	गुडूच्यादिकाढ़ा	”
रक्ताभिष्यन्दपरसेक	”	तन्द्रानिवारणलेखनीवर्ती	”	दर्भमूलादिकाढ़ा	”
नेत्रशूलपर	”	रोपणीकुसुमवर्ती	”	श्रीफलादिकाढ़ा	”
आश्चोतनविधान	”	रतौंधीपरवर्ती	”	दुरालभादिकाढ़ा	”
लेखनादिश्चोतनमेंबिन्दुडार-		नेत्रस्रावपरलेहवर्ती	”	शुंठ्यादिकाढ़ा	”
नेकाप्रमाण	”	रसक्रिया	”	पंचमूलादिकाढ़ा	”
वातादिमेंश्चोतनयोग्य	१००	शुक्रक्रिया	”	कणादिकाढ़ा	”
आश्चोतनमात्राप्रमाण	”	तन्द्रापरलेखनीरसक्रिया	१०५	काकोल्यादिकाढ़ा	”
नेत्रवाताभिष्यन्दपरआश्चोतन	”	पुनरांजन	”	अमृतादिकाढ़ा	”
सर्वाभिष्यन्दपरआश्चोतन	”	सन्निपातपरलेखनरसक्रिया	”	ग्रन्थ्यादिकाढ़ा	११७

विषय	पृ.	विषय	पृ.	विषय	पृ.
शालिपर्ण्यादिकाढ़ा	११७	गुडुच्यादिकाढ़ा	१२०	मरीच्यादिकाढ़ा	१२४
गुडुच्यादिकाढ़ा	,,	किरातादिकाढ़ा	,,	निदिग्धिकादिकाढ़ा	,,
किरातादिकाढ़ा	,,	चन्दनादिकाढ़ा	१२१	भारंग्यादिकाढ़ा	,,
पिपल्यादिकाढ़ा	,,	पर्पटादिकाढ़ा	,,	मातुलिंगादिकाढ़ा	१२५
उशीरादिकाढ़ा	,,	उदुम्बरादिहिम	,,	त्रिफलादिकाढ़ा	,,
मरिचादिकाढ़ा	,,	द्राक्षादिकाढ़ा	,,	पिप्पल्यादिगण	,,
त्रिफलादिचूर्ण	,,	दुरालभादिकाढ़ा	,,	पटोलादिकाढ़ा	,,
पिपल्यादिचूर्ण	,,	द्राक्षादिकाढ़ा	,,	बीजपूरादिकाढ़ा	,,
द्राक्षादिचूर्ण	,,	छिन्नादिकाढ़ा	,,	भूनिम्बादिकाढ़ा	,,
शतावरीस्वरस	,,	द्राक्षादिकाढ़ा	,,	कटुक्यादिकाढ़ा	,,
कल्पतरुरस	,,	सासक्तादिकाढ़ा	,,	त्रिकंटकादिकाढ़ा	,,
भैरवरस	११८	मुद्गादिकाढ़ा	,,	कुष्ठादिकाढ़ा	,,
शीतभंजीरस	,,	ह्रीबेरादिकाढ़ा	,,	त्रिफलादिकाढ़ा	,,
मातुलिंगादिगुटिका	,,	तिक्तादिकाढ़ा	१२२	आमलक्यादिकाढ़ा	,,
द्राक्षादिप्रतिसार	,,	पथ्यादिलेह	,,	तिक्तादिकाढ़ा	,,
हरीतक्यादिगुटिका	,,	आम्रादिकाढ़ा	,,	मुस्तादिकाढ़ा	,,
खर्परभ्रष्टबालुकास्वेदयोग	११९	गुडूच्यादिकाढ़ा	,,	चपलादिकाढ़ा	१२६
निद्रानाशनिदान	,,	पटोलादिकाढ़ा	,,	पिचुमन्दादिकाढ़ा	,,
बिजयाचूर्णयोग	,,	केशरमातुलिंगादियोग	,,	वासादिकाढ़ा	,,
पित्तज्वरलक्षण	,,	रसपर्पट	,,	कंटकार्यादिकाढ़ा	,,
छिन्नादिपाचन	,,	कलिंगादिचूर्ण	१२३	कणादिकाढ़ा	,,
दुस्पर्शादिकाढ़ा	,,	शृंग्यादिलेह	,,	मुस्तादिकाढ़ा	,,
द्राक्षादिकाढ़ा	,,	त्रिफलादिचूर्ण	,,	वातपित्तज्वरलक्षण	,,
पित्तज्वरप्रतीकार	,,	अनानियोग	,,	नीलोत्पलादिहिम	,,
तिक्तादिकाढ़ा	,,	कफज्वरमें चन्दनादिकाढ़ा	,,	निदिग्धिकादिकाढ़ा	,,
पर्पटादिकाढ़ा	,,	शतधौतघृत	,,	विश्वादिकाढ़ा	,,
द्राक्षादिकाढ़ा	,,	औदुम्बरादियोग	,,	नीलोत्पलादिकाढ़ा	,,
पटोलादिकाढ़ा	१२०	द्राक्षादिकल्क	,,	आरग्वधादिकाढ़ा	,,
गुडुच्यादिकाढ़ा	,,	अमृतादिहिम	,,	द्राक्षादिकाढ़ा	,,
ह्रीबेरादिकाढ़ा	,,	कफज्वरनिदान	,,	पंचमूलादिकाढ़ा	,,
भूनिम्बादिकाढ़ा	,,	नीरदादिपाचन	१२४	मुद्गादियूष	,,
कटूफलादिकाढ़ा	,,	पिपल्यादिपाचन	,,	मुद्गादियोग	१२७
पंचभद्रादिकाढ़ा	,,	क्षौद्रादिकाढ़ा	,,	मधुकादिकषाय	,,
कलिंगादिकाढ़ा	,,	पिपल्यादिचूर्ण	,,	पंचभद्रकषाय	,,
शर्करादिकाढ़ा	,,	कटूफलादिलेह	,,	दुरालभादिकषाय	,,
क्षुद्रादिकाढ़ा	,,	निर्गुंड्यादिकाढ़ा	,,	भूनिम्बादिकषाय	,,
लोधादिकाढ़ा	,,	यवान्यादिकाढ़ा	,,	त्रिफलादिकषाय	,,
पर्पटादिकाढ़ा	,,	वासादिकाढ़ा	,,	मधुकादिफांट	,,
बिल्वादिकाढ़ा	,,	निम्बादिकाढ़ा	,,	द्राक्षादिकषाय	,,

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
व्याघ्रादिकषाय	१२७	भार्ङ्ग्यादिकषाय	१३१	हीनपित्तमध्यकफवाताधिकसं	
मुस्तादिकषाय	„	पटोलादिकषाय	„	निपातनिदान	१३७
बलादिकषाय	„	त्रिफलादिकषाय	„	हीनपित्तमध्यवातकफाधिकसं	
वातकफज्वरलक्षण	१२८	वत्सकादिकषाय	„	निपातनिदान	„
पंचकोल	„	अमृतादिकषाय	„	हीनकफमध्यवातपित्ताधिकसं	
निम्बादिकषाय	„	वासास्वरस	„	निपातलक्षण	„
किरातादिकषाय	„	कटुकीचूर्ण	„	हीनकफमध्यपित्तवाताधिकसं	
बृहत्पिपल्यादिकषाय	„	लाजमण्ड	१३२	निपातनिदान	„
सिंहिकादिकषाय	„	वाटमंड	„	वातोल्वणसंनिपातचिकित्सा	„
कटूफलादिकषाय	„	मुस्तादिनिर्यूह	„	मुस्तादिकाढ़ा	„
दशमूलीकषाय	„	निम्बादियूष	„	कटूफलादिकाढ़ा	„
पिपल्यादिकषाय	१२९	भूनिम्बादि	„	पित्तोल्वणसंनिपातचिकित्सा	१३८
दार्व्यादिकषाय	„	चंद्रशेखररस	„	चन्दनादिपर्णी	„
पटोलादिकषाय	„	सन्निपातज्वरलक्षण	„	मुस्तादि	„
क्षुद्रादिकषाय	„	धातुपाकलक्षण	„	किराततिक्तादिकषाय	„
आरग्वधादिकषाय	„	दोषपाकलक्षण	„	शुंठ्यादिकाढ़ा	„
मुस्तादिकषाय	„	साध्यासाध्यलक्षण	१३३	कफोल्वणसंनिपातचिकित्सा	„
भूनिम्बादिकषाय	„	कटूफलादिपान	„	पूर्वोक्तबृहत्यादिगण	„
चातुर्भद्रादिकषाय	„	शिरपाद्यंजन	„	त्र्युल्वणसंनिपातचिकित्सा	„
सूर्यशेखररस	„	बालुकास्वेद	१३४	व्योषादिकाढ़ा	„
कफपित्तज्वरलक्षण	„	सैंधवादिनस्य	„	वातपित्तोल्वणसंनिपातचिकित्सा	१३९
कंटकादिकषाय	१३०	कल्पतरुरस	„	वातकफोल्वणचिकित्सा	„
नागरादिकषाय	„	द्राक्षादिजिह्वालेप	„	पित्तकफोल्वणचिकित्सा	„
शृंगबेरादिकषाय	„	द्राक्षादिकवलग्रह	„	हीनवात मध्यपित्तकफाधिक	
पटोलादियूष	„	कटूफलादिअवलेह	„	आदिलेकहोंसंनिपातोंकीएकत्र	
पटोलादिकषाय	„	कंटकार्यादिपाचन	१३५	चिकित्सा	„
तिक्तादिकषाय	„	मनःशिलादिअंजन	„	द्वात्रिंशांग	„
लोहितचंदनकषाय	„	अतिलंघनलक्षण	„	अष्टादशांगकाढ़ा	„
जीरकादिकषाय	„	सुवर्णादिलेप	१३६	द्वादशांग	„
नागरादिकषाय	„	अन्यसंनिपातनिदान	„	संनिपातावरेचन	„
द्राक्षादिकषाय	„	वातोल्वणसंनिपातलक्षण	„	संज्ञानाशचिकित्सा	१४०
पटोलादिकषाय	„	कफोल्वणसंनिपातनिदान	„	बिल्वादिकाढ़ा	„
यवादिकषाय	„	वातपित्तोल्वणनिदान	१३७	शुंठ्यादिकाढ़ा	„
त्रायंत्यादिकषाय	१३१	पित्तकफोल्वणनिदान	„	अर्कादिकाढ़ा	„
किरमालादिकषाय	„	त्र्युल्वणसंनिपातनिदान	„	तिक्तादिकाढ़ा	„
पटोलादिकषाय	„	हीनवातमध्यपित्तकफाधिक		दार्व्याद्यष्टादशांग	„
गुडूच्यादिकषाय	„	निपातलक्षण	„	गुडूच्यादिकाढ़ा	„
शुंठ्यादिकषाय	„	हीनवात मध्यकफ पित्ताधिक		अमृतादिकाढ़ा	१४१
दर्घातिक्तकषाय	„	निदान	„	विश्वादिकाढ़ा	„

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
त्र्यूषणादिकाढ़ा	१४१	अमृतादिकाढ़ा	१४६	अमृतादिकाढ़ा	१५१
दशमूलादिकाढ़ा	〃	ग्रन्थ्यादिकाढ़ा	〃	रास्नाद्यंजन	〃
आटरुषादिकाढ़ा	〃	पंचमूल्यादिकाढ़ा	〃	कृष्णादिनस्य	〃
कटुफलादिकाढ़ा	〃	रास्नादिकाढ़ा	〃	कुष्ठादिनस्य	〃
किरातादिकाढ़ा	〃	अन्तकसन्निपातनिदान	〃	कंठकुब्जसंनिपातनिदान	〃
पंचतिक्तकाढ़ा	〃	अन्तकरोटिकाबंध	〃	शृंग्यादिकाढ़ा	१५२
दार्व्यादिकाढ़ा	〃	मृतसंजीवनरस	१४७	त्रिकटवादिकषाय	〃
वंध्यादिकाढ़ा	〃	पथ्यादिकाढ़ा	〃	फलत्रिकादिकाढ़ा	〃
लहसुनादिकाढ़ा	१४२	रुग्दाहसन्निपातनिदान	〃	किरातादि	〃
पंचमूलीकषाय	〃	जलधरकाढ़ा	〃	कृष्णादिनस्य	〃
अर्कादिकाढ़ा	〃	अभयादिकाढ़ा	〃	सिद्धवटी	〃
मृतसंजीवनीवटिका	〃	ब्राह्म्यादिकाढ़ा	〃	कर्णकसंनिपातनिदान	〃
त्रिनेत्ररस	〃	उशीरादिकाढ़ा	〃	रास्नादिकषाय	〃
भस्मेश्वररस	〃	धान्यादिकाढ़ा	१४८	मरिचादि	〃
अग्निकुमाररस	〃	अगर्वादिधूप	〃	दशमूलादिकाढ़ा	१५३
पंचवक्त्ररस	१४३	दध्यादिलेप	〃	इंगुद्यादिलेप	〃
उन्मत्तरस	〃	लाजतर्पण	〃	कुलित्थादिलेप	〃
कनकसुन्दररस	〃	पथ्यावलेह	〃	गैरिकलेप	〃
तन्द्रिकसन्निपात	〃	भैरवीगुटी	〃	नागरादिलेप	〃
तन्द्रालक्षण	१४४	चित्तभ्रमसन्निपात	〃	निंबादिलेप	〃
असुरादिअंजन	〃	मध्वादिकाढ़ा	〃	बीजपूरादिलेप	〃
लोहांजन	〃	द्राक्षादिकाढ़ा	१४९	रोहितकादिलेप	〃
सैंधवादिअंजन	〃	ब्राह्म्यादिकाढ़ा	〃	मरिचादिनस्य	१५४
ज्योतिष्मतीनस्य	〃	पथ्यादिकाढ़ा	〃	कांजिरादिलेप	〃
जातिपुष्पनस्य	〃	हरीतक्यादिकाढ़ा	〃	पथ्य	〃
द्राक्षाद्यवलेह	〃	कणाद्यंजन	〃	भुग्ननेत्रसंनिपातनिदान	〃
सन्निपातप्रकोपकारण	〃	कुम्भोद्भवनस्य	〃	दार्व्यादिकाढ़ा	〃
सन्निपातनाम	〃	सन्निपातगजांकुश	〃	श्रेष्ठादिकाढ़ा	〃
बुन्होंकीमर्य्यादा	१४५	प्राणेश्वररस	१५०	यष्ट्यादिकाढ़ा	〃
साध्यासाध्य	〃	मारेश्वररस	〃	मरिचादिनस्य	〃
संधिकसन्निपात	〃	शीतांगसन्निपातनिदान	〃	मार्तण्डभैरवरस	〃
संधिकारिरस	〃	शीतांगचिकित्सा	〃	रक्तष्ठीवीनिदान	१५५
सन्निपातानलरस	〃	अर्कादिकाढ़ा	〃	पर्पटादि	〃
निर्गुंड्यादिधूप	〃	मातुलिंगादिकाढ़ा	〃	जलदादिकाढ़ा	〃
दूसरानिर्गुंड्यादिधूप	〃	श्रीवेष्टादिचूर्ण	〃	रोहिषादिकाढ़ा	〃
देवदार्वादिकाढ़ा	१४६	तन्द्रिकसन्निपातनिदान	१५१	मधुकादिकाढ़ा	〃
मुस्तादिकाढ़ा	〃	तन्द्रिकपरीक्षा	〃	दूर्वादिनस्य	〃
वचादिकाढ़ा	〃	भारंग्यादिकाढ़ा	〃	आम्रादिनस्य	〃
रास्नादिकाढ़ा	〃	दूसराप्रकार	〃	चिकित्सा	〃

विषय	पृ०	विषय	पृ०	विषय	पृ०
सोमपाणीरस	१५६	हारिद्रकसंनिपातनिदान	१६१	दूसराप्रकार	१६४
प्रलापसंनिपातनिदान	〃	धातुपाकलक्षण	〃	क्रोधजज्वरचिकित्सा	〃
मुस्तादिकाढ़ा	〃	मलपाक	〃	विषमज्वरसंप्राप्ति	〃
तगरादिकाढ़ा	〃	सन्निपातकेअसाध्यलक्षण	〃	दूसराप्रकार	१६५
जलधरादिकाढ़ा	〃	आगंतुकज्वर	〃	विषमज्वरनाम	〃
दूसरातगरादिकाढ़ा	〃	चिकित्सा	१६२	विषमज्वरचिकित्सा	〃
मृतोत्थापनरस	१५७	अभिचाराभिघातज्वरनिदान	〃	विषमपथ्य	〃
जिह्वकसंनिपातनिदान	〃	अभिचारज्वरचिकित्सा	〃	दूसराप्रकार	〃
उग्रादिकाढ़ा	〃	सामान्यउपचार	〃	चिकित्सा	〃
क्षुद्रादिकाढ़ा	〃	मार्गश्रमजन्यज्वरचिकित्सा	〃	घृतपान	〃
सिंह्यादिकाढ़ा	〃	दूसराप्रकार	〃	पित्ताधिकविषमचिकित्सा	〃
देवदार्वादिकाढ़ा	〃	भूताभिषंगजज्वरनिदान	〃	कफाधिकविषमचिकित्सा	〃
किरातकवल	〃	दूसराप्रकार	〃	मार्कंड्यादिपाचन	〃
आलूरपर्ण्यादिअवलेह	〃	त्रिकट्वादियोग	〃	महौषधादिपाचन	〃
त्रिपुरभैरवरस	१५८	गंधकादियोग	〃	पाचनवरेचन	〃
अभिन्याससंनिपातनिदान	〃	अष्टमूर्त्तिरस	〃	द्राक्षादिपाचन	१६६
औषधमर्य्यादा	〃	मधुकनस्य	〃	पटोलादिकाढ़ा	〃
दृष्टान्त	〃	व्योषादिनस्य	१६३	यष्ट्यादिकाढ़ा	〃
सामान्यउपचार	〃	सूर्य्यावर्तबंध	〃	मुस्तादिकाढ़ा	〃
रिंगण्यादिकाढ़ा	〃	बिजयाबंध	〃	महाबलादिकाढ़ा	〃
त्रिवृत्तादिकाढ़ा	〃	पुष्यार्कयोग	〃	नागरादिकाढ़ा	〃
त्रायंत्यादिकाढ़ा	〃	मृत्तिकातिलक	〃	पटोलादिकाढ़ा	〃
सुरभ्यादिकाढ़ा	〃	मंत्रविधि	〃	कुलिकादिकाढ़ा	〃
शृंग्यादिकाढ़ा	१५९	मंत्रः	〃	भार्ग्यादिकाढ़ा	〃
तिक्तादिकाढ़ा	〃	अभिशापजचिकित्सा	〃	दूसरा	〃
व्याघ्रादिकाढ़ा	〃	दूसराप्रकार	〃	निशाद्यंजन	〃
भार्ग्यादिकाढ़ा	〃	विषजन्यआगंतुकज्वर	〃	नरकेकेशनस्य	〃
बीजपूरादिकाढ़ा	〃	चिकित्सा	〃	कणादिनस्य	〃
मातुलिंगादिकाढ़ा	〃	सर्वगंध	〃	सैंधवादिअंजन	〃
कार्व्यादिकाढ़ा	〃	कामजज्वरनिदान	〃	लहसुनादिअंजन	१६७
पटोलादि	〃	चिकित्सा	〃	चतुःषष्टिककाढ़ा	〃
जयमंगलरस	१६०	दूसराप्रकार	१६४	निम्बादिचूर्ण	〃
स्वच्छन्दरस	〃	तीसराप्रकार	〃	जीरकादिचूर्ण	〃
मातुलिंगादिरस	〃	चौथाप्रकार	〃	बर्द्धमानपिप्पली	〃
रामठादिनस्य	〃	पांचवांप्रकार	〃	हरीतक्यादिचूर्ण	〃
मरिचादिनस्य	〃	छठवांप्रकार	〃	बन्दाकयोग	〃
लशुनादिअंजन	१६१	सातवांप्रकार	〃	निम्बादिचूर्ण	〃
जात्यादिअंजन	〃	भयजशोकजकोपजज्वरोंकेनि.	〃	भृंगराजचूर्ण	१६८
दंभबड़ाग	〃	भयजचिकित्सा	〃	दीप्यादिचूर्ण	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
पद्मकादिसार	१६८	चौथाप्रकार	१७२	धातुशोषकविषमज्वर	१७६
लघूनादिकल्क	=	आमलक्यादिकाढ़ा	=	विषमभद्रवातबलासकज्वर	=
गुडूचीकल्क	=	ज्वरभेद	=	प्रलेपकज्वरकेलक्षण	=
विषममहाज्वरांकुशरस	=	सन्ततज्वरचिकित्सा	१७३	सामान्यचिकित्सा	=
दूसराप्रकार	=	पटोलादिकाढ़ा	=	शीतनाशकक्रिया	=
मेघनादरस	१६९	द्राक्षादि	=	क्षुद्रादि	=
गोपीड्यादिघृत	=	पटोलादिकाढ़ा	=	शुकाम्बवादिकाढ़ा	१७७
पंचतिक्तघृत	=	ब्रह्मदंडीनस्य	=	घनादि	=
षट्पलघृत	=	सर्पाक्षिबंध	=	भद्रादि	=
क्षीरषट्पलघृत	=	सर्पाक्षीतिलक	=	बिभीतादिदाहपूर्वज्वरपर	=
दूसराप्रकार	=	दान	=	महाबलादिकाढ़ा	=
अमृतादिघृत	=	तर्पण	=	व्याघ्र्यादिकाढ़ा	=
शुंठ्यादिघृत	=	वासादिकाढ़ा	=	देवतापूजन	=
चन्दनादिघृत	१७०	पटोलादि	=	पद्मादितैल	=
कल्याणघृत	=	अंजन	=	माहेश्वरधूप	=
महाकल्याणघृत	=	हिंगुलयोग	=	गोनिहवादिचूर्ण	=
कोलादिघृत	=	तृतीयकप्रकार	=	नीरकादिचूर्ण	१७८
अमृतघृत	=	महौषधादिकाढ़ा	१७४	कायस्थादितैल	=
घृतपान	=	शिरीषादि	=	नयमूलीबंध	=
षट्तक्रतैल	=	उशीरादि	=	भूतभैरवचूर्ण	=
लाक्षादितैल	१७१	शीतभंजीरस	=	पथ्यादिचूर्ण	=
दूसरालाक्षादितैल	=	अपामार्गमूलिकाबंध	=	हरिद्रादिचूर्ण	=
षट्चरणतैल	=	चातुर्थिकज्वरनिदान	=	आरोग्यरस	१७९
अजादिधूप	=	वासादिकाढ़ा	=	शीतांकुश	=
वचादिधूप	=	देवदार्व्यादिकाढ़ा	=	शीतारिरस	=
मसूरधूप	=	स्थिरादिकाढ़ा	१७५	दूसराप्रकार	=
सहदेव्यादिधूप	=	दुःस्पर्शादिकाढ़ा	=	तीसराप्रकार	=
गुग्गुलादिधूप	=	दार्व्यादिकाढ़ा	=	चौथाप्रकार	=
सर्पत्वचादिधूप	=	मुस्तादिकाढ़ा	=	भूतभैरवरस	=
पलंकषादिधूप	१७२	बेलफलचूर्ण	=	दाहपूर्वशीतोपचार	१८०
माहेश्वरधूप	=	वृषदंशपुरीषादियोग	=	अथवा दाहनाश वास्ते शीतोपचार	=
निम्बपत्रादिधूप	=	सिरीषकल्क	=	षट्चक्रतैल	=
मार्जारविष्ठा धूप	=	हिंगुनस्य	=	महाषट्कतैल	=
उलूकपक्षधूप	=	दृष्टान्त	=	अंगारतैल	=
भूतकेशीमूलबंध	=	अगस्तपत्रनस्य	=	रसादिधातुगतलक्षण	=
कनरमूलिकाबंध	=	उलूकपक्षधूप	=	धातुगतज्वरचिकित्सा	=
सन्ततज्वरचिकित्सा	=	सहदेवीमूलबंध	=	रक्तधातुगतज्वरलक्षण	=
दूसराप्रकार	=	कंकजंघादिबंध	१७६	गायत्र्यादिकाढ़ा	१८१
तीसराप्रकार	=	पंचकषाय	=		

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
धराप्यज्ञादिकाढ़ा	१८१	छिन्नादिकाढ़ा	१८६	धातुज्वरांकुश	१९०
यूषादि	〃	त्रिकंटकादिकाढ़ा	〃	कल्याणघृत	〃
रक्तगतचिकित्सा	〃	गडूचीकाढ़ा	〃	लाक्षादितैल	〃
मांसगतज्वरलक्षण	〃	द्राक्षादि	〃	दूसरचन्दनादितैल	〃
मांसगतज्वरचिकित्सा	〃	शुंठिकाढ़ा	〃	हरीतकीपाक	१९१
मेदगतज्वरलक्षण	〃	कणादिकाढ़ा	〃	कौस्कुटघृत	〃
अस्थिगतज्वरलक्षण	〃	तिक्तादि	〃	वासादिघृत	〃
शास्त्रार्थ	〃	कलिंगादिकाढ़ा	〃	पिप्पल्यादिघृत	〃
मज्जागतज्वरलक्षण	〃	द्राक्षादिचूर्ण	〃	क्षीरवृक्षादितैल	१९२
वीर्य्यगतज्वरलक्षण	〃	लवंगादिकाढ़ा	〃	सेवतीपाक	〃
साध्यासाध्य	〃	तालीसादिचूर्ण	१८७	पिप्पलीपाक	〃
प्राकृतवैकृतज्वर	〃	त्रिफलादिचूर्ण	〃	ज्वरमुक्तलक्षण	〃
उत्पत्तिक्रम	१८२	कटूफलादिचूर्ण	〃	साध्यज्वरलक्षण	〃
अन्तर्वेगज्वरकेलक्षण	〃	त्रिवृचूर्ण	〃	असाध्यज्वरलक्षण	〃
बहिर्वेगलक्षण	〃	लवंगादिचूर्ण	〃	गंभीरज्वरलक्षण	१९३
आमाशयगतज्वरलक्षण	〃	पंचाजादि	〃	असाध्यलक्षण	〃
कटुक्यादिकाढ़ा	〃	लोधादिचूर्ण	〃	दूसराप्रकार	〃
सर्व्वेश्वररस	〃	वर्द्धमानपिप्पलीयोग	〃	तीसराप्रकार	〃
त्रिपुरभैरवरस	१८३	पिप्पलीमोदक	१८८	चौथाप्रकार	〃
रत्नगिरि	〃	मधुपिप्पलीयोग	〃	पांचवांप्रकार	〃
नवज्वरेभसिंह	〃	दुग्धयोग	〃	अन्यअसाध्यलक्षण	〃
ज्वरघ्नोवटिका	〃	पंचमूलीक्षीर	〃	दूसराप्रकार	〃
विश्वतापहरणरस	१८४	पितादिपेय	〃	असाध्यज्वरलक्षण	१९४
श्वासकुठाररस	〃	बिल्वादिकाढ़ा	〃	ज्वरमोक्षपूर्वरूप	〃
उदकमंजरीरस	〃	मधुकादि	〃	ज्वरमुक्तलक्षण	〃
ज्वरधूमकेतुरस	〃	अमृतादिहिम	〃	मधुरज्वरलक्षण	〃
वटिका	〃	गुडयोग	〃	सुरसादियोग	〃
दूसरीवटी	〃	वार्त्ताकभक्षणयोग	〃	मुस्तादि	〃
ज्वरांकुश	〃	गडूचीस्वरस	〃	चन्दनादि	〃
नवज्वरेभांकुश	१८५	गुडपिप्पलीयोग	〃	मक्षिकादियोग	〃
अमृतकलानिधि	〃	वातकफज्वरांतर	〃	कृष्णमधुरलक्षण	〃
पंचामृतरस	〃	वर्द्धमानपिप्पली	१८९	सहस्रवेधपाषाणादियोग	१९५
जीर्णज्वरांकुश	〃	नस्य	〃	भूनिम्बादिकाढ़ा	〃
पच्यमानज्वरलक्षण	〃	रक्तकरवीरादिलेप	〃	वासादिकाढ़ा	〃
निरामज्वरलक्षण	〃	हिंग्वादिनस्य	〃	मधुकादिकाढ़ा	〃
ग्रन्थांतरोक्तजीर्णज्वरनिदान	〃	मूलबंध	〃	दुर्जलज्वरीकोपटोलादिकाढ़ा	〃
पुरानेज्वरमेंदोष	〃	वायसजंघाबंध	〃	चिरायतादिचूर्ण	〃
ज्वरक्षीणकोबांतिनिषेध	१८६	मुक्तापंचामृत	〃	हरीतक्यादिचूर्ण	〃
वातजीर्णज्वर	〃	जीर्णज्वरांकुश	〃	शुंठ्यादिकल्क	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
आर्द्रकादिचूर्ण	१९५	मध्यमलाक्षादितैल	२०१	ज्वरोपद्रव	२०९
दुर्लभजेतारस	〃	पट्तकतैल	〃	ज्वरोपद्रवचिकित्सा	〃
ज्ञानोदयरस	〃	सर्वार्तिकाद्यतैल	〃	सिंह्यादिकषाय	〃
हरिद्रकवृत्तयोग	१९६	बलादितैल	〃	द्वात्रिंशांगकाढ़ा	〃
मद्योद्भवज्वर	〃	पटोलादितैल	〃	मद्ध्वादिकाढ़ा	〃
किरातादिकाढ़ा	〃	चन्दनादि	〃	श्वासाधरदाग	〃
तिक्तादिकाढ़ा	〃	पटोलादि	〃	आर्द्रकादिनस्य	〃
अपथ्यजज्वरलक्षण	〃	आरग्वधादिनिरूहवस्ति	〃	शीतांभसादियोग	〃
कटुक्यादि	〃	तैलपाकविधि	२०२	अश्वत्थनार	२१०
आमलक्यादिचूर्ण	〃	चन्दनबलातैल	〃	शुष्कअश्वपुरीषयोग	〃
गुडूच्यादिकाढ़ा	〃	अश्वगंधादितैल	〃	ज्वरकासीकणादि	〃
क्षुद्रादि	〃	बृहल्लाक्षादितैल	२०३	पुष्करादिचटणी	〃
नागरादि	〃	पंचममहालाक्षादितैल	〃	बिभीतकयोग	〃
वेलाज्वर	〃	निरूहवस्तिद्रव्यमान	〃	लवंगादिवटी	〃
मूत्रबंधन	〃	चतुर्थलाक्षादितैल	〃	ज्वरीदाहचिकित्सा	〃
पिप्पलीचूर्ण	१९७	परीक्षा	〃	गडूच्यादि	〃
धान्यादिचूर्ण	〃	महाज्वरांकुश	२०४	दन्तशठादिकाढ़ा	〃
गोरोचनादिचूर्ण	〃	ज्वरघ्नीवटिका	〃	जलादियोग	〃
सितोपलादिचूर्ण	〃	ज्वरमुरारिरस	〃	ज्वरातीसारचिकित्सा	〃
भारंग्यादिचूर्ण	〃	सुवर्णमालतीवसन्त	〃	वत्सादन्यादिकाढ़ा	〃
अनन्तादिचूर्ण	〃	लघुमालतीवसन्त	〃	पाठादि	२११
भेडोक्तसुदर्शनचूर्ण	〃	दार्व्यादिवटिका	〃	ज्वरेमलबद्धताचिकित्सा	〃
सुदर्शनचूर्ण	१९८	हुताशनरस	२०५	पथ्यादिकाढ़ा	〃
लघुसुदर्शनचूर्ण	〃	दूसरालघुमालतीवसन्त	〃	ज्वरीपथ्य	〃
आमलक्यादिचूर्ण	〃	अपूर्वमालतीवसन्त	〃	तरुणज्वरमेंअपथ्य	〃
केसरादि	१९९	लघुविसूकाभरणरस	〃	मध्यमज्वरमेंअपथ्य	〃
विदार्यादि	〃	जलचूडामणिरस	२०६	ज्वरमेंपथ्य	〃
ज्वरघ्नीगुटिका	〃	कनकसुन्दररस	〃	जीर्णज्वरमेंपथ्य	२१२
बलादिघृत	〃	सन्निपातभैरवरस	〃	आगन्तुकज्वरपथ्य	〃
मंजिष्ठाद्यघृत	〃	रसपर्पटी	२०७	विषमावर्	〃
कुलत्थादिघृत	〃	रविसुन्दररस	〃	सर्वज्वरोंमेंअपथ्य	२१३
अमृतादिघृत	२००	कज्जलीगुण	〃	मंत्र	〃
गुडूच्यादिघृत	〃	गदमुरारिरस	२०८	पेय	〃
पंचतिक्तघृत	〃	बालार्करस	〃	ज्वरमुक्तलक्षण	〃
अमृतादि २	〃	ज्वरांकुश	〃	प्रायश्चित्त	〃
महाषट्पलघृत	〃	विश्वतापहरण	〃	दूसराप्रकार	〃
प्रकार २	〃	सन्निपातभैरवरस	〃	प्रायश्चित्त	〃
लघुलाक्षादितैल	〃	त्रिभुवनकीर्त्ति	〃	मंत्रः	〃
लाक्षादितैल	〃	मृतप्राणदायीरस	〃	तीसरेप्रकारकाकर्मविपाक	२१४

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्रायश्चित्त	२१४	लोकनाथरस	२१८	आनन्दभैरवी	२२२
अतीसारनिदान	〃	महारस	२१९	शोकभयातीसारनिदान	२२३
रक्तातीसारकर्मविपाक	〃	द्वितीयमहारस	〃	चिकित्सा	〃
संप्राप्ति	〃	वातातीसारभाजी	〃	पृश्निपर्ण्यादि	〃
अतीसारनिदान	〃	पित्तातीसारनिदान	〃	आमातीसारनिदान	〃
संप्राप्ति	〃	चिकित्सा	〃	चिकित्सा	〃
अतिसारपूर्वरूप	〃	पित्तातीसारपाणिविअन्न	〃	सिद्धांत	〃
अतिसारपूर्वरूपचिकित्सा	〃	मधुकादियोग	〃	धान्यकादि	〃
बिल्वादिपडंगयूप	〃	शुंठ्यादि	〃	अभयारेचन	〃
यवागू	〃	बिल्वादिकाढ़ा	〃	बिडंगादि	〃
वर्जनीय	〃	कटुफलादिकाढ़ा	२२०	क्षुधितावर	२२४
अतिसाराधरलंघन	२१५	मधुयष्ट्यादिकाढ़ा	〃	देवदारुजलपान	〃
दीपन	〃	समंगादिचूर्ण	〃	चित्रकादि	〃
अतिसारप्रक्रिया	〃	अतिविषादियोग	〃	विश्वादियोग	〃
दूसराप्रकार	〃	जंबादिचूर्ण	〃	पथ्यादि	〃
धान्यपंचकपाचन	〃	लोकेश्वररस	〃	एरण्डादिरस	〃
धातक्यादिमोदक	〃	दूसराप्रकार	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃
कुटजाष्टककाढ़ा	〃	कफातीसारनिदान	〃	हरीतक्यादिचूर्ण	〃
वातातीसारनिदान	〃	चिकित्सा	〃	शुंठीपुटपाक	〃
पूतिकादिकाढ़ा	〃	पथ्यादिकाढ़ा	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃
पथ्यादि	〃	क्रमिघ्नादि	〃	तीसराशुंठ्यादिचूर्ण	〃
वचादि	〃	पूतिकादि	२२१	साखसण्डचूर्ण	२२५
सुवर्च्चलादिकाढ़ा	〃	गोकंटकादिकाढ़ा	〃	यवान्यादि	〃
कपित्थाष्टक	२१६	चव्यादिकाढ़ा	〃	कलिंगादि	〃
लाईचूर्ण	〃	कणादिचूर्ण	〃	निकंठादियवकांजी	〃
कुटजचूर्ण	〃	हिंग्वादि	〃	ह्रीवेरादि	〃
शुंठीचूर्ण	〃	दवूलादियोग	〃	चूयूपर्णादि	〃
वृहल्लवंगादि	〃	पथ्यादिचूर्ण	〃	पाठादि	〃
विजयायोग	२१७	भयादिचूर्ण	〃	पद्ममुस्तायोग	〃
कुटजावलेह	〃	शुंठीपुटपाक	〃	आमपक्वातीसारलक्षण	〃
दूसराकुटजाद्यवलेह	〃	त्रिदोषअतीसारनिदान	〃	असाध्यलक्षण	〃
कुटजपुटपाक	〃	कुटजावलेह	〃	उपद्रव	२२६
मृतसंजीवनरस	〃	समंगादि	२२२	लोधादिचूर्ण	〃
अनुपानकहतेहैं	२१८	पंचमूलीबलादिकाढ़ा	〃	पद्मादिचूर्ण	〃
कारुण्यसागर	〃	पंचमूलयोजना	〃	कुटजादि	〃
कुंकुमवटी	〃	कुटजपुटपाक	〃	अम्बष्ठादिगण	〃
कपित्थादिपेय	〃	सूतादिवटी	〃	समंगादिचूर्ण	〃
पंचमूलादिपेया	〃	चतुःसमावटी	〃	कंषटादिचूर्ण	〃
मसूरादिघृत	〃	तृप्तिसागररस	〃	अंकोटकल्क	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मोचरसादिचूर्ण	२२६	पाढ़ादिकाढ़ा	२३०	शाल्मलिचूर्ण	२३३
मुस्तादिचूर्ण	〃	नागरादिकाढ़ा	〃	हिंग्वादिजलयोग	〃
विश्वादिवटी	〃	कलिंगादि	〃	रोहिण्यादिपाचन	〃
वटप्ररोहयोग	२२७	गुडूच्यादि	〃	ह्रीवेरादिकाढ़ा	〃
कुटजावलेह	〃	वत्सकादि	〃	धातक्यादि	〃
रालयोग	〃	उशीरादि	〃	आनन्दभैरव	〃
पाढ़ादियोग	〃	बिल्वादि	〃	आनन्दरस	२३४
जातीफलादि	〃	पंचमूलादि	〃	दाड़िमाष्टक	〃
रक्तातीसारनिदान	〃	अरल्वादि	〃	लघुगंगाधरचूर्ण	〃
यष्ट्यादिकाढ़ा	〃	उत्पलादि	〃	वृद्धगंगाधरचूर्ण	〃
कुटजादि	〃	व्योषादिचूर्ण	〃	अजमोदादिचूर्ण	〃
वत्सकादि	〃	इसबगोलयोग	२३१	वृहद्दाड़िमाष्टक	〃
तंडुलजलयोग	〃	पृश्निपर्ण्यादिपेया	〃	धातक्यादिचूर्ण	〃
डालिंवादि	〃	बिजयायोग	〃	भल्लातादिचूर्ण	〃
चन्दनादियोग	〃	पंचामृतपर्पटीरस	〃	लघुलाइचूर्ण	२३५
ह्रीबेरादि	२२८	दरदादिपुटपाक	〃	यवान्यादिचूर्ण	〃
बिल्वादियोग	〃	दुग्धयोग	〃	वत्सकादिघृत	〃
कलिंगयवषट्क	〃	कट्फलादि	〃	बिल्वतैल	〃
कुटजक्षीर	〃	पित्तकफात्यतीसारनिदान	〃	शंखोदररस	〃
रसांजनादिचूर्ण	〃	मुस्तादि	〃	मूलिकाबंध	२३६
कुटजावलेह	〃	समंगादि	२३२	दाड़िमीवटी	〃
सल्लक्यादिस्वरस	〃	वातकफातीसारनिदान	〃	बब्बूलादिरस	〃
गुड़बिल्वयोग	〃	चित्रकादि	〃	न्यग्रोधादिपुटपाक	〃
शतावरीकल्क	〃	उपचारक्रम	〃	अहिफेनयोग	〃
बलादिकल्क	〃	बिल्वादि	〃	मुक्ताभस्मयोग	〃
नवनीतावलेह	〃	दृष्टान्त	〃	जातिफलादिवटी	〃
शाल्मलिपुष्पयोग	〃	प्रियंग्वादिकाढ़ा	〃	दृष्टान्त	〃
गुदपाक	२२९	आम्रादि	〃	मरिचादिवटी	〃
पटोलादिकाढ़ागुदक्षालनार्थ	〃	मुद्गकषाय	〃	अंकोलकल्क	〃
चांगेरीघृत	〃	पटोलादि	〃	कपित्थकल्क	〃
मूषकमांसस्वेद	〃	जंब्वादिकाढ़ा	〃	आर्द्रकुटजावलेह	〃
गोधूमचूर्णस्वेद	〃	पुरीषातीसारावर	〃	दाड़िमपुटपाक	२३७
गुदांतप्रवेशन	〃	पुरीषक्षयावर	〃	जातिफलादिपुटपाक	〃
घृत	〃	शोफातीसारेदेवदार्व्यादिकाढ़ा	२३३	मोचरसादिपुटपाक	〃
कमलपत्रलक्षण	〃	बिडंगादिकाढ़ा	〃	प्रवाहिकासम्प्राप्ति	〃
ज्वरातीसारचिकित्सा	〃	किरातादि	〃	अतीसारनिवृत्तिलक्षण	〃
पथ्यिक	〃	पाढ़ादि	〃	बालबिल्वयोग	〃
दाड़िमावलेह	〃	शोथघ्न्यादि	〃	मुद्गयूषादि	〃
कथादिकाढ़ा	२३०	भस्मातीसारनिदान	〃	बिल्वादि	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मुस्तावत्सकादियोग	२३७	शुंठ्यादिचूर्ण	२४३	महाकल्याणगुड़	२५०
तैलादियोग	२३८	रास्नादिचूर्ण	"	कूष्मांडगुड़	"
त्र्यूषणादियोग	"	पथ्यादितक्रयोग	"	कल्याणगुड़	२५१
मुस्तादिवटी	"	चतुर्भद्रादिकाढ़ा	"	शुंठ्यादिकाढ़ा	"
पथ्य	"	कठिनमलचिकित्सा	२४४	नागरादिकाढ़ा	"
अपथ्य	"	विडंगादियोग	"	अतिविषादिकाढ़ा	२५२
संग्रहणीकर्मविपाक	२३९	कचूरादिचूर्ण	"	भूनिम्बादिचूर्ण	"
संग्रहणीशान्ति	"	तालीसादिवटी	"	बिल्वादिदुग्ध	"
दंभ	"	कफपित्तसंग्रहणीपर	"	तालीसादिचूर्ण	"
गुदरोगकर्मविपाक	"	मुसल्यादियोग	"	मसूरादियोग	२५३
पापरूपदारुणप्रायश्चित्त	"	वातपित्तसंग्रहणीपरशुंठ्यादि		वृषमूलादिकाढ़ा	"
संग्रहणीनिदान	"	गुटिका	"	कुटजावलेह	"
संग्रहणीलक्षण	"	सन्निपातसंग्रहणीनिदानल०	"	द्राक्षासव	"
संग्रहणीकापूर्वरूप	२४०	आमवातकीसंग्रहणीकालक्षण	२४५	विल्वादिघृत	"
वातकीसंग्रहणीकेउत्पत्तिसमे-		घटीयंत्रसंग्रहणीलक्षण	"	चित्रकघृत	२५४
तलक्षण	"	ज्वालालिंगरस	"	चांगेरीघृत	"
शुंठीघृत	"	ग्रहणीकपाटरस	"	दाड़िमाष्टक	"
पंचमूलघृत	"	वज्रकपाटरस	२४६	लाईचूर्ण	"
संग्रहणीचिकित्सा	"	ग्रहणीकामदवारणसिंह	"	मुस्तादि	"
तक्रसेवन	२४१	पारदादिवटी	"	लवंगादिचूर्ण	"
वातसंग्रहणीचिकित्सा	"	सज्जीक्षारादियोग	"	पाढ़ादिचूर्ण	२५५
शालिपर्ण्यादि	"	बराटादियोग	२४७	तक्रसेवन	"
दृष्टान्त	"	सुवर्णरसपर्पटी	"	चित्रकादितक्रयोग	"
दूसराप्रकार	"	पर्पटी	"	योगान्तर	"
मधुपक्वहरीतकी	"	ग्रहणीगजकेशरीरस	"	शंखवटी	"
यूष	२४२	अग्निसूनुरस	"	जातिफलादितक्र	"
कपित्थादियवागू	"	ग्रहणीकपाटरस	२४८	वार्ताकगुटी	"
पित्तसंग्रहणीनिदान	"	सूतादिगुटी	"	भल्लातकक्षार	२५६
चन्दनादिघृत	"	कणादिलेह	"	चवकादिचूर्ण	"
तिक्तादिकाढ़ा	"	अभ्रकादि	"	रुचकादिचूर्ण	"
श्रीफलादिकल्क	"	सूतराज	"	कपित्थाष्टकचूर्ण	"
नागरादिचूर्ण	"	पूर्णचन्द्ररसेन्द्र	"	लाईचूर्ण	"
यवान्यादिचूर्ण	"	चिंताम्बररस	२४९	जातिफलादि	"
चन्दनादिचूर्ण	"	अगस्तिसूतराज	"	वेलफलादिचूर्ण	२५७
रसांजनादिचूर्ण	२४३	कनकसुन्दररस	"	जातिफलादिचूर्ण	"
भूनिम्बादिपुटपाक	"	क्षारताम्ररस	"	पथ्य	"
आम्रादियोग	"	चित्रकादिगुटी	"	अपथ्य	"
आम्रादिपेया	"	शंबूकयोग	२५०	अथ यानीऽध्वासीरप्रकार	२५८
कफसंग्रहणीनिदान	"	कांकायनगुटी	"	सामान्यार्शनिदान	"

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
बवासीरकापूर्वरूप	२५८	रक्तार्शनिदान	२६३	चन्द्रप्रभावटी	२६९
बवासीररूप	„	वातादियुक्तरक्तार्श लक्षण	२६४	सूरणपुटपाक	„
चिकित्साप्रक्रिया	„	सामान्यचिकित्सा	„	चित्रकादिदधि	„
वातार्शनिदान	२५९	अश्वगंधादिधूप	„	कांचन्यादिविषयोग	„
वातार्श लक्षण	„	अर्कमूलादिधूप	„	वृद्धदारुमोदक	„
अर्कपत्रचार	„	पिपीलिकातेल	„	सूरणवटक	२७०
विडंगादिचूर्ण	„	विषमुष्टिचूर्ण	„	बृहत्सूरणवटक	„
लवणादिमट्ठा	„	नवनीतादियोग	„	कोशातकीघर्षण	„
मरिचादिचूर्ण	„	भल्लातकामृत	„	निशादिलेप	„
सूरणमोदक	२६०	सिद्धरस	२६५	अर्कमूलादिलेप	„
बाहुशालगुड़	„	शिवरस	„	निम्बादिलेप	„
पित्तार्श हेतु	„	अपामार्गबीजादि	„	एरण्डमूलादि	„
पित्तार्श लक्षण	„	लोहामृतरस	„	स्नुह्यादिलेप	„
तिलादिचूर्ण	२६१	बिम्बीपत्रादिलेप	२६६	कृष्णाशिरीषलेप	„
तिलादिकाढ़ा	„	ज्योतिष्कबीजलेप	„	अर्कादिलेप	२७१
भल्लातामृत	„	गुंजाकूष्मांडलेप	„	गुंजासूरणलेप	„
धतूरादिचूर्ण	„	कनकार्णवरस	„	गौरीपाषाणलेप	„
भल्लातकादिमोदक	„	योगराजगुग्गुल	„	न्यग्रोधपत्रलेप	„
बोलबद्धरस	„	कपूरधूप	२६७	कटुतुम्बादिलेप	„
लोहादिमोदक	„	पयसादियूष	„	देवदालीबीजलेप	„
तीक्ष्णमुखरस	„	कालकलांतकवटी	„	चव्यादिघृत	„
कफार्श निदान	„	अपामार्गादिकल्क	„	शुंठीघृत	„
कफकीबवासीरकालक्षण	„	पद्मकेशरयोग	„	लघुचव्यादिघृत	२७२
कफार्श चिकित्सा	२६२	समंगादिदुग्ध	„	ह्रीवेरघृत	„
सामान्यचिकित्सा	„	काढ़ा	„	रोहितारिष्ट	„
अर्श भेदललित	„	द्राक्षादियोग	„	मधुपक्वहरीतकी	„
देवदार्व्यादिलेप	„	त्रिकट्वादियोग	„	गोजिह्वादिकाढ़ा	„
कांचनोलेप	„	विड्बंध	„	कल्याणलवण	„
सूरणादिलेप	„	रक्तस्राव	२६८	तक्रादियोग	२७३
कटुतुम्बीलेप	„	सत्तूपिण्डीबंधन	„	अरलुत्वक्	„
पीलुवर्त्ती तेल	„	नाशार्शचिकित्सा	„	शर्करासव	„
दंत्यासव	„	रजनीचूर्ण	„	द्राक्षासव	„
पथ्यादिगुड़	२६३	सामखील	„	सन्निपातार्शधूप	२७४
भल्लातकहरीतकी	„	दुग्धिकादिघृत	„	हपुषादितक्रारिष्ट	„
लांगल्यादिमोदक	„	व्योषादिमोदक	„	भर्जितहरीतकीयोग	„
पथ्यादिमोदक	„	गुड़चतुष्क	„	पाहाड़मूलयोग	„
यवान्यादिमोदक	„	कार्पासमज्जागुटी	„	सन्निपातिकग्रहणलक्षण	„
भल्लतकादिलेप	„	त्रिफलादिगुटिका	„	अजीर्णहरमहोदधिवटी	„
शृंगवेरकाथ	„	गुग्गुलादिवटी	२६९	क्षुधासागरवटी	२७५

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
अग्नितुण्डबटी	२७५	उपद्रवोंसे असाध्यलक्षण	२८२	हरीतक्यादियोग	२८८
अनोपान	„	चर्मकीलसंप्राप्ति	२८३	आमाजीर्णादिपरगुड़ादि	२८९
बुद्धोधकरस	„	वातादिभेदलक्षण	„	गुड़ाष्टक	„
भस्मबटी	„	दोषकोपसे अर्श रोग	„	पथ्यादिचूर्ण	„
शंखबटी	„	असाध्यलक्षण	„	बृहच्छंखबटी	„
अग्निकुमाररस	२७६	बवासीरपथ्य	„	लघुक्रव्यादिरस	„
बृहत्क्रव्यादिरस	२७७	अपथ्य	२८४	विदग्धाजीर्णलक्षण	२९०
क्रव्यादिरस	„	अजीर्णकर्मविपाक	„	विदग्धाजीर्णनिदान	„
बड़वानलचूर्ण	„	प्रायश्चित्त	„	निद्रानियम	„
अग्निदीपनीवटी	„	पाराशर	„	दिवानिद्रा	„
अग्निकुमार	„	प्रायश्चित्त	„	विष्टब्धाजीर्णलक्षण	„
लघुपानीयभक्तबटी	२७८	कर्मपाकसंग्रह	„	शास्त्रार्थ	„
राजबल्लभरस	„	प्रायश्चित्त	„	रसशेषाजीर्णलक्षण	„
लब्धानन्दनरस	„	अजीर्णउत्पत्ति	२८५	अजीर्णकारण	„
महोदधिबटी	„	विषूच्यादिनिदान	„	अजीर्णकासामान्यलक्षण	„
सूरणचूर्ण	„	चारोंअग्नियोंकेकार्य	„	अजीर्णकेउपद्रव	„
वैक्रांताख्यरस	„	हिंग्वष्टक	„	भास्करलवणचूर्ण	२९१
पर्प्पट्यादियोजना	२७९	विडंगादिचूर्ण	„	अग्निमुखचूर्ण	„
कुटजावलेह	„	जीरकादिचूर्ण	„	वृद्धाग्निचूर्ण	„
कूष्मांडावलेह	„	बड़वानलचूर्ण	„	यावशूकादिचूर्ण	२९२
भल्लातकावलेह	„	वह्निनामकरस	„	लघुचित्रकादिचूर्ण	„
स्नुहीक्षीरलेप	२८०	कर्मविपाक	२८६	शुंठ्यादिचूर्ण	„
कोकस्वादिचूर्ण	„	प्रायश्चित्त	„	कृष्णादिचूर्ण	„
समशर्करयोग	„	भस्मकनिदान	„	कपित्थादियोग	„
व्योषादिचूर्ण	„	भस्मकलक्षण	„	ज्वालामुखचूर्ण	„
करंजादिचूर्ण	„	चिकित्साक्रम	„	व्योषादिचूर्ण	„
विजयाचूर्ण	„	भस्मकचिकित्सा	„	शुंठ्यादिचूर्ण	२९३
देवदाल्यादियोग	„	वमन	२८७	विश्वादिचूर्ण	„
मरीचादिमोदक	२८१	विरेचन	„	चित्रकादिचूर्ण	„
प्राणदमोदक	„	कोलास्थियोग	„	लवणादिचूर्ण	„
कांकायनीगुटी	„	विदारीकल्क	„	बड़वानलचूर्ण	„
सूरणमोदक	„	अपामार्गादियोग	„	पंचाग्निचूर्ण	„
लघुसूरणमोदक	„	अजीर्णकेभेद	„	विश्वभेषजचूर्ण	„
अर्श कुठार	„	अजीर्णनिदान	„	संजीवनीगुटी	„
अभ्रकहरीतकी	„	आमाजीर्णलक्षण	२८८	धनंजयबटी	२९४
मंत्र	२८२	वचादिवमन	„	शंखबटी	„
सूरणपुटपाक	„	लवंगादिकाढ़ा	„	लवंगामृतबटी	„
कासीसादितैल	„	वैश्वानरक्षार	„	व्योषादिगुटी	„
साध्यलक्षण		सामुद्रादिचूर्ण	„	हरीतक्यादिबटी	२९५

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
चित्रकगुड़	२९५	चुक्रतैल	३०२	निम्बादिकाढ़ा	३०८
द्राक्षादियोग	″	अर्कादितैल	″	विडंगादिकाढ़ा	३०९
यवागू	″	तक्र	″	मुस्तादिकाढ़ा	″
क्रव्यादिकल्क	″	पानी	″	खदिरादिकाढ़ा	″
क्षारयोग	२९६	विलम्बिका व अलसिका चि		रस	″
अग्निमुखरस	″	कित्सा	″	पारदादियोग	″
अजीर्णारिरस	″	हस्तिकर्णयोग	″	कृमिकुठार	″
पाशुपतरस	″	निंबुरसयोग	″	कृमिमुद्गररस	″
आदित्यरस	२९७	करंजादिकषाय	३०३	विडंगादिचूर्ण	″
हुताशनरस	″	उत्क्लेशलक्षण	″	यवानीचूर्ण	″
अजीर्णकंटकरस	″	कटुत्रयरस	″	निम्बादिचूर्ण	″
रामबाणरस	″	व्योषादिअंजन	″	त्रिफलादिचूर्ण	३१०
दूसराप्रकार	२९८	अपामार्गाद्यंजन	″	विडंगादिचूर्ण	″
ज्वालानलरस	″	बिल्वादिअंजन	″	सारनालयोग	″
चिन्तामणिरस	″	मन्दाग्नि	″	भल्लातकयोग	″
पंचमूलादिघृत	″	अपथ्यम्	३०४	विडंगादियोग	″
दशमूलादिघृत	२९९	नित्यादिरस	″	पलाशबीजयोग	″
धान्यादिघृत	″	दूसराप्रकार	″	खुरासानीअजवायनयोग	″
अग्निघृत	″	अथ कुठाररस	″	निर्गुण्ड्यादियोग	″
शार्दूलकांजिक	″	षडाननरस	″	पिप्पल्यादिचूर्ण	″
विशूचिकादिसम्प्राप्तिनिदान	३००	पीयूषरस	″	पारसीयवान्यादिचूर्ण	३११
आलसकनिरुक्ति	″	चक्रवर्त्यरस	३०५	कृमिघ्नादिचूर्ण	″
आलसकवद्दंडालसकलक्षण	″	पर्पटीरस	″	निम्बादिचूर्ण	″
विलम्बिकालक्षण	″	भल्लातकलेह	″	तैल	″
जीर्णआहारलक्षण	″	कृमिनिदान	३०६	कपिलाचूर्ण	″
विशूचिकाचिकित्सा	″	बाह्यकृमिनिदान	″	निम्बादिरस	″
लशुनादिचूर्ण	३०१	कृमिकाकारण	″	हरीतकीचूर्ण	″
अपामार्गादियोग	″	पुरीषकफरक्तजकृमिकारण	″	संजीवनीवटक	″
विलम्बिकावअलसकचिकित्सा	″	पेटमेंकृमिवालेकेलक्षण	३०७	अष्टसुगंधधूप	″
वालमूत्रादिकाढ़ा	″	कफकृमिजलक्षण	″	कंकुमादिधूप	३१२
तक्रयोग	″	रक्तजकृमिलक्षण	″	कृमिरोगमेंपथ्य	″
बिल्वादिकाढ़ा	″	पुरीषजकृमिलक्षण	″	अपथ्य	″
यवपिष्टलेप	″	कृमिचिकित्सा	″	विशालादिधूप	″
कुष्ठादिलेप	″	कृमिलेप	३०८	पांडुकर्मविपाक	३१३
साधारणलेप	″	यवागू	″	प्रायश्चित्त	″
लवंगादिचूर्ण	″	त्रिवृत्तादिकल्क	″	पांडुरोगनिदान	″
पथ्यादिचूर्ण	″	विडंगादितैल	″	निदानपूर्वकसंप्राप्ति	″
शंखद्राव	″	धतूरपत्रतैल	″	पूर्वरूप	″
दालचीनीतैल	३०२	दाडिमादिकाढ़ा	″	पांडुरोगचिकित्सा	″

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
वातपांडुनिदान	३१३	त्रैलोक्यनाथरस	३२१	असाध्यलक्षण	३२[illegible]
मंडूरादरिष्ट	”	उदयभास्कररस	”	कुंभकामलाकाअसाध्यलक्षण	३२७
पित्तकापांडुलक्षण	३१४	कामेश्वररस	”	शिलाजीतयोग	”
दुग्धयोग	”	कालविध्वंसकरस	३२२	मंडूर	”
कफपांडुलक्षण	”	पांडुवरीरस	”	नस्यादियोग	”
दशमूलादिकाढ़ा	”	पांडुसूदन	”	हलीमकनिदान	”
नार्यादियोग	”	बंगेश्वर	”	पानकी लक्षण	”
लोहभस्मयोग	”	पांडुनिग्रहरस	”	हलीमकपरिभाषा	”
मधुमंडूर	”	अनिलरस	”	अथवाअयोभस्मयोग	”
मंडूरवटक	३१५	लोहसुन्दर	३२३	सितादिलेह	”
मंडूरलवण	”	चन्दनादितैल	”	अमृतादिघृत	”
सन्निपातपांडुलक्षण	”	मृत्तिकाभक्षणजपांडुनिदान	”	गुडूचीस्वरस	”
सन्निपातपांडुनिदान	”	केशरादि	३२४	पांडुकामलाकुंभकामलाहली	”
असाध्यलक्षण	”	कामलाकर्मविपाक	”	मकर्मपथ्य	३२८
त्रिफलादिलेह	३१६	प्रायश्चित्त	”	अथअपथ्य	”
फलत्रिकादिकाढ़ा	”	औरप्रतिमादान	”	कामलारोगमेंदंभ	”
पुनर्नवादिकाढ़ा	”	कामलानिदान	”	रक्तपित्तकिर्मविपाक	३२९
वासादिकाढ़ा	”	लक्षण	”	प्रायश्चित्त	”
दार्व्यादि	”	कामलाचिकित्साक्रम	”	ज्योतिश्शास्त्राभिप्राय	”
किरातादिमंडूर	”	कुमारीकन्दनस्य	३२५	उपाय	”
अयादिमोदक	३१७	काढ़ा	”	रक्तपित्तनिदान	”
पांडुवरीरस	”	पुनर्नवादिकाढ़ा	”	रक्तपित्तकापूर्वरूप	”
पुनर्नवादिबटक	”	त्रिफलादि	”	असाध्यलक्षण	”
लोहासव	”	गोदूधपान	”	वातिकरक्तपित्तनिदान	”
गोमूत्रलोह	३१८	हरीतक्यादिअंजन	”	भोजन	”
गोमूत्रसिद्धमंडूर	”	खरंजिट्स्वरस	”	रक्तपित्तशास्त्रार्थ	”
नवायसादिचूर्ण	”	गुडूचीकल्क	”	कामदेवघृत	३३०
लोहादिचूर्ण	”	धात्र्यादिचूर्ण	”	दूर्वादिघृत	३३१
शिलाजीतादियोग	”	अयोरजादिचूर्ण	”	शतावर्यादिपेय	”
मंडूरवज्रवटक	३१९	व्योषादिचूर्ण	”	पित्तकारक्तपित्तकानिदान	”
हंसमंडूर	”	अयोरजादियोग	३२६	त्रिफलादि	”
सिद्धमंडूर	”	लोहादिचूर्ण	”	अगस्त्यादिकाढ़ा	”
अमृतहरीतकी	”	एलादिचूर्ण	”	बासादिलेह	”
पंचकोलघृत	३२०	हरिद्राचूर्ण	”	कूष्माण्डावलेह	”
साधारणयोग	”	दार्व्यादिचूर्ण	”	कफयुक्तरक्तपित्तनिदान	३३२
देवदालीयोग	”	एरण्डस्वरस	”	अभयाभक्षण	”
गोमूत्रहरीतकीयोग	”	पथ्य	”	आज्यपान	”
भूनिंबादिबटी	”	कटुकीयोग	”	ह्रीवेरादि	”
मदेभसिंहरस	”	कुंभकामलानिदान	”	मृद्विकादिगुटी	”

विषय	पृ.	विषय	पृ.	विषय	पृ.
पारावतादियूष	३३२	नस्य	३३८	यक्ष्मभक्षण	३४६
घृतौषधयोग	=	आर्द्रकादिनस्य	=	च्यवनप्राशावलेह	=
द्वन्द्वजसन्निपातरक्तपित्तलक्षण	=	हरीतक्यादिनस्य	=	तालीसादिचूर्ण	३४७
असाध्यरक्तपित्तकालक्षण	=	कूष्माण्डावलेह	=	लवंगादिचूर्ण	=
रक्तपित्तकेउपद्रव	३३३	वासाखण्ड	३३९	यवादिचूर्ण	३४८
असाध्यलक्षण	=	उशीरासव	=	कर्पूरादिचूर्ण	=
वृषादिस्वरस	=	वमन	=	त्रिकट्वादिचूर्ण	=
मातुलिंग्यादिपेय	=	आरग्वधादिरेचन	=	शंखपोटलीरस	=
उदुम्बरादियोग	=	खदिरादिलेह	३४०	शिलाजतयोग	=
अश्वत्थपत्रयोग	=	उदुम्बरादिलेह	=	पिप्पल्यासव	=
चित्रकचूर्णयोग	=	खण्डकाद्यवलेह	=	द्राक्षाद्यवलेह	३४९
गन्धकादिप्राशन	=	रक्तपित्तकुठाररस	३४१	रास्नादिचूर्ण	=
दुग्धादियोग	=	वासामृत	=	अगस्त्यहरीतकी	=
वासास्वरस	३३४	बोलपर्पटीरस	=	आटरूषादिक्वाथ	=
लाक्षादियोग	=	सुधानिधिरस	=	[illegible]	=
मध्वादिपेय	=	आटरूषार्क	=	अश्वगंधादिचूर्ण	=
मधुकादिकल्क	=	शतावरीघृत	३४२	ककुभादिचूर्ण	३५०
ह्रीबेरादिकाढ़ा	=	दूर्वादितैल	=	तालीसादिचूर्ण	=
पद्मोत्पलादिकाढ़ा	=	रक्तपित्तमेंपथ्य	=	नवनीतयोग	=
दूर्वादिकाढ़ा	=	अपथ्य	=	सितोपलादिचूर्ण	=
चन्दनादिकाढ़ा	=	वर्मीकर्मविपाक	३४३	नागबलादिचूर्ण	=
उशीरादिकाढ़ा	=	प्रायश्चित्त	=	वासायोग	=
अमृतादिकाढ़ा	३३५	ब्रह्मचर्यादियोग	=	द्राक्षादिचूर्ण	=
ह्रीबेरादिकाढ़ा	=	प्रायश्चित्त	=	स्वर्णमाक्षिकादिचूर्ण	=
मुद्गादिकाढ़ा	=	ज्योतिषशास्त्राभिप्राय	३४४	शिलाजीतादिचूर्ण	=
यष्ट्यादिकाढ़ा	=	शास्त्रार्थ	=	लाक्षाकूष्माण्डरस	=
पलाशकाढ़ा	=	गीतादिउपाय	=	माषादिचूर्ण	=
आटरूषादिकाढ़ा	=	राजयक्ष्मनिदान	=	बलादिचूर्ण	३५१
वासादिकाढ़ा	=	पूर्वरूप	=	जातीफलादिचूर्ण	=
उशीरादिचूर्ण	=	राजयक्ष्माकालक्षण	३४५	शिवगुटी	=
मृद्विकादिचूर्ण	=	वायुकेराजरोगकालक्षण	=	चतुर्भुजगुटी	३५२
चन्दनादिचूर्ण	=	पित्तकेराजरोगकालक्षण	=	मुसल्यादिमोदक	३५३
पत्रकादिचूर्ण	३३६	कफकेराजरोगकालक्षण	=	इक्ष्वादिमोदक	३५४
कर्पूरादिचूर्ण	=	पुनःअसाध्यलक्षण	=	द्राक्षासव	=
वासागुडपाक	=	साध्यलक्षण	=	खर्जूरासव	=
एलादिगुटी	=	असाध्यलक्षण	=	दशमूलासव	३५५
हरीतक्यादिनस्य	=	क्षयहारकपदार्थ	=	कुमारीपाक	=
मस्तकलेप	=	षडंगयूष	३४६	धात्रीपाक	३५६
कल्कघृत	३३७	ज्वरदाहक्रिया	=	सेवंतीपाक	=

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
महाकनकसुन्दररस	३५७	जीवंत्यादिघृत	३७१	दशमूलादिकाढ़ा	३७७
क्षयकेशरीरस	〃	बलादिघृत	〃	एलादिगुटिका	〃
शंखेश्वररस	〃	कोलादिघृत	〃	बलादिकाढ़ा	〃
हररुद्ररस	〃	कणादिघृत	३७२	द्राक्षादिघृत	〃
नीलकंठरस	३५८	जलादिघृत	〃	बालादिघृत	〃
शंखगर्भपोटलीरस	〃	वासादिघृत	〃	पथ्यादिघृत	〃
हेमगर्भरस	〃	खर्जूरादिघृत	〃	गोक्षुरादिघृत	〃
नागेश्वररस	〃	दूसराप्रकार	〃	अमृतप्राशावलेह	३७८
कालान्तकरस	〃	पिप्पल्यादिघृत	〃	रसराज	〃
चन्द्रायतनरस	३५९	पाराशरादिघृत	〃	क्षयीरोगमेंपथ्य	〃
प्राणनाथरस	〃	दशमूलादिघृत	३७३	अपथ्य	३७९
सुवर्णपर्पटीरस	〃	चन्दनादितैल	〃	काशीकर्मविपाक	३८०
प्राणदापर्पटी	३६०	लक्ष्मीविलासतैल	〃	प्रायश्चित्त	〃
कुमुदेश्वररस	〃	शोकशोषोकेलक्षण	३७४	दूसराप्रकार	〃
पंचामृताख्यरस	〃	चिकित्सा	〃	प्रायश्चित्त	〃
स्वयमग्निरस	〃	वृद्धाणशोषलक्षण	〃	तीसराप्रकार	〃
दूसराप्रकार	३६१	मार्गशोषोकालक्षण	〃	प्रायश्चित्त	〃
लोकेश्वररस	३६२	चिकित्सा	〃	ज्योतिःशास्त्राभिप्राय	〃
नवरत्नराजमृगांक	〃	क्षतशोषलक्षण	〃	कारणसंप्राप्ति	〃
मृगांकरस	〃	चिकित्सा	〃	संख्यारूपसंप्राप्ति	〃
कनकसिंदूर	३६३	व्रणशोषलक्षण	〃	पूर्वरूप	〃
हेमाभ्रकरससिंदूर	〃	चिकित्सा	〃	वायुकेकासकालक्षण	〃
सुवर्णभूपति	〃	रसवर्द्धन	〃	चिकित्सा	〃
लक्ष्मीविलासरस	३६४	रक्तवर्द्धन	〃	रुद्रपर्पटी	〃
शिलाजत्वादियोग	〃	मांसवर्द्धन	〃	भूतांकुश	३८१
पंचामृतरस	〃	मेदवर्द्धन	३७५	सठनादिलेह	〃
अमृतेश्वररस	〃	दूसराप्रकार	〃	भार्ग्यादिलेह	〃
चिन्तामणिरस	〃	हाड़वर्द्धन	〃	विश्वादिलेह	〃
त्रैलोक्यचिन्तामणि	३६५	शुक्रवृद्धि	〃	दशमूलीघृत	〃
वसन्तकुसुमाकर	〃	दूसराप्रकार	〃	कट्फलादिपेय	〃
लोकेश्वरपोटली	३६६	रक्तछर्दिपर	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃
लोहरसायन	〃	उशीरादिचूर्ण	〃	चित्रादिलेह	〃
रत्नगर्भपोटली	३६७	दूसरा	〃	शृंग्यादिलेह	३८२
हेमगर्भपोटली	〃	दाहपर	〃	दशमूलादिकाढ़ा	〃
दूसराप्रकार	३६८	शोषपर	〃	पंचमूलकाढ़ा	〃
लोकनाथरस	〃	उरःक्षतक्षयनिदान	३७६	कर्कटकरस	〃
लघुलोकनाथरस	३७०	उरःक्षतकापूर्वरूप	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃
मृगांकपोटलीरस	〃	असाध्यरूपलक्षण	〃	पित्तकेकासकालक्षण	〃
गोक्षुरादिघृत	३७१	चिकित्सा	〃	सिंहास्यादिकाढ़ा	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
बलादिकाढ़ा	३८२	ककुभलेह	३८७	पिप्पल्यादिगुटी	३९१
सांठ्यादिकाढ़ा	〃	पिप्पल्यादिघृत	〃	अर्कमूलादिधूम	〃
थरादिकाढ़ा	〃	पिप्पल्यादिलेह	〃	मनःशिलादिधूम	३९२
त्वक्क्षीरलेह	〃	स्वयमग्निरस	〃	दूसराप्रकार	〃
कंटकार्यादिकाढ़ा	〃	संनिपातकास	〃	धत्तूरादिधूम	〃
पिप्पल्यादिचूर्ण	〃	अमृतादिकाढ़ा	〃	जातिपत्रादिधूम	〃
मधुकादिचूर्ण	〃	भार्ग्यादिकाढ़ा	〃	जातिफलादिधूम	〃
अर्धावर्तितकाढ़ा	३८३	स्वरसादियोग	३८८	शृंग्याधूम	〃
मातुलिंगादिलेह	〃	मरिच्यादिचूर्ण	〃	बिभीतकावलेह	〃
खर्जूरादिलेह	〃	कुलित्थादिकाढ़ा	〃	कंटकार्यवलेह	〃
द्राक्षामलादिलेह	〃	पुष्करादिकाढ़ा	〃	अगस्त्यहरीतक्यवलेह	〃
क्षीरामलकघृत	〃	शुंठ्यादिलेह	〃	व्याघ्र्यादिघृत	३९३
रसराज	〃	बर्हियादादिलेह	〃	गुडूच्यादिघृत	〃
लोकेश्वररस	〃	भार्ग्यादिचूर्ण	〃	त्र्यूषणादिघृत	〃
कफक्षयकासकालक्षण	〃	घनादिगुटी	〃	कंटकारिघृत	〃
चिकित्सा	〃	निर्गुंड्यादिघृत	〃	दूसराप्रकार	३९४
नवांगयूष	〃	धूमपान	〃	भार्गोत्तरवटी	〃
पिप्पल्यादिकाढ़ा	〃	वारुणीपत्रधूम	〃	पर्पटी	〃
पित्तकफकासपर	〃	हेमगर्भपोटली	३८९	कासश्वासविधूननरस	〃
विभीतकधारण	३८४	कासविधूननरस	〃	गुडपंचमूलीकाढ़ा	〃
भद्रमुस्तादिचूर्ण	〃	ताम्रपर्पटी	〃	वासादिकाढ़ा	३९५
पथ्यादिचूर्ण	〃	कंटकार्यादिचूर्ण	〃	सिंहीकषाय	〃
चित्रकादिचूर्ण	〃	लवंगादिचूर्ण	〃	वृषादिकाढ़ा	〃
शिलादिलेह	〃	विभीतकादिचूर्ण	३९०	आर्द्रकावलेह	〃
व्योषादिघृत	〃	पंचकोलादिचूर्ण	〃	व्याघ्रीहरीतक्यवलेह	〃
कटुत्रयादिचूर्ण	〃	बदरीकल्क	〃	कासकंडनावलेह	〃
बोलबद्धरस	〃	कर्पूरादिचूर्ण	〃	हेमगर्भपोटली	〃
दन्तीधूम	〃	त्रिकटुकादिचूर्ण	〃	हेमगर्भ	३९६
उरःक्षतकासनिदान	〃	देवदार्वादिचूर्ण	〃	दूसराप्रकार	〃
क्षयकासनिदान	३८५	द्विक्षारादि	〃	कासकेसरी	〃
चिकित्साप्रक्रिया	〃	ग्रंथिकादि	〃	रसेन्द्रवटी	〃
इक्ष्वादिलेह	〃	कटुत्रिकादि	〃	नीलकंठरस	〃
मंजिष्ठादिचूर्ण	〃	हरीतक्यादिगुटी	〃	लोकनाथपोटली	३९७
क्षुद्रावलेह	〃	त्रिजातादि	〃	अमृतार्णवरस	〃
तारकेश्वररस	〃	मरिच्यादिगुटी	३९१	अग्निरस	〃
सूर्यरस	३८६	लवंगादिगुटी	〃	कासकर्त्तरी	〃
पिप्पल्यादिलेह	〃	खदिरादिगुटी	〃	कफाग्निवटी	〃
कुलथीगुड़	〃	धनंजयवटी	〃	कासमेंपथ्य	〃
वांसाकूष्मांडावलेह	〃	व्योषादिगुटी	〃	अपथ्यम्	३९८

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
हुचकीकर्मविपाक	३९८	कृष्णाचूर्ण	४०२	अन्नकवल	४०५
प्रायश्चित्त	〃	शृंग्यादिचूर्ण	〃	आठस्परस	〃
हिक्कानिदान	〃	भारंग्यादिचूर्ण	〃	छिन्नश्वासलक्षण	〃
संप्राप्ति	〃	हिक्कानस्य	〃	तमकश्वासलक्षण	४०६
हुचकीकेभेद	〃	मधुकनस्य	〃	प्रतमकनिदान	〃
पूर्वरूप	〃	नस्य	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	शिलाजितधूम	〃	व्याघ्रीजीरकादिगुटिका	〃
त्याज्यहिक्का	〃	श्वासावरोधयोग	〃	क्षुद्रावलेह	〃
अन्नजाहिक्कानिदान	३९९	माषादिधूम	〃	कंटकार्यावलेह	४०७
यूष	〃	हिंग्वादिधूम	〃	क्षुद्रश्वासनिदान	〃
कुलित्यादिकाढ़ा	〃	हिचकीमेंपथ्य	〃	सामान्य उपचार	〃
हरिद्रादिलेह	〃	अपथ्य	४०३	शृंगवेररस	〃
अभयादिकल्क	〃	श्वासकर्मविपाक	〃	विभीतकावलेह	〃
चन्द्रसूरकाढ़ा	〃	प्रायश्चित्त	〃	द्राक्षादिलेह	〃
यमलाहिक्कानिदान	〃	दूसराप्रकार	〃	दशमूलायवागू	〃
दशमूलीयवागू	〃	प्रायश्चित्त	〃	दशमूलकाढ़ा	〃
क्षुद्रहिक्कालक्षण	〃	तीसराप्रकार	〃	रंभादिकुसुमपान	४०८
दशमूलीकाढ़ा	〃	प्रायश्चित्त	〃	शृंग्यादिचूर्ण	〃
धात्र्यादिकाढ़ा	〃	श्वासनिदान	〃	शृंग्यादिकाढ़ा	〃
गंभीराहिक्कानिदान	〃	पूर्वरूप	४०४	पंचमूलीयोग	〃
पाटल्यादियोग	४००	संप्राप्ति	〃	कूष्मांडशिफाचूर्ण	〃
दशमूलीकाढ़ा	〃	सामान्यचिकित्सा	〃	हरिद्राद्यवलेह	〃
छागदुग्धयोग	〃	दूसराप्रकार	〃	भारंगीगुड़	〃
मधुसौवर्चलयोग	〃	महाश्वासलक्षण	〃	द्राक्षादिकाढ़ा	〃
शिलालेह	〃	शृंग्यादिचूर्ण	〃	कुलित्यादिकाढ़ा	〃
पिप्पल्यादिलेह	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃	देवदार्व्यादिकाढ़ा	〃
कट्फलादिभस्म	〃	मर्कटीचूर्ण	〃	सिंह्यादिकाढ़ा	४०९
कोलमज्जालेह	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃	बासादिकाढ़ा	〃
हेममात्रा	〃	गुडादिलेह	〃	भारंग्यादिलेह	〃
पिप्पल्यादिलेह	〃	भारंग्यादिचूर्ण	४०५	गुडाद्यवलेह	〃
शंखचूलरस	४०१	ऊर्ध्वश्वासकालक्षण	〃	बासादिलेह	〃
मेघडम्बररस	〃	श्वासकालीनहिकारण	〃	सितादिचूर्ण	〃
महाहिक्कालक्षण	〃	दुलहरीचूर्ण	〃	शिलादिअवलेह	〃
कटुत्रिकलेह	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃	राजिकादिगुटी	〃
असाध्यहिक्कानिदानलक्षण	〃	शिलाद्यवलेह	〃	सूर्यावर्त्तरस	〃
असाध्यलक्षण	〃	विडंगादिचूर्ण	〃	अमृतार्णवरस	〃
यष्ट्यादिचूर्ण	〃	दाडिमादिचूर्ण	〃	श्वासहेमाद्रिरस	४१०
शिखादिचूर्ण	〃	विडंगादिचूर्ण	〃	उदयभास्कररस	〃
रक्तचन्दनयोग	〃	आर्द्रकस्वरस	〃	श्वासकालेश्वर	〃

विषय	पृ०	विषय	पृ०	विषय
पारदादिगुटी	४१०	चिकित्सा	४१४	आमलकादिचूर्ण
लवंगादिगुटी	〃	जातिफलावलेह	〃	खांडवचूर्ण
दूसराप्रकार	〃	काकजंघादिधार्य	〃	कर्पूरादिचूर्ण
त्रिकटुवटी	〃	जातिफलादिलेह	〃	चव्यादिचूर्ण
फलत्रयगुटी	४११	गुडूच्यादिलेह	४१५	आर्द्रकमातुलिंगादिलेह
क्षुद्रीदुग्धयोग	〃	बदरीकल्क	〃	जीरकादिघृत
श्वासकुठार	〃	आरनालचूर्ण	〃	सूतादिवटी
दूसराप्रकार	〃	खदिरधार्य	〃	लघुचक्रसंधान
मरिच्यादिगुटी	〃	गोरखवटी	〃	केसरादिलेह
श्वासमेंपथ्य	〃	ब्रह्म्यादिचूर्ण	〃	आर्द्रकदाडिमयोग
अपथ्य	〃	दुग्धामलकपान	〃	दाडिमचूर्ण
स्वरभेदनिदान	४१२	स्वरभेदमेंपथ्य	〃	पिप्पल्यादिचूर्ण
चिकित्साप्रक्रिया	〃	अपथ्य	〃	छत्रादिचूर्ण
स्वरभेदसामान्यचिकित्सा	〃	अरुचिकर्मविपाक	४१६	अम्लिकादिपेय
वातिकस्वरभेदनिदान	〃	प्रायश्चित्त	〃	शुंठ्यादिचूर्ण
मरिचघृतपान	〃	ज्योतिषशास्त्रकाअभिप्राय	〃	त्र्यूषणादिवटी
घृतगुडौदन	〃	प्रायश्चित्त	〃	अमृतप्रभावटी
कासमर्दादिघृत	〃	अरोचकनिदान	〃	आकल्लकादिचूर्ण
व्याघ्रीघृत	४१३	अरोचककारण	〃	लवणार्द्रकयोग
पैत्तिकस्वरभेदनिदान	〃	वायुकाअरोचकलक्षण	〃	शृंगवेरादिलेह
सामान्यचिकित्सा	〃	सामान्यशास्त्रार्थ	〃	त्वङ्मुस्तादिचूर्ण
ज्येष्ठीमधुकाढ़ा	〃	वचादिस्नेहपान	४१७	दाडिमरस
पयःपान	〃	सामान्यचिकित्सा	〃	जीरकादिचूर्ण
शतावरीचूर्ण	〃	पित्तकीअरुचिकालक्षण	〃	कपित्थादिचूर्ण
शुंठीघृत	〃	कफकीअरुचिकालक्षण	〃	शुंठ्यादिगुटी
पित्तस्वरभेद	〃	कवलग्रह	〃	अरुचिमेंपथ्य
कफस्वरभेदनिदान	〃	विडंगचूर्ण	४१८	अपथ्य
पिप्पलीयोग	〃	अम्लिकाकवल	〃	छर्दिकर्मविपाक
अम्लवेतसादिचूर्ण	〃	कुष्ठादिकवल	〃	ज्योतिषशास्त्राभिप्राय
गंडूष	〃	नींबूकापना	〃	छर्दिनिदान
कटुकादिकाढ़ा	〃	मुखधावन	〃	पूर्वरूप
संनिपातस्वरभेदनिदान	〃	शर्करादिभक्षण	〃	वायुकीछर्दिकालक्षण
अजमोदादिचूर्ण	४१४	तालीशादिचूर्ण	〃	सैंधवयोग
फलत्रिकचूर्ण	〃	यवानीखांडवचूर्ण	४१९	लवणत्रययोग
निदिग्धिकावलेह	〃	कारव्यादिगुटिका	〃	धान्याकयूष
क्षयकृतस्वरभेदनिदान	〃	खण्डार्द्रकयोग	〃	पित्तछर्दिलक्षण
शरीरकेमोटापनसेउपजानोस्व		राजिकादिशिखरिणी	〃	तंडुलजल
रभेदताकोलक्षण	〃	आर्द्रकयोग	〃	लाजादियूष
असाध्यलक्षण	〃	आम्रशिखरिणी	〃	पर्पटादिकाढ़ा

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मक्षिकाविड्वलेह	४२५	पटोलादिघृत	४२८	अन्नजातृषालक्षण	४३२
गुडूच्यादिकाढ़ा	〃	रंभाकन्दयोग	〃	चिकित्सा	〃
लाजसक्तु पान	〃	दधित्थरसादिलेह	〃	उपद्रव व असाध्यलक्षणतृषा	〃
कफकीछर्दिकालक्षण	〃	करंजादिलेह	〃	जलपाननियम	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	करंजबीजादियोग	〃	गंडूष	〃
शालिभक्त	〃	धवपुष्परसादिपान	〃	लेप	〃
विडंगादिचूर्ण	〃	जीरकादिधूम	〃	चूर्ण	〃
जाम्बवादियोग	〃	वांतिहृद्रस	〃	कुष्ठादिचूर्ण	४३३
संनिपातकीछर्दिकालक्षण	〃	नारिकेलरसपान	४२९	चूर्ण	〃
बिल्वादिकाढ़ा	४२६	यष्ट्यादिपान	〃	बटादिलेह	〃
कोलाद्यवलेह	〃	गुडूच्यादिरस	〃	अवलेह	〃
सुरसापान	〃	पारदादिचूर्ण	〃	ताम्रादिरस	〃
मनसिलादियोग	〃	जीरकादिरस	〃	श्रीखण्डयोग	〃
अश्वत्थवल्कलादियोग	〃	वमनामृतयोग	〃	आमलक्यादिगुटिका	〃
लाजादियोगत्रय	〃	पथ्य	〃	गुटी	〃
धात्रीफलपान	〃	अपथ्य	४३०	काश्मर्यादिकाढ़ा	〃
मसूरसक्तू	〃	तृषाकर्मविपाक	〃	जीरकादिचूर्ण	〃
एलादिचूर्ण	〃	प्रायश्चित्त	〃	आम्रादिकाढ़ा	〃
पद्मकादिघृत	〃	तृष्णानिदान	〃	द्राक्षादिनस्य	४३४
चन्दनादिपान	〃	तृषास्वरूप	〃	जीरकादियोग	〃
उदीच्यजल	〃	तृषासंप्राप्ति	〃	कुष्ठादियोग	〃
चन्दनपान	〃	वातजतृषालक्षण	〃	तप्तलोष्ठादियोग	〃
मुद्गकाढ़ा	〃	पूर्वरूप	〃	मंथादियोग	〃
कोलमज्जा	४२७	वाततृषाचिकित्सा	〃	रसादिगुटी	〃
बीजपूरादिपुटपाक	〃	तेल	〃	रसादिचूर्ण	〃
हरीतकीचूर्ण	〃	पानी	४३१	लेप	〃
जंबवाम्रपल्लवरस	〃	पित्तकीतृषालक्षण	〃	गुटी	〃
हिंग्वादिपान	〃	चिकित्सा	〃	उपसर्गतृषासामान्यविधि	〃
उग्रगंधादियोग	〃	तंडुलोदकपान	〃	मीठेसंजीवनीयगण	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	मधूकादिफांट	〃	कसेर्वादिकाढ़ा	〃
जातिपत्रचूर्ण	〃	कफकीतृषाकालक्षण	〃	क्षुद्रादिगण्डूष	४३५
असाध्यछर्दिलक्षण	〃	सामान्यचिकित्सा	〃	लेप	〃
आगंतुकछर्दिलक्षण	〃	बिल्वादिकाढ़ा	〃	पथ्य	〃
उपद्रव	४२८	कफतृषाप्रयोग	〃	अपथ्य	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	क्षतजतृषालक्षण	〃	मूर्च्छाभ्रमनिद्रासंन्यास	४३६
आम्रास्थिकाढ़ा	〃	क्षतजतृषाचिकित्सा	〃	संप्राप्ति	〃
जम्बूपल्लवादिकाढ़ा	〃	क्षयजतृषालक्षण	४३२	पूर्वरूप	〃
मसूरपत्रभस्मावलेह	〃	चिकित्सा	〃	वायुकीमूर्च्छाकालक्षण	〃
गोमयादिभस्मयोग	〃	आमजतृषालक्षण	〃	पित्तकीमूर्च्छाकालक्षण	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कफकीमूर्च्छाकालक्षण	४३६	आम्लस्निग्धादि	४४१	मृतसंजीवनीगुटी	४४५
लोहूकीमूर्च्छाकोलक्षण	″	पित्तमदात्ययपर	″	रक्तपूर्णकोष्ठजदाह	″
मद्यकीमूर्च्छाकोलक्षण	४३७	क्षुद्रामलकादिपान	″	चिकित्सा	″
विषकीमूर्च्छाकोलक्षण	″	सामान्य	″	दगसारचूर्ण	″
भ्रमकोलक्षण	″	कफमदात्ययसामान्य	″	धातुक्षयजन्य	″
तन्द्राकेलक्षण	″	अष्टांगलवण	४४२	खर्जूरादिचूर्ण	″
निद्राकालक्षण	″	सुपारीआदि	″	पित्तदाह	४४
संन्यासकोलक्षण	″	कोद्रवधतूर	″	क्षतजदाह	″
मूर्च्छाभेद	″	नायफलकादिमदपर	″	चन्दनादिचूर्ण	″
चिकित्साक्रम	″	कज्जलीरस	″	रक्तजदाहज्वर	″
दुरालभादिकाढ़ा	″	सामान्य	″	चन्दनादिकाढ़ा	″
पंचमूलादिकाढ़ा	″	पानाजीर्णलक्षण	″	योग	″
क्षुद्रादिकाढ़ा	४३८	पानविभ्रमकालक्षण	″	लाजादिकाढ़ा	″
द्राक्षादिकाढ़ा	″	मदात्ययकाअसाध्यलक्षण	″	टंढापानी	″
शास्त्रार्थ	″	पानोपद्रव	″	कमलादिपान	
कोलादियोग	″	मथिततैल	४४३	कोष्ठपूर्णरक्तदाह	
त्रिफलादियोग	″	मद्योपशम	″	दाहरोगतैल	
दुरालभादिकाढ़ा	″	कूष्मादिपना	″	तिलतैल	४
सामान्य	″	त्रिफलादिपान	″	पुनर्नवादितैल	
आत्मगुप्तादियोग	″	दुःस्पर्शादियोग	″	तंडुलीयादिपान	
नारिकेलादियोग	″	चव्यादिचूर्ण	″	दूसराचन्द्रकलारस	४
मृणालाद्यवलेह	″	शतावरीपुनर्नवाघृत	″	मर्माभिघातजदाह	
अंजन	″	माषघृत	″	असाध्यलक्षण	
सामान्यउपचार	″	सामान्यशास्त्रार्थ	″	दाहरोगमेंपथ्य	
छिन्नामलकादिलेह	४३९	खर्जूरादिमंथ	″	दाहरोगमेंअपथ्य	४
पथ्यादिघृत	″	मदात्ययमेंपथ्य	″	उन्मादरोगकर्मविपाक	
रस	″	मदात्ययमेंअपथ्य	४४४	प्रायश्चित्त	
ताम्रादिचूर्ण	″	दाहरोगकर्मविपाक	″	उन्मादकीउत्पत्तिलक्षण	
शुंठ्यादिगुटी	″	उपाय	″	उन्मादकास्वरूप	
मदात्ययरोगकीउत्पत्तिलक्षण	″	मंत्र	″	उन्मादकापूर्वरूप	४
विधिसेमद्यपीनेकालक्षण	४४०	ज्योतिषशास्त्राभिप्राय	″	बातकेउन्मादकालक्षण	
मदलक्षण	″	दाहनिदान	″	पित्तकेउन्मादकालक्षण	
मध्यममदलक्षण	″	सामान्यचिकित्सा	″	कफकेउन्मादकालक्षण	
बातकेमदात्ययरोगकालक्षण	४४१	रक्तजदाहलक्षण	″	मनकेदुःखकेउन्मादकालक्षण	
पित्तकेमदात्ययकालक्षण	″	रसादिगुटी	४४५	विषखानेकेउन्मादकालक्षण	
कफकेमदात्ययकालक्षण	″	चन्द्रकलारस	″	उन्मादमात्रकीअसाध्यलक्षण	
परममदकालक्षण	″	तृष्णानिरोधजदाहलक्षण	″	उन्मादशास्त्रार्थ	
बातमदात्ययमेंसौवर्चलादि	″	दाहपर	″	सामान्यउपचार	
सूक्तशृंग्यादि	″	यवादिमंथ	″	सामान्यचिकित्सा	

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
सामान्यउपचार	४५१	धूप	४५७	अपस्मारमेंपथ्य	४६२
शास्त्रार्थ	〃	भूतोन्मादचिकित्साशास्त्रार्थ	〃	मृगीरोगमेंअपथ्य	〃
लशुनादिघृत	〃	महापैशाचिकघृत	〃	वातव्याधिकर्मविपाक	〃
चन्दनादितैल	४५२	कल्याणकघृत	〃	वातहर	〃
अंजन	〃	उन्मादमेंपथ्य	〃	धनुर्वातहर	〃
शिरीषादिनस्य	〃	अपथ्य	〃	पक्षवातहर	४६३
व्योषाद्यंजन	〃	अपस्मारकर्मविपाक	४५८	रक्तवातहर	〃
धूप	〃	ज्योतिशशास्त्राभिप्राय	〃	रक्तवातपित्तहर	〃
पर्पटीरस	〃	अपस्मारनिदान	〃	वातपित्तहर	〃
शिरीषाद्यंजन	〃	मृगीरोगकापूर्वरूपअरुल क्ष	〃	ज्योतिशशास्त्रअभिप्राय	〃
ब्राह्म्यादिरस	४५३	वायुकीमृगीकालक्षण	〃	वायुप्रशंसा	〃
ब्राह्म्यादिकल्क	〃	पित्तकीमृगीकालक्षण	〃	वातव्याधिनिदान	〃
श्वेतकुसुमबलादियोग	〃	कफकीमृगीकेलक्षण	〃	वायुकापूर्वरूप	४६४
दशमूलादियोग	〃	संनिपातकीमृगीकालक्षण	〃	वातचिकित्सोपक्रम	〃
भूतोन्मादलक्षण	〃	मृगीकेअसाध्यलक्षण	〃	कोष्ठगतवातलक्षण	〃
जिसकेशरीरमें कोई देवताप्रवे		मृगीकोसमय	〃	कोष्ठलक्षण	〃
श हुआहोय ताके उन्मादका		कासघृत	४५९	आमाशयोक्त	〃
लक्षण	〃	वचादिघृत	〃	कोष्ठवातचिकित्साक्रम	〃
जिसकेशरीरमेंअसुरप्रवेशहुआ		मधुवचायोग	〃	चिकित्सा	४६५
होयतिसकेउन्मादकाल क्ष	〃	मुस्तकमूलयोग	〃	आमाशयगतवातलक्षण	〃
गंधर्व प्रवेशहो जिसकेताके		कूष्मांडकादियोग	〃	आमाशयलक्षण	〃
उन्मादका लक्षण	४५४	भैरवरसायन	〃	आमाशयगतवातचिकित्सा	〃
यक्षग्रस्तउन्मादलक्षण	〃	स्मृतिसागररस	〃	आमाशयवात	〃
पितरोंकादोषहोयतिसकेलक्षण	〃	पानीयकल्याणघृत	〃	पट्चरणयोग	〃
सर्पग्रहग्रस्तउन्मादलक्षण	〃	शंखपुष्पीघृत	४६०	तीनकाढ़े	〃
राक्षसप्रवेशकाउन्मादलक्षण	〃	सैंधवादिघृत	〃	पक्वाशयस्थवायुलक्षण	〃
ब्रह्मराक्षसप्रवेशउन्मादलक्षण	〃	ब्राह्मीघृत	〃	चिकित्सा	〃
पिशाचलगाहोयताकेलक्षण	〃	कूष्मांडघृत	〃	सर्वांगवातलक्षण	४६६
उन्मादकाअसाध्यलक्षण	〃	पंचगव्यघृत	〃	चिकित्सा	〃
दूतसबकेप्रवेशरीति	४५५	अपस्मारनस्य	〃	कुरंटकादिकाढ़ा	〃
निशादिघृत	〃	अंजन	〃	महारास्नादि	〃
कल्याणकघृत	〃	त्रिकत्रयलेह	४६१	महाबलादिकाढ़ा	४६७
हिंग्वादिघृत	〃	कल्याणचूर्ण	〃	पंचमूलादियोग	〃
सारस्वतघृत	〃	लेपवदाग	〃	बाजिगंधादिकाढ़ा	〃
उन्मादगजकेशरी	४५६	चन्दनादिअवलेह	〃	समीरदावानल	〃
विगतोन्मादलक्षण	〃	शास्त्रार्थ	〃	गुदास्थितवायुकार्य	〃
भूतोन्मादमेंअंजन	〃	पलंकषातैल	४६२	चिकित्सा	〃
भूतभैरवरस	〃	कटभ्यादितैल	〃	चिकित्साक्रम	〃
भूतरावघृत	〃	शिग्रुतैल	〃	श्रोत्रादिगतलक्षण	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
चिकित्सा	४६७	अपतानक	४७१	कल्याणकाख्यलेह	४७६
जृंभा	४६८	चिकित्सा	„	शिरोग्रह	„
चिकित्सा	„	चिकित्साप्रक्रिया	„	चिकित्सा	„
प्रलापक	„	धनुर्वातलक्षण	„	गृध्रसीलक्षण	„
चिकित्सा	„	कुब्जलक्षण	४७२	वातगृध्रसीलक्षण	„
रसाज्ञाननिदान	„	अन्तरायामलक्षण	„	वातकफगृध्रसीलक्षण	„
चिकित्सा	„	बाह्यायामलक्षण	„	गृध्रसीचिकित्सा	४७७
किरातादिकल्क	„	सामान्य	„	एरण्डतेलयोग	„
त्वक्शून्यतालक्षण	„	चिकित्सा	„	गृध्रसीहरतैल	„
चिकित्सा	„	सर्जतेल	„	शिरावेधगृध्रसीपर	„
रक्तवायुलक्षण	„	एरंडादिकाढ़ा	„	निम्बकल्क	„
मांसगतवायु	„	पक्षवधकहे अधरंग	„	गृध्रसीचिकित्सा	„
मेदगतवायुलक्षण	„	सर्वांगरोगलक्षण	„	रास्नागुग्गुल	„
अस्थिगतवायुलक्षण	„	माषादिकाढ़ा	४७३	रास्नाकाढ़ा	४७८
मज्जागतवायुलक्षण	४६९	ग्रन्थिकादितेल	„	पथ्यागुग्गुल	„
शुक्रगतवायुलक्षण	„	माषादितेल	„	एरण्डतेलयोग	„
सप्तधातुगतवायुचिकित्सा	„	माषादिशमक	„	विश्वाचीलक्षण	„
केतकादितेल	„	माषतेल	„	चिकित्सा	„
शिरागतवायु	„	कपिकच्छ्वादिकाढ़ा	„	माषतेल	„
चिकित्सा	„	गुग्गुलपक्षाघातपर	„	क्रोष्टुशीर्षलक्षण	„
स्नायुगतवायुलक्षण	„	रासतेल	„	चिकित्सा	„
चिकित्सा	„	सुंठीचूर्ण	„	सामान्यचिकित्सा	„
संधिगतवायुलक्षण	„	अर्दितकहेलकवालक्षण	४७४	खंजपंगुलक्षण	„
सामान्यचिकित्सा	„	वातार्दित	„	चिकित्सा	४७९
इंद्रवारुणीचूर्ण	„	पित्तकाअर्दितलक्षण	„	कलायखंजलक्षण	„
पित्तकफाश्रितप्राण	„	कफकाअर्दितलक्षण	„	चिकित्सा	„
पित्तकफाश्रितउदान	„	चिकित्सा	„	वातकंटकनिदान	„
पित्तकफाश्रितसमान	„	पित्तार्दित	„	चिकित्सा	„
पित्तकफाश्रितअपान	४७०	कफार्दित	„	पाददाहलक्षण	„
चिकित्सा	„	अर्दितसाध्यासाध्य	„	चिकित्सा	„
आक्षेपकलक्षण	„	असाध्यलहसुनविधि	४७५	लेप	„
केवलवातनाक्षेपक	„	हनुग्रहलक्षण	„	पादहर्षलक्षण	„
सामान्यचिकित्सा	„	चिकित्सा	„	चिकित्सा	„
आक्षेपकचिकित्सा	„	रसोचटक	„	बाहुशोषनिदान	„
आक्षेपकभेदअपतंत्रक	„	अभ्यंजन	„	चिकित्सा	„
चिकित्सा	४७१	मन्यास्तंभ	४७६	रसोनकल्क	„
हरीतक्यादिलेह	„	चिकित्सा	„	शोषचिकित्सा	४८०
मरिचादिचूर्ण	„	जिह्वास्तंभ	„	अवबाहुकलक्षण	„
दण्डापतानक	„	चिकित्सा	„	चिकित्सा	„

विषय	पृ०	विषय	पृ०	विषय	पृ०
मापतैल	४८०	सामान्यसंज्ञा	४८४	स्वेदविधि	४९५
मापतैलादिमर्दन	〃	ऊर्ध्ववातलक्षण	〃	पोटलीबांधना	〃
मूर्कमिम्मिणवगद्गदनिदान	〃	त्रिकशूललक्षण	〃	स्वेदवलेप	〃
सारस्वतघृत	〃	चिकित्सा	〃	लेपस्वेद	〃
तूनीलक्षण	४८१	आभादित्रयोदशांगगूगल	〃	शतपुष्पादिलेप	〃
प्रतूनीलक्षण	〃	रसोनाष्टक	४८५	लेप	〃
चिकित्सा	〃	प्राणायाम	〃	बालुकापोटली	〃
आध्मानलक्षण	〃	कुब्जलक्षण	〃	महासालवणयोग	४९६
चिकित्सा	〃	कष्टसाध्यलक्षण	४८६	कढ़ी	〃
नाराचचूर्ण	〃	वातरोगअसाध्य	〃	स्वेदलेपविधि	〃
दारुषट्कलेप	〃	वत्तिसीकाढ़ा	〃	लेप	〃
महानाराचरस	〃	लंघुरास्नादिकाढ़ा	〃	रसोनकल्क	〃
प्रत्याध्माननिदान	〃	रास्नादिचूर्ण	〃	लंघन	४९७
चिकित्सा	〃	आभादिचूर्ण	४८७	स्वच्छन्दभैरवरस	〃
वाताष्ठीलानिदान	〃	रास्नादिचूर्ण	〃	समीरपन्नग	〃
प्रत्यष्ठीलालक्षण	〃	शिग्रुमूलादिचूर्ण	〃	वातविध्वंसनपारा	〃
हिंग्वादिचूर्ण	४८२	अजमोदादिचूर्ण	〃	वातराक्षस	〃
हिंग्वादियोग	〃	कुष्ठादिचूर्ण	〃	वातारिरस	४९८
नादेयादिकाढ़ा	〃	सुंठ्यादिचूर्ण	〃	समीरगजकेशरी	〃
विडंगासव	〃	रास्नादिचूर्ण	〃	मृतसंजीवनीरस	〃
बस्तिवातलक्षण	४८३	द्वात्रिंशकगुग्गुल	〃	वातारिरस	〃
चिकित्सा	〃	योगराजगूगल	४८८	वातगजांकुश	〃
हरीतक्यादिचूर्ण	〃	षडशीतिगूगल	४८९	सूर्यप्रभागुटी	४९९
यवक्षारचूर्ण	〃	विश्वादिगूगल	४९०	लघुवातविध्वंसमात्रा	५००
कूष्मांडबीजयोग	〃	रास्नादिगूगल	〃	वह्निकुमाररस	〃
आमलक्यादियोग	〃	दूसरीयोगराजकीवटी	〃	वातविध्वंस	〃
चन्दनादिवर्ति	〃	रसोनसंधान	४९१	समीरपन्नग	〃
बस्तिवायुकुपितचिकित्सा	〃	भुजंगीगुटिका	〃	वातारिरस	〃
कम्पवायु	〃	निर्गुंड्यादिवटी	४९२	रसेन्द्रचिन्तामणि	〃
खल्लीलक्षण	〃	अमरसुन्दरीवटी	〃	कालकंटकरस	५०१
चिकित्सा	〃	अजमोदादिवटी	〃	त्रिगुणाख्यरस	〃
स्याननामलक्षण वातव्याधि	〃	लघुराजमृगांक	〃	अर्केश्वर	〃
निदान	〃	दूसराएरंडपाक	〃	एकांगवीर	〃
चिकित्सा	〃	एरंडपाक	४९३	वातरक्तारिरस	५०२
लशुनसेवन	〃	रसोनपाक	〃	गंधकरसायन	〃
सुंठ्यादिकाढ़ा	४८४	कुबेरपाक	४९४	लघुविषगर्भतैल	〃
दशमूलादिकाढ़ा	〃	लशुनपाक	〃	महाविषगर्भतैल	५०३
कटिवातपरलाडू	〃	लेप	४९५	प्रसारिणीतैल	〃
चिकित्साउरुस्तंभपर	〃	मर्दनवनस्य	〃	नारायणतैल	५०४

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
शतावरीतैल	५०५	वातरक्तकर्मविपाकसे ज्योतिः		पद्मकादितैल	५३०
माषतैल	”	शास्त्राभिप्राय	५२४	गुडूच्यादितैल	”
चौथाविषगर्भतैल	”	शमन	”	मरिचादितैल	”
लघुनारायणतैल	५०६	वातरक्तनिदान	”	बृहन्मरिचादितैल	”
शतावरीनारायणतैल	”	बातरक्तप्राप्ति	५२५	पिण्डतैल	”
दशमूलादितैल	५०७	वातरक्तकाऔरदोषसंबंधीलक्षण	”	गुडूच्यादितैल	”
तीसराप्रसारिणीतैल	”	रक्ताधिक तथापित्ताधिकवात		पद्मकादितैल	५३१
चौथाप्रसारिणीतैल	५०८	रक्तलक्षण	”	गुडूच्यादितैल	”
पंचमप्रसारिणीतैल	”	कफरक्तनिदान	५२६	शताह्वादितैल	”
पंचमविषगर्भतैल	५०९	बातरक्तकासाध्यलक्षण	”	वातरक्ततैल	”
छठाविषगर्भतैल	”	बातरक्तकेउपद्रव	”	पिण्डतैल	”
दार्व्यादितैल	”	साध्यासाध्य	”	दशपाकबलातैल	”
दशमूलतैल	”	सामान्यचिकित्सा	”	बलातैल	”
लघुमाषादितैल	”	भोजनवरस	५२७	नागबलातैल	”
बिजयभैरवतैल	५१०	यूष	”	अरनारतैल	”
प्रसारिणीतैल	”	भाजी	”	बलादिघृत	”
व्याघ्रतैल	”	वासादिकाढ़ा	”	गुडूच्यादिघृत	५३२
महाबलातैल	५११	मंजिष्ठादिकाढ़ा	”	शतावरीघृत	”
दूसराशतावरितैल	”	लघुमंजिष्ठादिकाढ़ा	”	अमृतादिघृत	”
तीसराप्रकार	”	पटोलादिकाढ़ा	५२८	अश्वगन्धपाक	”
चौथाप्रकार	५१२	वासादिकाढ़ा	”	प्रपौंडरीकादिलेप	५३३
चन्दनादितैल	”	एरंडतैलयोग	”	लेपवअभ्यंग	”
माषादितैल	५१३	दार्व्यादिकाढ़ा	”	शताह्वादिलेप	५३४
महानारायणतैल	”	वत्सादिन्यादिकाढ़ा	”	सहस्रधौतघृतचरालयोग	”
दूसराप्रकार	५१५	पित्ताधिकवातरक्तपर	”	लोण्यादि उद्वर्तन	”
जंबुकादितैल	५१६	काकोल्यादिकाढ़ा	”	सर्षपादिलेप	”
तीसरामाषादितैल	५१८	गुडूचीयोग	”	कनकादिलेप	”
रास्नापूतिकतैल	”	गुडूच्यादिकाढ़ा	”	पंचामृतरस	”
बलातैल	५१९	वृषादिकाढ़ा	”	हरतालरस	”
माषादितैल	”	त्रिवृतादिकाढ़ा	”	कैशोरगूगल	”
सुगंधतैल	”	पथ्यायोग व गुडूचीक्वाथ	”	माहिषगूगल	५३५
एलादितैल	५२०	बातरक्तपरकाढ़ा	५२९	तालकेश्वररस	”
महालक्ष्मीनारायणतैल	”	वातरक्तपर पिंडादिकाढ़ा	”	अमृतभल्लातकावलेह	५३६
रास्नादिघृत	५२२	मंजिष्ठादिकाढ़ा	”	योगसारामृत	”
बातरोगमेंपथ्य	”	खदिरक्वाथ	”	सर्वेश्वररस	”
अपथ्य	५२३	मंजिष्ठादिकाढ़ा	”	अर्केश्वररस	५३७
वातव्याधिमेंपथ्य	”	अमृतादिकल्क	”	वातरक्तमेंपथ्य	”
अष्ठीलामेंगुल्मकीविधि	५२४	लांगल्यादिचूर्ण	”	अपथ्य	”
बातरोगमेंअपथ्य	”	मुंड्यादिचूर्ण	५३०	ऊरुस्तम्भनिदान	”

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
पूर्वरूप	५३८	शठ्यादिकाढ़ा	५४३	शुंठिघृत	५४९
ऊरुस्तम्भलक्षण	〃	पिप्पल्यादिकाढ़ा	〃	शुंठिखण्ड	〃
असाध्यलक्षण	〃	दशमूलादिकाढ़ा	〃	मेथीपाक	५५०
ऊरुस्तम्भसामान्य चिकित्सा	〃	अजमोदादिचूर्ण	〃	सौभाग्यशुंठिपाक	〃
यत्न	〃	पंचसमचूर्ण	५४४	शुंठ्यादिपुटपाक	〃
भल्लातकादिकाढ़ा	〃	पंचकोलचूर्ण	〃	आमवातमेंपथ्य	〃
ग्रन्थिकादिकाढ़ा	५३९	त्रिफलादिचूर्ण	〃	अपथ्य	५५१
भल्लातकादिकाढ़ा	〃	आरग्वधपत्रचूर्ण	〃	अजीर्णशूलकर्मविपाक	〃
पुनर्नवादिकाढ़ा	〃	पुनर्नवादिचूर्ण	〃	प्लीहशूल	〃
शेफालिकादिकाढ़ा	〃	त्रुट्यादिचूर्ण	〃	पेटशूल	〃
वचादिकाढ़ा	〃	अलंबुषादिचूर्ण	〃	शमन	〃
त्रिफलादिचूर्ण	〃	भल्लातादिचूर्ण	〃	अरुचिशूल	〃
त्रिफलाचूर्ण	〃	वैश्वानरचूर्ण	〃	शमन	〃
शिलाजीतयोग	〃	हिंग्वादिचूर्ण	५४५	कटिशूलकर्मविपाक	〃
ग्रन्थिकादिकल्क	〃	चित्रकादिचूर्ण	〃	कर्णशूल	〃
पिप्पल्यादिकल्क	〃	नागरचूर्ण	〃	शमन	५५२
पीपलीयोग	〃	अजमोदादिमोदकवचूर्ण	〃	हस्तशूल	〃
ऊरुस्तंभयोग	५४०	सिंहनादगूगल	〃	शमन	〃
ऊरुस्तंभप्रलेप	〃	हरीतकीगूगल	〃	नयनशूल	〃
कुष्ठादितैल	〃	योगराजगूगल	〃	शमन	〃
सैंधवादितैल	〃	सिंहनादगूगल	५४६	शूलकर्मविपाक	〃
कटुतिक्ततैल	〃	अभयादिगुटी	〃	शूलनिदान	〃
त्रिफलादिगूगल	〃	एरण्डादिगुटी	〃	वातशूललक्षण	〃
गुंजागर्भरसायन	〃	हारीगुटी	〃	वातशूलचिकित्सा	〃
लहसुनयोग	५४१	एरण्डयोग	५४७	वातशूलमेंयूष	५५३
ऊरुस्तंभमेंपथ्य	〃	हरीतकीयोग	〃	दशमूलादिकाढ़ा	〃
अपथ्य	〃	पानी	〃	विश्वादिकाढ़ा	〃
आमवातकर्मविपाक	〃	एरण्डमूलयोग	〃	बलादिकाढ़ा	〃
आमवातनिदान	〃	रसोनयोग	〃	वातशूलेकल्क	〃
आमवातकासामान्यलक्षण	५४२	पारदभस्मयोग	〃	बीजपूरादिस्वरस	〃
आमवातकालक्षण	〃	आमवातविध्वंसरस	〃	तुम्बरादिचूर्ण	〃
साध्यासाध्यविचार	〃	वातारिरस	〃	हरीतक्यादिचूर्ण	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	उदयभास्कररस	५४८	सौवर्चलादिचूर्ण	〃
रास्नादिकाढ़ा	〃	घृतपुष्पादिलेप	〃	उशीरादिचूर्ण	〃
महौषधादिकाढ़ा	〃	रसोनादितैल	〃	अरण्डादिचूर्ण	〃
रास्नादिकाढ़ा	५४३	रसोनाष्टक	〃	मन्दारमूलिकादिचूर्ण	〃
रास्नाद्वादशकाढ़ा	〃	लहसुनरस	〃	यवान्यादिचूर्ण	〃
रास्नापञ्चककाढ़ा	〃	बृहत्सैंधवादितैल	५४९	करंजादिचूर्ण	〃
शुंठ्यादिकाढ़ा		एरण्डतैल	〃	गुडूच्यादिचूर्ण	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
उशीरादिचूर्ण	१५४	दार्व्यादिलेप	१५८	अजमोदादिचूर्ण	१६१
सुवर्चलादिचूर्ण	〃	हिंग्वादियोग	〃	वचादिचूर्ण	〃
एरण्डमूलादिचूर्ण	〃	कूष्मांडक्षार	〃	यवान्यादिचूर्ण	१६२
सौवर्चलादिगुटी	〃	द्वन्द्वजशूलकालक्षण	〃	अजमोदादिचूर्ण	〃
बिल्वादिगुटी	〃	सामान्यचिकित्सा	〃	नवकादिचूर्ण	〃
सोमाग्निसुखरसगुटी	〃	द्वन्द्वजशूलकाढ़ा	〃	हिंग्वादिचूर्ण	〃
मृगशृंगोद्भवभस्म	〃	पटोलादिकाढ़ा	〃	शंखवटी	〃
अग्निमुखरस	〃	द्राक्षादिकाढ़ा	〃	गोमूत्रमंडूर	〃
उदयभास्कररस	〃	एरंडमूलादिकाढ़ा	〃	सूर्यप्रभावटी	〃
नाभिशूललेप	१५५	लहसुनकल्क	〃	नागरादिचूर्ण	१६३
वातशूललेप	〃	सन्निपातशूललक्षण	〃	क्षारयोग	〃
मृत्तिकासेक	〃	त्रिदोषशूलचिकित्सा	१५९	त्रिवृतादिमोदक	〃
नाभिलेप	〃	विदारीरसयोग	〃	हरीतक्यादिवटी	〃
पित्तकेशूलकालक्षण	〃	शतादिस्वरस	〃	कुबेराक्षवटी	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	वैश्वानरयोग	〃	वणिलवटी	〃
नाभिमेंभाण्डधारण	〃	सर्वजशूलमेंवमनार्थ	〃	गरलादिवटी	〃
शतावर्यादिकाढ़ा	१५६	शूलमेंस्वरस	〃	वचादिगुटी	१६४
बृहत्यादिकाढ़ा	〃	बीजपूरादिस्वरस	〃	कुबेराक्षपाक	〃
त्रिफलादिकाढ़ा	〃	मातुलिंगस्वरस	〃	सप्तविंशतिगुग्गुल	〃
त्रायमाणादिकाढ़ा	〃	बृहत्यादिकाढ़ा	〃	लोहभस्मयोग	〃
शतावर्यादिरस	〃	एलादिकाढ़ा	〃	गंधकरसायन	〃
धात्र्यादिचूर्ण	〃	मातुलिंगादिकाढ़ा	〃	शूलकुठाररस	〃
धान्यादिस्वरस	〃	अजमोदादिकाढ़ा	〃	अग्निकुमाररस	〃
कफजशूललक्षण	〃	एरंडादिकाढ़ा	〃	ताम्राभ्ररस	१६५
सामान्यचिकित्सा	〃	त्रिफलादिकाढ़ा	१६०	सोमनाथताम्र	〃
एरण्डमूलादिकाढ़ा	〃	पथ्यादिकाढ़ा	〃	गदमदर्दनरस	〃
बीजपूररस	〃	सर्वशूलमेंयवागू	〃	शंखादि	〃
कफशूलचूर्ण	〃	रेचनार्थवर्त्ति	〃	विद्याधराभ्रलेह	〃
बृहत्कटुफलादिचूर्ण	१५७	तुरंगीपुरीषरसयोग	〃	पीडारिरस	१६६
पथ्यादिचूर्ण	〃	विश्वजलादिकाढ़ा	〃	शूलसुन्दररस	〃
मुस्तादिचूर्ण	〃	कुबेरादिचूर्ण	〃	पक्षमुद्गररस	〃
लवणादिचूर्ण	〃	हिंग्वादिचूर्ण	〃	महाशूलहररस	〃
सर्वांगसुन्दररस	〃	नाराचचूर्ण	१६१	त्रिनेत्ररस	१६७
आमशूललक्षण	〃	क्षारयोग	〃	गजकेसरीरस	〃
आमशूलसामान्यचिकित्सा	〃	हिंग्वादिचूर्ण	〃	शूलगजकेसरीरस	〃
चित्रकादिकाढ़ा	〃	तुंबरुण्यादिचूर्ण	〃	गजकेसरी	〃
त्रिफलादिचूर्ण	〃	पंचसमचूर्ण	〃	पथ्यादिरस	〃
दीप्यादिचूर्ण	〃	विश्वादिचूर्ण	〃	परिणामशूलनिदान	〃
बल्वमूलादिचूर्ण	१५८	वचादिचूर्ण	〃	वातिकपरिणामशूल	१६८

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
पैत्तिकपरिणामशूल	५६८	शतपुष्पादिलेप	५७२	रुक्षादिकुपितवातजउदावर्त्त ल०	५७६
कफजपरिणामशूल	„	कुबेराक्षयोग	„	अधोवातजउदावर्त्त चिकित्सा	„
द्वन्द्वजसन्निपातलक्षण	„	खण्डपिप्पली	„	मलनिरोधजउदावर्त्तचिकित्सा	„
शूलकेउपद्रव	„	हृमातुलुंगादिघृत	५७३	मूत्रनिरोधउदावर्त्त चिकित्सा	„
असाध्यलक्षण	„	तैल	„	जृंभानिरोधजउदावर्त्त चि०	„
सामान्यचिकित्सा	„	अन्नद्रवजशूललक्षण	„	आंशूनिरोधज व छींकनिरो-	
वातादिपरिसामान्यचिकित्सा	„	अन्नद्रवशूललक्षण	„	धजउदावर्त्त चिकित्सा	„
वमन	„	सामान्यचिकित्सा	„	जृम्भाजनितउदावर्त्त चिकि०	„
त्रिफलादिकाढ़ा	„	धात्रीलोह	„	दूसरा छींकजनित उदावर्त्त	
परिणामशूलकल्क	„	पायस	„	चिकित्सा	५७७
शुंठिकल्क	„	अन्नद्वेष	„	उद्गारछर्दिनिरोधजउदावर्त्त	
विरेचन	„	अन्न	„	चिकित्सा	„
वमन	„	अन्न	„	डकारउदावर्त्त पर	„
गुड़ादिचूर्ण	५६९	सामान्य	„	छर्दिरोधजउदावर्त्त पर	„
सामुद्रादिचूर्ण	„	सामान्यचिकित्सा	„	भूखप्यासरोकनेके उदावर्त्त	
इन्द्रवारुण्यादिचूर्ण	„	माषेण्डरी	„	चिकित्सा	„
एरण्डादिभस्मयोग	„	वमनविरेचन	„	श्रमनींदउदावर्त्त चिकित्सा	„
पिप्पल्यादियोग	„	भक्षण	५७४	सामान्य	„
त्रिपुरभैरवरस	„	गुड़मण्डूर	„	रसोनादिप्राशन	„
शूलदावानलरस	„	शतावरीमंडूर	„	त्रिधारादिलेप	„
परिणामशूलमेंमंडूर	५७०	शूलरोगमेंपथ्य	„	कदलीफलयोग	„
तारमंडूर	„	अपथ्य	„	पंचमूलक्षीर	„
भीममंडूर	„	आनाहउदावर्त्तकर्मविपाक	„	सुवर्चलादिपेय	„
लोहगूगल	„	ज्योतिश्शास्त्राभिप्राय	५७५	धात्रीस्वरस	५७८
नारिकेलक्षार	„	उदावर्त्तनिदान	„	बट्यादियूष	„
पथ्यादिलोह	„	वातनिरोधजन्यउदावर्त्त	„	श्यामादिकाढ़ा	„
लोहादिलेह	„	मलनिरोधजन्यउदावर्त्त	„	नाराचचूर्ण	„
कृष्णादिलोह	„	मूत्ररोगकेउदावर्त्तकेलक्षण	„	दंत्यादिवर्ति	„
दूसराकृष्णादिलोह	„	जंभाईरोकनेकेउदावर्त्तकेल०	„	हिंग्वादिचूर्ण	„
शम्बूकादिगुटी	५७१	अश्रुअश्रुपातरोकनेकाउदावर्त्त	„	भद्रदार्वादिचूर्ण	„
चतुस्समलोहगन्धक	„	छींकरोकनेकेउदावर्त्तकेलक्षण	„	हरीतक्यादिचूर्ण	„
विडंगादिमोदक	„	डकाररोकनेकेउदावर्त्तकेल०	„	गुड़ाष्टक	„
तिलादिवटी	„	छर्दिरोकनेकेउदावर्त्तकेलक्षण	„	शुष्कमूलादिघृत	„
खण्डामकरस	„	शुक्ररोकने॰ उदावर्त्त केलक्षण	„	त्रिकुटादिवर्ति	„
जीर्णशूलपैगुड़	५७२	क्षुधारोकनेकेउदावर्त्तकेलक्षण	„	मदनफलादिवर्त्ति	५७९
शम्बूकभस्मयोग	„	तृषारोकनेकेउदावर्त्त केलक्षण	„	हिंग्वादिवर्त्ति	„
शूलमेंयोग	„	श्वासरोकनेके उदावर्त्त केल०	५७६	उदावर्त्त मेंपथ्य	„
मदनादिलेप	„	निद्रा रोकने के उदावर्त्त		अपथ्य	„
रसादिलेप	„	के लक्षण	„	आनाहनिदान	„

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
आमअन्यआनाह	५७९	कुलित्यादिक्वाथ	५८४	तिलोंकाक्वाढ़ा	५८८
पक्वाशयअफारा	„	हिंग्वादिचूर्ण	„	भार्ग्यादिचूर्ण	„
उदावर्त्तअसाध्यलक्षण	„	वातगुल्ममेंविरेचन	„	तिल्वमूलादिचूर्ण	„
शास्त्रार्थ	„	शिखिवाड्वरस	„	मुंड्यादिचूर्ण रेचन	„
चिकित्सापरिभाषा	„	पथ्य	„	गुल्मका असाध्यलक्षण	„
आनाहअभ्यंग	„	पित्तगुल्मलक्षण	„	दूसराप्रकार	५८९
हिंग्वादिचूर्ण	„	द्राक्षादिचूर्ण	„	तीसराप्रकार	„
फलचूर्ण	„	पित्तगुल्ममें विरेचन	„	पुनर्नवादिकल्क	„
तुम्बरुचूर्ण	५८०	गुल्ममेंपथ्य	„	चित्रकादिकाढ़ा	„
वचादिचूर्ण	„	द्राक्षादिघृत	„	नाद्यादिकाढ़ा	„
त्रिवृत्तादिगुटी	„	आमलक्यादिघृत	५८५	पारदादिगुटी	„
स्नुह्यादिवटी	„	त्रायमाणघृत	„	मन्त्रादिधारण	„
दारुखट्कादिलेप	„	कफगुल्मनिदानवलक्षण	„	निम्बादिगुटी	„
दारुखट्कादियोग	„	सामान्यचिकित्सा	„	शठ्यादिकांकायनगुटी	„
स्थिरादिघृत	„	यवानीचूर्ण	„	यवान्यादिगोली	५९०
उदावर्त्त औरअफारामेंपथ्य	„	हिंग्वादिचूर्ण	„	स्वर्जिकावटी	„
अपथ्य	५८१	पिप्पल्यादिघृत	५८६	प्रवालपंचामृत	„
गुल्मरोगकर्मविपाक	„	कफगुल्मपथ्य	„	हिंग्वादिघृत	„
गुल्मनिदान	„	तिलादिलेपवसेंक	„	धात्रीघृत	५९१
गुल्मकारूप	५८२	सेंक	„	षट्पलाख्यघृत	„
संप्राप्ति	„	दशमूलादितैल	„	दधिकयोग	„
पूर्वरूप	„	त्रिवृतादिसर्पिः	„	स्नुहिक्षीरादिघृत	„
गुल्मकासाधारणरूप	„	विद्याधररस	„	अग्निमुखचूर्ण	„
निदानपूर्ववातगुल्म	„	नाराचरस	„	पिप्पल्यादिचूर्ण	„
वातगुल्मशास्त्रार्थ	„	द्राक्षादिकल्क	„	हिंग्वादिचूर्ण	„
सामान्यचिकित्सा	„	द्वन्द्वजगुल्मनिदानवलक्षण	„	चित्रकादिचूर्ण	„
सामान्यउपचार	„	सैंधवादितैल	„	त्रिफलादिचूर्ण	५९२
घून्यादियोग	„	नाराचरस	५८७	कुमारीयोग	„
मातुलिंगादियोग	„	करंजादिपुटपाक	„	नाराचचूर्ण	„
केतकीक्षारयोग	५८३	वरुणादिकषाय	„	पूतिकादिचूर्ण	„
वारुणीमंडयोग	„	वरुणादिकाढ़ा	„	हस्तिकर्ण्यादिचूर्ण	„
वातगुल्मेंहपुषादिघृत	„	वायवर्णादिकाढ़ा	„	हिंग्वादिचूर्ण	„
चित्रकादिघृत	„	काढ़ा	„	विद्याधररस	५९३
हिंग्वादिघृत	„	राजवृक्षादिपुटपाक	„	वड़वानलरस	„
त्र्यूषणादिघृत	„	अभयादियोग	„	गुल्मोदरगजारातिरस	„
तैलअमलतासका	„	संप्राप्तिपूर्वकस्त्रीगुल्म	५८८	उद्दामाख्यरस	„
कुष्ठादितैल	„	दन्त्यादिगुटी	„	गुल्ममेंरस	„
बिडंगादिकल्क	„	पलाशघृत	„	नागादिगुटी	„
गुग्गुलयोग	५८४	शताह्वादिकल्क	„	गुल्मरस	„

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
वज्रक्षार	५९४	सामान्यचिकित्सा	५९९	रक्तनारिकेलजलपान	६०३
क्षारगुल्मादिपर	〃	गोमूत्रपान	〃	कफजमूत्रकृच्छ्रनिदान	〃
वर्ति	〃	दुग्धपान	〃	सामान्यचिकित्सा	〃
घविकासव	〃	पुष्करादिकाढ़ा	६००	एलाचूर्ण	〃
कुमारीआसव	५९५	दशमूलादिकाढ़ा	〃	सितवारुणकादिचूर्ण	〃
दन्तीहरीतकीतैल	〃	एरण्डादिकाढ़ा	〃	संनिपातमूत्रकृच्छ्रनिदान	〃
चिंचाशंखवटी	〃	बाह्लीकादिकाढ़ा	〃	क्वाथ	〃
क्षारादिचूर्ण	५९६	नागरादिकाढ़ा	〃	दुग्धयोग	६०४
सूर्यपुटीशंखद्राव	〃	नागबलादिदुग्धपान	〃	यवक्षार	〃
द्वितीयशंखद्राव	〃	हिंगुपंचकचूर्ण	〃	गोकंटकादिलेह	〃
क्षाराष्टक	〃	पुष्करचूर्ण	〃	शल्यजमूत्रकृच्छ्रलक्षण	〃
शरपुंखक्षार	〃	हरिणशृंगभस्म	〃	सामान्यचिकित्सा	〃
गुल्ममेंपथ्य	〃	हिंग्वादिचूर्ण	〃	लोहभस्मयोग	〃
अपथ्य	५९७	ककुभत्वक्चूर्ण	〃	रसपान	〃
हृद्रोगकर्मविपाक	〃	कुटक्यादिचूर्ण	〃	पुरीषजमूत्रकृच्छ्र	〃
प्रायश्चित्त	〃	हरीतक्यादिचूर्ण	६०१	सामान्यचिकित्सा	〃
ज्योतिःशास्त्राभिप्राय	〃	पाठादिचूर्ण	〃	क्वाथ	〃
हृद्रोगनिदान	〃	गोधूमादिचूर्ण	〃	आमलक्यादिक्वाथ	〃
संप्राप्ति	〃	अल्लभकघृत	〃	एलाचूर्ण	〃
वातजहृद्रोग	५९८	यष्ट्यादिघृत	〃	खर्जूरादिचूर्ण	〃
पंचमूलकाढ़ा	〃	बलादिघृत	〃	त्रिफलादिकल्क	६०५
पिप्पल्यादिचूर्ण	〃	हृदयार्णव	〃	अश्मरीजन्यमूत्रकृच्छ्र	〃
पुष्करादिकल्क	〃	रसायन	〃	क्वाथ	〃
पुनर्नवादितैल	〃	हृद्रोगमेंपथ्य	〃	एलादिक्वाथ	〃
पित्तजहृद्रोगनिदान	〃	अपथ्य	〃	शुक्रजमूत्रकृच्छ्र	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	मूत्रकृच्छ्रकर्मविपाक	६०२	शास्त्रार्थ	〃
द्राक्षादिचूर्ण	〃	ज्योतिःशास्त्राभिप्राय	〃	तृणपंचमूलघृत	〃
श्रीपर्ण्यादिरेचन व वमन	〃	मूत्रकृच्छ्रनिदान	〃	बलादिक्षीर	〃
क्षारहूरादिचूर्ण	〃	संप्राप्ति	〃	पथरीशर्करानिदान	〃
अर्जुनादिक्षीर	〃	वातजमूत्रकृच्छ्रनिदान	〃	मूलपंचकयोग	〃
कसेरूकादिकाढ़ा	〃	चिकित्सा	〃	दाड़िमादिरसपान	६०६
कफजहृद्रोगनिदान	९९	काढ़ा	〃	निदिग्धिकारसपान	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	एलादिचूर्ण	〃	यवक्षारपान	〃
त्रिवृत्तादिचूर्ण	〃	पित्तजमूत्रकृच्छ्रनिदान	〃	पाषाणभेदक्वाथ	〃
सूक्ष्मैलादिचूर्ण	〃	कुशकाशादिकाढ़ा	〃	हरीतक्यादिक्वाथ	〃
संनिपातजहृद्रोगनिदान	〃	शतावर्यादिकाढ़ा	६०३	पाषाणभेदादिकाढ़ा	〃
चिकित्सा	〃	एर्वारुबीजपान	〃	गोक्षुरादिकाढ़ा	〃
कृमिजहृद्रोगनिदान	〃	द्राक्षादिकल्क	〃	हरीतक्यादिकाढ़ा	〃
हृद्रोगकेउपद्रव	〃	नारिकेलजलपान	〃	यवादिकाढ़ा	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
कंटकादिघृत	६०६	गोधावन्यादिकाढ़ा	६१२	सामान्यचिकित्सा	६१६
घृतावर्यादिघृत	〃	दर्भमूलादिकाढ़ा	〃	यवक्षारयोग	〃
त्रिकंटकादिगूगल	६०७	गोक्षुरादिकाढ़ा	६१३	कुटकयोग	〃
खदंष्ट्रादिलेप	〃	वरुणादिकाढ़ा	〃	शर्कराश्मरीनिदान	〃
किंशुकस्वेद	〃	शतावर्यादिस्वरस	〃	शर्कराश्मरीकाअसाध्यलक्षण	〃
आखुविट्कल्क	〃	तिलक्षारयोग	〃	पाषाणभेदरस	६१७
त्र्यूषादि	〃	कर्पूरवर्ति	〃	त्रिविक्रमरस	〃
मंथादियोगत्रय	〃	निर्दग्धिकास्वरस	〃	रसभस्मयोग	〃
हरिद्रादियोग	〃	शिलाजतुयोग	〃	लघुलोकेश्वररस	〃
इक्षुरसपान	〃	कर्कटीबीजादिचूर्ण	〃	गन्धर्वादिकल्क	〃
कुटजयोग	६०८	भद्रादिचूर्ण	〃	तिलादिक्षार	〃
लघुलोकेश्वर	〃	स्वगुप्तादिचूर्ण	〃	शिलाजीतयोग	〃
चन्द्रकलारस	〃	उशीरादिचूर्ण	〃	हिंग्वादियोग	〃
बृहद्गोक्षुराद्यवलेह	〃	क्षौद्रादिघृत	६१४	शृंगवेरादिकल्क	〃
मूत्रकृच्छ्रपथ्य	६०९	गोक्षुरादिघृत	〃	तिलक्षारादियोग	〃
अपथ्य	〃	चित्रकादिघृत	〃	मंजिष्ठादिचूर्ण	〃
मूत्राघातनिदान	६१०	मूत्राघातमेंपथ्य	〃	त्रिकंटकादिचूर्ण	६१८
मूत्राघातकेद्वादशभेद	〃	अपथ्य	〃	केशरयोग	〃
वातकुण्डलिकालक्षण	〃	अश्मरीनाम पथरीरोग कर्म		पाषाणभेदीरस	〃
अष्ठीलालक्षण	〃	विपाक	६१५	तिलपुष्पक्षारयोग	〃
वातवस्तिकालक्षण	〃	शमन	〃	गोपालकर्कटीमूलकल्क	〃
मूत्रातीतलक्षण	〃	ज्योतिषशास्त्राभिप्राय	〃	अर्कपुष्पीकाकल्क	〃
मूत्रजठरलक्षण	〃	अश्मरीनिदान	〃	शतावरीमूलरस	〃
मूत्रोत्संगकालक्षण	〃	संप्राप्ति	〃	वरुणादिकाढ़ा	〃
मूत्रक्षयकालक्षण	〃	दृष्टान्त	〃	काढ़ा	〃
मूत्रग्रंथिकालक्षण	〃	पथरीकापूर्वरूप	〃	शिग्रुमूलकाढ़ा	〃
मूत्रशुक्रलक्षण	〃	सामान्यलक्षण	〃	शुंठिकषाय	〃
उष्णवातकालक्षण	६११	वातकीपथरीकालक्षण	〃	शुंठ्यादिकाढ़ा	〃
मूत्रसादकालक्षण	〃	सामान्यचिकित्सा	〃	आकल्लादिकाढ़ा	〃
विड्विघातकालक्षण	〃	शुंठ्यादिचूर्ण	〃	कुलथिक्काथ	६१९
असाध्यलक्षण	〃	यवादिघृत	〃	कूष्माण्डस्वरस	〃
वस्तिकुण्डलिकालक्षण	〃	वीरतर्वादिकाढ़ा	〃	वरुणादिघृत	〃
साध्यासाध्यलक्षण	〃	वरुणमूलक्काथ	〃	पाषाणभेदपाक	〃
मूत्राघातसामान्यचिकित्सा	〃	पित्तकीपथरीकेलक्षण	६१६	वरुणादिगुड़	〃
गोक्षुरादिवटी	६१२	पाषाणभेदक्काथ	〃	अश्मरीपथ्य	६२०
शर्वारुबीजादिकल्क	〃	कफाश्मरीनिदान	〃	अपथ्य	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	बालकोंकीशिग्रुक्काथ	〃	प्रमेहकर्मविपाक	〃
वीरतर्वादिकाढ़ा	〃	शुक्राश्मरीलक्षण	〃	प्रायश्चित्त	〃
त्रिफलादिकाढ़ा	〃	इसकेउपद्रव	〃	सशूलमेहकर्मविपाक	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
प्रायश्चित्त	६२०	पित्तप्रमेहपर ६ काढ़े	६२४	अश्वगंधादिपाक	६२९
वातमेहकर्मविपाक	〃	क्षारमेह	〃	शालमपाक	〃
मधुमेहकर्मविपाक	〃	हारिद्रमेह	〃	द्राक्षापाक	〃
प्रायश्चित्त	〃	मंजिष्ठमेह	〃	अभ्रकयोग	〃
प्रमेहनिदान	६२१	शोणितमेह	६२५	नागभस्मयोग	〃
कफादिप्रमेहसंप्राप्ति	〃	दुष्टरक्तजप्रमेह	〃	गंधकयोग	〃
कफादिजन्य प्रमेह । साध्या-		नीलमेह	〃	शिलाजीतयोग	〃
साध्य	〃	सर्पिमेह	〃	स्वर्णमाक्षिकभस्मयोग	६३०
प्रमेहमेंदोषदूष्यसंख्या	〃	छिन्नादिकाढ़ा	〃	बहुमूत्रमेहनिदान	〃
पूर्वरूप	〃	हस्तिमेह	〃	त्रिफलादियोग	〃
प्रमेहकासामान्यलक्षणत्रकारण	〃	वसामेह व हस्तिमेह	〃	देवदार्व्यारिष्ट	〃
कफके १० प्रमेहोंकेनिदान	६२२	क्षौद्रमेह व वसामेह	〃	लोध्रासव	६३१
पित्तप्रमेहके ६ प्रकार	〃	कफपित्तजप्रमेहपर	〃	तालकेश्वररस	〃
क्षारादिप्रमेहलक्षण	〃	कफवातजप्रमेहपर	〃	बंगेश्वररस	〃
वायुकेप्रमेह ४	〃	पित्तवातजप्रमेहपर	〃	आनन्दभैरवरस	〃
वसादिमेहोंकेलक्षण	〃	त्रिफलादिक्काथ	〃	प्रमेहबद्धरस	〃
कफकेप्रमेहोंकाउपद्रव	〃	पलाशपुष्पकाढ़ा	६२६	हरिशंकररस	〃
पित्तकेप्रमेहोंकाउपद्रव	६२३	प्रमेहचिकित्सा	〃	मेघनादरस	〃
वायुकेप्रमेहोंकेउपद्रव	〃	बिडंगादिकाढ़ा	〃	नींबबीजकल्क	〃
असाध्यलक्षण	〃	प्रमेहमेंचणकयोग	〃	मेहारिरस	〃
स्त्रीकेप्रमेह न होनेकाकारण	〃	प्रमेहमें ४ योग	〃	चन्द्रोदयरस	६३२
असाध्यलक्षण	〃	शालादिकल्क	〃	बंगेश्वररस	〃
मधुमेहोत्पत्तिकारण	〃	बंग व नागभस्मयोग	〃	मेहकुंजरकेशरी	〃
दोप्रकारमधुप्रमेहकाकारण	〃	द्विनिशादिहिम	〃	पंचलोहरसायन	〃
आवरणलक्षण	〃	गुडूची व धात्रीरसयोग	〃	महाबंगेश्वररस	〃
मधुमेहप्रवृत्तिनिमित्त	〃	अंकोल्यादियोग	〃	बंगभस्मरस	〃
लोध्रादिकाढ़ा	〃	भूधात्र्यादियोग	〃	वसन्तकुसुमाकर	६३३
कफप्रमेहपर १० काढ़े	〃	कतकबीजयोग	〃	जलत्रामृतरस	〃
घनेमेहपर	६२४	शाल्मलीस्वरस	६२७	प्रमेहपिटिका	〃
पिष्टमेह	〃	एलादिचूर्ण	〃	पिटिकाकारण	〃
सिकतामेह	〃	कर्कट्यादिचूर्ण	〃	पिटिकालक्षण	〃
उदकप्रमेह	〃	त्रिफलाचूर्ण	〃	असाध्यपिटिका	६३४
सांद्रमेह	〃	गूगल	〃	प्रमेहसाध्यलक्षण	〃
लालाप्रमेह	〃	गोक्षुरादिगूगल	〃	पिटिकाकेउपद्रव	〃
शुक्रप्रमेह	〃	चन्द्रकलावटी	〃	पिटिकाचिकित्सा	〃
शीतप्रमेह	〃	चन्द्रप्रभावटी	〃	न्यग्रोधादिचूर्ण	〃
इक्षुप्रमेह	〃	सिंहामृतघृत	६२८	पिटिकालेप	〃
सुराप्रमेह	〃	हरिद्रातैल	〃	पथ्य	〃
पित्तमेहपरचारकाढ़े	〃	पूगपाक	〃	अपथ्य	६३५

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मेदोनिदान	६३५	उदरकीसंप्राप्ति	६३९	विडंगादिचूर्ण	६४३
वर्द्धमानमेदकेउपद्रव	〃	उदररोगकासामान्यलक्षण	〃	यवासादिचूर्ण	〃
मेदकास्थान	〃	उदररोगकीसंख्या	〃	वज्रक्षार	〃
मेदवृद्धिमेंदीप्ताग्निकारण	〃	वातोदरलक्षण	〃	क्षारादियोग	〃
वद्धमेदमेंनाशकारण	〃	तक्रपान	६४०	क्षारभावनापीपली	〃
अतिमेदबढ़नेकापरिणाम	६३६	चूर्णकषाय	〃	अर्कपत्रक्षार	६४४
स्थूललक्षण	〃	शिलाजतुचूर्ण	〃	अग्निमुखलवण	〃
हरीतक्यादि	〃	कुष्ठादिचूर्ण	〃	रोहितघृत	〃
सामान्ययोग	〃	समुद्रादिचूर्ण	〃	यूष	〃
चव्यादिचूर्ण	〃	वातोदरघृत	〃	चित्रकादिघृत	〃
फलत्रिफलादिचूर्ण	〃	पित्तोदरलक्षण	〃	रक्तस्राव	〃
सामान्यचिकित्सा	〃	चिकित्सा	〃	शिरावेध	〃
नवकगुग्गुल	〃	सातलादिघृत	〃	यकृतोदर	〃
मेदउपचार	〃	पित्तादिघृत	〃	दोषसम्बन्ध	〃
तालपत्रक्षारयोग	〃	कफोदरलक्षण	६४१	पिप्पलिकल्क	६४५
लोधरसादिलेप	〃	चिकित्सा	〃	सामान्यचिकित्सा	〃
हरीतक्यादिउद्वर्त्तन	〃	सन्निपातोदरनिदान	〃	बद्धगुदोदर	〃
शीतलादिउद्वर्त्तन	〃	चिकित्सा	〃	स्नुह्यादिचूर्ण	〃
क्वाथ	६३७	नागरादितैल	〃	वस्तिप्रकार	〃
त्र्यूषणादिलेह	〃	सन्निपातोदरदूष्योदरसंज्ञकल०	〃	उत्तरवस्ति	〃
उबटना	〃	शंखिनीघृत	〃	क्षतोदर	〃
बबूलादिउद्वर्त्तन	〃	प्लीहोदरकालक्षण	〃	वेधक्रिया व पानक्रिया	〃
वांसादिलेप	〃	प्लीहोदरचिकित्सा	६४२	वेधस्थान	〃
त्रिफलादितैल	〃	शरपुंखामूलकल्क	〃	वेधकरणकाप्रकार	〃
महासुगन्धतैल	〃	तक्र	〃	जलकाढ़नेविपर्यनियम	〃
षड्वाग्निरस	〃	रोहितादिकल्क	〃	पानीकाढ़नेकाघावपरलेप	〃
तालभस्मयोग	६३८	पिप्पल्यादिकाढ़ा	〃	जलोदरलक्षण	〃
त्रिमूर्तिरस	〃	शाल्मलिपुष्पपाक	〃	तक्र	६४६
मेदपरसामान्यउपचार	〃	लवणादितक्र	〃	जलोदरादिरस	〃
मेदरोगमेंपथ्य	〃	युक्तिक्षारयोग	〃	जलोदरपर	〃
अपथ्य	〃	एरंडभस्मयोग	〃	षण्मासनियम	〃
उदरकर्मविपाक	〃	भल्लातकादिमोदक	〃	साध्यासाध्यविचार	〃
प्रायश्चित्त	〃	सौभांजनकयोग	〃	असाध्यलक्षण	〃
जलोदरकर्मविपाक	〃	रक्तस्रावदाग	६४३	शास्त्रार्थ	६४७
शमन	६३९	शंखनाभिचूर्ण	〃	रेचन	〃
उदरकर्मविपाक	〃	कुष्ठादिचूर्ण	〃	ज्योतिष्मतीतैल	〃
शमन	〃	लघुहिंग्वादिचूर्ण	〃	गोमूत्रयोग	〃
प्लीहोदरकर्मविपाक	〃	सिंध्वादिचूर्ण	〃	उदरपर	〃
उदररोगनिदान	〃	नागवल्ली	〃	वर्द्धमानपीपली	〃

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
जलोदरपरयोग	६४७	दशमूलघृत	६४९	हरीतक्यादिकाढ़ा	६५१
देवदार्व्यादिलेप	„	नाराचघृत	„	पुनर्नवादियोग	„
कषाय	„	विन्दुघृत	„	पुनर्नवादिकाढ़ा	„
चव्यादिकाढ़ा	६४८	त्रिवृतादिघृत	६५०	शोफोदरचिकित्सा	„
देवद्रुमादि	„	हिंग्वादिघृत	„	माहिषमूत्रपान	„
नारायणचूर्ण	„	उदरपर	„	बिल्वादिकाढ़ा	„
हपुषादिचूर्ण	„	त्रैलोक्यडम्बर	„	ऊपरमें पथ्य	„
उदररोगपर	६४९	उदरपररेचन	„	अपथ्य	„
पटोलादिचूर्ण	„	इच्छाभेदीरस	„		
उदररोगपरघृत	„	शोफोदर	„		

इति निघण्टरत्नाकर भाषा के प्रथमखण्डका सूचीपत्र समाप्तहुआ॥



अथ निघण्टरत्नाकर भाषा प्रारभ्यते ॥

दूतपरीक्षा ॥ दूतकीचेष्टासे साध्य व असाध्य रोगीको वैद्यजन जानसक्ते हैं दृष्टान्त जैसे दूरसे धूमको देखकर अग्निका अनुमान करते हैं तैसे १ ॥ दूतलक्षण ॥ रोगीकीजातिका । सफ़ेदवस्त्र पहने हुये । कल्युकद्रव्य हाथमेंलिये । अथवा ब्राह्मण या क्षत्रियजातिहो। पानखाताहुआ। शीलस्वभाववाला। शुभवचन मुखसेबोलताहुआ ऐसादूत वैद्य बुलावनजाय तो श्रेष्ठहै २ ॥ दूसरे दूतलक्षण ॥ जो वैद्यके बुलानेको जाय तिस दूतके लक्षण कहते हैं । रोगीकीजाति हो । काणा, अन्धा, लूला, लँगड़ा नहींहोय । चतुरहोय । सफ़ेदकपड़े पहनेहुये घोड़ा या रथकी सवारीपर सवारहो। फलादिकहाथ मेंलिये ऐसा दूत श्रेष्ठ है ३ ॥ अयोग्यदूत ॥ जो दूत वैद्य बुलावन को जाय काले व लाल कपड़े पहनेहुये। हाथमें लकड़ीलिये। जटा वालोंकी शिरपर धारणकरे। अथवा मूँड़ मुड़ायेहुये। तेलमें भीजे कपड़े पहनेहुये। भयकारी वचन कहताहुआ। दरिद्री। रोवताहुआ। राख, कोइला, अंगारा, खोपरी, फांसी, मुशलहाथमें लियेहुये। सूर्य अस्तसमय जाय। चुपहोकर वैद्यकेपास बैठजाय। ऐसादूत यमरूप है ४ वैद्य बुलावनको स्त्री श्रेष्ठनहीं। दो २ मनुष्य वैद्य बुलावनको श्रेष्ठनहीं । अंगहीन व रोगी श्रेष्ठनहीं। शोकवाला व रोवताहुआ। अशुद्ध अमंगलवचन कहताहुआ। ऐसादूतश्रेष्ठनहीं । जोदूत वैद्य से दक्षिणदिशामें अंजलिबांधकर बैठजाय। व एकपैरसे खड़ारहै।

ऐसादूत श्रेष्ठनहीं ७॥ दूतशकुन ॥ शकुन शुभाशुभ साध्य व अ-
साध्यरोगी को जनायदेता है ८ वैद्यबुलावन को दूतके चलतेहुये
सौम्यशकुन बाजादिक अच्छेनहीं अंगारादिक प्रदीप्तशकुनअच्छे
हैं ९ ॥ दग्धादिक दिशासंज्ञा शुभाशुभ ॥ सूर्य्य की त्यागी दिशा दग्धा
है। सूर्य्य जिसदिशामेंजायगा वह धूमितानना है। सूर्य्यजिसदिशा
में है वह दीप्ताहै। प्रभातमें ऐशानी दग्धाहै। पूर्वादीप्ताहै। अग्नि
धूमितानना है बाकी पांचदिशा शान्ताहैं। आठप्रहर में सूर्य्यक्रम
से आठोंदिशाओं को भोगे है शान्ता दिशाओंमें मधुरबोलतेहुये
पीठपछि बाम दक्षिण शकुन श्रेष्ठ हैं। दग्धादिकमेंबोलतेहुयेशकुन
नेष्ठहैं १४ ॥ दूतके कहेहुये अक्षर शुभाशुभ ॥ दूतके मुखसे निकसे
अक्षर दुगनेकर तीन ३ का भागदेकर शून्यबचे तो रोगीमरै अंक
बचे तो आरोग्यहोय १५॥ दूत शुभाशुभ ॥ जोदूत वैद्यके पूर्वदिशा
व उत्तर पश्चिम ईशानदिशामें बैठे तो अच्छाहै। और दिशाओंमें
बैठे तो नेष्ठ है। जो दूत तृण राख कोइलादिक लिये बैठजाय तो
अच्छानहीं। लालमाला,लालवस्त्र,तृण, लाठी,दलकाटता,कीच
तेलमेंभीजा। चुची, नाक, माथाऊपर हाथ रक्खे व बालखींडाये
ऐसादूत नेष्ठहै ॥ दूत लक्षण ॥ रोगीकीजातिका अच्छीचेष्टावाला
जीवसंज्ञक दिशामेंबैठाहुआ। अच्छेसमयमेंआया दूतरोगीकोसु-
हेतुहै। जिस दिशामें प्राण पवन जाय वह दिशा जीव संज्ञक
अर्थात् वैद्यके सन्मुख दूत श्रेष्ठ है २० ॥ दूतकहे अक्षर शुभाशुभ।
दूतके मुखसे निकसे अक्षर तीनगुणेकर ८ आठका भागदेय
बचैतो मृत्युहोय। बिषमबचै तो आरोग्यहोय २१॥ रोगी पा-
हुये वैद्य को शुभाशुभ ॥ रोगीकी चिकित्सा करनेको चलतेहुये
में सौम्य अर्थात् बाजावगैरह शुभहैं। दीप्त याने अंगारादिक
नहीं २२ वैद्यके गमनमें हस्ती, ब्राह्मण,घोड़ा,बैल, फल,छत्र,
जलकुम्भ, स्त्री पुत्रवती, गौबछासहित,खंजरीटपक्षीसिद्धान्न।
पुष्प,वेश्या,चन्दनादिक शुभ हैं २४ हरिण,काक,वामें वैद्यगमन
शुभ हैं। कुत्ता, सर्प,मूषा, नकुल, मांस,दही,दूध,रूपा,गीदड़,
मुरदारोदन वर्जित, अग्नि प्रकाशित, सफ़ेद वस्त्र, ध्वजा, चित्त

आनन्द, यहशकुन वैद्यको शुभहैं और शकुनोंसे कहाहै २६॥ रोगी पासजाते वैद्यशकुन॥ छत्र, गौ, ब्राह्मण, कन्या, मांस, मदिरा, वेश्या गोरोचन, मंगलशब्द, राजा, अश्व, हस्ती, दही, स्तोत्रपाठ, संगीत, भयानक करुणा विहीन शब्दकरतेहुये क्रीड़ा रूप मनोहर मुखसे कहते हुये बालकादिक शुभ हैं २८ पुरुष नामक पक्षी बाम शुभ हस्ती खच्चर बिना स्त्री नामकपक्षी दक्षिणशुभ गौ गादड़ीबिना २९॥ अथवैद्यको अपशकुन ॥ बिलाव, गोह, कीरलीया, वानर ये जीवमार्ग छेदकरें तो अशुभ। रोगीके द्वारपै मंगल अमंगलरूप जानो ३०॥ वैद्य गमन निषिद्धकाल ॥ सन्ध्याकाल में, रात्रि में, स्नान, भोजन समय में, विपरीत कालविषे बुद्धिमान् गमन करे नहीं ३१॥ वैद्य रोगीविषयकनियम॥ वैद्य रोगीके मकान में शयनकरे नहीं। रोगी के घरका भोजन करे नहीं। बिनाबुलाये जाय नहीं। वैद्य रोगी के मुखऊपर मृत्यु प्रकटकरे नहीं ३२ चिकित्साकरे तिसे वैद्य कहते हैं। तिसके लक्षण कहते हैं ३३ वैद्यगुरु सकाशते शास्त्राऽर्थजानताहो। सम्पूर्ण कर्म्म क्रिया जानताहो। अपने हाथसे औषध करने वाला। हलका हाथकाहो। शुद्ध, शूरबीर, सम्पूर्ण रसादिक पास होवैं। चंचल। जल्द बुद्धिवाला। उद्योगी। प्रियबचन बोलनेवाला। सत्यधर्म्मवाला। ऐसावैद्य शुभहै श्रेष्ठहै ३५ श्रेष्ठवैद्य महाअसाध्य रोगीकी चिकित्साकरे नहीं। चतुरहोय। गुरुमुखसे पठनकियाहोय। सर्व कर्म्म चिकित्सा के देखेहुये। पवित्र हो वहवैद्य उत्तमहै ३६॥ अथनिषिद्धवैद्य ॥ पुरानेकपड़े पहनेहुये। क्रोधी । अत्यन्तगर्बवाला ग्रामग्राममें जानेवाला। बिनाबुलाया रोगीके पास आवै। ऐसे पांच प्रकार के वैद्य धन्वन्तरि समानभी प्रशंसाको प्राप्तनहीं होते ३७॥ वैद्यकर्त्तव्य ॥ रोगका निश्चयकर पीड़ाकी शांतिकरना यह वैद्यका वैद्यत्व है उमरकामालिक वैद्य नहीं है ३८ मनुष्य की १०१ मृत्यु हैं तिन्हों में १ मृत्यु कालसंयुक्त है बाकी सब रोग रूप साध्य हैं। काल सबीको ग्रसता है महामृत्युको दूरकरनेको कोई रसायन नहीं है ४० रोगी रोग शांतिके पीछे वैद्यको द्रव्यदेके पूजा नहीं करे तो रोगीका सुकृत पुण्य किया आधा वैद्यको मिलता है ४१॥ रोगीके

लक्षण॥ धन वाला। वैद्य। वशीभूत। अपनी प्रकृति जाननेवाला। धैर्य्यवाला। प्रकृतिजाननेवाला। वैद्यशास्त्रविषे निश्चयवाला। वैद्य कृत उपकारको जाननेवाला। पथ्य करने वाला। निज प्रकृतिवर्ण युक्त। सत्वगुण वाला। वैद्यकभक्त। जितेन्द्रिय। ऐसारोगी चिकित्सा करनेयोग्यहै ४३ रोगीसे आदिसभी द्रव्यकी अपेक्षा करते हैं द्रव्य बिना चिकित्सा होती नहीं इसकारणधन चिकित्सांगहै ४४॥ परिचारकलक्षण॥ स्नेहवाला। निन्दारहित। बलवान् रोगी की रक्षामें निपुण। वैद्य बचनमें निश्चयवाला। परिश्रमनहीं माननेवाला। दयावान्। पवित्र। चतुर। बुद्धिमान्। ऐसा रोगीके समीप रहनेवाला मनुष्य श्रेष्ठहै ४६॥ औषधलक्षण॥ वैद्य जिसद्रव्यसे रोगको हरते हैं वहद्रव्य औषधहै वहजिसतरहसे रोगनाशकहो तिसेकहते हैं बहुत रोगऊपरआरामकारक बहुल गुणयुक्त ऐसा औषधश्रेष्ठहै४७औषध आवश्यकता रोगीकीउमर बाकीहो तो पीड़ायुक्तऔषध बिनाभी जीवैहै औषध से पीड़ा दूर होती है ४८ उमर बाकीहो तबभी औषध बिना रोगीकी पीड़ा दूर नहीं होती दृष्टांत जैसे हस्ती कीचड़मेंखड़ा हुआ उपाय बिना निकस नहीं सक्ता तैसे ४९ उमर बाकी हो अरु चिकित्सा नहीं करे तो मरसक्ताहै जैसे दीपकमें तेलबाती होते भी पवनसे दीपक नष्टहोता है तैसे ५० साध्यरोगी चिकित्सा नहीं करे तो स्वल्पासाध्य हो स्वल्पासाध्य चिकित्सा नहीं करे तो असाध्यहो असाध्यकी चिकित्सा नहीं करे तो मृत्युहो ५१ जबतक श्वासआवै तबतक चिकित्सा करनी चाहिये कोई समयमें चिकित्सासे मरणप्रायभी जीवताहै ५२ आदिमें रोगीकी परीक्षाकरै पीछे औषधकी परीक्षाकरै पीछेऔषधरोगीको देवे समझकर ५३॥ निषिद्धरोगी॥ जार चोर, म्लेच्छ, ब्रह्महत्यावाला, मच्छीमारनेवाला, वैरी, ग्राममें कपट रचनेवाला ५४ जीवहिंसाकरनेवाला, मांसवेचनेवाला। ऐसेजनरोगी हों तो इन्होंकीचिकित्सा वैद्यकरैनहीं इन्होंकी चिकित्साकरनेसेवैद्य पापी होजाताहै ५५॥ रोगीकापरीक्षा॥ देखकर। स्पर्शकर। पूँछकर रोगीकी परीक्षाकरै चिकित्साके चारअंगहैं वैद्य १ द्रव्य २ परिचारक ३ रोगी ४ इनसबकी तैयारीमें चिकित्सा श्रेष्ठहै ५७–६।३।

२।४।७।६।४।३।१।१०।९। सब अंक या प्रमाणलिखै कोष्ठ ११ में अकारसे अन्त क कोष्ठ ११ में लिखै क अक्षरसे ह तक कोष्ठ ३३ में लिखै–ए ऐ ओ औ अः ये पांचअक्षरोंबिना, दूतके अरु रोगीके नाम अक्षर कोष्ठ क अक्षरसे संख्याकर ८ का भाग देकर अधिकबचै तो रोगीजीवै।कमबचैतोरोगीकीमृत्यु।समबचैतो कष्ट६ २

६	३	२	४	७	६	४	३	१	१०	९	०
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ॠ	ऌ	ॡ	अं	०
क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	०
ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	०
ब	भ	म	य	र	ल	व	श	ष	स	ह	०

अ इ उ ए ओ पांच अक्षरपांच कोष्ठमें लिखै क अक्षरसे ह तक ३० कोष्ठमें लिखै–ङ ञ ण क्ष इनअक्षरों बिना १५ तिथिकोष्ठ १५ में लिखै–सात वार ७ कोष्ठमें लिखै–३ कोष्ठमें शून्य लिखै रेवती से आदि २७ नक्षत्र कोष्ठ २७ में लिखै ८ कोष्ठमें शून्य लिखै ऐसेचक्र तैयार कर क्रमसे बाल, कुमार, युवा, वृद्ध, मृत, संज्ञकहै। बालककुछ लाभकारी। कुमार अर्द्धलाभकारी। युवा सिद्धिदेनेवाला। वृद्धहानिकारक। मृत मृत्युदेनेवाला। दूतकेवचनके अक्षर जिस कोष्ठमें मिलै वह बालसंज्ञकहै अक्षरभी उसीकोष्ठमें वही तिथि हो तो कुमारबार भी मिले तो युवाहै नक्षत्रादि सबमिले तो मृतहै ऐसे विचारलेवै ६९ ॥ स्वप्नाध्याय॥ शुभाशुभ भाविफल मनुष्योंका कहते हैं। योग्य स्वप्न कहते हैं ७१ रात्रिका पहिला प्रहरमें स्वप्न आवै तो फल १ वर्षमें करै २ प्रहरमें आवै तो ६ महीने में फलकरै ३ प्रहरमें स्वप्न आवै तो ३ महीने में फलकरै ४ प्रहर में आवै तो स्वप्न १ महीनेमें फलकरै प्रातःकालमें स्वप्न आवै तो १० दिनमें फलकरै ७२ स्वप्नमें गौ, बैल, हस्तीपर सवारहोवै कै रोवताहुआ कै अपने को मराहुआजाने कैअयोग्यस्त्रीसे भोगकरै-ऐसे स्वप्नरोगीको अच्छे हैं जोस्वप्नमेंराजाको कैहस्ती कै अश्व कै सोना कैबैल कै गौ इनको

देखै तो कुटुम्बसहित आप आनन्दित होवै ७५ स्वप्नामें हवेली ऊपर अग्रभागमें बैठकर अन्न भोजनकरै व समुद्रको तिरै। ऐसा स्वप्नाआवै तो दासकुल जन्माहुआभी राजाहोवै ७६ दीपक, फला हुआ वृक्ष, कन्या, चक्र, ध्वजा, रथ स्वप्ना में मिलै तो मनुष्य को अवश्य राज्यमिलै ७७ जो स्वप्नामें मनुष्यका मांस कच्चा भोजन करै तो याको फलसुनो ७८ पैरकामांस भोजनकरै तो ५००) रु० लाभहो। दाहिनेहाथकामांस भोजनकरै तो १०००) रु० कालाभ हो मस्तकका मांस भोजनकरै तो राज्यमिलै हृदयका मांस भोजन करै तो राज्य दिवानहो ७९ स्वप्नामें जूतीजोड़ा व ध्वजा चक्रमिलै पीछे जागे तो व निर्मल यानीपइनी तलवार मिलै तो परदेशगमन हो ८० स्वप्नामें जहाज व नाव ऊपर सवारहो विस्तारवाली नदी को तरै तो कहीं गमनहो पीछे जल्दी आगमनभी हो ८१ स्वप्नामें दांतगिरपड़ें व केशकाटेजावैं तो धननाशहोकर पीड़ाहो ८२ स्वप्ना में जिसके सामने शृंगवाला पशु व शूर व वानर व सर्पादिक दौ-ड़ते आवैं तो राजासे भयजानो ८३ स्वप्नामें धूलिसे या तैलसे या घृतसे या और सचिक्कण वस्तुसे अपनेको भीजाहुआ देखै तो रोग आयाजानो ८४ लालकपड़े पहनेहुये व लालचन्दन धारणकरै जो नारी स्वप्नामें पुरुषको प्राप्तहो तो कोई हत्या बनआवै ८५ काले कपड़े पहनेहुये कालातिलक लगायेहुये स्वप्नमें नारी प्राप्त हो तो मृत्युकरै ८६ सफ़ेदकपड़े पहनेहुये सफ़ेद फूलोंकीमाला धारणकरे हुये नारी पुरुषको मिले तो चारों तरफ़से लक्ष्मी की प्राप्तिहो ८७ जो स्वप्नामें अपना शिरमुड़ाये देखै व अपना विवाहदेखै व अपने घरमें नाच गानादिक देखै तो मृत्युजानो ८८ जो स्वप्ना में नंगे व मूंडमुड़ायेव कालेकपड़े पहनेहुये लंगड़े, लूले, अन्धे, काणेवकाला रंग शरीरवाले, फांसीहाथमें लिये व शस्त्र हाथमेंलिये बांधतेमारते हुये दक्षिणदिशामें हो भैंसा, ऊँट, गधापर सवारहुये दिखाईदेवै तो अशुभभये स्वप्ना अच्छेपुरुषको आवै तो बीमारहोवैबीमारको आवै तोजल्दीमृत्युहो ९१जोस्वप्नमें ऊँचेस्थानसे नीचेगिरपड़े व जलमें डूबजाय व अग्निमें जलजावै व सिंहादिक मारैं या जलजीव नि-

गलजाय जिसके नेत्र जातेरहैं व दीपक बुझजाय व तैल व मदिरा पीवै या लोह तिल मिलै पक्वान्नमिले व भोजनकरे व कुवांमें गिर पड़े व पातालमें चलाजाय ऐसे स्वप्न बुरे हैं अच्छे मनुष्यको तो बीमारी आवै रोगीको आवैतो मृत्युहो ९४ बुरास्वप्नआवैतोकिसी से कहै नहीं प्रातःकालमें स्नानकर सोना और तिलका दानकरै देवताओंके स्तोत्रका पाठकरै रात्री में देवता के मन्दिरमें बासकरै तीनदिनतक इसकर्मसे दुःस्वप्न दोष दूरहो ९६ स्वप्नमें देवता व राजा व जीवतेहुये मित्र व ब्राह्मण व गो जलतीहुई अग्नि व तीर्थ इनको देखे तो सुख प्राप्तहो ९७ स्वप्नमें अशुद्ध जलकी नदी को तिरके पारजाय तो शुभ वैरियोंको जीतले तो शुभ बैल, हस्ती घोड़ा पर सवार हो तो शुभ ९८ स्वप्न में अयोग्य नारी भोग व विष्ठा लेपन व रोवना व अपनी मृत्यु व कच्चामांसका भोजन ये सब धन सुखका देनेवाले हैं ९९ स्वप्नमें जोंक व मकड़ी व सर्प व माखी जिसको काटलेवै रोगी हो तो बीमार हो अच्छा हो तो धन मिले १०० स्वप्नमें सफ़ेद फूल व कपड़े व मांस व मच्छीफलजो रोगीको मिले तो अच्छे हैं १०१ स्वप्नमें सूर्य्यका मण्डल व चन्द्र-मण्डलदीखे तो रोगीको आराम अन्यको धनमिले १०२ स्वप्नमें जिसके दाहिनेहाथको सफ़ेद सर्प्पडसलेवै तिसको १०००) रु० का लाभ दशदिन भीतरहो १०३ स्वप्नमें बेड़ी जापड़े व फांसी गलमें बँधे तो सुख हो प्रतिष्ठा प्राप्त हो १०४ स्वप्न में रुधिर को पीवै या मदिराको पीवे तो ब्राह्मणको विद्या प्राप्तहो अन्य को धनमिले १०५ स्वप्नमें दूध पीवै झाग सहित बर्त्तनमें धराहुआ तो दिन १० तक धनमिले कछु सन्देह नहीं १०६ नवीनचावल का खाना व दूधपीना सफ़ेद कपड़े व माला धारण करना स्वप्नमें श्रेष्ठ धनदायकहैं १०७ स्वप्नमें आसन व शय्या व रथ पालकी व शरीर व अश्वादिक ये सब अग्निसे जलते हुये देखे फिरजागे ऐसा स्वप्न आवे तो लक्ष्मी चारोंतरफ़से आवै १०८ जो स्वप्न में तालाबमें दही दूध का भोजन कमल के पत्ता में करेतो चक्रवर्त्ती राजाहो १०९ स्वप्नमें जिसके शरीर से लोहू निकसे या स्नानकरे

या शिर काटाजावे तिसको राज्यमिलै ११० गधा, ऊँट, भैंसा इन के जुड़ेहुये रथपै सवारहो ऐसास्वप्न आवे तोमृत्यु जानो १११॥ रोगीकी अष्टस्थानपरीक्षा॥ रोगीके आठस्थान देखे नाड़ी १ मूत्र २ मल ३ जिह्वा ४ शब्द ५ स्पर्श ६ नेत्र ७ शरीरकाआकार८-११२ रोगीकी पहले नाड़ीदेखे दोषकोप ज्यादाहो याक्रमहो नाड़ीकी आदि में व अन्तमें स्थिरतादेखे वैद्यजन ११३ दृष्टान्त जैसे वीणामेंप्राप्त तन्त्री याने स्वर सम्पूर्णरोगोंको प्रकाशकरे है तैसे नाड़ी भी वैद्य हाथमें प्राप्तहुई सबरोगोंको प्रकाश करै है ११५ सबरोगोंका कारण कोपको प्राप्तहुये मलहै मल कोप कारण नाना प्रकारके अपथ्यवस्तु भोजनादिक हैं ११७ सब रोगोंके आदिमें नाड़ी व मूत्र व जिह्वा इनकी परीक्षा करै पीछे रोगीकी चिकित्सा करै ११८ जो वैद्य मूत्रका व जिह्वा के लक्षणको नहीं जाने सो वैद्य मनुष्य को मारैहै यशको प्राप्त नहीं होवै ११९ वैद्य देशकाल व रोगीका बलाबल देखकै चिकित्सा करै तो यश कीर्त्ति को प्राप्तहो १२०॥ नाड़ीपरीक्षा॥ वैद्य दाहिने हाथ से रोगीके अंगुष्ठमूल के नीचे नाड़ीका स्पर्श करै रोगकी परीक्षा के वास्ते १२१ वैद्य स्थिरचित्त व शान्त मनवाला मनसे सबहाल जानकर अपनी तीनअंगुलियों से रोगीके दाहिनेहाथ की नाड़ी को स्पर्श करै १२२ पुरुष रोगी की नाड़ी पहले दाहिनेहाथ की देखे तिसमें सबहाल देखे व रोग वाली स्त्रीकी नाड़ी पहले बायें हाथ की देखे तिससे सबहालजाने पुरुषकी नाड़ी मुख्य दाहिनी स्त्री की नाड़ी बामी १२३ वैद्यजन ऐसे नाड़ीदेखै रोगीकाहाथ लम्बाकरावे कछुकटेढ़ाहाथकी अंगुली सब पसारके हाथको न हलावे न कड़ाकरै ऐसीविधि कराय के अंगुष्ठमूलमें नाड़ीदेखे प्रभातसमयमें १२४ तीनबार नाड़ीपरीक्षा करै धारणकरै फिर छोड़दे ऐसे ३ बार परीक्षाकरै बुद्धिसे विचार कर रोगकोनाड़ीद्वाराप्रकटकरै १२५ बैद्य ३ अंगुलीकरके ३ दोषों की नाड़ी क्रमसे देखे गति मन्द व मध्य व तीक्ष्ण तीनदोषोंकी देखै १२७ वात पित्त कफ व बातपित्त व बातकफ व सन्निपात व साध्य व असाध्य सबको नाड़ी कहदेवे है १२८ नाड़ीनाम स्नायु १ नाड़ी २

हींस्रा ३ धमनी ४ धारिणी ५ धरा ६ तन्तुकी ७ जीवनज्ञाना ८ ये नाड़ीके नामहैं १२९ स्नान करे पीछे व भोजन करे पीछे तेल लगाये पीछे भूखा व प्यासाकी नाड़ी जानीजावेनहीं १३० अंगुष्ठ मूलमेंधमनीनामनाड़ी जीव साक्षिणी है तिसकी चेष्टासे सुखदुःख शरीरका सब वैद्य जानतेहैं १३१ वैद्यनारीकी नाड़ी बायांहाथ की व बायांपैरकी देखे नाड़ीज्ञान अभ्याससे होताहै १३२ बातनाड़ी का देवता ब्रह्माहै पित्तनाड़ीका महादेव है कफनाड़ी का बिष्णु है १३३ अग्रभागमें वातनाड़ीहै मध्यमेंपित्तनाड़ीहै अन्तमेंकफनाड़ी है १३४ वातकीनाड़ी बक्रगतिहै पित्तकी उछलती हुई है कफ की मन्दगतिहै सन्निपातकी अत्यंत जल्दी चलतीहै १३५ बातनाड़ी सर्प व जोंककी गति चलतीहै पित्तकी नाड़ी काक मंडूककी गति चलती है कफकी नाड़ी हंस व मयूर व कपोत व मुरगाकी गतिचलै है बातअधिकमें तर्जनी अंगुली के नीचे प्रकटहो है १३८ बारबार सर्पगति व बारबार मींडकगति तर्जनीके व मध्यमाकेबीचमें अधिक प्रकटहोहै टेढ़ी चलतीहै धमनी नाड़ी बातपित्तसे १३९ सर्प हंस गति नाड़ी बातकफकी होहै अनामिकामें व तर्जनी में प्रकट होहै बातकफ अधिकसे मन्द व बक्रगतिहोहै १४१ सिंह हंसगतिनाड़ी पित्तकफकीहोहै पित्तकफ जो अधिकहो तो मध्यमा व अनामिकामें रहै प्रकटहोहै व पित्तकफअधिकसेनाड़ी कूदती व उछलतीहुईचलै है १४२ जैसे काष्ठ खोदनेवालापक्षी विशेष याने खाती चिड़ाकाष्ठ को काटे है बेगसे ठहर २ तैसे सन्निपात नाड़ी ठहर २ चलैहै सन्नि-पातसे प्रकट ३ अंगुलियोंमें रहैहै १४४ जोनाड़ी एकजगह अपना स्थानमें ३० बार एकहीगतिबोलै तो रोगी जीवै व ठहर २ चले तो रोगीको मारै १४५ मन्द २ नाड़ी व शिथिल २ चले तो व ठहर२ चले तो अतिसूक्ष्म कभी अंगुष्ठमूलमें कभी कन्धामें जाबोलै ऐसी नाड़ी सन्निपातकी असाध्यहै मनुष्यकीमृत्युकरै १४८ पहिलेनाड़ी पित्तगति पीछे वातगति पीछे कफगतिको धारणकरै अपनास्थान से भ्रमणकरै चक्रादिवत् भयानकता को धारणकरै व सूक्ष्मताको धारणकरै ऐसी नाड़ीको असाध्यकहतेहैं वैद्यजन १५० जो नाड़ी

गम्भीरहो वह मांसमें वहनेवाली है ज्वरवेगसे नाड़ीगरम व वेग-
वाली होती है १५१ काम क्रोधवालाकी नाड़ी वेगवाली होती है
चिन्ता भयवाला की नाड़ी क्षीण अल्पहोती है मन्दाग्नि व धातु
क्षयवालाकी नाड़ी अतिमन्दहोती है १५२ रुधिरकरकेपूर्णजोनाड़ी
है सो गरम व भारी व सम व हलकीचलैहै दीप्ताग्निवालाकी वेग
से चलै है १५३ भूखाकी नाड़ी चपला चलैहै तृप्तकी नाड़ीस्थिर
चलैहै मृत्युसे १ दिन पहलेनाड़ीडोरूके आकार होजाती है१५४
जो नाड़ी कांपै अत्यन्त अंगुलियों में स्पर्शकरेतो बार२ असाध्य
जानकर ऐसे बीमारको वैद्यजन त्याग देवैं १५५ जिसकी नाड़ी
स्थिरहो कभी२ बिजलीकी तरह चमके ऐसाबीमार १ दिनमें मरै
१५६ जिसकी नाड़ी जल्दी चलै मलसे भरी शीतलहोवै तिसकी
दोदिनमें मृत्युजानो १५७ जिसकी बात नाड़ी जल्दीचलै कभी२
शीतलहो सचिक्कण पसीनाआवै ऐसामनुष्य ७ दिन भीतर मृत्यु
को प्राप्तहोवै १५८ देहमें शीतलता हो श्वास रोगहो नाड़ी शीघ्र
चलै तिसकी मृत्यु १५ दिन भीतर हो १५९ जिसके बात नाड़ी
बोलैनहीं शरीर शीतलहो भीतरसेबाहर ग्लानिहो मन्द२नाड़ीचलै
तिसकी तीनदिनभीतर मृत्युजानो १६० जिसकीनाड़ी अतिसूक्ष्मा
हो व अतिवेगवालीहो व शीतलाहो तिसकी थोड़ीउम्र कहो१६१
जिस रोगीकी नाड़ी बिजलीकीतरह कभीचलै कभी बन्दहोवै ऐसा
रोगी मरै १६२ जिसकी तिरछी व सर्पगति व गरम व अति वेग-
वालीहो व कंठमें कफहो तिसका जीवना दुर्लभहै अवश्यमरै१६३
जिसकी नाड़ी अतिवेगवाली हो शीतल हो या चंचलहो नासिका
का आधार तक चलती दीखै तो १ पहर भीतर मृत्युहोवै १६४
जिसकी नाड़ी मलयुक्त जल्दीचलै व दुपहर में अग्नि समान ज्वर
हो ऐसा मनुष्य १ दिन जीकर दूसरे दिन मरै १६५ जिसकेहाथ
की नाड़ी वैद्यको मिले नहीं पैरमें नाड़ी दीखे मुख प्रकाशमान हो
ऐसे रोगीको दूर से त्याग देवै १६६ बात पित्त कफ ये तीनोंजिस
नाड़ीमें हों तिसको कष्ट साध्य व असाध्य कहो १६७ बातज्वरमें
नाड़ीवक्रगति व चपला व शीतलाहो है अरु पित्तज्वरमें नाड़ी को-

मन्द व शीघ्रगति लम्बीहोहै १६८ कफज्वरमें नाड़ी मन्द व शीतल व स्थिरा व स्निग्धा हो है बातपित्त ज्वरमें नाड़ी वक्रगति व कछुक चपल करड़ी होवे है १६९ बातपित्त ज्वरमेंनाड़ी दृष्टिमें थोड़ीदीखै अतिमन्द होवै पित्तकफज्वरमें नाड़ी सूक्ष्मा शीतला व स्थिराहो है १७० जिसकीनाड़ी हंसगति व हस्तीकीगतिहो अरुमुखप्रसन्नहो तिसको आरोग्य जानो १७१ जोरोगीकाहाथ स्पर्शकरे पीछे जल से धोवै तो जल्दीरोग नाशको प्राप्तहो दृष्टान्त जैसे जलसे धोवने से पंक यानेगारा नाश होती हैतैसे १७२ ॥ मूत्रपरीक्षा ॥ अब मूत्र परीक्षा कहे हैं जिसके जानने से रोग चिह्न जानाजाय १७३ रात्रि का अन्तकी चारघड़ीरहै तिससमयमें वैद्य रोगीको जगाय कांचके पात्र में मूत्र करवावै तिसकी सूर्योदय में परीक्षा करे अरु मूत्रकी आदिकी धारा पृथिवी में करावै मध्यधारा कांचपात्रमें कराय रख देवै फिर विचारकर चिकित्सा करे १७६ बातका रोगमें सफ़ेदमूत्र जानो कफका रोगमें झागसहितहो पित्तका रोगमें मूत्र लालवर्ण जानो बातपित्तमें व बातकफ मेंमूत्रमिलाहुआजानो अनेकरंगमूत्र हो १७७ सन्निपात रोगमें मूत्र कृष्णवर्ण जानो यह मूत्र लक्षणहै १७८ वैद्य मूत्रकी परीक्षा विधिसेकरै मूत्र पात्रमें तैलकी बूंद तृण सेगेरै हलका हाथसे १७९ जोतैलबूँद मूत्रमें प्रकाशमान फैलजाय तोरोगीको साध्यजानो जो फैले नहीं तो कष्टसाध्य जानो बूँद तली में बैठजाय तो असाध्य यहपरीक्षा नागार्ज्जुनकेमतकीहै १८० बात कोपमें मूत्र नीला व रुक्ष पित्तकोपमें पीला व लाल व तैलसमान कफकोप में चिकना व परवलके जलके समान रुधिरकोप में मूत्र सचिक्कण व गरम व लालहो है १८२ जिस रोगीके अन्नपाकहोवै नहीं तिसकामूत्र बिजोरारस समान व कांजी सम व जलसमहो है १८३ अजीर्णमें मूत्र चावलकापानी सम होहै नवज्वरमें धूम सम होहै व ज्यादा मूत्र हो है १८४ बातपित्त ज्वरमें धूमाका जल सम गरम होहै जीर्णज्वर में मूत्र रुधिर सम लाल व पीला होहै पित्तकफज्वरमें मूत्र मैला व लालहोवे है अरु बातकफमें मूत्र सफ़ेद व बुलबुलावाला होवे है व सन्निपातमें मूत्र अनेक वर्ण होवे है

वैद्य विचारलेवे १८६ जो मूत्रपात्रमें तैलबिन्दु पूर्वदिशामें बढ़े तो रोगीजल्दी अच्छाहोवे जो बूँद दक्षिण दिशामें बढ़े तो ज्वर आवे उत्तरदिशामें बढ़े तो आरोग्यहोवे पश्चिम दिशामें बढ़े तो सुख व आरोग्यहोवे १८८ ईशान दिशामें जावे तो एक मासमें मृत्युहोवे अग्नि दिशा में या नैर्ऋति में जाय तो मृत्युहो बूँद में जो छिद्रहो-जावै तोभी मृत्युहोवे १९० जो बूँदकारूप फैलाहुआ व हल व क-छुआ व गैंडा व करण्ड याने वंशादिकृतभांडविशेषः। व मण्डल व मस्तक रहित नर व खण्डितगात व तलवार व हथियार व मुशल व पट्टिश शस्त्र विशेषः। व तीर व लाठी व चुराहा व त्रिराहा ऐसे रूप बूँद के तैलपात्र में होजावें तो तिस बीमारकी चिकित्सा वैद्य करेनहीं १९३ जो हंस व तालाब व कमल व गज व चमर व छत्र व तोरण व हवेली अच्छी ऐसारूप बूँदका मूत्र में होजावे तो रोगी आरोग्यहोवे वैद्य चिकित्साकरै १९४ तैलबूँद मूत्र में चालनी सम छिद्रवाली होवे तो प्रेतदोष जानो १९५ तैलबूँद मूत्रमें नरके आ-कारहोवे तो व दोमस्तक होजावे तो भूतदोष जानो वहां भूत विद्या करै १९६ रोगी का मूत्र मंजिष्ठरङ्ग तुल्य व धूमवर्ण व नीला व चिकणा व पानी सम व शीतल ऐसे रूप जानकर वैद्य औषध देकर मूत्र बदले १९८ तैलबूंद बाताधिकसे सर्पाकार होती है पित्तसे छ-त्राकार होवे है कफसे मोतीके आकारहोवै ऐसेमूत्रलक्षणहैं १९९॥

मलपरीक्षा॥ बातकोप से मल टूटाहुआ अरु झागवाला व रुक्ष व धूमवर्ण होवे है बातकफ में मल पीलारंग हो है २०० बातपित्तकोप से मलबँधाहुआ व टूटाहुआ व पीलाव कालाहोवे है पित्तकफकोप से मल श्याम व कठुक गीला व चिकणा होवे है २०१ त्रिदोष से मल काला व त्रुटित व पीला व बँधाहुआ होवे है जोमलदुर्गंधयुक्त व शिथिलहोवे तो अजीर्णरोग जानो २०२ क्षयीरोगमें श्याममल होवे है आमबातमें मल पीला दस्तसमय कटिमें पीड़ाहोवे है अति कृष्ण व अतिसफ़ेद व अतिपीत व अतिलाल व अतिगरम ऐसा मल मृत्युदायकहै २०४ बातमें मलकाला पित्तमेंपीला कफमेंलाल अरुसफ़ेद मिलाहुआ मलहो है २०५ बातपित्तमें व बातकफमेंमल

आमरूप होवे है वा सफ़ेद मिश्रितरंग होवे है अजीर्ण में मलकच्चा होवे है अरु अच्छामनुष्य का मल पकाहुआ होवे है २०६ दीप्ताग्निवाला का मल शुष्क व ग्रन्थीवाला होवे है मन्दाग्नि वाला का मलपतला होवे है जिसकामल दुर्गंधि युक्त व चमकताहुआहोतिस को असाध्य कहै २०७ बात कोपमें मलबद्ध व कालाहोवे है पित्तकोप में पीला कफकोपमें पानीके सम व झागसहित व गीला व सफ़ेद रंग होवे है २०८ रुधिरकोपसे रक्तसम व जलसम मलहोवैदोदोष का कोपमें मल २ रंगहोवै सब दोषोंके कोपमें मल अनेक रंगहोवै २०९ जिसरोगीके दुर्गंधयुक्त व कालारंग व लालरंग व सफ़ेदरंग व कईरंग मिलेहुये मांस सम ऐसा जिसरोगी का मलहो तिसकी मृत्युहोवै २१० त्रुटित व शिथिल बारम्बार निकसे ऐसा मल अजीर्णमें होवेहै यह दिशामात्र मलप्रकरणकहाहै २११ ॥ जिह्वापरीक्षा ॥ वात अधिक में जिह्वा शीतल व खरखरी व स्फुटिता होवे है पित्त कोप में लाल व काली होवे है कफके कोप में सफ़ेद व चिकनी होवेहै २१२ सन्निपातमें काली व कांटेवाली व सूखी दो २ दोषके कोपमें मिश्रितरूपाजानो २१३ अरुयह अन्यग्रन्थकामतहै बातमें शाकपत्र समान जिह्वा होवे है व रुक्षा पित्तमें लाल व कालीहोवेहै कफसे सफ़ेद व चिकणी होवेहै सन्निपात में जिह्वा दग्धरूपा व खरधरी व कांटेवाली होवे है दो २ दोषसे कईरङ्गकी मिली हुई होवे है २१४ ॥ शब्दपरीक्षा ॥ मोटेस्वरसे बोले तो कफदोष जानों स्पष्टबोले तो पित्तकोप जानो पूर्वोक्त दोनोंतरह रहित बोले तो बातकोपजानो २१५ ॥ स्पर्शपरीक्षा ॥ पित्तकोपमें गरमशरीरजानो बातकोपमें शीतल शरीरजानो कफकोप में चिकण शरीरजानो सबही चिह्न मिलैं तो सन्निपात जानो कफरोगवाला गीलासमरहैहै २१६ ॥ नेत्रपरीक्षा ॥ नेत्ररुक्ष व धूम्रवर्ण व लाल किञ्चित् व गोलक में प्रविष्ट गर्ववाला मनुष्यकी तरह देखना ऐसे लक्षण बातकोपके हैं २१७ पित्तसेनेत्र हल्दी समान पीले व लाल व हरे व दीपकको न देखसके व दाह सहित ऐसेनेत्र पित्तकोपसे कहे २१८ चिकणे व जलयुक्त व सफ़ेद वर्ण व ज्योतिरहित कफयुक्त ऐसेनेत्र कफकोपसे होहैं २१९ दो २

दोष कोपसे दो२ दोषके नेत्रहो हैं त्रिदोष कोपसे त्रिदोषके लक्षण वाले नेत्रजानो २२० त्रिदोष दूषित जो नेत्रहैं सो गोलक में गड़े हुये व जलसे भरेहुये व बराबरसे खुलेहुये ऐसेनेत्र जिसरोगीकेहों तिसको सन्निपात ग्रस्तजानो २२१ जिसरोगीका एकनेत्र भयानक खुलाहुआ दूसरा मिचाहुआ व नेत्रका तारा कछुकदीखे अरु भ्रम युक्त ऊपरको देखे ऐसे रोगीको असाध्य जानो व कम्पायमानहोके देखै सोभी असाध्यहै २२३ जो एक नेत्रसे देखे चेतना जातीरहै अक्षिकातारा भ्रमण लगजावे वह एक रात्रिमें मरै २२४ वात कोप से नेत्ररूक्ष व धूम्रवर्ण व अन्तर्दाहयुक्त व चञ्चल होवे हैं पित्तकोप से पीला व हरा व दीपकको नहीं देखसके अरु दाहवाला होहै कफ कोपसे नेत्रसफ़ेद व जलभरे व कान्तिरहित होवे हैं २ दोष में दो चिह्न जानो सन्निपातसे नेत्र भयानक गोलक में गड़ेहुये कालेहोंहैं २२७ यह और ग्रन्थकामतहै द्वंद्वदोषसे२वर्णमिले नेत्रजानोत्रिदोष से कालेवर्ण भयानक तन्द्रा मोहयुत लालवर्ण हो वे हैं २२८ जिस रोगीका एकनेत्र भयानकहो दूसरा मिचारहै तिसकी तीन दिन में मृत्युहो २२९ जिसके नेत्र ज्योतिरहितहों कछुककाले रंगहों तिसकी मृत्युहो २३० जिसकेनेत्र लाल व कालेरंगहों भयानकदीखे तो अवश्य मरै २३१ ॥ मुखपरीक्षा ॥ वातकोप में मुखमीठा रहै है पित्तकोपमें मुखकड़ुवा रहै है कफदोषमें मुखमीठा व खट्टा रहै है त्रिदोषमें मुखसर्वरस करके युतरहै है २३२ अजीर्णमें मुखघृत से पूर्णकी समरहैहै अग्निमंदमें मुखकास्वाद कसैला रहै है २३३ ॥ स्वरूपपरीक्षा ॥ वायुसब दोषों में प्रबलहै कारणसमर्थहोने व वेगवान होनेसे व बलवान् होनेसे व अन्यको कोपकराने वालाहोने से स्वतंत्रसे व व्याधिकारकसे इनकारणोंसे प्रबलहै २३४ बहुत करके पवनयुत मनुष्य स्फुटित गातहोवै है शीतलताका वैरीचलायमान बुद्धिवाला व स्मरण पूर्वबातोंका व मित्र दृष्टि व ज्यादाप्रलापकरने वाला होवैहै २३६ पित्त अग्निकारूपहै पित्तकोपसे तृषाअरु भूख ज्यादालगै है सफ़ेदरंग शरीर व गरमहाथ व पैरगरम व मुखतांबा सम शूरवीरसम अभिमानीकी सम पीलेकेशहोवै हैं अल्परोमावली

यह पित्तकोपके लक्षणहैं २३७ कफचंद्ररूपहै इस वास्तेकफवाला सौम्यहो है कपड़े पहने चिकणाशरीरदीखे हाथमांस संधिमिलीहुई रहै भूख व प्यास व शोक व क्लेशसे रहित बुद्धिमान् सतोगुणीसत्यवादीहो है २३८॥ आयुर्विचार॥ वैद्यआदिमें आयुःपरीक्षामनुष्यकी करै आयु बाकीहो तो चिकित्सा सफलहो है २३९ जिसकी सौम्य दृष्टिहोवै सौम्य नासिका व मुखहो स्वादु व गन्धको जानै तिसको साध्यजानो हाथ व पैर जिसके गरम हों स्वल्पदाहहो जिह्वा कोमलहोय ऐसारोगी अवश्यजीवै २४१ पसीना रहित ज्वर होवे नासिकाद्वारा श्वासलेवै कफहीनकंठहो ऐसारोगी निश्चयजीवै २४२ कालज्ञान विधिसे पात्र में जलभरके पूर्णचंद्रमा व सूर्य्यकोदेखेजो पूर्वदिशामें छिद्रदीखे तो ६ मासतक दक्षिणमें छिद्र दीखे तो ३ मासतक पश्चिममें २ मासतक उत्तर दिशामें १ मासतक मृत्युहो अरु पश्चिममें धूम्राकृतिवाला अग्नि दीखै तो दशदिनतक मरै यह कालज्ञान वालोंका मतहै २४४ जिसकी आयुबाकी नहींहो अरुंधती व ध्रुव व विष्णुके तीनपैर व चौथा मातृमंडल दीखतानहीं २४५ अरुंधती जिह्वाहो है ध्रुव नासिकाका अग्रभागहो है दोनोंभृकुटियों के मध्यमें विष्णु हैं अरु दोनों भृकुटी मातृमंडल है २४६ नासाग्र व दोनोंभृकुटी व मुख जिसको दीखेनहीं कानसेसुनेनहींवह अवश्यमरै २४७ तो नौ भृकुटी पांचनेत्र सातकर्ण तीननासिका तीनजिह्वाऐसे जिसकोदीखे वह अवश्यमरै २४८ जोपुरुष आपहीमोटाहोजावै वा आपही कृशहोजावे अन्यभावको प्राप्तहो ऐसापुरुष६ महीनेमेंमरै २४९ जिसकीजिह्वा कालीहो मुखलालहो जिह्वा स्पर्शको जानै नहीं वह अवश्यमरै २५० रोगीपास जाने में लग्नशुद्धि सूर्यकेंद्रमें होतो ज्वरघनाहो चंद्रमा केंद्रमें होतो शीतबातहो भौम केंद्रमेंहो तो रक्तविकारहो बुध वृहस्पति शुक्र केंद्रमें हों तो जलदी आराम हो २५१ शनिकेंद्रमेंहो तो शिथिलहोके मरै राहुकेंद्रमें होतो जलदी मरै ऐसेप्रकार वैद्यलग्न देखकेचलै २५२ रात्रिमेंदाह दिनमेंशीतलता कंठमेंकफ मुखका स्वादु रहैनहीं लालनेत्रहों जिह्वाकाली व नाड़ी सूक्ष्मा व भारीहो ऐसे मनुष्यको रामनाम जपना चाहिये निश्चय

मरै २५३ सौम्य दृष्टिहो यथार्थ बोलै हाथ पैर गरमहों स्वल्पदाह हो मुखमें स्वादुहो कोमल जिह्वाहो नासिकासे कोमल श्वासचलै पसीना रहित ज्वरहो ऐसासाध्यहै वैद्यकूं चिकित्सा करनेकूं योग्य है २५४ मुख सूखारहै कालेदाग होवैं सफ़ेद रंग रहित दांतपंक्तिहो शीतल नासिकाहो लालनेत्रहों एक नेत्रसे देखै हाथ पैर उठै नहीं बधिरहोजावेश्वासशीतल व अत्यन्तगरमहोश्वासकाउदयहोशीतलशरीर व कांपैउद्वेगसहित व कर्त्तव्य अकर्त्तव्य रहितहोजावैऐसा लक्षण मृत्युसमय में होवै है २५५ शरीर शीतल व चिकणाहोजावै माथामें पसीना आवे कंठमें कफस्थितहो अरु कफहृदयमें जावैनहीं ऐसामनुष्य निश्चयमरै २५६ जिसको निद्रा अच्छी आवे सुखसे शरीर उद्यम सहितहो इन्द्रिय प्रसन्न होवैं ऐसारोगी जीवै २५७॥ स्वल्पायुः लक्षण॥ जिसकाशरीर व शीतलताकी प्रकृति विकृति हो जावै वह अरिष्टहो है विस्तारसे सुनो २५८ जो नानाप्रकार शब्दों को सुनै व विपरीति शब्दसुनै व शब्दबोला सुनै नहीं ऐसे नरकी स्वल्प उमरजानो जो नर गरम को शीतलसमान ग्रहणकरै व शीतलको गरमसमान ग्रहणकरै कछुक गरमशरीरहो अरु शीतलता करके शरीर कांपै उपाय कछुजानै नहीं व घबराय जावै व अपने अंगोंको धूलसेभरे मानै जिसका शरीर वर्ण बदला जा व शरीरमें पंक्तिपड़जावें स्नानकरेपीछे तिसकोनीलमक्षिका सेवनकरै विपरीत रसों को अंगीकार करे रसस्वाद जाने नहीं ऐसे नर की उम्र कम जानो २६१ सुगन्ध को दुर्गंधजाने व दुर्गंधको सुगन्धजाने व विपरीत प्रकारसे गन्ध ग्रहणकरै वह अवश्यमरै २६२ रात्रिमें सूर्य प्रकाश देखै दिनमें चन्द्रप्रकाश देखै अरु दिनमें तारे प्रकाशमान् देखैं अरु विमान व यान व मकानादियुत आकाशको देखै व पवन रूपका शरीर आकाशमें देखै धूम व ओस व वस्त्रादिकोंसे ढकीहुई भूमिकोदेखैसंसारकोजलताहुआ व जलमेंडूबाहुआदेखै अरु भूमि को अष्टदलसम रेखायुत देखै अरुनक्षत्र देखैनहीं अरुअरुंधती व ध्रुव व आकाशगंगा न दीखै ऐसे मनुष्य की मृत्यु जल्दी जानो २६६ दर्पणमें व जलमें व धूपमें अपनी छाया दीखै नहीं व छाया

एक अंग हीन दीखे व बिकारवाली दीखे व और जीवको दीखे व कुत्ता व काक व कंकपक्षी विशेष व गीध व प्रेत व राक्षसादिक की छायादीखे तो रोगीमरै स्वस्थमनुष्य का रोग आवै २६८ लाज व शोभा जातीरहै आपही आप तेज अरु बल अरु पिछली बात का स्मरणहोजा तिसकी मृत्युजानो २६९ जिसका तरलाओष्ठ पतित होजावे ऊपरला ओष्ठ ऊर्ध्वगतहो अथवा दोनों ओष्ठ जामनफल समहोजावें तो जल्दीमरै २७० दांत लाल होजावें व काले व गिर पड़ें व खंजनपक्षी समान होजावें तो जल्दी मरै २७१ जिसकी जिह्वा काली व कफसे लिप्त होजावे व शून्य व खरधरी होवे तो जल्दीमरै २७२ जिसकी नासिका कुटिला व टूटीहोजावे व सूखी व ज़्यादहफुरै व खंडित होजाय ऐसा मनुष्य जल्दी मरै २७३ जिस की पलक ज़्यादह फरकै वहभी जल्दी मरै २७४ जो रोगी मुख में अन्नदयो से खावेनहीं व शिरको कँपावै एकदृष्टि हो मूढ़सम हो वह जल्दीमरै २७५ वहुत प्रकार उठायाभी रोगी मोहकोप्राप्तहो बल-वान्‌हो वह दुर्बलहो तिसरोगीकोरोग पकाहुआ जानो २७६ जिस रोगी को निरन्तर निद्राआवे व निरन्तर जागे व बोलनेकी इच्छा करै मोहमें प्राप्त हो ऐसे रोगीको वैद्य त्याग देवै २७७ जो रोगी दोनों ओष्ठको जिह्वासेचाटै व हाथ ऊपरको करै व रात्री में प्रेतों के संग भाषणकरै तो जल्दी मरै २७८ जिस रोगीके रोमओंसे रुधिर भिरै अरु ज़हर आदि कछुखाये बिना तो वह रोगी अवश्य मरै २७९ जिस रोगीकी अच्छीतरह चिकित्सा हो अरु बिकारबढ़ैबल व मांस शरीर में होवे नहीं वह रोगी मरै २८० भूत व प्रेत व पि-शाच व राक्षस नानाप्रकारके मरनेवाला रोगीको प्राप्तहोहैं २८१॥

छायापुरुष लक्षण॥ अबछायापुरुष लक्षण कहते हैं जिसके जानने से नरत्रिकालज्ञहोताहै २८२ दूरस्थितपुरुष का जिसतरह उपाय से काल जानाजावै वह विस्तारपूर्वक कहते हैं यह शिवकाशास्त्रमें लिखाहै २८३ पुरुष एकान्त बनमें जायकर सूर्यकोपृष्ठपीछेकरके अपनीछाया को देखै कण्ठदेश से सावधानहोके तिसपीछे आकाश को देखे तिसपीछे बहुतदेरतक गड़करदेखै फिर। ओंह्रींपरब्रह्मणेनमः।

यह मन्त्र १०८ बार जपै तिसकेपीछे उस पुरुष को महादेव दीखै २८५ शुद्धस्फटिक समान कान्तिवाला नानाप्रकार का रूपधारण करेहुये महादेवको छःमहीनेतक अभ्याससे देखकर वह नर मनुष्य पति याने अत्यन्त धनवाला होवै २८६ ऐसा अभ्यास जो दो वर्षतक करै तो कर्त्ता व हर्त्ता व सामर्थ्यवाला व त्रिकालज्ञ होके परमानन्द को प्राप्तहो २८७ निरन्तर अभ्यास से कछुदुर्लभनहीं वह आकाश में जब कृष्णवर्णदीखै निर्मल आकाश में तब जानले की छः मासतक मृत्युहो तिसयोगी की संशयनहीं २८६ वहीरूप आकाश में पीलादीखे तो रोगआवै लालदीखे तो भयहो नीलदीखे तो हत्या प्राप्तहो कईरंग दीखे तो उद्वेग होजावे २९० पैर गुल्फ टांकणा व पेट खण्डितदीखे तो मृत्युजानो यह छःमहीने व १ वर्ष व २ वर्ष अभ्यासकरने से सिद्धहोहै २९१ शिर व दाहिनी भुजा बिनादीखे तो मृत्युजानो व बिना शिरहीदीखे तो १ महीनामें मरै व जाँघबिना दीखे तो १ दिनमेंमरै ग्रीवा बिना दीखे तो ८ दिनमें मरै अपनी छाया नहींदीखे तो उसीवक्त मरै २९३ दोषकी विषमताको रोगकहे हैं दोषसमताको आरोग्यकहेहैं रोगदुःख के दायक है वही रोगज्वर से आदिहोत है २९४ जो मनुष्य दिनचर्य्या के अनुसार वर्त्तैनहीं वह रोगको प्राप्तहो उसीरोग के लक्षण कहते हैं जीव व आत्माको दुःखकारी व्याधि होवे है तिसके भेद ज्वरादिक बहुतहैं ग्रन्थोंमें कहे हैं २९६ वहरोग स्वाभाविक कोइक आगंतुक कितनेक मानस कितनेक कायिकहो हैं २९७ व्याधि तीनप्रकार की होहैं कर्मज व दोषज व कर्मदोषज ऐसे जानो २९८ वैद्यरोग की चिकित्सा अच्छीकरे शास्त्रप्रमाण रोग शान्त न हो वहकर्म्मज व्याधि जानो २९९ कर्म्मक्षय से कर्मजव्याधि नाशहोहै औषध से दोषजव्याधि नाशहोहै कर्मदोषज व्याधि कर्म्मदोष क्षयसे नाशहो है ३०० रोग साध्य व जाप्य व असाध्य ३ तीनप्रकार के होतेहैं साध्य दो प्रकार हो है सुखसाध्य १ कष्टसाध्य २ ऐसेजानो ३०१ जिसको क्रियाधारण करै याने यत्नकरै इतने तो रोग शांतरहै अरु जित यत्न नहींहो जिवफिररोग बढ़जावै सोजाप्यकहिये ३०२ सुखी

जाप्यआतुरको औषधउत्तमहै जैसे स्तंभयतनसेलगाथाहुआगिरता मकानको थांभैहै तैसे ३०३ साध्यरोग जाप्यहोजा जाप्य असाध्य होजाअसाध्य प्राणोंकोहरैहै जो चिकित्सानहींकरावे ३०४ उपद्राव लक्षण रोगकरनेवाला दोषका कोपसे अन्य उपद्रव याने विकारहो उसको उपद्रवकहेहैं अरिष्ट लक्षण रोगी का मरण निश्चय जिससे दिखजावै उसे अरिष्ट व रिष्टकहे हैं ३०५ ॥ चिकित्सा लक्षण ॥ जो क्रिया व्याधिहरतीहै विसे चिकित्सा कहैहैं दोष धातुमलोंको शांत करै वहीरोगको हरैहै जिनक्रियाओं करके शरीर में धातुसमहो विसे चिकित्साकहैहैं यहीवैद्यकर्महै ३०६ रोगजन्मतेही तिसकीचिकित्सा करै कमजानकर त्यागैनहीं अग्निविष शत्रुसम रोगहोहै स्वल्प भी बढ़कर दुःख देहै ऐसे जानो ३०७ वैद्य कर्त्तव्य रोग की खादिमें परीक्षाकरै पीछे औषध समझै पीछे ज्ञानपूर्वक रोगीको देवै ३०८ जो वैद्यरोग निदान जानेनहीं औषधीदवै औषधकर्म्म में निपुणहो तोभी ऐसावैद्यकी सिद्धि प्रारब्धवशसे जानो ३०९ औषध बनानी जाने रोगको जानेनहीं वैद्यकर्मकरै वह राज्यसे दण्डयोग्यहै ३१० जो वैद्य केवल रोगजाननेवालाहो औषधकरने में निपुणनहींहोतो तिस वैद्यको प्राप्तहुआ रोगी को दुःखहो दृष्टान्त जैसे नाव मल्लाह बिना जलमें भ्रमतीफिरै तैसे ३११ जो वैद्य केवल शास्त्रही जानने वालाहो क्रियामें निपुण नहो वह रोगीको प्राप्तहुआ मोहको प्राप्त होजाय दृष्टान्त युद्धमें डरपोक मनुष्य जैसे ३१२ जो वैद्य रोग व औषध जाने देशकाल को भी जाने तिसको सिद्धिहो इसमें सन्देह नहीं ३१३ आदिमें व अन्तमें रोगको जाने पीछे औषधजाने पीछे कर्मकरै ३१४ कुशल वैद्य विकार जानकर लज्जाकरै नहीं सम्पूर्ण विकार विचारण से आते हैं ३१५ दोष बिना रोग नहींहोता जो अनुक्तदोष चिह्नोंकरभी रोगनिदानकरै ३१६ अच्छे वैद्य असाध्य रोगी की चिकित्सा नहीं करै इसीवास्ते आदि में साध्य असाध्य की परीक्षा में यत्नकरै ३१७ शीत में शीतनाशक औषध गरम में गरम नाशक औषध करै क्रिया लोपकरै नहीं वैद्य जन ३१८ अप्राप्त काल में याने जिस वक्त क्रिया न बनसके अरु प्राप्त काल

में याने क्रिया बनन के समय अरु हीनक्रिया अरु त्यागीहुई क्रिया ये सब साध्य रोगी को भी सिद्धि न देवै ३१९ स्वल्प विकार में बड़ा कर्म्म करना बड़ा विकारमें स्वल्पकर्मकरना यह वैद्यकी कुशलता नहीं है युक्त कर्म करना तिसे वैद्य कुशला कहे हैं ३२० क्रियाका गुण नहींहो २ क्रियाकरै पहलीक्रिया का वेग शान्तहोले तबकरै दो २ क्रियाओंको मिलावै नहीं ३२१ एकरूपकी क्रियाका मेलन करैनहीं अरु भिन्नरूपकी क्रियाओंका मेलनसे सांकर्य्यदोष है नहीं ३२२ लंघन व बालुरेत का पसीना हुलास व वमन व अवलेह व अंजन ये सब सन्निपातमें पहिलेदेवै ३२३ वैद्य एकान्त में शास्त्रकी लिखीहुई क्रियाको विचारै कछु तर्कणाभीकरै ३२४ जो अवस्थाहो व देशकाल व बलदेखिकै कर्त्तव्य अकर्त्तव्य वैद्यजन करै ३२५ चिकित्साफल कहीं चिकित्सा से द्रव्य की प्राप्तीहो है कहीं मित्रताहो कहीं धर्महो कहीं यशहो कहीं कर्माभ्यास हो चिकित्सा निष्फलहोवे नहीं ३२६ चिकित्सा पुण्यका विक्रयकरै नहीं लोभसे धनवालोंसे आजीवन वास्ते द्रव्यलेवै गरीबोंको खैरात व पुण्यहेतु औषधदेवै ३२८ जो रोगी आरोग्यहोके वैद्यको द्रव्यादिकदेके पूजे नहीं तो अपना पुण्यकिया वैद्यकोमिले ३२९ बड़ा रोगग्रस्त ब्राह्मण व गौको मार्गमें देखके वैद्यचलाजाय तो वैद्यको ब्रह्महत्यालगै ३३० रोगी१दूत२ वैद्य३ दीर्घआयुः४ द्रव्य५ सुसेवक६ श्रेष्ठऔषध७यह चिकित्साके अंगहैं ३३१ जिसके रोगहो उसे रोगीकहेहैं जिसतरह के रोगीका वैद्य चिकित्साकरै वहकहते हैं ३३२ अपनी प्रकृतिवर्णै याने स्वरूपको रोगी यथार्थ धारण करेहुये हो अरु सत्त्वगुणवाले नेत्रयुतहो अरु वैद्यमें भक्तिरखनेवाला व जितेन्द्रिय ऐसारोगी वैद्य को चिकित्सायोग्य है ३३३ आयु बाकीवाला सतोगुणवाला साध्य व द्रव्यवान् व मित्रोंवाला व वैद्यवाक्य माननेवाला आस्तिक ऐसा रोगी वैद्यइलाजयोग्यहै३३४क्रूर व हठवाला व भयवाला व कृतघ्नी व दुष्ट व शोकवाला व मूर्ख व मरनेकी इच्छाकरै व इन्द्रियरहित व बैरी व आप वैद्य व श्रद्धाहीन व शंका करनेवाला वैद्योंकरके त्यागा हुआ ऐसेरोगियों की चिकित्सा करे नहीं करै तो दुःखपावै जो वैद्य

रोगीके घरमें पूजा न जा कछु द्रव्यसे तो सिद्धि न हो ३३७ व्याधि तत्त्व जानना पीड़ाका निग्रहकरना यही वैद्यका वैद्यत्वहै अरु वैद्य आयुपति नहींहै ३३८ मनुष्यकी १०१ मृत्युहैं जिनमें १०० मृत्यु तो आगंतुक हैं १ एककालयुतहै ३३९ चिकित्सा विना आगन्तुक मृत्युभी मारदेहै जैसे तैल अरु बत्ती होतसन्ते भी वायु दीपक को बुझादेहै तैसे ३४० दोष व आगन्तुक मृत्युसे रसमंत्र जाननेवाले वैद्य अरु पुरोहित राजाकी रक्षा निरंतर करें ३४१ अथ देश-ज्ञान ॥ जिसजगह अल्पजल अल्प वृक्ष अल्प पर्वतहों वह जांगल देशहै स्वल्परोगवहांहोहै इससे विपरीत अनूपदेश है-जो समहो याने जांगल अनूप से अन्य सो साधारण है ३४२ जांगल में बात घनीहोहै अनूपमें कफघना साधारण में सममलहोहै तीनप्रकार भू देशहोहै ३४३ दूसरामत जिसजगह ज्यादैजल व ज्यादैवृक्षहों तहां वात कफकी बहुत व्याधिहोहै विसे अनूप कहै हैं ३४४ अल्पजल व अल्पवृक्ष जहांहो तहां पित्त रुधिरकी व्याधिहोहै विसे जांगलदेश कहैहैं दोनुवोंसे अन्य साधारण देश हैं ३४५ मार्गशिर १ पौष २ माघ ३ आषाढ़ ४ श्रावण ५ भाद्रपद ६ इनमहीनोंमें बातकाराज्यहै ३४६ आश्विन १ कार्त्तिक २ वैशाख ३ ज्येष्ठ ४ इनमास में पित्त राजाहै ३४७ फाल्गुन १ चैत्र २ में शीतल जलसे उपजा हुआ पीड़ाकारक कफराजा है ३४८ दूसरा मत हेमंत व बर्षा व शिशिर इन तीनऋतुओंमें वातप्रधानहै शरद व ग्रीष्मऋतु में पित्तप्रधानहै वसंतऋतु में कफप्रधान है जैसा योग्यहो तैसा वैद्यकरै ३४९ बहुत करके कफ पूर्वाह्णमें व प्रदोष समयमें रहैहै पित्त मध्याह्नमें व अर्द्ध-रात्रिमें रहैहै व बायुप्रायता से अपराह्न में व अर्द्धरात्री पीछेरहै है ३५० कफको तीक्ष्ण औषध से बैरीसमान दूरकरै अरु बातको स-चिक्कण औषध से मित्रसमान जीतै पित्तको जमाई समान मधुर व शीतलसे जीतै ३५१ कफकोपमें बमन व हुलास देवै पित्तकोपमें बि-रेचन करै बातको शाधनकरै सबके मिलापमें सबकर्म करै ३५२ बातकोप कारण-दिव्यचावल चणा शामक गुवार मोठतूर धान्य मटर मसूर रानमूंग रानउड़द कोदु हरितशाक व कटुद्रव्य तुरट

खट्टा शीतल रुक्ष लघुभोजन विषमभोजन भोजननहींकरना अजीर्णमें भोजन पुरानीवस्तु भोजनज्यादे परिश्रमगर्तादिक याने गढ़ाका उल्लंघन जलमें तिरना वृक्षसे पड़ना पैरे मार्गमें चलना लाठी की चोट उच्चप्रकार पड़ना धातुक्षय रात्रिमें जागरण मूत्रादि वेगरोकना अति वमन अतिविरेचन अतिफस्त अधिक सींगी वगैरहरुधिर मांस कम अति कामदेव चिंता शोक भय सभवायुकोपकरै हैं वर्षा शिशिर दिन रात्रिका तीसरा पहरमें मेघमें पूर्ववायुसे शीतलता ये सभशरीर वायुके कोप कारणहैं ३५८ दूसरा ग्रंथमत मूत्रादि वेग धारण भोजनपर भोजन जागरण ज्यादाभाषण उच्चस्वरसे–व्यायाम, गमन, कटु, खट्टा, कसैला, रुक्ष, पदार्थ, भोजन, चिंता, मैथुन, भय, लंघन शीतशोक मेघआगमन इन्होंसे वातकोपहोहै ३६० अंगका खरधरापना व अंगका संकोचन व अंगमें शूल व श्यामरंगहोजा व पीड़ा व चेष्टाभंगसोवना समानहोजा शीतलता रूखापन शोष ये वायुको कोप करैहै ३६१ सचिक्कण व गरम व स्थिर बलवालावीर्यवाला लवण स्वादरस खट्टा तैल धूपस्नान, उवटना मसलना वस्तिकर्म करना मांस मदिरासेवन, मर्दनकरना पसीना, निरूहण कर्म, हुलासलेनी शयन अच्छा पान विहार आहार शरीर बंधन इतनेकर्म वातकोप शांतिकरैहैं ३६३ कटु अम्ल मदिरा लवण दाह करनेवाला तीक्ष्णक्रोध धूप, अग्नि, भय, परिश्रम, शुष्कशाक, खार अजीर्णमें भोजन व विषम भोजन अरु मेघ रहितसमय इनकर्मोंसे पित्तकोपहोवैहै ३६४ दो प्रकार उदय तिल व कुलथी व मच्छी व मेषमांस व गौका दही व तक्रसे इन्होंसे न रोकै पित्तकोपहोवैहै ३६५ तीसरे प्रकार कडुआ गरम दाह करनेवाला तीक्ष्ण लवण व्रत करनेसे धूपसे, मैथुन, तृषा भूखका रोकना दंड कुश्ती मदिरा अजीर्ण में भोजन शरद अरु ग्रीष्म ऋतुमें अरु मध्याह्न अर्द्धरात्रि में पित्तकोपको प्राप्तहोहै ३६७ परिश्रम पसीना दाह अति दुर्गंध व आलस्य मुखपाक व अंगमें चिह्न व प्रलाप व मूर्च्छाभ्रम व पित्तदाह येसब पित्तके कर्महैं ३६८ कटुस्वादु व कसैला व शीतल व पवन व छाया व रात्री व पाणी व चांदनी पृथिवीमें शयना

फुहारा कमल व स्त्री से शरीरस्पर्श घृत व दूध विरेचन व सेचन फस्त व चंदनादि लेप अच्छापान करना भोजन व क्रीड़ा यह सब पित्तको शांतकरै ३७० कफकोप के कारण गुरुक्षार मीठा व अम्ल व सचिक्कण उड़द व तिल व द्रवपदार्थ व दही व दिनमेंशयन शीतलताअरु चेष्टा इन्होंसे व दिवसकेपहिलेभागमें व रात्रिकेप्रथम भागमें कफकोपको प्राप्तहोहै ३७२ दूसरेप्रकार दिनमेंशयन मीठा शीतल मच्छे व मांस भोजन अम्ल व चिकना तिल व ईष जलका विकार बर्फवगैरह अतिभोजनखाराजलपान खाराभक्ष्यइन्होंसे कफ कोपको प्राप्तहोहै ३७४ सफेदपना व शीतलता भारीपन, खाज चिकनादेह अँधेरी कफसे मुखलिपाहुआ सूजना, देरमें काम करै ये कफके कामहैं ३७५ रूखा, खार,कसैला, कटु, तीक्ष्ण, दंड कुश्ती वमन,स्त्रीगमन,मार्ग्गमेंचलना, जागरण, जलक्रीड़ा,पैररगड़ने३७६ धूमपान, ताप, मस्तकरेचन, मुखसे थूकना, पसीना शरीर बन्धन अच्छापानी, भोजन,क्रीड़ायेसबकफको शान्तकरैहै३७७ आमव्याधि लक्षण, आलस्य व तंद्रा व हृदयमें मल, मलमूत्र बेगरोकना, पेट भारी,अरुचि,सोयाहुआ अंग येलक्षण जिसरोगीकेहों तिसके आम व्याधि जानो ३७८ लंघन व कछुक गरमद्रव्यपान व हलकाअन्न रूखा, ओदन व कडुआरस व मूंगरस व निरूहणवस्ति व पसीना व पाचन व रेचन व बमन ये सब आमव्याधिको जीतैहैं ३७६ वर्ष १६ पर्य्यंत बाल्यावस्थाहै वर्ष ७० पर्य्यंत मध्यहै तिससे उपरान्त वृद्धहै ३८१ मंगलादिकसे युक्तहो कुटुम्बसहित रोगी श्रद्धावाला वैद्यके अनुकूलहोवे बहुतद्रव्यके वस्त्र व भूषण धारणकरै सतोगुणी वैद्य व ब्राह्मणोंमें भक्तिहो चिकित्सामें कोई सन्देह करै नहीं पीड़ा रहितहो ये सब लक्षण आरोग्यकेहैं ३८३ अतिमोटा व अतिकृश दोनों अच्छे नहीं मध्य शरीरवाला श्रेष्ठ है क्षीणपुरुष मोटा अच्छा नहीं ३८४ औषधसे मोटाको कछुक कृशकरै कृशको कछुक मोटा करै मध्य शरीरवाले की वैद्य रक्षाकरै ३८५ जिसके समदोष हों सम अग्निहो समधातु मलक्रियाहो प्रसन्न जाकीआत्मा बमन इ- न्द्रियहो वाको स्वस्थकहेहैं ३८६ दोषोंका समानपना वैद्योंको नि-

श्चय करायेहैं वह स्वस्थताबिना नहींहोसक्ता ३८७ वात वृद्धिमें मनुष्य कृशहोवै खरधराहोवै गरमवस्तुकी इच्छाकरै मलगाढ़ा रहै अल्पबलहो गात्रफुरै निद्रा आवैनहीं ३८८ पित्तवृद्धि में मल मूत्र नेत्र शरीर पीलेरहैं इन्द्रिय क्षीणहोजावै शीतलकी इच्छारहै ताप व मूर्च्छा रहै कम निद्राआवै ३८९ कफवृद्धिमें मलमूत्रसफेदरहै जाड़ा लागै शरीर भारीरहै अति निद्राआवै संधि शिथिल रहै व ग्लानि रहै मुखसे जल व कफपड़ै ३९० रसवृद्धिमें अन्नमेंरुचिनहींहोशरीर भारीरहै मुखसे जलपड़ै छर्दि आवै व मूर्च्छा व ग्लानि श्रम कफ होवेहै ३९१ रक्तवृद्धिमें रुधिर ज्यादहहो शरीर लालरंग हो नेत्र लालरहैं नाड़ियोंमें रुधिर पूरारहै रक्तबँधाहुआ विसर्परोग व प्लीह रोग व विद्रधिरोग को करै है और कुष्ठरोग व वातरक्त व गुल्म शिरापूर्ण, पीलिया इनको करैहै शरीर भारी व निद्रा आवै मद व दाहरहै अंगविकला व अग्निमन्द व मोह व लालत्वचा लाल नेत्र लालमूत्ररहै गुदा व लिंग व मुख पकजावै बवासीर फुनसी व मस्सा होजावै व बालउड़जावें अंग टूटै व प्रदररोग हो व हाथपैरमेंज्वरहोवै ये लक्षण रक्तवृद्धिसे उपजैं हैं अरु रक्तवृद्धि से उपजेहुये रोगोंको फस्त व विरेचनसे शांतकरै ३९४ मांसवृद्धिमें कपोल व ओष्ठ व कटि पृष्ठ लिंग व जांघ हाथ व गोड़ येसब मोटेरहैहैं अरु शरीर भारी रहै ३९५ मेदकी वृद्धिमें पेट व पांशुबँधजायखांसी व श्वासरहैदुर्गंध आवै शरीरमें चिकनापन कम कामकरने में भी ज्यादह परिश्रम हो तृषालगै पसीना आवै गलेमें व ओष्ठ में प्रमेह होजावै कटि पृष्ठ व पेट व ग्रीवा स्तन इन्होंमें पीड़ारहै ३९७ अस्थी बढ़ीहुईअस्थी में अस्थियोंकोपैदाकरैहैं अरु दांतबड़े बिकट होजावें ३९८ मज्जा वृद्धिमें साराअंग अरु नेत्र भारीरहैं ३९९ वीर्य्यवृद्धिमें पथरीहोवै व वीर्य्य इन्द्रियसे निकसाकरै ४०० स्वेदवृद्धि में दुर्गंध शरीर में आवै त्वचामें खाजचलै आर्तव याने स्त्रीधर्म्म रजस्वला ताकीवृद्धि में स्त्रीके रुधिर में दुर्गंध होवै आर्तव दुर्गंध ज्यादह निकसै अंग टूटाकरै ४०१ स्तन वृद्धिमें चूंची मोटीहोजावें दूधगिराकरै बारम्बार चूंचियोंमें पीड़ारहै ४०२ उदरवृद्धिमें पेटमोटारहै अरु उदर

वृद्धि गर्भवृद्धि हुयेपीछे होयहै गर्भवतीस्त्रीके पसीनाआवे बालक होनेकेसमय दुःख ज्यादहहोवे है ४०३ दोष व धातु मलोंका ह्रास नाम कृशकरना अरु कृश करनेवाला औषध व आहार व क्रीड़ा वैद्य यथायोग्य करवावै ४०४ क्रमसे दोषसे धातुबढ़ै धातुसे मल बढ़ै इसतरह मलवृद्धिहोयहै ४०५ अयोग्यखानेसे व अतिक्रोधसे व शोकसे व चिन्ता व भय व परिश्रमसे अति मैथुनसे भोजननहीं करनेसे व रेचनमूत्रादि वेगधारण से चोट से हठसे इन्हों से बात पित्त कफ तीनोंदोष व धातु व मल इन्होंका नाशहोवे है ४०६ बात नाशमें अल्पचेष्टाहो मन्दबोलै संज्ञाजातीरहै पित्तनाशमें कफअधिक आवे अग्नि मन्दरहै कांतिजातीरहै ४०७ कफनाशमेंसंधिशिथिल रहै मूर्च्छा व रूखापन व दाहरहै रसनाशमें हृदयमें पीड़ाकंठसोख शून्य त्वचा अरु तृषारहै ४०८ रक्तनाशमें नाड़ीशिथिल व शीतल रहै व तिरछीहो व खाल खरधरीहोवै है ४०९ मांसनाशमें कपोल ओष्ठ, ग्रीवा, कंधे, छाती, उदर, संधि, लिंग नासिका पुट पिण्डी इन अंगों में सूखापन शरीर रुक्षरहै पीड़ारहै नाड़ी शिथिलहोयहै ४१० मेदनाशमें प्लीहवृद्धि व संधि शून्य शरीररुक्ष सचिक्कणमांस खानेकीइच्छाहोयहै ४११ अस्थिनाशमें हाड़ोंमें शूलशरीररुक्षनख व दन्तटूटैहैं ४१२ मज्जानाशमें अल्पवीर्य्यहो सन्धिमें पीड़ा व टूटी रहैं हाड़ों में शून्यतारहै ४१३ वीर्य्यनाशमें स्त्रीभोगमें इच्छा नहीं अरुलिङ्गव अण्डकोशमेंपीड़ा व बहुतदेरमें शुक्रसेकहो वीर्य्यअल्प व रुधिरयुतहो ४१४ बलनाशमें क्रोध,क्षुधा,चिन्ता,शोक, परिश्रम रुक्ष, तीक्ष्णगरम,कटुकइन्होंसेभयकरै निर्बलहो अत्यन्तइन्द्रियों में पीड़ारहै कान्ति जातीरहै मन बिगड़जावे रूखा शरीरवकृशहोजावे ४१६ पुरीष याने विष्ठा नाश में पांसली व हृदयमें पीड़ारहैबोलते हुये बायुशरीरमें ऊपरको जावेयाने डकारआवे कुक्षिभारीरहै ४१७ मूत्रनाशमें अल्पमूत्रता वस्तिमें पीड़ारहैस्वेदनाशमें त्वचा रुक्षरहै नेत्रभी रुक्षरहैं रोमावली खड़ीरहैपसीना आवेनहीं ४१९ आर्तव याने स्त्रीधर्मनाशमें योग्यकालमें स्त्रीधर्मयानेरजस्वलाहोवेनहींहोवे तो अल्पआर्तवहो योनिमें पीड़ाहो ४२० स्तन्य नाशमें चूंची होवे

नहीं अरुहोंतो स्वल्पहों व शिथिलहोवे हैं ४२१ गर्भक्षयमें कुक्षि ऊँचीनहो गर्भफिरैनहीं ऐसेजानो ४२२ यथायोग्यश्रोपध व आहार व बिहारादिक सेवनसे सर्वक्षयादिक दूरहोय हैं ४२३ सचिक्कण व स्वापदार्थसे व वीर्य्यवान् पदार्थ व पुष्ट पदार्थ व दूध व मांसरसादिकसे मनुष्यके बलवृद्धिहोवे हैं ४२४ दोष व धातु मलकरकेक्षीण नर बलक्षीणभी अन्नपानकी इच्छाकरै तो धीरेधीरे आरोग्यहो ४२५ क्षीणपुरुष जिस जिस आहारकी इच्छाकरै यथायोग्य वहीआहार मिलनेमें क्षयादिक दूरहोय हैं ४२६ वातक्षयवाला पुरुप इन्हीं की इच्छाकरै है कसैला व कडुवा व अतिकटु, रुक्ष, शीतल हलका यव मूँग, कांगनी इन्होंसे बातक्षय दूरहोयहै ४२७ पित्तक्षयवालेको ये पदार्थयोग्यहैं उड़द, कुलथी, पीसाहुआअन्न व पीठीकेपदार्थ मस्तु सूक्त, अम्ल, तक्र, कांजी, दही, कटु, गरम, तीक्ष्ण, क्रोध, विदाही, गरमदेश व गरमसमय चाहैहै इन्होंसे पित्तक्षय दूरहोयहै ४२८ कफ क्षयवालेको ये वस्तुहितहैं शीतलजल मधुर, सचिक्कण, लवण, अम्ल, भारीपदार्थ, दही, दूध, दिनमेंशयन ४२९ रसक्षयवाले को ये पदार्थहितहैं शीतलजल रात्रीमेंनिद्रा जाड़ा चांदनी मीठारसभोजन ४३० रक्तक्षयवालेको ये पदार्थहितहैं ईखरस, मांसरस, मन्थ, खांड़ घृत, गुड़, शरबत, दाखरस, अनाररस, सचिक्कण, लवण, कांजी, मदिरा, कन्दमूल, फल, रुधिरमें सिद्धहुआपदार्थ ४३२ मांसक्षयवाले के हित, दहीमें सिद्धअन्न, सिखरण, कईप्रकारके मोटेजीवोंकामांस इन्होंकी इच्छाकरै ४३३ मेदक्षय वालेको ये पदार्थ हितहैं सिखरण मधुर, अम्लरस, संयोगमें पकाहुआ पदार्थ, मेदसिद्ध, मांस ४३४ अस्थिक्षयवालेको ये पदार्थ हितहैं मांस, मज्जा, हाड़स्नेहयुत अन्नादिक ॥ मज्जाक्षयवालेको ये हितहैं स्वादुअन्न अम्लरसयुतश्रेष्ठ है ४३५ शुक्रक्षयवाले को मयूरके व मुरगाके अण्डे हंस व सारा के, जलज व स्थलज जीवोंकामांसहित है ४३६ मलक्षयवाले को ये पदार्थ हितहैं यव, पीठी, शाक नानाप्रकारके मसूर, उड़दका यूष ४३७ मूत्रक्षयवाले को अच्छी ईखरस दूध गुड़ सहित, बेरजल पेया, काकड़ी ये हित हैं ४३८ स्वेदक्षयवाले को ये पदार्थ हित हैं

शरीर मर्दन व उबटना, मदिरा व पवन रहित स्थानमें शयन व भोजन, भारीबस्त्र धारण करना ४३९ आर्त्तव क्षयवाली स्त्रीको ये पदार्थ हितहैं कडुवा, अम्ल, गरम, बिदाहि, भारीफल, शाक, पान पदार्थ ४४० स्तनक्षयवालीको ये पदार्थहितहैं मदिरा, चावलसांठी मांस, गोदुग्ध, खांड़ आसव, दही ह्द्यपदार्थ ४४१ गर्भक्षयवाली को ये पदार्थहितहैं मृग व बकरी व भेड़ व सूरी इन्होंके गर्भपकाये हुये व इनजीवोंकी बसा व शूल्यकामांस ४४२ रससे आदिलेशुक्र पर्य्यन्त धातुको पुष्टकरनेवाला चेष्टामेंचतुर तिसे बलकहे हैं ४४३ चोटसे व भयसे व क्रोधसे व चिन्तासे व परिश्रमसे व धातुक्षयसे बलक्षयको प्राप्तहोयहै ४४४ शरीरभारीरहै अङ्गजड़वत्रहैं ग्लानि होय शरीरवर्ण बदलजाय तन्द्रारहै निद्राआवै बातसूजाहो ये बल-क्षयके लक्षणहैं ४४५ वलक्षयवालेको ये हितहैं दोषसाम्यकरनेवाला व धातुपुष्टि करनेवाला व अग्निसाम्य करनेवाला ये सबद्रव्य बल को बढ़ावे हैं ४४६ कोई कृशभी बलवान् होयहै कोई स्थूलभी नि-र्बलहोयहै तिसकारण चेष्टामें कुशलहो तिसेबलवान्कहे हैं ४४७ औषधमान तोल बिनाद्रव्यकी युक्ति जानीजातीनहीं प्रयोगसाधन अर्थमान याने तोलकहे हैं ४४८ मागधतोल कहे हैं तीसपरमाणु का त्रसरेणु होयहै त्रसरेणुकानाम बंशीभीकहे हैं ४४९ झरोखा के वीचमें सूर्य दीखतसन्ते जो सूक्ष्मदीखैहै तिसका तीसवांभाग पर-माणुहोयहै ४५० छःबंशियोंकी १ मरीचिहोयहै ६ मरीचियोंकी १ राईहोयहै तीनराइयोंका १ सर्षपहोयहै ८ सर्षपोंका १ यवहोयहै४ यवका १ गुंजाहोयहै यानेचिरमठी तिसेरत्तीकहते हैं ४५२ छः रत्ती का माशाहोयहै उसीको हेम व धान्यक कहैहैं ४ माशाको शाणहोय उसीको धरण व टंककहैहैं २ टंकका कोलहोयहै ४५३ दो कोलका कर्षहोयहै उसीको पाणिमानिकाकहै हैं और अक्ष १ पिचु २ पाणितल ३ किंचित्पाणि ४ तिंदुक ५ बिड़ालपद ६ षोडशिका ७ करमध्य ८ हंसपद ९ सुवर्ण १० कवलग्रह ११ उदंबर १२ ये सबकर्षकेपर्य्यायहैं यानेनामहैं ४५७ दोकर्षोंका अर्द्धपल होयहै उसीकोशुक्ति व अष्टमि-का कहैहैं अरु दोशुक्तिका पलहोयहै उसीकोमुष्टि १ आम्ल २ चतुर्थि-

का ३ प्रकुंच ४ षोड़शी ५ बिल्व ६ कहे हैं सबपलके पर्य्यायहैं ४५९ दो पलका प्रसृति होवे है उसीको प्रसृत कहे हैं दो प्रसृति का अंजली होयहै उसीको कुड़व कहे हैं व अर्द्धसरावक व अष्टमान कहे हैं ये सब अंजली के पर्य्याय हैं ४६० दो कुड़व की मानिका होय है उसीको सरावक कहे हैं वैद्यों के जानने योग्य है ४६१ दो सरावक का प्रस्थ होय है ४प्रस्थका एक आढ़क होय है उसी को भाजन १ कांस पात्र २ चतुःषष्टिपल ३ कहते हैं सब आढ़क के पर्य्याय हैं ४६२ चार आढ़कका द्रोणहोय है उसीको कलश १ नल्वण २ उन्मन ३ घट ४ राशि ५ कहे हैं ये सब द्रोणके पर्य्याय हैं ४६३ दो द्रोणका शूर्पहोय है उसीको कुंभ १ चतुःषष्टिसरावक कहे हैं ये शूर्पपर्य्याय हैं दो शूर्पका द्रोणीहोय है उसीको वाहगो-णीकहे हैं ४६४ चारि द्रोणीकोखारी कहे हैं सूक्ष्मदर्शियाने पंडित लोग कहे हैं चारहज़ारछानबेपलकीखारीहोयहैदोहज़ारपलको भार कहे हैं सौ पलकी तुलाकहेंहैं यहनिश्चय है ४६६ माशा टंक विल्व कुड़व प्रस्थ आढ़क राशि गोणी खारी येसब क्रमसे चार चारगुणे होते हैं ४६७ रत्तीसे लेकर कुड़व तकद्रव वआर्द्रव शुष्कद्रव्योंका तोल समहोयहै ४६८ प्रस्थसेलेकरद्रव आर्द्रवका द्विगणा होय है तुलाका मानद्विगुणा नहीं होता ४६९ बांशका व लोहका पात्र ४ अंगुल बिस्तार ४ अंगुल ऊँचाहो अरु पात्रकोमल हो वह मानकुड़व होयहै ४७० जो औषध प्रथम जिसयोगकी कही है तिसीनामसेवह योग कहते हैं ४७१ जहां औषधकी मात्रा नहीं कही है तहांदेशकाल अवस्थाबलप्रकृतिदोष देखकरमात्रा देवे ४७२ कलियुगमेंमंदाग्नि ह्रस्वयाने ठींगनेबल रहित नर हैं इसवास्ते इन्हों के योग्य मात्रा वैद्यकहते हैं ४७३ कलिंगमान। सफ़ेद १२ सर्षपका यव होय है दो यवकी चिरमठी होयहै तीनि चिरमठीका बल्लहोयहै ८ गुंजायाने चिरमठी का माशा होयहै कहीं ७ गुंजा का माशा होयहै ४ माशा का शाण होयहै उसे निष्क व टक कहे हैं ६ माशाका गद्यानहोय है १० माशाका कर्षहोयहै ४ कर्षका पलहोयहै ४ पलका कुड़व होयहै प्रस्थसे आदि पूर्वले तोलकी सम जानो ४७७ औषध युक्तायुक्त

विचार औषध सब नवीन युक्तकरे व बर्त्ते सबकर्मों में बायबिड़ंग पीपली गुड़ घृत शहत धनियां इनको बर्जकर याने इनबिना ४७८ बांसा, नींब, पटोलपत्र, केतक, कोहला, शतावरि, सांठी, कुड़ा, अश्वगंध बावची, जटामासी, गँगेरनकीछाल, पीयाबांसा, सौंफ, हींग, अदरख ईख इनको सरस याने आलीग्रहण करे इनको द्विगुणी नहीं बर्त्ते क्रिया में ४७६ तांबूल, कांजी पुराने अच्छे होय हैं सूखा नवीन द्रव्य सब क्रिया में बर्त्ते ४८० गीला द्रव्य सर्वत्र द्विगुणा गेरै क्रियामें जहां काल नहीं लिखाहो तहां प्रभात जानो जहां औषध का अंग नहीं लिखाहो वहां जड़ जानो ४८१ जहां आपसमें औषधों का भाग नहीं लिखाहो वहां बराबर जानो जहां पात्रका निर्णय नहीं हो वहां मट्टीका पात्र जानो ४८२ जो औषध जिस नुस्ख़ा में दोबार लिखीहुई हो वहां उसको द्विगुणी बर्त्तो १ वर्ष उपरांत औषध गुणहीन होवै ४८३ दो माससे उपरांत चूर्णमेंपराक्रम नहीं रहैहै १ वर्षसे उपरांत गोली व अवलेह कामके नहीं रहैहैं ४८४ चारमाससे उपरांत घृत तेल काम के नहीं अरु औषध व हलके पाक याने मेथी पाकादिक १ वर्ष उपरांत कामके नहीं ४८५ आसव व धातु भस्म व रसपुराने अच्छे होयहैं जो द्रव्य व्याधिको दूर करने वाला नहीं हो व नुस्ख़ा में हो उसे दूरकरै ४८६ जो द्रव्य व्याधि दूरकरनेयोग्यहो नुस्ख़ामें लिखा न हो तबभी अंगीकारकरै ४८७ बिंध्याचल आदि दक्षिण के पर्वत अग्निरूप हैं हिमाचल आदि उत्तरके पर्वत सौम्यहैं इसवास्ते रोगके अनुरूप व बात पित्त के अनुरूप औषध ग्रहण करो अरु अन्य बनों कीभी औषध गरम व शीतल यथायोग्य ग्रहण करो ४८८ प्रातःकाल में प्रशस्त मन वाला पवित्र वैद्य औषध ग्रहण करै आदिमें सूर्य्य के सम्मुख ह्वैके मौन हुआ शिव को हृदय में नमस्कार करै ४८९ एक सी पृथ्वी मांहसे द्रव्य उत्तर की तरफ ह्वैके ग्रहण करै सांपकी बंबी व कुत्सित देश अनूप व ऊखर देश व श्मशान इन जगह की औषध नहीं लेव जहां जीवजंतु घने बसैं वहां की औषध व अग्नि की दाह से दग्ध व जाड़ा की दग्ध हुई औषध ये सब कामकीनहीं ४९१

शरद् ऋतुमें सम्पूर्ण कार्य के अर्थरस सहित औषध ग्रहण करै विरेचन वमन वास्ते बसंतऋतुके अंतमेंवैद्य औषध ग्रहणकरै ४९२ अतिस्थूल जटावालेवृक्षा की मूलत्वचा ग्रहण करै अथवा सूक्ष्म वृक्षमात्रके सूक्ष्मजड़ ग्रहणकरै ४९३ बड़से आदि वृक्षोंकी छाल बिजोरादिक वृक्षका साररलेवै तालीसादिक वृक्षों की पत्ती लीजे त्रिफलादिकवृक्षका फललीजे धवआदि वृक्षकेपुष्पलीजे स्नुही याने थूहर आदि बृक्षका दूधलीजे ४९५ कहीं जड़ कहीं कंद कहीं पाती कहींफल कहींसम्पूर्ण वृक्ष कहींगोंद कहींछाल ऐसे वैद्यवर्त्तेहैं ४९६ चीता जमींकन्द नींबबांसा त्रिफला धव कटेली खदिर बड़ येसबक्रम से जानो ४९७ घृत तेल व जल व काढ़ा व व्यञ्जनादिक ये सब पकायके शीतलकरि पीछे गरम करै तो विष समान जानो ४९८ सूक्ष्म व जलमेंगेरीडूबजायऐसीहरितकी व भिलावा येश्रेष्ठहैं ४९९ बराह के मस्तकसमानहो उसे बाराहीकन्द कहतेहैं जोकांचसमान हो उसे सौवर्च्चल लवणकहे हैं जो स्फटिक समानहो उसे सैंधव लवण कहेहैं ५०० सुवर्णसम कांतिवाली सोनामाखी श्रेष्ठहै चन्द्रमासमान रूपामाखी श्रेष्ठ है ५०१ जो जल पूर्ण कांसे के पात्र में गेराहुआ बिखरैनहीं प्रतानकरि बढ़े वह शिलाजीत श्रेष्ठ है ५०२ सचिक्कण कपूरश्रेष्ठहोयहै सूक्ष्म बीजवाली इलायचीश्रेष्ठहोयहैअति सुगन्धवाला व भारी सफ़ेद चन्दन श्रेष्ठहै ५०३ लालचन्दन अत्यन्तलाल श्रेष्ठहै काकतुण्ड समान सचिक्कण व भारी अगर श्रेष्ठ होयहै ५०४ सुगन्धवाला हलका व सूक्ष्म देवदारु श्रेष्ठहोय है व सचिक्कण व सूक्ष्म व सुगन्धि व कोमल देवदारु गुणदायकहै ५०५ अत्यन्त पीली दारुहल्दी श्रेष्ठहोयहै भारी व सचिक्कण व सफ़ेद व सुगंधित कोमल अन्यरङ्गवाला जायफल श्रेष्ठ होयहै ५०६ गोके थनसमान मुनक्का दाख श्रेष्ठ होयहै करवन्दी समान दाख मध्यमा होयहै ५०७ मलरहित चन्द्रकांति समान खांड़ श्रेष्ठ होयहै गोके घृत समान व रुचिकारक सुगन्धवाला शहत श्रेष्ठ होयहै ५०८ चावलोंमें शालिचावलश्रेष्ठहोयहै सांठीचावलोंमें लालसांठीचावल श्रेष्ठहोयहै सूखे अन्नोंमें यव व गेहूँ श्रेष्ठहोयहै ५०९ शिंबि अन्नोंमें

मूँग व मसूर वतूरधान्य श्रेष्ठ हैं रसों में मधुर रस श्रेष्ठहै लवणों में सेंधव लवण श्रेष्ठहै५१० अनार आमला व दाख व खजूर व फालसा व आंब व बिजोरा येफलों में श्रेष्ठ हैं ५११ पत्रशाकोंमें बथुआ व जीवन्ती व पोतिकाश्रेष्ठहोय है फलशाकोंमें परवल श्रेष्ठहै कंदशाकों में जमींकन्द श्रेष्ठहै ५१२ जंघाल याने मोटीपीड़ियोंवाले पशुओं में राण कुरङ्ग हरिण श्रेष्ठहै पक्षियों में तीतर लवा मत्स्यों में लोहित मत्स्य श्रेष्ठहै ५१३ तांबेके समान बर्णवाला हरिण होयहै काला रङ्ककाराण होय है कलुक लालरङ्ग व हरिणकी आकृतिवाला मोटा कुरंगहोयहै ५१४ जलोंमें आकाशसे बर्षाहुआ जलश्रेष्ठहै दूधों में गौकादूध श्रेष्ठहै घृतोंमें गौकाघृत श्रेष्ठहै तैलोंमें तिलकातैलश्रेष्ठहै ईखकेविकारमें मिश्रीश्रेष्ठ ५१५ ग्रीष्मऋतुमें शिंबिअन्नों में उड़द कोत्यागदेवे लवणोंमें ऊख लवणकोत्यागै फलोंमें लकुच याने छोटे बड़हलकाफलत्यागै शाकोंमें शिरसमके शाकको त्यागै५१६ ग्राममें रहनेवालेपशुओंमेंगौकेमांसकोत्यागै महिषीकीबसाको अवश्यत्यागै भेड़कादूध व कुसुम्भतेल व भाणितकोत्यागै ५१७ ईखकारसपकाया हुआआधाकट्ठाहुआ फाणितहोयहै५१८ मच्छिव अनूपदेशके जीव का मांस दूधसहित खावेनहीं कबूतरका मांस सर्षप तैलमें भूनकर खावेनहीं५१६ मछलीको खांड़ व शक्करसहित खावेनहींतथाशहतसे खावेनहीं सत्तूमांसरससेखावेनहीं दही गरमअन्नसे खावेनहीं५२० दहीको गरमपदार्थसङ्ग त्यागदेवे जलसे मिलाय शहत पीवेनहीं दूध खिचड़ी मिलायके खावे नहीं केलाका फल तक्रसङ्ग खावेनहीं बिल्वफल दहीसङ्ग खावे नहीं ५२१ कांसेके पात्रमें दश दिन तक धरे घृत व शहत तो बिषसमहोयहै तिनको त्यागदेवे पकाहुआ अन्न व कषाय फिर गरमकरेहुये को त्याग देवे ५२२ एक जगह बहुत मांस बिरोधको प्राप्तहोय है अरु शहत व घृत व बसा व तेलभी आपसमें एकजगह बिरोधी है ५२३ जहां लवणशब्दहो वहांसैंधव लवणजानो जहां चन्दन शब्द हो वहां लालचन्दन जानो चूर्ण व अवलेह व तेल व आसव इन्होंमें सफेदचन्दनका ग्रहण है कषाय व लेपमें बहुतकरके लालचन्दन युक्तहोयहै भीतरकी शुद्धिमें अज-

मोद व अजवाइन होय है वही आहरकी शुद्धि में भी जानना दूध घृतके शब्दमें गौकादूध व घृतयुक्त होयहै जहां शकृतरसहोय वहां गौका गोबरजानो मूत्र शब्दहो तहां गोमूत्र जानो ५२६ बहुत करके औषध प्रातःकाल में ग्रहण करै व कषायादिक भी प्रभात समय में ग्रहणकरै जो समय औषध ग्रहण करनेका है सो आगे कहता हूं ५२७ औषध खानेके पांच समय हैं प्रथम काल सूर्योदय दूसरा काल भोजन समय तीसरा सन्ध्या को चौथा रात्री में भोजनके समय में पांचवां सोने के समय में ५२८ जिस मनुष्य को पित्त व कफका बेगहो उसे रेचन व वमन व लेखन क्रिया प्रातःकालकरै लेखन याने चमड़ेकी पट्टी माथे पर बांधकर औषध भरै पित्तके अधिकार में बमन कफके अधिकार में रेचन व लेखन यह औषध करनेका प्रथमकाल बाँधा ५३० अपान बायुके बिगड़े भोजनके प्रथम औषधखिलावै व अरुचिमें विचित्र भोजनकेसंगरुचिकार औषधखिलावै अच्छा वैद्य समान बायु अरु मंदाग्निमें अग्नि ज्वलित कारक द्रव्यभोजनके मध्यमेंदेवै ब्यानबायुके कोपमें भोजन के अन्तमेंखवावै अरु हुचकीआपेक्षक कंपावायुमें भोजनके आदि अंतमेंदेवै यह२ कालहैं ५३४ स्वरभंगकरनेवाली उदानवायुके कोप में ग्रासग्रासके अन्तमें औषधदेवै संध्यासमय अरुप्राणवायुके कोप में सांझके भोजनके अन्तमें देवै यहतृतीयकाल बाँधा अरु वारबार प्यास छर्दि हिचकी श्वासमें अरु बिषपीड़ितको अन्नकेसंग औषध देवै यह चौथा काल बाँधा गले के ऊपर कर्ण रोग मुख नासिका रोगमें लेखनके निमित्त रात्रीको बिना औषध पाचन शमन औषध देवै यह पांचवां कालबांधा ५३८ औषध प्रतिनिधि कहतेहैं चीता के अभावमें जमालगोटाकी जड़ औषधमें मिलावै अथवा शिखरिज याने शिलाजीत मिलावै धमासा के अभाव में तांवड़ा धमासा वरतै ५३९ तगरके अभावमें कुष्टवरतै मोहवाके अभावमें मंजिष्ठा वरतै५४० अहिंस्राके अभावमें मानकन्द वरतै लक्ष्मणाके अभावमें मोरशिखावरतै ५४१ बोलसरीकेअभावमें लालकमलवरतै नीलकमलकेअभावमें कमोदनीवरतै ५४२ पुष्करमूलकेअभावमें व ग्रंथि-

पर्णीकेअभावमें व जलपीपलीके अभावमें कुलिंजनवरतै ५४३ चवि-
का वगजपीपलीकेअभावमेंपीपलासूलवरतैबावचीकेअभावमेंपुआ-
ड़कावीजवरतै५४४जावित्रीकेअभावमेंलवंगवरतै आककेदूधकेअ-
भावमेंआककारसवरतै५४५दारुहल्दीकेअभावमेंहलदवरतै रसौत
केअभावमें दारुहल्दीवरतै ५४६ सौराष्ट्री माटीके अभावमें फटकड़ी
वरतै तालीसपत्रके अभाव में स्वर्णताली वरतै ५४७ भारंगी के
अभावमें तालीस व कटेलीकीजड़वरतै संचरलवणकेअभावमें सादा
लवणधूलसहितवरतै ५४८ मुलहठीकेअभावमें धवकोवरतै अम्ल-
वेतके अभावमें चूकावरतै ५४९ मुनक्का दाखके अभावमें कास्मरी
फल वरतै दोनुओंके अभावमें मधूक याने महुआपुष्प वरतै ५५०
नख औषधके अभावमें लवंगपुष्पवरतै कस्तूरीके अभावमें कंकोल
वरतै ५५१ कचूर के अभावमें ग्रन्थिपर्णीवरतै केसर के अभावमें
नवीन पुष्प कुसुम्भा के वरतै ५५२ कंकोल के अभाव में जाती
पुष्प वरतै कपूर के अभावमें सुगन्धबाला नागरमोथा वरतै ५५३
चन्दन के अभाव में कपूर वरतै दोनुओं के अभाव में लालच-
न्दन वरतै ५५४ लालचन्दनके अभावमें नवीनबाला वरतै अतीस
के अभावमें नागरमोथावरतै छोटीहरड़ेके अभाव में आंवला वरतै
५५५ नागकेसर के अभावमें पद्मकेसरवरतै मेदाके अभावमें शता-
वरिवरतै जीवक काकोली के अभावमें विदारीकंद वरतै ऋद्धि के
अभावमें आसगंध वरतै वृद्धिके अभावमें बाराहीकंद वरतै बाराही
के अभावमें चर्मकराल को वरतै वाराहीकंद पश्चिमदेशमें गृष्टिसं-
ज्ञक होय है अनूपदेश में वाराहसमान रोमहोयहैं औषधके ५५६
भिलावा के अभावमें रक्तचन्दन व चीता वरतै ईख के अभाव में
नल याने नड़ वरतै ५६० सुवर्णके अभावमें सोनामाखी वरतै चांदी
के अभावमें रूपामाखी वरतै ५६१ सोनामाखी के अभावमें सुवर्ण
सम गेरू वरतै सुवर्णभस्म व चांदी भस्मके अभावमें लोह भस्मसे
काम लेवे ५६२ कान्त लोहके अभावमें तीक्ष्ण लोह वरतै मोती
भस्म के अभावमें मोतीसीपी वरतै ५६३ शहतकेअभावमें पुराना
गुड़वरतै रावके अभावमें सफेदखाँड़ वरतै ५६४ मिश्री के अभाव

में सफेदखाँड़बरते दूधके अभावमें मूंगरस व मसूररस वरते ५६५ जो जो औषध जिस जिस औषध के अभाव में लिखाहै वह उसी तरह वैद्यबरते ५६६ रसवीर्य्य विपाक करिकर द्रव्यकोविचार औषध में युक्तकरै ५६७ द्रव्यमें पांच पदार्थहोतेहैं गुण१रस२वीर्य्य३ बिपाक४शक्ति५ ऐसेजानो ५६८ षट्द्रव्य आश्रित रस क्रमसेबलदायकहोतेहैंक्रमकहतेहैं स्वादु१ अम्ल२लवण३ तिक्त४उष्ण५ कषाय६ मधुररस पृथ्वी जलसेहोयहै अम्लरस पृथ्वी तेजसे होयहै लवण जलतेजसे उपजेहै तिक्त आकाशबायुसेउपजेहै उष्णबायु तेजसे उपजैहै कषाय पृथ्वी बायुसे उपजैहै५७० स्वादु व अम्ल व लवण बायुको दूरकरै है तिक्त व उष्ण व कषाय कफकोदूरकरेहै कषाय व तिक्तमधुरपित्तको दूरकरेहै और रसबिपरीत फलदेयहै ५७१ जोरस बातनाशकहै वह जो रुक्ष व हलकापन व शीतलतायुक्तहो तो बात नाशकरैनहीं ५७२ जो रस पित्तनाशकहैं वेजोतेज व गरम व हलके हों तो पित्तनाशकरैंनहीं ५७३ जोरस कफनाशकहोवे जो चिकना व भारी व शीतल हो तो कफनाशकरैनहीं ५७४ मधुर रस शीतलहै धातुवस्तन्यकोबलदेयहै व नेत्रकोहितहै व बातपित्त नाशकहै मुटापा व मल व कृमिको पैदाकरेहै बाल वृद्ध व क्षीण व विवर्ण्य व केशरहित व शिथिल इन्द्रियवाला ऐसे मनुष्यों को श्रेष्ठ है वीर्य्य पैदाकरै है अरु मधुर रस कंठ खुशकीको दूरकरैहै विषहरैहै सचिक्कणहै आयु को हितहै ५७७ अत्यन्त मधुर रस भोजन कियाहुआ ज्वर व श्वास गलगंड व गलार्बुद व कृमि व मोटापन व अग्निमन्द व प्रमेह व कफके रोग इनरोगोंको पैदाकरैहै ५७८ खट्टारस पाचनहै व रुचिकारकहै अरु पित्तकफ व रुधिर रोग पैदाकरैहै व हलकाहै लेखनहै व गरमहै बाहरसे शीतलहै ग्लानिकारकहै बातनाशकहै सचिक्कण है तेज है सर याने शरीर में प्रवेश करनेवाला है वीर्य्य बंधेज व अनाह व दृष्टिका नाश करै है रोम व दांतों को खड़ेकरै है नेत्र व भृकुटियोंकोसंकोचकरैहै ५८० अत्यंत खट्टारसभोजन कियाहुआ तृषा व दाह अंधेरी व ज्वर व खाज व पीलिया व बिसर्प्प व शोथ व बिस्फोटक व कुष्ठ इतने रोगोंको करैहै ५८१ लवणरस शुद्धिकरै

है व रुचिउपजावै है पाचनहै व कफपित्त नाशकरैहै पुरुषपनाको व वातको हरैहै शरीरकोकोमल व शिथिल करैहै बलहरैहै मुखमें जल पैदा करैहै कपोल व कंठमें दाहकरैहै ५८३ लवणरसअत्यंत भोजन कियाहुआ नेत्रपाक व रक्तपित्त व कोढ़रोग व क्षयीरोग व वलीपलित व कुष्ठ व विसर्प्प व तृषा इन रोगोंको पैदाकरैहै ५८४ तिक्तरस कडुआ है गरमहै तेज है निरंतर वातपित्त को पैदाकरै है कफको हरैहै हलका है कीड़े व खाज व बलिताको हरैहै रूखापन व स्तन्यको हरैहै मेदवृद्धिवाले पुरुषको क्लेशकरैहै अश्रुपातकोदेय है नासिका,नेत्र,मुख व जिह्वा इन्होंको उद्वेगकरैहै दीपनहै व पाचन है रुचि उपजावैहै नाक का शोष पैदा करै है क्लेद मेद,बसा,मज्जा, मल मूत्र इनको शोखैहै श्रोत्रनाड़ीको प्रकाश करै है रूखाहै बुद्धि बढ़ावैहै मलबंधकरैहै अग्निका अंशरूपहै इसवास्ते वुद्धिकोहितहै तिक्तरस अत्यंत भोजनकियाहुआ भ्रम व दाह मुख तालु ओष्ठइन्हों में शोषकरैहै कंठमें पीड़ा व मूर्च्छा तृषा कंपा व बल वीर्य्यको हरैहै कटुरस शीत तृषा मूर्च्छा,ज्वर,पित्त कफ इनको दूरकरैहै कृमि,कुष्ठ, विष,ग्लानि,दाह,रक्तविकार इनकोहरैहै रुचिउपजावे है आपरुचि हीनहै कंठ व स्तन मुखको शुद्धकरैहै बातवालाहै अग्नि पैदाकरैहै नासिकामें शोषकरैहै रूखा व हलकाहै५९१ कटुरस अत्यंतभोजन कियाहुआ शिरमें शूल व मन्यास्तंभ व पीड़ाकरै है कंप व मूर्च्छा व तृषा पैदाकरैहै बलवीर्य्यको हरैहै ५९२ कषायरस घावको पूरण करैहै व ग्राहीहै व स्तंभनहै व शोधन है व लेखनहै व पीड़न है व सौम्यहै व शोषणहै व बातको कोपकरैहै कफ व रुधिर व पित्त इन को हरैहै रूखाहै शीतलहै हलकाहै शरीरको स्वच्छकरैहै आमको स्तंभनकरैहै जिह्वाको जड़करैहै कंठ व मूत्रस्रोतको बंधकरै है ५९४ कषायरस अत्यंत भोजनकियाहुआ ग्रह याने बंध व आध्मान व हृदय में पीड़ाकरैहै व अपाक्षेपकरोग करैहै ५९५ मधुर रसवाले पदार्थ सब कफकारी हैं इनके विना पुराना चावल व मूंग व गेहूं व शहत व मिश्री व जांगलदेश के जीवकामांस ५९६ खट्टारसवाले पदार्थ प्रायतासे पित्तकारीहै इन्होंकोवर्जकरि आंवला व अनार लवण प्राय-

तासे नेत्रका वैरीहै सैंधव लवण त्रिना ५९७ तिक्तरस प्रायतासे कटु- आपन होनेसे बातको कोपकरैहै व बीर्य्यहीन है सोंठि व पिप्पली व लवण व परवल व गिलोय इनको वर्जकरि ५९९ पिप्पली व सोंठि व नागरमोथा व कटुकधातुनाशकहोयहै प्रायतासे कषायरस स्तंभन होयहै हरीतकीबिना ६०० संक्षेपसे ६ छःरसोंके गुणकहेहैं रसादिक योगसे तो औरही गुणका उदयहोयहै ६०१ पृथ्वीका भारी गुण है आकाशका हलकागुण है जलका सचिक्कण गुणहै वायुका रुक्षगुण है तेजका तीक्ष्णगुण है ६०२ गर्वादिकगुण पृथिव्यादिकमें रहते हैं साहचर्य से रसोंमें भी रहतेहैं ६०३ भारीगुण वायुको हरैहै पुष्टि व कफको पैदाकरैहै देरसेंपकैहै स्निग्धगुण बातकोहरैहै कफपैदाकरैहै धातुबीर्य्य बढ़ावैहै ६०४ लघुगुण पत्थ्यहै कफकोहरै है जल्दीपकैहै ६०५ रुक्षगुण बातपैदाकरै है कफकोहरैहै तीक्ष्णगुण पित्तको करैहै लेखनगुण कफवातकोहरैहै ६०६ सुश्रुतग्रन्थमें २० गुण लिखे हैं तिनको कहतेहैं गुरु १ लघु २ स्निग्ध ३ रुक्ष ४ तीक्ष्ण ५ श्लक्ष्ण ६ स्थिर ७ सर ८ पिच्छल ९ विशद १० शीत ११ इष्ट १२ मृदु १३ कर्कश १४ स्थूल १५ सूक्ष्म १६ द्रव १७ शुष्क १८ आशु १९ मन्द २० ऐसे जानो ६०८ तीक्ष्ण गुण भारीहोय है लघुगुण रुक्ष होयहै श्लक्ष्ण स्नेहबिनाभी होयहै कठिन चिक्कणारूपहोय है ६०९ बात व मलकास्तंभन करनेवाला स्थिरगुणहोय है बात मलका प्र- वर्तन करनेवाला सगुणहोय हैं ६१० पिच्छलगुण बलकरै है टूटा हुआको जोड़देयहै कफकारी है व भारीहै विशद गुण घावको भरै है ग्लानि को दूरकरै है ६११ शीतगुण आनन्द करनेवाला है व स्तम्भन करै मूर्च्छा व दाह व तृषा पसीना को हरै है उष्णगुण शीत से बिपरीतहोय है अरु पाचनहोयहै ६१२ स्थूलगुण शरीरको मोटा करै है स्रोतों का अवरोध करै है देह के सूक्ष्म छिद्रों में जो प्रवेश करैहै वह सूक्ष्महोयहै ६१३ द्रवगुण ग्लानिकरै सर्वशरीर में व्याप्तहोजाय इससे बिपरीत शुष्क होय है आशुगुण शरीर में जल्दी प्रवेशहोयहै। दृष्टांत जैसेतेल में जल फैलजाय तैसे ६१४ सम्पूर्णकर्मोंमें जो चिरकारीहो तिसे मंद व शिथिल कहतेहैं ६१५

दीपन पाचन आमको पकावै अरु अग्निज्वालित करै तिसे दीपन कहते हैं यथा सौंफ अरु आमको पकावै अरु अग्नि बढ़ावै उसे पाचन कहे हैं यथा नागकेसर चीता दीपन पाचन है ६१७ जो द्रव्य कोठेको शुद्धकरै मल न बांधै और बढ़े दोषको शमनकरै उसे शमन कहते हैं यथा गिलोय ६१८ जो द्रव्य मलको पकाय भेदनकर गिरावै उसे अनुलोमन कहते हैं यथा हरड़ ६१९ जो वस्तु पकने योग्य अनपची होइ कोठेमें लिपटि के रहगई हो तिसे अधोमार्ग से गिरावै उसे स्रंसन कहते हैं यथा अमतास ६२० जो मलवातादि दोष से विशेष पकगयाहो अपक्कहो उसे पतला करवावै उसे रेचन कहते हैं यथा निशोथ ६२१ जो मलबातादि दोषते बँधाहो वा न बँधा हो वा गोटे परगयेहों उसेफोरिकै अधोमार्ग से गिरावै उसे भेदन कहते हैं यथा कुटकी ६२२ जो द्रव्य कच्चा पित्त कच्चा कफ ऊर्ध्वमार्ग से गिरावै उसे बमनकहते हैं यथा मैनफल ६२३ जो द्रव्यदुष्ट मल वा पित्त कफ स्थान छुटाइकै ऊर्ध्व मार्ग या अधोमार्ग से गिरावै उसे शरीरशोधनकहते हैं यथा बनतोरी ६२४ जो बँधेहुये कफादिकको सुशक्तिकर निकारै उसेछेदन कहते हैं यथा यवाखार शुंठी मिरच पीपरि शिलाजीत आदि ६२५ रसादिधातु अरुशरीरके तिन्हैं सुखाकै देहको दुर्बलकरै उसेलेखन कहते हैं यथा शहत व गरम जल यव बच ६२६ जो दीपनकरै व पाचनकरै व गरमीकरके कफ धातु मल इनके रसको सुखावै तिसे ग्राही कहते हैं यथा सोंठि श्वेतजीरा गजपीपरि ६२७ जो द्रव्य रुक्ष हो अरुशीतल हो कषाय हो अरु पाचन शक्तिक्षीण हो सो वातकृत द्रव्यको स्तंभन कहते हैं यथा कुरैया लोहनपत्ती ६२८ जो द्रव्य जराअवस्था के रोगनको दूरकरै उसे रसायन कहते हैं यथा गिलोय व गुग्गुल ६२९ जिसद्रव्य से मैथुन में विशेष सुख हो तिसे वाजीकरण कहते हैं यथा बरियारा व कौंचबीज ६३० जो धातुको बढ़ावै उसे शुक्रकहते हैं यथा असगंध मुशली शतावरि ६३१ और धातुको वृद्धिकरै उसे रेतजन्य कहते हैं यथा दूध उर्द आंवला ६३२ शुक्रकी प्रकट करनेवाली स्त्रीकी धातुको रेचन

करनेवाली बड़ी भटकटैयाका फलहै और वीर्य्यस्तंभी जायफलहै और वीर्यशोषकहरड़है तर्बूज है ६३३ जो वस्तु रोममार्गसे शरीर में प्रवेशकरे तिसे सूक्ष्मकहिये यथा सैंधव शहत अरण्डी तेल निंब ६३४ प्रथम शरीर में व्यापित हो फिरपचे उसे व्यवायिक कहतेहैं यथा भांग अफीम ६३५ देहके बंधन ढीलेकरै रसादि धातु अरु शुक्रको क्षीणकरै विसे विकासीकहते हैं यथा सुपारी कोद्रव ६३६ जोवस्तु बुद्धिको संभ्रमकरै और मदकरै व गरमहो सो तमोगुणी है यथामदिरा ६३७ व्यवायि अरु विकासी सूक्ष्मछेदनकृत मदकृत अग्निवर्द्धन मृत्युकारक येसवद्रव्य जिसऔषधिकेसंगपीवे तैसागुण करै ऐसाविषहोताहै ६३८ जोद्रव्य अपने पराक्रमसे संचित दोषों को निकारडारै उसे प्रमाथी कहतेहैं मरीच व वच ६३९ जो पदार्थ आपस में स्निग्धता गुण करिकै रसवाहिनी नाड़ियोंका निरोधकरै अरु शरीरको जडकरै उसे अभिष्पंदी कहते हैं यथादही ६४० वि-दाहिद्रव्य इतने अवगुण करै है खट्टीडकार तृषा हृदयमें दाह और देरसेपकैहै ६४१ योग वाहिद्रव्य संसर्गजवस्तु के गुणोंको ग्रहण करैहै यथा शहत जल तेल पारा लोह येपदार्थ दुसराके गुणसरीखे अपने गुणकरैंहैं ६४२ गरम व शीतल गुणकरके वीर्य दोप्रकारका है त्रिभुवनमें वीर्य अग्नि व सोमरूपहै ६४३ गरम पदार्थ वातकफ कोहरैहै पित्तकी वृद्धिकरै है शीतलपदार्थ पित्तकोहरै है वातकफको करै है ६४४ गरमपदार्थ श्रम, तृषा, ग्लानि, पसीना, दाह, जल्दी पकैहै वातकफको हरैहै शीतलवात कफपैदाकरैहै अरु आनन्दरूप है व जीवन व स्तंभन व रक्त पित्तको स्वच्छकरै है ६४५ उदरकी अग्नि संयोगसे जो अन्यरस पैदा रसका परिणामका अन्तमें उसे विपाक कहतेहैं ६४६ मधुररस मधुरको पैदाकरैहै अम्लरस अम्ल कोपकावैहै कटु व तिक्त व कषाय इन्होंकारसप्रायतासे कडुआहोयहै रसोंकापाक तीनप्रकारकाहोयहै स्वादु व अम्ल व कषायहोयहै ६४८ मधुरपाक कफकरैहै वातपित्तको हरैहै खट्टारस पित्तपैदाकरैहै वात कफहरैहै कडुआरस वातकोकरैहै पित्तकफकोहरैहै ऐसे रस विपाक जानो ६५१ आपसमें औषधरसादि साम्यहोते भी जिसका विशेष

गुणहोवहकहतेहैं जमालगोटाकीजड़ चीतासमानहै रसादिककरिके परंच रेचन गुणकरनेवाली है महुआकी समान मुनक्कादाखहै परंच मृदुरेचन गुणकरैहै दूधके समान भी घृतहै परंच घृतदीपनहै आंवरेकारस गुणवीर्य विपाक अधिकारमें समानगुणहै यद्यपि हलका है तौभी तीव्रदोषोंको हरैहै और बड़हलकागुण वीर्यविपाक त्रिदोष कारकहै जोदोनों मिलाइकेदे तौभी आंवरा अपने प्रभावसे त्रिदोष नाशकहै कोई कोई द्रव्य केवल प्रभावसेही रोगदूरहोताहै जैसे सहदेईकी जड़ माथापर बांधनेसे ज्वरको दूरकरै है ६५५ जोऔषधि स्वभावसे प्रसिद्धहै वह वैद्य चिंतमन करनेके योग्यनहीं जो स्वभाव से प्रसिद्ध औषधिनहीं वह वैद्य चिंतमन करनेयोग्यहै ६५६ जोप्रत्यक्ष फलदेनेवाली औषधि वहस्वभावसे प्रसिद्धहै कारणसेऔषधि परीक्षा वैद्य न करै ६५७ ॥ अथदिनचर्या ॥ मनुष्यजिसविधि करिके आरोग्यरहै तिसविधिकोवैद्य करवावै ६५८ जो पुरुष दिनचर्या वा रात्रिचर्या वा ऋतुचर्याजैसे ग्रन्थोंमें लिखी है तिनके समान आहार विहारादिकरै वह सदाआरोग्यरहै ६५९ स्वस्थ यानेआरोग्यवान् लक्षण कहते हैं समदोषरहै वा समअग्नि जिसकीहो समधातु बल क्रियाहो प्रसन्न आत्माहो इन्द्रिय मनवाला स्वस्थ कहावैहै ६६० सम दोष स्वस्थ याने आरोग्य वाला पुरुष बिना नहींहोते ६६१ मनुष्य अपनी उम्र रक्षाके अर्थ ब्राह्मी मुहूर्त्त में जागै स्वस्थपुरुष सम्पूर्ण पाप शांति के अर्थ परमेश्वर का स्मरण करै पीछे दही व घृत व दर्पण सिद्धान्न व विल्वपत्र व गोरोचन व माला पुष्पों की इनका दर्शन व स्पर्श न करै जो ज्यादह जीवने की इच्छा करै तो अपना मुख घृत में देखै ६६२ प्रभात में मलादि विसर्जन से आयु बढ़ै है अरु अंत्र कूजन व आध्मान व उदर भारीपन ये रोग नहीं होते हैं ६६४ मलवेग रोकने से आठो पवाशूल व परिकर्त्तिका मलरोध व डकार जादै आवै अथवा मुखद्वारा मल निकसै इतने रोग मनुष्यके होते हैं ६६५ बातका रोकनासे बात मूत्र मलरोधहो वा आध्मानहो वा छर्दि वा उदर में बातरोगहोहै ६६६ मूत्रवेग रोकने में वस्ति व लिंगमें शूलचलै व मूत्रकृच्छ्रहो व शिर

में पीड़ाहो बन्धन व आनाहरोगहोहै ६६७ वेग रोकिकर अन्य कार्य न करै अरु बलसे वेगधारण न करै काम व शोक भय क्रोध से मनके वेगोंको धारणकरै ६६८ गुदालेआदि मलअंगोंकामार्जन कान्ति बलदे है व पवित्रकरे है आयुः व दरिद्रता व कलिपापहरै है ६६९ मट्टीलगाय हाथपैरका धोवना शुद्धिकरै है मल व परिश्रम को हरै है नेत्रों में गुणकरैहै राक्षस दोषकोहरैहै ६७० दातन बारह १२ अंगुल की लम्बी मुखमेंकरै कनिष्ठिकाअंगुलीसे मोटीकोमल ग्रंथि वव्रणवाली न हो एकएकदांतकोघर्षणकरै कोमलहाथसे अरु दन्त शोधनचूर्णलगायअरुदांतके मसुढ़ेको दन्तनसेघसैनहीं पीछे शहत व शुण्ठ व मिरच पिप्पलयुत तेल व सैंधव लवणचूर्णसे व तेजबलाके चूर्ण से नित्य दांतोंकी शोधनकरै मधुरवृक्षोंमें तो दंतन महुवाकीकरै कटुकवृक्षों में करंजवाकी दन्तनकरै तिक्तवृक्षोंमेंनिम्ब की दन्तनकरै कषायवृक्षों में खदिरकी दन्तन करै समय व दोष व प्रकृति देखकरि यथोचित द्रव्यसे दन्तनकरै ६७५ मुख प्रक्षालन से मुख कफ व वैरस्य गन्धजावै जिह्वा व मुख के रोगजावें रुचि व हलकापनप्राप्तहो ६७६ आककीदन्तनकरै तो वीर्यबढ़ै बटकीदंतन करै तो कान्तिबढ़ै करंजकी दन्तनकरै तो जीतहो रुक्षवृक्षकीदंतन करै तो धनप्राप्तिहो बदरीकी दन्तनकरै तो मधुरध्वनिहो खदिरकी दन्तनकरै तो मुखमें सुगन्धआवै बिल्व की दन्तनकरै तो धीरजता व बुद्धिबढ़ै चम्बेली की करै तो श्रवणेन्द्रिय बलवान्हो सिरस की दन्तनकरै तो कीर्ति सौभाग्य व आयुबढ़ै डंगा की दन्तन करै तो धीरजता बुद्धि शक्ति व स्वरबढ़ै अनार की दन्तनकरै तो रूपबढ़ै व श्रेष्ठहो अर्जुन व कुडावृक्षकी दन्तन से रूपअच्छाहो तगर व मंदार वृक्षसे दुःखप्रगटै ६८१ कण्ठ तालु ओष्ठ जिह्वा दन्त इनमें रोगहो तो दन्तन करै नहीं अरु मुखपाक में व शोषमें व श्वास व कास व छर्दिवाला दन्तन न करै अरु दुर्बल व अजीर्णमें भोजन करनेवाला अहिक्का व मूर्च्छा मदवाला शिर रोग तृषावाला परिश्रमवाला व ग्लानिवाला व अर्दितरोग व कर्णशूलरोग व नेत्ररोग व नवीन ज्वरवाला अरु हृदय रोगवाला दन्तन कभी करै नहीं ६८४ जिह्वा

साफकरनेको सुनाकी सलाई या चांदीकी या तांबाकी या बीच से पटीकाष्ठकी कोमलरूप कोमल पत्रवाली चाहिये ६८५ दशअंगुल की कोमल व सचिक्कण दन्तन तिससे जिह्वा लेखनकरे वह कर्म्म जिह्वा मल व मुख बैरख व दुर्गन्ध व जड़ता तिसेहरैहै ६८६ दंतन पीछे शीतलजल से गंडूष याने कुरलेकरै बारंबार गंडूष कफ तृषा मलहरैहै मुखकी शुद्धिकरतहै कछुक गरमजल का गंडूष कफ अरु मलकोहरै है दन्तजाख को हरैहै मुखहलकाकरैहै ६८८ विषमूर्च्छा मदवाला व शोषरक्त पित्तवाला व नेत्ररोगवाला क्षीण व रुक्षवाला इनको गंडूष अच्छानहीं शीतलजलसे मुख प्रक्षालन रक्तपित्तकोहरैहै मुखकीपीड़ा का याने कील व शोष व नीलापन व व्यंग इनको हरै है ६९० अरु कछुक गरमजल से मुखका प्रक्षालन मुखको शुद्धकरै है व मुखसूजन व कफ वातकोहरै है व मुख सचिक्कणकरैहै ६९१ कड़वे तेल आदि द्रव्यन को नित्य योजना करै कफको याने प्रभात कालमें पित्तकोपमें वातकोपमें सामकाल में लेवै ६९२ सुगन्धता मुख में व चिकणापन व इन्द्रिय प्रकाश व श्रेष्ठध्वनि व पलिरोग नाशरूप लेनेवाले को प्राप्त होवै है ६९३ सुरमा नित्य नेत्रों में अंजनकरै तो मनुष्य को श्रेष्ठ है अंजन से नेत्र शुद्ध व सूक्ष्मवस्तु देखने में कुशल रहतेहैं ६९४ अंजन नेत्र मल व खाजकोहरैहै व नेत्रदाह व पीड़ा हरैहै नेत्रकोरूपवधावैहै अरुपवन व धूपकोअंजन युत नेत्रसहते हैं सब नेत्र के रोगोंको अंजनहरै है ६९६ रात्रि में जागाहुआ व परिश्रमवाला व छर्दिवाला व भोजनकरे पीछे व ज्वरवाला व शिरधोवे बादनेत्रमें अंजन आंजेनहीं ६९७ पुरुषनख व केश श्मश्रुयाने दाढ़ी पांचादिनसेजादे न रक्खे इन्होंकोदूरकरनाही शरीरको आरोग्यदे हैं ६९८ हजामत करावनी पुष्टिकरै है व रूप वधावैहै व उमरकी वृद्धिकरैहै व शरीर शुद्धकरैहै नासिका वर्जकरि अन्यअंगोंके रोमपाड़े नासिकाके रोमपाड़नासे नेत्रदृष्टि दुर्बलहोवै है अरुकेश कछुशिरपै व मुखपैशोभावालारक्खे तो कंघों वा आदिसे शोधन नित्यकरै केशका प्रसाधन केशाकिरज व जूम व मलदूरिकरै है ७०० दर्पण देखना मंगलरूपहै व कांतिबधावैहै पुष्टि व आयु-

बैल बढ़ावेहै ७०१ पाप व अलक्ष्मी याने दरिद्रदूरकरैहै शरीरको हलकाकरैहै कामोंमें सामर्थ्यदेहै शरीरको मोटाकरैहै ७०२ व्यायामयाने कसरतसे दोष कोपनाश व अग्निवृद्धिहोवैहै व्यायामकरनेवाले पुरुषोंको रोग कभी नहींहोता ७०३ अरु विरुद्ध व विदग्ध भोजन कियाहुआ जल्दी पचैहै व्यायामवालेका शरीर जल्दी शिथिल व केश सपेद व शरीरमें वली नहींहोती ७०४ व्यायामवालेको जरायाने बुढ़ापा जल्दी नहीं प्राप्तहोता व्यायाम समान मोटापन दूरकरनेवाला कोई उपायनहींहै ७०५ बलवाले पुरुषों को व स्निग्ध भोजन करनेवालोंको संपूर्ण कालमें गुणदे है बसंतऋतु व शीतकालमें हितकरनेवाला है व्यायाम और कालमें थोड़ी देरकरै बलार्धकेयोग्य ऐसेजानो ७०७ हृदयस्थित वायु जल्दीसुखमेंप्राप्तहो अरुमुख शोषको प्राप्तहोयहै बलार्धका लक्षणहै ७०८ अथवाकटि व नासिका व संधि व कोष इन्होंमें पसीनाआवै तिसेबलार्धकहतेहैं ७०९ भोजनपीछे व मैथुनपीछे व कास व श्वासवाला व कुष्ठ व क्षयीरोगवाला व रक्तपित्तवाला व क्षत व शोषवाला व्यायामकभीभी नकरै ७१० अतिव्यायामसे कास व ज्वर व छर्दि व श्रम व ग्लानि व तृषा व क्षुद्र तमक व रक्तपित्त ये रोगहो हैं ७११ संपूर्ण अंगों में अभ्यंग तेलमलाना नित्यकरै अरु शिर व कान व पैरइन्होंमेंविशेष करिमलै ७१२ शिरसमतेल व गन्धयुततेल व फूलोंकातेल व अन्य द्रव्ययुततेल कभी वोदूषितनहोवै ७१३ अभ्यंगमलना वातकफहरै है श्रम व शांति व बल सुख निद्राअच्छारूप व कोमलपन व आयु वृद्धि इन्होंकोकरैहै ७१४ मस्तकमें अभ्यंगकियाहुआ संपूर्णइंद्रिय तृप्तकरैहै नेत्र दृष्टि पुष्टकरैहै व शिरकेरोगोंकोहरैहै अरु केशवृद्धि व दृढ़ता व कोमलपन व लंबापन व कालापन केशोंकोकरैहै व शिरको पुष्टकरैहै ७१६ कानमेंतेल चोवनसे इतनेरोगनहींहोते कानरोग व कानमेंमल व मन्यास्तंभवहनुग्रहः ऊंचासुनना व धरिपना ऐसेजानो ७१७रसादिकानमें भोजनसेपहिलेघालै अरु तेलकानमें सायंकाल में घालै ७१८ पैरमेंतेललावना पैरकोदृढ़करैहै निद्रा दृष्टी वृद्धिकरैहै अरुपादसोना व श्रम व स्तंभ व संकोच व फोठनाइनकोहरैहै ७१९

कसरतवाले पुरुषको अरु पैरमें तेलमलनेवाले पुरुषको रोग प्राप्तनहींहोते दृष्टान्त जैसे गरुड़को सर्पनहीं प्राप्तहोते तैसे ७२० तेलमलनेसे रोगसमूह व नाड़ी समूहद्वारा शरीरतृप्तहोहै बलबधैहै शरीरमें दृष्टांत जैसे जलसेसींची वृक्षकीजड़को तो वृक्षकेपत्ते डाली हरीहोतीहै तैसे तेलसेसींची धातुबधेहै ७२२ नवीन ज्वरवाला व अजीर्णवाला तेलमलैनहीं अरु रेचनवाला व बमनलेनेवाला व निरूहण वस्तिवाला तेल मलैनहीं ७२३ नवीन ज्वरवाला व अजीर्णवाला तेलमलै तो कष्ट साध्यहोजावै अरु रेचनवाला व बमनवाला व बस्तिवाला तेलमलै तो अग्निमंद आदि रोगउपजैं ७२४ उबटना मलनाकफहरैहै व मेदरोगको हरैहै व वीर्यबधावैहै व बल बधावैहै रुधिरवृद्धि व कांति व त्वचावृद्धि व कोमलताकरैहै ७२५ मुखलेपसे नेत्रपुष्टहोहै व मुखकपोलपुष्टहोवैहै व प्रकाशमान त्वचाकमलसमान मुखहोवैहै ७२६ स्नानकरना अग्निदीपनकरैहै आयु व वीर्य व बल बधावै है अरु खाज व मल व श्रम व पसीना व तन्द्रा व तृषा व दाह व पाप इनकोहरैहै ७२७ शरीरके ऊपर शीतल जलसे शरीर की गरमाई शरीरके भीतरचलीजातीहै इसवास्ते स्नानपीछे अग्नि दीप्तहोवैहै ७२८ शीतलजलसे स्नानकरना रक्तपित्तकोहरैहै गरम जलसे स्नान बलबधावैहै अरु बातकफकोहरैहै ७२९ गरमजलसे शिरस्नान नेत्र दृष्टिहरैहै बातकफकोप में हितकारीहै गरम जलसे शिरस्नान ७३० गरमजलसे स्नान अरु दुग्धकापीवना अरुनवीन स्त्री अरु सचिक्कण भोजन व अल्पभोजन ये सब मनुष्यों के पथ्यहैं ७३१ जो मनुष्य आमला से जलयुत स्नानकरै उसके बाल सपेद नहींहो वहवर्ष १०० जीवै ७३२ ज्वरवाला व अतीसारवाला नेत्र रोग कर्णरोग व बातब्याधि वाला व पीनसरोगवाला व अजीर्ण वाला व भोजन से पीछे मनुष्य स्नान करै नहीं ७३३ स्नान करे पीछे वस्त्रमें शरीर मार्जन करना कांति देनेवाला है शरीर की खाज व त्वचारोग नाश करै है ७३४ रेशमी व पीताम्बर वस्त्र व लाल वस्त्र बिचित्र बस्त्र धारण करना शीत काल में श्रेष्ठ है अरु बातकफ को हरै है ७३५ कषाय रंग का वस्त्र धारण करना गरम समय

में धारण करै शुद्ध है पित्तको हरै है गरम कालमें भी कषाय रंग वस्त्रहलका धारणकरै ७३६ जो वस्त्रशीतल जादे नहो व गरमजादे नहो वह बर्षाकाल में धारणकरै ७३७ नवीन स्त्री धारण करना यह सब कामना व आयु इनको वधावै है लक्ष्मी व आनन्ददेवै है त्वचा के रोगहरै है मनुष्यन को वशकरै है व रुचि उपजावै है ७३८ किसीकालमें भी मलीन बस्त्रधारण न करै मलीनवस्त्रधारण से खाज व कृमिउपजे हैं ग्लानि व दरिद्रता प्राप्त होवै है ७३९ केसर का तिलक व चन्दन का तिलक व अगर मिलाहुआ गरमहै बातकफ नाशकरै है शीतकाल में श्रेष्ठ है ७४० कपूर व वाला सिला चन्दन गरम समय में श्रेष्ठहै सुगन्ध हो है व शीतलहो है चन्दन कस्तूरीयुत न गरम व शीतल वर्षा समय में श्रेष्ठ धारण करना ७४१ चन्दन लेपन से तृषामूर्च्छा दुर्गंधि श्रम दाहदूर हो है सौभाग्य कांति त्वचा रूपबलबधावैहै ७४२ स्नानके अयोग्य पुरुषों को चन्दनादिलेप अच्छानहीं अरु पुष्प सुगन्धित व पत्र तो धारण भी श्रेष्ठहै ७४३ भूषणोंसे अंगको भूषणकरै विधान से यथायोग्य सुवर्ण का गहना धारण करना पवित्र है अरु सौभाग्य व सन्तोष करै है ७४४ रत्नयुत गहना धारण करना ग्रहों की कुदृष्टिहरै है व पुष्टिकरै है व दुःस्वप्ननाशै है व पाप व निर्भागपना को हरैहै ७४५ सूर्य रत्नमाणिक्यहै मोती रत्न चन्द्रमाकाहै विद्रुम रत्न मंगलका है पन्ना रत्न बुधका है पुष्पराज गुरुका है वज्र रत्न शुक्रका है नीलमणि रत्न शनिका है गोमेदरत्न राहुकाहै वैडूर्यकेतु काहै ७४७ नवीनबस्त्र व सुगन्धित पुष्पमाला रत्न धारण प्रीति बधावै है राक्षस दोषहरै है धन सौभाग्यकरैहै ७४८ सिद्धमन्त्र व महौषधी व गोरोचन व सर्षप व मंगलवस्तु इन्होंकाधारण आयु बलको बधावै है अरु राक्षस दोषकोहरैहै शुभदायक है अरु वैरी भयहरै है व बशकरै है ७४९ देव व गौ व ब्राह्मण व वृद्ध व गुरु इनको पूजन आयुबधावै है पवित्र है दरिद्रता व पापहरै है ७५० भोजन समय में मंगल पदार्थ को देखकरि परिक्रमा करै नित्य इससे आयु व धर्मबढ़ै है ७५१ संसार में आठ पदार्थ मंगलरूप

हैं ब्राह्मण १ गौ २ अग्नि ३ सुवर्ण ४ घृत ५ सूर्य ६ जल ७ राजा ८ ऐसे जानो ७५२ पादक याने खड़ाऊं भोजन से पहिले व पीछे धारण करै तो पैर रोग जाय वीरज व नेत्रको हित है ७५३ मनुष्य मात्रको शरीर में ४ प्रकारकी इच्छा रहैहै खाने की १ पीनेकी २ सोयनेकी ३ मैथुनकी ४ ऐसेजानो ७५४ भोजनकी इच्छाके बिघात से इतने रोगहोवैंहैं अंगमर्द १ अरुचि २ श्रम ३ तंद्रा ४ नेत्ररोग ५ धातुक्षय ६ दाह ७ बलनाश ऐसे जानो ७५५ प्यासके बिघात से ये रोगहोवैंहैं कंठव मुखमोशोष १ कानशोष २ रक्तशोष ३ हृदयमेंरोग हो है निद्राबिघात से जंभाई शिर व नेत्रभारीरहै हैं अंग टूटै तंद्रा अन्नपकेनहीं ७५६ भूखकेवक्तजोभोजन न मिलै तो जठराग्नि मन्द हो है आहार जठराग्नि का ईंधन रूप है जैसेईंधन बर्जित अग्नि मन्द तैसे भोजन बिना जठराग्नि मन्द अरु जठराग्निको भोजन समय ये न मिले तो बात पित्तको नाशकरै है दोषनाश पीछे धातु को सुखावै है पीछेप्राणों को खावै है ७५८ भोजन करना शरीर को पुष्टकरै है व बलकरै है स्मृति व उमर व शक्तिशोभा को बधावै है ७५९ गुणयुत अन्न को भोजन करै अरु देशकाल को विचारकर दोनों वक्त भोजन करै ७६० शामको व प्रभात में दो बार मनुष्यों को भोजन वेद कहता है बीच में ३ बार भोजन करै नहीं अग्निहोत्र समान भोजन काल है ७६१ एक पहर के मध्य में भोजनकरै नहीं २ पहर भोजन को होने न दे १ पहर बीच में भोजन से रस पैदाहो है २ पहर भोजनहुये पीछे बल नाशहो है ७६२ रस व दोष मलपके पीछे भूख उपजै है काल में व अकाल में ऐसेजानो ७६३ जिससमय डकारआवै नहीं शरीर में आनंद हो यथोचित मूत्र मलवेगहोवै शरीर हलकाहो भूखलगै व प्यास लगै यहकाल भोजनकाहै ७६४ भोजन व मलोत्सर्ग याने पाखाने जाना एकांत जगह में करै तो लक्ष्मीबधै अरु एकांत में न करै तो दरिद्री होवै ७६५ भोजन व मलोत्सर्ग व स्त्री गमन ये एकांत में करनेहितहैं ७६६ अंगहीन व दरिद्री की व भूख की व पापीकी व पाखण्डी की व रोगी की व मुर्गाकी व सर्प की व कुत्ताकी दृष्टि

भोजन समयबुरी है ७६७ पिताकी व माताकी मित्रकी व वैद्य की पाककर्त्ता याने रसोईं पाकी हंसकी व मोरकी व सारसकी व चकोर की दृष्टि भोजन समय में अच्छी है ७६८ अन्नब्रह्मा है रसबिष्णु है भोजन करनेवाला महादेवहै ऐसे चिंतवन करिभोजन करै तो दुष्ट दृष्टिदोष लगेनहीं ७६९ अंजनी के पुत्रकुमार ब्रह्मचारी जो हनुमान्जी हैं उनका स्मरण करि भोजन करे तो दृष्टि दोष लगेनहीं ७७० सुवर्णपात्र में भोजन करना दोष को हरै है व दृष्टि को बधावै है अरु पथ्य है चांदी के पात्र में भोजन करना नेत्रों को हित है व पित्त को हरै है अरु कफ वातपैदाकरैहै ७७१ कांसी के पात्र में भोजन करना बुद्धि बधावैहै व रुचि उपजावै है अरु रक्त पित्त को साफ़करै है पीतल के पात्रमें भोजन करनावाय को पैदाकरै है व शरीर को रुक्षकरै है शूल व कफ कृमिको हरै है ७७२ लोहे के पात्र में भोजन करना सिद्धि प्राप्त करै है सोजा व पाण्डु को हरै है बल देहै कामला रोग को हरै है ७७३ पत्थर के व मट्टी के पात्र में भोजन करने से दरिद्र हो है काष्ठ के पात्र में भोजनकरना रुचि उपजावै है अरु कफ पैदा करैहै ७७४ पत्तों की पत्तल में भोजन करना रुचि उपजावै है व दीपन है विष व पापको हरै है तांबा के पात्र में जलपीवै या मट्टीके में पीवे हित है स्फटिक का पात्र शीतल व पवित्र हो है अरु कांच का पात्र व वैडूर्य का पात्रभी शीतल व पवित्र हो है ७७६ भोजन के अगाड़ी लवण सहित अदरक भोजन पथ्यहै अरु अग्नि दीपनकरैहै अरु रुचिको उपजावै है व कण्ठ को शुद्ध करै है ७७७ लवण सैंधवसे जानो चन्दन करि रक्तचन्दन । सैंधव लवण स्वाद है दीपन है पाचन है हलका है चिकना है रुचिकारकहै शीतलहै बलदायक है नेत्रों को हित है सूक्ष्म है त्रिदोष हरै है ७७९ अदरक भेदनी है भारीहै तीक्ष्णहै गरमहै दीपनहै कड़वीहै पाक़में मीठीहै वातकफ को हरै है ७८० एकाग्रचित्त होके भोजन समय में पहले मीठारस भोजनकरै मध्यमें खट्टा व लवण सहित भोजन करै अन्त में कटु तिक्त कषाय भोजन करै ७८१ अनारआदि फलआदि में भोजन

करै परंच केला की घड़ व काकड़ी वर्जकर ७८२ मृणाल कंदर ईषसे आदि रसभोजनकी आदिमें भोजन करै भोजनकरेपीछे नहीं ७८३ भारी अलपीठा कमल व चावल के पदार्थ व खोहा आदिभोजन करे पीछे खावैनहीं भूखाभी थोड़ा भोजन करै इनपदार्थों को ७८४ कठिन पदार्थ घृत सहितखावै पहिले तिसपीछे कोमल पदार्थ खावै अन्तमेंद्रवपदार्थखावै ऐसापुरुषआरोग्य व बलवान्रहै ७८५ आदि में द्रवपदार्थखावै तौ ज्यादह जलपीवै नहीं भोजनके मध्यमें कठिन पदार्थखायके पीछे जलपीवै ७८६ भोजनमें जो स्वादहो वहीक्रमसे भोजन करै भोजनकरे पीछे जिसमें फेरइच्छारहै उसे स्वाद कहते हैं ७८७ स्वाद याने मधुर अन्न मनको प्रसन्न करैहै बल पुष्टि व उत्साह व जिह्वा का स्वाद उपजावै है अस्वाद अन्नबिपरीत फल करैहै ७८८ गति गरमअन्न बलकोहरैहै शीतल व शुकाअन्न पकता नहींहै अत्यन्त चिकणा अन्न ग्लानि करैहै युक्तिसे करा भोजन हितहै ७९० जल्दी कियाभोजन गुण व अवगुणको प्राप्तनहींहोहै शीतल व अन्न देरसे भोजनकरनेसे अन्न अतिप्रियहोहै ७९१ मन्दाग्निवाला बहुतअन्न भोजन करै नहीं भारी स्वभावसे भी हो है अरु संस्कारसेभीहोहै ७९२ मूंगआदिककी ज्यादामात्राले तोभारी है उड़द आदिक आदिसेही भारीहै पिसाहुआअन्न संस्कारसेभारी होहै ७९३ आहार ६ प्रकारका है चोष्य याने चुषणा द्रव्यका १ पेय याने द्रव्यकापीना २ लेह्य याने चाटना ३ भोज्य याने खाना ४ भक्ष्य याने कोमल खाना ५ चब्य याने चाबणा ६ ये उत्तरोत्तर क्रमसे भारीहैं ७९४ भारीपदार्थ कमभोजन करै हलका तृप्तिपर्यन्त भोजनकरै द्रवकीमात्रा भारीहै नहीं क्योंकि भोजन पीछेभी द्रव को पीवे हैं ७९५ पेयलेह्य भक्ष्य इन्होंमें उत्तरोत्तर क्रमसे भारी है द्रवपदार्थ सहित शुष्कभी भोजन हितहै ७९६ शुकाअन्न बारंबार भोजनाकिया पकता नहीं शुका व बिरुद्ध व बिष्टंभ करनेहारा पदार्थ अग्नि को मन्दकरैहै ७९७ मनुष्योंकी अग्नि४प्रकारकीहै मंद१ तीक्ष्ण २ विषम ३ सम ४ मंदाग्निवाला हलका भोजन करै तीक्ष्ण अग्निवाला भारी भोजन करै विषमाग्निवाला सचिक्कण

भोजनकरै समाग्निवाला समान भोजनकरै ७९८ भोजन करता हुआ बोले नहीं किसीकी भी निन्दा न करै निन्दितकथा को सुनैभी नहीं अरु न कहै ७९९ सत्तूको भोजन दंतोंसे काट२भोजनकरैनहीं व रात्रिमें सत्तूभोजनकरैनहीं अरु बहुतभी सत्तूखावै नहीं व जलके संग सत्तूखावै नहीं व २ बार खावैनहीं व केवल सत्तूखावैनहीं८०० ज्यादा सत्तू भक्षण करै नहीं १ सत्तूभक्षणकरि दूधपान करै नहीं २ मांससत्तू खावैनहीं ४३ रात्रिमें सत्तूखावैनहीं ४ जलसंग खावैनहीं ५ सत्तूखाकर दांतोंको चावैनहीं ६ सत्तूको गरमकरवावैनहीं७ ऐसे प्रकार सत्तूभक्षणसे बर्जदेवै ८०१ अकालमें भोजन व स्वल्पभोजन इसे बिषमभोजन कहैहैं ८०२ अल्प भोजन करनेसे आलस्य पैदा होहै व भारी शरीरहोहै व शरीर जड़होहै व गड़गड़ शब्द पेट में होहै बारबार शरीर कृशहोहै बलका नाश करैहै ८०३ समय में भोजन मिलैनहीं शरीरमें बलहोनहीं तिसकेअनेकरोगउपजैंहैं अरु मृत्युभी होजावै तोआश्चर्य नहीं ८०४ समयभोजनका बितायपीछे भोजन मिले तो बायुकरि कर अग्निमन्द होहै ताके अन्नकष्टसेपकै है अरु फेर खानेकीइच्छा नहींहोहै ८०५ भोजन दिनसमयमें कर फेर सायंकाल बिना भोजन करै नहीं क्योंकि जिह्वा अन्न रस से तृप्तहुई स्वादको प्राप्तनहीं होती ८०६ कुक्षिके ४ भाग समझ २ भागतो अन्नसे पूरणकरै ३ भाग जलसे पूरणकरै ४ भागको वायु संचारवास्ते बाकारक्खै ८०६ अतिजल पीवनेसेअन्नपकैनहीं अरु जलनहींपीवै तोभीअन्नपकैनहीं तिसकारणसे अग्निबधावनकेअर्थ बार २ जल थोड़ा २ पीवै ८०८ भोजनकी आदिमें जल पीवै तो शरीर कृशहो व मन्दाग्नि व दोषकोपहो भोजनमध्यमें जलपीवैतो अग्निदीपन हो भोजन अन्तमें जलपीवै तो मोटाशरीरहो व कफ बधै ८०९ तृषितहुआ भोजन करै नहीं अरुभूखापुरुष जलपीवै नहीं तृषित भोजनकरै तो गुल्मरोगहो व भूखाजल पीवै तोजलोदर रोगहो ८१० भोजन कालके ३ भागकरै प्रथम काल बातका २ भाग पित्तका ३ भाग कफका है इस प्रकार पहिले मधुर रस भोजन कियाहुआ वायुशमनकरैहै मध्यमें भोजनकिये अम्ललवण

भोजन पित्ताशय में अग्नि वृद्धिकरै है अंतमें कटु तिक्त कषाय रस भोजन किये कफको शांत करै है ८१३ दूध स्वादहै सचिक्कणहै व कफपैदाकरै है शीतल व भारी है ऐसादूध कफ पैदाकरनेहारा तिसे भोजन अन्तमें कैसेपीवै ८१४ उत्तर-जो दाह करनेवाले पदार्थ भोजन कियेजावेहैं तिससे दाहशांति करनेवास्ते भोजनकेअन्तमें दूधको पीवै ८१५ लवण अम्ल कटु व गरम पदार्थकोभोजनकरै है तिन्होंका दोष हरनेवास्ते भोजनको मधुर खाके समाप्त करै ८१६ भोजन कियेहुये रस बलवान्रस के बशहोते हैं दृष्टांत जैसे सब्बदोष कोपितहुये बलवान्दोष के बशहोते हैं तैसे ८१७ ऐसाप्रकारभोजन करि अँगुली दांतोंपरफेर जल से आचमनकरै अरु दांत में लगे अन्न काढ़कर सलाकासे फेरै आचमनकरै अरुदांतोंकेबीचमें प्राप्त अन्न शोधन द्रव्यसे शनैः २ हरै ऐसेप्रकार नहीं करै तो मुखमेंदुर्गंध पैदाकरै है अरु दंत ऊपर लगाहुआ लेपको खुरचकर दूरकरैनहीं अरु दूरकरनेमें यत्नकरै नहीं ८१९ कुरलाकरि जलयुतहाथसे नेत्रों को स्पर्शकरै तो नेत्र शुद्धरहैं ८२० भोजन करि हाथ जलसे धोवै अरु हाथके तलभाग घसकरि नेत्रोंसे स्पर्श करै तो बहुत जल्दी नेत्रकी अँधेरीको दूरकरै है ८२१ भोजन करिकरि अगस्त्यादिक को स्मरण करै ऐसी प्रार्थना करै कि विष्णु भगवान् अजीर्ण रूप अन्नको भोजनकरो ऐसे सत्यप्रकार से भोजन किया अच्छी तरह पको ऐसी प्रार्थनाहै ८२२ अगस्त्य व अग्नि व बड़वानल भोजन किया अन्नोंको जराओ अरु परिणाम से उपजासुख प्राप्तहो ऐसी प्रार्थना मेरीदेहके रोग नाशको प्राप्तहो ८२३ मंगल व अगस्त्य व अग्नि व सूर्य्य व अश्विनीकुमार इनोंका भोजनके अन्तमेंस्मरण करै तो अजीर्ण कभी होवे नहीं ८२४ अगस्त्य मंगलादिक इनोंका उच्चारणकरि अपना हाथ उदर को मले पीछे आलस्य रहित हो अनायास देनेवाले कर्म्मकरै ८२५ जागताहुआ भोजनपीछे बैठा-रहै जो भोजनकरि सोवे उस अग्निको कफकोपको प्राप्त हो नाश करै है भोजनकर पीछे कफ बधै है जीर्ण याने पुराना भोजन होते वायु बधै है विदग्ध अन्नहोते पित्तबधै है ८२६ भोजन करिकफ

को ऐसे हरैहै धूमासे याने हुक्कापीवे व रमणीक कषाय कटुकतिक्त
रससे व सुपारी कपूर कस्तूरी लवंग जायफल इनोंसे व कटुकषाय
फलसे व ताम्बूलादिकसे ऐसेजानो ८२७ मैथुन पीछे व सोके जागे
तब व स्नानपीछे व भोजन पीछे व वमन पीछे व युद्धपीछे व सभा
पंडितोंकी में व राजाओंकी में ताम्बूल चरवणकरे ८२८ ताम्बूलती-
क्ष्णहै व गरमहै व रुचि उपजावे है व सरहै व तिक्तहै व क्षारहै व उष्ण है
काम व रक्तपित्तको पैदाकरै है व हलका है ८२९ वशीकर है व कफ
व मुखकीदुर्गंध व मल व वात व श्रमइनको हरैहै मुखमें स्वाद व
सुगन्ध व तेज इनको करैहै ८३० हनु याने ठोढ़ी व दंत व मलको
हरैहै व जिह्वाको शुद्धकरैहै मुखकापानी व कंठरोग इनको भी हरै
है ८३१ नवीन ताम्बूल मीठाहै व कछुककषायहै व भारी है व कफको
पैदाकरै है पत्ता व शाककेसमानगुणकरै है ८३२ पुरानाताम्बूलकडुवा
नहीं है व पतलाहो है व कछुकसफेदाई लियेहो है यहबहुतगुणदै है
इससे अन्यताम्बूलहीनगुणहो है ८३३ सुपारीफल भारी है व शीतल
है व कषाय रसहै व कफपित्तको हरैहै मोहन है व दीपनहै व रुचि
करैहै व मुखकीदुर्गंध को हरैहै ८३४ जो सुपारी बीचमें करड़ीहो
वह त्रिदोषको हरैहै उसकारस भारी है व अभिष्यंदि है व अग्निको
मंदकरैहै ८३५ खदिर कफपित्तको हरैहै चूना बात कफको हरै है
औरको संयोगसे त्रिदोषको हरैहै व मनको प्रसन्न करै है मुखस्वाद
व सुगन्ध व कांति व अच्छा व वर्णकरै है ८३६ पानका अग्रभाग
में आयुबलहै मूलमें यशहै बीचमें लक्ष्मी बसै है इसवास्ते अग्रभाग
व जड़ व मध्य पानकाबर्जदेवै ८३७ पानकीजड़ खावैतो रोगहोपान
का अग्रभाग खावे तो पापलगै पानका चूर्णकर खावे तो उमरघटै
पानकी नाड़ी खावे तो बुद्धिका नाशकरै है ८३८ पान का पहिला
पीकविषसाहो है पानका २ पीक रेचक व दुर्जरहो है पानका ३ पीक
पीने योग्यहै अमृत सम रसायन हो है २ पीक त्यागै ३ पीकपीवे
८३९ जुलाबलेकरि व भूखापुरुष ज्यादापान खावेनहीं ज्यादापान
खायादेह दृष्टि व केश दन्त व अग्नि व कानश्रवण व बल इनका
नाशकरै है अति पान खानासे शोष व बातरक्तहो है दंत रोगवाला

वा दुर्बल वा नेत्र रोगवाला वा विष वा मूर्च्छा वा मदइनसे पीड़ित पुरुष को व क्षयरोगवाला व रक्तपित्तवाला इनकोपान खानाअच्छा नहीं ८४० भोजन करि शतपैर तक चलै शनैः २ तिसचलना से अन्न पचै कंठ वा जानु वा कटिइनोंमें सुखहो ८४१ भोजन करिबैठ जावै तो पेट ठामाहो अरु भोजनकरि सोवे तो शरीर पुष्टहो भोजन करि चहलकदमी करै तो आयुबधै भोजनकरि ज्यादा भाजै तो मृत्युहो ८४२ सोवने समय सूधा सोके ३श्वासलेवे पीछे दाहनी करवट लेकर २ श्वास लेवै पीछे बामपार्श्व कडोठ लेके ४ श्वास लेकरि शयनकरै ८४३ नाभिसे ऊपर बाम पार्श्व में अग्नि रहैहै इस वास्ते भोजनकियाका अच्छा पाक होनेके अर्थ बामी पार्श्वसे शयनकरै भोजन पीछे ८४४ खाट याने पलँग त्रिदोष को हरैहै निवारकी बुनी शय्या वात कफ को हरैहै पृथिवी में सोवे तो बल वीर्य बधै तख्तपर सोवे तो बात बधै ८४५ अन्य मत में पृथिवी का सोना बात को करैहै पित्त वा रुधिर को हरहै ८४६ सुन्दर पलँगपर सोवै तो मन प्रसन्नहो बुद्धि व धीर्य्यता व नींद अच्छी आवे अरु परिश्रम व बात नाशहोवे अरु बीर्य्य बधै व साधारण खाटपैसोवे तो साधारण फलहै ८४७ पैरोंके दबावनेसे मांस वा रुधिर वा खालबधै निद्रा अच्छी आवे कफ बात वा परिश्रम हरै ८४८ पवन रूखापन व बिवर्ण रूपको पैदा करैहै अरु दाह वा पित्तको हरैहै पसीना वा मूर्च्छा वा प्यास इनकोहरैहै ॥ सेवनपवन॥ बीजनाकीकरनी विपरीतफलदेहै ८४९ ग्रीष्मऋतुसे शरद्ऋतुतक पवन सेवै बाकी ऋतुवोंमें पवन सेवन अच्छी नहीं ८५० पूर्वदि-शाकी वायु भारीहै अरु गरमहै अरु सचिक्कणहै पित्त रुधिर को कोप करैहै दाह करैहै बातदोष पैदा करैहै कफ वा शोष रोगवाला कोहितहै स्वादुहै अरु अभिष्यंदी है त्वचादोष वा बवासीर वामुख में कीड़ेवसन्निपातज्वर व श्वास व आमबात इन रोगों को कोप करवावैहै ८५२ दक्षिण दिशाकी बायुस्वादहै पित्त वा रक्तको हरै है वा हलकीहै बीर्यकरि शीतलहै वा बलदायकहै वा नेत्रोंकोहित है बातल नहींहै ८५३ पश्चिमदिशाकी बायु तीक्ष्णहै वा शोषण

हे वा बलको हरेहै वा हलकीहै अरु मेद वा पित्त वा कफकोहरैहै
शरीरमें पवनको बधावैहै ८५४ उत्तर दिशाकी बायु शीतल है वा
स्निग्धहै दोषोंको कोपकरावैहै वा ग्लानिपैदाकरैहै व बलबधावैहै
मधुरहै वा कोमलहै ८५५ अग्नि दिशाकी बायुरूखी है वा दाह
को करैहै अरु नैऋत्य दिशाकी पवन दाहको करैहै ८५६ वाय-
व्य दिशाकी पवन तिक्तहै ईशान दिशाकी पवन कडुवीहै ८५७
चारो तरफ़की पवन आयुनाशकरैहै वा अनेक रोग पैदाकरैहै इस
वास्ते पुरुष सेवेनहीं सेवे तो सुख मिले नहीं ८५८ विजना की
पवन दाह वा पसीना वा मूर्च्छा वा श्रम इनको हरैहै ताड़के पत्तों
का वीजनाकी पवन त्रिदोषको हरैहै ८५९ वंशके वीजनाकी वायु
गरम होहै अरु रक्त पित्तको कोपकरैहै चमर की पवन वा वस्त्र के
वीजनाकी वा मयूर के पंखों के वीजनाकी वा वेत के वीजना की
पवन सचिक्कण होहै त्रिदोषको हरैहै ८६१ दिनमें शयन करै नहीं
शयनसे कफ पैदाहोहै ग्रीष्म वर्जित कालमें ८६२ जिन पुरुषोंको
दिनमें शयन करनेका नित्य अभ्यास है जो वह शयन न करै तो
बातादिक कोपको प्राप्तहोहै ८६३ कसरतवाला वा नशावाला वा
श्रामसे आया हुआ वा बमनवाला वा दस्तका रोगवाला वा शूल
रोगवाला वा श्वास रोगवाला हिचकी वा बायुका रोगवाला है वा
क्षयीरोगवाला वा कफवाला वा मदसे क्षीण वृद्ध वा अजीर्णवाला
वा रात्रिमें जागाहुआ वा उपवासवाला इनकोदिनमें यथेच्छशयन
करवावै ८६६ जिनको निद्रावशमें कररक्खीहै तिनको दिनमेंसोना
वा रात्रिमें जागना बुरा नहीं ८६७ भोजन पीछे निद्रा जो है वात
को हरैहै अरु पित्तको पैदा करैहै वा कफको करैहै शरीर को पुष्ट
करैहै वा सुखदेहै ८६८ पित्त नाश वास्ते शयन है बात नाश के
अर्थ शरीर मर्दनहै कफनाशके अर्थ बमनहै ज्वरनाशकेअर्थलंघन
श्रेष्ठहै ८६९ भोजन करि बैठजाने से पुष्टिहो है भोजनकरि पठन
करने से शरीर दृढ़ हो है ८७० भोजन करिके सुन्दर शब्द बोलै
सुन्दर पदार्थ स्पर्श करै सुन्दर रूप वा सुन्दर रस पदार्थ को सेवै
वा मनको प्रिय पदार्थ को सेवै तिसकरके अन्न अच्छी तरह पचै

है ८७१ निन्दित बचन वा स्पर्श वा रूप वा रस गन्ध भोजन पीछेसेवे तो अन्न पचे नहीं भोजनकरि ज्यादा हँसे तो छरदिआवे ८७२ अति शयन न करे वा अति भोजन न करे वा अति द्रव्य पदार्थ भोजन न करे अग्निमें तपन करे नहीं धूपमें बैठे नहीं वा जलमें तिरे नहीं पैरसे ज्यादा गमनकरे नहीं ज्यादा सवारी पै चढ़े नहीं ८७३ कसरत वा मैथुन वा धावन वा गमन वा युद्ध वा गान वा पाठ भोजन करि २ घटीतक करे नहीं ८७४ ज्यादाजलपानसे वा विषम भोजनसे वा मल मूत्रादि वेग धारणसे सोनेकेसमय जागने से समयमें भी हलकाभोजनकियाहुआ मनुष्यके अन्नको पकावेनहीं अरु ईर्षासे वा भयसे वा क्रोधसे वा लोभसे वा रोगसे वा दीनतासेवा वैरभावसे वा सेव्यमान अन्न पाककोप्राप्तनहीं होताहै ८७८ अजीर्ण में जो भोजनकियाजाय उसे तो अध्यासन कहे हैं रात्रिके भोजनका अजीर्ण होतो २ वक्त भोजनकरे नहीं दिनमें भोजनका अजीर्णहो तो रात्रि भोजन बुरा नहीं ८७९ रात्रि का भोजन विदग्ध में जो भोजनकरे तो अग्निमन्दहो अरु रात्रिका अजीर्णमें प्रातःकाल भोजन विषसमहो है ८८० जो प्रातःकालमें अजीर्णकी शंकाहो तो ५ माशे सुंठि ५ माशे हरड़ सोंधानिमक मिलाय शीतलजलसे खावै पीछे निःशंकहोके भोजन करे ८८१ दिनमें स्त्री भोगकरने से उमर घटै है जो नहिं सरे तो बसंत व ग्रीष्मऋतुमेंदोषनहीं ८८२ बसंतादि ऋतुमें दिनमें स्त्रीभोगसे मुखवर्ण व कफ व मुटापा वा कुमारअवस्था सुख मिले है ८८३ मार्ग में गमनकरनेसे वर्ण व कफ व मुटापा वा बलनाशहोहै ८८४ जो चहलकदमी करे तो आयु व बल व बुद्धि व अग्निबधै है अरु इन्द्रियजागै है ८८५ उष्णीष याने पगड़ीबांधने से तेजप्राप्तहो है वा केशबधै है व रज़ बात व कफ इनको हरै है अरु पगड़ी हलकीश्रेष्ठहै भारीपगड़ी पित्तरोग व नेत्ररोग पैदाकरै है ८८६ जूती जोड़ापहरनेसे नेत्रमें सुखहो व तेजबधै व उमर बधै व पैरका रोगजावै व बल बधै व पुष्टिहो ८८७ जूती पहने बिना मार्ग में चलने से आयु वा इन्द्रियनाशहो व नेत्ररोग उपजे ८८८ छत्रीका धारण वर्षा व पवन व धूप व रज इनको हरै है शीतलता को दूर

करै है नेत्रों को गुणदे है अरु मंगल रूप है ८८९ लाठी का धारण करने से सतोगुण व आनन्दबल स्थिरता व धीर्य्यता वीर्य इनको वृद्धिहो है अरु आश्रमरूप है अरु भयकोहरै है ८९० ऊपरआच्छादन युत पालकी में सवारहोने से त्रिदोष नाशको प्राप्तहो है ८९१ नौका व जहाज की सवारी बात कफरोगवाले को अच्छीनहीं व भ्रम करै है ८९२ हस्ती पै सवार होने से बात पित्त पैदाहो है अरु धनवा आयु बधती है ८९३ अश्व पै सवारहोनेसे वात व पित्त व अग्नि वा परिश्रम पैदा हो है अरु मेदरोग वा कफ इनका नाशहो है यह बलवानोंको सवारी श्रेष्ठ है ८९४ धूप सेवन से पसीना व मूर्च्छा वा रक्त पित्त तृषा व छर्दि व परिश्रम व दाह व विवर्णताहोहै अरु छाया इन्होंको दूरकरै है ८९५ मेघबर्षणासे वीर्य वा शीतलता वा नींद वा आलकस बधै है दृष्टिभयदेहै वा मोहको करैहै व कफबात रोगकरै है ८९६ अग्नि बात कफ स्तंभ शीतलताकम्पन इनकोहरहै अरु अभिष्यंद नेत्ररोगको हरहै अरु रक्त पित्तकरहै ८९७ धूमा जल्दी कफकरै है नेत्र नाशकर है शिरको भारीकर है वात व पित्त को कोपकरावै है ८९८ सबसे मैत्री सम्पूर्ण नरोंसे करै सज्जनों से तो अवश्यहीकरै सत्पुरुषों से सत्संग करै दुष्टसंगको त्यागै अरु देव व ब्राह्मण वा वृद्ध पुरुष व वैद्य व राजा इनको सेवै ८९९ याचनवाले पुरुषों को विमुख न करै अरु गुरु की समीपमें वास नम्रतापूर्वक करै ९०० गुरु के स्थानपर व समीप में पैरहाथ पसारै नहीं अनुचित कामकरै नहीं ९०१ जोआपनीगैल बुराईकरिचुका हो तिसे भी उपकार करै अपनी समान सम्पूर्ण मनुष्यों को देखै बैरीसे दूरदेश में बसै ९०२ न किसीको अपना बैरी प्रकाशकरै न अपनेको किसीका बैरी प्रकाश करै अरु अपना अपमान को प्रकट करैनहीं अरु न किसीको दुःख देवै ९०३ जलमें अपने शरीर को देखैनहीं अरु नंगाहोके जलमें प्रवेश करै नहीं जिस जलकी थाह जाने नहीं वहां प्रवेश करै नहीं अरु भयानक जीवको पालनाकरै नहीं ९०४ समयमें उन्मत्तका व हित व सत्य व प्रियबचनकहै बहुत करि मधुररस भोजनकरै व सचिक्कण अन्नखावै ९०५ रात्री में दही

भोजन करैनहीं अरु दिनमें दही लवणबिना खावै नहीं व बहुतमूंग की दाल खावैनहीं व शहत अकेला खावै नहीं व खांड़ घृत बिना खावैनहीं ९०६ दूसरा पुरुषका आशयको देखे जैसे वह प्रसन्नहो वैसे विसकोबरते तिसे पण्डितकहतेहैं ९०७ अकेलासुखमानैनहीं अरुसबका विश्वास करैनहीं अरु शंकायमान होवैनहींअरुउद्यम रहित होवैनहीं कारणमें ईर्षाकरे फलमेंनहीं ९०८ मूत्रादि वेगों को धारणकरै नहीं अरु मनके वेगको धारणकरै अरु इन्द्रियोंकोपीड़ा देवैनहीं अरु इन्द्रियोंको अतिलड़ावैनहीं ९०९ वर्षा व धूपादिकमें छत्री धारणकरै रात्रि व बनादिकमें लाठी हाथमें राखै जूती जोड़ा पहनेहुये आवै व पृष्ठपीछे देखताहुआबिचरै ९१० नदीकोहाथोंसे तिरैनहीं अग्नि बनमें व ग्राम में लगीहुई के मध्यमें जावैनहींटूटी नाव पै बैठ जल में पारहोनहीं सन्देहवाला वृक्ष पै चढ़ै नहीं दुष्ट अश्वादिक पै सवार होवै नहीं ९११ सभा में जाय मुखफाड़ हँसै नहीं व कास व डकार व जँभाई व छींक सभा में लेवैनहीं ९१२ नाक अंगुलीदेकरि फेरैनहीं भयंकर आसन बैठैनहीं उर्ध्वजानु याने उकड़होके देरतक बैठैनहीं अरु नखसे धरतीमें लेखनकरैनहीं ९१३ बुहारीकी धूल शरीर पै धारै नहीं नखसे तृणको काटैनहीं उच्छिष्ट हुआ ब्राह्मणको स्पर्श करै नहीं ९१४ सूर्य उदय से पहले लाल जो आकाश होयहै तिसे देखै नहीं व सूर्य उदयहोता व अस्तहोता को देखे नहीं व सूर्यका प्रतिबिम्ब जलमें देखे नहीं ९१५ सूक्ष्म पदार्थको नित्यदेखेनहीं दीप्त व अशुद्ध व अप्रिय पदार्थको देखेनहीं अरु आकाशमें इन्द्रधनुष किसीको दिखावै व देखेनहीं ९१६ बल-वानके संग युद्ध करै नहीं ज्यादहभार शिरपै उठावै नहीं व शरीरको ताड़नादे नहीं व केशोंको हाथसे कँपावै नहीं ९१७ पूजनकरतेहुये के बीचमें जावैनहीं स्त्री पुरुषके बीचमेंगमनकरै नहीं व बैरीकाअन्न भोजन करै नहीं व वेश्या का अन्न भोजन करै नहीं और किसी का प्रतिभू याने जामिन न होवै और वृथासाक्षीन होवै ९१८ मिथ्या याने झूठ बोलै नहीं द्यूतयाने जुवाखेलैनहीं अरु स्त्रियोंकाविश्वास करैनहीं अरु स्त्रीजन स्वतंत्रबिचरैनहीं ९१९ स्त्रीजनोंकीरक्षाकरनी

चाहिये अरु यौवनमें विशेषकरि रक्षाकरने योग्यहै अरु टूटीखाट पै सोवै नहीं व अनेक छिद्रवाली खाटपै भी सोवैनहीं ९२० अरु अकेलापुरुष देवतामन्दिरमें शयनकरैनहीं अरु रात्रिमें अकेला श- यनकरैनहीं अरु वृक्षतले अकेला सोवैनहीं ९२१ ऐसेप्रकार दिन को व्यतीतकरै अरु सदातनकर्म करतारहै तिसपीछे रात्रि विषय कर्मकरै ९२२ यहआचारविस्तारसे कहाहुआको जोअच्छेप्रकारसे करै तिसकी उमरबढ़ै आरोग्यमिलै व धनपरधनबढ़ै ९२३ संध्याकाल में पांचकर्म बर्जनेचाहिये आहार १ मैथुन २ निद्रा ३ उच्च प्रकारसे पाठ ४ मारगमें गमन ऐसोजानो ९२४ संध्यामें भोजनसे व्याधि होयहै संध्यामें मैथुनसे गर्भव्यंगहोयहै सायंकालमें निद्रासे दरिद्री होयहै अरु पाठ करनेसे आयुघटैहै गमनसे भयहोयहै ९२५॥ अथ रात्रिचर्या॥ चांदनीचांदकी ठंढी है कामदेवको आनन्ददेहै अरु तृषा व पित्तको व दाहको हरैहै ९२६ दिनमेंज्यादहजाड़ा वात व कफको करै है अंधेराभय व मोह व दिशाभ्रमको करै है पित्तको हरै है व कफको करै है व कामको बधावे है व ग्लानि पैदाकरै है ९२७ रात्रि भोजन रात्रिका पहिला पहरमें करै कछुक अल्प भोजन करै अरु दुर्जर भोजनको बर्जदेवै ९२८ नित्य मनुष्योंको शरीरमें कामदेवकी इच्छारहै है मैथुनका रोकनासे मेह व मेदकी वृद्धिहोयहै व शरीर शिथिलहोयहै ९२९ स्त्री १६ बर्षकीहो तबतक बालानामहै अरु ३२ बर्षतक स्त्रीकीतरुणीसंज्ञाहै ९३० अरु ५० बर्षतककी अधिरूढ़ा संज्ञाहै ५० बर्षसे उपरान्त वृद्धासंज्ञाहै वृद्धाको कामदेव सुखनहीं होता ९३१ ग्रीष्म व शरदऋतुमें बालास्त्री अच्छी है विषयीपुरुष को शीतसमयमें तरुणी श्रेष्ठहै वर्षा व बसंतमें प्रौढ़ाश्रेष्ठ है ९३२ नित्य बालास्त्रीकोभोगै तो बलबधैनित्यतरुणीस्त्रीकोभोगै तो शक्ति को कमकरै है अरुप्रौढ़ा भोगै तो नित्य जराको प्राप्तकरै है ९३३ अतिनवीन मांस १ व नवीन अन्न २ बालास्त्री ३ दूध भोजन ४ घृत ५ गरमजलसेस्नान ६ ये छहपदार्थ प्राणोंके हितकारी हैं ९३४ बासीमांस १ वृद्धास्त्री २ प्रातःकालका सूर्य ३ ताजादही ४ प्रभात में मैथुन ५ व प्रभातमें निद्रा ये छः पदार्थजल्दी प्राणोंको हरते हैं

है ६३५ वृद्धपुरुष भी तरुणीस्त्रीको नित्यभोगकरनेसे तरुणहो और वृद्धास्त्रीके भोगसे तरुणपुरुषभी वृद्धहोयहै ६३६ अच्छीउमरवाले व मंदजरावाले व शरीरवर्ण अच्छे वाले व स्थिर चित्तवाले मांस वृद्धवाले ऐसेपुरुष स्त्रीभोगकेयोग्यहैं ६३७ हेमंतऋतुमें बाजीकरण औषधिखाके स्त्री भोगकरै कामदेवजागे तबअरु शिशिर ऋतुमें मैथुन नित्यकरे इच्छाहो तबवसन्त व शरदऋतुओं में दिनमें मैथुन करे अरु ग्रीष्म व वर्षाऋतुमें मैथुन १५ दिनमें करे ६३८ सुश्रुत ग्रंथकासार प्रमाणकहते हैं संपूर्ण ऋतुओंमें ३ दिनमें मैथुनकरै अरु ग्रीष्मऋतु में १५ दिनमें मैथुनकरै ६३९ शीतल समयमें रात्रि में मैथुन करे ग्रीष्मऋतुमें दिनमेंकरै मैथुन बसंतऋतुमें दिनमें वरात्रि में मैथुनकरै वर्षाऋतुमें मेघगर्जन समयमें मैथुनकरै शरदऋतु में जल व बगीचाके समीपमें मैथुनकरे कामदेवक्रमसे ऋतुओंमें ऐसे स्थानों पे बसे है ६४० मैथुन सन्ध्या प्रातः सर्वसमयमें व सर्व कालमें अमावास्या पूर्णिमामें न करे गौके समीपमें मैथुन नकरै व आधी रात्रि व दुपहर दिनमें मैथुन याने स्त्री भोग न करे ६४१ स्त्रीभोग एकान्त स्थानमें करे जहां स्त्रियोंका गानसुने ऐसेस्थान में मैथुन वासा अतिश्रेष्ठहै ६४२ जिसजगह गुरुवसे वहां मैथुन करे नहीं जिस स्थानमें कपाट न हों वहां मैथुनकरै नहीं जहां लज्जाआवे वहां न करे जहां मैथुन विषय बचनादि औरोंके सुने वहां मैथुन न करै ६४३ जिसे पुत्रकी इच्छाहो वहऐसेप्रकार होके मैथुन करे स्नानकिया व चन्दन शरीर में लगायके सुगन्ध शरीरमें लगायके पुष्पमाला धारण करिके पुष्टपदार्थखाके नवीन वस्त्र पहनके भूषण धारण करके ताम्बूल खाताहुआ ऐसाहो स्त्री भोगकरै तो कामदेव बढ़ताहैसुन्दरपलँगपैकरै ६४४। ६४६ क्षुधावाला वअजीर्ण वाला व धीर्य्यतारहित व शरीर पीड़ा वाला व तृषावाला व बालक व वृद्ध व रोगी मैथुनको त्यागदेवे ६४७ भूखा व प्यासा व चित्तमें अधीर्यवाला जो मैथुनकरै तो बलनाशहो क्षयीवाला भोगकरै तो वीर्यनाशहो अरु वायु कोपहो रोगी मैथुनकरे तो प्लीहायाने लापतिल्ली हो व मूर्छा मृत्युभी होजावे ६४८ अच्छा रूप व गुणवाली व शील स्वभाव

वाली व अच्छे कुलकी जन्मी हुई व कामदेव प्रकट वाली व प्रसन्न चित्तवाली व नवीन बस्त्र व भूषण धारणवाली ऐसी स्त्रीको कामदेव प्रकट वाला व प्रसन्न चित्तवाला व वाजीकरण औषध खानेवाला पुरुषसेवै ९४९।९५१ रजस्वला व कामदेव रहित जो व मलिन स्त्री व अप्रियबचन बोलती व आपसे ऊंचेवरण वाली व वृद्धा व रोग वाली व अंगहीन व गर्भवाली व बैरवाली व योनि रोगवाली व अपने गोत्र की व गुरुकी स्त्री व संन्यास धारण करनेवाली ऐसी स्त्रीसे गुणवान् पुरुष भोगकरै नहीं ९५२।९५४ गर्भवाली स्त्रीको ७ सात महीना उपरांत भोगै नहीं अरु ८ महीनासे तो विलकुल भोगै नहीं ९५५ रजस्वला स्त्री से भोगकरै तो नेत्र व आयु व कांति वधर्म इनका नाशहोयहै ९५६ विरक्तस्त्री व गुरुकी स्त्री व अपने गोत्र की व वृद्धा इन्होंसे व पर्वकाल व संध्या समय में भोगकरै तो मृत्युहो जल्दी ९५७ गर्भवालीसे भोग करै तो गर्भको पीड़ाहो रोग वाली से भोगकरै तो बलनाश हो हीन अंगवाली व मलीन व वैरवाली व कृश व बंध्या इनसे भोगकरै व प्रकट स्थानमें तो वीर्यक्षीण हो व मनमें ग्लानि उपजै ९५८।९५९ नदी के तीरपै जाना व गंगायमुनादिनदी जल व मैथुन व मृतवत्सा स्त्री से सम्भाषण व भोजन दे व यात्रा व बाग व नदीदेखना व पुरुषों में बैठना इतनेकर्म गर्भवाली स्त्री पुंसवन कर्मपीछेत्यागै ९६०।९६१ प्रभात व आधीरात्रिके काल में वातपित्त कोपको प्राप्तहोय है तिरछी योनिवालीके उपदंश रोग पैदाहोयहै अशुद्ध योनिवालीके वायुकोप व दुष्टयोनि वीर्य व सुख नाशहोय है ९६२ मल व मूत्र व नीरज इनके वेगको धारण करै नहीं अरु वेग धारण करै तो पथरीरोग व धातुका क्षयहोयहै ९६३ वीर्यको कभी भी धारण करै नहीं ऐसेजानो ९६४ मैथुन के अंतमें स्नान व मिश्री सहित दुग्धपान व ईष रससिद्ध पदार्थ व शीतल पवन व मांसरस व शयन ये हितहैं ९६५ ज्यादह मैथुन से कास व श्वास व ज्वर व कृशपना व पांडुरोग व क्षयी व आक्षेपकरोग पैदा होयहैं ९६६।९६७ रात्रिमें जागना शरीरको रूखाकरै है कफ व विषके रोगको हरै है ९६८ कालमें नींदसे धातुसम रहै है व तन्द्रा नाश

व पुष्टि व वर्ण व बलकी वृद्धि व अग्नितेज होयहै ६६९ जो श-
यनसमयमें शहतमें विजौरादलचूरण मिलायपानकरै तो पीड़ाकरने
वाला बातका निरोधकर सुख पूर्वक सोवे है ६७० सूर्य उदयसे प-
हिले जलकी ८ चुल्लूपीवे तो रोग व जराको जीतके बर्ष १०० व
१२० तक जीवै ६७१ बवासीर व सूजन व संग्रहणी व ज्वर
उदररोग, जराकोष्ठरोग, मन्दरोग, मूत्राघात, रुधिररोग, पित्तरोग
कानरोग, कंठरोग, शिररोग, कटिरोग, नेत्ररोग, बातरोग, रक्तपित्त
क्षयीरोग, कफरोग इतने रोगों को प्रभात समय जलका पीवना
हरै है ६७३ प्रभातमें जो नित्यनासिकासे जलपीवे तो बुद्धिमान्हो
नेत्र गरुड़ पक्षीके नेत्र समहों सपेदवालहों नहीं शरीरमेंबली पड़े
नहीं व सम्पूर्ण रोगनाशहोवे ६७४ तीन प्रसृति जलपीवे तो व्यंग
व बलीपलित रोग व कास स्वरभेद सोजा इन सबको हरै है प्र-
भात समयमें जलनस्यसे दृष्टि बधे है ६७५ स्नेहके पीने में व क्षत
रोगमें व फस्तलिये के वक्त उचकी रोग में आध्मान रोगमें अग्नि
मन्दमें व कफवात रोग में प्रभात नासिकासे जलपीवै नहीं ६७६
ऋतुचर्यादोषोंका संचय व कोपजिसमेलसे होयहै सो ऋतु६होयहैं
सूर्यकी राशिका क्रमसे जानो ६७७ मेषसे वृष संक्रान्तितक ग्रीष्म
होयहै मिथुनसे कर्कसंक्रांतितक प्रावृट्होयहै सिंहसे कन्यासंक्रांति
तकवर्षाहोयहै तुलासे वृश्चिक संक्रांतितक शरद्होयहैधनसेमकर
संक्रांतितक हेमंतहोयहै कुम्भसे मीनसंक्रांतितक बसंतहोयहै ६७९
आदिकी तीनऋतुओंको उत्तरायण कहे हैं अंतकीतीनऋतुओंको
दक्षिणायन कहते हैं ६८० हेमंतऋतु शीतलहै सचिक्कणहै स्वादुहै
उदरकी अग्निको बधावैहै शिशिरऋतु अत्यन्तशीतलहै व रूक्षहै
वात व अग्निको बधावै है ६८१ बसन्त ऋतु मधुर है सचिक्कणहै
कफवृद्धि करै है ग्रीष्म ऋतु अतिकडुआहै पित्तपैदाकरै है व कफको
हरै है ६८२ बर्षाऋतुशीतलहै व दाहपैदाकरैहै अग्निमंदकरैहै वायु
को पैदाकरैहै शरद्ऋतु गरमहै पित्तपैदाकरैहै मध्यमबलदेहै ६८३
वायुका संचय व कोप ग्रीष्मादिक तीन ऋतुओंमेंहोयहै अरु बर्षा
दिकमें पित्तकासंचय कोपहोयहै शिशिरादिक ऋतुओंमेंकफकासंच-

य व कोपहोयहै ९८४ हलकेव रूखे ओषधिसे बातका संचयहोय है हलका व रुक्षशरीरसें गरमकाल होनेसे कोपको प्राप्तनहींहोता ९८५ अम्लपाकवाले औषध निम्बजलसे वर्षादिऋतुओं में पित्तसंचय होय है शीतलकाल होनेसे कोप को प्राप्त नहीं होती ९८६ सचिक्कण व शीतल औषध व जलसेंक शिशिरादिऋतुमें कफकासंचय होयहै तुल्य काल होनेसे व स्कन्दनपनासे कफ कोपको प्राप्त नहीं होयहै ९८७ हेमन्तऋतुमें पित्तनाशहोयहै बातकफकासंचयहोयहै बायु शिशिरऋतुमें कोपहो व कफनाश होयहै ९८८ हेमन्तमें संचय कफ शिशिरमें अतिसंचितहोयहै शीतसचिक्कण भारीऔषध द्रव्य से स्कन्दहुआ कोपको प्राप्त हो नहीं ९८९ भोजनादि के वश से यह कालस्वभाव होयहै भोजनसे जल्दीभी संचयहोयहै कोपकाल में विशेषकरि होयहै ९९० चयकोप व दोष अच्छे विहार आहार सेवनसे शान्तहोय है समान बिहारादिका सेवनकाल में सम कोप करैं है विपरीत हो तो विपरीत जानो ९९१ अपने स्थानमें दोष बढ़नेसे कोठाकड़ा रहै पीला वर्णहो अग्निमन्दहो अंगभारीरहै व आलस्यहो अन्न द्वेषहो ९९२ संचयमें दोषों का उपाय नहीं तो अत्यन्त बधकरि अनेक रोगोंको पैदाकरै है ९९३ बर्षाऋतुमेंबायु बलवान् होय है इस वास्ते मधुरादि तीनरस सेवन करै वायु की शान्तिवास्ते ९९४ अरु वर्षाऋतु में शरीर गीला समहोयहै तिसे क्लेशदूर करनेवास्ते तीन कटुआदि रसभी सेवन करै ९९५ पसीना व मर्दन करावै गरम दही व जांगलदेश का मांस व गोहूँ व चावल साठी व उड़द व जल कूपका ये सब वर्षाऋतु में हित हैं ९९६ बर्षाहुआ जल व पूर्व्वपवन व वृष्टि व धूप व ठण्ढ व परिश्रम व नदी नीर व दिनमें शयन व रूखापदार्थ व नित्यस्त्री भोग येबर्षाऋतुमें त्यागदेवे ९९७ घृतस्वादु कषाय तिक्त रस व शीतल द्रव्य व हलका भोजन व दुग्ध स्वच्छ रस व मिश्री व ईषरस श्रेष्ठ रस स्वल्प भोजन जांगलदेश मांस गेहूँ यव मूँग चावल नदीजल अंशूदकजल चन्दन चन्दनकपूर माला पुष्पकी निर्मल बस्त्र ये पदार्थ शरद्ऋतुमें हितहैं ९९८ मित्रके स्थान में वसन

मीठीबाणी जलमें क्रीड़ाकरना पित्तका बिरेचन जुल्लाब बलवान्को फस्त येशरद् ऋतुमें अच्छेहैं १००० दही भोजन अतिब्यायाम याने दण्डकुस्तीकरना अम्ल व कटुव गरम तीक्ष्ण रस दिन में शयन शीतलता धूप ये शरद् ऋतुमें अपथ्यहैं १ दिनमें सूर्य्यकी किरणों से गरमहो रात्रि में चन्द्रमाकी किरणों से शीतलहो उसे अंशूदक कहै हैं यह सचिक्कण है त्रिदोषको हरै है २ ईषका रस, चावल मूँग, तालावकाजल और दूधप्रदोषमें चन्द्रमाकीकिरण शरद् ऋतु में येभी पथ्यहैं ३ प्रभात भोजन व खट्टा व पिष्ट व लवण भोजन व तैलमर्द्दन, धूप, परिश्रम, गेहूँ, ईषरस, चावल, उरद, पिसाहुआअन्न व नवाअन्न, तैल, कस्तूरी, अच्छीकेसर, अगर, गरमजल, धूमरहितअग्नि, चिकना पदार्थ, स्त्रीभोग, भारी व गरमवस्त्र इनको हेमन्त ऋतु में सेवै शिशिरऋतु ठण्ढाहोयहै अरु रुक्षहोयहै इसवास्ते हेमन्तमें कहे सबपदार्थ सेवै ६ छर्दि, नस्य, शहदयुत हड़ व ब्यायाम व उवटना ये पदार्थ कफनाशक पदार्थ, स्वच्छ पदार्थ व जांगलदेशका मांस, गेहूँ, अनेकप्रकारकेचावल, मूँग, यव, चन्दन, अगर, केसर कालेपन व कटु व गरम व हलका येपदार्थ बसन्तऋतुमें सेवनेयोग्यहैं॥ वर्ज्यपदार्थ॥ मीठारस, खट्टारस, दही, चिकनारस, दिनमेंशयन, दुर्जर पदार्थ, शीतलता ये सब वसन्तमें सेवैनहीं। ग्रीष्मऋतुमें मधुर चिकना, हलका, द्रवरूप, कांजी, मिश्री, सत्तू, दूध, शालिचावल रस मांसरस, चन्द्रमाकिरण, दिनकाशयन, मलयागिरिचन्दन, शीतल जल ये सब ग्रीष्ममें सेवै। अरु कटु, क्षार, अम्ल, धूप, श्रम ये सब ग्रीष्ममें वर्ज्य देवै। इनऋतुओंमें इन बिधियोंसे जो सेवनकरै वह ऋतुजनित दोषोंकोप्राप्तहोवैनहीं १२॥ इतिदिनरात्रिऋतुचर्यासमाप्ता॥

प्रथम स्नेहपानक्रिया॥ स्नेह चारिभांति कहिये घृत १ तेल २ बसा कहेमांस में मिलीचरबी ३ हाड़के भीतरकीमज्जा ४ ये चारोंस्नेह वैद्य सूर्य्योदयहोते मनुष्यको पिलावे। ते स्नेह दोप्रकारके हैं स्थावर और जङ्गम स्थावर कहिये अचर जहां उपजे वहीं स्थिररहै ऐसे स्नेह अनेकप्रकारके हैं तिनमें तिलकातेल श्रेष्ठहै जंगमकहे चर जो श्वाससहित तिनसेउत्पत्ति घृतादि अनेकनमें घृतश्रेष्ठहै॥ अथस्नेह

भेद ॥ घी तेल मिलावे तिसे यमककहेहैं घी तेल बसामिलावे तो त्रिवृतकहोयहै। घी तेल बसा मज्जासहितहो तो महान्कहैं ॥ अथस्नेह पानक्रम ॥ घृत रोगीको तीनिदिन पिलावै तेल चारिदिन वसापांच दिन मज्जा छःदिन घृतादिस्नेह सातदिनसे अधिकसे अधिक पान करनेसे आहार होजाताहै औषधि सदृश गुणनहीं करताहै ॥ अथ स्नेह मात्राप्रकार ॥ बातादि दोष ऋतुकाल जठराग्नि अवस्था और निर्बल सबल समबलविचारि अल्पमध्य ज्येष्ठमात्रा यथोचितरोगी के घृतस्नेहकी मात्रादेना और मात्राप्रमाण और बिना दोषसमझे बिना बलाबल जाने न्यूनाधिक मात्रा अकाल व विपरीत भोजन और बिहारकरनेसे सूजन व बवासीर घनीनिद्रा असावधानता ये रोगहोते हैं बिना समय घटबढ़ बिना उचितदेशकाल विरुद्ध पदार्थ खाना यह मिथ्याहार है असमर्थ कर्म्म करना आकाल परिश्रम करना ऋतुसेविपरीतयथा गरमी में धूपखाना शरदीमें बहुत जलाभ्यास बिना वस्त्र इत्यादि विहार मिथ्याहै ॥ अथ मात्राप्रमाण ॥ दीप्ताग्निवाले को मात्रा घृतादि स्नेह पलभरदेना मध्यमाग्निमनुष्य को तीनकर्ष प्रमाण देना मन्दाग्नि मनुष्यको दो कर्ष प्रमाण देना और इसी घृतादिपान की सामान्य मात्रा कहते हैं तेभीतीनहैं जो मात्रा आठपहर में पचै सो महतीहै दिनभरमें पचै वह मध्यमा है दोपहर में पचै वह अल्पाहै इनतीनों मात्रामें तोलकाप्रमाण नहीं जैसापचै और महती मध्यमा से अल्पा सुखदायी है अल्पमात्रादो कर्षकी अग्नि दीप्तकरै स्त्री प्रसंग की इच्छाकरै जो थोरे बातादिक कुपितहों तिन्हैं शान्तकरै मध्यममात्रा कर्ष तीन की शरीरपुष्टधातु पुष्ट भ्रमशान्तिकरै ज्येष्ठ मात्रा पलभरकी कुष्ठरोग, विषविकार, उन्माद, भूत, प्रेतबाधा, मिरगी ये रोगदूरकरती है॥दोषोचितस्नेहपान॥ पित्तकोपमें केवल घृत वायुकोप में सैंधव संयुक्त घृत कफकोपमें सोंठि, मिर्च, पिपरी, यवाखार पीस घृतमें युक्तकरि प्यावै ॥ अपर रोगोंपर घृत ॥ रुखाई अरुक्षत, विषार्त्ति, बात पित्तदोष, हीनबुद्धि सुधिभूलना इनमेंअवश्य घृतपिलावै ॥ तेलयोग्यरोगी ॥ कृमिविकार वायु बद्धशरीर, कफ और मेदबद्ध शरीर इनमें तेल पिलावे जो तेल

उसे स्वाभाविक अहितहो नहीं तो अग्निदीप्त करेगा जो मनुष्य परिश्रमकारि दुर्बल और पीड़ितहो धातुक्षीण, शुष्करक्त, शरीरपीड़ा भस्मक, आक्षेपकादि वायु, बलिष्ठवायु इनमें बसापिलाना योग्यहै दुष्टकोष्ठको, क्लिशितको, वायुपीड़ितको, प्रबलाग्निकोमज्जापिलाना योग्यहै और घृत सर्वशरीरको हितहै। शीतकालमें दिनकोपिलावे गरमकालमें रात्रिको पिलावे बात पित्त अधिकवालेको रात्रिको। बात कफ अधिकवालेको दिनमें पिलावें। नसाके कारण, मर्दनको कुरलेको, मस्तकमें दाबनेको, कान आंखमें डालनेको, घृत व तैल बातादिदोष सबल निर्बल बिचारयुक्तकरै घृत गरमजल संग पीवै तेल यूषसंयुक्तपीवै चरबी हाड़ मज्जा मांडयुक्तपीवै तो सुखदायी है यूषमांडबिधि आगे कहैंगे। स्नेहद्वेषी कहे जिसे स्नेह भावेनहीं तिसे अन्नकेसंगदेना और बालक, वृद्ध, सुकुमार, दुर्बल, तृषायुक्त ऐसे मनुष्यनको भातके साथ गरमीमेंदेना। तिलभलेप्रकार कूटि थोरासा उनका चूरणडारिथोराघृत और जलदेकर पतलापकाइले तब गुनगुना गुनगुनाखाइ तो तुरत धातु उत्पन्नकरै शरीरचिकना करै। दोहनीकेभीतर मिश्रीपीसि घृतमिलाइ लिप्तकरै तिसमें दूध गौका दुहाइ तुरन्त गरम गरमपिये तो तुरन्त धातु उत्पन्नहोइ। स्नेहपिये पर परिश्रमकरने व कफकृत पदार्त्थखानेसे स्नेह न पचा हो व मलरोध किया हो तो गरमजल से बमन करावे तो अजीर्ण मिटै। जो स्नेह अजीर्ण शंकाहो तो गरमजल प्यावे जब शुद्ध ड-कारआवें अन्नपर इच्छाउपजै तबजानै अजीर्ण शांतिभया पित्तप्र कृतिको स्नेहपानसे गरमीहोतीहै प्यास बिशेषलगती है उसे शीतल जलपिला वमनकरावे तो प्यासकी गरमी शान्ति होवे अजीर्ण में उदररोगमें तरुणज्वरमें दुर्बलको अरुचिको अतिस्थूलकोमूर्च्छामें मदार्तिको वस्तिकर्म भयेको विरेचन भयेको वमनीको परिश्रमीको गर्भगिरी स्त्रीको इनसबको स्नेह न प्यावे औषध दे जिसे स्वेदनि-कसाहो रेचन करायाहो मद्य पीनेवालेको मैथुन श्रमीको बालवृद्ध को रुक्षशरीरीको रक्त धातु क्षीणको बातरोगीको घृतादि स्नेहपि-लाना योग्य है जो स्नेह पानसे गुणभयाहो तो आरोग्य शरीर में

वायु शुद्धवर्तीहो अग्निदीप्त मल चिकना दस्तसफा शरीर कोमल तेजयुक्त चिकना ग्लानि रहित स्नेहसेवी मनुष्य ऐसा होजाताहै उपद्रव बिना शरीर हलका इन्द्री निर्मल ये लक्षण अच्छे स्नेहभये केहैं और रूखेके लक्षणहोंतो स्नेहपान बिपरीतभया समझना अन्न न भावे मुखमें पानीछूटै मलमार्ग में जलनरहै अरुमलबहै तन्द्रा अतीसार शरीरपाण्डु ये लक्षण अतिस्नेहपानेके हैं रुक्षमनुष्यको बिना मलनिकरा मट्ठा तिलका कल्क यवकेसत्तू खिलाइ स्निग्ध करै स्निग्धको सामाकेचावल चनादिखिलाइ रूखाकरै अग्निदीप्त शुद्धकोठा धातुपुष्ट इन्द्रिय दृढ़ जरारहित बलकान्ति युक्त लक्षण स्नेह सेवनवालेके होते हैं॥ स्नेह सेवीको बर्जित पदार्थ ॥ श्रमन करै ठंढे पदार्थतजै बहुत न जागै न दिनमें सोवै कफकृत पदार्थ रुक्षान्न न खाय ३३ ॥ अथस्वेदनविधिः ॥ स्वेदन चारिभांतिकेहैं तिनकेनाम तापकहैंहै सेकना १ ऊष्मकहैं बफारा २ उपनाहकहैं पोटरीसे सेकना ३ द्रवकहैं काढ़ादिकमें बैठना ये चारों वायु पीड़ाको हरते हैं॥ स्वेद बिशेषकर्तव्य ॥ तापस्वेद और उष्ण स्वेदबिधि सो कफनाशक है उपनाह स्वेदबिधि बायु नाशक है द्रवस्वेदविधि पित्तबात नाशक है। बलवान् शरीरीको वायुका बड़ा वेग हो तो स्वेद अधिक करना उचितहै हलके शरीरमें हलका स्वेद उचित है मध्यम रोग वालेको मध्यमतर स्वेद उचितहै। कफदोषमें रुक्षपदार्थ रेणुकादि से स्वेदकरै कफबात रोगमें रुक्ष स्निग्ध पदार्थ से सेंककरै कफमें बायुयुक्त रोगमें गरम स्थानमें बैठाय स्वेद करै व धूपमें वैठाइकैकरै हलकासा व मल्लयुद्ध व मार्ग चलावै व भारी बस्त्र उढ़ावै व चिन्ता उपजाइके व परिश्रम कराय बोझ उठवाइ ऐसीयुक्तिसे कफमेदयुक्त वायुरोग दूरहोताहै।और नाशयोग्य वास्तियोग्य रेचनयोग्य प्रथम स्वेद निकराय उपाय करै जिसस्त्री के पेटके भीतर गर्भ का जालहो वामूढ़ गर्भहोइ इनदोका गर्भ जबबाहिर होजाय तबस्वेदकरै जिस मनुष्यको प्लीहा भगन्दर अर्श अश्मरी इन रोगवालनको प्रथम स्वेदनकरि शस्त्र उपाय करना उचित है। स्वेदकर्म करनेका समय स्थान आहार पचनेके अनंतर जिसस्थानमें पवनका प्रवेशनहोसके

तहां बैठके स्वेद कर्म करै स्वेद किये पुरुषको बड़े पात्रमें तेलभरि बैठावै तो बातादिक दोष और रसादि सप्त धातु के बिकार मलको पतलाकरि उसके साथ निकल जातेहैं। स्वेदीके चित्तस्वास्थ्य करने का यत्न जिसका स्वेदकरि पसीना निकालनेसे मल पतलाहो चित्त सावधान नहो तो छातीपर चंदन लगानेसे सावधानहोगा जिसका शरीर तेल में भिजोय गया है और मल पतला गिरता है उसकी आंखोंपर कदली व केवड़ाके जल में बस्त्र भिजोय के धरने से चित्त स्वस्थहोगा॥ स्वेद अयोग्य॥ अजीर्णी दुर्बल प्रमेही उरुक्षत पीड़ित प्यासातुर अतीसारयुक्त रक्तपित्तरोगी पाण्डुशरीरी उदररोगी ऐसेजानो। मदाती गर्भवाली स्त्री ऐसेको स्वेदन न करै जो अवश्य करनाहो तो सूक्ष्म स्वेदले॥ अल्पस्वेदन बिधिः॥ हृदय अण्डवृद्धि नेत्ररोग इन रोगन में थोरा स्वेदले। अति स्वेदोपद्रवसंधि पीड़ा दाह तृषा ग्लानि भ्रम रक्त पित्तसे फुनसी इनके शमनार्थ शीतोपचारकरै शांतिहोइ॥ तापस्वेद॥ बालू कपड़ा हाथ कपड़ा कपड़े का गेंदबनाके और अग्नि ये छः भांतिके तापस्वेदहैं जैसा जहां योग्य तैसाकरै॥ अथऊष्माविधिः॥ पत्थरादि तप्तकरि सेकनेको उष्मक हैं लोहेको गोला व ईंट व पत्थर तपाइ उसपर खट्टा पदार्थ थोड़ा छिड़क सुखोष्णभरा लेके कंबल उढ़ाइ स्वेदन करै दूसरा बातहारी कहे दशमूलादि क्वाथ व रस गरम करि घड़े में भरि मुख मूंदि व गल छेदि धातु व काठकी व बांसकी दोहाथ लम्बी नलबनावै गो पूछ की सूरति तिसे तीन खण्ड करै एक छः अंगुल बाकीके दो समान पतली ओरसे उस छः अंगुलके टुकड़े का मोटा मुख घड़े के छेदमें प्रवेशि उसमें मध्यखण्ड ऊंचाकरि जोरै फिर तीसराखंड सीधालगाइ गजशुंडी साकरी तीनों सन्धिमूंदि तब रोगीको घीव तेललगाइ व लेपकरि कंबलउढ़ाइ सबओरसे ढक निस्सन्धितकरि तब उस गजशुंडी का मुख कम्बल के भीतरखोलि स्वेदन करै तो पसीनानिकसै तृतीयरोगी के शरीरसे बीताभर अधिक लम्बाचौड़ा गढ़ाखोदि द्वादशांगुल गहिरा खैरकी लकड़ी भरि फूंकि क्षार झारि गढ़ेमें दूध व कांजी व मट्ठा छिड़के वायुहारी एरण्डपत्रबिछाइ रोगी

को सुलाइ भारीवस्त्र उढ़ावे तो पसीना निकरै। चौथा पूर्व प्रकार गढ़ातपाइ उर्द औटि पानीले छिड़कि एरंड बड़पत्तादि शय्या रचि पूर्ववत् स्वेदनकरै॥ अथोपनाहक्रिया॥ दशमूलादि बात हृत द्रव्य ले चूर्णकरि दूध व मृगकी चरबीमिलाइ तप्तकरि बातपीड़ित अंग को पोटली से सेकै व बायुहृत द्रव्य कांजी में पीसि सेंधानोन व तिलतेल युक्त तप्तकरि वायुपीड़ित अंग पोटलीकरि सेंकै॥ अथोपनाह महाशाल्वणक्रिया॥ ग्रामीमांस, जलचरमांस, जीवनीयगण द्रव्य गोदही, सज्जी, यवाखार, खारीनोन, वीरतर्वादि गण, कुलथी, उड़द गेहूं अरसी, तिल, सरसों, सौंफ, देवदारु, निर्गुण्डी, मगरैला, एरंड मूल रेंडी, रासनमूल, सहिंजना, सोआबीज, पीपरि, नाजबोइ, पांचों नोन, अनार, कठसरैया, असगन्ध, बरियारा, दशमूल, गिलोय, कौंच बीज इनमें जितनी मिलैं तिन्हें जलमें पीस तपाइ पोटलीबाँधिसेंकै ठण्ढीपरे गरम तवेपर तपाय तपाय सेंकै इस महाशाल्वण प्रयोग से सब वायु पीड़ा दूरहोती है॥ अथ द्रवस्वेदविधिः॥ दशमूलादि वायुहृत द्रव्यों का क्वाथबनाइ रोगीको कढ़ाइ ऊंचा चौकोन कोढ़र सोने व चांदी व लोहा व काठका छत्तीसअंगुल ऊँचाबनाइ बैठाइ वह काढ़ाले रोगीके ऊपर पतलीधार से गेरै नाभी के छः अंगुल ऊँचआवै तब हाथको हटावै इसीप्रकार एक व दोदिन ठारठारकरै इसीभांति तेल दूध घृत द्रव स्वेदन भी करै फिर पवन को पचावै ऐसे दोतीनबार घृत व तेल लगाइकर सब नसें अरु रोमों का मुख खुलजाताहै जो पवन प्रवेश न करनेपावै तो उनके मुखसे स्नेहादि पदार्थ प्रवेश कै वायुको निकारदेते हैं शरीर को तृप्त और बलवान् करते हैं दृष्टान्त॥ जैसे जलसे अंकुर की जड़में जल सींचनेसे वृक्षबढ़ै पुष्टहो तैसे द्रव संज्ञक स्वेद से मनुष्य का रोग नाशहो उमर बढ़ै तैसेही रसादि सप्तधातु में बातदोष बढ़नेसे पेट व मल मार्गमें भरभराहटहोतो तेलस्वेदकरै इससे परे बातनाशक और यत्न नहीं जब ताईं स्वेदकरै कि वायु शूल देह जकड़ना भारीपन दूरहोइ अग्नि दीप्त देहकोमल हलकी हो तब न करै। स्वेद करे पर तेल लगाइ सुखोष्णजलसे नहाइ कफकृत भोजन न करै। एक मुहूर्त्त से चार

मुहूर्त्ततक करवाइ आरोग्यहोने तक २७॥ अथ बमन विधिः॥ शरद् बसन्त प्रावृट्काल में चतुर वैद्य बमन बिरेचन करावै इससे मनुष्य की प्रकृति शुद्धहोतीहै॥ बमनयोग्य॥ जिसे बमन करने की सामर्थ्य हो कफ ब्याप्तहो मुखसे लार बहतीहो जिसे बमनहितहो धीर चित्त हो तिसे बमनकरावै। विषरोग, स्तन्यरोग, मन्दाग्नि, श्लीपद, अर्बुद, हृदरोग, कुष्ठ, बिसर्प, प्रमेह, अजीर्ण, भ्रम, बिदारी, अपची, कास श्वास, पीनस, अपस्मार, ज्वर, उन्माद, रक्तातीसार, नासा ओष्ठतालुपाक, कर्णस्राव, द्विजिह्वक, गलगण्ड, अतीसार, पित्त, कफ, मेद, अरुचि, इनरोगों में वैद्य बमन बतावै॥ बमन अयोग्य॥ तिमरी, गुल्म रोगी, उदररोगी, कृश, दुर्बल, अतिवृद्ध, गर्भिणी, मोटा, क्षतरोगी, मदपीड़ित, बालक, रुक्षदेही, भूखा, निरूहण बस्ती किया, उदावर्त्ती ऊर्द्ध्वरक्ती छर्दिरोगी, केवल बातरोगी, पाण्डुरोगी, कृमिरोगी, बहुबाक्य श्रमसे स्वरभंगी ऐसे रोगियों को बमन न करावै और अजीर्ण युक्त विषपीड़ित, कफव्याप्त इन मनुष्यों को मुरेठी महुआ की छाल का क्वाथपिलाइ बमन करावै। और सुकुमार, दुबला, बालक, बूढ़ा, भयभीत इनको कभी बमन न करावै॥ बमनके पूर्व्व उपचार॥ जिसे बमन करानाहो उसे पाहिले पेटभर यवागू दूध मट्ठा दही और अनभावन पदार्थ और कफकृतपदार्थ इनके खानेसे दोष ऊपर उभर आतेहैं तब बमन की औषधदेइ तो बमन अच्छेप्रकार होताहै औ स्नेह पानकियेको अच्छेप्रकारहोताहै॥ बमनयोग्य पदार्थ॥ सबबमन प्रयोगमें सैंधव व शहतयुत औषध हितकारक होताहै जो तूतिया व तांबा घृतयुत बमन देतेहैं वह भयानक बमनहै। जिसे भयानक बमन दियेपर रेचन देना हो तो घी न खानेदेय॥ बमन में औषध क्वाथका प्रमाण॥ क्वाथकी द्रव्य कुड़वभरि कूटिकै आढ़कभर जल में औटाय आधा जलजाय तब उतारिलेय फिर बमन करनेवाले मनुष्यको पिलावै॥ बमन क्रियाका क्वाथ॥ नवप्रस्थ पिलावै सो ज्येष्ठ मात्रा है। छःप्रस्थ पिलावै सो मध्यम मात्रा है तीनप्रस्थ पिलावै सो छोटीमात्रा है। बमनमें कल्क चूरण अवलेह तीनतीन पलदेना सो बड़ीमात्रा है दोदो पलकी मध्यम मात्रा है एक एक पलकी लघु

मात्रा जानना। जिस मनुष्यको बमनकी औषधदेइ उसके सातबार ताईं सबदोषगिरें आठवींबार पित्तगिरें तो उत्तमबेगहै पांच बार में दोष गिरि छठेंबार पित्तपड़े वह मध्यम बेग है तीन बार में सब दोष गिरि चौथी बार पित्तगिरे वह कनिष्ठ बेग है।। बमन और रेचन और फस्त लेनेमें प्रस्थ साढ़ेतेरह पलका जानना। कटुतीक्ष्ण गरम पदार्थ से बमनकरायेसे कफार्तीका कफनाश होताहै मधुर शीतल पदार्थकरि बमनकराये पित्त नाश होताहै मधुर क्षार खटाईं व गरम पदार्थ से कफयुक्त बात नाश होताहै सोंठ मिरच पीपरि ये तीक्ष्णहैं मुनक्का अनारादि मधुरहैं। कफ प्रकृतिको पिपरी मैनफल सेंधव चूर्णकरि गरम जलसे पिलाने से बार २ कफ गिरेगा। पित्त प्रकृतीको पटोल नीमपत्र चूर्णकरि ठंढे पानी में पिलाने से बार २ पित्त गिरैगा कफबात पीड़ित को मैनफल दूध में मिलाय पिलाने से कफबात दूरहो और सेंधव गरम जल में पिलाने से अजीर्ण मिटै॥ बमन करने की रीतिः॥ बमन औषधपीके दोनों घुटने तोरिके बैठे और एरण्डपत्रकी डण्डी शुद्धकरि गलेमें प्रवेश करे तो बमन होगा और बमन करनेवाले का मस्तक और दोनों ओर की पसली सहराताजाय इसरीति से वैद्यलोग बमन कराते हैं॥ बमनकोपलक्षण॥जो बमन अच्छीतरह न होइ तो रोगी केमुखसे लारवहै हृदय में पीड़ारहे कोठेमें खजुरी ये उपद्रव होईं।अति बमनसे तृषा अधिक हुचकी डकार अज्ञानता जीभ निकलना नेत्र चंचलता संभ्रम चित्त टोड़ी जकरना मुखसे रुधिर पड़ना बारबार थूकना कंठपीड़ा ये अति बमन से होहैं जो बमन प्रयोग से बमन अधिकहोतो उसे मृदुरेचन करै। अति उबकाई आते आते जीभ ऐंठीजाती है उसे जो पदार्थ अच्छा लगताहो चिकना व खट्टा व सलोना सो घीयुक्त को बनाइ उसकेमुखमें रखदेना व दूध दही घृत इनमें कोईमेंसानि मुखमें राखै और उसके सन्मुख खट्टेकेला दिखलावै तो उसे देखने से बमनवाले की जीभ में पानीछूटै जीभ कोमल होजाती है और प्रकृतिस्वस्थ होतीहै। जोज्यादह बमनसे जीभनिकलआवै तोतिल और दाख पीसि जीभपर लेपकरि बैठायदेय और जोआंखें चंचल

भईहो तो आंखिनपर घी लगाइ धीरे २ सहरायदेइ। जो वमन के अंतमें ठोड़ी जकड़जाइ तो सेंकसे और कफ वात हारी द्रव्य सूंघने से खुलतीहै बमनके अंतमें रुधिरआनेलगे, तो रक्तपित्तका उपाय करै। जो तृषाबधै तो आंवरेका रस रसोत धानकीखील लालचंदन खस ये पांचो पलभर चारपल ठंढे पानीमें मथिकेशहत घृत संयुक्त मिश्री डारिके पिलावै तो प्यास शांतहोवे। दारुहलदी काथकरि तिसके समान बकरीका दूधमिलाइ औटि गाढ़ाकरि सुखाइलेइ उसे रसांजन कहतेहैं ॥ वमन उत्तम होनेका लक्षण ॥ जो बमन सम्यक्हो तो हृदय कंठ मस्तकके कफादिकका दोष न रहै अग्निदीप्तहो अंग हलकाहो कफपित्त जनित विकार नाशहोइ ॥ वमनपर पथ्य ॥ मूंग व सांठी चावल का यूष देना व जांगलदेश मृग मांसका यूष दे सम्यक् वमनहुये ये रोग नहीं रहते न होते हैं तन्द्रा निद्रा अति मुखमें दुर्गन्ध खाज संग्रहणी विषदोष भारी अरु गरिष्ठ पदार्थ ठंढाजल परिश्रम मैथुन तेलमर्दन क्रोध जिसदिन बमनकरै तो इन सेबचारहे ३२॥ बमनांतेविरेचन ॥ प्रथममनुष्य स्नेहपानादि कर्मकरि फिर वमन करै तब रेचन उत्तम प्रकार हो। और प्रथम कर्म्महीन रेचनकरै कफ नीचेजाइ ग्रहणीकहे पित्तधरा अग्निधरा इनकोछाइ लेताहै इसीकारण से अग्नि मंद देहभारी देह जकड़ना प्रबाहिका कहे अतिदारुण अतिसार ये रोग उत्पन्न होतेहैं जो कर्महीन रेचन शीघ्र दिया चाहै तो नीचे गिरनेवाला कफ और आंव तिसे सूखे एरंडकी जड़ आदि सेवन कराइ पचाइरेचन करै। रेचनकादोप्रकार जोदूध घृत करि स्निग्ध मनुष्य वा माटीके गोला व ईंटकरि स्वेदित मनुष्य तिसे रेचन औ बमन दे औ कार कात्तिक चैत बैशाखमें रेचन कर्मकिये देहशुद्धिहोजातीहै। और वैद्य रोगीकारोग बिचार तिसके निवारणार्थअनुक्तकाल में विरेचनकरैविशेष रेचनयोग्य पित्तबिकार उदररोग आध्मान वायु कोष्ठबद्ध इनरोगों को विशेष शुद्धकारक ये परमौषधहैं क्रमसे जानना वस्तिकर्म रेचन कर्म बमनकर्म तेलघृत शहत यथारोग यत्न करै। दोष निवारण में उत्कर्म रेचन वातादि दोष लंघन पाचन करै दबजातेहैं परन्तु थोरेकुपथ्यकरे उभर आते

हैं और जो रेचन करि वातादि दोषोंसे शुद्धकिये शरीरमें वेग नहीं उभरते। रेचनके अयोग्य बालक वृद्ध अतिस्नेह पानकरि उरक्षती क्षीण मनुष्य भययुक्त श्रमित तृषित स्थूलशरीर गर्भिणी नवज्वरी तुरत पुत्र जनिता स्त्री मन्दाग्नि अति मदपीडित शरविद्धित क्षत युक्त रुक्षकहे निस्तेज मनुष्य इनको रेचन नहीं देना। रेचन योग्य जीर्णज्वरी विष पीड़ित वात रक्त भगन्दर रोगी अर्श रोगी पांडु रोगी उदर रोगी ग्रन्थिरोगी हृदयरोगी योनिरोग प्रमेह गुल्मप्लीहा व्रणी विद्रधि छर्दि विस्फोटक विसूची कुष्ठ कानरोग नाकरोग मस्तक रोग मुख रोग गुद रोग गरमी यकृत सूजन नेत्र रोग कृमि रोग सोमलादि रोग शूल मूत्रघात इन रोगनकर पीड़ित मनुष्य को रेचन दीजे। रेचन तीन प्रकार का है कोमल मध्यम तीक्ष्ण जिस मनुष्य की केवल पित्त प्रकृति हो उसका कोठा मृदुहै जिसकी केवल कफ प्रकृति हो उसका कोठामध्यमहै जिसकी केवल वात प्रकृति हो उसका कोठा कठोर है सो कड़े कोठे वाला रेचनमें दुःख पाताहै उसे रेचन करने में मलद्रावशीघ्र नहीं होता कोमल कोठा समझ मृदु रेचन करावे। मध्यम कोठावाले को मध्यम मात्रादे रेचन करावे कठोर कोष्ठको करड़ी मात्रादे रेचनकरावे मृदु मध्यमादि कोष्ठीको मृदु मध्यमादि औषधदे कोमल कोष्ठी को दाख दूध रेंड़ी तेल युक्तकरि रेचनदे मध्यम कोष्ठीको निशोथकटुकी अमलतास इनका रेचनदे क्रूर कोष्ठी को थूहर दूध चोक जमालगोटा इन करिके रेचनदे। मल गिरते गिरते अन्तमें कफगिरै ऐसे तीस वेग आवैं सो उत्तम मात्राहै॥ वेगकहँ दस्त॥ जिसमें बीसवेग तक अन्तमें कफगिरै वह मध्यमहै जिसमें दशवेगतक कफगिरै वह हीन रेचन मात्रा है॥ रेचनेक्काथादिप्रमाण॥ रेचनमें काढ़ाकी मात्रा दो पल उत्तम एक पल मध्यम आधापल कनिष्ठ मात्राहै॥ रेचनमें कल्क मोदक चूरण तीनोंका॥ कर्ष कहे दश दश माशे प्रमाण है और शहत घृत युक्त रेचन देइ वा रोगीका अवस्था बल देखि दोकर्षसे पलभर तक यथोचित मात्रा देना॥ रेचनमें द्रव्य प्रकार॥ पित्तमें निशोथ चूरण दाख क्वाथ मेवा गुलकन्द गुलाब फूलबड़ी सौंफके काढ़े

में देइ। कफकोपमें सोंठि मिरच पीपल चूर्ण त्रिफला क्वाथमें पिलाये कफ दोष दूरहोइ। वात कोपमें निशोथ सोंठि सेंधवचूर्ण नींबूरस व कांजी व जंगली जानवरके मांसका यूष युक्तदेइतो रेचन अच्छा हो वायु कोप शान्तिहो॥ अपर औषध रेचनपर॥ रेंड़ी तेलसे दूना त्रिफला क्वाथ प्यावे व दूना दूध युक्त प्यावे तो दस्त जल्द हो॥ रेचनेऋतुभेद॥ निशोथ इन्द्रयव। पीपरि सोंठि दाख शहत डारि वर्षामें प्यावे। शरदमें निशोथ जवासा मोथा सुगन्धबाला मिश्री श्वेतचन्दन मुरेठी दाख क्वाथमें प्यावे तो रेचनहो हेमन्तमें निशोथ चीता पाढ़ा जीरा देवदारु बच इनका चूरण गरम जल साथ पीवे तो रेचनहो। शिशिर बसन्तमें पीपरि सोंठि सैंधव विधारा निशोथ इनका चूर्ण शहतयुक्त चाटै तो रेचनहो ग्रीष्ममें निशोथ का चूरण शक्कर समभाग युक्तकरि फांके तो रेचनहो॥ रेचनपर अभयादिक मोदक॥ हड़, मिर्च, सोंठि, बिड़ंग, आंवला, पीपरि, पीपरामूल, तज पत्रज, मोथा येसब समभागले जमालगोटाकी जड़ त्रिगुणी निशोथ अठगुणीशक्कर छःगुणी शहतमें मल कर्ष२भरकी गोलीबांधे प्रभात एक खाय शीतलजल पीवे तो विषमज्वर, मन्दाग्नि, पांडु, कास, भगंदर, दुर्नामकुष्ठ, गुल्म, अर्श, गलगंड, भ्रम, उदररोग, दाह, प्लीह प्रमेह, यक्ष्मा, नेत्ररोग, बातरोग, पेटफूलना, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, पीठ पसुरी, छाती, जांघ, कटि, पेट इनके रोग दूरहों इस अभयामोदक सेवनसे तुरतही बाल सफ़ेदपना मिटै यह रसायन श्रेष्ठहै॥ रेचन अच्छेप्रकार होनेका यत्न॥ रेचनौषध पीके ठण्ढे जलसे आँखें मुख पोंछै सुगन्धादि फूल सूँघै पान खायाकरै इसयोगके करनेसे चित्त स्वास्थ्य रहता है अच्छीतरह वेग आते हैं॥ रेचन समय साधना॥ पवन मल मूत्र न रोंकै न औंघै ठण्ढाजल न छुवै ज्यों २ वेगहोय त्यों २ बार २ गरमपानी पीवै इससे खुलके मल गिरैगा। सम्यक् रेचनमें जैसे सम्यक् बमनमें कफ और खाईहुई ओषधि पित्तवायुसब दोष मुखसे गिरते हैं तैसेही ये सब मल मार्ग्ग से गिरते हैं॥ रेचन देनेपर वेग न होय तिसके उपद्रव॥ जिस मनुष्यको रेचन देने से वेग न आवै व अच्छी तरह न आवे उसकी नाभिके नीचे कड़ापन

और कोखमेंशूल, मलमें वायुमिलजाय खजुरी, मंडल, देहजकड़ना दाह, अरुचि, पेटफूलना, भ्रमछर्दि ये उपद्रव होते हैं ॥ अशुद्धरेचन यत्न ॥ जिसे रेचन अच्छी तरह न हुआ उसे रात्रिको अमलतास का पाचनदे । फिर स्नेह विधिसे घृत पिलाय कोठा चिकनाकरि रेचनदेनेसे शुद्धरेचन होगा सब उपद्रव शान्तहोंगे और जठराग्नि दीप्तहो देह हलकी ॥ अतिबिरेके उपद्रवाः ॥ मूर्च्छा, कांच निकरना पेटमें शूल, कफ अधिक गिरना, मांसधोवन समगिरना; चरबीसी व पानीसागिरे ॥ अतिबिरेचन उपद्रवयत्न ॥ ठण्ढेजलसेशरीरपोंछैवगुलाब केवड़ा छिड़के वस्त्रसे पोंछै व चावल का धोवन शहतयुक्तपीवै और शहत औषधदे बमन करावे इससे उपशमन होताहै आमकीछाल गोदधि सौबीरा पीसि कल्ककरि नाभिपर लगावै तो वेग बन्दहो सौवीरक्रिया आगे कहेंगे दस्त बन्द करनेको बकरीका दूध शकुनी चिड़िया का मांस व मृग मांसका यूष भात खाय व मसूरी यूष साँठी चावलका भातखाय और अनार सेवन करै ये ठण्ढे पदार्थको सेवन करै वेग बन्द हो ॥ स्पष्टविरेक लक्षण ॥ शरीर हलका, प्रसन्न चित्त, स्वस्थगमन वायु ऐसे लक्षण देखि रात्रिको पाचन देना व पाचनार्थ एरण्डमूल, सोंठि, धनियां क्काथदेय । रेचन सेवनसे इन्द्रियां बलवान्हों बुद्धि प्रसन्न रहै अग्निदीप्तहो धातुपुष्टि अवस्था बढ़ै स्थिर होती है ॥ रेचनपर बर्जित ॥ प्रताप, ठण्ढाजल, तैल स्पर्श अजीर्ण, श्रम, मैथुन इनसेबचै ॥ रेचनपरपथ्य ॥ चावल, मूंगकायवागू व हरिणादि मांसका यूष व लवा बटेर तीतर मांसका यूष भातमेंदे

४०॥ अथबस्तिकर्म॥ गुदाकेभीतर अंडकोशकीजड़ताईं द्रव्यभरिपिचकारी देनेको बस्तिकर्म कहते हैं सो दोप्रकारहै अनुबासन १ निरूहण २ जिसमें घी तेलादि चिकनी वस्तु भरिदीजै उसे अनुबासन बस्ति कहैं और काढ़ा तेल दूध मिश्रित पिचकारीभरि पीड़ितकरै वह निरूहण बस्तिहै। प्रथम अनुबासन बस्तिहै पीछे निरूहणहै। इसीसे निरूहणको उत्तर बस्तिभी कहते हैं अनुबासन की द्रव्यका प्रमाण स्नेहादि २ पल व १ पल प्रमाण जानना ऐसे पिचकारी के भेद हैं ॥ अनुबासन योग्य ॥ रुक्ष प्रकृतीको व स्नेहपान रहित को

व अग्निदीप्त करनेको केवल बातरोगीको अवश्य अनुवासन योग्य है ॥ अथानुवासनअयोग्य ॥ निरूहणयोग्य कुष्ठी, प्रमेही, मोटाशरीरी उदररोगी ये अनुवासन योग्य नहीं और अजीर्णी, उन्मादी, तृषी शोक, मूर्च्छा, अरुचि, भय, श्वास, कास, क्षय इनसे पीड़ित को निरूहण बस्ति अयोग्य है परन्तु अनुवासन योग्य है बस्ति कहे पिचकारी निर्माणबिधिः ॥ नेत्र कहे पिचकारी की नल जो गुदा में प्रवेशी जाइ सो सुवर्णादि धातुकी बांस नरकुल गजदन्त मृगसींग की और अग्रभाग पन्ना बिल्लौर की बनावै ॥ नलीयोग्य अवस्था ॥ जो वर्ष एकसे छः वर्ष ताईं बालकके बस्तीकी नली छः अंगुल बनावै और छः वर्षसे बारहवर्ष ताईंकी आठ अंगुलकी बनावे और बारह वर्षसे ऊपरवालेकी नली बारह अंगुलकी बनावे ॥ नलीछिद्रप्रमाण और निर्माणबिधि ॥ छः अंगुलकी नली का प्रवेश करनेवाला मुख मूंग समानकरै नीचेका छोटी अंगुली समान और आठ अंगुलवाली का मटर सा दूसरा मध्य अंगुलीसा बारह अंगुलवालीका झरबेरीके बेरसमान दूसरा अंगूठासमान राखे नली बहुतचिकनी रहै गोपुच्छ सदृश एकओरपतली दूसरीओरमोटी मोटीओरके चौथाई भागमें दोछल्लेजड़ेहों तिसमें थैली हरिणादिकेमूतनेकी चढ़ाइ पूर्वो छल्लोंका मध्यमथैली समेत पुष्ट बहुत करै जिस थैलीकी औषध न और राहसे निसरै तबपिचकारी ठीकजानो थैली निर्मितजातिहरिण, छाग, वराह, बैल, भैंसा इनके मूत्र की थैली उसनलीमें लगावे जो रानमिलैं तो इनकेचमड़ेको कमलपत्र समकाटि दोनोंओर छीलि साफ करि थैली समान बनाय नलीपर चढ़ावै ॥ व्रणादि पिचकारी प्रमाण ॥ घाव फोड़ा नासूरादि पिचकारी आठ अंगुल लंबी मूंग पैठिने माफिक छेदरहै गृध्रके पक्ष सदृश मोटी अतिचिकनी पतली छोटी नासूर व्रणयोग्यहै ॥ वस्तिगुण ॥ वस्ति अच्छेप्रकार होतोशरीर पुष्टक्रांति बलआरोग्य आयुवृद्धिकरै ॥ वस्तिसेवनकाल ॥ वसंतऋतुमें संध्यासमय स्नेहवस्तिकहे अनुवासन वस्तिकरना ग्रीष्मवर्षा शरदमें रातको करना रोगी को गरम चिकना भोजन रातको खिलाइ अनुवासन करनेसे मद व मूर्च्छा उत्पन्नहोताहै औररूखेभोजनसेबल

क्रांतिहानिहोय ये दोनोंतरह वस्तिकर्मकरे येरोगहोतेहैं॥ वस्तिकर्ममें न्यूनाधिकमात्रादोष॥ अनुवासन व निरूहणमें हीन मात्रा देनेसे रोग नहींजाता अतिमात्रा देनेसे आनाह, ग्लानि, अतीसार ये उपजते हैं॥वस्तिउत्तम मात्रा॥ उत्तममात्रा छः पलकीबलीको अनुवासनदेना मध्यमबलीको तीनपलकी बलहीनको हीनमात्रा डेढ़पलदेना॥ स्नेहमें और द्रव्यमात्रा॥ शतावरि सेंधवका चूर्णछः माशेकी उत्तममात्राहै चारिमाशेकी मध्यम दोमाशेकी कनिष्ठ जानना॥ विरेचनपर वस्तिप्रकार॥ विरेचनकियेको सातदिन बिताय बलआने पर भोजनकराय अनुवासन बस्तिकरना॥ पिचकारी पीड़न प्रकार॥ अनुवासन कर्मके प्रथमतेललगाइ गरमपानी से नहवाइ यथालिखित भोजनकराइ कुछ टहलाइ पवनमलमूत्र शंकामिटाइ बाईंकरवट पौढ़ाइ दाहिना गोड़ा सिकोड़बायां बगारि मलमार्ग में घीलगावे तब पिचकारीकी थैली में यथालिखित स्नेहमात्राभरि वैद्यबरवस्तिमुख बांधकरिबायें करधारि धीरे धीरे मलमार्ग में दोअंगुली प्रवेशै तबदाहिनेहाथसे द्रव्यभरी थैलीले मन्द २ पीड़ित करै जिस्से भीतर पिचकारी के वेगकी चोट न लगे ऐसे पिचकारी देते हैं उससमय उबासी छींक खांसी न आवै। रोगीको बस्तिप्रद समय पिचकारीदे तीसमात्राताईं रोकै इतनी बेरमें स्नेहादिक अन्दर प्रवेश होजाइगा फिर सौतक सीधासुवावै। मात्रा प्रमाण जंघमंडल कहे कटिसे घुटनी पर्य्यन्त तिसके चारोंओर चुटकी बजाता हाथघूम आवै तो एकमात्राहोय यहसर्वग्रंथ निश्चयहै बस्तिके पीछे कृत्य बस्तीपीड़ितकरि रोगीके पांव हाथ शरीरफैलाइ लम्बाकरदे इस्से सातों धातु अपने अपने स्थानमें फैलजाती हैं तब हाथ पांवके हथेरीतरवा जांघकटि नितम्ब मेंधीरे२थपकीदे सहराइदे तबरोगीको शय्यापर स्वस्थकर पौढ़ाइ निद्राकरावै। बस्तिगुण मलाशयमें स्नेहादि पहुंचनेसे वायु औरमल ये सब इकट्ठा करि जल्दी बाहर निकारदेइ तो जानियेकि बस्ति ने बरबय भेदरुष्टती बारियां दिनादिन पिचकारी याने दवागुणकिया बस्ति बिकार निवृत्त प्रयोग। अनुवासनान्त जब स्नेहादि अनुवासन बस्तिसे प्रवेशहुये हैं उनका बिकार दूरहोय और पुराने

चावलका भात खिलावे। बातादि दोष बस्ति प्रमाण पूर्वोक्तवत् पिचकारी बनाइ सात या आठ या नव वेगताईं देना अंतमें निरूहण पिचकारी देना। प्रथम बस्ति वेग होनेसे वंक्षणद्वारा शरीर में चिकनाई आती है अर्थात् धातु वढ़ती है दूसरीमें मस्तक बायुदूर जाय तीसरीसे शरीरमें बलहोताहै। चौथी पांचवींसे रसरक्त बढ़ताहै छठी सातवींसे मांसमेदा चिकने होते हैं आठवींनववींसे शुक्र धातु स्निग्ध होते हैं अठारह वेगदेनेसे शुक्रधातुका दोष नाश हो जिसे छत्तीस वेगहों तिसे हाथी घोड़े सदृश बलहोय और देवता समानकांति होय रूखे मनुष्यको स्नेह बस्ति हलकीहलकी नित्यप्रति देइ और जो रोग चिरकालका होइ तो निरूहण बस्ति हलकी २ नित्यप्रतिदेइ। जो रुक्षवातकरि अधिक पीड़ितहोय उसेअनुवासन बस्ति जबप्रयोजनजानै तबदेइ औरचिकने व मोटे मनुष्यको जब २ उचितजाने तब २ निरूहण बस्तिदेइ तो रोग नाशहोता है। स्नेह शीघ्र निकलनेपर जब स्नेहादि शीघ्रनिकलपरै तब निरूहण बस्ति करै इसीरीतिसे जितने वेगदेइ सबके अन्तमें निरूहण देताजाय। जो विरेचन बमन करि शुद्ध न किया बस्ति कर्म्म किया तिससे स्नेहादिरुकनेसे ये उपद्रवहोते हैं शिथिलगात्र,आध्मान, पेटफूलना शूल, श्वास और भ्रटी कठोर इनउपद्रवन के दूरकरने को तीक्ष्ण निरूहणदेना तीक्ष्ण औषधयुक्त फलवती जिससे वायु अधोगामी होय मलयुक्त स्नेहको गिरावै तिसतीक्ष्ण,रेचन तीक्ष्ण नासदेनेसे. शमन होते हैं जो स्नेह बस्ति रुकनेसे कोई उपद्रव न होय और स्नेहादि भीतररूखे कोठाके कारणसे अटकरहैं और शूलादि उपद्रव न करै तो उसेदीर्घकालतक रहनेदेय॥ बस्ति औषधगिराने का यत्न॥ जो पिचकारी का दिया स्नेह न गिरै तो दुसरायकै फिर पिचकारी स्नेह गिरावै व स्नेह रातभर बस रहै तो सवेरे रेचन दे गिरावै ये दोनों प्रकार करि स्नेह गिरावै। अनुवासन स्नेह, गुर्च,रण्ड की जड़, करंजकीछाल, भारंगीछाल, रूसा अगियाखैर, शतावरि कटसरैया, कोआ, ढोढ़ी ये पलपलभरउरद,यव,अरसी, बेरकीमींगी कुरथी ये दोदो पल थे सब अधपिसी चारिद्रोण जलमें औटाइ द्रोण

भर रहै तब छानि आढ़कभर तिलका तेल मिलाइकै जीवनीगण सूक्ष्मचूर्ण करि उसमें डारिकढ़ाई में भरिऔटि क्वाथ जराइउतार छानलीजै इसे अनुवासन कहतेहैं पिचकारी में भरते हैं वस्ति कर्म उलटाहोनेसे छियत्तर रोग होते हैं तिसकी चिकित्सा सुश्रुतमेंदेखि करना ३२ बस्तिकर्म में पथ्य पान आहार बिहारादिक आचरण पूर्व्वोक्त स्नेहपान सदृश देना इसमें भी चाहिये ३१ ॥ अथनिरूह बस्तिविधिः ॥ निरूहण बस्ति का कारण कहे रोगानुसार करिकै अनेकभेद हैं जहांजैसा करना चाहिये तहां मुनीश्वरों ने वैसाही नामधराहै यथा क्लेशन बस्ती दो हृदबस्ती यह नामप्रकारजानना १ निरूहका दूसरानाम स्थापनबस्ती कहते हैं इसकारणसे उत्पन्नहुये दोष संयुक्त रसादिक धातु अपने स्थानमें प्राप्तहैं उनके वातादिक दोष वा रोगोंको दूरकरि शुद्धधातोंको स्थितकरती है निरूहमेंक्वाथ प्रमाण निरूहमें सवाउ प्रस्थकी उत्तम मात्राहै प्रस्थभरकी मध्यम कुड़वकी कनिष्ठमात्राहै ३ निरूहमें अयोग्य अतिस्निग्ध कोठेवाला ऊर्द्ध्वगत दोषवाला उरुक्षती व कृशआध्मानी छर्दी,हिक्की, अर्शी, श्वासी, काशार्त्ती ऐसेमनुष्य गुदाके निकटपीड़ित शोथी अतिसारी शीतरक्ती कुष्ठी गार्भिणी मधुप्रमेही जलोदरी इनरोगिनको निरूहण देना योग्यनहीं ४ निरूहबस्ती योग्य बात उदावर्त्त वातरक्त विषमज्वर मूर्च्छा तृष्णा उदरआनाह मूत्रकृच्छ्र पथरी पुराना रक्तस्राव मन्दाग्नि प्रमेह शूल अम्लपित्त हृदयरोग इनरोगिनको निरूहदेना योग्यहै ५॥ निरूहबस्ती बिधान ॥ जिसे निरूहबस्ती देनीहो तिसे मल मूत्रकी शङ्कानिवारण कराई पौन छूटनेकी शङ्का मिटाई कोष्ठ शुद्ध करि देहमें तेल लगाई तप्तजलसे अङ्गपोछ नाभितरे पोटरीसेथोरा सेंकै दोपहर प्रथमसे भोजनत्यागि जिसे जैसा दोष देखै तिसे तैसी औषध पिचकारीमें भरि पूर्व्वोक्त अनुवासन बास्ति बिधानसे निरूहण बस्तीकरै फेर औषध बाहर निकसनेके कारण मुहूर्त्तकहे दो घड़ी कच्ची ऊकरू बैठावे इतनेमें औषध गिरे तो अच्छा न गिरे तो शोधनकरि गिरावै शोधनकहे रेचन योंभी न गिरे तो यवाखार गोमूत्र खट्टेकारस सैंधवामिलाइ फिर पिचकारी देनेसे गिरैगी ॥ अच्छी

निरूहलक्षण ॥ निरूह अच्छीहोय तो क्रमसे मल पित्त वायुगिरै और शरीर हलकाहोय तो निरूह सुष्टुजानिये ॥ अशुद्धबस्तीलक्षण ॥ जिसे वस्ती कर्म्मसे त्रिदोष जन्याविकार और मलनहीं निकलगया उसके मूत्रमार्ग में पीड़ा शरीर जड़ता अरुचिहोइ ॥ निरूहस्नेहशुद्धवस्तीलक्षण ॥ देहहलकी मनसन्तोष स्वेदचिकना रोगनाश ये अच्छीवस्तीके लक्षणहैं जो चतुरबस्तीकर्म्म जाननेवालेवैद्य यों निरूह बस्तीकरैं नहीं तो बस्ती बिरुद्धहोतीहै १०॥ निरूहबस्ती दानप्रमाण॥ निरूहवस्ती एक व दो व तीन व चारबार जैसा दोषदेखै तैसी दे वातरोगमें स्नेहयुक्त निरूह एकबारदे पित्तमें दूधयुक्त दोबारदे कफ में कषाय कटु रुक्षादियुक्त सुखोष्णकरि तीनिबारदे त्रिदोषमें दूध कषाय मांसरसयुक्त क्रमसे चारबारदेना तिसपीछे स्नेह बस्तीदेना ११ सुकुमार व बालक व वृद्धहो तो हलकी निरूहदेना सुकुमारादि को तीक्ष्ण वस्ती से बल और आयु घटतीहै हड़ व आंवरादि कषायहै त्रिकुटादि कटु है कुरथी यवादि रुक्ष है १२ ये द्रव्य आदि मध्यान्त क्रमसे देना प्रथमदोष उभरन मध्यमें दोष नाशन अन्त में दोष क्षीणकरि शमनकरि देना १३ दोष उभारणद्रव्य रेंड़ीबीज महुआ छाल पीपरि सैंधव वच हाऊबेर इनकी पिचकारी से दोष उभरता है १४ ॥ दोष नाशक द्रव्य ॥ शतावरि मुरेठी बेल इन्द्रयव कांजी में पीस गोमूत्र युक्त पिचकारी रोग हारक देना १५ व दोष शमन औषध निशोत आदिक शोधन द्रव्य का क्राथकरि तेल व सैंधवडारि मथिके दोष शोधन निमित्त इसीका अथवा औरद्रव्यका कल्क भी मथिके पिचकारी देना १६ मकरामूल महुआ छाल मोथा रसोंत ये सब समान दूधमें पीस दोष शमनार्थ देना १७ लेखन बस्ती त्रिफला क्वाथ में गोमूत्र शहत यवाखार ये द्रव्य सम भागलेवै ऊषादिगण द्रव्य मिश्रित करि लेख न बस्ती देनालेखन कहे जो मेद दूषित तिन रोगन को द्रवसाकरै १८ वृंहणबस्ती मुशली गोखुरू कौंचबीज इत्यादि वृंहणद्रव्यहै सो धातुको बढ़ाती है इनका क्वाथकरि महुआ की छाल दाख अनारादि मधुर द्रव्यका कल्क औ घृत मांसरस ये सब पूर्वोक्त क्वाथ में डारि धातु बढ़ाने

को पिचकारी देइ १९ पिच्छिल बस्ती बेर की छाल इलायची ल-सोड़े की छाल सेमर जवासा मोथा ये सब सम भाग ले दूध में पीसि शहत छाग मेढ़ा हरिण इनका रुधिर मिश्रितकरि चतुरवैद्य दोष पिघलाने को पिच्छल बस्ती देते हैं इसकी मात्रा का प्रमाण बारह पल है २० ॥ निरूहण बस्ती प्रमाणविधिः ॥ अक्ष औ कर्ष एकहीसंज्ञाहै सैंधव कर्ष भर शहत चारिपल मर्दनकरि छःपल घी दे एकत्रकरै इसमें दोपल पूर्व्वोक्तकल्क द्रव्यमिलावै अथवा पूर्व्वोक्त कल्क द्रव्यका क्वाथ कहे काढ़ाकरि लीजिये व आठपल प्रमाण कुशलवैद्य इकट्ठे करि मथिनिरूह बस्तीदेय निरूहबस्तीकी साधा-रण बिधिजानो ॥ विशेष बिधान ॥ बातमें ४ पल मधु ६ स्नेह इकट्ठा करि पिचकारीदेना पित्तमें ४ पल मधु ३ ले स्नेह इकट्ठाकरिपिच-कारी देइ कफमें ६ पल मधु ४ पल स्नेह एककरि देना २१ मधु तेलबस्ती रण्डमूल क्वाथ ८ पल शहत तेलचारिचारिपल बड़ीसौंफ सैंधव आधाआधापल येसब एककरि क्षणभर मथि यह मधु तेल बस्तीहै इसकेदेनेसे मेदरोग,गुल्म,प्लीह, कृमिमल व उदावर्त्त येरोग नाशहोयँ बलकान्ति स्त्रीइच्छा धातुवृद्धि अग्निदीप्तहोइ २२ दीपन बस्ती शहत घी दूध तेल दोदोपल हाऊबेर सैंधव कर्षकर्ष सोंधस पीसि सबमिलाइ पिचकारी देइ अग्निदीप्तहोइ २३ युक्त रथबस्ती रण्डमूल क्वाथ शहत तेलमें सेंधव,वच, पीपरि मैनफल चारो सम भाग चूर्ण करि मिलाय पिचकारी देय यह उक्त रथबस्ती सब रोगों पर दीजाती है २४ सिद्ध बस्ती पञ्चमूल क्वाथ तैल औ महुआ मुरेठीक्वाथमें पीपरि सेंधव मिलायदेय यह सिद्धबस्ती सब रोगनपर देते हैं २४ ॥ अथोत्तरबस्तीविधान ॥ उत्तर बस्ती कहे मूत्र मार्ग्गमें पिचकारी देनेकी बिधि तिसमें प्रमाण बारहअंगुल लम्बी तिसके मध्यमें पखुरी चमेलीपुष्प सदृश और चमेलीपुष्पकी डण्डी समान सोटी रहै १ ॥ मात्रा प्रमाण ॥ मनुष्य २५ वर्षताईं ने-दोकर्षकी दे पच्चीस के उपरांत पलभर देना २ ॥ अथ स्थापन कहे उत्तर सेवक को शुद्धस्नान कराय घुटने टिकाइ टेकि खड़ा रहै तब इच्छशालाका चांदीका १२ अंगुलमुँ

मुरा ८ अंगुल सीधा सरसों निकलजाने माफ़िकछेद होता है उस में घी व तेल लगाय मूत्रमार्ग्गमें धीरे २ छः तथा आठ अंगुलप्रवेशकरे यत्न पूर्व्वक जिसमें पीड़ा न करे जब मूत्र थैलीतक पहुँच खट खटबजै तो जानो इसके पथरी है इसी शलाकासेबन्द मूत्र भी खुलजाताहै शलाकाछिद्रसे बहिजाताहै और जोपिचकारीदेनाहीहो तो शलाकाकी पेंदीपर थैलीचढ़ाय औषधि भरि पूर्व्ववत् पीड़ित करै इससे मूत्रकृच्छ्रादिक दूरहोते हैं यह उत्तर बस्ती क्रमहै ३ व स्त्रीके उत्तर बस्ती बिधान ॥ स्त्री की योनिमें दो छिद्र होते हैं एक मूत्र मार्ग्ग दूसरा गर्भमार्ग्ग योनि वहीहै उसकीशलाका छंगुनियांकी मुटाई दशांगुलकी मूंग निकलने माफिकछेदराखि चारिअंगुलयोनि में प्रवेश पिचकारी देइ और मूत्रमार्ग्ग में सूक्ष्म शलाकादोअंगुल प्रवेश ४ बालकके एकअंगुल शलाका प्रवेशै चतुरवैद्यअतिमहीन रसायनसे देइ पिचकारी पीड़ने में हाथ न कँपै ५ ॥ स्त्रियोंकीबस्ती कीमात्राप्रमाण ॥ योनिमार्ग्ग पिचकारी देनेकी मात्रा दोपल औषधि लेना मूत्रमार्ग्गकी मात्रा एकपलहै बालक बस्तीकीदोकर्षहै निपुणवैद्य स्त्रीको उतानापौढ़ाय पिचकारी पीड़ितकरै फिरउटकुरु बिठाइ दियाहुआस्नेह गिरावै ६ शोधनद्रब्य मूत्रकृच्छ्रादिमें शोधन द्रब्य रेंड़ी तेलादि द्रब्यभरि पिचकारी देइ अथवा फलवर्ती रेंड बीजादि सूत व वस्त्रकी कड़ीबत्ती बनाइ रेंड तैलादिमें तप्त करि भिजोइ उसपर रेंड़ी पीसि चुपरै योनिमें राखै जो बस्तीकिये नाभि तरे बस्तीस्थान अधिक उष्णहोइ तो बटगूलरकी छालके क्वाथकी पिचकारीदेना व ठण्ढे दूधकी इनसे बस्ती शुद्ध होती है और शुक्र सम्बन्धी पीड़ा और स्त्रीके आर्त्तव सम्बन्धीरोग पीड़ा दूरहोय प्रमेहकी उत्तमबस्ती कभी अयुक्तनहीं ७ ॥ उत्तम बस्तीलक्षण ॥ उत्तर बस्ती मेंस्नेहबस्तीहुई तब शुक्रसम्बन्धी प्रमेहादि पीड़ा दूरहोती है उसके ये लक्षणहैं ८ फलबस्ती मलमार्ग्ग में घी लगाइ मल गिराने के कारण रेचन द्रब्य रेंड बीजादि कड़ीबत्तीपर लेपि गुदामें धरै इसे फलबस्ती कहैं ७ ॥ अथ नस्य कर्म ॥ नाककीराह औषधिदेनेको नास कहते हैं इसके दो नामहैं नावन १नस्य २ नस्यरीति दोविधि हैं एक

रेचन दूसरा स्नेहन और रेचनको कर्षणभी कहियेसो बातादिदोष-निको कर्षणवालीहै और स्नेहन नस्य धातुको वृद्धि करतीहै इस से वृंहण कहिये २ नस्यकर्म समय कफदूषित को प्रात नस्य देना पित्तदूषित को मध्याह्न में देना वायुदूषित को सन्ध्याकेभीतरदेना और जो अति पीड़ितहो तो रात्रिको देना॥ अथनस्येनिषेधः॥ नस्य कर्म ऐसे को बर्जित है भोजन करचुकेपर तुरतही न दे दुर्दिन कहे आँधी व अतिपवन व मेघादितहो और लंघनीको पीनसकेआरम्भ में गर्भिणीको बिकारीको अजीर्णपर बस्तीकृतको स्नेहपीतकेपानी व मद्यपीको तर्पणकृतको क्रोध शोकार्त्ती तृषीको वृद्ध और बालक कोमलमूत्रबायुआरोधीको तुरित स्नानाकांक्षी को ऐसे मनुष्यनको और इनकर्म्मकियेपर नस्यकर्मनकरै४व नस्यकर्म योग्यायोग्यआठ वर्ष उपरांतअस्सी वर्षपर्य्यंतनासकर्मकरना ५॥रेचन नासविधि॥रेचन कारकद्रब्यकी नासदेनाचाहै तो राई व सरसोंकातेलतीक्ष्णहै तिस कीनासदेना व तीक्ष्णद्रब्यमें सिद्धकिया तेल व तीक्ष्णद्रब्यका क्वाथ व तीक्ष्ण द्रब्य का स्वरसले तेल घृत सिद्धकरि नासदेना॥ रेचनस्य प्रमाणः॥ रेचन संबन्धी औषधकी आठबूंद दोनों नकुनामें नासदेइ सो उत्तम मात्राहै छहबूंदकी मध्यम चारिबूंदकी कनिष्ठ मात्राहै ७ नस्यद्रब्य प्रमाणम्॥ नासदेनेके तेलादि सिद्ध करनेमें तीक्ष्ण औष-धि एकशाणदेना हींग यवभरि सैंधव माषभरि दूध आठशाण पानी तीनकर्ष मधुर द्रब्य कर्ष कर्ष प्रमाणदेना ८॥ मस्तकरेचनविधि॥ म-स्तक रेचन दोप्रकार है एक अवपीड़न दूसरा प्रधमन ये मस्तक रेचन जानना ९॥ अवपीडन या प्रधमन बिधान॥ तीक्ष्ण द्रव्यपीसिके स्वरसलेनेको अवपीड़न कहते हैं १ दूसरी छःअंगुल प्रमाण नली दोमुखकी बनाइ एकमुखपर तीक्ष्ण द्रब्यका चूर्णधरि नाकमें प्रवेश करि दूसरे मुखलगाइ फूंकै उसे प्रधमन कहतेहैं तीक्ष्ण द्रब्य सोंठि मिर्च पीपरि इसे त्रिकुटा कहते हैं १० रेचन व स्नेहन नासयोग्य उर्ध्वगतकहेभृकुटी,मस्तक,कपाल,दशमद्वारपर्यंत,गतरोग,कफजन्य स्वरभंग,अरोचक,नाक टपकना,माथेकी पीड़ा, पीनस,सूजन, मृगी, कुष्ठ इनमेंरेचन उचित है भयाकुल स्त्री दुर्बल बालक इन्हें स्नेहन

उचितहै ११ अवपीड़न योग्य कंठरोग, सन्निपात, तंद्रा विषम ज्वर मनोविकार, कृमि इनमें अवपीड़न नासयोग्य है १२ प्रधमनयोग्य मूर्च्छा अपस्मार संन्यासादि अचेतन रोगमें अत्यन्त तीक्ष्ण चूर्णादिकरि नासदेना १३ ॥ अथरेचन संज्ञक नस्य ॥ गुड़ सोंठि औटिके व अद्रकरस गुड़घोलि नासदे पीपरिसेंधा औटिकेदे तिस्से कान, नाक माथा, ठोढ़ी, कंध, गल, हाथ, पायँकीपीर अच्छीहोइ १४ ॥ पुनः प्रकार ॥ महुयेकी छालका गाभा पीपरि बच मिरच इन्हें पीस तप्त जलसे नासदेइ तो मृगी उन्माद सन्निपात अपतंत्र अज्ञान ये सबरोगमिटें शरीरहलकाहो बुद्धिसावधानहोती जानना १५ ॥ पुनः तृतीयप्रकारः ॥ सैंधवश्वेत मरिच सरसों कूट ये सब छाग मूत्रमें पीसिनासदेने सेतन्द्रा नेत्रालस्य दूरहोइ १६ ॥ अथ प्रधमनस्य ॥ सैंधव, बच, पीपरि मरिच, कंकोल, लहसुन, गूगुल, कायफर इनके चूरण रोहित मछरी के पित्तामें पुटदेइ एकनलीके मुहमेंधरि दूसरा मुख नाकमें प्रवेशि औषधकीओर से फूंकदेइ तो तन्द्रादि अचेतनरोग नाशहो इसचूर्ण का प्रधमननाम है १७ ॥ अथ वृंहणनस्य विधान ॥ वृंहणकहे धातु को पुष्टकरै और बढ़ावे इस वृंहणनास की मात्रा वृंहणनस्यके दो भेदहैं एकमर्श १ दूसरा प्रतिमर्श २ येदोनों वृंहण हैं इनकेयोग्य मर्शमें तर्पणी नस्यकीमात्रा अष्टशाणकी मुख्य प्रमाण चारिशाण मध्यम मात्राका प्रमाणहै एकशाणहीन मात्राका प्रमाणहै ये तीन मात्राविषे और बातादि दोषका बलाबल विचारिके रोगीकोबैठाइ वस्त्र उढ़ायनाकमें नासदेइ दो व तीनबार एक दिनकाअंतरदेकेदेइ व दोदिनका अन्तरदेकेदेइ व तीनदिनका अंतरदेकेदेइ व पांचदिन का अन्तरदेकेदेइ व सातदिनका अन्तर नस्यकर्म विचक्षण वैद्यकरै १८ जो मर्शसंज्ञक नाससे व रेचन संज्ञक नाससे कोई उपद्रव बढ़े उसकायत्न कहतेहैं मर्श नासमें मात्रा अधिक दीजाय व रेचननास में मात्रा अधिक दीजाय तो मेदादिक धातु घटिजाती है तोअनेक उपद्रव उत्पन्न होतेहैं इस कारण से जो उबकाइ होतो और क्षयादिव्याधि हो तो वृंहण कहिये जो धातु बढ़ावे सो नाकमें देइ व खिलावै १९ वृंहणनस्य योग्य मस्तक रोग घ्राण, रोग, नेत्ररोग

सूर्य्यावर्त्तरोग,जो सूर्यकेचढ़तेबढ़ै और सूर्यके उतरेघटै आधाशीशी दांतरोग दुर्बलता कटि पीड़ा बाहु कन्ध पीड़ा मुखशोष कर्णनाद वातपित्त विकार अकाल केशपाक और बालन का गिरजाना व इन्द्रलुप्त इन रोगिन में घृतादि स्निग्ध पदार्थ व शर्करादि मधुर इनकरिके वृंहणनास देना २ पक्षाघातादि परनास उड़द किमांच बीच मींगी रासन बरियारा एरंड की जड़ रोहिष तृण अश्वगन्ध इनका क्काथ करि भुनी हींग सेंधव डारि तप्त नासदेय तौ पक्षाघात कंपवाय समेत अर्दितवाय मन्यास्तंभ अपबाहुक इतनेवात रोगशमनहों २१ प्रतिमर्श नासकी मात्रा दोविन्दुरूपहै घृतादि स्निग्धपदार्थ द्वैद्वैबुन्द एकएकनथुनामेंदेइ इसे प्रतिमर्श नास कहते हैं २२ विन्दुसंज्ञा पिघलाघी व तेलमें छोटीअंगुरीबोरिकै उठानेसे जितना बुन्द टपकताहै उसेविन्दु कहतेहैं और आठविन्दुको शाण कहतेहैं सोईशाणमर्शनासकी मात्राहै और प्रतिमर्शकी दोविन्दुकी मात्रा है २३ प्रतिमर्शकाल सबेरे दातूनकरके घरसे निकसतेपरिश्रम पर राहचलके मैथुन करके मूत्रमल त्याग के अंजन करके भोजनकिये पर सूर्य निकरते बमनांत में संध्या समय ये प्रतिमर्श देने के समय हैं २४ प्रतिमर्शनसे तृप्तलक्षण नासदेनेसे छींकथोरी आवै और स्नेह थूक मार्गहा मुहसे गिरपड़ै तो शुभजानिये २५ प्रतिमर्शयोग्य ॥ क्षीण धातु तृषित शुष्क मुख बालक बूढ़ा इनको प्रतिमर्शउचितहै और गलेके ऊर्ध्वरोगमें शिथिलको त्वचाकीझुर्री पड़नेपर पलित इनरोगन को प्रतिमर्शनास दूरकरै इन्द्रियनमेंबल होय २६ अकालेकेशपाकपरनास ॥ बहेड़ा, नींब, खंभारी,हर्र, लसोड़ा, काकतुंडी इनके बीजनका तेल भिन्न २ काढ़ि नासदेइ तो बार कालेहोयँ २७॥ नस्यविधि ॥ पवन औ धूरि बर्जित स्थानमें मनुष्य दातूनकरि हुक्कापी गला मस्तक शुद्धकरि घाममें उतानापौढ़े पीछे शिरझुका नाक ऊँचीरहै हाथ पावँ फैलाइ कपड़ेसे आँख ढकै वैद्य महीन धारसे एक २ ओर नासदेइ नस्यदेनेका पात्र सोने वा रूपे वा तांबे वा शीशेकाहोइ वा सीपीपत्र द्रोण वा कपड़े की पुटरी से नास देइ २८ नास लेनेवाला माथा न कँपावै क्रोध न करै बोलै

नहीं माखी मच्छ षट्कीड़ादि काटने न पावे हँसे नहीं ऐसे संयम बिना नस्यद्रव्य प्रवेश नहीं होता खांसी आजाती है तो खराब हो मस्तकमें आँखिनमें कंठमें पीड़ाउत्पन्नकरतीहै॥ नस्यसाधारणप्रकार॥ नासदेनेसे शृंगारकमें औषधि प्रवेशनार्थ पांच व सात व दशमात्रा ताईं नास धारणकरै जब मुहँमें उतरे तबपरे २ दहिनेबायें थूकदे सन्मुखथूकने से औषधि गिरजातीहै शृंगारक उसे कहते हैं जो नाकके दोनोंछेद भौंहतक पहुँचे दो गलेको चलेगये हैं एक दाहिनी एक बाईं भृकुटी के नीचेहो कपालको चलेगये हैं ३० नस्येवर्जित॥ नासलेके संताप न करै धूरि क्रोध बैठना निद्रा सौ मात्रा ताईं इनसे बचे उतानापरारहे धुवां न पीवैथूक न लीले ३१ नस्येशुद्धआदिभेद॥ नास विषे तीनलक्षण शास्त्र कहते हैं शुद्धहीन अतियोग सो मैं संक्षेपकहताहूं ३२ उत्तम शुद्धयोग भयेसेदेह हलकी मनशुद्ध मुख नाक रंध्र शुद्ध शिररोग रहित चित्त इंद्रिय प्रसन्न ये शुद्धयोग लक्षण हैं ३३ हीनयोगलघुयोगभये देह में खजुरी गुरुत्व मुख नाकसे कफ गिरै राहान योग लक्षण है॥ अतियोग लक्षण॥ मस्तककी मज्जा नाकसे गिरै वायु वृद्धि इन्द्री भ्रम माथ खाली हीन वृद्धि योग यत्न कफ वायु हारक द्रव्यकी भली भांति नासदेइ फिर घीका नासदेइ अतिस्निग्धलक्षण जोनस्यकर्मसे स्निग्धता अधिकहोतौ कफ अधिकगिरै माथाभारी इन्द्रियभ्रम मनुष्य को रुक्षनास देना नासमें पथ्य अभिष्पंद्यान्न कहे दध्यादि भक्षण त्यागे सुष्टु आचारकरै पूर्वोक्त पंचकर्मसंख्याबमन विरेक नस्य निरूहवस्ती अनुवासनवस्ती येपंचकर्म हैं अथधूमपानछःप्रकारके हैं शमन वृंहण विरेच कासहर वामन ब्रणधूपन ये छःप्रकार जानना शमन धूमपानकी पर्य्ययसंज्ञा मध्यप्रयोगिक वृंहणपर्य्याय स्नेहन औ मृदु रेचनपर्याय शोधन औ तीक्ष्ण धूमे अयोग्यथकित भयभीत दुःखपीड़ित वस्ती किया दस्त आनेको रातजगेको प्यासे को मुख सूखनेवाले को उदर रोगी को शिर तपनेवालेको सिरगी रोगीको उबकी रोगीको अध्मान रोगीको पेटफूलने को उरुक्षत को पांडु रोगीको गर्भिणीको रुक्षको क्षीण को दूधदही सहत घृत

स्वरस मद्य मञ्जरी इनके भोजन कियेको बालक वृद्ध इनको धूमपान योग नहीं और असमय धूमपान करनेसे उपद्रव उत्पन्न होते हैं धूमपानातिकालेकृत उपद्रव की चिकित्सा धूमपानसे भये उपद्रव में घी पिलावे नासदेइ अंजनकरै तर्पन करै अर्थात् शरीर तृप्ति करने को दाषकाजूसदे घृत उपरस दूधमिश्री घोलि पिलावै व इनका रस सहत युक्त पिलावै व और मधुर वस्तु व खटमिट्ठा पदार्थ दे तो धूम उपद्रव शांतिहो धूमपानावस्था समये धूम सेवन बारहबर्षसे अस्सीवर्ष पर्यन्तके मनुष्यको करावै जो धूमपान अच्छा बनै तो श्वास कास नाक बहना गले माथेकी पीर वात कफ जन्य विकार ये सब दूरहों धूमपान विषे उपयोगीकी प्रकृति अच्छे धूमपानभये चक्षुरादि इन्द्रिय और अन्तःकरण वात ये प्रसन्नहोती हैं और केश दन्त ठोढ़ी ये दृढ़ होती हैं ॥ धूमनलिकाविधान ॥ धूमपाननलि के तीन खंड होई व तीनठोर टेढ़ी हो छगुनियासी मोटी मटरसा छेदहो शमन धूमपानकी नली ४० अंगुल लम्बीलेइ मृदु संज्ञक की ३२ अंगुल लम्बी तीक्ष्ण संज्ञक की २४ अंगुल की कासघ्न की १६ अंगुल लम्बी व मनी संज्ञककी १० अंगुल लंबी औ व्रणकेह घाव में धूनी देनेकी १० अंगुल लंबी परन्तु व्रण की नली पूर्वोक्त नलियोंसे महीन हो औ छेद कुलथी प्रवेश करने माफ़िक करहो तो व्रणधूमि होयगा ॥ धूम पान ईषक विधान ॥ द्वादश अंगुलकी सीक छिलके समेत परद्रव्य कल्क चटाई छांह में सुखाई सीक निकर बकले कल्क लिप्त रहिजाई उसके छेद में घृतबोरि महीनबत्ती प्रवेशि जलाइ देइ दूसरा छोर मुह में ले धुवाँ खींचैं औ मुहसे धुवाँ छोड़ै और नाकसेपी मुहसे छोड़ै बुद्धिमान् धूनी विधान दो सरवेले एक सम्पुट करै ऊपर छेद रहै उस छेदसे सम्पुटमें अग्नि धरि कल्क सुलगावै तब दुमहीनलीले एक सम्पुटके छिद्रमें दूसरे मुहसे व्रणपर धुवाँदेइ ॥ कल्क धूमद्रव्यानि ॥ शमन धूम पानमें रालादि गणका कल्कदेई मृदुमें घृतादिस्नेह राल मिलाइ कल्क करिदेइ तीक्ष्णमें सरसों मधुवादि कल्क करि देई कासमें मरिच भटकटैयादि कल्क करिदेई बमन हेत च-

र्मादिका धुवाँ देना व्रणमें नींब बचादि कल्क करिदेई वाग्भट्टोक्त एलादि गण उभय इलायची शिला रसकूट कसेरू मूल मकरा जटामासी खसरोहिष लूण व अगिया खैर कपूर कचरी किर्मानी अजवाइन तज तमालपत्र नागरमोथा चमेली केशर सीपी बाघनख देवदारु अगर केसर किमाच मूल गुग्गुल राल कपूर चम्पा पुष्प ये एलादि गण हैं ॥ बालग्रह निवारणधूप ॥ मोरपंख निम्बपत्र भटकटैया मरिच हींग जटामासी विनवर छागरोम केचरी बिलारवीट हाथीदांत इन ग्यारहोंके चूरणमें घृत मिलाई घर धूपान्त करेसे सब वालग्रह पिशाच राक्षस उपद्रव और इन सम्बन्धी ज्वरनाश होइ ॥ धूमेपरिहार ॥ धूमपानसे परिहार रेचन नस्यसदशकरना धुवाँ पीनेकी नली धातुमय व बांसकी में पिये ११ ॥ गंडूषकवल प्रतिसार विधिः ॥ गंडूष ४ प्रकारहैं स्नेहीक शमन शोधन रोपण योंही ४ प्रकार कवलभी हैं १ स्नेहिक गंडूष भेद चिकना उस पदार्थ स्नेहिकहै वायु प्रबलता में दीजै ठण्ढा पदार्थ शमनमें पित्त बिकार में कडुवा खट्टा उष्ण शोधनमें कफ बिकारमें ३ कषाये कटु मधुर तप्त करी रोपणमें देना व्रणादिमें ऐसेही कवलमें जनावा २ गंडूष कवल रीति जो गीलाकाढ़ा दे मुहँमेंभरि खूब गुलगुलावै उसे गंडूष कहैं जो कल्ककरि मुहँमें धर फेराकरै सो कवल है ३ ॥ उभयोद्रव्य प्रमाण ॥ गंडूषके क्वाथेमें द्रव्य कोल२ कबलमें कर्ष२ देना ४ गंडूष कवल योग्य अवस्था पांचवर्षके ऊपर सावधानकरि रोग निवारणार्थ कपालगला मुख कुछसेक तीन व पांच व सात दोषनाशतक गंडूषकरै ५ ॥ पुनि प्रमाण ॥ जब मुखमें कफ भरआवै व तीनों दोष शांतितक व नेत्रनाकसे जल टपकनेतक गंडूषकरै ६ ॥वातरोगेस्नेह॥ गंडूष तिल कल्क पानी दूध वा तैलादि स्निग्ध येदनापित्ते शमन गंडूष तिल नीलकमल घृत खांड़ दूध शहदयुक्त कुल्लेकरे से पित्त ज्यादह ठोड़ी और मुखसे दूरहोय व्रणादिपर गंडूष शहदके कुल्ले करने से मुख क्षतरस अज्ञान चटकना दाह प्यास ये उपद्रव दूरहों मुख शुद्धहो ९ विषादिपर गंडूष घृत व दूध के कुल्ले करने से विषबिकोर चूने से फटा अग्नि से जरामुख अच्छाहो १० दांतलेण

पर तिल तेल से सैंधव युक्त कुल्ले करने से दांत हलना दूरहो मुख सोख परामुख सूखना औ फीका रहना कांजी के कुल्ले से शांति हो कफ दोष पर अदरख के रसमें सैंधव त्रिकुटा राई पीस मिलाइ कुल्ले करने से कफ दोषमिटै कफ रक्त पित्त पर त्रिफला चूरण शहत में डाल कुल्ले करे से कफ रक्त पित्त दोष मुख में न रहै मुख पाक पर दारुहर्द्दी, मुर्च, त्रिफला, दाष, चमेली पत्र, जवासा, समानले क्वाथ करि छठवां भाग शहत दे ठंढे कुल्ले किहे त्रिदोष मुखपाक मिटै गंडूष करने वाली द्रव्य प्रतिसारण अर्क कवल में भी देना कवल विधान॥ केशर, बिजौरादि, सैंधव, त्रिकुटा, इन सबका कौरबनाइ मुखमें बिलोवे तौ मुखकी कठोरता औ कफ वातकी अरुचि दूरहो प्रतिसारणप्रकार॥ प्रतिसारण में तीन प्रकार औषधीदेनेकेहैं कल्क अवलेह चूरण जैसा मुखमें दोषदेखै तैसी औषधि अंगुली के अग्र भागमें से मुखके भीतर मले॥ प्रतिसारण चूरण॥ कूट, दारुहर्दी, धव-पुष्प, पाढ़ा, कुटकी, हर्दी, तेजबल, मोथा, लोध इनका चूरण जीभ और दांतकी जड़में बारबार मल लार गिरावै तौ इस प्रतिसारणमें दांत पीड़ा रक्तगिरना मसूढ़ा सूजन दाह ये रोग दूरहों॥ गंडूषादिहीन वृद्ध भये से उपद्रव के लक्षण॥ हीनभये कफ अधिक आस्वाद अज्ञा-नता होतीहै अन्नसे अरुचि अति योगसे मुखपकना पिटिकाहोना मुखशोष ग्लानि ये उपद्रव होयहैं॥ समगगंडूषलक्षण॥ मुखव्या-धि नाश चित्तप्रसन्न मुख निर्मल हलका जीभको स्वाद ऐसा जानना अथलेपविधानम्॥ लेपके तीन नामहैं लिप्त लेप लेपैन लेप दो-षघ्नहैं विषघ्नहै वर्णप्रद है मुख लेपकहै मुखलेप सो तीन प्रकार है उसका प्रमाण तीन भांति है जो अंगुल भर मोटा लेपहो सो दोषघ्नहै पौन अंगुल मोटा लेप चढ़ावै सो विषघ्न है अर्द्ध अंगुल लेप वर्ण्यहै ऐसे तीन प्रमाणहैं ओदालेप रोग हरताहै सूखाकांति हरताहै दोषघ्न लेप गदापुराना, देवदारु, सोंठि, सिरस, सहजन तुचा पांचोसमभाग कांजीमेंपीसि सूजनपर लेपकरै नवोसूजनदूरहो बहेड़ेकी मींगीके लेपसे दाह पीड़ा नाशहो॥ दशांगलेप॥ सरसों, मुरेठी, तगर, लालचन्दन, इलायची, मांसी, हर्दी, दारुहर्दी, कूट, नेत्रबाला ये

दशौ समभाग चूरण करि पंचमांश घृत मिलाइ पानी में पीसि लेप करे सबिसर्पविषदोष विस्फोटक सूजन दुष्टफूड़ा ये सब पराजय हो इसका दशांग लेपनाम है ॥ विषघ्नलेप बकरी का दूध तिल पीसि माखन युक्त लेपकरै व कारीमाटी तिलका लेपकरै विष सम्भव सूजन भिलावे सूजनदूरहो ॥पुनर्लेप॥ करियारी, अतीस, कटु दूधिया, कटुतुरई, मूरी तीनोंके बीज पांचौ समान कांजी में पीसिके कीटदंशपर बिस्फोटपरलगाये दोषमिटै ॥ कांतिकारकलेप ॥ रक्तचंदन मजीठ, कूट, मालकांगनी, बटांकुरस, सूर ये सब समान जलमें पीसि लेपकरै व्यंगरोगमिटे क्रांतिबढ़ै ॥पुनः॥बीजपूरकी जड़ घृत मेनशिल गोमयरस मिलाइ लेपै कांतिबढ़ै मुहासा व्यंगरोग ये सब दूरहोयँ तरुण पिटिकापर लेप जो तरुणमनुष्यके मुहपर छोटी छोटी पिरकी भरै वहतरुण पिटिकाहे ॥ लेप ॥ लोध धनियां तीनों समभाग पीसि लेपकरै तैसे गोरोचन मिरच पानीमें पीसि लगावै व सरसों बच लोध सैंधव समभाग जलमें पीसि लेपै येतीनप्रकार लेपलगाये से मुहपर की तरुणपन की पिटिका अच्छी होय ॥ व्यंगरोगपैलेप ॥ अर्जुनकी छाल व मजीठ व श्वेत घोड़ेके नखकी भस्मी तीनोंमें कोई द्रव्य शहत संयुक्त लेपकरै व्यंगरोग मिटै ॥ मुखपरकी झाईपैलेप ॥ मदार को दूध हर्दी घिस लगावै तो बहुतदिन की भई मुखपर की झाईं निश्चय दूरहोय ॥ तारुण्यपिटिकपरलेप ॥ बट का पीला पत्र चमेली रक्तचन्दन कूट दारुहरदी लोध सब एकमें पीसि लेपै तो तरुणपिटिका व्यंग झाईं दूर होय ॥ रूषीपरलेप ॥ पुराने तिल व उसकी लकड़ी कुक्कुटबीट दोनों गोमूत्रमें पीसि लेपकरै तो रूषी दूर होय ॥ पुनः प्रकारः ॥ खैर नींब जामुन तीनो छाल गोमूत्र में पीसि लेपकरै रूषानाशहो ॥ दारुणरोगपरलेप ॥ चिरौंजी, मुरेठी, कूट, माख, सैंधव ये पांचों समभावगपीसि शहत युक्त लेपकरै दारुण रोगमिटै पुनर्लेप ॥ खसखस पीस दूध में लेपकरै व आमकी बिजुरी छोटीहड़ दूधमें पीसि लेपै तो दारुणरोग नाशहोइ इन्द्रलुप्त पर लेपन करूरा परवर की पत्ती कारस तीनदिनलेपै तो बादषोरा दूरहोइ ॥ पुनः ॥ भटकटैया शहत लेपकरै व घुंघुची के पत्र व फलका रस शहत लेप

करै व भलावा पत्र का रस शहत लेप करै तो बादषोरा दूर होइ
केशबर्द्धनलेप ॥ गुखुरू तिल पुष्प समान चूरण करि समान घृत शहत में फेटि लगावै तो बारबाढ़ैं बारजमेपर हाथीदांतको जराइ रसौत औ बकरीके दूधमें पीसि लेपकरै जहां बार न होयथा हथरी में तो बारजमें तो और अंगमें क्या न जमेंगे रसौत बिधि निरूहण बस्तीमेंकहीहै ॥इन्द्रलुप्तपरलेप॥ मुरेठी, कमल, दाख तीनोंघृत तेल गऊ के दूधमेंपीसि लेपकरै बादषोरा दूरहोइ॥ पुनः॥ चतुष्पद चर्म रोम,नख,सींग,हाड़ इनकीभस्म तिलतेल फेट लेपकरै तो नष्टबार जमें॥ केशकृष्णकरण ॥इन्द्रायन के बीज का तेल पाताल यन्त्र से निकारि सफ़ेदबारपरलगावै तो कालेहोजायँ॥पुनः॥ लोहचून भंगरा त्रिफला, कालामाटी, ये छवों समान चूरणकरि ऊख रस में सानि मासभर राखि कुछ दिनों लेपकरै तो अकालके श्वेत बाल कालेहोइँ तृतीय॥ आवँरा तीनहड़ दोबहेर एकआमकी बिजरी पांच लोहचून एक कर्ष ६ कड़ाहीमें अतिसूक्ष्म घोटिकै उसीमें दिनरात्रि रहनेदेफिर लेपकरैतोश्वेतकेशकालेहों॥चतुर्थ॥ त्रिफलातिलपत्रलोहचूर्णभंगरा येसब समभागसे छगरीके मूत्रमें पीसि पकेबारपर लगाये कारेहों पंचमलेप॥ त्रिफला, लोहचून, अनारकी छाल कमलनील येपांचो औषधपांचपल औभंगरेकारसछःप्रस्थनिचोरपूर्वोक्तद्रव्य एकत्रकरि लोहेकी कढ़ाईमें सूक्ष्मकरिघोटै एकमासभरराखै तिसपीछे निकारै बकरीके दूधमें घिस श्वेत बारनपर लेपकरै जो सेरण्डपत्ताबांधेराति भर बांधेरहे प्रभात स्नानकरते समय धोयडारै योंहीं तीनदिन लेप करनेसे सपेदबार कारेहोयँ॥अथलोमशातनप्रकार॥ बारगिरानेकालेप॥ शङ्खचूरनदो भाग, हरिताल एकभाग, मैनशिलअर्द्धभाग, सज्जी एकभाग ये सब दवाई पानीमें पीसि जहांकेबार गिरानेहों तहांलेप करै बाकी बारनको कपड़ेसे ढाकेराखै लेपके पहिले बार दूरकरिकै तब उसठौरमें यहलेपकरै सातबारकरै सबबारगिरैं फिरन होइँजैसे बार बनवायेपर यहरोम शातन अतिउत्तमहै॥ पुनः॥ हरतालशंख चूरणपलासक्षारदोदो शाण केलेके दण्डका पानीमें वआकपत्रके रसमें पीसि सातबार लेपकरेसे बारगिरजाइँ बारगिरानेको यहलेप

उत्तमहै ॥ सपेदकुष्ठपरलेप ॥ पीरीचमेली, गजपीपरि, कसीस, विड़ंग, मैनसिल, गोरोचन, सेंधव छवो समभाग गोमूत्र में पीसि लेपकरे श्वेतकुष्ठ दूरहोय ॥ पुनः ॥ काकठोढ़ी, कूट, पीपरि, सब समान खसी मूत्रमें पीसि लेपकरे श्वेतकुष्ठ दूरहोइ ॥ सेहुआंपर लेप ॥ आंवरा, राल, जवाखार ये तीनों सौवीरनाम कांजीमें पीसि लेपकरे सेहुआं दूरहोय ॥ पुनः ॥ दारुहरदी, मूरीकेबीज, हरताल, देवदारु, पान येसब कर्षकर्षभर शंखचूरण, शाणभर सब पानीमें पीसि लेपकरे सिधमन जो सेहुआं सो दूरहोइ ॥ नेत्रलेप ॥ हड़, सैंधव, गेरू, रसौंत, चारोंसमान पानी में पीसि पलकपै लेपकरे सब नेत्ररोग जायँ ॥ पुनः ॥ रसौंत, सोंठि, मिर्च, पीपरि, चारोंसमान पानीमें पीसि गोलीबनाइ पलकपर लेपकरे इसअंजन नामिका लेपसे नेत्र कोरनिकी खजुरी औ गुहांजनी जो पलककी कोरपर छोटी छोटी पिटकी होती हैं सो दूर होइँ ३६ ॥ खजुरीपरलेप ॥ चकोड़, विपात, कच्चीसरसों, तिल, कूट, हरदी, दारुहरदी, मोथा ये आठों समभाग मट्ठेमें पीसि लेपकरे खजुरी दाद विचर्चिका पायँफूटना येरोग न रहैं ३७ ॥ सूखीखाजपर लेप ॥ चोक, विड़ंग, सिंगरफ, गंधक, चकोड़ त्रियाकूट, सेंदुर ये सातोंसमानले नीमपत्र, धतूरापत्र, पान, तीनोंरसनिकार जुदेजुदे पूर्वोक्तद्रव्य रसमेंपीसिलेपकरै सूखी खाज दाद बिचर्चिका पदफूटना खाजरक्त कुष्ठ ये सब नाशहोयँ ॥ पुनः ॥ छोटीहड़ सैंधव चकौड़बिया, कटसरैया पांचो मट्ठेमें पीसि लेपकिये खजुरी दाद दूरहोय ॥ रक्तपित्तपरलेप ॥ लालचन्दन, खस, मुरेठी, बरियारा, व्याघ्रनख, कमलये छहोंसमभाग दूधमेंपीसि लेपकरे तो रक्तसम्बन्धी शिर के रोगमिटैं ॥ उदररोगपर लेप । सरसों हरदी कूट चकौड़बिया तिल येसब समान कड़वेतेल में पीसि लेपकरै शीत पित्तसम्बन्धी उदररोग दूरहोयँ ४१ ॥ बातबिसर्पपर ॥ नीलकमल देवदारु रक्तचन्दन मुरेठी बरियारा येसमभाग दूधमेंपीसि घृत मिलाइ लेपकिये बातबिसर्प दूरहोइ ॥ पित्तबिसर्पपर ॥ कमलनाल रक्तचन्दन लोध खस कमल कोकाबेली सरिवन आंवरा जंगीहड़ येसब समभाग पानी में पीसि लेपकिये पित्तबिसर्प हानि
कफविसर्पपर त्रिफला पद्माक खस धावपुष्प कनेर नरटमूल

जवासा येसब समानले जलमें पीसि लेपकिये कफविसर्प हरै॥ पित्त वातरक्तपर॥ झरोरफली नीलकमल पद्माक सरसौंफूल इनकाचूरण सौबार धोया घृतमें फेंटि लेपकिये पित्त वातरक्त हानिहो॥ नाकरक्त स्रावपर॥ आंवरा घीसें भूंज कांजीमें पीसि लेपकिये नाकसेरुधिर गिरना दूरकरै॥ वातजशिरोपीड़ापर॥ कूट व मुचकुन्दपुष्प कांजी में पीसि रएडतेलयुक्त मस्तकपर लेपकिये वातजन्य शिरोपीड़ामिटै॥ पुनर्लेपः॥ देवदारु तगर कूट सुगन्धबाला पांचो समान कांजी में पीसि रएडतेलमिलाइ माथेपर लेपकिये वातसम्भव शिरोपीरनाश होय॥ पित्तसम्भव शिरोरोगपर लेप॥ आंवरा कसेरू सुगंधबाला कमल पद्माक रक्तचन्दन दूबजड़ खस नरकट जड़ ये नवों द्रव्य सम ले पानी में पीसि माथेपर लेपकिये पित्त सम्बन्धी औ रक्तपित्तसम्बन्धी मस्तकपीड़ा दूरहोय॥ कफसम्भव शिरोपीरपर॥ मेवड़ीबीज तुरंग बालछड़ मोथा इलायची अगर देवदारु जटामासी रासन रेंड मूलये दशद्रव्य पानीमेंपीसि गरमकरि माथेपरलेपैतो कफसम्बन्धी पीड़ादूरहोय॥ पुनः॥ सोंठि कूट चकौड़बीज देवदारु रोहिषबिना अगिया खैर येपांचोद्रव्य समान गोमूत्रमें पीसि सुखोष्ण माथेपर लेपसे कफजन्यपीर दूरहोय॥ सूर्य्यावर्त्त आधाशीशीपर॥ सारिवन कूट मुरेठी पीपरि नीलकमल येकांजीमेंपीसि रएडतेलयुक्त लेपकिये सूर्य्यावर्त्त आधाशीशी दूरहोय॥ शंखक अनन्त सर्वशिरोरोगपर॥ छतावरि नीलकमल दूब कारेतिल गदापुरैना पांचों समानपानीमें पीसिलेपकिये शंखकअनन्त वातसब शिरकेमिटैं॥ पुनःविधान॥ ज्ञानी वैद्योंकी सम्मतसे लेपका दूसरा विधान कहताहूं एक प्रलेपाख्य दोप्रदेहक॥ इनकी उँचाईकेप्रमाण येदोनोंलेप भैंसेके गीलेचमड़े की मुटाईरहै सो गुणदायक है शीतवीर्य्य सूक्ष्म प्रवेश बाधारहित है औ दीपन प्रलेप जानौ उष्ण प्रदेहक कफ वात हरताहै येदोनों लेप रोमदूरकराइकै लगावै रोमदूरहोनेसे रोम सुख पुलके अच्छी तरह लेपगुण प्रवेश करताहै॥ लेपनिषेध॥ रात्रिको लेप न करै औ बाल का लेप सूखै नपावै क्योंकि सूखने से रोम उखरै तो देह में अधिक पीड़ाकरै॥ रात्रिलेपनिषेधकारण॥ रात्रिकोतम वेगसे शरीर

की उष्णता उफाइ रोम मुखपर आइ रहती है विना लेप निकरि जाती है इसकारण रात्रिको लेपनकरै ॥ रात्रिकेलेपकीविधि ॥ रात्रि को लेप चतुरवैद्य निश्चयकरे जहां व्रणपकता नहीं चिरकालतक औ गम्भीर शोथहो व रक्त कफ सम्भवहो ॥ व्रणोपचार सप्तप्रकार लेपक्रम ॥ प्रथम लेप सूजनदूरकरनेको दूसरा जमेरुधिरको यथा-स्थान में पिघलाके फैलावने को तीसरा व्रणपरकी खाल को मृदु औ पतलीकरने को चौथाव्रण फोरके बहानेको पांचवां शुद्धकरने को जो पीव न बाकी राखै छठा घाव पूरने को सातवां घाव के चर्म को शरीर की रंगत करने को ॥ व्रणेवातशोथनिवारणलेप ॥ बिजौरा मूल, मांसी, देवदारु, सोंठि, रासन, अरनीमूल सब समान पानी में पीसिलेपकरै वातशोथ शांतिहोय ॥पित्तशोथपर॥ मुलेठी रक्तचंदन मुर्रा, नरकटजड़, पद्माक,खस, नेत्रबाला,कमल, आठौ समानपानी मेंपीसि लेपकरै पित्तशोथ दूरहोय॥ कफशोथपरलेप॥ पीपरि, सहिंजन छाल, बालू, व खांड़ हर्र ये पांचौ गोमूत्रमें पीसि गुनगुना ले लेप करै यह अदेहसंज्ञक लेप कफशोथ दूरकरता है॥ आगंतुक औरक्त-शोथपरलेप॥ हल्दी, दारुहल्दी, रक्त व श्वेतचन्दन, हड़ दूब,गदा-पुरैना, खस, पद्माक, लोध, गेरू रसोंत येसब समभागपानीमेंपीसि आगंतुक औ रक्तजशोथपर लेपकियेसे दूरहोय॥ व्रणपकानेपरलेप॥ सनकी जड़, मूरी, सहिंजनके बीज, तिल, सरसों, यव, लोहकीट अरसी ये आठौ समानले पानीमेंपीसि अदेहसंज्ञक लेपसे व्रणपके गा॥ व्रण फोरने पर लेप॥ लटजीराकीजड़, चीतेकीजड़ व छाल सेहुँड़,मदारका दूध, गुड़, भिलावां, कसीस,सेंधव ये औषध दूना दूधमें पीसि व्रणपर लेपकियेसे व्रणफूटै॥ पुनः॥ करंज मींगी, भि-लावां, दंतत, मूलकीछाल, चीता, कनेर ये पांचौ कबूतरकी बीट व कुंज बीट व गीदरवीट में समान मिलाइ लेप करै फोड़ा फूटै तीसरा लेप॥ सज्जी जवाखार दोनों लेपकरै व चोककी जड़कीछाल लेपकरै फोड़ाकेफूटैमें प्रबल है॥ व्रणशोधन लेप॥ तिल,सेंधव,मुरेठी नीमपत्र, हल्दी, दारुहल्दी, निशोथ ये सब सम भाग चूरण करि घी में घोरि फोड़े फूटेपर लगावै व इनके कल्ककी टिकिया बनाइ

घीमें छोंड़ि जलावे जब टिकिया जलजाइ तब उतारि घी राखिछोड़े टिकिया फेंकिदेइ ये दोनोंप्रकार ब्रण शुद्धकरे ६९ ॥ ब्रणशोधन रोपण पर लेप ॥ नीमपत्र, घृत, मधु, दारुहल्दी, मुरेठी, तिल ये सब पीसि लेपकिये ब्रणशुद्धहोइकै पूरआवै ७० ॥ कृमिनिवारण लेप ॥ करंज नीम, बकायन तीनों पीसि कृमि स्थानमें भरे तो कृमि मरजायँ व लोहचुन व हींगपीसि भरे व हींग नीमपत्रभरे तो कृमिनाशैं ७१ ॥ ब्रणशोधन रोपण पर लेप ॥ नीमपत्र, तिल, दतूनिकी जड़, सेंधव ये सबसमान पानीमेंपीसि शहतयुक्तलेपकिये ब्रणशुद्धहोइकै पूरिआवै ७२ ॥ पेटपीड़ापर नाभिलेपन ॥ मैनफल, कुटकी, कांजीमें पीसि कुछ गरमकरि नाभिपर लेपकियेसे पेटशूल मिटै ॥ वातबिद्रधीपर ॥ सहिंजन छाल, बकाइनपत्र, अरंडमूल ये समपीसि सुखोष्णलेपकरे से बातबिद्रधी दूरहोय ॥ पित्तबिद्रधीपर ॥ भिलावां, मुरेठी, शक्कर घीमेंलेप कियेसे व असगंध, खस, रक्तचन्दन, दूधमेंपीसि लेपकियेसे पित्त बिद्रधी दूरहोय ७५ ॥ कफबिद्रधीपर ॥ ईंट, बालू, लोह कीट, गोबर गोमूत्रमें पीसि लेपकियेसे इस प्रदेहलेपसे कफबिद्रधी दूरहोय ७६ ॥ आगन्तुक बिद्रधीपर ॥ रक्तचंदन, मजीठ, हल्दी, मुरेठी ये सब समान दूधमेंपीसि चोट वा रुधिर बिकारपरलेपकरे अच्छाहोय ७७ ॥ वात गलगंडपर ॥ बेत, सहिंजन बीजसमानले जलमें पीसिशीतगरमप्रदेह संज्ञक लेपकरे तैसेही दशमूल पीसिलेपकरे ७८ ॥ कफगलगंडपर ॥ देवदारु, इन्द्रायन दोनों पीसि प्रदेहकलेप कफ गंडमालादूरकरे ॥ अपचीपर ॥ सरसों, नीमपत्र, भिलावां तीनों समभाग राखिकरि मेषके मूत्रसे लेपकरे अपची दूरहोय ८० ॥ गंडमाला अर्बुदगलगंड पर लेप ॥ सरसों औ सहिंजनकेबीज सनईकेबीज औ अरसी यव मूलीके बीज ये सब औषध समान भागले खटायेंभरा मट्ठेमें पीसि कै लेपकरे तो गंडमाला अर्बुद गलगंड ये रोग दूरहोयँ ८१ ॥ अपबाहुकपर लेप ॥ केवल बातपीडित कोईअंग अपने सौभाविक कर्म में पीड़ाकरै तहांके रोम दूरकरि घुंघुती पीसि सुखोष्णलेप कियेसे अपबाहुक बायु बिशूची हाथकी गुद्रसी जंघाकी वायु सम्भव पीड़ा दूरहोय ८२ ॥ पीलपांवपरलेप ॥ धतूरा, अरंड, मेवड़ी तीनोंपत्ती गदा-

पुरैना, सहिंजनछाल, सरसौं ये छहोंपीसि अतिकालके भये पील-पांवपरलेपकिये अच्छाहोय ८३॥ अंडरोगपर॥ कालाजीरा, हाऊबेर, कूट अरंडमूल, बेरछाल ये पांचोसमान कांजीमेंपीसि अंडकोशपर लेपकिये अच्छेहोय ८४॥ उपदंशकहे गरमीपर लेप॥ कनेरकी जड़ पानीमें पीसि इन्द्रियपर लेपे तो उपदंश सम्बन्धी असाध्य पीड़ा दूरहोय ८५॥ पुनः॥ त्रिफला कढ़ाईमें जराइ राखकरि शहतमें फेंटि लेपकरै गरमी के घाव शीघ्र पूरआते हैं॥ पुनः॥ रसौंत,सरसौं,हड़ तीनों समानपीसि शहतमें घेपि उपदंश सम्बन्धी ये दवहिते ब्रण परलेपकरै तो उपदंशको हरिलेइ ८७॥ अग्निदग्धपरलेप॥ बंशलोचन,पाकरि,रक्तचन्दन,गेरू,गुर्च ये पांचोपीसि घीमेंले जरेपैलगावै वा घी चौराई क्काथमें मिलाइ लेपकरै जरेकीब्यथा शांतिहोय ८८॥ पुनः॥ यवकीराख,तिलके तेलमें घेपिलगावै तो दग्धब्रण पूरिआवै॥ योनिसंकीर्णलेप॥ पलाशफल, गूलरफल, तिलके तेलमेंपीसि शहत मिलाइ योनिमें लेपकरै दृढ़ संकुचितहो॥ माजू कपूर पीसि शहतमें फेंटि लेपकरै गिरीहोइ योनि तनिआवै॥ पुरुष इन्द्रियकठोर करनेका लेप॥ मिरच,सेंधव,पीपरि, तगर,भटकटैयाकेफल,लटजीराकेबिया, कालेतिल,कूट,यव उड़द, सरसौं, असगन्ध ये सबसम पीसि शहत मिश्रितकरि नित्यइन्द्रियपर मलाकरै तो इन्द्रियमोटीहोइ स्त्रीकेस्तन पर लगायाकरै तो कठोर परजाय॥ और पुरुषके भुजदण्डपर औ कानपर मर्दन करनाभला॥ पुनर्लेपः॥ श्वेतफूलका असगंध,सैंधव दोनों सूक्ष्मपीसि चौगुना घृत घृतका चौगुना भेंड़ीकादूध एककरि आंचपर दूधजराइ घीछानि इन्द्रीपर लगाये इन्द्रीमोटीहोइ ९३॥ योनिद्रवलेप॥ इन्दूरनपत्र का रसले, पारा, रक्तकनेरके सोंटे सेघोटि बार बार रस डार डार जबकजरी पीठीसम होजाइ तब इन्द्रीपै लेपि स्त्री प्रसंग करै तो स्त्रीसुखपावै पहिले वीर्यपात करै॥ देहदुर्गन्ध निवारनलेप॥ पान,कूट,हड़ पानीमें पीसि लेपकरै तो दुर्गन्धदूर होय ९६॥ वशीकरनलेप॥ वच, कालालोन, कूट, हरदी, दारुहरदी, मिरच ये सबसमानपानीमेंपीसि देहमें लोकबश होनेके निमित्त लगावै तो अच्छाहै॥ मस्तकमें तेल लगाने की विधि॥ अभ्यंग कहें

तेलमर्दन परिसेककहें तेलचुपरना पिचुकहें रुईके पहलकोतेलमेंबो-
रिमाथेमेंबांधै वस्तीकहें माथेमेंचौफेर चर्मबांधितेलभरै येचारिप्रकार
हैं सो क्रमसे उत्तरोत्तर बलवान हैं शिरोवस्ती विधान अभ्यंगपरि-
सेक पिचु ये तीनों सर्वत्र प्रसिद्धहैं औ शिरोवस्ती विधि औमात्रा
इहां नहींकही सो अगले श्लोकमें कहेंगे ९९॥ शिरोवस्तिप्रकारः॥
मस्तकपर औषध धारण करनी शिरोवस्ति कहते हैं बारह अंगुल
चौड़ी हाथभरलम्बी शिरके समान डफाकार हरिण चर्मकीसी लेइ
दोनों ओर खुली ढील नहो सो माथेपर चढ़ाइ भीतरसे चारोंओर
उर्दकी पीठीसे निस्संधिकरै फिर नीचे चढ़ेभये चमड़ेको अंगुलभर
पीठीसेचारोंओरनिस्संधि करि सुखोष्णतेलभरै १०० ॥ शिरोवस्ति
प्रमाण॥ जबतकनाक मुख नेत्रसे जलनबहै व मस्तक व्यथानमिटैव
सौमात्रातकवस्तीस्थिररहैमात्राप्रमाणअनुवासनवस्तीमें कहिआये
हैं॥शिरोवस्तीकाल॥भोजन के प्रथमपांच व सात दिनशिरोवस्तीकरै॥
शिरोवस्ती पश्चात् कृतापली प्रमाण पूर्वक करिके उतारि सुखोष्ण
जलसे माथाधोय नहाइ॥ शिरोवस्तीगुण॥ बात जन्य शिर कंपादि
रोग दुर्जय दूरहोता है इससे वैद्यसदा इस रोगमें शिरोवस्ती क-
रावै॥ कर्णोपचार॥ मनुष्य कोकुछ स्वेदकरि तुरंग गोमूत्र व तैल व
स्वरस सुखोष्ण कानमें पूरै॥ कर्णे द्रव्य धारण प्रमाण॥ कानकंठ शिर
रोगोंके निवार्णार्थ सौमात्रा व पांचसौ व हजार मात्रातक राखै॥
मात्राप्रमाण॥ घुटनो परवकी बजाते हाथघूमै चौफेर सौमात्राप्रमाण
कर्णोपचार समय कानमें औषध भोजन के प्रथम रसादिक पूरैऔ
तैलादि संध्यासमय १०८॥ कर्ण व्यथापर औषध॥ अर्क वृक्षमें जो
पत्ते पीले परजातेहैं तिन्हें खोजि उनपर घृतलगावै तबथोरीआगमें
सेकलेइ जब गरमहोइँ तब निचोर कानमें छोड़ै तौसबकर्णशूलदूर
होइ॥ पुनः॥ छाग मूत्रमें सैंधवडारि कुछ तात करि कानमें पूरैतो
कानकेभीतरकीपीठिका दूरहोय॥तृतीयऔ०॥ अद्रककारस,मुरेठी,श-
हत,सैंधव, आंवरा, तिलपर्णी दूबमें होती औगुखुरु कैसीसबसूरति
पत्तीससेतफली तिल सदृशहोती है वह तिलपर्णी है सरसोंकातेल
सुहागा,नींबूकारस, ये सबपीसि कानमें डारै तौ कानकी पीड़ादूर

होय ॥ चौथीऔ० ॥ कैथफलकारस, बिजौरारस, अमल बेतकेरस विनाचूकरस, अद्रकरस, ये चारौं सुखोष्ण कानमें डारनेसे कर्णशूल नाशहोय ॥पंचमऔ०॥ मदारका कोमल ठिंगुसा, नींबूरसमें पीसि तिलका तैल, सेंधालोनमिलाइ गोला बांधि सेहुड़के मोटे खण्डमें पोलाकरि गोलाधरै अच्छीभांति दाबि उसीके पत्र लपेटि कपरोटि माटी चढ़ाइ मन्दआंचमेंपकाइ पुटपाक सदृश पकजाय तबनिकारि माटी कपड़ाउतारि कूटिकैरस निचोर लेइ फिर उसरसको सुखोष्णकरि कानमें डारै तो कानकी दारुण शूल शांति होय१३ ॥कर्ण शूल परदीपिकतैल ॥ महापंचमूल की जड़ आठ अंगुल रुई व वस्त्र, लपेट दीपमेंबारि चिमटी से पकरि कटोरी में टपकावै वही गुनगुन तिल कान में डारे से कानकी तपक दूरहोइ ॥ महत्त पंचमूल ॥ वेला, रण्ड, टेटी, शिवनी, पाटल इनकी जड़को कहते हैं १४ ॥ पुनः ॥ टेटुतेल,टेटुमूल, पानीमें पीसि कल्क करि औ दुगुने तिल तैलमेंले समजल दे पचाइ जल जलाइ उतारि सहता सहता कान में डारने से त्रिदोष जन्य कर्ण शूल मिटै ॥ कर्णनाद परतैल ॥ मुरेठी,माष, असगन्ध, धनियां इन चारोंकाक्वाथ औकल्क शूकरकी चरबी में पचाइ चरबी रहिजाइ तबकान में डारै तो कर्ण नादको निकारै ॥ कर्णनादपरश्रेष्ठतैल ॥ सज्जी सूखी मूरी, हींग पीपरि सौंफ ये पांचो सम भाग चौगुणे तिल तैलमें समान सूक्त में पचावै जब केवल तैलपावै तो कानमें चुवावै तो कर्णनाद शूल बधिरत्व कान वहब इन रोगन को नशावै ॥ बधिरत्व पर अपामार्ग क्षार तैल ॥ लटजीरेकी राख चौगुणेपानीमें घोलि चनगोल निशि भरधरै प्रात निर्मल जलले चौथाई तैलदे पचाइपानी जराइ कानमें डारै तो बधिरत्व मिटै सुननेलगै॥ कर्णव्रणपरसम्बुकतैल ॥ घोंघे का मांस चौगुणे तैलमें लालकरि पचाइले वह तैल कानमें डारैतो व्रणदूर करै ॥ कर्णस्राव पर औषधि ॥ पंचकषाय का चूरण कैथरस औ मधु मिलाइ कानमें डारैतो कान बहना बंदहोय १२० पंचकषाय वृक्ष तेंदू, हड़, लोध, मजीठ, आँवरा, हड़, आंवरा फल वाकीकी छाल ॥ कर्णस्रावपरपुनः ॥ सज्जी बिजौरा रसमें घोटि

कानमें डारे कान बहना बंदहोय ॥ पुनः ॥ आंब, जामुन, महुवा, वर-
गद चारोंकीकोपलकी लुगदी, चौगुणे तैलमें जराइ तैल कानमें
डारनेसे पीब बहना बन्दहोइ ॥ कर्णकीटपरतैल ॥ हरताल पीसि
गोमूत्र व कटुतैल में मिलाइ कानमें देइ तौ कर्णजन्तुमिटैं ॥ पुनः ॥
सहिंजन मूलका रस, सूर्यमुखीकारस, सोंठि, मिरच, पीपरि पीसि
बनबिमाच की जड़कारस, ये सब मिलाइ फेंटि कानमें छोड़ै तौ
कर्ण कीटमिटैं १२५ ॥ अथरुधिरमोक्षप्रयत्न ॥ मनुष्यके शरीरमेंरक्त
जन्य विकार से कुष्ठादि रोगजानि रुधिरनिकरावने का प्रमाणकह-
तेहैं प्रस्थभर व अर्द्धप्रस्थ व चौथाई प्रस्थकहैं कुडवभर १ ॥ रुधिर
मोक्षणकाल ॥ देहसे रुधिर निकासनेसे त्वचापर के रोग फोड़ा
फुंसी शोथादिक रोग दूरहोइँ । इसकारण शरदकालमें मनुष्य को
रुधिर निकसावना उचितहै २ ॥ रुधिरगुण ॥ रुधिर मधुरहै लाल
औ कुछगरमस्पर्श गरुआ चिकनादिसा पंचगन्धी पित्तसमान उष्ण
यहलोहूका रूपगुणहै औ रक्तपंचत्वमयहै बिसायधी गंधपृथ्वीगुण
गीलापन जलगुण उष्णपर्स अग्नि गुण चलना वायुगुण लीनहो-
ना औ श्यामता लालता आकाश गुण ॥ रुधिर दुष्टहोनेकेलक्षण ॥
रुधिर दुष्टमय देहमें पीडारक्त मण्डल खाज शोथदेहणकसादर्द ।
रक्तबढ़नेका लक्षण ॥ रुधिरबढ़ै तौ देह और नेत्रलालरहैं औरनसैं
रक्तपूरितहो फूलजाती हैं देह गरूरहती है नींदविशेष मददाह ये
उपद्रव होतेहैं ॥ क्षीणरक्त लक्षण ॥ जिसके रुधिर शरीर प्रमाणसे
घट जाताहै तिसकी रुचि खट्टे औमिष्टेपरअधिकरहतीहैऔरमूर्च्छा
तुचारूखी शिथिल शरीर बायु ऊर्द्धगामीऐसेजानो ॥ वायुकरि दुष्टर
क्तलक्षण ॥ बायुकुपित रुधिर लालरंग फेनसहित रूखाकर्कसहलु-
क शीघ्रगामी पतला देहमें सुई समान कोचै ॥ पित्तकरि दुष्टरक्त
लक्षण ॥ पित्तकुपित रुधिर पीला हरित नीला व कृष्ण पके आंवकी
गंधितत्ता अथिरचींटी माखी न खाइ ॥ कफकरिदुष्ट रक्तलक्षण ॥ कफ
कुपित रक्तका पर्स ठंढा चिकना गेरूकारंग मांस फुटका मिश्रित
गाढ़ा अथिर होताहै ॥ दो व तीन दोष कुपित रुधिर लक्षण ॥ द्वैदो
षकरि दूषित लोहूमें दो दोष के लक्षण पाये जातेहैं त्रिदोष दूषि

तमें दुर्गन्धहोती है और सबलक्षण त्रिदोषके पायेजाते हैं औ कांजी सदृश रूपहोता है ॥ अतिदुष्टरक्तलक्षण ॥ कालेरंग रक्तऊपर चढ़िकै नाकको रोहगिताहे आंबकीसी बासहोती है कांजी सदृश सबधातु-निको बहुत दुष्टकरता है ॥ शुद्धरक्त लक्षण ॥ शुद्धरक्त बीरबहूटी के रंग औ पतला होताहै पर्शमें उष्ण शीघ्रचारी ॥ रक्तमोक्षणयोग्य ॥ शोथमें दाहमें अंगपाकमें रक्तवर्ण अंगमें नाकसे बहनेमें बातरक्त कुष्ठ कष्टसाध्य पीड़ा बात संयुक्तमें हाथरोगमें पीलपांउ वा बिषक-रिगिरे रक्तमेंग्रंथि अर्बुद गण्डमाला क्षुद्ररोग अपचि रक्ताधिमंथ बि-दारी कुचरोग देहजकड़ रक्ताभिष्यंदतन्द्रा दुर्गन्ध यकृत प्लीह बिस-र्पविद्रधि पिठिका गात्र ओंठ नाक मुख कान पकनेमें माथे पीड़ा उपदंश रक्तपित्त इनरोगनमें रुधिर निकारना उचितहै ॥ रक्तमोक्ष-णप्रकार॥ सींगी जोंक तोंबी फस्त इनचारि करिकै रक्तनिकरावै १५ ॥ शिरा छेदन अयोग्य ॥ दुर्बल बिषयी नपुंसक भीत गर्भिणी गोद बालकवाली पांडुवीबमनादि पंचकर्म कृती स्नेहादि कर्मकृती अर्श रोगी सर्बांग शोथी उदर श्वासकास उबाकी अतीसार अतिस्वेदी सोलहके भीतर सत्रहके ऊपर अवस्थावालेको अकस्मात् नाकसे रक्त गिरेको ऐसे मनुष्य अयोग्यहैं कदाचित् फोड़ा फुनसी हो तो जोंकलगावें ऐसे रोगियोंका बिषादि संयोगसे रक्त अतिदुष्टहो तो शिरा मोक्षण करैं ॥ दोषादिकमें रक्त निकारन बिधान ॥ बायु दूषित रक्त सींगीसे लेइ पित्त दूषित जोंकसे लेइ कफदूषित तोंबीसे लेइ द्वै व तीन दोषदूषित दुष्टरुधिर शिरछेदन करिलेइ॥ सिंगी आदिसे रुधिरखिंचनेका प्रमाण॥ सिंगी जिस ठौरलगै तिस चारों ओर दश अंगुलताईका रक्त खैंचती है जोंक हाथभर ताईं तोंबी बारह अं-गुल ताईं सूक्ष्मशिर अंगुलभरका औ मोटीशिरा जो सब नसोंको रक्तदेइ वह सब शरीरके रुधिर को शुद्धकरती है १९ ॥ शिरारक्त देनेका यत्न॥ जो नसें छेदकै रुधिर भलीभांति न द्रवै तौ कूट,चित्रा सैंधव समपीसि उस छेदपर रगरनेसे अच्छेप्रकार रक्तदेइगी २०॥ रक्तमोक्षणकाल ॥ न जाड़ाहो न गरमी हो न स्वेद कियेको न अति उष्ण शरीरको जो रक्त निकारे तौ प्रथम यवा गूदे तप्तकरि, लोहू

निकारै २१ अतिरुधिर स्राव जिसे स्वेदकिये व ऊष्मासे स्थूलनस से रक्त अधिकआवै बन्दनहो तिसकेहित यत्न आगेवाले श्लोकमें कहते हैं ॥ रुधिर न थमनेपर ॥ जो शिरामोक्षसे रक्त न बन्दहो तौ लोध, राल, रसोत, तीनोंकाचूर्ण व यव, गोहूँका चूर्ण वा धव जवासा गेरूकाचूर्ण वसर्पकेचुलि व रेशमी लत्ताका भस्म इनमें कोई वस्तुको मुखपर बलकरि दाबदे उसपर चन्दनादि शीतोपचार करै जो इस से न बन्दहो तौ उसके कुछ ऊपर बढ़िके फस्तदे व अग्निसमखार उसके मुँहपर लगावे व अग्निसे दागदे तौ बन्दहोगा इससे क्यों बन्दहो सो कहतेहैं लोधादिसे याव मुख अमलाताहै शीतल लेप से रक्त थँभताहै क्षारादिसे क्षत पचता है जलाने से नसका मुख सिकुरताहै ॥ दग्धकृते रोगशांति ॥ जिसका दहिना अण्डकोश फूले उसके बामे हाथके अँगूठे की जड़ दागै २४ जो वाम अण्डकोश फूले तौ दाहिनेहाथके अँगूठेकी मूलदागै जो गूठ आरम्भमेंकरे तो अवश्य अच्छाहोय और जिसे शीतरसहो उसके गोड़ेके तलके अ-त्यन्तसेंके तौ रसबाहानि औ कफबाहनीके मुखसिकजातीहैं अग्नि दीप्तहोतीहै ॥ दुष्टरक्त अशेष न होनेपर दुष्ट रुधिर काढ़ने में कुछ बाकी रहिजाय तो रोगभी कोपको न करेगा औ अशेषहोने व ज्या-दह निकसनेसे उपद्रव उत्पत्तिहोते हैं अन्ध्यता आक्षेपक वायु तृषा तिमिर माथेमें पीर पक्षाघात वायु श्वास कास हुचकी जरन पाण्डु ये रोगहोतेहैं औ सब रुधिर निकसजानेसे मरनेका भी आश्चर्य्य नहीं ॥ और रक्तसे शरीरकी उत्पत्तिहै और देहको आधारहै रक्तरहेन से ज्ववत्व है इसीकारण बुद्धिमान् वैद्य रक्षा रुधिरकी करते हैं ॥ रुधिरमोक्षण पर दोषकोप ॥ रुधिर निकरे पर घावपर पित्तकोप दी-से तौ शीतल चन्दनादि लेपकरै वायु कोप दीसे तौ व घावपर सूजनहोइ पीड़ाकरै तौ सुखोष्ण घी लगावै ॥ रुधिरमोक्षणपरपथ्य ॥ जो रक्त निकासने पर निर्बल भयाहो तो हरिण खरगोस भेंड़ कृष्ण मृग छाग इनका मांस खिलावै व साठीके चावर गौ दूधमें खीर करि खवावै व गऊका दूध भात खिलावै ये पथ्य हितकारक हैं २८ ॥ सम्यगरक्तमोक्षण लक्षण ॥ पीड़ा बिगत शरीर हलका उभरा

रोगदबै प्रसन्नमन ये सब लक्षणहों तो रक्तमोक्षण अच्छा भया॥ रक्तमोक्षणपर निषेध॥ परिश्रम मैथुन क्रोध ठण्ढे पानीमें स्नान बाहरजाना दोबार भोजन दिनमें निद्रा यवाखारादि खार खटाई कटुकत्यागै शोक बकना अजीर्ण और जिसमें जोरपरता दीखे सो न करै ३० ॥ अथनेत्रोपचार प्रकार॥ नेत्र रोगपर सातप्रकार औषध कहतेहैं सेंक आश्चोतन पिण्डी बिडाल तर्पण पुटपाक अञ्जनइति १ सेंक विधान दूध घृत रसआदिक रोगीकी आंखें मुँदवाइ चार अंगुल ऊपरसे महीनधार दे औषध गिरावे इसे सेंक कहते हैं॥ सेंक भेद॥ वात दूषित नेत्ररोगमें स्नेहनसेंकदेइ रक्तपित्तपर रोपण सेंक कफपर लेपन सेंक दूध व घृतादि स्नेहनद्रव्यहै लोध,मुलेठी,त्रिफलादि रोपण द्रव्य है इन्हें दूध में पीसिलै सोंठि मिर्च पीपरि लेखन द्रव्यहै आगे इनकीमात्रा कहतेहैं ३ स्नेहनसेंककी मात्राछःसै रोपण सेंककी चारसै लेखन तीनिसै मात्रालाई राखै ४॥ वाताभिष्यंदपरसेंक॥ अरण्डकेपत्र छाल मूल क्वाथ बकरीका दूध सुखोष्ण करि सेंके तो वातअभिष्यंद नेत्रसे दूरहोइ॥ पुनः॥ छगरीका दूध सैंधव डारि सुखोष्णकरि सेंके व हल्दी देवदारु सैंधवडारि छगरी पयमें सेंके तो अभिष्यंदवात विपर्य शुष्काक्षि पाकरोग दूरहोइ॥ पित्तरक्तपर और अभिघातपर सेंक॥ लोध मुलेठी दोनों समान घृतमें मिलाइ तप्तकरि सेंककरै तो पित्तरक्त बिकार अभिघातजनित दोष दूरहोइ॥ रक्ताभिष्यन्दपरसेंक॥ त्रिफला, लोध, मुलेठी, शक्कर, मोथा ये सब समानपीसि ठण्ढेपानीमें सेंककिये रक्तअभिष्यन्द दूरहोइ६॥ रक्तअभिष्यन्दपर पुनः॥ लाख, मुलेठी, मजीठ, लोध, कृष्ण सामा श्वेतकमल ये सब पीसि पानीमें सेंककरै तो नेत्रनसे रक्ताभिष्यंद दूरहोइ॥ नेत्रशूलपर॥ सफ़ेदलोध घृतमें भूनि चूर्णकरि पोटरी में बांधि उष्णजलमें बोरि आंखिकी पलकनपर फेरे नेत्रशूल दूरहोइ॥ आश्चोतनविधान॥ आश्चोतन कहे बिन्दु चुवाउना आंखिखोलि दूध क्वाथ स्वरसादि द्रव पदार्थ दो अंगुली से बोरि आंखिमें चुआदेय इसको आश्चोतन कहते हैं सो निशा समय कभी न करै १२॥ लेखनादिश्चोतनमें बिन्दुडारनेकाप्रमाण॥ लेखन कर्म में आठ

बिन्दु नेत्रमें देइ स्नेहन में दशरोपण में बारह शीत काल में सुखोष्ण उष्ण काल में शीतल यह निश्चय है ॥ बातादिमें श्चोतनयोग्य ॥ बातरोग में तिक्त औ स्निग्ध श्चोतन करै पित्त रोगमें मधुर शीतल करै कफ रोग में कटु उष्ण रुक्ष करै ऐसे आश्चोतन हितकारक है ॥ आश्चोतन मात्राप्रमाण ॥ मनुष्य आंखि खोलि बन्द करै व चुटकी बजावै व गुरु अक्षर उच्चारै इतने काल को वाङ्मात्रा कहते हैं सो सर्बत्र आश्चोतनमें हित प्रदहै १५॥ नेत्रे वाता भिष्यन्द पर आश्चोतन ॥ बिल्वादि पंचमूल भटकटैया रेंड़ी साहिंजन इनकी जड़का क्वाथले नेत्रनिमें बूंद चुवावनेसे अभिष्यंद दूरहोइ। बात औ रक्तपित्त पर नीमकी पत्ती पानी में पीसिलोध की छालपरलेप करि आगमें सेंकपीसिलेइ उसके रसकी बूंद नेत्रमें चुवावे तौ बात से रक्तपित्तसे उत्पन्न अभिष्यंद दूरहोय १७॥ सर्बाभिष्यंद पर आश्चोतन ॥ त्रिफला क्वाथ सुखोष्मनेत्रमें चुवावे तौ सब अभिष्यंददूरहोइ १८ रक्तपित्ताभिष्यंदपर चोत्तस्त्री का दूध नेत्रमें चुवावै तौ बातरक्त पित्तजन्य नेत्रपीर दूरहोय। दूध घृत मिलाइ व अकेला घृतनेत्रमें चुवावे तौ बातरक्त जनित नेत्रपीर दूरहोइ १९ ॥ पिंडी बिधान ॥ औषध बांटि पिंडीकरि नेत्रनपरधरि पट्टासे बांधिदेइ इसे पिंडी औ कवलिका कहते हैं। सो अभिष्यंद पर औक्षतपरबांधते हैं २० नेत्राभिष्यंद पर शिरोरेचन जिसेकफ कृत अभिष्यंद औ अधिमन्थ हो सो मस्तकमें तैललगाइ पसीना निकराइ नासलेइ यह मस्तक शुद्धकरनेको नीकाहै ॥ सर्बाधि मन्थपर ॥ सब अधिमंथ में शिरकी फस्तले असमन्थमें भौंहदग्धकरै तौ आरामहोइ २२ अभिष्यंदादिपर सर्बाभिष्यंदमें कहीद्रब्यका कल्कनेत्रपर बांधे बाताभिष्यंदमें चिकनी औ उष्णद्रब्यकी पिंडीबांधै। बात औ पित्त अभिष्यंदपर रंडमूल व छाल व पत्रपीसि पिंडीकरि नेत्रपर बांधनेसे बाताभिष्यंद दूरहोइ आंवरेकीपिंडी बांधनेसे पित्ताभिष्यंद दूरहोइ॥ पुनः ॥ पित्ताभिष्यंदपर बकाइनके फलकीपिंडी बांधेसे पित्ताभिष्यंद दूरहोइ। कफाभिष्यंद पर साहिंजन के पत्रकी पिण्डी बांधे कफाभिष्यंद दूरहोइ। कफ पित्ताभिष्यंद पर निम्ब पत्र वा त्रिफलेकी

पिण्डीबांधे से कफ पित्ताभिष्यंद दूरहोइ २७ रक्ताभिष्यंदपर लोध कांजीमें बांटि घृतमें भूँजिपिण्डीकरि बांधेसेरक्ताभिष्यन्ददूरहोइ २८ नेत्रशोथ औ खाजपर सोंठि नीमपत्र थोरासासैंधवमिलाइ गुनगुनी पिण्डी बांधे नेत्रसूजन खजुरी दूरहोइ ॥ बिडाल बिधान ॥ आंखि मूँदि तले ऊपरकी पलकपर लेपकरै बरुनी बराइदेइ तिसे बिडाल कहैं इसकी मात्रा मुखलेपसमान जाने ॥ सर्वाक्षिरोगपर ॥ बिडाल मुरेठी गुरु सैंधव दारुहरदी खपरिया ये पांचों समान पानीमेंपीसिलेपकरै तौ सबनेत्र अभिष्यंद जाइ ॥ पुनः ॥ रसौत जलमेंपीसि लेपकरै वा हड़ सोंठि रक्तकमल पत्र वा बच हरदी सोंठि व घीक्वार चिता व अनारपत्र वा बच हरदी सोंठि व सोंठि गुरु ये भिन्नभिन्न पानी में पीसि लेपकिये सबनेत्ररोग दूरहोइँ ॥ पुनः ॥ सैंधव लोध भूंजि मोम घीमें रगड़ अंजनकरि लेप भी करै तो वेगही नेत्ररोग अच्छे होयँ ॥ पुनः ॥ नींबूरस लोहपात्र में रगड़ गाढ़ाभये लेपकिये नेत्रबाधा हतहोइ ॥ अर्मलेपः ॥ भँगरेकेरस में मरिचकोरगड़ लेपकरै तो सब अर्मरोग नाशकरै यह राजप्रयोग है ॥ प्रतिसारण अंजन ॥ नामिका पिटिकी पर यह आंखिनकी कोरपर होती है इस पिटिकी पर बफारादे फोरि अँगुरीसे दाबै तिसपर मैनसिल इलायची तगर सैंधव पीसिशहतमें रगड़ लगावै तो पिटिकीको दूरकरै ३६ नेत्रसंतुष्ट करनेको तर्पणकहे ॥ तर्पणयोग ॥ जो नेत्र रूखे सूखे कठोरता गुरुता युक्तहों झरित बरुनी शिरउत्पाति कृच्छ्रोन्मीलन कहे जल्दी पलकैं लगैं तिमिर अंजन फुल्ली अभिष्यन्द अधिमंथ शुक्राक्षिपाक सूजन वातसम्बन्धी और व्यथा ये रोग तृप्तयोग हैं ३७ ॥ तर्पण वर्जित ॥ दुर्दिनमें अतिउष्ण कालमें अति शीत कालमें चिन्ता परिश्रमयुक्तको औ नेत्रउपद्रव शांति न होय ये तर्पण लायकनहीं॥तर्पण विधान ॥ जिसस्थानमें वायु गर्मी धूरि न जाइ इनके बचाउका ठौर रोगी उतानापौढे तब उसके नेत्रके चारों ओर जो हड्डी हैं तिसपर उरदकी पीठि ले मेड़बांधै जैसे कटोरी दिवाली होती है तब आंखि मुँदवाय उसमें टिघलाघी व औषधनका मंडकरि व सुखोष्णजल व सौबीरकाधोयाघृत व दूधका फेन व नवनीत इनमेंसे कोई भरै कुछ

बेरमें धीरे २ पलकैं मिलमिलावै जिसमें सूक्ष्म सी औषध भीतर भी जाय॥ तर्पण मात्रा॥ जो पलकव पोटेके रोगपर तर्पणहो तोसौ वाङ्मात्राताई औषध भरीराखै जो कफादिजन्य नेत्रमें कोई व्याधि होय तो पांचसै मात्रापर्यंत औषध थिररहै सफेदीके रोगमें छःसैताई काले डेलेके रोगमें सातसै ताई रहै पुतरी रोगमें आठसै ताई अ-धिमंथ व बातरोगमें हजारमात्रा ताई औषध भरीरहै॥ तर्पणेक-फाधिकउपाय॥ जो स्निग्ध तर्पण से कफ उत्पन्न हो तो यव पीसि धूमपान करावै कफ शोधन करै॥ तर्पणेदिनप्रमाण। तर्पण एक दिन व तीन दिन व पांच दिन करै॥ सम्यक् तर्पण लक्षण॥ तर्पण अच्छा हो तो सुख से सोवै जागै नेत्र निर्मल हों कान्तिबढ़ै दृष्टि शुद्ध हो रोग नाश पलकैं हलकी ये लक्षण अच्छे तर्पण के हैं॥ अतितर्पणलक्षण॥ अति तर्पण से नेत्र पानी बहावैं भारी रहैं चिपचिपाई॥ हीन तर्पण लक्षण॥ नेत्र निस्तेज लाल माड़ायुक्त या रोग शांति ४५॥ नेत्ररुक्षस्निग्धयत्न॥ जो नेत्र चिकनेहों तो रूक्ष उपायकरै रूखेहों तो स्निग्ध उपायकरै ४६। पुटपाककी रीतिकहते हैं। हरिणादि मांस २ पल महीनकरि एकपल घृतादि स्निग्ध मि-लाइ एक पल सूखी औषध दूध व द्रव्यपदार्थ कुड़वभर ये सबमि-लाइ गोलीबांध यथा कर्पपत्रसे वेष्ठितकरि कपरौटी माटी जराइ पुटपाक करलेइ तब गोली निकास रस निचोरै नेत्रपर मेषलाबांधि रसभरै॥ नेत्रपुटपाकरसधारणबिधान॥ पुटपाकरस व स्नेहलेखन व रोपण भेदकरि ये तीनप्रकारहैं रोगीकोउताना खुलाइ नेत्रखोलिकै भीतरडारै ४८॥ स्नेहादिभेदपुटपाकक्रिया॥ रूखेनेत्रपरचिकनाचिकने पर रूखा पुटपाककरनासबल दृष्टिपर रोगण पुटपाक योग्यहै जो नेत्र में दुष्टरोग व रक्त पित्त व्रण व बायु उपद्रव हो तो आनेवाले श्लोकमें कहे द्रव्यका वेग पुटपाक करै स्नेहन पुटपाक घृतमें हरि-णादि मांस बसा मज्जा मेदा और स्वादौषध काकोल्यादि गणका चूर्ण सब एक करि पीसि गोलीबांधि पुटपाककरि रसले नेत्रमें देय दोसै मात्रातक राखै इसे पुटपाककहै ५०॥ लेखनपुटपाकयथोचित॥ करेजी, मांस, लोह चून, तांबा, शंख, मूंगा, सैंधव, समुद्रफेन, क-

सीस, सुरमा बकरीके दहीका पानीपूर्वोक्तरीतिपुटपाकरसनेत्रदे सौ मात्राताईं राखै यह लेखनपुटपाकहै ॥ रोपणपु० ॥ स्त्रीका दूध मृग मांस, मधु, घृत, कुटकी ये सब मिलाइ पुटपाककरि रसले आंखिमें देय यहरोपण पुटपाकहै तीनिसै मात्रातक राखै जो पुटपाक न्यूनाधिक होय तो नेत्र भारी रहैं औ निस्तेजका दोष उत्पन्न होय तब कहेहुये सदृश तर्पण क्रिया करै तो पूर्ववत् होय ५२ ॥ संपकदोष मेंअंजन ॥ जिसकी आंखिमें दोष भलीभांति पकचुका हो तो उसके नेत्रमें अंजन लगाना फिर पांचवेंदिन लगावे साधारण में हेमन्त शिशिर ऋतुमें मध्याह्नमें लगावे ग्रीष्म शरदमें पहरदिनचढ़े और पहरदिन रहे लगावे वर्षामें बरसता न हो बदरी न हो ऊष्मा अधिक न हो तब लगावे बसन्तमें सबसमय अंजन लगाना हितहै ॥ अंजनभेद ॥ अंजन तीन प्रकारकाहै लेखन रोपण स्नेह सोतीक्ष्ण औ खट्टा दोरसलेखन अंजनजानना कषाय कटु स्नेहयुक्त दोरसरोपण जानो मधुररस स्नेहयुक्त प्रसाद न कहे स्नेह न जानो ॥ अंजनप्रकट गोली ॥ अंजनरस अंजनचूर्ण अंजनगोलीसे रसांजनश्रेष्ठरसतेचूर्णांजन श्रेष्ठ ये एकसे एक उत्तमहैं सो सलाई व अँगुलीसे लगावै५५॥ अंजनअयोग्य ॥ थकित रोनेवाला भयभीत मद्य पिये नवीन ज्वरी अजीर्ण मूत्रादिरोधी इन्हें अंजन अयोग्य है ५६ तीक्ष्णांजनकीबर्ती मेवड़ी बीजसम मोटी बनावे मध्यममेंडेढ़ाबीजसम मृदुमेंदोबीजसम गीलेअंजनमें मात्रा तीन त्रिडंग सम उत्तमहै द्वैबिड़ंग सममध्यम है एकबिड़ंग समान छोटीमात्रा है ॥ शुष्कबैरेचनांजन प्रमाण ॥ बैरेचन अंजनसलाईसे नेत्रमें दोबारदेइ मृदु अंजनका चूरण तीनबारफेरै घृतादियुक्त चूर्ण चारिबारदेइ बैरेचनकहे तिसके लगानेसे नेत्रन से पानीगिरै ५९ ॥ शलाकाप्रमाण ॥ पत्थर वा धातुकी सलाई आठ अंगुलकी मृदंगाकार मुख दोनों तिल समान महीन अति चिकने लेखन शलाका प्रमाण लेखन सलाई तांबे व लोहेकी बनावे स्नेह अंजनकी सोने व चांदीकी बनावे रोपण मृदुतासे अँगुलीबोरिनेत्र में आंजे ६१ ॥ अंजन समय ॥ अंजनसन्ध्या व प्रभात काल करैं सहजसमय न करै न अतिशीत न उष्णकालमें न अतिवायु में न

बदरीमें अंजन करै औ नेत्रमें काले भागकेतरेकरै॥ चन्द्रोदयावर्त्ती॥ शंखपेंदी, बहेरेकी मींगी, हड़, मैनसिल, पीपरि, मिर्च, कूट, बच ये आठो समभागले बकरीके दूधमें घोटि यव भेरि मेवड़ीबीजसम बटी बनाइ पानीमें रगाड़ि नेत्रमें आंजे तो तिमिर मांसवृद्धि कांच त्रिट पटलरोग अर्बुद रतौंधी वर्षभर की फुल्ली ये सब दूरहोयँ॥ शुक्रादिकपरलेखनबरती॥ ढांक के फूलकारस, करंजकीमींगी कई बार घोटि २ यव स्वरूपबर्त्ती बनाइ पानीमें रगाड़ि नेत्रमें आंजै तो फुल्ली मांसबृद्धि इनको दूरकरतीहै जैसे शस्त्रसे शुद्धहोजाती है ६४॥ पुनः॥ समुद्रफेन, सैंधव, शंख, मुर्गेकेअंडे का छिलका सहिंजन बीज ये पांचो समान महीनकरि जलमें पीसि गोलीबांधि सुखाइ पानी में घिसि अंजनकरै तो शस्त्रादिक का कुछकाम नहींरहता॥ लेखनीदंतवर्त्ती॥ हाथी, घोड़ा, ऊँट, बराह, बैल, बकरा, खर इन सातोंके दांत शंख मोती समुद्रफेन इनसबका चूर्णकरि जलमें पीसि गोलीबांधि सुखाइ पानीमें घिसि अंजनकिये से फूली गिरिजाइ॥ तन्द्रानिवारण लेखनीबर्ती॥ नीलकमल, सहिंजन बीज, नागकेसर ये तीनों सम अति महीन पानीमें पीसि गोलीकरि सुखाइ पानी में घिसि आंजै तो तन्द्रा दूरहोइ॥ रोपणीकुसुमवर्त्ती॥ तिल, पुष्प, अरसी, पीपरि दानासाहि, चमेलीपुष्प ५० मिर्च १६ इन्हें महीनपीसि डेटमें बड़ी बीज तल्पबटी बनाइये इसे कुसुमिका वर्त्ती कहैं इसे आंजे तिमिर अर्जुन फूली मांसवृद्धि सब दूरहोयँ॥ रतौंधीपरवर्त्ती॥ रसोत, हल्दी व दारुहल्दी, चमेलीपत्र, नीमपत्र ये पांचो समान गोबरके पानीमें गोली बनाइ आंजनेसे रतौंधी नाशहोइ॥ नेत्रश्रावपरस्नेहवर्त्ती॥ आंवरामींगी १ भाग बहेड़ामींगी २ भाग हड़मींगी ३ भाग जलमें महीन पीसि दो मेवड़ीबीज सम गोली करि पानी में घसि आंजैसे पानी बहना औ बातरक्त जन्य पीड़ामिटै ७०॥ रसक्रिया॥ तूतिया, सोनामाखी, सैंधव, मिश्री, शंख, मैनसिल, गेरू, समुद्रफेन, मिरच ये नव समभाग सूक्ष्मपीसि शहत मिलाइ गोली बांधि अंजन करैसे पलक रोग तिमिर अर्मकाच बिन्दु फुल्ली येरोग दूरहोयँ ७१॥ शुक्रपरक्रिया॥ बटदूध, शुद्ध, कपूर, पीसि अंजन

किये दोंमासकी परी फूली दूरहो ७२॥ तन्द्रापर लेखनी रस क्रिया॥ शहत औ घोड़े की लारमें, मरिच घासि अञ्जन किये तन्द्रा दूर हो ७३॥ पुनरांजन॥ चमेली, पुष्प, मूंगा, मरिच, कुटकी, बच, सैंधव ये सब सम्मनले छाग मूत्रमें गोली बांधि लगावै तो तन्द्रानिवारण हो ७४॥ सन्निपात पर लेखन रसक्रिया॥ सिरस बिया, पीपरि मरिच, सैंधव, लहसुन, मैनशिल, बच सातौ समान ले गोमूत्र में पीसि आंजै तौ सन्निपात शांतिहो सावधान हो॥ नेत्रदाह पर रसक्रिया॥ दारुहल्दी, परवर, मुरेठी, नींब, पद्माष, कमल सातों सम भाग कूटके चौगुनेपानी में क्वाथकरि चौथाईरहे उतारिछानि फिर औटाय गाढ़ा हो सिराय मधु मिश्री मिलाइ अञ्जन करै तौ नेत्र जल बहना रक्त विकार नेत्र के रोग दूरहोइँ ७६॥ बहनि रोग पर रस क्रिया॥ रसौत, राल, चमेलीपुष्प, मैनशिल, समुद्रफेन, सैंधव गेरू, मिर्च आठो समभाग शहतदेके अंजनकरै तौ बलकरोग वर्म चिचियाहट औ खाज ये सबदूरहो॥ औ पलभरता न हरै फिर जमें ७७॥ तिमिर रोगपर रोपनी रस क्रिया॥ गुरुचका रस कर्षभर, मधु, सैंधव मासे मासे भर सब सूक्ष्म पीसि अंजन करै तौ पिल्लार्म तिमिर कांचबिन्दु खजुरी लिंगनाश से पद वा कृष्णडेले के सब रोग दूरहों ७८॥ अंजनान्ते अनोपान॥ जो अंजन करै खाजहो तौ गदापूर्ण दूधमें घासि लगावै तौ खजुरी मिटै शहतमें लावै तौ जल बहना दूरहो॥ घृत युक्तसे फूली दूरिहो तिलयुक्त लगाये से तिमिर दूरहो कांजी में लायेसे रतौंधी दूरहो जैसेसूर्योदय से अन्धकार दूरहो तैसे गदापूरैना से अनोपान सहाय से सब नेत्ररोग दूरिहो॥ नेत्र स्रावपर रोपनी रसक्रिया॥ बबूर पत्रका क्वाथ अति गाढ़ाभये शहत मिलाइ आंजै तौ निश्चय नेत्रसे पानीजानाबन्द होय ८०॥ पुनः नेत्र स्राव पर॥ निर्मली फल पानी में रगरि लगावै तौ नेत्रसे पानी बहना बन्दहोय॥ नेत्र शुद्धहोनेकेअर्थस्नेह की रसक्रिया निर्मली शहतमें घासे किंचित् कपूरमिलाइ आंजैतौ नेत्र अच्छेहोइँ॥ शिरोत्पात पर रस क्रिया॥ घृतऔ शहत मिलाइ अंजन करै तौ शिरोत्पात रोग दूरहोय ८३॥ धुन्धपर रसक्रिया॥

सांपकी चरबी, शंख, निर्मली ये सब खरलकरि आंजै तो अंधियारा दिखाई देना दूरहो॥ लेखन चूर्ण अंजन ॥ मुर्गेके अण्डेका छिलका सपेद कांच, शंख, चन्दन, सैंधव ये छयोसमान अंजनकरि आंजनेसे फूली मांसार्मादिनाशहोय ८५॥ रतौंधी पर चूर्ण ॥ छागके करेजे में पीपरि धरि पकाइ पीपरिले उसी मांसके रसमें रगरि आंजै रतौंधी न रहै॥ कंडू आदिपर मरिच अर्द्धशाण पीपरिसमुद्रफेन दो दो शाण सुरमा नवशाण ये सबद्रव्य चित्रानक्षत्रमेंले महीन सुरमा बनाइ नेत्रमें आंजनेसे आंख खजुवाना कांच विन्दु कफजन्य पीड़ा मल इनसे नेत्र शुद्धकरै ८७॥ सर्वनेत्र रोगपर मृदुचूर्णांजन ॥ खपरियाले अति महीन खरलकरि बासन में पानी भर घोलि घंघोइदे पानीनितरि और पात्रसेंभरि आंचमें जराइके खरचिले इसी खरल में डारि त्रिफला क्वाथकी तीन भावनादेइ तब उसका दशवां अंश कपूर मिलाइ फिर घोटैसो नेत्रमें आंजेसे सबरोग दूरहोय नेत्रसुख पावै॥ सर्वाक्षि रोग पर सौवीर अंजन ॥ सुर्मा सातबार लालकरि तपाइ त्रिफलाक्वाथमेंबुझाइ वैसेही सातबार स्त्रीकेदूधमेंबुझावै अति महीन पिसाइ नेत्रांजन करेसे सबनेत्ररोग दूरहोइ॥ यहनेत्रनिको निस्संदेह हित कारक है ८९ ॥ शीश शलाका विधान ॥ त्रिफलाक्वाथ भंगरारस सोंठि क्वाथ इनकी पुटादिया शीशा गलाइ गलाइ घी गोमूत्र शहत छगरी दूध सबनिमें सात २ बार बुझाइ शलाई बनाय नेत्रमें फेरनेसे सबरोग दूरहो॥ अतःपर और अंजनादिभी इस्से लगानाभलाहै ९० ॥ प्रत्यंजन विधि ॥ जब शीशशलाकाफेरने से दोष दूरहोके नेत्रसे आंशू गिरते हैं तिसके पीछे शीतलबड़ेपात्र भरि शिरबोरि उसपानी में आंखिखोलि खोलि देखै फिर नेत्र धोइ प्रत्यंजन लगावै सो आगे कहैंगे ९१॥ सदोषनेत्रपर निषेध ॥जिसनेत्र में दोष बाकीहै तोनेत्र धुवावै क्योंकि तीक्ष्णअंजनकरनेसे संतप्तहो तिसे प्रत्यंजन व प्रसादन करै सो कहते हैं ९२ ॥ प्रत्यंजन चूर्ण ॥ शुद्धशीशा गलाइ समभाग शुद्धपारादे तबदोभाग सुरमादे उतारि लेइ सब खरल करि दशवांअंश कपूरदे फिर घोटै इसेप्रत्यंजनकहैं इससे संपूर्ण नेत्ररोग नाशहोते हैं और यह आंखिकोअमृतहै ९३॥

सर्प बिष निवारण अंजन ॥ भीतर का अंकुर दूर किया जमालगोटा नींबूरस में २१ पुटदे घोटि गोली बनाइ सर्पडसेकीआंखिमेंआंजै तो बिषशांतिहो मनुष्यजिये ९४ जो मनुष्य नित्तप्रति तीनबेला शीतल जल से कुल्ले कियाकरै और मुख धोयाकरै औ नेत्रनिको सींचाकरै छींटे देकै व पात्र में जल भर नेत्र उन्मीलन कियाकरै उस मनुष्य को नेत्रबाधा कभी नहो ९६ ॥ अथ पंचकषाय क्वाथ ॥ पंच प्रकारका है जिसे काढ़ा कहैं स्वरस कहैं अंगरस १ कल्क २ क्वाथ ३ हेम ४ फांट ५ ये एक से एक गुण में न्यूनहैं यथा स्वरस से लघुकल्क १ उत्तमभूमि से तुरतकी उखारी औषध जलबिना कूटिकै वस्त्रमेंडारि निचोरि ले उस रसको स्वरस कहतेहैं २ सूखीद्रव्य कुड़वकहे १६ तोलेकूटिकैदुगुनेपानीमें दिन रात्रि भिजोइराखे उस रसको भी स्वरस कहते हैं ३ जो द्रव्य हरी न मिलै तो सूखीद्रव्य अठगुनेपानी में औटे जब चौथाईरहै तबलेइ ४ ओदीद्रव्य का रस गुरुहोने से कार्य में आधापल लेना और सूखी द्रव्य रात्रिकी भीजी का रस हलकाहै इससे पलभरलेना ५ स्वरस व काढ़ा व यन्त्र का निकालारस इनमें शहत, शक्कर, गुड़खार, जीरा, लोन घृत, तेल, चूर्ण ये सब ८ मासे युक्तकरना ६ चारपल द्रव्य चौंसठपल जलमेंपकाय क्वाथ आधारहै अरु घनरूपहो तिसेयवागू कहैहैं ७ चारगुणा जलमें पकाय द्रव्यको वहकढ़ी समान व लपसी समान हो वह बिलेपीहो है वह बिलेपी वीर्य को बधावे है तृप्तकरै है रमणीक है अरु विलेपी मीठीहो तो पित्तको हरैहै ८ व एकपल प्रमाण द्रव्य अल्प कूटकरि चौंसठपल जल में पकाय आधा बचै यह पानहोहै यह भोजनकी जगह दियाजावे है १० द्रव्यकल्कपलभर आठपल जलमें पकाया तिसे प्रमथ्या कहै हैं तिसका पान२ फलहै ११ द्रव कल्क पलभर सोंठि पिपली मासे ५ प्रस्थतोलजलमेंपके अरु द्रव्य सूपहो उसे यूषककहै हैं १२ पलभर द्रव्य १४ पलजलमें पकाया पतला अरु कम चिकनाहो उसे पेयाकहैहैं यह हलका है ग्राहिणीहै धातु पुष्टकरै है १३ यूष बलकरै है कंठमेंसुख दे है इसका हलका पाकहै कफको हरे है १४ गिलोयरस शहत युत

खानेसे सब प्रमेह नाशहो हैं औ आंवरे का रस हल्दी चूर्णशहत मिलाके खानेसे भी सब प्रमेह नाशहो १५ पुटपाकका रसलेते हैं इस से उसका यतन कहते हैं १६ कोई ओदीद्रव्यहो उसे पीसके गोला बांधै तिसपर बट रण्ड व जामुनका पत्ता लपेटै फिर कपरौटिकर दो अंगुलमोटीमाटी लेसै तब अग्निमेंधरै जब लालहो तब निकारि कै उसकारसनिचोरले उसे पुटपाकरस कहतेहैं तब ४ रुपैयाभररस शहत १ रुपयाभर युतपीवै अरु कल्क चूर्ण पतलीद्रव्य मिश्रि-तकरनीहोतो ८।१ पुटरसके योग्यदेना १९ चारतोले कुटैयाकीछाल ताजी चावलके धोवनसे पीसकर गोलाबांध जामुनके पत्तेलपेटै फिर सूतसे बांधि गेहूंके आटासोंलेपकरि माटीलगावै तब गौ के गोसा में फूंकिदे जब अंगाराहोजाय तब आगसे निकार निचोर ठंढाकरि शहतडार पीवै तो बहुतदिनका कठिन भी अतीसारजावै २३॥ चाव-लधोवनकी क्रिया॥ चाररुपैया भर शुद्ध चावल अठगुने पानी में धोय वही धोवन सर्वत्रदेना २४ अठलू जो कटील व सोहनपत्ती कापुटपाक अग्निको दीपन करताहै जब शहत व मोचरसमिलाइ दे तो अतीसार जावै २५ चाररुपैया भर द्रव्य चौंसठरुपैयाभर पानी माटीके पात्रमेंभर मन्दाग्नि में औंटै जब आठरुपया भरिरहै तब उतारिलेइ २६ कुछ गरमरहै तबपीवै क्राथके चारनामहैं सृत १क्राथ २ कषाय ३ निर्यूह ४।२७ आहारकारस पकेपर वृद्धवैद्यके उपदेश से दोपल काढ़ापीवै २८ क्राथमें मधुमिश्री डारनेका प्रमाण जो वायु प्रधानहो तो मिश्री थोरीदेना पित्त में अष्टमांश कफमें षोड़शांश शहत बायुमें षोड़शांश पित्तमें अष्टमांश कफमें चौथाअंशदेना २९ मन्थ भी फांटका भेदहै तिसकर यहींकहियेहैं चारपल शीतलजल में कुटाहुआ द्रव्यपलभरगेरै माटीके पात्रमें अच्छीतरह मथै तिसे २ पल प्रमाण पीवै ३१ कूटि द्रव्य पलभर एक कुड़व पानी माटी के पात्रमें अच्छीभांति तप्तकरि उतारिले उस कूटी हुई द्रव्यको गरम जलमेंडारि ढकदे जब ठंढाहो तब छानले इसे फांट कहते हैं ८ तोले फांटकी मात्राहै मिश्री शहत पुरानागुड़ जिस भांतिकाढ़ामें डारना कहाहै उसीभांति फांटमेंपड़ताहै ३२ कूटी हुई द्रव्य छःपलभर जल

में रात्रिको भिगोइराखै प्रात निचोरके काढ़िले इसे हिम कहते हैं शीतकषाय भी कहतेहैं इसकामात्रा कांटवत् २ पलकाहै यहसर्वत्र निश्चयजानो ३५ सूखीद्रव्य जलमेंपीसै ओदी निर्जल तिसेकल्क कहैहैं और प्रक्षेपकहते हैं मात्रादशमाशे १० कल्कमें मधु घृत तेल मात्रासे दूनादेना मिश्री गुड़ समान मात्राके अतिओदी पतलीचौ-गुनी ३७ द्रव्यकोक्काथसदृश औटावे फिर बिशेषआंचदेइ जबकाढ़ा हो तिसे अवलेह कहै हैं अरु लेहभी कहैंहैं इसकीमात्रा ४तोले है चूर्णसे मिश्री चौगुनीदेना गुड़दूना द्रवादि चौगुना यहसर्वत्ररीति है जब आंचदेनेपर तारबँधे और पानीमें पाककीबुन्द न बूड़े न घुले तब सिद्धजानै और अँगुरी से दबाने से कुछद्रवै तब सुगन्ध और रसादिडारै अनोपान इसका दुग्धव ईषरस व यूष व पञ्चमूल क्काथ व बांसा क्काथ ये यथायोग्यहैं ४१ ॥ अथ आसवकल्पना॥ उदकादिक द्रवबस्तुमें औषधदैके पात्रमेंभर मुखमूंदि मासभर रखनेसे औषध उत्तमहोयहै उसे आसव अरु अरिष्टकहते हैं आसव अरिष्टमें२ भेद हैं जहां अरिष्टमें द्रव्यकी तोल नहो तहां जलादि पदार्थ द्रोणभर दे गुड़ तुलाभर शहत अर्द्धतुला और द्रव्यकाचूर्ण गुड़कादशांश दे अरिष्ट सिद्धकरे। सिन्धुमद्यभेद कहतेहैं जो कच्चे ऊषरसादि मधुर पदात्थ में सिद्धकरै उसे शीतरस सिन्धुकहिये जो पकाइ के रसमें सिद्धकरै उसे पक्करस सिन्धुकहै हैं॥ सुराप्रसन्नादिभेद॥ धान चावल खमीरकरि अग्निबलयन्त्रसे उतारै उसे सुराकहिये सुराकेफेन को प्रसन्नाकहिये फेनरहित जो नीचेरहै उसे कादम्बरी व घनभीकहिये सुराके नीचे रहै उसे युगलकहिये युगलके घनभाग को मेदकसुरा कहिये मेदनपकानेसे जो सारनिकरै उसेसुराबीज व कण्वक्ककहिये ताड़ व खजूरकारस अग्नियन्त्र योगकरि व कच्चाले मद्य सिद्धकरै उसे बारुणी कहिये कन्द, मूल, फल, घृत, तेलादिस्नेह, लवण ये सब द्रव्य पदात्थमें अग्नि व यन्त्रयोगसे मद्यनिकरै उसे सूक्त क-हिये जो बिनष्टकहे चलितरसलोके खमीर सो खमीरउठी मद्य व तुरंत मधुद्रवमें द्रव्य चूर्णडारि सन्धितकरि मासभरकी उसे चुक्र कहिये व गुड़ पानी तेल कन्दमूल फल यहरीति पूर्वोक्तकरि मास

भरमें सिद्धकरै उसे गुड़सूक्तकहिये इसीप्रकार ऊषरसका और दाष का सूक्तहोताहै यव पानीसहित १ दिनसन्धितकरै उसे तुषाम्बुकहिये और यवगूरी पानीमेंरिभाय एकदिन सन्धित राखै उसे सौवीर कहिये कुलथी वा चावल पानीमेंसिभावै उसे मांडकहिये उसमांडमें सुंठ राई जीरा हींग लोनडारि तीनचारदिन सन्धितराखै उसेकांजी कहिये मूरी उबाले पानी में हींग सरसों जीरा सींधा अदरख डारि चारपांचदिनराखै उसेसंडाकीकहिये इसभांति आसवअरिष्टबनता है जोअपक्क औषध व जलसे सिद्धकियाजाय वहमद्य आसवहोय है काथसेबनै वहअरिष्टहोयहै इनदोनोंका मान पलभरहै ५३ अति सुखीद्रव्य कूटिकै कपड़ेमें छानिले उसे चूर्ण व क्षोद कहते हैं इसके खानेकी मात्रा कर्षभरहै चूर्ण में गुड़समान खांड़ दोगुनी हींगभुनी हुई देना घृत शहतादि बस्तुदूनी दे चाटै और पीनेकी द्रव्य चूर्णके साथ चौगुनीदेना ॥ चूर्णअवलेहगुटिका अथवा कल्कचूर्ण अवलेह गुटिका ॥ इनका अनोपान बातमें तीनपल पित्तमेंदोपल कफमें एकपल दीजिये अनोपान देनेका कारण यह है कि जैसे तेल पानी में गेरने से फैलजाता है तैसे अनोपानके बलसे औषध प्रवेशकरतीहै औषध में किसीकी पुटदेनाहो तो जितने में चूर्ण पुटकी माफिक हो तितना देना भावनादेना हो तो चूर्ण बराबरिदेवै ऐसी वैद्यजनोंकी रीतिहै ५८ अबगोलीकहे हैं बटिका, गुटिका, बटी, मोदक, पिण्डी, गुंडी ये गोलीकेनाम हैं गुड़ और खांड़दे आगीमें पकावै जैसे अवलेहहो तब गुग्गुल चूर्ण उसीपात्रमें डारि गोली बांधै बिना आगिके योगगुग्गुलसेभी गोलीबँधती है और गीलीवस्तु तथा शहतसे भी बँधतीहै मिश्री चौगुनी गुड़दूना चूर्ण लिखे प्रमाण देना गुग्गुल शहतबराबरदेना द्रववस्तु दूनीदेना सद्वैद्य यहीरीतिकरैं कर्षभर गोलीखानेका प्रमाणहै व देहबलदोष देखि खिलावै ६४॥ अथघृततेल साधना ॥ कल्कसे चौगुनाघृत व तेल और काथादि सबद्रव्यभी चौगुनीदेना तिसकीमात्रा पलभरहै जिसद्रव्यका काथदेनाहो तो चौगुने जलमें औटै चौथाइरहै उतारिछानिले उसमें घी तेल सिद्धकरै कोमलद्रव्यनमें चौगुनाजल कठिन द्रव्यनमें अठगुना जल अत्यन्त

कठिनमें सोलहगुना जल दे मध्यममें अठगुना॥ पुनर्विधि॥ रुपया भर से ४ रुपया भर ताईं में सोलहगुना पानीदे क्वाथकरै चौथाई रहै तब ग्रहणकरै पलसे कुड़वताईं अठगुना प्रस्थसे खारीतक चौगुनापानी देना और जो केवल कल्क पानी घी व तेलमें सिद्धकरै तो चतुर्थांश कल्क दे सेरभर तेल या ३ सेर कल्क और जो कल्क कढ़ीके संग घी तेलपकावै तो घृत तेलका षष्ठांशकल्कदेना तीनपाव में आधपाव और जब कल्करसकेसंग घृत तेलमेंपकावै तो तेलका अष्टमांश कल्कदेना सेर में आधपाव घृत तेलका प्रमाणयहीहै दूध दहीरसमट्ठा इनमें अष्टमांशकल्कदेइ और कल्क भलीप्रकारपकाने के कारण चौगुनाजलदेना और जहां कल्क घी तेल क्वाथपाथ पाँची होय तहां स्नेहादिक समान देइ पानी चौगुनादेइ जब सूखीद्रव्य घृत तेलमें पकानीहो तो जलमेंद्रव्यपीस गोला वा कल्ककरि चौगुने पानीमें पचावै जो केवल काढ़ेमें कहाहो तहां उसीक्वाथकी द्रव्यका कल्ककरि घृत व तेलयुक्त वहकाढ़ा चौगुना पानीदे पकाना तहां कल्करहितहो तो केवल द्रवबस्तु दूधपानी देके पकाना जबफूल के कल्क में स्नेह सिद्धकरे तब चौगुना पानीदेवै जब स्नेहसे स्नेह सिद्धकरे तब स्नेहका अष्टमांश दूसरास्नेहले पुष्पयुक्त पकायलेना जबवह स्नेहपाक अँगुरी मेल के मलसे पत्तीबनजाय उसे आगिपर डारै और जलन से शब्द चिरचिराहट न करै तब सिद्धभया जानो तेलफेन उठनेसे सिद्ध जानिये घृतफेन शान्तिसे सिद्धजानिये जब गन्धआवै और निर्म्मलहोजाय और रस उत्पत्तिकरै तबतेल व घृत सिद्धभया जानिये स्नेहपाक तीनप्रकार का है मृदु मध्य खर जो कल्क मोमतुल्यरहै तो मृदुजानिये जोकल्कनिरसहो कुछकोमलरहै तो मध्यजानिये जो कल्क निरसहो और कठोरहोजाइ तो खर जानिये जो इसप्रमाणसे अधिकजरै तोजानो स्नेहबिगड़ गया अकार्थ गया जो कच्चा रहै तो सेवन करने से मन्दाग्नि करै अरु भारी है नाश लेने को गरम हितहै मध्यम सर्व्व कार्य्य साधक है खर मर्दन के योग्य है जहां जैसा चाहिये तहां वैसा बनावै तेल घृत गुड़ एक दिनमें साधैनहीं दिनान्तरदेकरै तो अधिक गुणकरै ८१॥

ज्वर प्रकारण॥ ज्योतिष शास्त्रका अभिप्राय नीचराशिका सूर्य्य जिसकी जन्मपत्री में हो जब दशा आवै तब नेत्र नाशकरै अरु बर-शिरोरोगकरै अरु बन्धन करावै व ज्यादह पीड़ाहोवै व कुष्ठरोगहोवै अरु नीचराशि का चन्द्रमा भी अपनी दशा में पूर्व्वोक्त फल देवै २ और केतु की दशा के अन्तर में बुधकी दशाआवै तब बन्धुजनों का समागम हो अरु भूमि निमित्त मुक़द्दमाहो अरु देहमें पीड़ा व ज्वर व्याधिहोवै शनिके अन्तर में भी यही फल जानो तिसका दोषदूर करने वास्ते जप होमादिक करने योग्यहैं ४ सर्वज्वर कर्म्मविपाक देव द्रव्य हरने से नानाप्रकार के ज्वरहोयहैं ज्वर १ महाज्वर २ रौद्र ३ वैष्णव ४ ये होयहैं ज्वर आरामवास्ते रुद्रकेजपकरावै अरु महाज्वरशमनवास्ते महारुद्र के जपकरावै रौद्रज्वरमें भी महारुद्र के जप करवावै अरु वैष्णवज्वर में रुद्र व महारुद्रके जपकरवावै ज्वर कर्म्मविपाक जो पूर्वजन्म में क्रूर व खलहो वहदूसरेजन्ममें ज्वरपीड़ित नित्यरहै शीतज्वरी विपाक जोक्रूरकर्म्म व पाप कर्म्म व निन्दा इनकोसेवै तिसकेशीतज्वर निरन्तररहै इसकी शान्तिकेवास्ते जातवेदसे इसमन्त्र के दशहजार १०००० जप करवावै अरु ब्रह्म-भोज यथाशक्तिकरवावै व मदिरा व मांसादिककी बलि करवावै व १ हजार छिद्र के कलशसे देवता स्नानकरावै व १०० सौ ब्राह्मण भोजनदेवै व महादेव का अभिषेक करावै १० अथवा सहस्रधारा कलशसे महादेव का स्नानकरावै अरु जातवेदसे मन्त्रकाजाप अरु यथाशक्तिब्राह्मणभोजनकरावै ज्वर शान्तिवास्तेवेदपाठ सुनै वा श्रेष्ठ आचरणकरै वा ब्राह्मणकी तृप्तिकरै व परमेश्वरका स्मरणकरै शुभ-कर्म्मकरै वा दान द्रव्यकाकरै वा पीपलवृक्षकी परिक्रमाकरै वा श्रेष्ठ रत्नधारै वा दीन मनुष्य की रक्षाकरै ये कर्म्म आठविधि के ज्वरोंको नाशकरैहैं दृष्टान्त॥ जैसेचन्द्रमा अन्धेराको हरैहै तैसे-अथभगवान् के सहस्रनाम स्तोत्र का पाठ सबतरह के ज्वरोंको हरैहै गणेश व गरुड़ व महादेव व सूर्य व देवी व कुलदेवता इन्हों का पूजन ज्वरको नाशकरै ज्वर निदानादि आदिमें नमस्कार रूप मंगलाचरण करैहैं निदानकी आदि में जगत् को उत्पन्न स्थिति प्रलय करनेहारा जो

शिवहै तिसे नमस्कारकरैहैं वह शिव स्वर्ग अरु मोक्षकाद्वारहै अरु त्रिलोकीका आश्रयहै अनेक मुनियोंके बचनसहित अरु उत्तमवैद्यों के नियोगसे रोगनिश्चय उपद्रव व अरिष्ट व निदान वा चिह्नसहित कहतेहैं जिन्होंने तन्त्रशास्त्रविहीन व अल्पबुद्धि ऐसे वैद्यों को रोग का निदानकरना कठिनहै निदान १ हेतुपर्वरूप २ रूप ३ उपशय ४ सम्प्राप्ति ५ ऐसे पांचप्रकारके उपाय रोगों का निश्चय वास्ते हैं निमित्त १ हेतु २ आयतन ३ प्रत्यय ४ उत्थान ५ कारण६ ये निदान के पर्य्यायशब्दहैं २० सूक्ष्मलक्षण करिकै उत्पन्न भया रोग जाना जाय उसे पूर्वरूप कहते हैं दृष्टान्त ॥ जैसे धूमसे अग्नि तैसे रोग के चिह्नादि सब प्रकट शरीर में होजावैं उसे रूप कहतेहैं हेतु नाश करनेवाले व व्याधि नाश करनेवाले व हेतु व्याधि नाशकरनेवाले व हेतु की ज्यादा सुख करनेवाले व व्याधिको ज्यादा करनेवाले व हेतु व्याधिको ज्यादा करनेवाले औषध व अन्न व विहार इनों का उपयोग जो सुख देनेवाला वह उपशय व्याधि का होहै उपशय का पर्य्याय शब्द सात्म्य है हेतु नाश करनेवाले औषध यथा शीत कफ ज्वर में शुंठि आदि गरम और व्याधि नाश करनेवाले औषध यथा प्रमेह मेहलादि आदि हेतु व्याधि नाश करनेवाले औषध यथा वात सूजन में दशमूल आदि हेतु नाश करनेवाला अन्न यथा श्रम से उत्पन्न ज्वरमें रसौदन आदि व्याधि नाश करने वाला अन्न यथा अतीसार में मसूर आदि हेतु व्याधि नाश करने वाला अन्न यथा संग्रहणी में तक्र आदि हेतु नाश करनेवाला विहार यथा दिनमें शयनसे उपजा कफमें रात्रिका जागना आदिक व्याधि नाश करनेवाला विहार यथा उदावर्त्त में प्रवाहनादि हेतु व्याधि नाश करनेवाला विहार यथा स्निग्ध दिनमें शयनसे उपजा कफतंद्रामें रूक्षपदार्थआदिक अरुहेतु सुखकरनेवाले औषध यथा पित्त प्रधान पचता हुआ घाका सूजनमें गरम उपनाह स्वेद आदिक अरु व्याधिको सुख करनेवाला औषध यथा छर्दि में बमन कारक मैनफल आदि हेतु व्याधि सुख करनेवाला औषध यथा अग्निसे जलाहुआको अगर आदिलेप अरु हेतु सुख करनेवाला

अन्न यथा व्रण सूजन में विदाही अन्न व्याधि सुख करनेवाला अन्न यथा अतीसारमें विरेचन अर्थ दूधआदि हेतु व्याधिको सुख करनेवाला अन्न यथा मदपानसे उपजा मदात्ययमें मदिरा आदि हेतु सुख करनेवाला विहार यथा बातोन्मादमें त्रासन आदि व्याधि सुख करनेवाला विहार यथा छर्दि में बमन अर्थ प्रवाहण आदि हेतु व्याधि सुखकरनेवाला विहार यथा व्यायामसे उपजा मूढ़वात में जल तरणआदि यह अठारह उदाहरण उपशयके हैं इससे भिन्नको अनुपशय कहैहैं व्याध्यसात्म्य यह इसका पर्य्याय शब्द है ३० मनुष्यके शरीर में दोष को पत्तल ऊपर जोरकर व्याधि प्रकट होजावै अपने अपने जगहें यह संप्राप्तिहोहै इसका पर्य्याय शब्द आगतिहै अरु जातिहै संप्राप्तिका भेद पांचप्रकारकाहै संख्या १ विकल्प २ प्रधान्य ३ बल ४ काल ५ ऐसेहो हैं यही आठ प्रकार के ज्वर कहैंगे यह संख्याहै तीनदोष इकट्ठे हुये हीनवृद्धि अतिभेद से दोषका अंशकी कल्पना करनी यह विकल्प हो है स्वतंत्र व पर-तंत्र करिकै व्याधिको प्रधान समझलेना यह प्रधान्य होहै निदा-नादिक सम्पूर्ण पांचअवयवोंसे व्याधि व्याप्तहो वह बलवान् न्यून अवयवोंमें प्राप्त वह अबल दिनरात्रि ऋतुके भक्ष्यपदार्थसे कफपित्त बात आदि मध्यअन्तमें उपजै सहकालहाहै यह निदान प्रकार कहा वह विस्तारसेकहतेहैं संपूर्णरोगोंको निदानकोपको प्राप्तहुये मलहैं॥

अथबातादिमलकोपकाकारण॥ अनेकप्रकार अपथ्यसेवन दृष्टान्त॥

जैसे रोगके पूर्वरूप निदान कारणहै तैसे ज्वर संतापसे रक्त पित्त होहै अरु रक्त पित्तसे ज्वरहोहै इनदोनों से श्वासहोहै अरु तिल्ली के बढ़नेसे उदर रोग अरु इससे सूजन अरु अर्शसे उदर दुःखव गुल्म हो है अरु दिन में शयन से प्रतिश्याय याने खेहर हो है प्रतिश्यायसे खांसीहो खांसीसे क्षयी होयहै अरु क्षयसे शोषहोयहै प्रथम रोगहो पीछे दूसरारोग के कारणहोजायँ सेवा कोई रोग रोगका कारणहो कै शान्त भी होजाय है कोई के शान्त नहीं हो असिद्धिअन्य को पैदाकरैहै ऐसेरोग संकरकष्ट देनवाले मनुष्योंको हैं ४२ तिसकारण सें उत्तमासिद्धिकी इच्छाकरनेहारा वैद्यको यत्न

से ज्वरादिकरोगोंका निश्चय करनाचाहिये दक्षप्रजापतिका किया हुआ अपमानसे क्रुद्धमहादेवके श्वाससे उपजाज्वर वहआठप्रकार का है बातज्वर १ कफज्वर २ पित्तज्वर ३ बात पित्तज्वर ४ बातकफ ज्वर ५ पित्तकफज्वर ६ सन्निपातज्वर ७ आगंतुकज्वर ८ ऐसे हैं वहज्वर मनुष्यके मिथ्या आहार व बिहारसोंआमाशयमें रहता जो वात पित्त कफ तीनोंको दुष्टकरै और आमाशयकी जगहमेंरहता जो आहार तासों उपजो जो रस ताको बिगाड़ै और आमाशयमें रहता जो अग्नि ताको उदरमें से बाहरकाढ़ि रोगीके सारे शरीर को ताती अग्निरूपकरे है वही ज्वररूपहो शरीर के पराक्रम को खायजाय है जिसके शरीरमें एक साथही ये लक्षणहों तामें ज्वर कहिये शरीरगरमहो अरु पसीना भी नहींआवै भूखजातीरहैसब अंगकर डालाहोजावै हाथ पगोंमें हड़फूटनीहो तिसको ज्वरकहिये ज्वरका पूर्वरूप हाथपगोंमें हड़फूटनीहोय मथवायहो जम्हाईआवै परिश्रमहो व उदासपना हो ग्लानिहो वर्ण पलटाहुआ हो नेत्रोंमें जल भराहुआ हो शीतबात धूप इनमें इच्छा भी व बैर भीहो शरीर भारीहो रोमावलीखड़ीहो अरुचिहो अन्धेरी आवै मनकहींभी लगे नहीं जाड़ालगै ऐसे लक्षण पूर्वरूप ज्वरकाके हैं बातज्वरमें विशेष करि जंभाईआवें अरु पित्तज्वर में विशेषकरि नेत्रोंमें दाहहो अरु कफज्वर में अन्नमें अरुचिहो दोकेलक्षणहों वह द्वंद्वज याने दोदोष का सबकेलक्षणहों वह त्रिदोषका ज्वर होयहै बातज्वर शरीरकांपै ज्वर का विषम वेगहो कण्ठमुख होठसूखेहों निद्रा अरु छींकआवै नहीं शरीर रूखाहोजाय मुखमें स्वाद रसोंका जातारहै दस्तउतरैं नहीं शिर व हृदय व सर्वशरीर इनमें पीड़ाहो पेटमेंशूलचलै व अफराहो अरु जम्हाईआवें ऐसेलक्षणोंसे बातज्वर जानिये बातज्वर में यहपाचनरूप काढ़ादेवै शुंठि, चिरायता, नागरमोथा, गिलोय इन को यह शुंठ्यादि पाचनहै॥ दूसराकाढ़ा॥ गिलोय, छोटीपीपली, जटा-मासी, शुंठि इनका पाचनरूप काढ़ा सातवेंदिन देवै यह गडूच्यादि पाचनहै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ कचूर, दारुहलदी, देवदारु, शुंठि, पुष्करमूल इलायचीबड़ी, गिलोय, कटुकी, पित्तपापड़ा, धमासा, काकड़ासिंगी

चिरायता, दशमूल इनका काढ़ा करिकै पिपली सैंधव निमक चूरण की प्रतिवासर दे पीवै सब प्रकारके ज्वरोंको नाशकरै ५७॥ श्रीपर्ण्यादिपाचन ॥ श्रीपर्णी, अरणी, बेलफल, स्योनाक, पहाड़मूल इनोंका पाचनरूप काढ़ा वातज्वर को नाश करै ॥ गडूच्यादिकाढ़ा ॥ गडूची, सारिवा, मुनक्का, दाख, बला, अंशुमती इनोंकाकाढ़ाभीवात ज्वरको नाशै ॥ दर्भमूलादिकाढ़ा ॥ डाभ, बला, गोखुरू इनों का काढ़ा चतुर्थांश रक्खै खांड़ घृत युत करिकै पिवै तो वातज्वर को नाशै ॥ श्रीफलादि काढ़ा ॥ बेलफल, सर्वभद्रा याने खम्भारी, रक्त-पाटला, पीलाटेंटू, तर्कारीयानेअरणी, गोखुरू, कटैलीछोटी अरुबड़ी पिठवनी, शालिपर्णी, रास्ना, पिपली, पिपलामूल, कुलिंजन, शुंठि, चि-रायता, नागरमोथा, गिलोय, चिकणावाला, मुनक्का, दाख, धमासा शतावरि इनोंका काढ़ा वातज्वर उपद्रव सहितको नाशै यह काढ़ा अतिश्रेष्ठहै॥ भूनिम्बादिकाढ़ा ॥ चिरायता, नागरमोथा, वाला, दोनों कटैली, गिलोय, गोखुरू, शुंठि, शालिपर्णी, पृष्टिपर्णी, पोहकरमूल इ-नोंका क्वाथकरि पीवै वातज्वर जावै ॥ दुरालभादिकाढ़ा ॥ धमासा शुंठि, कुटकी, पहाड़मूल, कचूर, बांसा, एरंडजड़ इनोंका काढ़ा करि पिवै तो वातज्वर शूल श्वास खांसी सहित जावै ॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ शुंठि, गिलोय, पिपलामूल इनोंका काढ़ा पिवै तो वातज्वर रहै नहीं अरु देवदारु, कटैली, शुंठि, धनियांइनोंकाकाढ़ापाचनरूपवातज्वर को हरै ॥ पंचमूलादिकाढ़ा ॥ पंचमूल, खरैटी, रासना, कुलथी, पोह-करमूल इनोंका काढ़ा वातज्वर व शिर कांपना व संधिशूल इनको हरै ७० ॥ कणादिकाढ़ा ॥ पिपली, लसण, गिलोय, शुंठि, कटैली काचीनिर्गुण्डी, चिरायता, नागरमोथा इनोंका काढ़ा पिवै अरु पथ्य से रहै तो बातज्वर व कफज्वर व अग्निमन्द व कंठ का अवरोध व हृदय का अवरोध व स्वेदरोग व हुचकी व जाड़ा व मोह इन रोगोंको हरै है ॥ काकोल्यादिकाढ़ा ॥ काकोली, बड़ीकटैली, नागर-मोथा, कुलिंजन, देवदारु, बांसा, शुंठि इनका काढ़ा मिश्री सहित पीवै तो बातज्वर जावै ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, शुंठि, नागरमोथा हलद, धमासा इनका काढ़ा करि पिपली का चूर्ण बुकाइ पीवै तो

वातज्वर जावै॥ ग्रन्थ्यादिकाढ़ा॥ पिपलामूल, पित्तपापड़ा, बांसा भारंगी, शुंठि, गिलोय इनका काढ़ा पीवे तो तीव्र वातज्वर जावै॥ शालिपर्ण्यादिकाढ़ा॥ शालिपर्णी, वला, मुनक्का, दाख, गिलोय सारिवा इनका काढ़ा कलुक गरम पीवे तो तीव्र वातज्वर जावै अथवा काश्मरी, सारिवा, मुनक्का, दाख, त्रायमाणा गिलोय इनका काढ़ा गुड़ सहित पीवे तो वातज्वर जावे॥ गुडूच्यादिकाढ़ा॥ गिलोय, पिपलामूल, शुंठि इनका काढ़ा सातवें दिन दिया हुआ वातज्वरकोहरै॥ किराताादिकाढ़ा॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय वाला, दोनोंकटैली, गोखुरू, सालवण, पिठवण, शुंठ इनका काढ़ा वातज्वरको हरै है॥ पिपल्यादिकाढ़ा॥ पिपली, सारिवा, मुनक्का बड़ी सौंफ, रेणुकेबीज इनका काढ़ा गुड़युत वातज्वरको हरै है॥ उशीरादिकाढ़ा॥ वाला, पिठवण, शुंठ, चिरायता, नागरमोथा, सालवण, कटैली, दोनों गिलोय, गोखुरू इनकाकाढ़ा वातज्वरको हरै है॥ मरिचादिकाढ़ा॥ मरिच, एरंडमूल, शुंठ, चिरायता, छोटीहड़ पिपली, कटुकी इनका काढ़ा वातज्वरको हरै है॥ त्रिफलादिचूर्ण॥ त्रिफला, शुंठ, मिरच, पिपली, निशोत, बराबरगुड़ दूनीखांड़ मिलाय मोदककरि खावै ५ ऊपर गरम जल पीवै तो पसलीका शूल व अरुचि व कास व वातज्वर नाश होवै॥ पिपल्यादिचूर्ण॥ पिपली सिंगरफ, सिंगीमोहरा इनका खरलमें पीस रत्ती २ शहत संगदेवै वातज्वर को हरै॥ द्राक्षादिचूर्ण॥ मुनक्का, दाख, धमासा, छोटी हरड़, चिक्कणी सुपारी ये बराबरले चूर्णकरि गुड़ सहित खावै तो वातज्वर जावै॥ शतावरिस्वरस॥ शतावरि व गिलोय इनका रस गुड़सहित बलहीन का वातज्वर को जल्दी हरै है॥ कल्पतरुरस॥ शुद्ध पारा तोला १ गन्धक तोला १ बचनागविष तोला १ मैनशिल तोला १ सुहागा तोला १ शुंठ तोला २ मिरच तोला ८ पिपली तोला ८ ये सब विषआदिखरलमें पीसि चूर्णकरिवस्त्रमेंछान के पीछे खरल में रस गन्धक को दो प्रहर तक पीसै पीछे चूर्ण करि विषादि औषध खरलमें गेरै मिलाय तय्यार करै यह कल्पतरु रसहै रत्ती १ दियाकरैतो वातकफ रोगकोहरैहै अरु अदरखरस

सहित खावैतो बातज्वर व कफज्वर इनकोहरै है अरु श्वास खांसी मुख में लाल पड़ना, जाड़ा, शीतरोग, अग्निमन्द, अरुचिइन रोगोंको हरै है इस रसकी नस्यले तो शिरोरोग कफबात से उपजे को हरैहै ज्यादह मोहकोहरैहै अरु प्रलापरोग व छींकबंध रोगको हरैहै १०२॥ भैरवरस॥ बच, नागविष, शुंठ, पिपली, मिरच, रक्तआक ये सब एकोत्तर भागसे लेकरि अदरक रसमें खरलकरै यह भैरव रसहै बातज्वरको तत्काल हरैहै॥ शीतभंजीरस॥ पारा, गंधक, हरताल, तामेश्वर, सुहागा ये सब बराबर ले खरल करै करेलारसमें पीछे तांबेके पात्रको उदरमें लेपै पात्र अधोमुख दूसरे पात्र में रख कपड़ा माटी ऊपर लपेट सुखाय वृक्षोंके बल्कलोंसे पूर्णकरि चुल्ही पर चढ़ाय तीव्रअग्नि से पकावै जब पात्रकी पृष्ठिपर ब्रीहिसे होने लगै तब सिद्धजानै शीतल करि ताम्रपात्रसे खुरचके मिरच बराबर मिलाय चूर्णकरै यह शीतभंजी रसहै पानमें लगाय रत्ती २ मनुष्य को देवै तो बातज्वरको हरै अरु तीसरे दिनका ज्वर व विषमज्वर व नित्यज्वर व दूसरे दिनका ज्वर व चौथिया ज्वर इनको हरै है॥ मातुलिंगादिगुटिका॥ बिजौराकी केशर, सेंधानिमक, मिरच इन को मिलाय पीस गोलीबांधे मुखमें राखैतो बातकफरोग, मुखशोष जड़पना, अरुचि इनको हरै है। मुनक्का, दाख, अनार इनका कल्क खांड़ व अनाररसकेसंग खावैतो मुखकाशोष व वैरस्यको दूरकरै॥ द्राक्षादिप्रतिसार॥ दाख आंमलाका कल्क घृतसहित मुखमेंरख मुख में प्रतिसारणकरै तो जिह्वारोग, तालुरोग, कंठरोग व इन्हींकेशोष को दूरकरै मुखमें रसअच्छालगै अरु भोजनमें रुचिउपजै॥ हरीतक्यादि गुटिका॥ हरड़े ८ निशोत ८ बरधारा ८ सबतोले २४पिपली तोले ४ शुंठि तो० ४ गिलोय तो० ४ गोखुरूतो०४ शतावरितो० ४ सहदेवीतो० ४ बिडंग तो० ४ सबको पीसि शहतमें गोलीबांधे गोली खानेसे ज्वर, खांसी, श्वास, मलस्तम्भ, अग्निमन्दइनरोगों को हरैहै। बातकफज्वरमें व जंघाशूल व पशुली शूल व अस्थिशूल व पीनस श्वास बधिरपना इनरोगोंमें स्वेदकर्म करवावै स्वेदनाड़ी के स्रोतों को कोमलकरि अरु अग्निको आशयमें प्राप्तिकरि अरु

वातकफ को नाशकरि ज्वरको हरै है ॥ खर्परभ्रष्टबालुकास्वेदयोग ॥ खर्परपै बालूको गरमकर कांजी में संसिक्त को इससे स्वेदकर्म करै तो बात व कफरोग व मस्तकशूल व अंगभंग इनको हरैहै ॥ निद्रा नाश निदान ॥ नस्य व लंघन व चिन्ता व व्यायाम व शोक व भय इनकेहोनेसे व कफका अत्यन्त नाशहोनेसे नींदकानाश होयहै ॥ विजयाचूर्णयोग ॥ रात्रिमें भांगको भूनकरि शहत संग खावे तो निद्रा नाश व अतीसार व संग्रहणी इनको हरै १२० पिपलामूल चूर्ण गुड़संग खावे तो निद्रा अवश्यआवै । काकमाचीकी जड़कोसूत्रसे मस्तकपरबांधै तो जिसकी बहुतदिनसे नींदनष्टहुईभी जल्दीआवै॥ पित्तज्वर लक्षण ॥ पित्तज्वरमें वेगतीक्ष्ण हो अरु अतीसारहो नींद कमआवै अरु छर्दिहो अरुकंठ व ओष्ठमुख नासिकाइन्होंकापाक हो अरु पसीनाआवै अरुज्यादहबकै व मुखकटुहो मूर्च्छाहो दाह हो मदहो तृषाज्यादहहो विष्ठामूत्र नेत्र त्वचा पीलेरंगहो अरुभ्रम हो ये लक्षण पित्तज्वरवालेके हैं ॥छिन्नादि पाचन ॥ गिलोय,निंबछाल धनियां,शुंठ, हल्दी इन्हों का पाचनरूप काढ़ाकरि गुड़मिलायपीवै तो पित्तज्वर जावै ॥ दुस्पर्शादिकाढ़ा॥ धमासा, बांसा, कटुकी, पित्तपापड़ा, मालकांगणी, चिरायता इन्हों का काढ़ा मिश्रीमिलायपीवै तो पित्तज्वरदाह सहित नाशहोवै॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का, दाख,परवल, निंब, कुटकी,हरड़, कटेली, बाला, धनियां, लोध, नागरमोथा शुंठि इन्हों का काढ़ा पित्तज्वर को हरै ॥ पित्तज्वरी प्रतीकार ॥ सफेद कमल व सुगन्धवायु पुष्परस सहित व जलक्रीड़ा व रसिक कथा इन्होंसे भी पित्तज्वर शांतहोवै ॥ तिक्तादिकाढ़ा॥ कटुकी, नागरमोथा इन्द्रयव, पहाड़मूल, कायफल, बाला इन्होंकाकाढ़ा खांड़साहितपीवै तो पित्तज्वर जावै ॥ पर्पटादिकाढ़ा ॥ पित्तपापड़ा, बांसा,कटुकी, चिरायता, धमासा, मालकांगणी इन्हों का काढ़ा खांड़ सहित पीवै तो प्यास दाह रक्तपित्त सहित पित्तज्वरका नाशहोवै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का, दाख, हरड़छोटी,नागरमोथा, कटुकी, अमलतास,पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ापित्तज्वर कोहरै अरुमुखशोष व प्रलाप व अंतर्दाहव मूर्च्छा भ्रमकोहरै अरु ज्यादह तृषा व रक्तपित्तको शमनकरै अरु

मलकोसाफ़करै३४१॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ करूपरवल, यव, धनियां मुलहठी इन्हों का काढ़ा शहत युत पित्तज्वरको व दाहको व अति तृषाको हरैहै॥ गुडूच्यादि काढ़ा॥ गिलोय, आंवला, पित्तपापड़ाइन्हों का काढ़ा पित्त व शोष व भ्रमयुत पित्तज्वरको हरै है ॥ ह्रीबेरादि काढ़ा ॥बाला, रक्तचन्दन, कालाबाला, नागरमोथा, पित्तपापड़ाइन्हों का काढ़ा शीतलकरि प्यावैतो अति तृषा ज्वर दाह को हरै॥ भूनिंबादिकाढ़ा॥ चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रयव, गिलोय बाला, धनियां, बेलफल इन्होंका काढ़ा शहतयुत श्वास व कास व रक्तपित्त व पित्तज्वर इनकोहरैहै॥ कट्फलादि काढ़ा॥ कायफल, इन्द्र-यव, पहाड़मूल, कटुकी, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा दशवें दिनदिया पित्तज्वरको हरैहै ॥ पंचभद्रादि काढ़ा॥ पित्तपापड़ा, नागरमोथा, गिलोय, शुंठ, चिरायता इन्होंकाकाढ़ा बात पित्तज्वरको हरैहै॥ कलिंगादिकाढ़ा॥ कुरैया, कायफल, लोध, पहाड़मूल, कटुकी इन्हों का काढ़ाखांड़युतपीवै पित्तज्वरकोहरै॥ शर्करादिकाढ़ा॥ रक्तचन्दन, बाला कायफल, फालसा, मुलहठी इन्होंकाकाढ़ा खांड़युत पीवै पित्तज्वर जावै॥क्षुद्रादिकाढ़ा॥ कटैली, धनियां, शुंठ, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख रक्तचन्दन, चिरायता, परवल, बांसा, पुष्करमूल, कटुकी, इन्द्रयव नींब, भारंगी, पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा शीतल सबज्वरोंको हरैहै॥ लोध्रादिकाढ़ा ॥ लोध, कमलकंद, गिलोय, सारिवा इन्हों का काढ़ा खांड़युत पीवै तो पित्तज्वर को हरै अथवा पित्तपापड़ा का काढ़ा खांड़युत पितज्वर को हरै है॥ पर्पटादिकाढ़ा॥ पित्तपापड़ा, गिलोय आँवला इन्हों का काढ़ा पित्तज्वर को हरै अथवा मुनक्का दाख का काढ़ा पित्तज्वरको हरै अथवा अमलतासका काढ़ा पित्तज्वरकोहरै है अथवा फालसाका काढ़ा पित्तज्वर को हरै है ये तीनों काढ़े पित्त-हारी हैं ॥ विश्वादि काढ़ा॥ शुंठ, पित्तपापड़ा, बाला, नागरमोथा रक्तचन्दन इन्हों का काढ़ा शीतलकिया तृषा छर्दि ज्वर दाहको हरै है ॥ गुडूच्यादि काढ़ा॥ गिलोय, नागरमोथा, धनियां, मुल-हठी, चिरायता इन्होंकाकाढ़ा तृषा, शूल, अरुचि, छर्दि, पित्तज्वर इनकोहरैहै॥ किराताादि काढ़ा॥ चिरायता, गिलोय, धनियां, रक्तचंदन

वाला, पित्तपापड़ा, पद्माख इन्हींकाकाढ़ा दाह, तृषा, भ्रम, अरुचि ग्लानि, छर्दि, पित्तज्वर इनको हरे है ॥ चन्दनादिकाढ़ा ॥ रक्तचन्दन मुलहठी, मुनक्कादाख, कटुकी, धमासा यह चन्दनादिगण दाह, अरुचि, पित्तज्वर इनको हरे है १५० ॥ पर्पटादिकाढ़ा ॥ शाकलापित्त-पापड़ा का काढ़ा पित्तज्वरको हरेहै जो रक्तचन्दन, वाला, शुंठइन्हों युत पित्तपापड़ा जल्दी पित्तज्वरकोहरेहै ॥ उदुंबरादिहिम ॥ गूलरकी जड़, गिलोय इनकाजल मिश्रीयुत पीवे तो पित्तज्वर जावे अथवा परवलकी जड़काजल मिश्रीयुत पित्तज्वरको हरे है ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का, हरड़, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कटुकी, अमलतास इन्हों का काढ़ा प्रलाप, मूर्च्छा, भ्रम, दाह, शोष, तृषा, पित्तज्वर इनको हरे है ॥ दुरालभादिकाढ़ा ॥ धमासा, पित्तपापड़ा, प्रियंगु, चिरायता वाला, कटुकी इन्होंका काढ़ा खांड़युत पीवे तृषा, रक्तपित्त, ज्वर दाह इन्होंकोहरे है ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का, पित्तपापड़ा, अमलतास कटुकी, नागरमोथा, हरड़छाल इन्हों का काढ़ा पित्तज्वर जनित मूर्च्छा, शोष, तृषा, गरमी, प्रलाप, भ्रांतिइनको हरे है अथवा धमासा, अतीस, चिरायता, कटुकी अरडूसा, पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ा तृषा, दाह, रक्तपित्त, पित्तज्वर इन्होंको हरेहै ॥ छिन्नादिकाढ़ा ॥ पराशरादि मुनियोंको बहुतसेकषाय किसवास्तेकहें गिलोय, हरड़ पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा पित्तज्वरको अवश्यहरेहै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ मुनक्का दाख, रक्तचन्दन, कमलकन्द, नागरमोथा, कटुकी, गिलोय आंवला, वाला, कालावाला, लोध, इन्द्रयव, पित्तपापड़ा, फालसा कांगणी, धमासा, बांसा, मुलहठी, कड़ूपरवल, चिरायता, धनियां इन्होंका काढ़ा पित्तज्वर को हरे अरु तृषा, दाह, प्रलाप, रक्तपित्त भ्रम, ग्लानि, मूर्च्छा, छर्दि, शूल, मुखशोष, अरुचि, कासश्वास हृल्लास इन रोगोंको हरे है ॥ सलिलादिकाढ़ा ॥ धनियां, चावलइन्हों को रात्रिमें जलमें भिगोय प्रभातमथ छान मिश्रीमिलाय पीवे तो पित्तज्वरको अरु अन्तर्दाहकोहरे ॥ मुद्गादिकाढ़ा ॥ मूंग ८ तोलेपानी मेंवमुलहठी इनकाकाढ़ाकरिशीतलपीवे तो पित्तज्वरजावे ॥ ह्रीबेरादि काढ़ा ॥ वाला, नागरमोथा, धनियां, रक्तचन्दन, मुलहठी, गिलोय

बांसा, कालाबाला इन्हों का काढ़ा खांड़ शहत युतपीवैतो रक्तपित्त तृषा, दाह, पित्तज्वर जावै १६७॥ तिक्तादिकाढ़ा॥ कटुकी, धमासा चिरायता, गिलोय, पित्तपापड़ा, बांसा इन्होंका काढ़ा मिश्री युत रक्तपित्तज्वरको हरै॥ पथ्यादिलेह॥ हरड़का चूर्ण तेल में वा घृतमें वा शहतमें मिलाय चाटै दाह ज्वर, खांसी, रक्तपित्त, विसर्प, श्वास छर्दि इनको हरै॥ आम्रादिकाढ़ा॥ आंब, जामुन, कमलपान, जीवन बट इन्होंके छाल कालाबाला इन्होंकाफांट शहतयुत ज्वर को हरै अरु तृषा छर्दि अतीसार ज्यादह मूर्च्छा इनकोभी हरै॥ गुडूच्यादि काढ़ा॥ गिलोय, पद्माख, लोध इन्होंका काढ़ा खांड़युत पित्तज्वरको हरै अथवाउपलसरी कमलकन्दइनका काढ़ाभी खांड़युत पित्तज्वर कोहरै॥ पटोलादिकाढ़ा॥ कड़ूपरवल, इन्द्रयव इनकाकाढ़ाशहतयुत तीव्रज्वरको तृषाको दाहको नाशै॥ केशरमातुलिंगादियोग॥ जिह्वा तालु, कंठ, क्लोम इन्होंको शोषमें बिजोरा की केशर शहत व सेंधा-नमक युतदेवै तो आरोग्यहोवै अथवा विजोराकीकेशर शहतसेंधव युत जलसेगंडूषकरै तो शोषमुख मिटै वा हरड़, कांगणी, पिपली लोध, दारुहल्दी, तेजबल इन्होंका जल शहतयुत करिमुखमेंराख थूकै तो मुखका कड़ुवापन व मुख रोग नाश हो मुखकी कांति बढ़ै अरु रुचिउपजै अरु पित्तज्वरमें मूंगयूष व चावलयूष मिश्रीमिलाय देवै॥ रसपर्पट॥ शुद्धपाराभाग १ गंधकभाग २ कजलीकरिभृङ्गीरस में दो मुहूर्त्ततक खरल करै फिर लोहपात्र में धर मन्द २ अग्नि से चुल्हीऊपर पकावै लोहे के पलटासे चलावै पीछे लोहभस्म अथवा तांबेकी भस्म चतुर्थांश गेरै घटी ४ तक चलावै नहीं कोमलतासे पकन दे पीछे गौका गोमय ऊपर केलापत्र रख तिस में द्रव्य धरै पात्रसेढकै तिसऊपर गोमय रक्खै फिर द्रव्य को खरल में पीसै निर्गुण्डीरससे पीछे अरणीरसमें १ दिन फिर त्रिफलारसमें १ दिन फिर कुमारी रसमें १ दिन फिर बाला रसमें १ दिन फिर भारंगी रसमें १ दिन फिर कटुत्रय रसमें १ दिन फिर भृङ्गीरसमें १ दिन फिर चीता रसमें १ दिन फिर गोरखमुंडी रसमें १ दिन ऐसेखरल करि भावना देवै पीछे अदरख अर्क में ७ दिन भावनादे खरल

करि पीछे द्रव्यको अग्निसे तपाय पसीनाकाढ़े ऐसे पर्पटीरस होय है ४ रत्ती कफज्वरमें देवै। बांसा व शुंठ व हरड़ इन्होंका क्वाथ अनुपानहै अथवा चब्यके रसमेंले तो कफज्वरजावे १८३॥ कलिंगादि चूर्ण ॥ इन्द्रयव, कटुकी, हलद, त्रिकटु, नागकेशर, चीता इन्हों का चूर्ण गरमजल संग लिया कफज्वर को नाशै॥ शृंग्यादिलेह॥ काकड़ासिंगी, पिपली, कायफल, पुष्करमूलइन्होंका शहत युत अवलेह श्वास खांसी सहित कफज्वर को हरै सिंधुकवल, सिंधा, शुंठ मिरच, पीपल, राई, अदरख युत ग्रासकफको नाशै कफज्वर में मूंग का यूषदेना श्रेष्ठ है॥ त्रिफलादिचूर्ण॥ त्रिफला, पिपली शहतमें मिलाय चाटै तो कफज्वर खांसी श्वासजावे अथवा घृतमेंचाटै॥ अजाजियोग॥ जीरा खांड़युत अथवा अनाररस युत लेवे तो रुचिउपजै अथवा शहतमेंलेवै मूंगयूष चावल भोजनदेवै॥ कफज्वरमेंचन्दनादि काढ़ा॥ रक्त चन्दन, रोहिष तृण, बाला, कालाबाला, पित्तपापड़ा नागरमोथा, शुंठि इन्होंका काढ़ापित्तज्वरको हरै॥ शतधौतघृत॥ शत बार धोये घृतके लेप से दाह नाशहोय अथवा निंबपत्रकेरसभाग सहित लेपसे शरीरकी दाहपीड़ा जावै। पलाशकेपत्तोंकेलेपसे दाह ज्वर जावे अथवा बड़बेर के पत्तों के रसके लेपसे दाह जावे अथवा सीधे सोतेहुये की नाभीके ऊपर तांबा व कांसेका पात्र रक्खै तिस पर शीतल जलकी धारा गेरै इसयोगसेभी दाहमिटै॥ औदुम्बरादि योग॥ गूलरका निर्यास मिश्रीसे पीवे तो दाहमिटै अथवा गिलोय का सत मिश्रीयुत पीवे तो पित्तज्वर जावे अथवा गौके तक्रमें वस्त्र भिगोय शरीरपैफेरै तो दाहमिटै अथवा कांजीके पानीमें वस्त्र भिगोय शरीर पर फेरै तो दाह मिटै॥ द्राक्षादिकल्क॥ दाख, आंवला इनका कल्कभी दाहको हरै अथवा अनारके बीजसे भी दाह मिटै अथवा धनियां कल्कसे भी दाहमिटै दाहवालेको व छर्दि को व कृशको अन्न रहितको व तृषावालेको धानकी खीलका यूष शहतयुत देवै पित्त ज्वरमें मूंगचावल का यूष मिश्रीयुत पीवै॥ अमृतादिहिम॥ गिलोय का हिममिश्रीयुत प्रभातमें पीवे तो पित्तज्वर जावे बांसाका हिम मिश्रीयुतपीवैतोखांसी रक्तपित्त पित्तज्वरको हरै॥ कफज्वरनिदान॥

अन्नमें अरुचि हो शरीर भारीहो रोमांचहो मूत्र नख नेत्र सफेदहों घनीनींदआवै शरीरठंढाहो मुख मीठाहो बेग ज्यादह न हो ज्यादह आलस्यहो श्वास खांसी पीनसभी हो अंग भीजासम हो छर्दि हो अंगजकड़ाहो अन्न जरैनहीं येलक्षण कफज्वरके हैं॥ नीरदादिपाचन॥ नागरमोथा,शुंठ ,धमासा, बांसा यांचाकाढ़ा पाचनरूप पीवै कफ-ज्वर में खांसी श्वास अतिशूल को हरै ॥ पिपल्यादिपाचन ॥ पिपली पीपलामूल,मरिच,गजपिपली,शुंठि,चीता,चाव,रेणुकेबीज,बेलदोड़े अजमोद, सर्षप, हिंग, भारंगी, पहाड़ मूल,इन्द्रयव, जीरा, बकाण मोरबेल, अतीस,कुटकी, बायबिड़ंग यह पिपल्यादि गण कफवायु को हरैहै अरु गुल्म शूल ज्वरको हरैहै यह दीपनहै अरु आम को पकावै है॥ क्षौद्रादिकाढ़ा ॥ पिपली शहतयुत चाटै तो खांसी श्वास ज्वर,तिल्ली,हुचकी इनको हरै ॥ पिपल्यादिचूर्ण॥ पिपली, त्रिफला बराबर ले शहत में या घृत में मिलाय चाटै तो खांसी श्वास जावै॥ कटूफलादिलेह ॥ कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, अजमाण अजमोद, त्रिकटु ये बराबरले अदरख अर्कमें चाटै व शहत मिलाय चाटै तो कफज्वर, खांसी, श्वास, छर्दि, कफ, बायुरोगजावै ॥ निर्गुण्ड्यादिकाढ़ा ॥ निर्गुण्डीका काढ़ा पिपलीचूर्ण युत पीवै तो कफज्वर निर्बलता कानका बधिरपना ये जावैं ॥ यवान्यादिकाढ़ा ॥ अजमान पिपली, बासा, खसखसका बक्कल इन्होंकाकाढ़ा खांसी, श्वास,कफ-ज्वरको हरै॥ बासादिकाढ़ा ॥ बासा, कटैली, गिलोय इन्हों का काढ़ा शहतयुतपीवै तो ज्वर व खांसीहरै २१४॥ निम्बादिकाढ़ा ॥ निम्ब,शुंठ गिलोय, शतावरि, धमासा, चिरायता, पुष्करमूल, पिपली, पीपला-मूल,कटैली इन्होंकाकाढ़ा कफज्वरकोहरै॥ मरीच्यादिकाढ़ा॥ मिरच पीपलामूल, शुंठ,पिपली, चीता, कायफल, कुलींजन,निर्गुण्डी, बच हरड़,कटैली,जटामांसी,काकड़ासिंगी,अजमोद,निम्बइन्होंकाकाढ़ा उपद्रवसहित कफज्वरकोहरै ॥ निदाग्धिकादिकाढ़ा ॥ कटैली, गिलोय पिपली,शुंठ इन्होंकाकाढ़ा कफज्वर, श्वास,कफ,खांसी, शूल,अग्नि-मंदपेटमें बायुइनकोहरै॥ भारंग्यादिकाढ़ा॥ भारंगी, गिलोय, नागर-मोथा,देवदारु,कटैली,शुंठ,पिपली, पुष्करमूलइन्होंका काढ़ाज्वरको

श्वास को हरै भूँख बढ़ावै अरु रुचि उपजावै ॥ मातुलिंगादिकाढ़ा ॥ बिजौराकी जड़, शुंठ, गिलोय, पीपलामूल इन्होंकाकाढ़ा यवाखार युत वा पिपलीयुत पीवै तो कफज्वरहरै ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला निसोत, नागरमोथा, त्रिकटु, इन्द्रयव, परवल, अमलतास, कटुकी चीता बराबर इन्होंका काढ़ा शहतयुत कफज्वर व खांसीको हरै ॥ पिप्पलादिगण ॥ पिपली, पीपलामूल, चवक, चीता, शुंठ, मरिच अजमोद, इन्द्रयव, पहाड़मूल, रेणुके बीज, जीरा, भारंगी, बकाए फल, हिंगु, कटुकी, सर्षप, बिडंग, अतीस, मोरबेल यह गए कफ नाश करै है पंचकोल, पिपली, पीपलामूल, चवक, चीता, शुंठ यह पंचकोल शोधन है अरु कफ को हरै है ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, हरड़ बहेड़ा, आंवला, कटुकी, कचूर, बासा, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा शहत युत कफज्वरको हरै ॥ बीजपूरादिकाढ़ा ॥ बिजौराकीजड़, हरड़, आंवला, शुंठ, पीपलामूल इन्हों के काढ़े में यवाखार बुरकाय दे तो कफज्वर जावै बारहवां दिनलेवै ॥ भूनिम्बादिकाढ़ा ॥ चिरायता, निम्ब पिपली, कचूर, शुंठ, शतावरि, गिलोय, बड़ीकटैली इनकाकाढ़ा कफज्वरकोहरै ॥ कटुक्यादिकाढ़ा ॥ कटुकी, चीता, निंब, हल्दी, अतीस, बच शतावरि, गिलोय, चिरायता, थोहर, आक इन्होंका काढ़ा शहतयुत कफज्वरको हरै ॥ त्रिकंटकादिकाढ़ा ॥ गोखुरू, खरैटी, कटैली, गिलोय शुंठ इन्होंका काढ़ा मलमूत्र रोधको व कफज्वरको हरै २३० ॥ कुष्ठादिकाढ़ा ॥ कुलिंजन, इन्द्रयव, मूर्वा, पलोट इन्होंकाकाढ़ा शहत मिरच चूर्णयुत पीवै तो कफज्वरजावै ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला, परवल वासा, गिलोय, कटुकी, बच, शुंठ इन्होंका काढ़ाशहत युत कफ ज्वर को हरै अथवा दशमूलबासा इन्होंका काढ़ाभी कफज्वरकोहरै सप्तछदीगिलोय, निंब, तेंदु इन्होंकाकाढ़ा शहतयुतकफज्वरकोहरै ॥ आमलक्यादिकाढ़ा ॥ आमला, हरड़, पिपली, चीता इन्हों का काढ़ा सर्वज्वरको व कफरोगकोहरै है यह भेदीहै दीपनहै अरुपाचनहै २३४ तिक्तादिकाढ़ा ॥ कटुकी, नींब, अतीस, शुंठ, मिरच, पीपल, इन्द्रयव बाला इन्होंका काढ़ा कफज्वर हुचकी खांसी सहितको हरै ॥ मुस्तादि काढ़ा ॥ नागरमोथा, महुआबीज, त्रिफला कटुकी, फालसा इन्हों का

काढ़ाकफज्वरकोहरै॥ चपलादिकाढ़ा॥ पिपली,गजपीपली,शुंठ,चवक चीताइन्होंकाकाढ़ा श्वास, कास,हृल्लासकफज्वरकोहरै॥ पिचुमन्दादि काढ़ा॥ निंब, शुंठ, कटैली, पुष्करमूल, कटुकी, कचूर, बासा, कायफल, पिपली, शतावरि इन्होंका काढ़ा कफज्वरको हरै॥ बासादि काढ़ा॥ बासा, बिशाला, दशमूल, तुलसी, शुंठ, पुष्करमूल, भारंगी इन्होंका काढ़ा कफज्वरको खांसीको शूलकोहरै॥ कंटक्यादिकाढ़ा॥ कटैली, गिलोय, देवदारु, बासा, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा पीपलीरज युत कफ ज्वरको हरै॥ कणादिकाढ़ा॥ पिपली, शुंठ, गिलोय, देवदारु चिरायता, एरंडमूल इन्होंका काढ़ा पित्त कफ ज्वर को हरै॥ मुस्तादिकाढ़ा॥ नागरमोथा, धमासा, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा कफज्वरको हरै॥ बातपित्तज्वरलक्षण॥ जिसमनुष्य के बात पित्तज्वरहो तिसे मूर्च्छा घुमेर दाह हो नींदआवेनहीं मथवायहो कंठमुखसूखे रहैं छर्दिहो रोमांचहो अरुचिहो अँधेरीआवै सबअंगमें पीड़ाहो जम्भाई आवे बकवादकरै ये लक्षण बातपित्तज्वरकेहों॥ नीलोत्पलादिहिम॥ नीले कमलबला, मुनक्का,दाख महुआ, मुलहठी, वाला, पद्माख, शिवण, फालसाइन्होंकाहिम बनायदेवै तो बातपित्तज्वर,प्रलाप, भ्रम, छर्दि हरै॥ निदग्धिकादिकाढ़ा॥ कटैली,गिलोय,रास्ना,त्रायमाण, हरीतकी इन्होंकाकाढ़ा बातपित्तज्वर को हरै॥ बिश्वादिकाढ़ा॥ शुंठि, गिलोय नागरमोथा, चिरायता, पंचमूल इन्होंका काढ़ा बातपित्तज्वर को हरै॥ नीलोत्पलादिकाढ़ा॥ कमल, बाला, पद्माख, आँवला, काश्मरी महुआ, मुनक्का, मुलहठी, फालसा इन्होंका काढ़ा शीतलकरिपीवै तो बातपित्तज्वर, प्रलाप, मोह इनको हरै॥ आरग्वधादिकाढ़ा॥ अमलतास, नागरमोथा, मुलहठी, महुआ, बाला, हरड़, हल्दी,दारुहल्दी, परवल, निम्ब, गिलोय, कटुकी इन्हों का काढ़ा बात पित्त ज्वर कोहरै॥ द्राक्षादिकाढ़ा॥ मुनक्का, चिरायता, गिलोय, बासा कचूर इन्होंका काढ़ा बात पित्तज्वर को हरै॥ पंचमूलादि काढ़ा॥ पंचमूल, गिलोय,नागरमोथा, शुंठ, चिरायता इन्होंका काढ़ा बात पित्तज्वरको हरै॥ मुद्गादियूष॥ मूंग आंवला इनका यूष बातपित्त ज्वर में हित है अरु दाह ज्यादह में चनेका यूष हित है अथवा

अनार आँवला मूंग इन्होंकायूष बातपित्तज्वरकोहरै॥ मुद्गादियोग॥ मूंग कफ पित्तको हरै है कटेलादिभी हरै है बात पित्तज्वरमें इन्होंका यूष हित है। अतिदिये मलरोध शूल उदावर्त्त ज्वरकोकोपै है॥ मधुकादिकषाय॥ महुआ, सारिवा, मुनक्का, मुलहठी, रक्तचन्दन, कमल कन्द, खम्भारी, फललोध्र, त्रिफला, पद्मकेशर, फालसा, कमलइन्हों को पीस जलमें कषायकरि मिश्रीशहतयुत करिपीवै तो बात पित्त ज्वरको दाहको तृषाको मूर्च्छाको अरुचिको भ्रमको रक्तपित्तकोहरै जैसे पवन बादलोंको तैसे॥ पंचभद्र कषाय॥ गिलोय, पित्तपापड़ा नागरमोथा, चिरायता, शुंठ इन्होंका काढ़ा बात पित्तज्वरकोहरै॥ दूरालभादि कषाय॥ धमासा, गिलोय, नागरमोथा, बाला, कटुकी पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा बातपित्त ज्वरकोहरै॥ भूनिंबादिकषाय॥ चिरायता, कटुकी, बाला, रक्तचन्दन, धनियां, हरड़, दशमूल, कालाबाला, सुंठ, करमन्दमूल इन्होंका कषाय बातपित्त ज्वरकोहरै॥ त्रिफलादि कषाय॥ त्रिफला, सांवरी, रास्ना, अमलतास, बासा इन्हों का कषाय बातपित्तज्वरकोहरै॥ मधुकादि फांट॥ महुआपुष्प, मुलहठी रक्तचन्दन, फालसा, कमल, लोध, गंखारी, नागकेशर, त्रिफला, सारिवा, मुनक्का, धानकीखील इन्होंकाफांट गरमकल्क मिश्रीशहत युत पीवैतोबातपित्त ज्वरजावै यहीफांट शीतलपीवैतोदाह, तृषा, मूर्च्छा अरतिभ्रम, रक्तपित्त इनको हरै॥ द्राक्षादि कषाय॥ मुनक्का, चिरायता आंवला, गिलोय, कपूर इन्हों का कषाय द्वंद्वज यानी दो दोषके ज्वरकोहरै॥ व्याघ्रादि कषाय॥ कटैली, भारंगी, बासा, रास्ना, धमासा मोचरस, अमलतास इन्होंका कषाय बातपित्त ज्वरको हरै अरु त्रिफला कषायभी बातपित्त ज्वर व कासकोहरै है॥ मुस्तादिकषाय॥ नागरमोथा, धनियां, चिरायता, गिलोय, निंब, कटुकी, कडूपरवल इन्होंका कषाय बातपित्त ज्वर को हरै है॥ बलादि कषाय॥ बला गिलोय, एरण्डमूल, बाला, नागरमोथा, भारंगी, पद्माख, पिपली कालाबाला, रक्तचन्दन इन्होंकाकषाय बातपित्तकोहरै अरु अग्निको बढ़ावै॥ रसायन॥ त्रिफला, मृतलोह, भृङ्गराज, अर्जुनपत्रका चूर्ण त्रिजातक, शिलाजीत, शुंठ, मिरच, पीपल सब बराबरसबोंकीतुल्य

मिश्रीमिलायशहतमें गोली बांधे दशमाशेकी यह गोली बातपित्त ज्वरको हरैअनोपान संग २७६॥ बातकफज्वरलक्षण॥ अंगवालाक- पड़ाभीजासमहोसंधियोंमें पीड़ाहो नींदआवै शरीरभारीहो मस्तक मेंशूलहो। खेहर खांसीहो पसीनाआवैशरीरमें संतापहो ज्वर बेग मध्यमहो उसे बात कफज्वरकहिये। बात कफज्वरमें औषध६ दिन देवै। सूखेजड़वाले पदार्थका यूष बात कफज्वरमें हितहै॥ पंचको- ल॥ पिपली, पीपलामूल, चब्य, चीता, शुंठि यहगण दीपनहैबात कफ ज्वरको हरैहै। यह औषध प्रत्येक आठमाशे लेनेसे पंचकोल कहेहैं पंचकोलतीक्ष्णहै पाचनहै कफ बातकोहरैहै अरु गुल्म, तिल्ली उदरशूल, आनाह इनरोगोंको हरैहै पित्तको कोप करैहै॥ निंबादिक- षाय॥ निंब, गिलोय, शुंठ, देवदारु, कायफल, कुटकी, बचइन्होंकाकषाय बातकफ ज्वरको हरैहै संधिपीड़ा मस्तकशूल खांसी अरुचि इनको भी हरै है॥ किरातादि कषाय॥ चिरायता, शुंठि, गिलोय, कटैली पिपली, पीपलामूल, लहसुन, निर्गुण्डी इन्होंका कषाय बात पित्त ज्वरको जल्दी हरै है॥ बृहत् पिपल्यादि कषाय॥ पिपल्यादि गणका कषाय बात कफज्वरको हरैहै इससे ज्यादह औषध इसरोगमें नहीं है पिपली पीपलामूल, चव्य, चीता, शुंठि, बच, अतीस, जीरा, पाढ़ा कुरैया, रेणुबीज, चिरायता, कटुकी, मूर्वा, सर्षप, मरीच, कायफल, एरण्ड मूल, भारंगी, बायबिडंग, काकड़ासिंगी, आककीजड़, बड़ी कटैली रास्ना, धमासा, अजमाण, अजमोद, शिवणसाल, हिंग ये सब बराबर पिपल्यादि गणमें २८ औषध हैं इन्हों का कषाय बात कफ ज्वर को हरै अरु बात रोग को व शीत रोग को व पसीना व कंप व प्रलाप व अतिनींद रोमांच व अरुचि व महाबात व अप- तंत्र व शून्य रोग इतने रोगों को हरै यह पिपल्यादि कषाय है॥ सिंहिकादि कषाय॥ कटैली, अजमाण, गिलोय इन्हों का कषाय पिपली चूर्णयुत, कफज्वर, कास, श्वास, पीनस इनको हरैहै॥ कटू- फलादि कषाय॥ कायफल शुंठ, बच, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धनियां हरड़, काकड़ासिंगी, देवदारु, भारंगी इन्हों का कषाय बात कफ ज्वरकोहरै॥ दशमूली कषाय॥ दशमूल रसमें पिपली चूर्णगेरपीवै तो

कफज्वर, अजीर्ण, तन्द्रा, पार्श्वशूल, श्वास, कास इनकोहरै ॥ पिपल्यादि कषाय ॥ पिपली का कषायपीवै तो बात कफज्वरको प्लीहको नाशै॥ दार्व्वादि कषाय ॥ देवदारु, पित्तपापड़ा, भारंगमूल, नागरमोथा, बच धनियां, कायफल, हरीतकी, शुंठ, करंजवा इन्होंका कषाय हिंगुशहत युतपीवै तो कफ बातज्वर हुचकी शोष गलग्रह श्वास कास प्रमेह इन रोगों को नाशै जैसे वृक्षको इन्द्रबज्र तैसे ॥ पटोलादि कषाय ॥ कडू परवल, शुंठ, इन्द्रयव, पिपली इन्होंका काढ़ा दीपनपाचनहै अरु तृषाको व बात कफरोगको व शूलको व श्वास कासको व अरुचिको व बद्धकोष्ठ को नाशै है ॥ क्षुद्रादि कषाय ॥ कटैली, गिलोय, शुंठ पुष्करमूल इन्होंका कषाय बात कफज्वरको व श्वास कास अरुचि पार्श्वशूल त्रिदोष ज्वर इनको हरैहै ॥ आरग्वधादिकषाय ॥ अमलतास, पीपलामूल, नागरमोथा, कटुकी, हरीतकी इन्होंका कषाय बात कफ ज्वर को हरै ॥ मुस्तादि कषाय ॥ नागरमोथा, पित्तपापड़ा, शुंठ गिलोय, धमासा इन्होंका कषाय कफ बात अरुचि छर्दि दाह शोष कफवातज्वर इन रोगोंको हरैहै ॥ भूनिम्बादि कषाय ॥ चिरायता, नागरमोथा, कटुकी, गिलोय, धमासा, पित्तपापड़ा, शुंठ इन्हों का कषाय वातकफज्वर को नाशै है ३०४ ॥ चातुर्भद्रादि कषाय ॥ चिरायता नागरमोथा, गिलोय, शुंठ यह चातुर्भद्रहै बात कफको हरैहै । स्वेद शोषकचूर्ण ज्यादह पसीनासे कुलथी चूर्ण शरीरमेंमलै अथवा जीर्ण गोमय अरु लवणकापात्र इन दोनों को चूर्णकरि शरीरमें मलै तो स्वेददूरहोवै अथवा मिरच, शुंठ, पिपली, हरीतकी, लोध, पुष्करमूल चिरायता, कटुकी, कुलिंजन, शिवलिंगी, कचूर, कपूर, काचरी, इन्होंको चूर्णकरि शरीरमें स्रोतोंकेमलै तो स्वेद दूरहोवै अथवा चिरायता अजमाण, कटुकी, बच, कायफल इन्होंका चूर्णशरीरमेंमलै तो स्वेददूर होवै॥ सूर्यशेखररस ॥ पारा १ भाग, भूनासुहागा १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग अरु जयपाल तुष रहित २ भाग, सींधा १ भाग, मरिच १ भाग, चिंचाखार १ भाग, दालचीनी १ भाग, खांड़ १ भाग इनको जंभीरी नींबूके रसमें १ दिन खरलकरै यह सूर्यशेखर रसहै २ रत्ती गरमजल संग देने से बात कफज्वर को हरै ॥ कफपित्तज्वर लक्षण ॥

मुख कफसे लिपारहै अरु कडुवारहै तन्द्रा होवै मोहहोवै खांसीहो अरुचिहो शरीर जकड़ाहो कफपित्तपड़े पसीनाआवे कभीजाड़ालगे कभी दाहहोवै ये पित्तकफज्वरके लक्षण हैं इस ज्वर में दशवेंदिन औषधदेवै ॥ कंटकार्यादि कषाय ॥ कटैली, गिलोय, भारंगी, शुंठ, इन्द्र-यव, बासा, चिरायता, चन्दन, नागरमोथा, परवल, कटुकी इन्हों का कषाय पित्त कफज्वरको दाहको तृषाको अरुचिको छर्दिको खांसीको श्वासको शूलको हरै है ॥ नागरादि कषाय ॥ शुंठ, बाला, नागरमोथा, धनियां मोचरस इनका कषाय ग्राहीहै पित्त कफज्वरको हरै है ॥ शृंगबेरादि कषाय ॥ परवल अदरख का कषाय पित्त कफज्वर छर्दि दाह खाज बिसर्प इनरोगोंको हरैहै। ॥ पटोलादियूष ॥ परवल धनियां इनका यूष पित्तकफज्वर को हरैहै दीपन है ३२० ॥ पटोलादि कषाय ॥ परवल, निंब, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला, मुलहठी, बला इनका कषाय पित्त कफज्वरको हरैहै ॥ तिक्तादिकषाय ॥ कटुकी, बाला बला, धनियाँ, पित्तपापड़ा, नागरमोथा इनकाकषाय पुनर्ज्वर को हरैहै ॥ लोहितचन्दनकषाय ॥ रक्तचन्दन, पद्माख, धनियाँ, गिलोय निंब इन्होंकाकषाय पित्तकफज्वर, दाह, तृषा, छर्दि को नाशै अरु अग्निको बढ़ावै ॥ जीरकादिकषाय ॥ जीरा, करेलारस, शीतज्वर में हितहै वा नागरमोथा, पित्तपापड़ा यहशीत कषाय भी शीतज्वरको हरैहै। अरु इन्द्रयव, पित्तपापड़ा, धनियाँ, परवल, निंब इन्हों का कषायशहतयुत पित्त कफज्वरको नाशै ॥ नागरादिकषाय ॥ शुंठ, इन्द्र-यव, नागरमोथा, रक्तचन्दन, कटुकी इन्होंका कषाय पित्तकफज्वर को व भ्रम मूर्च्छा अरुचि छर्दिको हरैहै ॥ द्राक्षादिकषाय ॥ मुनक्का अमलतास, कुटकी, नागरमोथा, पीपलामूल, धनियाँ इन्हो का कषाय पित्तकफज्वरको व उदावर्त्त व शूलकोहरैहै ॥ पटोलादिकषाय ॥ परवल, इन्द्रयव, धनियाँ, नागरमोथा, आँवला, रक्तचन्दन इन्हों का कषाय कफ रोगको व पित्त कफ ज्वरजनित तृषा छर्दि दाहको हरैहै ॥ यवादिकषाय ॥ इन्द्रयव, पद्माख, धनियां, हल्दी, दारुहल्दी रक्तचन्दन, गिलोय, देवदारु, तेजबल, धमासा इनका कषाय पित्त कफज्वरको हरैहै। अरु तृषा, छर्दि, दाह को भी हरैहै अरु वीर्य्यको

बढ़ावे है अग्नि को दीपन करै है ॥ त्रायंत्यादिकषाय ॥ त्रायमाण नागरमोथा, कटुकी, सफेद कटैली, परवल इन्हों का कषाय पित्त कफज्वर में दीपनपाचनहै ॥ किरमालादिकषाय ॥ अमलतास, बच हिंग, बाला, धनियाँ, हल्दी, नागरमोथा, मुलहठी, भारंगी, पित्त-पापड़ा इन्होंका कषाय अष्टमांश शेषरहा शहतयुत पित्तकफज्वर को हरैहै पथ्यवाले को ॥ पटोलादिकषाय ॥ परवल, नागरमोथा बाला, रक्तचन्दन, कटुकी, पित्तपापड़ा, शुंठ, बाला, बासा इन्होंका कषाय कफ पित्तज्वरको हरैहै अरु तृषाको हरै ॥ गुडूच्यादिकषाय ॥ गिलोय, निंब, धनियाँ पद्माख, रक्तचन्दन इन्हों का कषाय तृषा छर्दि, अरुचि, सर्वज्वर इनको हरैहै ॥ शुंठ्यादिकषाय ॥ शुंठ, पित्त-पापड़ा, धमासा इन्होंकाकषाय कफपित्तज्वरको हरै। अथवा चिरा-यता, नागरमोथा, गिलोय, धमासा इन्हों का कषाय भी पित्तकफ ज्वरको हरैहै ॥ पंचतिक्तकषाय ॥ कटैली, गिलोय, शुंठ, पुष्करमूल चिरायता इन्होंका भी कषाय सर्वज्वरको हरैहै ॥ भारंग्यादिकषाय ॥ भारंगी, पुष्करमूल, नागरमोथा, कटैली, गोखुरू, बडीकटैली, अम-लतास, शुंठ इन्होंका कषाय पित्त कफज्वरको हरै है। अरुखांसी श्वास, अरुचि, पार्श्वमूल इन्होंको हरैहै ॥ पटोलादिकषाय ॥ परवल चन्दन, मूर्वा, कटुकी, पाढ़ा, गिलोय, पिपली इन्होंका कषाय पित्त कफज्वरको व अरुचि, छर्दि, खाज, विषइनकोभीहरैहै ॥ त्रिफलादिक-षाय ॥ त्रिफला, त्रायमाणा, मुनक्का, कटुकी इन्होंकाकषायपित्तकफज्वर को हरैहै ॥ वत्सकादिकषाय ॥ कुरैया, पद्माख, शुंठ, रक्तचन्दन, पाढ़ा मूर्वा, गिलोय, बाला, कटुकी इन्होंका कषाय सर्वज्वर को हरैहै अरु रक्त, पित्त, दाह, शूल, अम्लपित्त इनको नाशैहै ॥ अमृतादि कषाय ॥ गिलोय, निंब कटुकी, नागरमोथा, इंद्रयव, शुंठ, परवल चन्दन इन्होंका कषाय पिपली चूर्णयुत पीवै यहअमृताष्टकहै पित्त कफ ज्वरको हरैहै अरुछर्दि, अरुचि, हल्लास, दाह, तृषाइनको भी हरै है ॥ वासास्वरस ॥ पत्र पुष्प सहित बासाकारस मिश्री शहत युत कफपित्तज्वरको व रक्तपित्तको व कामलाको हरै है ३४६ ॥ कटुकीचूर्ण ॥ कटुकीका चूर्ण खांड़युत गरम जलसंगलेतो पित्त कफ

ज्वरकोनाशै ॥ लाजमण्ड ॥ धानकी खीलकरिकै वाचालकका लाज मण्डहो इसके पानसे पित्त कफज्वर जावै अरु तृषामिटै ॥ वाटमंड ॥ सुन्दर यवभुनेहुवों का बाटमण्डहोयहै यह कफपित्तज्वरको व कंठ रोगको व रक्तपित्त ज्वरको हरै है ॥ मुस्तादिनिर्यूह ॥ नागरमोथा पित्तपापड़ा, चिरायता इन्हों का निर्यूह व पित्तपापड़ा का यूष व धनियां पित्तपापड़ा का यूष पित्तकफज्वर को हरैहै ॥ निंबादियूष ॥ निंबकडू परवल इन्हों का यूष पित्त कफज्वरकोहरैहै ॥ भूनिंबादि ॥ चिरायता, अजमाण, कटुकी, बच, कायफल इन्होंकारज शरीरमें मलनेसे ज्यादहस्वेदमिटै ॥ चन्द्रशेखररस ॥ शुद्धपारा, शुद्धगन्धक,मरिच, सुहागा ये सब बराबर और चारोंकीसम मनशिललेवै मत्स्य पित्तामें तीनदिन भावना करै यह चन्द्रशेखर रसहै इसको २ रत्ती अदरख के अर्कसेंदेवै ऊपर शीतल जलपीवै अरु पथ्यतक्र चावल व वृन्ताक साग देवै तीनदिनतक देने से कफपित्तज्वरको व ज्यादह गरमीको व ज्वरको हरैहै ॥ सन्निपातज्वर लक्षण ॥ आपही कभीदाह कभी शीतलगै अस्थि संधि शिर इनमें पीड़ाहो। नेत्रोंमें जलआवै काले व लालहोजावैं अरु गढ़लनेत्रहों कानोंमें शब्द और पीड़ाहो। कंठमें कांटेपड़जावैं तन्द्रा मोह प्रलाप श्वास कास अरुचि भ्रम यहभीहों अरु जीभकाली अरु खरधरीहोकरलढ़रायजावै अंगसब बिकल होजायँ रुधिरमिला कफ व पित्त थूकै। अरु शिरकोधुनै तृषा अधिकलगै नींदआवै नहीं हृदयमें पीड़ाहो पसीना मूत्र मल उतरै नहीं उतरै तो थोड़ा उतरै शरीर अति कृशनहोवै कंठमें निरन्तर कफबोलै श्याम व लालमण्डल शरीरमें पड़जावै जबान से बोलै नहीं याने गूंगाहोजाय मुख, नासिका, कान इनका पाकहो पेटभारी होजावै अरु बातादि कुपित दोषोंका चिरकाल में पाकहो यह सन्निपात ज्वर के लक्षण हैं ॥ धातुपाक लक्षण ॥ नींदका नाश हो हृदयमें स्तंभहो मलका अवरोध हो शरीर भारीरहै अरुचिहो सब पदार्थमें अप्रीतिहो बलनाशहो ये धातुपाक के लक्षणहैं ॥ दोषपाक लक्षण ॥ दोष व प्रकृति विकारको प्राप्तहोवै अरु ज्वर व देहहलकी हो इन्द्रियोंको अपने २ विषयों के ग्रहण करनेकी शक्ति कमहो ये

दोषपाक के लक्षणहैं। सन्निपात ज्वरके अन्तमें कानके मूलमें दारुण सूजनहो तो हजारों में कोई एकजीवै ॥ साध्यासाध्य लक्षण ॥ बातादि दोष वृद्धिहुयेहों अरु अग्नि नाशहोजाय संपूर्ण लक्षणहों तो सन्निपात ज्वर असाध्य है इससे विपरीत कष्टसाध्य होय है। सन्निपात ज्वर सातदिनमें व नवदिनमें व ग्यारह दिनमें फेर घोर तरहोके शांतहोय व नाश रोगीको करै। और सन्निपातकी मर्यादा अठारहदिन व चौदहदिन वा बाईसदिनकी है चाहे शान्तहो चाहे रोगीको मारै॥ त्रिदोषज ज्वर॥ धातु मल पाकहोनेसे बातादि दोष की वृद्धि करिके सातदिन वा नवदिन वा बारहदिन इन दिनोंतक शान्तहोय वा मारदेवै॥ कटूफलादिपान॥ कायफल, त्रिफला, देवदारु, रक्तचन्दन, फालसा, कटुकी, पद्माख, कालाबाला ये औषध कर्ष तोल जलमें पकावै इसकापान त्रिदोषज्वर दाहसहितको अरु तृषा कोहरै दीर्घकालसे ज्वरवालों को यह अमृत समान है। दशमूलादि मण्ड लाजमण्ड दशमूल कषाय संग सिद्धकिया सन्निपात ज्वर में हितहै अथवा धमासा, गोखरू, कटैली इन्हों में सिद्धआहार। दोष शान्तिके अर्थ हितहै॥ ज्वरवाला धानकी खील के सत्तू सेंधा लवण सहितखावै इससे आरामहोवै जल्दी यह जीर्णहोवै यहलाज सत्तू रक्तपित्तमें तृषामें दाहमें ज्वरमें शीतलरूप हितहै परन्तु सन्निपातमें न देवै सन्निपात ज्वरमें प्रथम पित्तको हरै ज्वरवालोंमें पित्त शमनहीं मुख्यहै। सन्निपात ज्वरमें दाहयुत रोगीको शीतल जल से सेचनकरै तो रोगी जीवैनहीं यहकर्म वैद्यत्यागै॥ शिरषाद्यंजन॥ शिरसबीज, पिपली, मिरच, सेंधव इन्होंको गोमूत्रमें खरलकरि नेत्रों मेंआंजैतोशुद्धहोवै अथवा मैनशिल, बचइनको लहसुन रसमेंपीस नेत्रोंमेंआंजैतो मूर्च्छाहटै अथवा कस्तूरी, मरिच इनको अश्वकी लारमेंपीस अरु शहत मिलाय नेत्रोंमेंआंजैतो तन्द्राहटै। वा मिरच पीपल, शुंठ इन्हों को महीनपीस नासदे तो भी तन्द्रा मिटै। सन्निपात ज्वरवाला पहिले लंघन करै। अरु चतुर्थांश रहा जलठण्ढा करिपीवै यही औषधहै अरु समयपर औषधलेवै। सन्निपात ज्वर में तृषावाले को व पशुली शूलवाले को व तालुशोषवाले को जल

शीतल कभी भी न प्यावै जो प्यावै तो मृत्यु होइ॥ बालुकास्वेद॥ बात कफज्वरमें रुक्षस्वेद करवावै स्निग्ध स्वेद केवल वातज्वरमें करवावै॥ सैंधवादिनस्य॥ सैंधव लवण, सफ़ेद मरिच, सर्षप, कुलिंजन इनको बकरा मूत्रमें खरलकरि नस्य देवे तो तन्द्रा मिटै अथवा बिजौरा, अदरख इनका रस कछुक गरम करि अरु सैंधव, बिड़ियालोन, काचलोन इन्हों सहित नस्यबनायके नाकमें लेवै इससे कफ शान्तहो निकसजावै अरु शिर, हृदय, कंठ, मुख, पशुली इनकी पीड़ाहटै॥ कल्पतरुनस्य॥ मूर्च्छा नाश वास्ते कल्पतरु रसकी नस्यके समान कोई नस्य नहींहै॥ द्राक्षादि जिह्वालेप॥ जीभ रोग, तालुरोग, कण्ठरोग, जिह्वा खरधरी होय व जिह्वा फटजावै व कांटे पड़जावैं इनरोगों में दाखों को शहत में पीस घृतयुक्त करि जीभमें मलै इससे जीभके रोग मिटैं अरु कोमलहोवै॥ द्राक्षादिक वलग्रह॥ सेंधानमक व त्रिकटु इनको अदरखके रसमेंमिलाय इस को मुखमेंरक्खे रसकंठमें जानेदेवै इसमेंसे बारंबारथूंके तिसकरिकै हृदयरोग, मन्यास्तंभ, पशुलीशूल, शिर व कंठशूलइनकोनाशै अरु कफहटै शरीरहलकाहोवै। अरु संधिशूल, ज्वर, मूर्च्छा, निद्रा, श्वास गलरोग, मुख नेत्र का भारीपन व जड़पना व ग्लानि ये सब नाश होवैं। यह बलाबल देखके एकदिन वा दोदिन व तीन व चारदिन तक यह लेवे तो सन्निपात वालों को श्रेष्ठ है अष्टांगावलेह भी सन्निपात में अच्छाहै अरु ऊपर के अंगों के रोगों में सायंकाल में अवलेहलेवै अरु नीचेकेअंगोंके रोगोंमें प्रातःकालमें अवलेह श्रेष्ठ हैं॥ कट्फलादि अवलेह॥ कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, त्रिकटु धमासा, अजमोदा इनकोचूर्णकरि वस्त्रसेछान शहतमें अवलेहकरै इससे सन्निपातज्वर, हुचकी, श्वास, कास, कंठरोग नाशहोवै यही चूर्ण कफरोगमें अदरख रसमें मिलायदेवै। यही मोहको व मूर्च्छा को व तंद्राको व खांसीकोहरैहै अरु सम्पूर्ण सन्निपातोंमें शहतदेवे नहीं शहतशीतलहै अरु शीतलपदार्थ इसमें अच्छेनहीं अरुगरम पदार्थ संगशहत विषसमान होजाय है ऐसेजानो। सन्निपातज्वर में पहिले आमकफ नाशक औषधदेवै जब कफकोप क्षयहोजाय तब

पित्तबातकोहरै। अरु लंघन, तालुकास्वेद, नस्य, निष्ठीवन, अवलेह अंजन ये सब सन्निपात में हितहैं। लंघनोंका सहना यहदोषोंकी शक्तिहै अरु अच्छापुरुष लंघनसहतानहीं। सन्निपातमें जोऔषध देवै जब उसकाबेग शांतहोले तब दूसरीदेवै। सन्निपातज्वर में तपाये लोहसे शरीरमें पांचजगह दागदेवै अरु रुद्राभिषेक, ब्राह्मण भोजन, ग्रहजप, मंत्रादि से रक्षाकरै ४४॥ कंटकार्यादिपाचन॥ कटैली दोनों, शुंठ, धनियां, देवदारु इन्हों का कषाय सर्ब ज्वर को हरैहै॥ मनशिलादिअंजन॥ मैनशिल घोड़ाकी लार में पीसके नेत्रों में एकबारभी आंजै तो तंद्रानाश होवै। बबूल के पत्ती व हरीतकी इन्होंका बफारा पसीना को हरैहै। अरु चिरायता, कटुकी, कुलिंजन, अजमान, इन्द्रयव, कचूर ये बराबरले चूर्ण करि शरीर में मलै तो पसीना, कंठरोध, सन्निपात नाशहोवै अथवा अजमान वच, शुंठ, पिप्पली, अजमोदा इन्हों का चूर्ण महीनपीस शरीर में मलै तो सन्निपात जावै अथवा बच, नागविष एकभाग, मरिच ३ भाग, रानशेणी भस्म १६ भाग इन्होंकाचूर्ण धतूरेके रसमें भावना कियाहुआ धूपमें सुखाके शरीर में मलै यहपसीना व शीतको नाशै। अथवा भुनेहुयेचने, अजमान, बच, मिरच इन्होंका महीन चूर्ण शरीरमेंमलै तो पसीनानाशहोवै अथवा तुलसीकारस अर्जक त्रिकटु इनको शहतयुतकरि चाटै तो कफरोग व मूर्च्छा सन्निपातमें नाशकरै। अरु सन्निपातमें लंघन३ रात्रि व ५ रात्रि व १० रात्रितक करै अरु लंघन सन्निपातमें आरोग्यहोनेतकभी बुरानहीं। लंघनके अन्तमें पूर्वोक्त ग्रासदेवै॥ अतिलंघनलक्षण॥ ज्यादहलंघनको कफ पित्त सहेहै अरु आमक्षय पीछे वायु क्षणमात्रभी लंघनकोसहेनहीं। हीनलंघनसे मैथुनमें अश्रद्धा व शरीरभारीहोय समलंघनसे रुचि उपजै शरीरहलका होवै ग्लानि मिटै प्रसन्न चित्तहोइ सब उपद्रव शांतहोवैं अरु अतिलंघनसे मोहउपजै अरु संधि शिथिलहों अरु वायुका रोगहोवै ऐसे लंघन प्रकार कहाहै ४१८ पंचमुष्टिकयूष से गोखुरू चूर्णयुतकरि दोषशमन होनेतकदेवै। यव १ कोल २ कुलथी३ मूंग४ शुंठ५ इन्होंको चार२ तोलेलेवै आठगुणाजलमेंपकावै इस

से बातपित्त कफनाशहोवै अरु शूल,गुल्म,श्वास,कास,ज्वर ये नाशैं अरु सप्तमुष्टिकयूषकहतेहैं यव१ कोल२ कुलथी३ मूंग४ सुकेमुले५ धनियाँ ६ शुंठ इन्हों का यूष सन्निपात ज्वरको व बातकफ रोग को व आमरोग व कंठरोगको हरै अरु मुखको शुद्धकरै। सन्निपात में जो मनुष्यकांपै अरु ज्यादहबकै कछुभी संज्ञा न रहै तिसकी चिकित्सा कहेहैं। ऐसेरोगीको पुराने घृतसे अभ्यंग शरीरकाकरै पीछे बला, रास्ना, गिलोय इन्हों को तेलसे अंगोंको सेचनकरै अथवा वर्त्तक, लावक, तित्तर, शशा, कुलिंग इनजीवोंके मांसरस से अग्निबल पूर्वक तृप्तकरै। अरु सन्निपातवाले को भूखलगने में जो मांसखानेको देवै वहवैद्य नीचहै प्रतिष्ठाको प्राप्तहोवै नहीं॥ सुवर्णादिलेप॥ सोना, मोती, चांदी, मूँगा, कस्तूरी, केशर, गोरोचन, कौड़ी रुद्राक्ष, मुलहठी, बेलफल, कुलिंजन, खजूर, पुनर्नवा मुनक्का, पिपली, शुंठ, जीयापोता, मृग सारंगासिंग, कतकबीज, एरण्डजड़ शरजातितृण, मयूरिका, श्वेतसांठी स्त्री के दूधमें पीसकरि शरीर में लेपकरै तो सन्निपातआदि सबरोग नाशहोवै। सन्निपात ज्वरमें कफ निग्रहपहिलेकरै कफशांत बाद स्रोत प्रकाशहोतेहैं अरु शरीरहलका होवै अरु तृषामिटै॥ अन्य सन्निपातनिदान॥ सन्निपात १३ प्रकारके हैं बातोल्वण १ पित्तोल्वण २ कफोल्वण ३ बातपित्तोल्वण ४ बात कफोल्वण ५ पित्तकफोल्वण ६ त्रिदोषोल्वण ७ हीनबात मध्य पित्त कफाधिक ८ हीनबात मध्यकफ व पित्ताधिक ९ हीनपित्त मध्य कफ बाताधिक १० हीनपित्त मध्यबात कफाधिक ११ कफहीन मध्यबात पित्ताधिक १२ हीनकफ मध्यपित्त बाताधिक १३ ऐसेहोयहैं॥ बातोल्वणसन्निपातलक्षण॥ संधिहाड़शिर इन्होंमेंशूलहो ज्यादहबकै अरु शरीर भारीरहै। अरु भ्रमहो तृषाहो कंठ व मुखसूखे रहैं बाताधिक व कफपित्तहीन ऐसासन्निपात में होवै॥ पित्तोल्वणसन्निपातनिदान॥ मलमूत्र लालहो अरु दाह हो अरु पसीना आवै तृषालगै बल नाशहो मूर्च्छाहो ऐसेलक्षण पित्ताधिक सन्निपातमें होयहैं॥ कफोल्वणसन्निपातनिदान॥ आलस्यहोवै अरुचिहोय हृल्लासहो दाहहो बमन हो अरति हो भ्रमहो तंद्रा व कासहो ऐसे लक्षण कफोल्वण

सन्निपातके हैं ॥ वातपित्तोल्वणनिदान ॥ भ्रमहो प्यासलगै, दाहहो शरीर भारीरहै। शिरमें शूलहोय ये लक्षण मंदकफ ज्वरबात पित्तो-ल्वण सन्निपात में होय हैं॥ वातकफोल्वणनिदान ॥ शीतलता, कास अरुचि, तंद्रा, तृषा, दाह, अंगपीड़ाऐसेलक्षणबातकफोल्वणपित्तावर सन्निपातमें होय हैं॥ पित्तकफोल्वणनिदान॥ छर्दि हो जाड़ालगै बार-बार दाहहो तृषाहो मोहहो हाड़ों में पीड़ाहो मन्दबात पित्तकफो-ल्वण सन्निपात में ऐसे लक्षण होयहैं॥ त्र्युल्वणसन्निपातनिदान॥ सर्ब लक्षण युतहो उसे त्र्युल्वण सन्निपात कहै हैं॥ हीनबात मध्यपित्त कफाधिक सन्निपात लक्षण ॥ पीनस, छर्दि, आलस्य, तंद्रा, अरुचि अग्निमन्द ऐसे लक्षण हीनबात मध्यपित्त कफाधिक सन्निपातके होयहैं॥ हीनबात मध्यकफ पित्ताधिक निदान ॥ नेत्र मूत्र त्वचा हल्दी समानहोवैं दाहहो तृषाहो अरुचिहो भ्रमहोऐसेलक्षणहीनबातमध्य कफ पित्ताधिक सन्निपात में होयहैं॥ हीनपित्त मध्यकफ बाताधिक सन्निपात निदान॥ शिरमेंशूल हो कंपहो, श्वास, प्रलाप, छर्दि, अरुचि ये लक्षण हीनपित्त मध्यकफ बाताधिक सन्निपात में होयहैं॥ हीन पित्त मध्यबात कफाधिक सन्निपात निदान ॥ शीतलगै शरीर भारी हो तन्द्राहो प्रलापहो हाड़शिरइन्होंमें शूलहो ऐसा लक्षणहीनपित्त मध्य बात कफाधिक सन्निपातका होयहै॥ हीनकफ मध्यबात पित्ता-धिक सन्निपातलक्षण॥ सन्धिमें पीड़ाहोय अग्निमंदहोय तृषालगै दाह अरुचिभ्रमहो ऐसे लक्षण हीनकफ मध्यबात पित्ताधिक सन्नि-पातमें होयहैं ॥ हीनकफ मध्य पित्त बाताधिक सन्निपात निदान ॥ कासहो श्वासहो खेहर हो मुख शोष हो पंशुली में शूलहो ऐसे लक्षण कफहीन मध्यपित्त बाताधिक सन्निपात में होय हैं ४४६॥ वातोल्वण सन्निपात चिकित्सा ॥ इस सन्निपात में पंचमूल काकाढ़ा दोष बलाबल देखिकै गरमदेवै॥ मुस्तादिकाढ़ा॥ नागरमोथा, पंच-मूल इनका काढ़ाभी इस सन्निपातकोहरै॥ कटूफलादिकाढ़ा॥ काय-फल, नागरमोथा, बच, पाढ़ा, पुष्करमूल, जीरा, पित्तपापड़ा, देवदारु हरीतकी, काकड़ासिंगी, पिपली, चिरायता, शुंठ, भारङ्गी, इन्द्रयव कुटकी, कचूर, रोहिषतृण, धनियां इन्होंका काढ़ा हींग व अदरखरस

युत कानके मूलकी सूजनको व गल सूजनको व कफवातज्वरको व श्वासको व कासको व हुचकीको व हनुग्रहको व गलगण्डको व गण्डमालाको व स्वरभेद को व कफरोगको व शिरके भारीपनेको व बधिरपनेको व कफमेदकी वृद्धिको व दाह मूलक ज्वरोंको व सन्निपात ज्वरोंको व अभिन्यासको व मूर्च्छाको नाशैंहै ॥ पित्तोल्वण सन्निपात चिकित्सा ॥ फालसा, त्रिफला, देवदारु, कायफल, रक्तचंदन पद्माख, कटुकी, पृश्निपर्णी इन्होंका काढ़ा शीतलरूप इस सन्निपात को हरैहै ॥ चन्दनादिपर्णी ॥ चन्दन, पद्माख, कटुकी पृथकपर्णी इन्हों काकाढ़ा शीतलकिया पीवै तो इस सन्निपात को नाशै ॥ मुस्तादि ॥ नागरमोथा, पित्तपापड़ा, बाला, देवदारु, शुंठ, त्रिफला, धमासा, लघुनीलि, कपिल्ला, निशोत, चिरायता, पाढ़ा, बला, कटुकी, मुलहठी पीपलामूल यह मुस्तादिगणहै इसका जल यानी कषाय सन्निपात को हरैहै अरु पित्ताधिक सन्निपात ज्वरको व मन्यास्तंभको व उरोघातको व हनुस्तंभको व शिरोग्रहको नाशैहै ॥ किरात तिक्तादिकषाय ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शुंठ, पाढ़ा, बाला, कमल इनका कषाय इस सन्निपातको हरैहै ॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ कचूर, पुष्करमूल, कटेली, काकड़ासिंगी, धमासा, इन्द्रयव, परवल, कटुकी इन्हों काकाढ़ा सन्निपातज्वरको व कासको व श्वासको व दिनमें नींदकोव रात्रिमें जागरणको व मुखशोषको व तृषाको व दाहको व त्रिदोष रोगको हरैहै ॥ कफोल्वण सन्निपात चिकित्सा ॥ दोनोंकटेली, पुष्करमूल, भारंगी, कचूर, काकड़ासिंगी, धमासा, इन्द्रयव, कडूपरवल, कटुकी इन्हों का काढ़ा इससन्निपात ज्वरको व उपद्रव युत श्वासको हरैहै ॥ अथवा यह पूर्वोक्तबृहत्यादिगण ॥ दशमूल, फालसा त्रिफला, देवदारु, कायफल इन्हों का कषाय कफोल्वण सन्निपातज्वर को हरैहै ॥ त्र्युल्वणसन्निपात चिकित्सा ॥ शुंठि, धनियां भारंगी, पद्माख, रक्तचन्दन, परवल, निंब, त्रिफला, मुलहठी, बला खांड़, कटुकी, नागरमोथा, गजपिपली, अमलतास, चिरायता, गिलोय दशमूल, कटेली इन्होंका काढ़ा त्र्युल्वण सन्निपातज्वरको व सन्निपात उत्थानको व मृत्युरूप रोगको नाशैहै ॥ व्योषादिकाढ़ा ॥ शुंठ

मिरच, पिपली, नागरमोथा, त्रिफला, निंब, कडूपरवल, कटुकी इन्द्रयव, चिरायता, गिलोय, पाढ़ा इन्होंकाकाढ़ा त्रिदोषज ज्वर को हरैहै॥ वातपित्तोल्वण सन्निपात चिकित्सा॥ लघुपंचमूल काकाढ़ा शहदयुत बात पित्तज्वरको व बातपित्तोल्वण सन्निपात को हरै है॥ वातकफोल्वण चिकित्सा॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शुंठ इन्हों का काढ़ा चातुर्भद्र नामक बात कफोल्वण सन्निपात को हरैहै॥ पित्तकफोल्वण चिकित्सा॥ पित्तपापड़ा, कायफल, कुलिंजन, कालाबाला रक्तचन्दन, शुंठ, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, पिपली इन्होंका काढ़ा पित्तकफोल्वण सन्निपातको व तृषाको व दाहको व अग्नि मन्दता को हरैहै॥ हीनवात मध्यापित्त कफाधिक इस आदिले छहों सन्निपातों की एकतन्त्र चिकित्सा॥ जो दोष बढ़ाहुआ हो उसे क्षयकरैअरु जो दोष क्षयहो उसे बढ़ावै। ऐसेहीन वृद्ध दोषों की चिकित्सा करै। बढ़ा हुआ दोष शान्तहुआ पीछे मध्यदोष आपहीशान्तहो अरु क्षय हुआ दोष वृद्धिहुआ पीछे मध्यम दोष आपही बढ़ै॥ द्वात्रिंशांग॥ भारंगी, चिरायता, निम्ब, नागरमोथा, कटुकी, वच, शुंठ, मिरच पीपल, बासा, बिशाला, रास्ना, धमासा, कडूपरवल, देवदारु हलदी, पाढ़ा, कुचला, ब्राह्मी, दारुहलदी, गिलोय, निसोथ, अतीस, पुष्करमूल, त्रायमाण, कटैली, दोनों इन्द्रयव, त्रिफला, कचूर बराबर ले काढ़ाकरै इससे तेरह सन्निपात नाशहोवें अरुशूल को व कासको व हुचकीको व श्वासको व उरुस्तंभको व अंत्रवृद्धि को व कंठरोग को व अरुचिको व संधिग्रह को नाशै दृष्टान्त जैसे सिंह हस्ति समूहको तैसे॥ अष्टादशांगकाढ़ा॥ चिरायता, देवदारु दशमूल, शुंठ, नागरमोथा, कटुकी, इन्द्रयव, धनियां, गजपिपली इन्होंकाकाढ़ा तंद्राको व प्रलापको व खांसीको व श्वासको व अरुचिको व दाहको व मोहको व श्वासयुतज्वरको व अष्टविधिज्वरोंको व मृत्यु तुल्यज्वरको हरै॥ द्वादशांग॥ दशमूलके कषायमेंपुष्करमूल व पिपली मिलाय देवै इससे कास श्वासयुत सन्निपात ज्वरजावै॥ सन्निपातावररेचन॥ बेलफल, निसोथ, जयपालजड़, असलतास इन्होंका कषाय नीलि चूर्ण युत अरु घृत गौ का मिलाय पीवै तो

जलदी विरेचन होवै ॥ संज्ञानाशचिकित्सा ॥ जिसे मूर्च्छा हो अरु ज्यादहबकै अरु कांपै तिसे बत्तक, लावक, तित्तर, कुलिंग इनजीवों के मांसरससे तृप्तकरै अरु पुराने घृतसे शरीरमें अभ्यंगकरवावै। अरु बला, रास्ना, गिलोय इन्होंके तेलसे सेचन करै ॥ बिल्वादि काढ़ा ॥ बेलफल, अरणी, स्योनाक, गम्भारी, पाठला, शालिपर्णी पृश्निपर्णी, दोनों कटैली, गोखुरू, दोनों दशमूल इन्हों का काढ़ा सन्निपात ज्वरको हरै है ॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ शुंठ, देवदारु, कचूर, पित्त-पापड़ा, बड़ीकटैली, कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, धमासाइन्हों का काढ़ा पिपलीचूर्ण शहद युत सन्निपातज्वरको व जीर्णज्वर को व कास को व विषमज्वर को हरै है ॥ अर्कादिकाढ़ा ॥ आक, धमासा चिरायता, देवदारु, रास्ना, निर्गुण्डी, बच, अरणी, सेव, पिपली, पीप-लामूल, चवक, चीता, शुंठ, अतीस, मार्कव इन्होंका कषाय सन्नि-पात ज्वरोंको व वायुरोगोंको व दन्तबन्धको व धनुर्वातको व शीत को व श्वासको व अंग जकड़नेकोनाशै है अरु कास सूतिकारोगको भी नाशै है ॥ तिक्तादिकाढ़ा ॥ कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, गिलोय कचूर, रास्ना, पिपली, पुष्करमूल, त्रायमाण, कटैली, देवदारु, शुंठ हरीतकी, धमासा, भारंगी इन्होंका काढ़ा सन्निपातज्वरको व दिन में शयनको व रात्रि जागरणको व मुखशोषको व दाह को व कास को व सर्व्वश्वासको नाशैहै। पित्ताधिक सन्निपातमें शुंठ्यादिकाढ़ा हित है। अरु कफाधिक सन्निपातमें वृहत्यादि काढ़ा हितहै। वा-ताधिक सन्निपातमें कटुफलादि काढ़ा हित है ॥ दार्व्याद्यष्टादशांग ॥ देवदारु, शुंठ, चिरायता, धनियां, कटुकी, इन्द्रयव, गजपिपली दशमूल, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा मृत्युतुल्य सन्निपातज्वरको व कासको व हृदयशूल को व पांशुपीड़ा को व श्वासको व हुचकीको व छर्दि को हरै है ५०० ॥ गुडूच्यादिकाढ़ा ॥ गिलोय, चन्दन, पुष्कर-मूल, शुंठ, इन्द्रयव, धमासा, हरड़, अमलतास, बाला, पाढ़ा, धनियां नागरमोथा, कटुकी इन्होंकाकाढ़ा पिपलीचूर्णयुत तन्द्राको व कास को व ज्वरको व श्वासको व तृषाकोहरैहै अरुमलमूत्र रोध व वायु रोध व अवष्टंभ व सन्निपातज्वर इनको भी हरै है। यह पाचन है

दीपन हैं ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, दशमूल इन्हों का कषाय तेरह बिधिके सन्निपातज्वरकोहरैहै॥ विश्वादिकाढ़ा ॥ शुंठ, अतीस, दशमूल गिलोय, पाढ़ा, पिपली, इन्द्रयव, चिरायता, कटुकी, बासा इन्होंका काढ़ा ज्वरसे क्षीण रोगीको हित है ॥ त्र्यूषणादिकाढ़ा ॥ शुंठ, मिरच पीपल, दशमूल, भारंगी, गिलोय इन्होंका काढ़ा उग्र सन्निपातज्वर को हरै है ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल, पीपलामूल, शुंठ, भारंगी बोर, रानबोर इन्हों का काढ़ा सन्निपात ज्वरको हरै है ॥ आटरुषादि काढ़ा ॥ बासा, पित्तपापड़ा, निम्ब, मुलहठी, धनियां, नागरमोथा शुंठ, देवदारु, बच, इन्द्रयव, गोखुरू, पीपलामूल इन्हों का काढ़ा सन्निपातज्वर को व श्वासको व अतीसारको व कासको व शूलको व अरुचिकोनाशैहै ॥ कटूफलादिकाढ़ा ॥ कायफल, त्रिफला, देवदारु चंदन, फालसा, कडूपरवल, पद्माख, बाला इन्होंका काढ़ा सन्निपात ज्वरमें दाहको हरै है जिसे बहुत दिनोंसे ज्वर आताहो उसेअमृत तुल्यहै ॥ किरातादिकाढ़ा ॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय, शुंठ यह किरातादि गणहै और इसे चातुर्भद्रभी कहतेहैं यहदशमूलसहित इससे बहुतकालका ज्वर मिटै व वातकफोल्वण सन्निपात जावै व त्रिदोषज्वर जावै अरु यही किरातादि निसोतयुत जुल्लाबकरिशुद्धि करै अरु दशमूल, कचूर, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, धमासा, भारंगी इंद्रयव, परवल, कटुकी इन्होंकाकाढ़ा सन्निपातज्वरको हरै है अरु कास को हृदयशूलको व पशुली शूलको व श्वासको व हुचकीको व छर्दि को हरै है ॥ पंचतिक्तक काढ़ा ॥ कटैली, पुष्करमूल, चिरायता गिलोय, शुंठ इन्होंका काढ़ा अष्टप्रकार के ज्वरोंको हरैहै ॥ दार्व्या-दिकाढ़ा ॥ दारुहल्दी, नागरमोथा, चिरायता, त्रिफला, कटैली, पर-वल, हल्दी, निम्ब इन्होंका काढ़ा सन्निपातज्वर में मूर्च्छा को नाशै है ॥ ग्रंथ्यादिकाढ़ा ॥ पीपलामूल, इंद्रयव, देवदारु, गुग्गुल, वायविड़ंग भारंगी, माकव, शुंठ, मिरच, पिपली, चीता, कायफल, पुष्करमूल रास्ना, हरीतकी, कटैली दोनों अजमान, निर्गुण्डी, चिरायता, बच चवक, पहाड़मूल इन्होंकाकाढ़ा सब सन्निपातों को व बुद्धिभ्रंश को व स्वेदको व शीतको व प्रलापको व शूलको व आध्मानको व बिद्र-

धिको व बातकफको व बातव्याधिको व सूतिकारोगकोनाशै है५२१॥ लहसुनादिकाढ़ा॥ लहसुन, चिरायता, तिरकांड, भारंगी, अतीसइन्हों का काढ़ा घोड़ा के मूत्र में बनायाहुआ पीवे तो दारुण सन्निपात ज्वरजावै अथवा दशमूलके यूष में कायफल का चूर्ण मिलायपीवैतो सन्निपातज्वर जावै अथवा यहीकाढ़ा अदरखके अर्ककेसंग पीवै तो सन्निपातज्वर जावै॥ पंचमूलीकषाय॥ पंचमूल व किरातादि गण त्रिदोषज ज्वर में हितहै शहद युत यही काढ़ा पित्ताधिक में हित है अरु पिपलीयुत यहीकाढ़ा कफाधिक में हितहै॥ अर्कादिकाढ़ा॥ आक पीपलामूल, सेंवा, देवदारु, चवक, निर्गुण्डी, पिपली, रास्ना, भृङ्ग सांठी, चीता, बच, चिरायता, शुंठ इन्होंका काढ़ा सन्निपातज्वरकोव सप्तबात को व सूतिका रोग को व नानाप्रकार के वायुरोग को व शीतको व अपस्माररोगको नाशै जैसे कामदेव को महादेवजी तैसे॥ मृतसंजीवनबिटिका॥ बच नागबिष, शुंठ, मिरच, पीपल, गन्धक सुहागाभुना, मृततांबेकीभस्म, धतूरा के बीज, सिंगरफ ये सब बराबर ले एकदिन भांगके रस में खरलकरै पीछे चने समान गोली बनावै और आककी जड़के कषाय के संग गोली खावै यह मृतसंजीविनी गोली सन्निपात ज्वरको नाशकरै है॥ त्रिनेत्ररस॥ शुद्धपारा शुद्ध गंधक, ताम्रभस्म ये औषध बराबर लेवै तीनों तोल समान गौके दूधमें मर्दन करै धूपमें पीछे एकदिन निर्गुण्डी रसमें खरल करै पीछे शिग्रुज रसमें खरल करै फिर गोला बनाय अंधमूषागत करै फिर तीन प्रहर बालुका यंत्रमें पकावै तिस पीछे खरलमें पीसै फिर अष्टमांश बचनागबिष मिलाय मलै यानी खरलकरै ऐसे त्रिनेत्ररस सिद्ध होयहै २ रत्ती रस पंचकोलकषाय संग वा बकरी के दूधके संग देवै इससे सन्निपातज्वर दारुणभी नाशको प्राप्त होवै इसमें संदेह नहीं॥ भस्मेश्वररस॥ बन के उपला की राख १६ तोले बिष यानी बचनाग १ तोला मरिच १ तोला इनको मिलायपीसै यह भस्मेश्वर रसहै सन्निपातज्वर को नाशकरै है १ रत्ती अदरखकेअर्क संग देवै॥ अग्निकुमाररस॥ पारा २ कर्ष गंधक २ कर्ष इन्होंकी कजली करै फिर हंसपदी रसमें १ दिन खरलकरै पीछे कल्ककीगोली

करि कांच की शीशीमें घालै अरु १ कर्ष बिष घालै फिर शीशीका मुख बन्दकरै फिर गलेतक बालुका से भरदेवै फिर १ दिन अरु २ रात्रि इतने कालतक दीप्तअग्नि से पकावै फिर स्वांग शीतल होने पर काढ़लेवै फिर ६ माशे बिष याने बचनाग ६ माशे मरिचकेसंग द्रव्यको खरल करै ऐसे अग्निकुमार रस होयहै १ रत्ती दिया हुआ सन्निपातज्वर को व बायुको व मन्दाग्नि को व शूलको व संग्रहणी को व गुल्म को व क्षय को व पांडुको व श्वासको व कास को नाश करै है ॥ पंचवक्रूरस ॥ गंधक, पारा, ठांकणखार, मरिच, बिष इन्होंको धतूराके रसमें एकदिन खरलकरै ऐसे पंचवक्त्ररससिद्धहोयहै १ रत्ती अदरख रसमें देवै इसमें सन्निपातज्वर नाश होयहै ॥ दूसराप्रकार ॥ शुद्धपारा, शुद्ध बच नाग बिष, शुद्ध गंधक, मरिच, सुहागा, पिपली इन्हों को धतूरा के रसमें १ दिन खरल करै पीछे सुखावै ऐसे पंच-वक्त्ररस सिद्ध होयहै २ रत्ती आकके जड़की कषायकेसंग शुंठ मिरच पीपली सहित दिया सन्निपात को नाशै है इसपै दही चावल पथ्य है अरु शीतल जल इसी रसमें शहद मिलालेवै तो कफादिक दोष नाशको प्राप्तहोवै यही रस शहद अदरख रस युत पीवै तो अग्नि-मन्दता हटै इसरसकेऊपर घृतभोजन बहुतश्रेष्ठ है॥ उन्मत्तरस ॥ शुद्ध पारा एकभाग गंधक एकभाग इनको धतूराकेरसमें एकदिन खरल करै दोनोंकी बराबर शुंठ मरिच पिपलीगेरै महीन पीसै ऐसे उन्मत्त रस सिद्धहोयहै इसकी नाकमें नस्यदेनेसे सन्निपात नाशहोवै ॥ कनक सुन्दररस ॥ सोना आठशाण, पारा बारहशाण, गंधक बारह शाण तांबाभस्म दोशाण, अभ्रक भस्म चारशाण, स्वर्णमाखी दोशाण, बङ्ग दोशाण, शुद्धसुरमातीनशाण, लोहभस्मआठशाण, शुद्धबिषबचनाग तीनशाण, ग्रंथिपर्णी४तोले एकदिननींबूकेरसमें खरलकरै फिरमंद २ अग्निमें पचावै तिसपीछे सूक्ष्मचूर्णकरै ऐसे कनक सुंदररस होयहै १ माशा अदरख के अर्क संग अथवा लहसुन के रस संग देवै इससे सन्निपात ज्वर व किलासकुष्ठ व सर्व कुष्ठ व बिसर्पराेग व भगं-दर रोग व ज्वर व बिष व अजीर्ण इनको यहरस नाशकरैहै ५५६ ॥ तान्द्रिकसान्निपात ॥ सन्निपात ज्वर में तन्द्रा होय उसे युक्ति से वैद्य

जीतै यह ज्वरों में कष्ट साध्य उपद्रव है ॥ तन्द्रालक्षण ॥ जिस ज्वर केमध्य में आमाशय में कफ सञ्चित होनेसे सन्निपात ज्वर में तन्द्रा होयहै अथवा पतलारस व दूध व दिनमें शयन करना इन्हों से दुर्बल को व कमबातवालेको कफ कोप को प्राप्तहोयहै वह कफबायु मार्ग को रोक के धमनी नाड़ियों में जाय पहुंचे है अरु तन्द्रा को उपजावे है उस तन्द्राका लक्षण कहते हैं तन्द्रा वाले मनुष्य के नेत्र कछुक खुलेरहैं अरु गदले होजावैं अरु नेत्र के तारे भ्रमण लगैं अरु कभी नेत्रभपैं कभी खुलैं पलक चंचल रहैं सीधे शयन करते हुओं के मुख खुल जावैं दांत दीखैं अरु ओष्ठ फटैं अरु चिकना कफ कण्ठ में जावै अरु कण्ठ मार्ग को रोक देवै अरु शरीर बिकार को प्राप्त होवै इसतन्द्रावाला मनुष्य तीन रात्रितक साध्य पीछे असाध्य होय है ॥ असुरादि अंजन ॥ कासा मलकाचूर्ण कस्तूरी इन को शहदमें मिलाय नेत्रों में आंजैतोतन्द्रिक सन्निपात नाश होवै ५६४॥ लोहांजन॥ लोह की भस्म, सफ़ेद लोध, मरिच, गोरोचन इन्हों का अंजन नेत्रोंमें आंजै तो तन्द्रा नाशहोवै॥ सैंधवादिअंजन॥ सेंधानमक मैनशिल, शुंठ, मिरच, पीपल इन्होंका अंजन तन्द्रा, मोहको नाशैहै ॥ ज्योतिष्मतीनस्य ॥ ज्योतिष्मतीतेल, पेठाजड़, बकराके मूत्र में पीस नस्य देवै तो तन्द्रानाश होवै ॥ जातीपुष्पनस्य ॥ जावित्री पुष्प, मूंगा मरिच, कटुकी, बच, सेंधानमक इन्हों को बकराके मूत्र में पीस नस्य देवै तो तन्द्रानाश होवै ॥ द्राक्षाद्यवलेह ॥ स्निग्ध आमका को पीस करि मुनक्का दाख संगमिलावै अरु शुंठ मिलाय शहद में अवलेह करै इसे चाटै तो श्वास, कास, मूर्च्छा, अरुचि नाशहोवै ॥ सन्निपात प्रकोप कारण ॥ खट्टा, चिकना, गरम, तीक्ष्ण, कटु, मीठा, मदिरा, तापन सेवा, कषाय, काम, क्रोध ज्यादह करना, अतिरूखे, भारी जड़पदार्थ मांस अतिपदार्थ सेवन, शीतपदार्थसेवन, शोक, श्रम, चिन्ता, पिशाच बाधा, अति स्त्री प्रसंग इन्हों के ज्यादा सेवन से चैत्र, बैशाख, श्रावण भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक इनमासों में बहुत करके सन्निपात कोप को प्राप्तहोय है ॥सन्निपातनाम॥ संधिक १ अंतक २ रुग्दाह ३ चित्त विभ्रम ४ शीतांग ५ तंद्रिक ६ कण्ठकुब्ज ७ कर्णक ८ भग्ननेत्र ९

रक्तष्ठीवी १० प्रलापक ११ जिह्वक १२ अभिन्यास १३ ऐसेभेदहैं॥ इन्होंकीमर्यादा॥ संधिक७दिनरहै अन्तक१० दिन रुग्दाह २० दिन चित्तविभ्रम २४ दिन शीतांग १५ दिन तन्द्रिक २५ दिन कण्ठकुब्ज १३ दिन कर्णक ६० दिन भग्ननेत्र ८ दिन रक्तष्ठीवी १० दिन प्रलापक १४ दिन जिह्वक १६ दिन अभिन्यास १६ दिन इन्होंकी ज्यादह उमरयह है अरु मृत्यु क्षणमात्र में भी होजावे तो आश्चर्य नहीं॥ साध्यासाध्य॥ संधिक, तन्द्रिक, कर्णक, कण्ठकुब्जक, जिह्वक, चित्तविभ्रंश ये छः साध्यहैं अरु इन्हों से बाकी सात मारने वालेहैं॥ संधिक सन्निपात॥ ज्वर को पूर्वरूप में शूलचलै, अरु शोषहो बायु से बहुत जगह पीड़ाहो। कफवृद्धिहो। ज्वरवेग ज्यादह हो बल नाश होजावे अरु नींद आवे नहीं ये लक्षण संधिक सन्निपात के हैं॥ संधिकारिरस॥ शुद्धपारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, तीनों खार जीरा, शुंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, लवण इन्होंको बराबर ले चीता के रस में यानी काढ़ा में १ दिन खरलकरै यहसंधिकारि रसहै इसे ५ रत्ती खावे पीपली शहदसंग ऊपर गरम जलपीवे॥ सन्निपातानलरस॥ पाराभस्म, गन्धक बराबर दोनों के बराबर तांबे की भस्म इसी सम खपरिया, इसीसमसिंगरफ इन्हों को अमलबेत के रस में इसके अभाव में चने के खार के रस में खरलकरै अरु नींबूकेरसमें खरलकरे १ पुट दे भूधरयंत्र में पकावे पीछे हिंग, कपूर, शुंठ, मिरच पिपली इन्हों सहित द्रव्य को खरलकरै ब्राह्मी के रस में सातपुट दे पीछे अदरख अर्क में सातपुट दे। फिर महाराष्ट्री के रसमें सात पुट दे फिर निर्गुण्डी रस में सात पुटदेवै फिर कनेर के रसमें सात पुट दे फिर चूर्ण करि इस रसको ६ रत्ती अदरखके अर्क संग देवै तो सन्निपात नाश होवै अरु अतितन्द्रा, ज्वर, श्वास, कास, ग्लानि अतीसार इन्हों को भी नाश करै॥ निर्गुण्ड्यादि धूप॥ निर्गुण्डी गुग्गुल, महुआ, निंबपत्र, राल इन्होंका धूपसंधिक सन्निपातको हरै॥ दूसरा निर्गुण्ड्यादिधूप॥ निर्गुंडी, निंब, कुलींजन, भांग, बिंदोलाकपास का, महुआ, बच, तगर, देवदारु, आकजड़, आजमान, चीता, बेलफल इन्होंकाचूर्णकरि शहदमें व आसवमें भिगोय इन्होंकाधूपग्रहपीड़ा

को व संधिक सन्निपात को नाशैहै ॥ देवदारुकाढ़ा ॥ देवदारु, कचूर अमरबेल, रास्ना, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा गुग्गुल युतपीवै तो बायु रोग को नाशै ॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, एरंडमूल, जलपिपली, नील-कोरांटी, तेलियदेवदारु, गिलोय, रास्ना, शतावरि, कचूर, कटुकी, बासा शुंठ, दशमूल इन्हों का काढ़ा संधिक सन्निपात को व मन्यास्तम्भ बायुको हरैहै ॥ बचादिकाढ़ा ॥ बच, धमासा, गिलोय, भारंगी, कोरांट देवदारु, नागरमोथा, शुंठ, वृद्धदारु, रास्ना, गुग्गुल, असगन्ध, एरंड-मूल, शतावरिइन्होंकाकाढ़ा सन्निपात संधिककोवजड़ताको वग्लानि को व भोलको व पक्षाघातको नाशै है ॥ रास्नादिकाढ़ा ॥ रास्ना, शुंठ गिलोय, कोंरांठा, नागरमोथा, शतावरि, हरीतकी, देवदारु, कटुकी कचूर, बासा, एरंडमूल, दशमूल इन्होंका काढ़ा प्रभातमें पानकिया अंतवृद्धिको व ज्वर को व पीठिका कमल पीड़ाको व संधिक सन्नि-पातको नाशकरैहै ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, एरंडमूल, शुंठ, देवदारु रास्ना, हरीतकी इन्होंकाकाढ़ा प्रभातमें पिया सकल बात रोगों को नाशै है ॥ ग्रन्थादिकाढ़ा ॥ पिपलामूल, बहेड़ा, हरीतकी, अमलतास आँवला, बासा इन्हों का काढ़ा एरंडतेल युत बायु रोगको व मन्द-पनाको हरैहै ॥ पञ्चमूल्यादि काढ़ा ॥ पंचमूल, पिपली, सैंधव, शुंठ इन्हों का चूर्ण कुलथीका कषाय युतकरि पीवै तो बायुरोगजावै ॥ रास्नादि काढ़ा॥रास्ना, गिलोय, कचूर, बरधारा, देवदारु, शुंठ, त्रिफला, शतावरि इन्हों का काढ़ा गुग्गुलसंयुक्त संधिक सन्निपातको हरै है । क्षारा-दि परिमाण, जीरा, गुग्गुल, खार, लवण, शिलाजीत, हिंग, शुंठ, मिरच पीपल ये ४ माशे क्वाथमें देने प्रतिवासके योग्य हैं अरु संधिक सन्निपात में लंघन श्रेष्ठ है अरु स्वेद उपनाहादिक श्रेष्ठ है अरु सूक्ष्म करनेके सब कर्म अच्छेहैं अरु यवागूरस भी पथ्यहैं ॥ अन्तक सन्निपात निदान ॥ शरीर में दाह हो अरु शिर कांपै अरु संताप हो अरु मोहहो अरु हुचकीहो अरु खांसीहो अरु ज्ञानरहेनहीं ये अन्तक सन्निपात के लक्षणहैं अच्छावैद्य इसरोगवालेको त्याग देवै ॥ अन्तक रोटिकाबन्ध ॥ वैद्यों को बहुत अनुभव करके अंतक सन्निपात चिकित्सा कही है सो यह है । राईकोलहसुनके रस में

पीस रोटी बनावै कोमलरूप उसे घृतसे या तेलसे चुपड़करि गरम गरम असीमस्तक ऊपर बंधावै दो दो पहर में रोटी को बदलता जावै जबतक मनुष्यधीर्यताको प्राप्तहो तबतक बांधता जावै इससे उपरांत कर्म इस सन्निपात में नहीं है॥ मृतसंजीवन रस॥ शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक इन्हों की कजली करै फिर खरल में लोहभस्म तांबाभस्म, बिषबचनाग, हरताल, मुरदासिंग, मैनशिल, सिंगरफ चीता, इंद्रबारुणी, अतीस, शुंठ, मिरच, पिपली, सोनामाखी, भांग जयपाल, पलस ये सब बराबर तीन दिन अदरखके रसमें खरल करै पीछे कांचकी शीशी में घाल बालुकायंत्र में पकावै दो प्रहर पकाय स्वांग शीतल होनेपर अदरख रसमें एकदिन खरलकरै यह मृतसंजीवन रस महादेवजी का कहाहुआहै इसको ३ रत्ती देवै तो सन्निपात दारुणभी जावै अरु सन्निपातमें मराहुआभी जीवै इसके ऊपर पथ्य दूध का देवै व आनन्द भैरव रसदेवै॥ पथ्यादि काढ़ा॥ हरीतकी, वासा, फालसा, देवदारु, कटुकी, रास्ना, गिलोय, कुलिंजन इन्हों का काढ़ा उपद्रव सहित अंतक सन्निपात को नाशै है अथवा अंतकसन्निपातनाशवास्ते मृत्युंजयजपादिअरु महादेवजीकोचित्तमें ध्यान लगावै॥ रुग्दाहसन्निपातनिदान॥ ज्यादह बकै अरु संतापहो ज्यादह मोहहो अरु शरीर मंदहो भ्रमहो आपही शरीर भ्रमणकरै कंठमेंकांटेपड़ें व दुःखहोवै अरु ठोढ़ीलटकजायतृषाबहुतलगै दाह हो श्वासहो कासहो हुचकी आवै ये लक्षण रुग्दाहके हैं यह कष्ट तरसाध्य है मनुष्य को मारदेयहै॥ जलधरकाढ़ा॥ नागरमोथा, रक्त-चन्दन, शुंठ, बाला, कालाबाला, पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ाठंढाकरि देवै इससे रुग्दाह, सन्निपात नाशहोवै॥ अभयादिकाढ़ा॥ हरीतकी पित्तपापड़ा, नागरमोथा, कटुकी, अमलतास, मुनक्का इन्होंका काढ़ा रुग्दाहको नाशैहै॥ ब्राह्म्यादिकाढ़ा॥ ब्राह्मी, मुनक्कादाख, नागरमोथा बच, बाला, अमलतास, कटुकी, त्रिफला, चिकना, निंब, कोशातकी, दश-मूल, चिरायता इन्होंका कषाय रुग्दाह सन्निपातको व बातब्याधि कोनाशकरैहै॥ उशीरादिकाढ़ा॥ बाला, रक्तचंदन, कालाबाला, मुनक्का दाख, आँवला, पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा रुग्दाह को व तृषा को

नाशकरै है ॥ धान्यकक्काढ़ा ॥ धनियां, चावल इन्होंको रात्रिमें भिगोय प्रभातछान मिश्री मिलाय पीवे तो हिमरूप काढ़ासे अंतरकी दाह तृषा मिटै ॥ अगर्वादिधूप ॥ अगर, कपूर, नख, तगर, बाला, चन्दन राल इन्होंका धूप रुग्दाह सन्निपात को हरे है ॥ दध्यादिलेप ॥ बड़-बेरीके पत्ते दहीमें पीसशरीर में लेपकियेसे दाहमिटै अथवा कपूर चन्दन, निम्बपत्ती इन्होंको तक्रमें पीसलेपकरैतो दाहजावै अथवा बड़बेरी की पत्ती, चन्दनसफ़ेद, निम्बपत्ती इनकोपीस पैरोंकेतलवों पर लेपकरै तो रुग्दाह सन्निपात जावै ॥ लाजतर्पण ॥ दाहवालेकोव छर्दिवालेको व कृशको व लंघनवालेको व तृषावालेको खांड़शहद युत धान खीलका यूष देवै अथवा सुन्दर रूपवाली नवीन यौवन वाली यानी १४ वर्ष से बीसवर्षतकवाली व पुष्टस्तन यानी चूंची वाली व चतुर शृंगारादि किये हुये ऐसी स्त्री को अपनी भुजा से आलिंगन करे तो रुग्दाह नाशहोवै ॥ पथ्यावलेह ॥ हरीतकीको तैल में व घृत में व शहदमें मिलाय चाटै तो रुग्दाह, कास, रुधिररोग बिसर्प, श्वास, छर्दि इनको नाशै ॥ भैरवीगुटी ॥ शुद्ध पारा, शुद्धगंधक इन्हों की कज्जलीकरि एकदिन ईषकेरस में खरलकरै फिर भृङ्गीरस में चार भावना देवै फिर तिलपर्णी के रससे भावनादेवै ऐसे खरल करि वस्त्रमें छानिलेवै इस द्रव्यके बराबर मृत तांबाभस्मगेरै तांबा से अष्टमांश विष गेरै अरु पिपली काली, बायबिड़ंग, जीरा, रास्ना बला ये प्रत्येक तांबाभस्म से आधी २ गेरै इनको एकत्रकरिभृङ्गी के रसमें १ प्रहर खरल करवावे फिर कल्ककरि चिकने पात्रमें रख मन्द २ अग्नि से एक प्रहरतक पकावै फिर स्वांग शीतलहोनेपर चने समान गोली बनावै अरुयहीगोली चीता अदरख सेंधालवण के संग खावे पथ्य दही युत हलका लेवै इसके सेवनसे सब सन्नि-पात नाश होय हैं यह भैरवी गुटी है ॥ चित्तभ्रमसन्निपात ॥ शरीरमें पीड़ा हो अरु भ्रम, मद, ताप, मोह, श्वास ये होवैं बिकल भावहो अरु बिक्षिप्त केसे नेत्रहों और हँसे गावै नाचे अरु ज्यादह बके ये लक्षण चित्तभ्रम सन्निपात के हैं यह सन्निपात कष्टतर साध्य है ॥ मधुकादिकाढ़ा ॥ महुआ, नख, शाल्मली, पिपली, अर्जुनसाल, हरीतकी

एकांगी, मुराव, रक्तचन्दन इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपात को नाशैहै॥ द्राक्षादिकाढ़ा॥ मुनक्का दाख, देवदारु, कटुकी, नागरमोथा आंवला, गिलोय, हरीतकी, अमलतास, चिरायता, पित्तपापड़ा, कडू परवल इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपात को हरै अथवा ब्राह्मी मुनक्का, परवल, बाला, हरीतकी, पित्तपापड़ा, अमलतास, कुटकी शंखपुष्पी इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम को हरै है॥ ब्राह्म्यादिकाढ़ा॥ ब्राह्मी, बच, शतावरि, त्रिफला, कुटकी, चिकनीअमलतास, चिरायता, निम्ब, कडूपरवल, दाख, दशमूल इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपातको व रुग्दाहको नाशै है॥ पथ्यादिकाढ़ा॥ हरीतकी, पित्तपापड़ा, कटुकी, दाख, देवदारु, नागरमोथा, चिरायता, अमलतास कडूपरवल, आंवला इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपातको हरैहै॥ हरीतक्यादिकाढ़ा॥ हरीतकी, पित्तपापड़ा, मुनक्का दाख, शंखपुष्पी कटुकी, नागरमोथा, अमलतास, ब्राह्मी इन्हों का काढ़ा चित्तभ्रम सन्निपात को नाशकरै है॥ कणाद्यञ्जन॥ पिपली, मरिच, बच, सैंधव करंजबीज, हल्दी, आँवला, हरीतकी, बहेड़ा, महुआ, शुंठ, हिंग बकराकेमूत्रमें पीस गोलीकरै जलमेंपीस नेत्रोंमें आँजै तो चित्तभ्रम सन्निपात जावै अरु अपस्मृति भूतबाधा व शिररोग व नेत्ररोग व भ्रम नाश होयहै॥ कुम्भोद्भवनस्य॥ अगस्त्य वृक्षके पत्तोंके रसमें गुड़, शुंठ, पिपली महीन पीस नाकमें नस्य लेवैतो चित्तभ्रम नाश होयहै व एकांगी मुराव, बाला, महुआ, मुलहठी, चन्दन, देवदारु नख, पित्तपापड़ा, अगर, पीतबाला, लोहभस्म, इलायची इन्होंका धूप चित्तभ्रम सन्निपातको व ग्रह दोष को हरै है अरु लक्ष्मी देय है मंगल रूपहै॥ सन्निपात गजांकुश॥ शुद्ध पारा, अभ्रक भस्म, हरताल, सोनामाखी, हींग इन्होंको खरलकरै गवारपठारसमें व बांझककोड़ी रसमें व कडू परवल रसमें व निर्गुण्डी रस में व पांढरी रसमें व निम्ब रसमें व चीता रस में व धतूरा रसमें व ग्रंथिपर्णी रसमें व पाढ़ा रसमें व भांग रसमें व नींबू रसमें इन रसों में तीन दिन खरल करै फिर तीनोंखार सेंधानमक, विषबच्छनाग, काकोली जयपालसब बराबरले मिलावै ऐसेसन्निपात गजांकुश सिद्धहोयहै

८ रत्तीखावैतो सन्निपातनाशहोवेहै॥ प्राणेश्वररस॥ पारा, गंधक, तांबा भस्म, पारा भस्म इन्होंको ताड़मूल के रसमें एकदिन खरलकरै व बाराही रसमें खरलकरै फिर द्रव्यको कांचकी शीशीमें रख मुखको बन्दकरै फिर बालुकायंत्रमें एकदिनतक पकावै फिर तीनोंखार, पांचौ लवण, त्रिफला, शुंठ, मिरच, पिपली, चीता, जीरा, इन्द्रयव, गुग्गुल हिंग इनसबोंको द्रव्यमें मिलावै ऐसे प्राणेश्वररस सिद्धहोय है १ माशा गरमजल संगदेवै इससे सन्निपातज्वर व ग्रहणीको नाशकरैहै यहप्राणेश्वररस प्राणोंकी रक्षाकरैहै॥मारेश्वररस॥ शुद्धपारा एकभाग गन्धक दोभाग इन्होंको अदरखके रसमें एक दिनतक खरलकरै। फिर तांबेके पात्रमें संपुटकरि संधियोंको खाम मूषायंत्र में रात्रिमें गजपुट मध्य पचावै फिर प्रभातमें स्वांग शीतल होनेपर पात्रसे काढ़ चूर्णकरि १ रत्ती शुंठ घृत संगदेवै तो सन्निपात नाशहो। इसपै अनोपान गरमजल आठतोलेपीवै पथ्य दही चावलदेवै अरु तृषा लगेतो शीतल जल प्यावै यहमारेश्वररस कृशको पुष्ट करदेयहै॥ शीतांगसन्निपात निदान॥ अंग शीतल गार समानहोवै और कांप अरुचि, हुचकीआवै अंग शिथिल होजाय श्वास खांसी बमनहोवै मुखसे लारपड़ै अरु स्वरभेदहो अरु उग्र ताप हो अतीसारहो ये लक्षण शीतांग सन्निपातकेहैं॥ शीतांग चिकित्सा॥ इसमें मृतसंजीवन रस २ रत्तीदेवै अथवा सर्वांग सुन्दररसदेवै अथवा स्वच्छंदभैरव रसदेवै अथवा पञ्चवक्त्ररसदेवै इनरसों से शीतांग सन्निपातनाश होवै॥ अर्कादिकाढ़ा॥ आकजड़, जीरा, शुंठ, मिरच, पीपल, भारंगी कटैली, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, गोमूत्रमें इन्होंकाकाढ़ा सिद्धकिया पीवै तो शीतांग सन्निपातको व मोहको व श्वास कास व कफवृद्धि इन्होंको हरैहै॥ मातुलिंगादिकाढ़ा॥ बिजौरा, चिरायता, पीपलामूल देवदारु, दशमूल, अजमोद, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा शीतांग सन्निपातहरै है अथवा कर्कोटिका, पित्तपापड़ा, कुलित्थ, पिपली, बच, कायफल कालाजीरा, चिरायता, चीता, कटूबल, नागरमोथा, हरीतकी इन्होंके चूर्णको शरीरमें मलनेसे शीतांग दूरहोवै॥ श्रीवेष्टादिचूर्ण॥ सरल वृक्षके फलोंकाभस्म आठभाग, मरिच चारभाग, पाराएकभाग, विष

एकभाग इन्होंकामहीन चूर्णकरि खरलकर शरीरमें मलैतो असाध्य शीतांग सन्निपातमें भी पसीना आवै भुनेचनेका चूर्ण,भुनीभांगका चूर्ण, भुनी कुलथीका चूर्ण इन्होंको महीनपीस शरीर में मलै तो शीतांगमें पसीना आवै ॥ तन्द्रिक सन्निपात निदान ॥ तन्द्रा हो ज्वर कावेग अरु तृषा अधिकहो। जीभकाली और खरधरीहो। श्वास कास अतीसार दाह कानमें पीड़ा कंठमें जड़ता निरन्तर नींदआवै ये लक्षण तन्द्रिक सन्निपातके हैं ॥ तन्द्रिकपरीक्षा ॥ ज्वर उत्पन्नहो-तेहीं नेत्रोंसे दीखेनहीं तब तन्द्रिकजानो यहकष्ट साध्यहोयहै ॥ भारं-ग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी, पुष्करमूल, गिलोय, नागरमोथा, कटैली,हरी-तकी,शुंठ इन्होंका काढ़ा तीनदिन पीवैतो तन्द्रिक सन्निपात जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ भारंगी, पुष्करमूल, हरीतकी, कटैली, शुंठ, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा प्रभातमें पीवै तो तन्द्रिक सन्निपात नाशहोवै ॥ अमृ-तादिकाढ़ा ॥ गिलोय, कडू परवल, बासा, शुंठ, मरिच, पीपल इन्हों का काढ़ा तन्द्रिकको नाशै ॥ रास्नाद्यंजन ॥ रास्ना,मैनशिल, जलमें सिद्धकिया तेल इन्होंको मिला नेत्रोंमें आंजैतो तन्द्रिकजावै अ-थवा सेंधानमक, कपूर, मैनशिल, पिपली इन्होंको घोड़ाकी लारमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजे तो तन्द्रिक जावै ॥ कृष्णादिनस्य ॥ पिपली मैनशिल, हरताल इनका अंजन तन्द्रिक को हरै अथवा गिलोय परवल इन्होंका काढ़ा तन्द्रिककोहरै। शुंठ, मिरच सहित ॥ कुष्ठादि नस्य ॥ कुलिंजन,गवाक्षी,शुंठ,हल्दी, दारुहल्दी, मरिच,पिपली, बच इन्होंको बकराकेमूत्रमें पीस नस्यदेवै तो तन्द्रिक नाशहोवै अथवा मरिच,दारुहल्दी, बच, कुलिंजन, बायबिड़ङ्ग शुंठ, हल्दी, कंबड़ाल इन्होंको बकरा के मूत्रमें पीस नस्यलेवैतो तन्द्रिक सन्निपात नाश होवै अथवा कटैली, गिलोय, पुष्करमूल,शुंठ, हरीतकी इन्होंकेकाढ़े में शुंठ, पिपली, अगर, मरिच इन्होंको पीस मिलाय नस्यदेवै तो तन्द्रिक सन्निपात नाशहोवै ॥ कंठकुब्ज सन्निपात निदान ॥ माथा बहुतदुखै अरु कंठ रुकजावै दाहहो मोहहो शरीरकांपै। अरुज्वरहो अरु रक्तसे व बायुसे पीडाहो ठोढ़ी फरकै नहीं गरमी ज्यादह हो। ज्यादह बकै अरु मूर्च्छा हो ये लक्षण कंठकुब्ज सन्निपात केहैं ॥ अं-

ग्यादिकाढ़ा ॥ काकड़ासिङ्गी, कुड़ा, हरीतकी, नागरमोथा, कचूर, चिरायता, भारंगी, हल्दी, कटुकी, पुष्करमूल, चीता, मिरच, कटैली, बासा आँवला, देवदारु, बहेड़ा, चवक, शुंठ, पिपली, कायफल इन्हों का काढ़ा किञ्चित् गरम कंठकुब्ज सन्निपातको नाशै है ॥ त्रिकट्वादिकषाय ॥ शुंठ, मिरच, पिपली, इन्द्रयव, कटुकी, त्रिफला, दारुहल्दी, हल्दी इन्होंका काढ़ा कंठकुब्जको हरै है ॥ फलत्रिकादि काढ़ा ॥ त्रिफला शुंठ, मिरच, पिपली, नागरमोथा, कुटकी, कुड़ा, बासा, हल्दी इन्हों का काढ़ा कंठकुब्ज को नाशैहै जैसे सिंहशब्दसे हस्ती तैसे ॥ किरातादि ॥ चिरायता, कटुकी, पिपली, इंद्रयव, कटैली, कचूर, बहेड़ा, देवदारु, हरीतकी, मरिच, कायफल, नागरमोथा, अतीस, आंवला, पुष्कर मूल, चीता, काकड़ासिंगी, बासा, शुंठ इन्होंकाकाढ़ा कंठकुब्जकोनाशै है ॥ कृष्णादिनस्य ॥ पिपली, ऊंगा इन्हों का नस्य कंठकुब्ज को नाशै है अथवा त्रिकटु, कटुतुम्बी इन्हों का नस्यकंठकुब्जको नाशकरैहै ॥ सिद्धबटी ॥ शुद्धपारा, शुद्धगन्धक, काकड़ासिंगी, सेंधानमक, नवीन बाला इन्हों को ब्राह्मीरसमें खरल कर बेर समान गोलीबांधै खाने से रोगको नाश करे यही गोली कंठकुब्ज सन्निपातको हरै अथवा पूर्वोक्त अनोपानके संग आनन्दभैरव रसभी सन्निपातोंको हरै है॥ कर्णकसन्निपातनिदान ॥ कंठ रुकजावे ज्यादह बके बहिरा होजाय शरीरमेंखेदहो गरमरहै अरुश्वासकासहो और कर्णमूलमेंसूजनहो ज्वर हो ये लक्षण कर्णक सन्निपातके हैं ॥ रास्नादिकषाय ॥ रास्ना बड़ी कटैली, हरीतकी, शुंठ, मिर्च, पिप्पल, कुटकी, नागरमोथा, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, आंवला, भारंगी इनका काढ़ा कर्णक सन्निपात को नाशै है ॥ दूसरा रास्ना ॥ असगंध, नागरमोथा, कटैली भारंगी, बच, पुष्करमूल, कटुकी, काकड़ासिंगी, हरीतकी इन्होंका काढ़ा कर्णक सन्निपात को नाशै है ७०० ॥ मरिचादि ॥ मरिच, दशमूल, पिपली, त्रिफला, हल्दी, शुंठ, कटुकी, चिरायता इनका काढ़ा सेंधवयुत कर्णक सन्निपात को हरैहै ॥ भार्ग्यादि ॥ भारंगी, लघुशमी पुष्करमूल, कटैली, शुंठ, मिर्च, पीपल, बच, गोडासूरण, काकड़ासिंगी कटुकी, रास्ना इनका काढ़ा कर्णक सन्निपात को हरै है ॥ दशमूलादि

काढ़ा॥ दशमूल, कटुकी, पिपली, त्रिफला शुंठि, चिरायता, मिरच इन को काढ़ा कर्णक सन्निपाल को हरै है॥ इंगुद्यादिलेप॥ हिंगोण, हल्दी बिशाला, सैंधव, देवदारु, आक इनको महीनपीस लेपकरै तो कर्ण की गांठ नाश होवै अथवा अल्पसूजन व ग्रंथि हो तो लेप हित है मध्यम सूजन व ग्रन्थिहो तो चोख वगैरह ज्यादह सूजा व ग्रन्थि हो तो शस्त्रादिसे चिरादेवै कानशूल में ब्रण हो तो हल्दी, बृन्दाबन कुलिंजन, करवंदी के पत्ते, दारुहल्दी, हिंगण जड़ इनको आक के दूधयुत करि लेपकरै॥ कुलित्थादिलेप॥ कुलथी, कायफल, शुंठि, अ-जमाण इनका चूर्ण गरम जलके संग पीस लेपकरै कर्णमूल सूजन जावै॥ गैरिकादिलेप॥ गेरू, गोखुरू, शुंठि, कायफल, बच इन्होंको कांजी में पीस गरमकरि लेपकरै कर्णमूलका रोग नाशै अथवा सेंबा, राई इनको महीन पीस लेपकरै कर्णमूल सोजा जावै अथवा पुष्करमूल दालचीनी, चीता, गुड़, कायफल, कुलिंजन हीराकसीस आक के दूधमें पीसकर इनका लेपकरै कानकासोजा व ग्रंथि इनको नाशै है अथवा जयपाल जड़, चीता जड़, गुड़, भिलावा, हीराकसीस इनको थोहर व आकके दूधसें पीस लेपकरै कान के मूल का सोजा नाशै नागरादिलेप॥ शुंठि, देवदारु, रास्ना इन्होंको चीतारसमें पीस लेप करै गल का सोजा नाशहोइ॥ निशादिलेप॥ हल्दी, हिंगण, सैंधव देवदारु, कुलिंजन, दारुहल्दी, बिशाला इन्होंको आकके दूधमें महीन पीस लेपकरै तो कानग्रंथि सोजा नाशहोवै अथवा जोंक आदिसेकान मूलका लोहू कढ़वावै॥ बीजपूरादिलेप॥ बिजौराकी जड़, दालचीनी नरबेल, शरपुंखी, मोरशिखा, तुंबी, पिपली, कुचिला इन्हों का लेप कानके मूलका सोजा व ग्रंथि इनकोहरै है अथवा अकेला कुचिला लेपसेही कानमूल सोजा जावै अथवा लुतीका कंदका लेपसे पूर्वोक्त रोगजावै अथवा ककेरा जीवके मांससे पसीना देवै वा बांधै तो कान की जड़का सोजामिटै अथवा सिरसम, सैंधव, बच, गृहका धूम शुंठि, हल्दी इन्हों को जलमें पीस लेपकरै तो कान की सूजन मिटै रोहितकादिलेप॥ रक्तरोहित, अक्रोड़ वृक्ष, मोती सीप, कंबडाल करेला, मोरचूत, हरताल, सिरस, मैनसिल, नौसादर, गंधक, हीरा-

कसीस, कुलिंजन, रक्तलज्जावंती, करंजवा, गुग्गुल, यवाखार इन्हों का लेपकरै तो कानका सोजा नाशहोइ ॥ मरिचादिनस्य ॥ मरिच पिपली, लवणरज इन्होंको गरम जलसेपीसै नस्यलेतो कानकेरोग नाशहोवें अथवा सेंधानिमक, पिपली इन्होंकाचूर्णगरमजलमें पीस नस्यलेवै प्रभातमें तो निरंतर कानरोग होवैनहीं। और कानमूल सोजा नाशवास्ते जोंक लगवावे व घृतादि पानकरै व लेपकरै व पसीनादेवै। वा कफ पित्त नाशक बमन करवावै वा कवल याने ग्रास देवै इन्होंसे कर्म सिद्धकरै ॥ कांजिकादिलेप ॥ धतूराबीज, राई, गुड़ इन्होंको कांजी में पीस लेपकरै कर्णमूल का सोजा नाशहोवै। इस कर्णक सन्निपात में वैद्योंको यह उपचार कहे हैं ॥ पथ्य ॥ पुरानेचावल सांठियोंका यूष व मूंगका यूष देनाहितहै यहजल्दी जीर्णहोहै ॥ भुग्न नेत्र सन्निपातनिदान ॥ ज्वर, बलक्षय, स्मृतिनाश, श्वास, वक्रदृष्टि मूर्च्छा होवै, ज्यादहबकै, भ्रमहो, कंपहो, सोजाहो येलक्षण भुग्न नेत्र सन्निपातके हैं ॥ दार्व्यादिकाढ़ा ॥ दारुहल्दी, कडूपरवल, नागरमोथा कटैली, कटुकी, हल्दी, निंब, हरीतकी, बहेड़ा आंवला इन्होंका काढ़ा भुग्नसन्निपातको हरैहै ॥ श्रेष्ठादिकाढ़ा ॥ पिपली, परवल, कटुकी, नागरमोथा, निंब, देवदारु, कटैली, इन्होंकाकाढ़ा मोहको व पित्तज्वरको व सन्निपातको हरैहै ॥ यष्ट्यादिकाढ़ा ॥ मुलहठी, कडूपरवल, कटुकी नागरमोथा, निंब, देवदारु, कटैली, इन्होंका काढ़ा मोहको व पित्त ज्वरको व उग्र सन्निपातको नाशैहै ॥ मरिचादिनस्य ॥ मरिच, असगंध, पिपली, सेंधानिमक, लहसुन, महुआ, बच व अदरख इन्होंको बकराके मूत्रमें पीस नस्यलेतो भुग्ननेत्रसन्निपातको नाशै भूनिंबादि चिरायता, बच, पिपली, लहसुन, सिरसम इन्होंको शहदमें अवलेह करि चाटैतो भुग्ननेत्र सन्निपात जावै अथवा पिपली लवण इन्हों को पीस नेत्रोंमें आंजे तो भुग्ननेत्र जावै अथवा बच, मरिच, हिंग मुलहठी इन्हों का नस्य भुग्ननेत्रको नाशै ॥ मार्तण्डभैरवरस ॥ शुद्ध पारा, शुद्धगंधक बराबर अरु गंधकसे चौथाई सोहागा इन्होंको तांबे के पात्रमेंघोलजयंतीकेरससे खरलकरैपीछेसें बाकीजड़केरसमेंखरल करि आठ भावना देवै धूपमें फिर शुंठि रसमें फिर मरिच रसमें फिर

पीपलरसमें फिर बासा रसमें फिर चीता रसमें फिर ईश्वरी रसमें फिर तिलपर्णी रसमें फिर जावित्री रसमें फिर पीपल पान रसमें फिर पीपलजड़ रसमें इन रसों में सात दिनतक भावना देवै फिर द्रव्यका गोलाकरि विशोषणकरै फिर बस्त्रमेंबांध भट्ठी दे भूधरयंत्र में पकावै यानी पसीनादेवै दोपहर तक फिर स्वांग शीतलहोनेपर काढ़ा महीनपीसै फिर बिष, कर्पूर, इलायची, जावित्री ये दशमांश मेलावै फिर भांगके रसमें एकदिन खरल करै यह रसकपूर शहद सङ्ग खावै तो सन्निपात नाशहोवै इसकी मात्रा ४ रत्तीहै यह मार्तंड रस असाध्यको भी साध्यकरै है इस के ऊपर दशमूल काढ़ा पीवै पथ्य मूँग को यूष देवै ॥ रक्तष्ठीवी निदान ॥ लोहूथूकै प्यास घनी हो ज्वरहो छर्दिहो मोहहो अतीसार हो हुचकी हो आध्मानहो शरीर भ्रमै श्वासहो मूर्च्छाहो जीभकाली व ज्यादहलालहो शूलहोजीभमें कांटे पड़जावैं ये लक्षण रक्तष्ठीवी सन्निपातके हैं ॥ पर्पटादि ॥ पित्त-पापड़ा, धमासा, वासा, सुगंधिरोहिस तृण इन्हों का काढ़ा खांड़ सहित पीवै कंकोलचूर्ण युत रक्तष्ठीवी सन्निपात को नाशैहै ॥ जल-आदिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, पद्माष, पित्तपापड़ा, चन्दन, जावित्री मुलहठी, शतावरि, महुआ, निम्ब, बाला, चीता, रक्तचन्दनइन्होंका काढ़ा रक्तष्ठीवी को हरै है ॥ रोहिषादिकाढ़ा ॥ सुगंधितृण, धमासा वासा, पित्तपापड़ा, शांवा, कटुकी इन्होंका काढ़ा रक्तष्ठीवीको नाशै अथवा पद्माष, चन्दन, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, जावित्री, त्रिफ-ला, रक्तचंदन, बाला, मुलहठी, निम्ब इन्होंकाकाढ़ा रक्तष्ठीवी को नाशकरै ॥ मधुकादिकाढ़ा ॥ महुवा, मुलहठी, फालसा, रक्तचंदन इन्द्रजव, देवदारु खंभारी इन्होंका काढ़ा रक्तष्ठीवी कोनाशै है ॥ दूर्वा-दिनस्य ॥ दूर्वाके रससेनस्यलेवै अथवाअनारकेफूलके रसकीनस्य लेवै अथवा त्रिफला दूर्वाके रससे नस्यलेवै रक्तनाशहोवै ॥ आम्रा-दिनस्य ॥ आमकी गुठली, चपला इन्होंकानस्य नासिकारक्तकोबंद करै ॥ चिकित्सा ॥ पंचवक्त्ररस २ रत्तीदेवै अथवा भस्मेश्वररस १ माशा देवै रक्तष्ठीवीजावै अथवा रक्तेश्वररस २ रत्ती घृतसंगअरुशुंठि सहित देवै रक्तष्ठीवी नाशै ऊपर २ पल गरमजल देवै दही भात

पथ्यदेवै तृषामें शीतलजलदेवै॥ सोमपाणीरस॥ पारा४माशे गंधक ४ माशे चीताके रससें इनको खरलकरै फिर १ माशा मृतलोहका भस्म मृततांबाभस्म इनको पूर्वद्रव्यमेंमिलाय चूर्णकरै फिर धतूरा रस १ पलमें खरलकरै फिर त्रिफलारस १ पलमें खरल करै फिर कुमारीरस १ पलमें खरल करै फिर वृद्धदारुरस १ पल में खरल करै फिर दारुहल्दीके रस १ पलमें खरल करै फिर अदरख अर्क १ पलमें खरल करै फिर कोशाम्र के रस १ पलमें खरलकरै फिर भेकपर्णीरस १ पलमें खरल करै फिर निर्गुण्डीरस १ पलमें खरल करै फिर भृंगीरस १ पलमें खरल करै फिर चीतारस १ पल में खरल करै फिर आंवले रस १पलमेंखरल करै फिर एरंडजड़केरस १ पलमें खरल करै फिर इन्द्रयवरस १ पलमें खरलकरै इन्हों के रसमें या काढ़ा में खरल करि २ सुखावताजावै अरु स्वल्पखरल करै फिर पारासमान शुंठि, मिरच, पीपल मिलाय सोमपाणी रस सिद्धकियेकी गोली चना बराबर बांधे यह गोली जीर के रस संग लेवै ऊपर पंचमूलका काढ़ा पीवै पथ्य दहीचावलकाहै इससे रक्तष्ठीवी सन्निपात नाशहोवै॥ प्रलापक सन्निपात निदान॥ शरीरकांपै, ज्यादह बकै, शरीर गरम बहुत होय, दाहहोय, ज्वरका वेगघनोहो, संज्ञा जाती रहै, सब अंग विकलहोयँ, शिरमें शूल हो चिन्ताहो ये लक्षण प्रलापक सन्निपात के हैं यह जल्दी मृत्युको प्राप्त होवै॥ मुस्तादिकाढ़ा॥ नागरमोथा, बाला, दशमूल, शुंठि, पित्तपापड़ा रक्तचंदन, धवके फूल, बासा सब बराबर ले काढ़ा करि पीवै प्रलापक सन्निपात नाश होवै॥ तगरादिकाढ़ा॥ तगर, असगन्ध, कुम्भा शंखाहूली, देवदारु, कटुकी, ब्राह्मी, जटामासी, नागरमोथा, अमलतास, हरीतकी, मुनक्का, दाष इन्होंका काढ़ा प्रलापक सन्निपात को नाशै है ७७०॥ जलधरादिकाढ़ा॥ नागरमोथा, दशमूल, बाला, शुंठि चन्दन अमिलतास, बासा, पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा प्रलापकको नाशै है॥ दूसरातगरादिकाढ़ा॥ तगर, पाढ़ा, अमलतास, नागरमोथा, कटुकी, जटामासी, असगंध, ब्राह्मी, मुनक्का, चन्दन, दशमूल शंखाहूली इन्हों का काढ़ा जल्दी प्रलापक को नाशै है॥ उपचार॥

सांत्वभाषणसे व अंजनोंसे व तीक्ष्णनस्यसे व अन्धकारसेवनसे इन्हों से बिकृत चित्तको प्रकृतिको प्राप्तकरे॥ मृतोत्थापनरस॥ शुद्धपारा शुद्धगन्धक, दूना मैनशिल, बिष, शिंगरफ, मृतलोहा, मृत अभ्रक मृततांबा, हरताल, सोनामाखीइन्होंको अम्लबेतसरसमें व जम्भीरी नींबूरसमें व चांगेरीरसमें व शुंठिरसमें व निर्गुण्डी रसमें व हस्त-मुण्डीरससें इनरसोंमें तीनदिनतकमलिकर भूधरयन्त्रमें १ दिनतक पकावे फिर शीतल होनेपर चीताके रसमें २ प्रहरतक खरलकरे १ माशा खावै अनोपान यहहै अदरखके रसमें हींग, शुंठि, मिरच, पीपल, कर्पूर मिलालेवे इससे सन्निपात नाशहोवे मराहुआ भी जीवै जिह्वकसन्निपातनिदान॥ श्वास, कास, ताप हो अरु जीभ लठराय जावे कांटे पड़जावैं अरु गूंगा होजावे बहराहोजावे बल जातारहै ये लक्षण जिह्वक सन्निपात के हैं यहकष्टतरसाध्य है॥ उग्रादिकाढ़ा॥ बच, कटैली, धमासा, रास्ना, गिलोय, शुंठि, कटुकी, काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, ब्राह्मी, भारंगी, चिरायता, बासा, कचूर इन्हों का काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै॥ क्षुद्रादि काढ़ा॥ कटैली, शुंठि, पुष्करमूल गिलोय, ब्राह्मी, बच, कपूर, कचरी भारंगी, बासा, धमासा, बाला, तुलसी इन्होंका काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै अथवा शुंठि, पित्तपापड़ा, हल्दी, दारुहल्दी, त्रिफला गिलोय नागरमोथा, कटैली, निम्ब, परवल, पुष्करमूल, कुलिंजन, देवदारु इन्होंका काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै है॥ सिंह्यादिकाढ़ा॥ कटैली, शुंठि, पुष्करमूल, कटुकी, रास्ना, गिलोय, भारंगी, काकड़ासिंगी, कचूर, धमासा, बासा, नागरमोथा, ब्राह्मी, बच, चिरायता इन्होंकाकाढ़ा जिह्वक सन्निपातको नाशै॥ देवदार्वादिकाढ़ा॥ देवदारु निम्ब, बहेड़ा, हरीतकी, परवल, हल्दी, दारुहल्दी, शुंठि, कटैली, पुष्करमूल, नागरमोथा, गिलोय, बासा इन्होंकाकाढ़ा जिह्वक सन्निपातकोनाशै॥ किरातकवल॥ चिरायता, अकरकरा, कुलिंजन, कचूर पिपली इन्होंका चूर्ण कटुतेल युत करि अरु बिजौरारस मिलाय मुखमें धरै जिह्वक नाशै॥ शालूरपर्य्यादिअवलेह॥ कमलकंद शालिपर्णी, कुलिंजन, शंखपुष्पी इन्होंकाचूर्ण शहतयुतकरि चाटै जिह्वक

को नाशकरै ॥त्रिपुरभैरवरस॥ शुंठि, सुवर्ण, दारुहल्दी, हल्दी, त्रिफला, गिलोय, नागरमोथा, कटैली, निम्ब, परवल, पुष्करमूल, कुलिंजन, तेलिया देवदारु इन्होंका काढ़ा जिह्वक सन्निपात को नाशै अथवा बचनागबिष, शुंठि, पिपली, गजपिपली, आक, रक्तएरंड ये औषध पहिले एकभाग दूसरे दोभाग तीसरे तीन भाग या प्रमाण क्रमसे लेवै वृद्धि से फिर अदरख रसमें खरल करै यह त्रिपुरभैरव रसहै जिह्वकको नाशै अथवा आनन्दभैरव शहतसंग रत्ती १ देवै दही भात पथ्य देवै अथवा त्रिनेत्ररस देवै ॥ अभिन्यासर्सन्निपात निदान॥ नींद आवै नहीं, श्वास बहुत जल्दी चलै, शरीरकांपै, चेष्टा सब जातीरहै, घोंघाबोलै, काष्ठ समान होजावै, बल क्षय होवै ये लक्षण अभिन्यास सन्निपात के हैं यह मृत्युरूपहै ॥ औषधमर्यादा॥ जितने श्वास आवैं तितने औषध देनाचाहिये दैव की गति अलक्ष्य है जानीजाती नहीं ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे अगाध जलमें पात्र को मांजते पात्र हाथसेछूटजावै तिसको चतुरनर जल्दी ग्रहणकरै तलीमें प्राप्त होने पहिले तैसे अभिन्यास को पूर्ण चिह्न हुआ पहिली क्रिया करै अभिन्यास में जब नींदआवै तब बलनाश रोग का जानो सामान्यउपचार॥ इसरोगमें सन्निपात तांतकरस १ माशा देवै अरु पथ्य पूर्वोक्तदेवै वा आनन्दभैरव रस देवै अथवा दोनों कटैली गिलोय, मुनक्का, दाष, जीरा, शुंठि, मिरच, पिपली, काकड़ासिंगी, बायबिड़ंग इन्होंका काढ़ापीवै ऊपर घृताक्त चावलोंके भूनेहुयोंका पेया बनायदेवै इससे हुचकी, श्वास, कास, अभिन्यास, वायु, मल, मूत्रइन्होंका अवरोध ये सब नाश होवैं ॥ रिंगण्यादिकाढ़ा॥ कटैली, पुष्करमूल, भारंगी, कचूर, काकड़ासिंगी, धमासा इन्होंका काढ़ा देवै कफ नाशहोवै ॥ त्रिवृतादिकाढ़ा ॥ निशोत, कडुवृन्दा, हरीतकी, बहेड़ा, आमला, कटुकी, अमलतास इन्होंका काढ़ा यवाखारयुत सम्पूर्णज्वरों को नाशैहै ॥ त्र्यायंत्यादिकाढ़ा ॥ त्रायमाण, दशमूल, पुष्करमूल, एरण्ड, अजमान, भारंगी, गिलोय, बासा, कचूर, काकड़ासिंगी, शुंठि, मिरच, पिपली, पुनर्नवा इन्होंका काढ़ा गोमूत्र में सिद्धकिया पीवै तो जल्दी अभिन्यासको व कफज्वर को हरैहै ॥ सुरभ्यादिकाढ़ा॥ कटैली

बेलफल, सैंधव,धमासा,शुंठि,पाषाणभेद,एरण्डमूल इन्हों का काढ़ा गोमूत्र में सिद्धकिया अभिन्यासको नाशै॥ शृंग्यादिकाढ़ा॥ काकड़ासिंगी, भारंगी,हरीतकी,जीरा,पिपली, चिरायता, पित्तपापड़ा देवदारु,बच,कुलिंजन,धमासा,कायफल,शुंठि,नागरमोथा, धनियां कटुकी,इन्द्रयव पहाड़मूल, रेणुकबीज, गजपिपली, उंगा, पिपलामूल चीता,बिशाला, अमलतास, निंब, कचूर, बावचीबीज, बायबिड़ंग, हल्दी,दारुहल्दी दोनोंअजमाण ये औषधबराबरले काढ़ाकरै हिंग, अदरखके अर्कयुतकरै यहअभिन्यासको व तन्द्राको व प्रमेहको व कर्णमूलको व १३ सन्निपातोंको व हुचकीको व श्वास को व खांसी को व सब उपद्रवोंको नाशै है अथवा काकड़ासिंगी, लालधमासा पोहकरमूल, भारंगी,कचूर, कटैली इन्होंका काढ़ा अभिन्यास को व कफको नाशैहै॥ तिक्तादिकाढ़ा॥ कटुकी,हरीतकी,जयपालजड़,त्रायमाण,अमलतास इन्होंकाकाढ़ा सैंधव व यवाखारयुत ज्वरोंकोहरैहै अरु भेदीहै॥ व्याघ्रादिकाढ़ा॥ कटैली, धमासा, भारंगी, कचूर,काकड़ासिंगी,पोहकरमूल इन्होंका काढ़ा अभिन्यास को व हृदयके कफ कोनाशै है॥ भारंग्यादिकाढ़ा॥ भारंगी, पोहकरमूल, रास्ना, बेलफल नागरमोथा,शुंठि,दशमूल,पिपली,अतीश इन्होंकाकाढ़ाहिंग व अदरखरस संयुत अरु पिपली संयुत सन्निपात ज्वरोंको व अभिन्यास को व हृदय शूलको व पार्श्व शूलको नाशैहै॥ बीजपूरादिकाढ़ा॥ बिजौरा, बेलफल, पाषाणभेद, कटैलीदोनों,एरण्डजड़,सब कर्ष२ भर प्रमाणले काढ़ाकरै आठगुणाजलमें पकाय पीछे गोमूत्र बिड़लवण सौंवर्चल लवण युतकरि पीवै तो हृदयशूल को व वस्तिशूलको व आनाहवातको व अभिन्यासको हरै है॥ मातुलुंगादिकाढ़ा॥ बिजौरा पाषाणभेद, बेलफल,कटैली,पाढ़ा, एरण्डमूल इन्होंका काढ़ा गोमूत्र सैंधवयुत अभिन्यासको व आनाहको व शूलको नाशै है॥ कारव्यादिकाढ़ा॥ कारवी, पोहकरमूल,एरण्डमूल, त्रायमाण, शुंठि, गिलोय दशमूल, कचूर,काकड़ासिंगी, बासा, भारंगी, पुनर्नवा इन्होंकाकाढ़ा गोमूत्रमें सिद्धकिया नाड़ी स्रोतोंको शुद्ध करै अरुअभिन्यासकोहरै पटोलादि॥ परवलपत्र,बड़ी कटैली, छोटी कटैली, अजमाण,मिरच

पिपली, बेलफल, करंजवा, चीता, करंजबीज, मंजिष्ठा, त्रायमाण, शुंठि इन्होंका काढ़ा कंठको शुद्धकरै अरु अभिन्यासको हरै॥ जयमंगल रस॥ पाराभस्म, अभ्रकभस्म, बकायण, मिरच, लोहभस्म, हरताल सोनामाखी, शुंठि, बच नागबिष, सुहागा, चीता, पिपली, मिरच ये सब बराबरलेवै फिर इन्होंको पाढ़ारसमें खरल करै फिर निर्गुंडी रस में खरलकरै फिर बेलफल रस में खरलकरै फिर मुलहटी रस में खरलकरै एकदिनमें पुटदेवै फिर पात्र में घालि मुख बन्दकरि भूधर यन्त्रमें पकावै शीतल होनेपर यह जयमङ्गल रसहोयहै यहमाशा १ दशमूलके कषाय सङ्गलेवै सन्निपातको नाशै अरु यह रस नेत्रोंमें आंजै वा नस्यमेंदेवै तो अभिन्यास सन्निपातको हरै॥ स्वच्छंदरस॥ शुद्धपारा १ भाग, शुद्धगन्धक २ भाग, सुवर्णभस्म १ भाग, चांदी भस्म १ भाग, तांबाभस्म १ भाग इनको सूरजमुखी रसमें खरल करै फिर निर्गुण्डी रस में भावनादेवै फिर अदरख अर्क में भावना देवै फिर भृङ्गरस में भावनादेवै फिर धतूरा रसमें खरल करै फिर मूषापर्णी रसमें भावना देवै फिर अग्निकर्णी रसमें भावनादेवै फिर अरणीरसमें भावनादेवै फिर तिलपर्णीरसमें भावानादेवै फिर चीता रसमें भावनादेवै फिर काकमाची रसमें भावनादेवै ऐसे तीनदिन तक खरलकरि भावना देकरि तैयारकरै फिर मच्छके व माहिष के व बाराह शूकरके व बकराके व मोरके पित्तामें भावनादेवै एकदिन में फिर अन्ध मूषागत बालुकायन्त्रमें एक दिन पकावै शीतलहोने पर चूर्णकरि अदरखके अर्क सङ्ग खावै माशा १ पीछे निर्गुण्डी व दशमूल इन्होंका कषाय पीवै मरीच चूर्णयुत्त। यहरस अभिन्यास सन्निपातको नाशै है, पथ्य मूंगकायूष व दूध व घृतकाहै॥ मातुलुंग्यादिरस॥ बिजौरारस, हिंग शुंठियुत मुखमें देवै सन्निपात जावै अथवा तीक्ष्ण, कटु औषध कानों में देवै सन्निपातजावै अथवा अदरख रसमें शुंठि, मिरच, पीपल, सेंधव मिलाय मुख में देवै अथवा मरिच चूर्ण अदरख के अर्क में नस्य लेवै यह संज्ञाकारक नस्य है रामठादिनस्य॥ हिंग, शुंठि इनको भृंग रसमें व निम्बूरसमें मिलाय चाटै अथवा कटु, तिक्त औषधोंका नस्यलेवै॥ मरीचादिनस्य॥ मरिच

सांदालवण, पिपली, निर्गुडी, महुवाके फूल, कायफल इन्होंका चूर्ण करिगरमजलमें मिलाय आठबिंदुका व ४ बिंदुका नासिकामें नस्य लेवैसन्निपात में सुरतहोवे॥ लशुनादि अंजन॥ लशूण, मिरच, पिपली सैंधव, वच, सिरसफल, सुंठ इन्होंकाचूर्ण गोमूत्रमें खरलकरिअंजन करे इससेकफ वायु, रक्त पित्त, इनको नाश होवें॥ जात्यादिअंजन॥ जावित्रीके फूल, प्रवाल, मिरच, कटुकी, वच, सैंधव लवण इन्होंको बकराके मूत्रमेंखरलकरि अंजनकरे तन्द्रानाशहोवे अथवा सिरस के बीज, मरिच इनको बराबर ले बकरा के मूत्र में खरलकरे यह अंजन अभिन्यास सन्निपात में संज्ञाबोधन करे है॥ दंभवडाग॥ सन्निपात अभिन्यासमें संज्ञा जातीरहै किसीतरहभी बोध न होवे तब रोगीके दोनों पैरोंके तलुवों पर व मस्तकपर गरमलोहेसे दाग दिवाय सुरत करवावे। जो इससे भी संज्ञा नहो तो मस्तकको व तलुवों को व भृकुटियों को लोहा की शलाका से दग्धकरे॥ हारिद्रकसन्निपातनिदान॥ देह, नख, नेत्र, कर, पैर जिसके पीले होजावें अरु चार २ थूके अरु खांसी हो यह हारिद्रक सन्निपात होय है यह साध्य नहीं है यह १३ सन्निपातों से भिन्न है मर्यादा, सन्निपात वाला तत्काल अच्छा होवे ३ दिन में व ५ दिन में व ७ दिन में व १० दिन में व १२ दिन में व २१ दिन में शुद्धहो जीवे॥ पित्त कफ वायु वृद्धि से दशदिन, बारह दिन, सात दिन इस मर्यादा में मारे व अरोग्यकरे पुरुष को धातुमलपकनेसेती॥ धातुपाक लक्षण॥ निद्राका नाशहोवे, हृदय में स्तम्भ होजावे, मल मूत्रका अवरोधहो, शरीरभारीहो, अरुचिहो, सबपदार्थोंमें अप्रीति हो, बल रहे नहीं यह धातुपाक लक्षण है॥ मलपाक॥ दोषों की प्रकृति विकार को प्राप्तहो, मन्दज्वरहो, हलका शरीरहो अरु सब इन्द्रिय शुद्धहोवें ये दोषपाकके लक्षण हैं॥ सन्निपातके असाध्य लक्षण॥ दोष वृद्धिको प्राप्तहोवे अरु अग्नि नाशहोवे सबचिह्न निदानहो ऐसा सन्निपात असाध्य है अरु इससे विपरीत कष्टसाध्य होवैहै॥ आगंतुकज्वर॥ यहज्वर अभिचार से यानें मरणादिप्रयोग से उपजैहै और चोटलागने से उपजैहै और भूत प्रेतादि की पाड़ी

से उपजैहै और ब्राह्मण, गुरु, सिद्धि, बृद्ध इन्होंके कोपसे वा शापसे उपजेहै इनकारणों से आगन्तुकज्वर उत्पन्न हो वातादि दोषों को कोपकरि दुःखदेवैहै सो वात, पित्त, कफ, तीनप्रकार भेदसे होयहै॥ चिकित्सा॥ आगंतुकज्वर में लंघनकरै नहीं। अरु केवलशुद्धकाल क्षयदोषजन्यआगंतुकज्वर में व जीर्णज्वर में लंघनकरवावै॥ अभिचाराभिघातजज्वरनिदान॥ अभिचार व अभिघातसे उपजेज्वरमें मोह व तृषाज्यादहहोयहै ८७० अरु अभिचारजज्वरको व अभिशापज्वरको होमादिकरिकै व देवपूजाकरिकै दूरकरै अरु मंगलस्वस्त्ययनादिक धारणकरै व तीर्थ स्नानसे व ग्रहों के पूजन से पूर्वोक्त ज्वरको दूरकरै॥ अभिघातज्वर चिकित्सा॥ अभिघात ज्वरमें शीतलक्रियाकरै अरु कषाय व मधुर व सचिक्कणरस दोषको विचारिदेवै॥ सामान्य उपचार॥ घृतके पीनेसे व अभ्यंगसे व रक्तावसेकसे व शुद्ध मांस रसौदन भोजनसे अभिघातज्वर नाशहोयहै। वेधजज्वरको व बंधजज्वरको व श्रमजज्वरको व अध्वजज्वरको व भंगजज्वरको व अंशजज्वरकोदूधसे व मांसरसौदन से दूरकरै॥ मार्गश्रमजन्य ज्वरचिकित्सा॥ इसज्वरमें दिनमें शयन करावै व शरीरकाअभ्यंगकरवावै॥ दूसरा प्रकार॥ अथवा वेधजादिकछहोंज्वरोंकोमदिरावदूधकेभोजनसेनाशकरै॥ भूताभिषंगज्वरनिदान॥ काम, शोक, भयइन्होंसेवायु कोपैहै अरु क्रोध से पित्तकोपैहै अरु भूताभिषंग से तीनोंदोषकोपैहैं ये भूताभिषंगज्वरके लक्षणहैं॥ दूसरा प्रकार॥ भूताभिषंगसेउद्वेग व हास्य व रोदन व कंपन ये होवैहैं॥ सामान्य चिकित्सा॥ भूतजज्वर में शीतभंजी रस रत्ती २ देवै॥ त्रिकट्वादियोग॥ गन्धक, शुंठ, मिरच पीपल ये सबघृतमें मिलायलेवै भूतज्वरजावै॥ गन्धकादियोग॥ गंधक आमला भोजन करनेसे भूतजज्वर जावै इसकीमात्रा १० मासेहै॥ अष्टमूर्तिरस॥ सोना, रूपा, तांबा, शीशाभस्म, गन्धक, सोनामाखी विमला, मैनशिल शुद्ध सबकी बराबर शुद्ध पारा निम्बू रसमें इन को १ प्रहर खरलकरै कुम्भधरपुटमें पकावै यह अष्टमूर्तिरसरत्ती १ भूतज्वरको व चातुर्थिक ज्वर को त्र्याहिकज्वरको व द्व्याहिकज्वर कोनाशैहै॥ मधुकलस्य॥ महुआसार, मिरच, सेंधवानिमक, पिपली, वच

इन्होंका नस्य भूतज्वर को हरैहै॥ व्योषादिनस्य॥ शुंठ, मिरच, पीपल आठपत्ते तुलसीके इन्होंका नस्यलेवे भूतज्वरकोनाशै अथवा सहदेवीके मूल विधिसे कंठ में बांधे तो भूतज्वर, चातुर्थिकज्वर व त्र्याहिक व द्व्याहिकज्वरको नाशैहै॥ सूर्यावर्त्तबंध॥ सूर्यफूलवल्लीके मूल कानमें बांधै भूतज्वरको नाशैहै॥ विजयाबंध॥ सायंकालमें निमंत्रणाकरि प्रातःकालमें विजयाको ल्यावे फिर जड़को शिरपर बांधै यहभूतज्वरको हरैहै॥ पुष्पार्कयोग॥ पुष्पार्कयोगसें काकतुण्डी की जड़को रक्तसूत्रसे बाहुमें वा शिरमें वा कंठमेंबांधै भूतज्वर नाशहोवै॥ मृत्तिकातिलक॥ ककेरा जनावर के बिलकी माटीका तिलककरे तो भूतज्वरको हरैहै॥ मंत्रविधि॥ गोमयका मंडलकरे तिसको मंत्रवित् विद्वान् गंधपुष्प अक्षतादिसे पूजे अपनाहाथ मण्डलऊपर स्थापन करि मंत्रकोजपै फिर साध्यमनुष्यके मस्तकको स्पर्शकरि मंत्र १०८ वार जपै॥ अथमंत्रः॥ कालकालमहाकाल कालदण्डनमोस्तुते कालदण्डनिपातेन भूम्यंतर्निहितज्वरम् त्रिदिनंकारयेदेवं हन्याद्भूतादिकान्ज्वरान्॥ अथवा भूतज्वरको भूतविद्या से अथवा शांत्यादिकसे ज्वरको हरैहै॥ अभिशापजज्वर चिकित्सा॥ काम, शोक, चिंता प्रहार, भय, भूतबाधा, श्रम, क्रोध, लंघन इन्हों से उपजे ज्वर में दीप्ताग्निवालेको मांसोदन देवै॥ दूसराप्रकार॥ अभिशापज ज्वर को आतिथ्यादि भोजनसे दूरकरै॥ विषजन्यआगंतुक ज्वर॥ विषजन्य ज्वरमें मुख कालाहो अरु दाहहो और अतीसार लगै अरु अरुचि हो ज्यादह तृषा लगै शरीर में शूल चलै और मूर्च्छा हो ऐसे जानो॥ औषध गंधज ज्वर में मूर्च्छा हो और शिर में शूल चलै और छर्दि व छींक आवे॥ चिकित्सा॥ औषध गंधजज्वरको व विषजज्वरको विष पित्त हरनेवाले कषायोंसे नाशै अथवा सर्व गन्धादिगण कषायसे नाशकरे॥ सर्वगन्ध॥ इलायची, दालचीनी, तालीसपत्र, नागकेशर, कपूर, कंकोल, कृष्णागर, केशर, लवंगये सर्व गन्धगणहैं॥ कामजज्वर निदान॥ चित्तमें भ्रमहो, तन्द्राहो, आलस्यहो, भोजनमें अरुचिहो, हृदयमेंपीड़ाहो और शरीर सूखताजावे ये लक्षण कामज ज्वरकेहैं॥ चिकित्सा॥ सुगन्धित चन्दन लेपवाली

मोतियोंका हार पहिननेवाली चलायमान कुचवाली सुंदर वाणी बोलतीहुई सुन्दररूप व गात्रवाली ऐसी सुन्दर स्त्रीका आलिंगन कामज ज्वरको हरैहै अरु दाहको भी नाशैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ सुंदर फूलोंकीशय्या दाहकोहरै वा कमलके पत्तोंकी शय्या दाहकोहरै वा मित्रोंके संग बासभी दाहकोनाशै वा फूलोंके बगीचामें बसना भी दाहकोहरै वा बावड़ीके जलका अवलोकनभी दाहकोहरै वा तोता वा कोयल वा मैना इन्होंकी वाणी दाहको हरै। वा स्त्रियोंकी कथा वा रसिककथा दाहकोहरै वा ठट्ठा मस्करीभी दाहकोहरैहै वा खस खसका ब्यजनाभी दाहको हरैहै ॥ तीसराप्रकार ॥ और चन्दन कपूर, बाला इन्होंके शरीरमें लेपसेभी दाहशांतहोवे ॥ चौथाप्रकार ॥ सुन्दर चन्द्रमा समान घरमें चन्दनसे छिड़केहुए में शयन करना भी दाहको नाशैहै ॥ पांचवांप्रकार ॥ धनियां रातिमें भिगोय प्रभात मिश्रीयुतपीवे जलको दाहमिटै ॥ छठवांप्रकार ॥ कांताका अधरपान पीलेसे दाहनाशहोवे यह सर्वोपरि उपायहै ॥ सातवांप्रकार ॥ प्रश्न ॥ कांताके कटाक्षसे दग्धमनुष्योंका औषधकहो ॥ उत्तर ॥ अधरचुंबन सहित तो काथहै दृढ आलिंगन यह पथ्य है ॥ भयज शोकज कोपज ज्वरों के निदान ॥ भयज ज्वरमें ज्यादा बकै शोकजमें भी ज्यादा बकै कोपज में ज्यादा कांपै ॥ भयजचिकित्सा ॥ व्याघ्रादि भयज ज्वर में जलके मध्यमें बसावे रोगीको इस शीतलक्रियासे भयरोग नाश होवै। आनन्द देनेवाले पदार्थोंसे वा मनोज्ञ पदार्थोंसे वा पित्त नाशक पदार्थोंसे शोकज व कामज व भयजज्वर नाशहोवै ॥ दूसरा प्रकार ॥ आश्वासनसे वा इष्टपदार्थ लाभसे वा वायुके नाश होने से वा आनन्ददायक पदार्थोंसे कामज, शोकज, भयज ज्वर नाशहोय हैं। कामदेव उत्पन्नहोनेसे क्रोधजज्वर नाशहोवे। और क्रोधउत्पन्न होनेसे कामजज्वर नाशहोवे ॥ क्रोधजज्वर चिकित्सा ॥ क्रोधजज्वरमें पित्तनाशक क्रियाकरै और नारि सुन्दर वाक्यकहै वा आश्वासनकरै वा इष्टलाभहो वा बायुनाशक द्रव्यकालाभ श्रेष्ठहै। और विसर्पज्वर में और विस्फोटक ज्वरमें घृतकापान हितहै वा कफ पित्ताधिक में घृत पान हित है ॥ विषमज्वर संप्राप्ति ॥ जितने आरोग्य न होवै

तितनैशरीर माड़ा रहै और योग्यपथ्य छोड़करि अपथ्यसेवनसे अ-
ल्पसी दोष विषमज्वर को प्राप्तकरे है ॥ दूसरा प्रकार ॥ ज्वरसे मुक्त
को अपथ्य सेवनसे अल्प भी दोष को इसीधातुको प्राप्तहो विषम
ज्वर को करै है ॥ विषमज्वरनाम ॥ संतत १ सतत २ अन्येद्यु ३
तृतीयक ४ चातुर्थिक ५ ऐसे पंच प्रकारके होय हैं ६२० संतत
ज्वर रसधातुमें रहैहै । सतत रक्त धातुमेंबसैहै । अन्येद्यु ज्वरमांस
में बसै है त्र्याहिक मेदमें बसै है फिर हाडमज्जा में जाके चातु-
र्थिक ज्वरको पैदाकरै है यह घोररूप होय है। संतत जो दशदिन
वा सातदिन वा बारहदिन रहके शांतहो । सतत जो अहोरात्र में
२ वारआवे अरु शान्तहो अन्येद्युष्ट जो अहोरात्रमें १ वार आवे
और शान्तहो । तृतीयक जो तीसरेदिनआवे । चातुर्थिक जो चौथे
दिन आवे ॥ विषमज्वरचिकित्सा ॥ विषमज्वर सब सन्निपातसे पैदा
होतेहैं इन्होंमें उल्वण दोषकी चिकित्सा करे ॥ शोधन ॥ विषमज्वरों
में वमन व रेचन करवावे और सचिक्कण रससे वा गरमरस अन्न
पानसे विषमज्वरको शांतकरे ॥ विषमपथ्य ॥ तक्र मांसखावे वा दूध
मांसखावे वा दही मांसखावे वा माषमांसखावे इनपथ्योंसे विषम
ज्वरजावे ॥ दूसराप्रकार ॥ मदिरा व मट्ठाका पानकरे । वा मुर्गा का
मांसखावे व तित्तिर पक्षीका मांसखावे विषमज्वरमें ये पथ्यहैं ॥ चि-
कित्सा ॥ संतत विषमज्वरको व क्षीण पुरुषके जीर्णज्वरको पथ्यरूप
भोजनों से शांतकरे ॥ घृतपान ॥ जोज्वरकषाय व लेपन व लघुभोजन
इन्हों से शांतन होवे तो घृतपान करवाय शांतकरैवाताधिक विषम
ज्वर नाश वास्ते घृतपानश्रेष्ठ है वा बस्तिकर्म श्रेष्ठ है ॥ पित्ताधिक
विषमचिकित्सा ॥ घृतयुतदूधके रेचनसे वा तिक्त शीतरसोंसे पित्ता-
धिक विषमज्वरको शान्तकरे ॥ कफाधिकविषमचिकित्सा ॥ वमन से
पाचनसे रूक्षअन्नवपानसे,लंघनसे,गरमरससेकफाधिकविषमज्वर
को शान्तकरे ॥ मार्कण्ड्यादिपाचन ॥ मार्कण्डी, छोटीहरड़, मुनक्का, दाख
जीराइन्होंका पाचनविषमज्वर में देवे ॥ महौषधादिपाचन ॥ सुंठ
पिपलामूल, बड़ीसौंफ,मार्कण्डीयानेभुइँतरवड़,अमलतास,हरीतकी
इन्हींका काढ़ा सेंधयुत विषमज्वर को नाशे ॥ पाचनवरेचन ॥ नली

का, छोटीहरीतकी इन्होंका चूर्ण मिश्री संगलेवे व गरमजल व गुण संग रेचन करे ॥ द्राक्षादिपाचन ॥ मुनक्का, दाख, त्रिफला, शुंठ, धनियां इन्हों का काढ़ा पाचनरूप है सर्व कर्मोंमें योजना योग्य है । और कुमारी मूल दशमाशे गरमजल संग पीके वमन करे विषमज्वर पुराना भी नाशहोवे ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ परवल, मुलहठी, चिरायता कटुकी, नागरमोथा, हरीतकी इन्होंका काढ़ा विषमज्वर को नाशै अथवा त्रिफला, गिलोय, बासी इन्होंका काढ़ा विषमज्वरको नाशै है ॥ यष्ट्यादिकाढ़ा ॥ मुलहठी, धमासा, बासा, त्रिफला, बाला, गिलोय नागरमोथा इन्होंकाकाढ़ा मिश्रीसंयुक्त विषमज्वरकोनाशकरैहै ॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, कटेली, गिलोय, शुंठ, आंवला इन्होंका काढ़ा शहत पिप्पली चूर्णयुत विषमज्वरको नाशैहै ॥ महत्वकादि काढ़ा ॥ खैरटीजड़, शुंठ इन्हों का काढ़ा तीनदिन देनेसे विषमज्वर को हरैहै ॥ नागरादिकाढ़ा ॥ शुंठ, नागरमोथा, कटेली, गिलोय, आंवला इन्होंका काढ़ा शहत, पिप्पलीचूर्णयुत विषमज्वरको नाशै है ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, कटुकी, मुलहठी, हरीतकी, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा विषमज्वर को नाश करैहै इसमें संशय नहीं ॥ कुलकादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, निम्ब, बड़ीकटेली, इन्द्रयव, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा शहतयुत विषमज्वरकोनाशै ॥ भारंग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी पित्तपापड़ा, शुंठ, बासा, पिप्पली, चिरायता, निंब, गिलोय, नागरमोथा धमासा इन्होंकाकाढ़ा सर्वज्वरोंकोहरैहै और जीर्णज्वर, वातुगलज्वर विषमज्वर, उपद्रवयुतज्वर इन्होंको भी हरैहै ॥ दूसरा ॥ भारंगी, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धमासा, शुंठ, चिरायता, कुलिंजन, कटेली, पिप्पली गिलोय इन्हों का काढ़ा जीर्णज्वर को व विषमज्वरों कोनाशै है ॥ निशाद्यंजन ॥ हल्दी, पिपली, मरिच सेंधवानिमक, तिलोंके तेलमेंखरलकरि नेत्रोंमें आंजे विषमज्वर नाशहोवे ॥ नरकेशनस्य ॥ नरकेकेश तिल तेलमें सिद्धकरि काकचंचुको घिस नेत्रोंमेंआंजे सर्वज्वरनाश होवै ॥ कणादिनस्य ॥ पिपली, आमला, हिंग, दारुहल्दी, बच, सफेद सर्षप, लहसुन इन्होंको बकरेके मूत्रमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजे विषमज्वरोंको नाशकरे ॥ सैंधवादिअंजन ॥ सैंधव, पिपली, चावल, मैन-

शिल इन्होंकी तेलमें खरलकरि नेत्रोंमें आंजे विषमज्वर नाशहोवै॥ लहसुनादि अंजन ॥ लहसुन, पिपली, राई, बच, कुलिंजन इन्हों को जलमें पीस नेत्रोंमें आंजे ज्वर नाशहोवे ॥ चतु ष्षष्टिकक्वाढ ॥ काकडा-सिंगी, हिंग, कायफल, हल्दी, कुलिंजन, रेणुकबीज, कटुकी, रास्ना एरंडमूल, लहसुन, दारूहल्दी, अमलतास, परवल, त्रायमाण, नि-शोत, चीता, मोरवेल, धमासा, गिलोय, चिकणा, दन्तीमूल, चिरफल वायविडंग, छोटी इलायचीदाने, दालचीनी, चिरायता, गुग्गुल, वासी इंद्रयव, काखसींग, क्षीरकाकोली, वाला, शतावरि, मिरच, ब्राह्मी भारंगी, गजपिपली, शुंठ, हरड, फालसा, मूर्वा, मोगरी, पिपलामूल नागरमोथा, अजमोद, अजमाण, बड़ीसौंफ, कृष्णागर, रक्तचंदन कूड़ा, चवक, श्वेतउपलसरी, बच, कायफल, दशमूल इन्होंकाकाढ़ा आठप्रकार के ज्वरोंको नाशै जैसे हस्तियोंको सिंह तैसे ॥ निम्बादि चूर्ण ॥ चिरायता, हरीतकी, नागरमोथा, कटेली, त्रायमाण, शुंठ, ध-मासा, कटुकी, चिकणामूल, कचूर, पिपली, परवल, बड़ीकटेली, वाला पिपलामूल, पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा सब विषमज्वरोंको हरै है॥ जीरकादिचूर्ण ॥ स्याहजीरा गुड़मिलाय खावे विषमज्वर जावे अ-थवा छोटीहरड़ शहदयुत खावे विषमज्वरको नाशै अथवा तुलसी के पत्तोंकेरसमें मरीचका चूर्ण मिलाय चाटे विषमज्वर जावे अथवा द्रोणपुष्पी के रसमें मिरचघाल चाटे विषमज्वर जावे ॥ वर्द्धमानपि-पली ॥ दूधके संग पांच से पीपलको बढ़ावे १०० तक फिर पांचतक घटावे ऐसे बर्द्धमान पिपली बहुत दिनोंतक लेवे चावल दूधको ह-मेशाह खावे तो वात, रक्त, ज्वर, पांडु, बवासीर, गुल्म, सोजा, उदर रोग, विषमज्वर इनरोगोंको यह वर्द्धमान पिपली नाशैहै और जीरा गुड़ अग्निमन्दको व शीतलज्वरको व वात रोगको नाशैहै॥ हरित क्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी शहद युत विषमज्वर को हरैहै और पिपली वर्द्धमान विषमज्वरको हरैहै वा जीरागुड़ विषमज्वरको हरैहै वा त्रि-फलागुड़युत विषमज्वरको हरैहै॥ वंदाकयोग॥ वंदाकचूर्ण तक्रकेसंग अथवा घृतकेसंग अथवा दही माडकेसंग विषमज्वरको हरैहै व हिंग संगभी वंदाकचूर्ण विषमज्वरकोहरैहै ॥ निंबादिचूर्ण ॥ निंबपान ४०

तोले शुंठ, मरिच, पीपल १ २तोले त्रिफला १ २तोले तीनोंलवण १२ तोले दोनोंखार८तोले अजमाण२० तोले इन्होंका चूर्णकरि प्रभात में भक्षणकरे इससे पांचोंप्रकारके विषमज्वर नाशहोवें ॥ भृङ्गराजचूर्ण ॥ जड़सहित भृङ्गराज को छायामें सुखावे पीछे चूर्णकर लेवे फिर इसी समान तोल त्रिफलाचूर्ण मिलावे फिर दोनोंके समान तोल मिश्री मिलावे एकरूप करि १ पल तोल प्रभातमें खावे अग्निमन्द रोग विड्बंध, पांडु इनको हरैहै ॥ दीप्यादिचूर्ण ॥ अजमोद, हरीतकी, हिंग चीता, शुंठ, जवाखार, जीरा, स्याहजीरा, पिपली, त्रिफला, सेंधव लवण इन्होंका चूर्ण विषमज्वरको हरैहै ॥ पंचसार ॥ घृत, शहद, दूध पिपली, सफेदखांड ये पंचसारहैं इन्हों को मिलायपीवे विषमज्वर हृद्रोग, कास, श्वास, क्षयीरोग इनको नाशैहै ॥ पद्मकादिसार ॥ पद्माख, बेलफल इन्हों का चूर्ण घृतसंग वा मट्ठाके संग पीवे विषम ज्वर जावे अथवा गौका दूध गोमयसहित पीवे विषमज्वर जावे ॥ लशूनादिकल्क ॥ लहसुनका कल्क तिलतेलयुत प्रभातमें खावे विषमज्वरजावे और वातव्याधि नाशहोवै ॥ गडूचीकल्क ॥ गिलोयका चूर्ण वस्त्र में छानाहुआ १०० तोले गुड़ १६ तोले शहद १६ तोले घृत १६ तोले एकत्रकरि अग्निबल पूर्वक खावे और पथ्य भोजन करे । इसके खानेवाले पुरुष के रोग होवे नहीं और जरा, बली पलित ये रोग आवे नहीं और ज्वर वा विषमज्वर नाश होवे और प्रमेह, वात, रक्त, नेत्ररोग ये भी नाशहोवे यह उत्तम रसायनहै बुद्धि को बढ़ावैहै और सन्निपातको हरैहै इसका सेवनेवाला १०० वर्ष जीवै दिव्यशरीर होजावे यह सर्वोपरि उपायहै ॥ विषममहाज्वरांकुशरस ॥ शुद्धपारा, विष, गंधक ये बराबर ले इनतीनोंके बराबर धतूराके बीज लेवे इन चारों से द्विगुणा शुंठ, मिरच, पीपल ले फिर अदरख अर्कमें व निंबूरसमें खरलकरै ऐसे महाज्वरांकुश रस सिद्ध होयहै इसकी मात्रा रत्ती २ देवे पांच प्रकारके विषमज्वर को नाश होवे और यहीरस त्रिदोषजज्वरको भी नाशकरै इसका फल १ प्रहरमें होयहै ॥ दूसरारस ॥ पारा १ भाग गंधक २ भाग सुहागा २ भाग विष १ भाग मिरच ५ भाग कायफल १ भाग जयपाल

१ भाग इन सबका चूर्णकरिदेवै यह दारुण ज्वरकोहरै और कभी रात्रिको ज्वरहो कभी दिनमें कभी दोदिनमें कभी तीन दिनमेंज्वर आवै यह विषमज्वर होयहै इसकोभी यहरस हरैहै ॥ मेघनादरस ॥ लोहभस्म, कांसीभस्म, तांबाभस्म ये समभाग इनतीनों के बराबर गंधक इनको पलाशकेकाढ़ामें खरलकरि गोलाबनाय गजपुट में फूंकदेवै याप्रकार छःपुटदे फूंकै शीतलहोनेपर मेघनादरस सिद्ध होवै १ माशा पानसंग लेवै विषमज्वर को नाशै ॥ गोपीज्यादिघृत ॥ सारिवा, भूमिआंवला, आंवला, सालवण, पिपली, कटुकी, बाला मुनक्का, वेलफल, कटैली, रक्तचन्दन, अतीश, नागरमोथा, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ा घृतयुत विषमज्वर को व क्षयी को व शिररोगको व पशुलीदर्द को व अरुचिको व छर्दि को व शोषको व हलीमकको नाशै है ॥ पंचतिक्तघृत ॥ बासा, निम्ब, गिलोय, कटैली, परवल इन पांच औषधोंको कल्ककरि घृतको पकावै वहघृत विषमज्वरोंको व पांडुरोग को व कुष्ठको व बिसर्पको व कृमिरोगको व बवासीर को नाशैहै ॥ षट्पलघृत ॥ शुंठि२० पिपली२० चीताजड़ २० चवक२० पिपलामूल२० ये प्रत्येक बीस२ तोले ले द्रोणतोल भर जलमें पकावै और चतुर्थांश रक्खै ये पांच औषधों के कल्कछठा सेंधवगैरै इसवास्ते इसघृतको षट्पल कहते हैं यह विषमज्वरको नाशकरैहै औरखांसी, श्वास, दुर्बलता, शीतलता, प्लीहा, ऊर्ध्वबात, सोजा, पांडु इनरोगोंको हरैहै । १००० श्लोक॥ ॥ क्षीरषट्पलघृत ॥ पिपली, पिप, लामूल, चवक, चीता, शुंठि, सेंधवलवण ये सब प्रत्येक चार२ तोले इन्होंका काढ़ा और काढ़ा समानदूध और घृत१ प्रस्थ तोल गेर सिद्धकरै यहघृत प्लीहाको व विषमज्वरको नाशकरै ॥ २प्रकार ॥दश मूल, पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता, शुंठि, दूध इन्होंमें पकाया घृत विषमज्वरको व खांसीको व अग्निमन्दताको व बातपित्तज्वर को व प्लीहाको व पांडुरोगको नाशैहै ॥ अमृताद्यघृत ॥ गिलोय, त्रिफला, परवल, धमासा इन्होंका काढ़ा घृत एकत्र पकायाहुआ विषमज्वर को व क्षयीको व गुल्मरोगको व अरुचिको व कामलाको नाशैहै ॥ शुंठ्यादिघृत ॥ शुंठि, पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता, य-

वाखार ये प्रत्येक चार२ तोले इन्होंका काढ़ा और प्रस्थतोल घृत अदरखरस एकप्रस्थ दहीमस्तु एकप्रस्थ इन्होंको एकत्रपकायसिद्ध करै यहघृत विषमज्वर को व जीर्णज्वर को नाशैहै ॥चन्दनादिघृत॥ चन्दन,चीता, कटैली,इन्द्रयव, नागरमोथा, शुंठि, कटुकी,त्रायमाण आंवला, बाला, दोनों सारिवा इन्होंका काढ़ाकरि दूध ४ सेर घृत १ सेर घालि फिर पकाय घृतको सिद्धकरै यहघृत चातुर्थिक ज्वर को व उन्मादको व विषमज्वरोंको व श्वासको व कास को व अप-स्मार यानी मृगीरोगको हरैहै ॥ कल्याणघृत ॥ विडंग, नागरमोथा त्रिफला, मंजिष्ठ,अनार, नीलेकमल, पिपली, बाला, एलाची,चंदन कृष्णागर, देवदारु, कालाबाला, कुलिंजन, सालवण उपलसरी दोनों पित्तपापड़ा, निशोत, जमालगोटा की जड़, वच, तालीसपत्र चिकणा, कडूवृंदावन, कटैली, मालती, पिठवण येसव तोले२ भर लेवै कल्ककरै घृत प्रस्थभर चौगुना दूध दूना जलमेंसिद्धकरै ऐसे कल्याणघृत हो यह त्रिदोषको हरै व विषमज्वर को श्वास कास गुल्म उन्माद इनको नाशै ॥ महाकल्याणघृत ॥ सबऔषध कल्याण घृतकी और जीवनीयगण प्रत्येक एक एकतोला, दशमूलके काढ़ा में व शतावरि के रसमें व चौगुने दूधमें सिद्धकरै घृतको सिद्धकरै यह महाकल्याणघृतहै यह अपस्मारको व शोषको नाशै और यह घृत काश्मरी बीजसंग नपुंसकताको हरै यहीघृत काकोल्यादिगण युत विषमज्वरको नाशै ॥कोलादिघृत॥ वेरी, अरणी, त्रिफला, इन्हों का काढ़ा, दही, घृत हिंगणचूरण, मिलाय घृतको तय्यारकरै यह घृत विषमज्वरको नाशै॥ अमृतघृत ॥शुंठि, चवक, यवाखार, पिपला मूल, चीता,पिपली येप्रत्येकचारचार तोलेघृत१ प्रस्थमेंपकावै और शहत १ प्रस्थ अदरखरस एकप्रस्थ इन्हों में भी पकावै यह घृ सिद्धिरूप पांचप्रकार के विषमज्वरोंको व सर्वज्वरों को हरै और शरीरकोस्थूलकरै और श्वास,कासकोहरै बलवर्ण, अग्निकोबँधावै॥ घृतपान ॥ घृतदेवै मन्द कफ बात पित्तादिकज्वर में और पकेदोषोंमें घृतअमृतहै और कच्चेदोषोंमें घृत विषरूपहै ॥षट्तकतैल॥ तैल एक भाग, सज्जीखार,शुंठि,कुलिंजन, मूर्वा, लाख,हल्दी, मांजिष्ठ इन्होंका

काढ़ा छः भाग, दही एकभाग ऐसे तैलको सिद्धकरै शरीर में मर्दन से दाहकोहरे ॥ लाक्षादितैल ॥ पद्माष, कुलिंजन, लाल कमल, अतीस पुष्करमूल, कमोदनी, बाला, मंजिष्ठ, अगस्त्य, गेरू, कायफल, दोनों सारिवा, लोध, नागरमोथा, क्षीरकाकोली, खजूर, भद्रमोथा, आँवला शतावरि इन्हों को कल्क सहित लाखरस व दूध व मस्तु व कांजी इन्होंमें सिद्धकिया तैल शरीरमेंलगावै दाहको व बिषमज्वरको नाश करै ॥ दूसरालाक्षादितैल ॥ पीपलकीलाखका काढ़ा २५६ तोले तैल ६४ तोले दही मस्तु २५६ तोले इन्होंको एकत्रकरि फिर बड़ीसौंफ तो० १ हल्दी तो० १ मूर्वा तो० १ कुलिंजन तो० १ पित्तपापड़ा तो० १ कटुकी तो० १ महुआफूल तो० १ रास्ना तो० १ असगंध तो० १ देवदारु तो० १ नागरमोथा तो० १ चन्दन तो० १ इन सबको महीनपीस पूर्वोक्तमेंडारै सबको एकरस मधुरी आंचसेपकावै जब रस जलजाय तेल आयरहै तब उतारले फिर इसतेलकोशरीरमें मर्दनकरै यहतेल बातरोगोंको व विषमज्वरोंको व कास को व श्वासको व पीनसको व खाजको व दुर्गंधि को व शूलरोगको व गात्रस्फुरण को व दरिद्रता को व ग्रहदोषको नाशैहै यह अश्विनी कुमारों का प्रकटकियाहै ॥ षट्तरणतैल ॥ लाख, महुआ, मंजिष्ठ, मूर्वा चन्दन, सारिवा इन्हों के काढ़ामें सिद्धतैल ज्वरको नाशैहै ॥ अजादि धूप ॥ बकरी चाम व रोम बच, कुलिंजन, लाख, गुग्गुल, निम्बपात इन्होंका धूप ज्वरको नाशैहै ॥ बचादिधूप ॥ बच, हरीतकी, घृतइन्हों का धूपविषमज्वरकोहरैहै ॥ मसूरधूप ॥ मसूरका तूषकाधूप सर्वज्वरों को हरैहै ॥ सहदेव्यादिधूप ॥ सहदेवी, बच, हल्दी, रास्ना इन्हों का धूप व लेप ज्वरको हरै है ॥ गुग्गुलादिधूप ॥ गुग्गुल, बच, राल, निंब आक, चन्दन, दारुहल्दी इन्होंकाधूप सर्वज्वरोंको हरै है ॥ माहेश्वर धूप ॥ शिवलिंगी, गोशृंग, विडालविष्ठा, सांपकी कांचली, मैनफल जटामांसी, बेलफल, गंगाजल, घृत, यव, गुड़, बावची, बकराके केश सिरसम, बच, हिंगु, कंबडल, मरिच ये समभाग बकरा के मूत्रमें पीसै यहधूप सर्वज्वरों को व डाकिनी पिशाचादि दोष को नाशैहै सर्पत्वचादिधूप ॥ सांपकी कांचली, सिरसम, हींग, नींबपात बराबर

ले चूर्णकरि धूपदेवै यहधूप राक्षस, डाकिनी दोषकोहरै व विषम ज्वरको भी हरै ॥ पलंकषादिधूप ॥ लाख, नींबपात, बच, कुलिञ्जन हरीतकी, सिरसम, यव,घृत इन्होंकाधूप ज्वर को शांतकरै॥ माहेश्वर धूप ॥बिंदोला, मयूरपंख,बड़ीकटैली,पलञ्जालु, मदनफल, दालचीनी,मार्जारविष्ठा,नख,बच,केश,सांपकीकांचली,हस्तीदांत,सींग, हिंग मरिच ये सब बराबरले धूपकरिदेवै तो स्कन्द ग्रहोन्माद, पिशाच राक्षस, देव इन्हों से उपजे ज्वर को नाशै ॥ निंबपत्रादिधूप ॥ निंब पात,बच,कुलिंजन,हरीतकी, सिरसम,घृत,गुग्गुल इन्होंकीधूप विषमज्वरको हरै ॥ मार्जारविष्ठाधूप॥ बिलावकी विष्ठा धूपसे विषमज्वर नाशहोवै अथवा श्मशानकी उपजी सहदेवी वा दूर्वाइन्होंकी जड़ को रक्त सूत्रमें बांधि हस्तमें बांधे विषमज्वर नाशहोवै अथवा अनुराधा नक्षत्रमें वा उत्तराभाद्रपद नक्षत्रमें आमकाबांदा वा कनेरका बांदा वा पलाशकाबांदा इन्होंको हाथपै बांधे तोज्वरनाशहोवै ॥ उलूकपक्षबन्ध ॥ उलूकका दाहिनापक्ष सपेद सूत्रसे बांयेंकानमें बांधे तो एकाहिक ज्वरजावै अथवा गोपालपत्री वा सहदेवी वा बला वा गोभी वा बिजयाइन्होंको पृथक्२मूलकंठपैबांधैतो ज्वरजावै॥ भूतकेशीमूलबन्ध॥ भूतकेशीकेसातखण्डकरिरक्तसूत्रसे हस्तपैबांधैज्वरजावै निर्गुण्डीबन्ध ॥ निर्गुण्डीजड़, सहदेवीजड़ प्रातःकालकटिमें बांधे सर्व ज्वरकोनाशै ॥ कनेरमूलिकाबन्ध॥ सपेद कनेरकीजड़कानके ऊपरबांधे व आककीजड़को कान ऊपर बांधे सर्वज्वरको नाशै ॥ संततज्वरचिकित्सा ॥ परवल,इन्द्रयव, देवदारु, गिलोय, निंबपात इन्होंकाकाढ़ा विषमज्वरकोनाशै ॥दूसराप्रकार ॥ परवल,इन्द्रयव, देवदारु,त्रिफला नागरमोथा,मुनक्का, दाख,महुआ, गिलोय,बासा इन्होंकाकाढ़ा शहद युत देवै यह पांचप्रकारके विषमज्वरोंको हरैहै ॥ तीसराप्रकार ॥ परवल, नागरमोथा, बासा, कटुकी, सारिवा इन्होंकाकाढ़ा संततज्वरको हरैहै ॥ चौथाप्रकार ॥ कडूपरवल, इन्द्रयव, धमासा, हरीतकी, कटुकी गिलोय इन्होंका काढ़ा संततज्वरको नाशै ॥ आमलक्यादिकाढ़ा ॥ आंवला, नागरमोथा, शुंठि, कटैली, गिलोय इन्होंका काढ़ा शहद व पिपलीचूर्ण युत संततज्वरको नाशै ॥ ज्वरभेद ॥ एकाहिक, द्वयाहिक

त्र्याहिक, चातुर्थिक ये विषमज्वरहैं और १ जीर्णज्वरहै ॥ संततज्वर चिकित्सा ॥ त्रायमाण, कटुकी, धमासा, सारिवा इन्होंकाकाढ़ा संतत ज्वरको हरैहै ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ परवल, हरीतकी, निंब, इन्द्रयव, गिलोय, धमासा इन्होंका काढ़ा कास सहित संततज्वरकोहरैहै ॥ द्राक्षादि ॥ मुनक्का, निंब, नागरमोथा, इन्द्रयव, त्रिफला इन्होंका काढ़ा अन्येद्युज्वरको हरैहै ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ परवल, त्रिफला, निंबपात दाखमुनक्का, अमलतास, बासा इन्होंका काढ़ा खांड़ शहद युत एकाहिक ज्वरको हरैहै ॥ ब्रह्मदण्डीनस्य ॥ ब्रह्मदण्डी का नस्य एकाहिक ज्वरकोनाशै ॥ सर्पाक्षिबन्ध ॥ चन्द्रमाका ग्रहणमें सर्पाक्षीको निमंत्रणकरिकाटै फिरइसकीजड़को कालेसूत्र करिबांधै बायेंकानके ऊपर एकाहिक ज्वरजावै और यही दाहिने कानकेऊपरबांधै तो द्व्याहिक ज्वरजावै अथवा कन्याकेकातै सूतसे ऊँगाकी जड़को शिखा में बांधै तो एकाहिक ज्वरजावै अथवा काकमाचीका मूल कान पर बांधै तो रात्रि ज्वरजावै ॥ सर्पाक्षीतिलक ॥ श्मशानकी जन्मी सर्पाक्षीकीजड़ रविवारको लावै फिर घृतमेंमिलाय तिलककरै तो एकाहिक ज्वरजावै ॥ दान ॥ अंगदेशमें व बंगदेशमें व कलिंगदेशमें व सौराष्ट्रदेशमें व काशी में दानकिया तिसको एकाहिक ज्वरमें स्मरण करै ॥ तर्पण ॥ जो तपस्वी अपुत्र सरस्वतीके तीरपै शरीर त्यागता भया तिसको तिलांजलि देने से एकाहिकज्वर जावै अथवा उलूकका दाहिनापक्ष रक्तसूत्रसे दाहिनेहाथमेंबांधै द्व्याहिकज्वरजावै ॥ बासादिकाढ़ा ॥ बासा, परवल, त्रिफला, दाख, अमलतास, निंब इन्होंकाकाढ़ा खांड़ शहदयुत द्व्याहिक ज्वरकोहरै ॥ पटोलादि ॥ कड़ूपरवल, निंब, मुनक्कादाख, अमलतास, त्रिफला, बासा इन्होंका काढ़ा खांड़ शहदयुत एकाहिक ज्वरकोनाशै ॥ अंजन ॥ भेड़के केशोंकीबत्ती बनाय तिलके तेल से भिगोय जलाय कज्जल करै इस काजलको दोनोंनेत्रोंमेंआंजैतोद्व्याहिकज्वरजावै ॥ हिंगुलयोग ॥ हिंगुलविषबराबरले खरलकरि १ रत्तीदेवै पंचप्रकारके विषम ज्वरोंको हरै। जैसे सूर्योदयसे अँधेरा तैसे ॥ तृतीयकप्रकार ॥ यहज्वर तीनप्रकार का है कफ पित्तात्मक कटि पृष्ठ संधि इन्होंमें प्रवेशहो पीछे शरीरमें प्रवेश

होयहै। और बात कफात्मक पृष्ठसे प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेशहो है और बात पित्तात्मक शिरमें प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेश होयहै ऐसे तृतीयकके तीनभेदहैं॥ महौषधादिकाढ़ा॥ शुंठि, गिलोय, नागरमोथा, चन्दन, बाला, धनियां इन्हों का काढ़ा शहद खांड़युत तृतीयक ज्वरकोहरै॥ शिशिरादि॥ रक्तचन्दन, धनियां, शुंठि, बाला, पिपली, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा शहद खांड़युत तृतीयक ज्वरकोहरैहै॥ उशीरादि॥ बाला, चन्दन, नागरमोथा, गिलोय, धनियां, शुंठिइन्हों का काढ़ा शहद खांड़युत दाह तृषासहित तृतीयक ज्वरको हरैहै॥ शीतभंजीरस॥ शीतभंजीरस रत्ती २ देनेसे वा मुसली को कांजी से पीनेसे तृतीयकज्वरजावै॥ अपामार्गमूलिकाबन्ध॥ ऊँगाकीजड़ रक्तसूत्रके सात तागों से कटिमें बांधै रविवारको इससे तृतीयक ज्वर जावै अथवा बाराहीजड़ कानपै बांधै वा उलूक पक्षको। हाथ पै बांधै वा पंचरंगसूत्र गलेमें बांधै इन्होंसे तृतीयक ज्वरजावै॥ चातुर्थिकज्वरनिदान॥ चातुर्थिक २ प्रकारकाहै। कफजन्य १ वातजन्य २ कफजन्य जंघाओंमें प्रथम प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेशहोयहै और वातजन्य प्रथम शिरमें प्रवेशहो फिर शरीरमें प्रवेशहोयहै। और विषमज्वर चातुर्थिक से अन्य मध्यावस्था में दाह करै है पहिले व ज्वरसे पीछे दुःखदेवै नहीं और विषमज्वर के उपद्रव औषधों से साध्यहै जैसे बीज भूमिमें हो वह बर्षाकाल में उत्पन्न होय है तैसे धातुओंमें दोष कालपर आय कोपैहै। और ज्वरका बेगनहींरहै तब धातुओंमें जाबसे है दीखता नहीं और तृतीयक चातुर्थिक ज्वरोंमें साधारण कर्म्मत्याग विशेष कर्मकरै। ज्वरकावेग कालको चितमन से ज्वरआवैतो सुन्दरअद्भुत पदार्थ दिखाय ज्वरकालको भुलावै। और संततज्वरको व विषमज्वरको अच्छे पथ्योंसे दूरकरै॥ बासादिकाढ़ा॥ बासा, आँवला, सालवण, देवदारु, धनियां, शुंठि इन्होंकाकाढ़ा खांड़शहदयुत चातुर्थिककोहरैहै॥ पथ्यादि॥ हरीतकी, सालवण, शुंठि देवदारु, आँवला, बासाइन्होंकाकाढ़ाखांड़शहदयुतचातुर्थिककोहरै॥ देवदार्व्यादि काढ़ा॥ देवदारु, छोटीहरीतकी, बासा, शालपर्णी, शुंठि आँवला इन्होंकाकाढ़ा शीतल शहद मिश्रीयुत देवै चातुर्थिकज्वर

को व कासको व श्वासको व मन्दाग्नि को हरै है ॥ स्थिरादिकाढ़ा ॥ सालवण, देवदारु, आँवला, सरलवृक्ष, शुंठि इन्हों का काढ़ा खांड़ शहदयुत चातुर्थिक ज्वरको नाशै ॥ दुःस्पर्शादिकाढ़ा ॥ धमासा, बाला बड़ी कटैली, नागरमोथा, महुआकेफूल, हरीतकी, असगन्ध, शुंठि वासा, गिलोय, पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ा शहदपिपली चुर्णयुत दाहको व पसीना को व शोषको व कृमिरोगको व रुधिररोग को व शीतलताको व भ्रांतिको व श्वासको व शूलको व तृषाकोवदि- वाज्वरको व रात्रिज्वरको व पांचौ बिषमज्वरोंको नाशैहै ॥ दार्व्यादि काढ़ा ॥ दारुहल्दी, देवदारु, इन्द्रयव, मंजिष्ठ, अमलतास, पाढ़ा, कचूर, पिप्पली, शुंठि, चिरायता, गजपिपली, त्रायमाण, पद्माख, बच धानियां, अदरख, नागरमोथा, सरलवृक्ष, सेंबा, दालचीनी, हरीतकी कटैली, पित्तपापड़ा, दर्भमूल, कटुकी, धमासा, गिलोय, पुष्करमूल इन्होंका काढ़ा विषमज्वर को व त्रिदोषज ज्वरको नाशै है ॥ मुस्ता- दिकाढ़ा ॥ नागरमोथा पहाड़मूल आँवला इन्होंकाकाढ़ा चातुर्थिक ज्वरको हरै अथवा त्रिफला दूधसंग चातुर्थिकको हरैहै ॥ बेलफल चूर्ण ॥ बेलफल मधुमाधवी इन्होंका चूर्ण सफेद बछरावाली गौके दूधके संग रबिवारकोपीवैतो इससे चातुर्थिकज्वर नाशहोवै ॥ पुनर्न- वादुग्धयोग ॥ सफेद सांठी की जड़ दूधसंग पीने से पित्तज्वर जावै अथवा ताम्बूल के भक्षण से भी चातुर्थिकज्वर जावै ॥ वृषदंशपुरी- षादियोग ॥ वृषदंशकीविष्ठाकोदूधमेंमिलायपीवैतोचातुर्थिकज्वरजावै॥ शिरीषकल्क ॥ सिरसकाफूल, हल्दी, दारुहल्दी इन्होंकाकल्क घृत संयुक्त चातुर्थिकज्वरको हरैहै ॥ हिंगुनस्य ॥ हींगपुरानीघृत संयुक्तकी नस्यलेनेसेचातुर्थिकज्वर नाशहोवै ॥ दृष्टांत ॥ जैसेसुन्दरकांताकामुख देखनेसे साधुभाव जातारहै तैसे ॥ अगस्त्यपत्रनस्य ॥ अगस्त्य पान के नस्यसे चातुर्थिक ज्वरनाश होवै ॥ उलूकपक्षधूप ॥ उलूक के पंख गुग्गुल इन्होंको कालेवस्त्रमें बाँध धूप देने से चातुर्थिक ज्वरनाश होवै अपामार्गकी जड़ रबिबारको गलेमें बांधै तृतीयकज्वरजावै ॥ सहदेवीमूलबंध ॥ नंगाहोके सहदेवीकी जड़को कानके ऊपरबांधै तो चातुर्थिक जावै अथवा द्रोणपुष्पीका रसनेत्रों में आँजैचातुर्थिक

जावे ॥ काकजंघादिबंध ॥ काकजंघा, चिकणा, पिप्पली, भृङ्गराज, उंगा इन्होंके प्रत्येक २ फूल गल में बांधनेसे चातुर्थिक जावे ॥ पंचकषाय ॥ कूड़ा, परवल पान, कटुकी १ कडूपरवल, सारिवा, नागरमोथा पाढ़ा, कटुकी २ निम्ब, परवल, त्रिफला, दाख, नागरमोथा ३ बासा चिरायता, गिलोय, रक्तचन्दन, शुंठि ४ गिलोय, आंवला, नागरमोथा ५ ये पांचकाढ़े पांचप्रकारके ज्वरोंको हरते हैं ॥ धातुशोषकविषमज्वर ॥ शरीरमें अन्नरसदुष्टहो और कफपित्तकोपकोप्राप्तहो आधे शरीरको गरमकरै और आधेको शीतल करैहै कफकरिके कोष्ठ में पित्तदुष्टहो और कफ हाथ पैरों में दुष्टहो ब्यवस्थितरहै इससे शरीर गरमरहै और हाथपैर शीतलरहैं पित्तकरिकै और कोष्ठमेंकफ दुष्टहो और हाथ पैरोंमें पित्तब्यवस्थितहो इससे शरीरशीतलऔर हाथ पैर गरम रहैं वायुकोप बिना बिषमज्वर होवै नहीं कफपित्त नाशहुये पीछे भी वायुचेष्टा करैहै शीत पूर्वक व दाहपूर्वक संततादि विषयों के स्वरूप रसधातु मध्यमें कफ बातरहते ज्वरकी आदि में शीत को पैदाकरैहै और वही शांतहोके अंत में पित्तदाह को पैदा करै है ॥ विषमभेदबातबलासक ज्वर ॥ अल्पज्वररहै, रुक्षशरीर हो सूजनभी हो अंग जड़हो अति कफाधिक्यहो ये लक्षण बातबलासक ज्वरके हैं ॥ प्रलेपकज्वरके लक्षण ॥ शरीर चिकट हो, कफ शरीरमें हो, मन्दज्वर हो, जाड़ा लगाकरै ये प्रलेपकज्वर के लक्षण हैं। प्रलेपकज्वरमें कफज्वर नाशक क्रिया करै। और रसधातु में स्थित पित्तज्वर पहिलेदाहको पैदाकरैहै वहपित्तशांतहुये बातकफ अंतमें शीतको पैदाकरैहै और शीतपूर्वकज्वर १ दाहपूर्वकज्वर २ येसंसर्गजज्वरहैं पहिलाकष्ट साध्य है दूसरा असाध्य है ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ शीतज्वरमें गरम चिकित्सा शीत नाशक करै और दाह ज्वरमें दाहनाशक कर्म्म करै ॥ शीतनाशक क्रिया ॥ आच्छादनभारी वस्त्रोंसे, कम्बलादिसे, रुईकेभरे कपड़ोंसे, शीतकोहरै ॥ क्षुद्रादि ॥ कटेली, शुंठि, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, धनियां, चिरायता, निम्ब गिलोय, भारंगी, रक्तचन्दन, पुष्करमूल, कडूपरवल, कटुकी, बासा मंजिष्ठ, इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा प्रातःकाल पीवै यह शीतज्वर व

पांचप्रकारके बिषमज्वरों को नाशैहै॥ शुकाद्यादिकाढ़ा ॥ कूड़ा, पवाड़ वासा, गिलोय, निर्गुण्डी, भृंग, शुंठि, कटैली, असमान इन्होंकाकाढ़ा शीतज्वर को हरैहै ॥ घनादि ॥ नागरमोथा, निम्ब, शुंठि, गिलोय, बड़ी कटैली, कडूपरवल, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ा शहदयुत शीतज्वरको हरै है॥ भद्रादि॥ भद्रा, धनियां, शुंठि, गिलोय, नागरमोथा, पद्माख रक्तचन्दन, चिरायता, परवल, बासा, पुष्करमूल, कटुकी, इन्द्रयव निम्ब, भारंगी, पित्तपापड़ा ये सब समभागले काढ़ाकरै प्रभात में पीवै तो शीतज्वर नाशहोवै ॥ बिभीतादिदाहपूर्वज्वर पर ॥ बहेड़ा अमलतास, कटुकी, निसोत, हरीतकी इन्होंका काढ़ादाहपूर्वक बिषमज्वरको नाशै है ॥ महाबलादि काढ़ा ॥ चिकणामूल, शुंठइन्होंका काढ़ा तीन दिन पीने से बिषमज्वर को व शीतज्वरको व कंपवायु को नाशै है॥ व्याघ्र्यादिकाढ़ा ॥ कटैली, शुंठि, कुरडूची, पुष्करमूल, चिरायता, बासा, गिलोय, भारंगी, निम्ब, परवल, पद्माख, नागरमोथा कटुकी, इन्द्रयव, रक्तचन्दन, इन्होंका काढ़ा कफ को व बात को व पंचबिधि, बिषमज्वरको व कृमिरोगको व पांडुरोगको व छर्दि को व कामलाको नाशै है॥ देवतापूजन ॥ महादेवजी को पार्वती व गण व मातृगण सहित को प्रभात में पूजनकरै तो बिषमज्वर मिटै। २ प्रकार विष्णुसहस्रनामस्तोत्रकेपाठ श्रवणकरैतो बिषमज्वरनाश होवै और तीर्थसेवनसे व वेदकेअध्ययनसेदेव, अग्नि, वृद्ध, ब्राह्मण इन्होंकीपूजासे बिषमज्वरशांतहोवै॥ पद्माकादितैल ॥ कूट, कमलकंद रक्तकमलकंद, कालाबाला, मृणालबिष, पुष्करमूल, कुमुदकंद, बाला मंजिष्ठ, पद्माख, गेरू, कायफल, दोनों सारिवा, लोध, नागरमोथा मोखवृक्ष, खजूर, भद्रमोथा, आंवला, शतावरि इन्होंकाकाढ़ालाखका रस, दूधमस्तु, कांजी इन्होंमें सिद्धकिया तैलदाहज्वरकोहरै है १६०॥ माहेश्वरधूप ॥ शिवलिंगी, गोशृङ्ग, विड़ालविष्ठा, सांपकेचली, गेलफल, भूतकेशी, जटामांसी, बेलफल, वंशत्वचा, घृत, यव, मोरचन्दा भेड़केकेश, सिरस, बच, हिंगु, गोहाड़, मिरिच इन्होंकी धूपबकराके मूत्रमें पिसीहुई सर्वज्वरोंको व डाकिनीको व पिशाच, प्रेतके दोषों को नाशै है॥ गोजिह्वादिचूर्ण॥ गोजिह्वा जयाजड़, इन्हों को चावल

के जलमेंपीसि पीवै शीतज्वरजावै अथवा पाढ़े के काढ़ामें मिरच मिलायपीवै तो शीतज्वरजावै ॥ जीरकादिचूर्ण ॥ जीरा,लहसुन,शुंठि मिरच, पिपली,पाढ़ा इन्होंको गरमजलसेपीसि गुड़युतपीवै शीतज्वरकी आदि में अथवा कडूकाकड़ीको खाय ऊपर खट्टातक्र पीवै फिर अग्निसेतपै देहसेपसीना निकसै शीतज्वर जावै ॥ कायस्थादि तैल ॥ तुलसी,रास्ना,कटुकी, दारुहल्दी, गुग्गुल, गठोना,सहदेवी बच,कूट इन्होंकोपीस सैंधव,यवाखार युतकरि निम्बुकेरसमें खरल करि फिर इसमें तैलको सिद्धकरै यहतैल अभ्यंगसे शीतज्वर को नाशै है अथवा मुरदाके कपड़ाकी धूपदेनेसे शीतज्वरजावै ॥ जयामूलीबन्ध ॥ जयाकीजड़को मस्तककेऊपरबांधै तो शीतज्वरजावै और देवडांगरीकी जड़ कानकेऊपर बांधै रात्रिज्वरजावै और आंब की जड़कानपरबांधैतो शीतज्वरजावै और आंबकीजड़कोशिखापैबांधै तोउष्णज्वरजावै और पुनर्वसुनक्षत्रमें मदारवृक्षका बांदालावै तिस को दाहिने हाथपर बांधै शीतज्वर जावै अथवा सुन्दर रूपवती मनको प्रसन्नकरनेवाली यौवनअवस्थावाली कुंकुम,कस्तूरी,स्तनों में लगायेहुये चंचलनेत्रवाली ऐसीस्त्रीकोआलिंगनशीतअवधितक करै इससे शीतज्वर जावै जब जाड़ा नाशहोजावै तबस्त्रीकोअलग अग्निमन्द शीतज्वर इनकोनाशै ॥ भूतभैरवचूर्ण ॥ हरताल, शिपी चूर्ण ये बराबरले इन्होंका नवमांश तूतियाले इन्होंको कुमारी रस में खरलकरै फिर बन उपलोंसे गजपुटमें फूंकदेवै शीतल होने पर रत्ती १ मिश्रीयुत प्रभातमें पीवै शीतज्वर नाशहोवै इसरससे किसी को छर्दिहोयहैकिसीकोनहीं। यहरस एकदिनमेंही शीतज्वरको हरै है पथ्य मध्याह्नमें चावल व शिखरणदेवै ॥ पथ्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, इन्द्रयव इन्होंका चूर्ण माशे १० गुड़सङ्गदेवै यह शीतज्वर को व बिषमज्वर को हरै है ॥ हरिद्रादिचूर्ण ॥ हलदी, निम्बपात,पिपली मिरच,नागरमोथा,बायबिडङ्ग,शुंठि,सैंधव,चीता, कूट, अतीश, पाढ़ा हरीतकी बराबरलेवै इनको बकरीके मूत्रमें खरलकरै। गोमूत्रसङ्ग नस्यमें बरतै और रुधिरके सङ्ग अञ्जनमें बरतै और रसोतकेसङ्ग खानेमें बरतै यह बिषमज्वर को जलदी हरै है। और शुंठि, मिरच

पिपली,शहत इन्होंके सङ्ग सन्निपातको नाशैहै। गोमूत्रसङ्ग शीत ज्वरको हरैहै। बासा रससङ्ग रक्त पित्तको हरैहै। क्षयी, कास,श्वास इन्होंमें दूध व असगन्ध के सङ्ग देवै। संग्रहणी में तक्रसंग देवै। मूत्रकृच्छ्र में चावल धोवन संगदेवै। प्रमेहमें शहतसंगदेवै। गुल्म व शूलमें गुड़के शरबतसंगदेवै। बायुरोगमें गरमजलसे देवै। शूल में अदरख अर्कसंग लेपकरै॥ आरोग्यरस॥ पारा, गन्धक, पिपली मूल,वंशलोचन, जयपाल,शुंठि,मिरच,पिपली,पाचोंलवण प्रत्येक२ भाग इन्हों को नागरपान के रसमें खरलकरै १ दिन यह रत्ती १ निशोत पानसंग नवज्वरको हरै सन्निपातमें रत्ती २ देवै यह परम दुर्लभहै॥ शीतांकुश॥ तूतिया, सुहागा, पारा,खपरिया,विषबचनाग गन्धक,हरताल इन्हों को करेलाके रसमें खरलकरै एक घड़ी तक यहरस रत्ती १ खांड़ जीराके संग देवै यह पांचप्रकार के बिषमज्व- रोंको व शीतको हरै॥ २ शीतारिरस॥ हरताल, खपरिया इनको मूषापर्णी के रसमें फिर धतूरा के रसमें खरलकरै देरतक इसकी गोलीदेवै शीतज्वर नाशहोवै॥ दूसराप्रकार॥ हरताल एक भाग तांबाभस्म एकभाग, तांबाका नवमांश नीलातूतिया इन्होंको पीस कौमारीके रसमें खरलकरै गजपुटमें पकावै शीतल होनेपर काढ़ै रत्ती २ खांड़संगदेवै इससे एकाहिक, द्व्याहिक, बेलाज्वर, चातुर्थिक इनज्वरों का नाशहोवै॥ तीसराप्रकार॥ मैनसिल, हरताल, तूतिया तांबा, पारा, गन्धक सब समानभाग लेवै त्रिफलाके रसमें खरल करि गोलाबनावै फिर सम्पुटमें दे कपड़ माटीकरि गजपुटमें फूंक देवै फिरिआकदूधमें व थोहरदूध में सातभावनादेवै फिर जमाल- गोटा के काढ़ा में सात भावना देवै ऐसे शीतारि रस सिद्ध होय है यह १ माशा तुलसी का रस व ६ माशे गुड़ मिरच नग ५० के चूर्णसंग लेवै ऊपर भात खावै शीतज्वर नाशहोवै॥ चौथाप्रकार॥ पारा एकभाग, गन्धक २ भाग, हिंगुल ३ भाग, जयपाल ४ भाग इन्होंको जयपाल की जड़ के रसमें खरल करै १ रत्ती मिश्री संग प्रभात में देवै शीतलजल के संग यह शीतज्वर को हरै है॥ सूतभै- रवरस॥ हरताल १ तोला तूतिया २ तोला सीपीकी भस्म ६ तोले

इन्होंका चूर्ण एकत्रकरै फिर धतूरा रस में १ पहर खरलकरै लोहे के पात्रमें फिर अग्नि के ऊपर धर शोषण करै फिर प्रभात कछुक गरम चणासमान खांडसहित खावै यह शीतज्वरको नाशै है इसमें संशयनहीं॥ दाहपूर्ब्बशीतोपचार॥ अरण्ड के पत्ते भूमि लीपीहुई पै बिछावै फिर वही पत्ते रोगीकी देह पै धारण करै तिससे दाह मिटै और ज्वर नाशहोवै और दाह शान्तहुये पीछे जो शीतलता आवै ताको युक्ती से निवारण करै॥ अथवा दाहनासवास्ते॥ सुन्दर स्त्री का आलिंगनकरवावै दाह पर्य्यन्त॥ शीतोपचार॥ दाहवाले मनुष्यको सीधासुलाय नाभीऊपर तांबा का वा कांसीका पात्रधरै तिसपर शीतलजल की धारा बहुत गेरै इसकर्म्म से दाह जल्दी नाशहोवै॥ षटचक्रतैल॥ साजीखार, शुंठि, कूट, रक्तचन्दन, मूर्वा, लाख, हलदी पतंग, मुलहठी इन्होंकेकाढ़ामें छहगुणा तक्रमिलाय तेलको सिद्धकरै यहतेलदाहसहित ज्वरकोनाशकरै॥ महाषट्कतैल॥ रास्ना, शुंठि, कूट रक्तचन्दन, हलदी, मुलहठी, पिपली, चिकणामूल, लाख, सैंधव, साखिा, पाढ़ा, देवदारु, रक्तरोहड़ा, बाला, समुद्रफेन, रोहिषतृण इन्हों के काढ़ा में तेलको पकाय छहगुणा तक्रमिलाय तेलको सिद्ध करै यहतेल दाहज्वरको व शीतलज्वर को नाशकरै॥ अंगारतैल॥ मूर्वा लाख, हलदी, दारुहलदी, मंजिष्ठ, कडू वृन्दावन, वड़ी कटैली, सैंधव, कुलिंजन, रास्ना, जटामासी, शतावरि इन्होंकाकाढ़ा कांजी २५६ तोले तेल एकसेर इसबिधिसेतेलको सिद्धकरै यहतेलज्वरको नाश करै है॥ रसादिधातु गतलक्षण॥ शरीर भारी रहै, हृदय भारी रहै अंगोंमें ग्लानिरहै, छर्दिआवै, अरुचिहोय, दीनताहोय ये लक्षणरस धातु गतज्वर के हैं रसधातुगत ज्वरवाला बमन व लंघन करै॥ धातुगतज्वरचिकित्सा॥ रसधातुगत ज्वरमें रससंशुद्धि याने पसीना लेवै और रक्तधातुगत ज्वर में रक्तमोक्ष याने दस्त करवावै मांस धातुगत ज्वरमें रेचन करवावै मेदधातुगत ज्वरमें सहन होवै नहीं परन्तु रेचन, बमन, स्वेदन करवावै अस्थिगतज्वरमें स्वेद व मर्दन करवावै मज्जा व शुक्रधातुगतज्वरोंको असाध्यजानै॥ रक्तधातुगत ज्वरलक्षण॥ रक्तथूकै बारम्बार दाहहो, मोहहो, छर्दिआवै, भ्रमरहै

ज्यादा बके, अंगोंपर फुनसीहों,तृषा ज्यादालगै ये लक्षण रक्तधातु गतज्वर के हैं २२ ॥ गायत्र्यादिकाढ़ा ॥ खैर, त्रिफला, निम्ब, परवल बासा, गिलोय इन्होंका काढ़ा शहत घृतयुत रक्तदोष में श्रेष्ठहै ॥ बराप्यजादिकाढ़ा ॥ त्रिफला, जीरा, बड़ी कटेली, हलदी, वेणुबीज बासा इन्होंकाकाढ़ा शहतयुत महा रक्तदोष को हरे है ॥ वृषादि ॥ बासा धमासा,पिपली, पित्तपापड़ा, चिरायता, कुटकी इन्होंकाकाढ़ा मिश्रीयुत रक्तदोष ज्वर,दाह,तृषा, मूर्च्छा, भ्रम, पित्तज्वर इन्हों को हरे है ॥ रक्तगतचिकित्सा ॥ जलसेक,ज्वरनानकऔषध,लेप,रक्तमोक्ष ये उपचार रक्तगतज्वर में हितहैं ॥ मांसगतज्वरलक्षण ॥ पिण्डियोंमें पीड़ा, तृषा, मलमूत्र ज्यादावेग, पसीना आवे, दाह, चित्त विक्षेप ग्लानि ये मांसगतज्वर के लक्षणहैं ॥ मांसगतज्वर चिकित्सा ॥ इस ज्वरमें तेजरेचनदेवे आरामहोवे॥मेदगतज्वरलक्षण ॥ अत्यन्तपसीना आवे तृषालगै, मूर्च्छा हो,ज्यादाबके, छर्दिआवे, दुर्गन्धशरीरमें हो अरुचिहो,ग्लानिहो, सहनशक्ति का नाश ये लक्षण मेदगतज्वरके हैं ॥ अस्थिगतज्वरलक्षण ॥ अस्थियों में पीड़ाहो ज्यादाथूके,श्वासहो अतीसारहो, बमनहो, अंगों का विक्षेपहो ये लक्षणअस्थिगतज्वर के हैं ॥ शास्त्रार्थ ॥ अस्थिगतज्वरमें छर्दिनाशकऔषध व बस्तिकर्म व अभ्यंग व उद्वर्तनकर्म ये करवावे ॥ मज्जागतज्वरलक्षण ॥ अँधेरी आवे और हुचकी आवे,कास,शीतलता,छर्दि,अन्तर्दाह,महाश्वास मर्मस्थानकहे वृषण,ललाट,हृदय, नेत्र इन्हों में पीड़ाहो ये लक्षण मज्जागतज्वर के हैं और मज्जा शुक्र गतज्वरकी चिकित्सा नहींहै अवश्यमरै ॥ वीर्य्यगतज्वरलक्षण ॥ शिस्न गर्वायमान रहै और बार-बार बीर्य्य आवहो ये शुक्रगतज्वर के लक्षण हैं इस ज्वर वाला निश्चय मरै ॥ साध्यासाध्य ॥ रस, रक्त, मांस, मेद इनमें रहता ज्वर साध्यहोयहै और अस्थि,मज्जागत असाध्यहै और वीर्य्यगतज्वर वाला जीवे नहीं ॥ प्राकृतवैकृतज्वर ॥ जिसऋतुका जो दोषराजाहो उसमें वही कोप प्रकटहोवे यह प्राकृतहोय है विपरीतप्रकटहो वह वैकृत होय है जैसे वर्षाऋतु में बात ज्वर, शरद ऋतुमें पित्तज्वर बसन्तऋतु में कफज्वर ऐसे प्राकृत हैं और वर्षाकाल में पित्तज्वर

शरत्काल में कफज्वर, बसंत काल में बातज्वर ऐसे वैकृत जानो और प्राकृत वातज्वर दुःसाध्य है और प्राकृत पित्तज्वर सुसाध्य है॥ उत्पत्तिक्रम ॥ ग्रीष्मऋतुमें संचितवायु वर्षाकालमेंकुपितहो और पित्त कफसे मिल ज्वरको उत्पन्नकरै और बर्षाकालमें संचित पित्त शरदकालमें कुपितहो और कफसे मिल ज्वरको उत्पन्न करै और कफ पित्तके स्वभाववाले को विसर्गकाल है और इसमें लंघन से भयहोत नाहिं और हेमंतकाल में संचित कफ बात पित्तसें मिल बसंतकालमें कुपितहो ज्वरको उत्पन्नकरै और इन्हों की काल के अनुसार प्रवृत्ति और वृद्धिजानो और वातादिदोषोंको बढ़ानेवाला आहार विहार अनुपशयहोय है और बातादि दोषों को शांतकरने वाला आहार विहार उपशयहोयहै ॥ अन्तर्वेगज्वरके लक्षण ॥ शरीर के भीतर दाहहो और तृषा ज्यादालगै और ज्यादाबकै श्वास और भ्रम हो और संधियों में और हाड़ोंमें शूलचालै और पसीना आवै नहीं और अपानबायु और मल रुकजावै ये लक्षण अन्तर्वेग ज्वर के हैं॥ बहिर्वेगलक्षण ॥ खाल ऊपर ज्यादा संतापहो और तृषा कम हो ये बहिर्वेगज्वर के लक्षणहैं यह सुखसाध्यहोय है और अंतर्वेग दुःसाध्यहोय है ॥ आमाशयगतज्वर लक्षण ॥ मुखसे लाल पड़ै और छर्दि आनेकेसी भ्रान्तिहोवै और हृदयभारीहो अन्नमें रुचि उपजे नहीं तन्द्रा आलस्य ये भी होवै और मुख पकजावै और मुख का रस जातारहै और शरीर भारीरहै भूखकानाशहो और मूत्रज्यादा उतरै और रोमांचहो ज्वरकावेग ज्यादाहो ये आमज्वर के लक्षण हैं इसमें औषध देवैनहीं जो देवै तो फिरज्वरको उत्पन्न करै और शोधन शमन औषधदेवै तो बिषमज्वर को उत्पन्न करै ॥ कटुक्यादि काढ़ा ॥ कुटकी नागरमोथा पीपलामूल हड़ इन्होंकाकाढ़ा आमज्वर में हितहै ॥ सर्व्वेश्वररस ॥ पारा १ भाग गन्धक २ भाग सुहागा ४ भाग जमालगोटा ८ भाग इन्होंको तीन दिनतक निरन्तर खरल करि पीछे ३ रत्तीभर देनेसे नवीनज्वर को हरै और ६ रत्तीरसको हरड़ का चूर्णके संगलेनेसे बातज्वर नाशहोवै और ६ रत्तीभर रस को खांड़ शहत के संगदेनेसे कफनाशहोवै और १ रत्तीभर देने से

भयंकर जीर्णज्वर को हरै और ज्यादा लंघनों से उपजे ज्वर को नाशकरै और ३ रत्ती रसको पीपली शहत के संगलेनेसे सूतिका रोग शान्तहोवै और पांचबर्ष के बालक को १ यव समान देनेसे ज्वर शान्तहोवै और १ रत्तीसे लगाय ४ रत्तीतक देनेसे क्रमबुद्धि से बिषमज्वरोंको शान्तकरै और खरीखांड़के संगदेनेसे तीनप्रकार के ज्वरको शान्त करै और ३ रत्तीभर रसको बायबिड़ंग अजमान के संगदेनेसे कृमिरोग को हरै ऐसे यह सब रोगों को शान्तकरै यहरस भैरवजीने कहाहै ॥ त्रिपुरभैरवरस ॥ मीठा तेलिया ४ माशा गन्धक तांबाभस्म जमालगोटा ये सम भाग लेइ पीछे इन्हों को जमालगोटा की जड़के रसमें खरलकरि १ पहरतक पीछे इसको ३ रत्तीभर देवै त्रिकुटा व अदरख का रस व मिश्रीकेसंग यहनया ज्वरको नाशकरै है और मन्दाग्निको व बायुके सूजनको व शूलको व विष्टंभको व ववासीर को व कृमिरोगको हरै और इसपर पथ्य तक्रके संगखावै ॥ रत्नगिरि ॥ पारा अभ्रक तांबा सोना भस्म गंधक ये समभाग लोहभस्म आधाभाग बैक्रान्त रत्नभस्म पावभाग पीछे इन्होंको भंगरा के रसमें खरलकरि पर्पटी रसकीनाईं पकाय पीछे चूर्णकरि पीछे सहोंजना बासा निर्गुण्डी गिलोय चीता भंगरा कटैली मुण्डी जयन्ती अगस्त्या ब्राह्मी चिरायता घिकुवार पट्ठा इन्हों के रसोंमें तीनतीन भावना देइ लघुपुट में पकाय शीतल होनेपर काढ़ि १ माशाभरदेने से पीपली के दानाके संग नयाज्वर को हरै २ घड़ी में यहरस योगवाही है और इसपर मूंग मूंगकायूष बायु तक्र ज्वरमेंकहे शाक ये पथ्य हैं ॥ नवज्वरेभसिंह ॥ शोधापारा गंधक लोह तांबा शीशा मिरच पीपल शुंठि ये सम भागलेइ और मीठा तेलिया आधाभाग मिलाय इन्होंको २ दिनतक खरल करि पीछे अदरख के रसके संग२ रत्ती देने से नयाज्वरको बात संग्रहणीको व सबरोगों को दूरकरै ॥ ज्वरघ्नीवटिका ॥ शोधापारा १ भाग शिलाजीत पीपल हरड़ै अकरकरा कड़ुआतेल में शोधागन्धक गडूंभा ये चार चार भागलेइ पीछे महीनपीसि गडूंभाकी जड़ के रसमें उड़द समान गोलीबनाय गिलोय के काढ़ा के संग खानेसे नवीन ज्वर

को नाशकरै और ये गोली ज्वरमात्रों को नाशकरनेवाली हैं॥ विश्व तापहरणरस ॥ पारा तांबाभस्म निसोत गन्धक कुटकी जमाल- गोटा पीपली मीठातेलिया कुचिला हरड़े येसमानभाग लेइ पीछे इन्हींको धतूरा के रसमें १ दिनतक खरलकरि पीछे २ वालभरकी गोलीबनाय अदरक के रसके संग खानेसे नवीन ज्वर शान्तहोवै इसमें पथ्य मूंगका यूष आदिहलका भोजन है॥ श्वासकुठाररस ॥ पारा गन्धक मीठातेलिया सुहागा खार मनशिल ये प्रत्येक चार चार माशे लेइ मिरच ३२ माशा त्रिकुटा २४ माशा पीछे इन्हींको खरल में बारीक पीसि तय्यार करि बर्त्तने से यह श्वासकुठार रस सबतरहके श्वासरोगों को व आठप्रकार के ज्वरोंको दूरकरै॥ उदक मंजरीरस ॥ पारा गन्धक मिरच सुहागा खार ये समभागलेइ और इनसबों के बराबर खांड़लेइ पीछे इन्होंको मच्छ के पित्ताकेरसमें बारम्बार खरल करि पीछे ३ रत्ती भर अदरकके रस के सङ्ग खावै और इस में दाहलगै तो शीतल बीजना से हवा करावै और तक्र चावल बैंगन की भाजी इन्हों का पथ्य देवै इस से नवीन ज्वर भ- यंकरभी शान्तहोवै १ दिनमें और पित्त ज्यादाबढ़े तो मस्तक ऊ- पर पानी का तरड़ादेवै॥ ज्वरधूमकेतुरस॥ पारा गन्धक शिंगरफ समुद्रफाग ये समान भागलेइ पीछे इन्होंको अदरक के रस में १ पहर तक खरलकरि पीछे २ वल्ल प्रमाण लेनेसे अदरक के रसके सङ्ग तीनदिन में नवीन ज्वर को नाशकरै॥ बटिका॥ पारा१ भाग गन्धक २ भाग शिंगरफ ३ भाग जमालगोटा ४ भाग पीछे इन्हीं को जमालगोटाकीजड़के काढ़ामें खरलकरि चिरमठी समानगोली बनाय प्रभात में मिश्री और ठंढेपानी के सङ्ग गोली को खानेसे १ दिनमें नयाज्वर को हरै॥ दूसरीबटी॥ पारा गन्धक मीठा तेलिया शुंठि मिरच पीपल हरड़े बहेड़ा आमला शोधा जमालगोटाकेबीज ये समभागलेइ पीछे इन्होंको द्रोणपुष्पीके रसमें भावना देइ पीछे उड़दसमान गोलीबनाय खानेसे नयाज्वर जावै॥ ज्वरांकुश॥हरिण के शिंगके टुकड़ेकरि ज्वालामुखी के रस में पीसि बर्त्तन में घालि चुल्हीपर मन्दअग्नि से २ पहर तक पकाइ पीछे अष्टमांश त्रिकुटा

मिलाय निष्कप्रमाण नागरपान के रसमें खाने से बात पित्तज्वर को व सबलरह के ज्वरोंको नाशै॥ नवज्वरेभांकुश॥ गन्धक सुहागा पारा मिरच इन्होंको मच्छी के पित्ता में तीन दिन तक भावना देइ पीछे ६ रत्ती तक खावै ऊपर तक्र चावल का पथ्य और बैंगन की भाजीलेवै इससे पसीना उपजि ज्वर शान्तहोवै॥ अमृतकलानिधि॥ मीठा तेलिया २ भाग कौड़ीभस्म ५ भाग मिरच ९ भाग इन्होंकी मूंगसमान गोली बनाय खानेसे ज्वर को व पित्त को व कफको व मन्दाग्निको हरै॥ पंचामृतरस॥ सोना भस्म १ भाग चांदीभस्म२ भाग तांबा भस्म ३ भाग शीशाभस्म ४ भाग लोह ५ भागइन्हों को मच्छ के पित्ता के रसमें भावना देइ पीछे ६ रत्ती रसको खांड़ अदरक रसके संग खानेसे सबप्रकार के ज्वर दूरहोवैं॥ जीर्णज्वरां-कुश॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म शीशाभस्म तांबाभस्म कान्त लोह भस्म वैक्रान्तमणिभस्म शिंगरफ सुहागाखार गन्धक मीठातेलिया कूठ ये सब समानभाग लेइ पीछे इन्होंको त्रिकुटा त्रिफला नागर-मोथा भंगरा निर्गुण्डी इन्हों के रसों में अलग २ भावना तीनदिन तक देइ पीछे उड़दप्रमाण खानेसे जीर्णज्वरको व क्षयीको व खांसी को व त्रिदोषको व मन्दाग्निको व पाण्डुको व हलीमकको व गुल्म को व उदररोगोंको व अर्दितको व संग्रहणी शूल अरुचि इन्होंको हरै और कांति तेज बल पुष्टि बीर्य इनको बढ़ावै साध्यासाध्यको भी हरै॥ पच्यमानज्वरलक्षण॥ ज्वरकाबेग अधिकहो तृषा ज्यादह लगै प्रलापहो श्वासहो भ्रमहो मलबहै छर्दिआवै ये पच्यमान ज्वरके लक्षण हैं॥ निरामज्वरलक्षण॥ अल्पक्षुधाहो शरीरहलकाहो अल्पज्वरहो बातादिक की प्रवृत्ति अच्छीतरहहो चित्तप्रसन्नहो ये लक्षण निरामज्वर के हैं॥ ग्रन्थांतरोक्तजीर्णज्वरनिदान॥ जिसके २१ दिनकेपीछे शरीर में सूक्ष्महोकर ज्वररहै और भूख जातीरहै शरीर दुर्बल होजाय पेटमें तिल्लीहोजाय ये जीर्णज्वर के लक्षणहैं जीर्णज्वरवाला ब्रत व लंघन कभीनकरै लंघनसे क्षीण नरहोजाता है और ज्वर बलवान् होवै है॥ पुरानेज्वरमेंदोष॥ अपथ्य करने से फिर कोपजाय तो पहिली तरह क्रियाकरै॥ ज्वरक्षीणकोबांति

निषेध॥ ज्वर क्षीणको बमन व रेचनहितनहीं इसरोगवालेको यथेच्छ दूधपानकरवावै वा निरूहण बास्तिदेवै और शरीरसे परिश्रमकरने से व मल्लादि अमंगलरूप पदार्थ देखने व सेवन से गयाहुआ भी ज्वर फेरआजावै है॥ बातजीर्णज्वर॥ जीर्णज्वरमें ज्यादह पसीना आवै वा रुक्ष शरीरहो तो घृतकापान करवावै अथवा जीर्णज्वरोंमें दोषपका पछि स्नेहवस्तिदेवै अथवा निरूहण वस्तिदेवै॥ छिन्नादि काढ़ा॥ गिलोयका काढ़ा पीपलिचूर्ण संयुक्त जीर्णज्वरको व कफ को नाशकहै अथवा पंचमूलका काढ़ा जीर्णज्वर व कफ इनको हरैहै॥ त्रिकण्टकादिकाढ़ा॥ कटैली शुंठ गिलोय इन्होंको काढ़ा पिपली चूर्णयुत जीर्णज्वर को व अरुचिको व कासको व शूलको व श्वासको व अग्निमन्दताको व अर्दितको व पीनसको व उर्द्धबिकार को हरै है॥ गडूचीकाढ़ा॥ गिलोय का काढ़ा चतुर्थांश शहदयुत पीवै जीर्णज्वर जावै॥ द्राक्षादि॥ दाख, गिलोय, कचूर, काकड़ासिङ्गी नागरमोथा, रक्तचंदन, शुंठि, कुटकी, पाढ़ा, चिरायता, धमासा, बाला धनियां, पद्माख, कालाबाला, कटैली, पोहकरमूल, निंब इन्होंका काढ़ा जीर्णज्वरको, अरुचिको, श्वासको, कासको, कंपको नाशै है॥ शुंठिकाढ़ा॥ शुंठि४तोला काढ़ाकरि शहदयुतदेवै यहकाढ़ाअरुचिको अग्निमन्दताको, पीनसको, श्वासको, कासको, उदररोग को हरै है और कांति, तेज और चित्तप्रसन्नता इनकोबढ़ावैहै॥ कर्णादिकाढ़ा॥ पिपली, महुवाफूल, मुनक्का, चिकणा, रक्तचन्दन, सारिवा इन्होंका काढ़ा क्षीणज्वरको हरैहै॥ तिक्तादि॥ कटुकी, पित्तपापड़ा, चिरायता नागरमोथा, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा जीर्णज्वरको हरै है॥ कलिंगादि काढ़ा॥ इन्द्रयव, कुटकी, नागरमोथा, चिरायता, पिपलामूल, शुंठि राजकन्या, देवदारु इन्होंकाकाढ़ा पिपली चूर्णयुक्त जीर्णज्वरको व विषमज्वरों को हरै है॥ द्राक्षादिचूर्ण॥ मुनक्कादाख, गिलोय, शुंठि इन्होंका काढ़ा पिपली चूर्ण युत श्वासको व शूलको व कासको व अग्निमन्दताको व जीर्णज्वरको हरै है॥ लवंगादिकाढ़ा॥ लवंग पिपली, पिपलामूल, कटैली, चीता, चिरायता, नागरमोथा, त्रायमाण, भारंगी, देवदारु, बासा, ब्राह्मी, गजपिपली, दशमूल, इन्द्रयव

खदिरपर्णी, रास्ना, काकड़ासिंगी, शुंठि, बच इन्होंका काढ़ा तुलसी के रसमें दे तो ज्वरको व सूतिकारोग को व शीतरोगको व अरुचि को व भ्रमको व अग्निमन्दको व गुल्मको हरै है ॥ तालीसादिचूर्ण ॥ तालीसपत्र १ भाग, मिरच २ भाग, शुंठि ३ भाग, पिपली ४ भाग वंशलोचन ५ भाग, इलायची आधाभाग, दालचीनी आधाभाग, खांड ३२ तोले यहचूर्ण रोचनहै पाचनहै कास, श्वास, ज्वर इनकोहरै और छर्दि, दस्त, सोफ, आध्मान, तिल्ली, ग्रहणी, पांडु इनकोहरै व खांड़को पकाय चूर्ण मिलाय गोली बनाय बरतै ३२० ॥ त्रिफलादि चूर्ण ॥ त्रिफला, पिपली इन्होंका चूर्ण शहदयुत भेदनहै और अग्नि को दीतकरै है ॥ कटूफलादिचूर्ण ॥ कायफल, नागरमोथा, कुटकी कचूर, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल इन्हों का काढ़ा शहदयुत वा अदरख का अर्कयुत जीर्णज्वरको व कास को व श्वासको व अरुचि को व बायु को व शूलको व छर्दिको व क्षय को हरै है ॥ त्रिट चूर्ण ॥ निशोत, पिपली, सारिवा, त्रिफला इन्हों का चूर्ण बराबर की खांड़युत भेदी है और कोष्ठ शूल, दाह, गौरव, ज्वर इनकोहरै है ॥ लवंगादिचूर्ण ॥ लवंग, जायफल, पिपली इन्हों का चूर्ण आधा तोला, मिरच २ तोला, शुंठि १६ तोले सबको मिला पीस बराबर की खांड़ युतकरि खावै यहचूर्ण ज्वर को व अरुचि को व प्रमेह को व श्वास को व गुल्म को व अग्नि मन्दको व संग्रहणीको हरै है ॥ पंचाजादि ॥ बकरीका मूत्र, मल, घृत, दूध, दही और गौका मूत्र, मल, दूध, दही, घृत और भेड़का दूध, दही, घृत, मूत्र, मल ये तीनोंजीवोंके पांच पदार्थमिले प्रत्येक प्रत्येक जीर्णज्वर को नाशै है ॥ लोधादिचूर्ण ॥ लोध, चन्दन, पिपलामूल, अतीश इन्हों का चूर्ण घृत, खांड़, शहदयुत खावै ऊपरसे दूधपीवै यह जीर्णज्वर को हरै है ॥ वर्द्धमानपिप्पलीयोग ॥ क्रमवृद्धि से पीपलि खावै फिर घटावै यथा प्रथम दिन में १ दूसरे दिन २ ऐसे दशदिनतक बढ़ावै फिर दश से घटावै ऐसे पिपली बार बार खावै एकहजार १००० तक खावै बलवान् को पिपली पिसीहुई खवावै और मध्य बलवान् को दूधसंग प्यावै शीतजाय हीन बलवालेको शहद संग चटावै कास

जीर्णज्वर, अरुचि, श्वास, हृद्रोग, पांडु, कृमि, मन्दाग्नि, विषमाग्नि उनको यह नाशै और पिपली, शहद व घृतकेसंग ज्वरको व श्वास को व कासको व हृद्रोगको व पांडुको व कामलाको व प्रदरको व प्रमेह को हरै है॥ पिप्पली मोदक॥ शहद एकभाग, घृत २ भाग पिंपली ४ भाग, खांड़ ८ भाग, दूध ३२ भाग, चातुर्जात १ भाग शहद १ भाग इन्हों को पकाय मोदक बनावै यह मोदक धातुगत ज्वरों को व श्वास को व कास को व पांडुरोग को व धातुक्षय को व अग्निमन्दको हरै है॥ मधुपिप्पलीयोग॥ पिपली शहदयुत मेद कफ, श्वास, कास, ज्वर, पांडु, प्लीहा इनको हरै है॥ दुग्धयोग॥ कफक्षीण जीर्णज्वर दाह सहित में गौका दूध हित है॥ पंचमूली क्षीर॥ पंचमूल युत गौका दूध कास को व श्वास को व शिरशूल को व पसुली शूल को व पीनस को हरै है॥ शितादिपेय॥ मिश्री घृत, शुंठि, खजूरी, मुनक्का, दाख इन्होंसे सिद्धदूधसर्वज्वरकोहरैहै। अथवा बेलची, बेलफल, सांठी, दूध, जल, एकत्रकरि पकायबाकी रहा दूध सर्व ज्वरोंको हरै है॥ विल्वादिकाढ़ा॥ बेलपत्र के पत्तों में सिद्ध किया दूध उत्पात ज्वरोंको हरैहै॥ मधुकादि॥ मुलहठी, अमलतास, मुनक्का, दाख, कुटकी, धमासा, त्रिफला, कडूपरवल इन्हों का काढ़ा रेचक है और त्रिदोष ज्वर को नाश करै है॥ अमृतादि हिम॥ गिलोय को रात्रि में जल माहिं भिगोवै प्रभात मथ छान पानकरै और पथ्यसे रहै गिलोयका यह हिमत्रिदोषज्वरकोहरै है। इसमें कुछ संशय नहींहै ऐसे जानो॥ गुडयोग॥ पिपलामूल चूर्ण गुड़युतखावै बहुतादिनों की नष्ट निद्रा जलदीआवै॥ वार्ताकभक्षण योग॥ संध्यासमयमें बैंगनकाशाक पकाय प्रभातशहदयुत देवै नींद जलदी आवै॥ गडूची स्वरस॥ गिलोय के रस में पिपली, शहद मिलायपीवै इससेजीर्णज्वर, कफ, तिल्ली, कास, अरुचि येसबजावैं॥ गुड़पिप्पलीयोग॥ पिपली गुड़युत जीर्णज्वर को व अग्निमन्द को व शूल को व खांसी को व अरुचिको व अजीर्ण को व पांडुकोवकृमि को नाशैहै और पिपलीसंग गुड़ दूना तौललेवै॥ वातकफज्वरावर॥ जीर्णज्वरवात कफसम्बन्धीमेंवातकफज्वरोक्तक्रियाकरै। औरजीर्ण-

ज्वर कफहीनमें दूध अमृत समान है और दूध नवीनज्वरमें बिष समानहै। अथवा चन्दनादि तैलसे वा नारायण तैल से जीर्णज्वर जावै॥ वर्द्धमानपिप्पली ॥ तीन तीन वृद्धि से वा पांच पांचवृद्धिसे व सात२ वृद्धिसे पिपली गौके दूधके संग लेवे पिसीहुई दशदिन तक फिर दशयें दिनसे घटावे ऐसेही इक्कीस दिन तक लेवे इसप्रयोगसे जीर्णज्वर नाशहोवे। और पांडु, कास, श्वास, अग्निमन्द कफाधिक्य येसब नाशहोवें॥ नस्य ॥ शहदयुत वा तैलयुतज्वरहारी औषधकी नस्यदेवे इससे शरीरका भारीपन व शिरका भारीपन शूल, इन्द्रिय, आलस्य, जीर्णज्वर नाशहोवे और रुचिउपजे॥ रक्त करवीरादिलेप॥ लालकनेर का फूल, कूट, आंवला, धनियां, बाला इन्होंका लेप ज्वरमें शिरकी पीड़ा को हरैहै॥ हिंग्वादिनस्य॥ पुराने घृतमें हिंग, सेंधवनिमक मिलाय नस्यदेवे ज्वरनाशहोवे॥ जयंती मूलबंध॥ सफेद अरणीका मूल शिखा में बांधे क्षीणज्वरनाशहोवे दृष्टांत। जैसेदुष्टनर पापकरि आतमाकोनाशै तैसे॥ वायसजंघाबंध॥ काकजंघा का मूल वा काकमाची का मूल शिर में बांधे नींदआवे अथवा स्नूहीका मूल गुड़युत खावे नींदप्राप्तहोय॥ मुक्तापंचामृत॥ मोती १ भाग, मूंगा ४ भाग, उत्तमबंग २ भाग, शंख १ भाग, शीपी १ भाग, चिरायता १ भाग इन्होंको ईखके रसमें फिर गौकेदूधमें फिर विदारी रसमें फिर कुवारपट्ठा रस में फिर शतावरिके रस में फिर दर्भके रसमें फिर हंसपदीके रसमें ऐसे दोपहर तक खरलकरे फिर वन उपलों की पांच पुटमें फूंकदेवे ऐसे पंचामृतरस सिद्धहोवै है यह ४ रत्ती पिपलीसंग खावे ऊपर वनस्पति खानेवाली गौ का दूध पीवे तो जीर्णज्वर नाशहोवे और इस से सब रोग नाश हों अपने २ अनुपान से॥ जीर्णज्वरांकुश॥ पाराभस्म, अभ्रक भस्म, शीशाभस्म, तांबाभस्म, लोहभस्म, वैक्रांतभस्म, हिंगल, सुहागा गन्धक, विषबचनाग, कूट ये सब बराबरले इन को शुंठि, मिरच पीपल इन्हों के रसमें खरलकरि भावना देवे फिर त्रिफला रसमें फिर नागरमोथा के रसमें फिर भृंगराजके रसमें फिर निर्गुण्डी के रसमें ऐसे तीनदिनतक खरलकरे यह रस उड़द समान तोलदेवे

इससे जीर्णज्वर, क्षयी, कास, मन्दाग्नि, पांडु, हलीमक, गुल्म उदर, आर्दितवायु, संग्रहणी, शूल सब प्रकार के आरोचक इतने रोग नाशहोवें । और यही कांति, तेज, बल, पुष्टि, वीर्य इन्हों को बढ़ावै और साध्यासाध्य रोग को भी हरै ॥ धातुज्वरांकुश ॥ लोह अभ्रक, तांबा, पारा, गन्धक, विष वच्छनाग, शुंठि, मिरच, पिपली त्रिफला, कोष्ठ ये सब बराबर लेवे इन्होंको भृङ्गके रसमें फिर अढ़-रख के रसमें फिर निर्गुण्डी के रसमें ऐसेतीनदिन खरलकरै फिर इसकी मूंगसमान गोलीकरै यही गोली रोगनाशक अनुपान से सर्वरोगों को हरै और अजीर्ण, वात, कास इनको तो अवश्यही हरै औरयही दीपनीहै रुचिको उपजावे है और धातु गत ज्वरों को भी नाशै है ॥ कल्याणघृत ॥ तालीसपत्र, त्रिफला, इलायची, वाला, ख-ड़नाग, पृष्ठिपर्णी, पृथक्पर्णी, जमालगोटा, अनार, उत्तम चन्दन सफ़ेद, हलदी, दारुहलदी, कटूवृन्दावन, कमलकन्द, जावित्री, कमल, पित्तपापड़ा, पद्माख,वायविडंग, मंजिष्ठ, कुष्ट कटैली, बारीक वेलची, सारिवा दोनों, तगर, लवंग इन्होंको चौगुने जलमें काढ़ा करै फिर काढ़ामें घृतगेरै पकाय घृतमात्र रहै तबउतारले यह घृत तृतीय ज्वरको व चातुर्थिक को व छातिकंप को व बंध्यादोषको व अपस्मारको व उदर रोगको व आमवात को व उन्मादको व जी-र्णज्वरको हरैहै अथवा शोषाधिकार में कहा चन्दनादि तैल जीर्णज्वर को हरैहै ॥ लाक्षादितैल ॥ लाखका रस २५६ तोले, तैल सेर १, दहीमस्तु ४ सेर, शतावरि १ तोला हलदी १ तोला मुल-हठी १ तोला रास्ना १ तोला असगन्ध १ तोला कटुकी तोला १ मूर्वा तोला १ पित्तपापड़ा तोला १ चन्दन तोला १ देवदारु तोला १ नागरमोथा तोला १ कोष्ट तोला १ ये सब मिलाय तैलको पकावे यह तैल विषमज्वरों को व पृष्ठअंगकी फूटनको व शूलको व दुर्ग-धिको व खाजको व भ्रमको व वातको हरैहै ॥ दूसरचन्दनादितैल ॥ चन्दन, वाला, रंजणीवृक्ष, चिकणा मुलहठी, शिलाजीत, पद्माख मंजिष्ठ, सरलवृक्ष, देवदारु, कचूर, इलायची, नागकेशर,तमालपत्र तैल, जटामासी, कंकोल, तगर, नागरमोथा, हलदी, दारुहलदी

सारिवा, चिरायता, लवंग, कुष्ठ, केसर, दालचीनी, पित्तपापड़ा नलिका इन्होंका काढ़ा चौगुना मस्तु तैल इन्हों को एकत्र पकाय सिद्धकरै यह तैल ग्रहपीड़ा को हरै और बल वर्णको बढ़ावै। और अपस्मारको व क्षयको व उन्मादको व क्षतको व अलक्ष्मी को व गात्रस्फोटन को व दाहको व जीर्णज्वरको हरै॥ हरीतकीपाक॥ हरीतकी ६४ तोले जल सेर १० में पकावै फिर दशमूल २ प्रस्थ गेरै प्रस्थ १॥ यवगेरै और पिपलीमूल, चीतामूल, भारंगी, शंखाहूली, चिकणामूल, कचूर, शुंठि, अघाड़ा, नागरमोथा, पोहकरमूल गजपिपली ये प्रत्येक चार चार तोले गेरै यह पथ्यापाक भृगु जी को कहाहै यह जीर्णज्वर को हरै जलदी तुष्टि, पुष्टि, बल ये बढ़ावै और रसकोप, संग्रहणी, क्षीणधातु, अतीसार, गुदरोग, श्वास, कास वात, रक्त इन्होंको हरैहै॥ कौक्कुटघृत॥ तरुणकुक्कुट का शिर, पैर आंत वर्जित मांसका कषाय ४०० तोले और बड़ीकटैली, काकड़ासिंगी, बेरी, कुलित्थ, भारंगी, आमला, कचूर, पोहकरमूल, पंचमूल, वड़ारासभ ४०० तोला जल दो द्रोणभर में पकाय चतुर्थांश रहै तब कषाय को ग्रहणकरै और छःगुणा दूध मिला फिर आढ़क भर घृतमिला सिद्धकरै फिर लघुपंचमूल मिलावै फिर घृतरहैपकनेमें तब उतारलेवै सुन्दर पात्र में घालै फिर बल दोष को बिचार मात्रापीवै जीर्णघृत हुआ पीछे रक्तसाठी चावल पथ्यखावै यह घृत जीर्णज्वर को व श्वासको व कासको व क्षयी को व बिषमज्वर को हरै और यह घृत लेखनहै व बलवर्ण, अग्नि इन्होंको बढ़ावेहैऔर बृंहणरूपहै और वीर्यको ज्यादा बढ़ावै है इसपै खटाई खावे नहीं॥ वासादिघृत॥ बासा, गिलोय, त्रिफला, त्रायमाण, धमासा इन्हों का काढ़ा और दुगुना दूध और पिपली, नागरमोथा, मुनक्कादाख चन्दन, कमल, शुंठि इन्हों का कल्कमिला घृतको पकावै यह घृत जीर्णज्वरको हरै है॥ पिप्पल्यादिघृत॥ पिप्पली, चन्दन, नागरमोथा, बाला, कुटकी, इन्द्रयव, आँवला, सारिवा, अतीश, सालवण मुनक्कादाख, आँवलाबीज, त्रायमाण, कटैली इन्हों के काढ़ामें सिद्ध घृत जीर्णज्वर को व क्षयको व कासको व मस्तक शूल को व पसु-

ली शूल को व अरुचि को व अंगतप्तता को व मन्दाग्नि को व विषमाग्नि को हरे है कोई वैद्यको मत यह है इस घृत को दूध में भी पकावे ॥ क्षीरवृक्षादितैल ॥ पिपली, आसना, निम्ब, जामन, सांतवण, सांदड़ा, सिरसवृक्ष, खैर, सारिवा, गिलोय, बासा, कुटकी पित्तपापड़ा, वाला, बच, मालकांगणी, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा वा कल्क में तैलको पकावे इसतैलको शरीर में मर्दन करे तत्काल जीर्णज्वर नाश होवे ॥ सेवतीपाक ॥ सेवतीके फूल एकहजार, घृत प्रस्थ तोलमें पकावे फिर घृतसे खांड़ ४ गुनी मिलावे फिर दालचीनी ४ तोले, नागकेशर ४ तोले, तमालपत्र ४ तोले, इलायची ४ तोले, मुनक्कादाख २४ तोले, शहद ३२ तोले, गिलोयसत २ तोले सबको मिला तय्यारकरे फिर मासे १० नित्यखावे यह जीर्णज्वर को व क्षयी को व कास को व अग्निमन्दको व प्रमेह को व प्रदर को व रक्तरोग को व कुष्ठ को व बवासीर को व दारुण नेत्ररोगको व दारुण मुखरोग को हरे है ॥ पिप्पलीपाक ॥ पिपली ६४ तोले दूध में पीसे फिर गऊका घृत १२८ तोले मिलावे इसको मंदाग्नि से पकावे फिर दशसेर चौबीसतोले खांड़ मिलाय पाक पकावे फिर शीतलहोनेपर दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर इन्होंका चूर्ण १२ तोले मिलावे इसकी मात्रा दोषधातु बल विचारकरिखावे यहपाक बलको व वीर्य को व तेजको बढ़ावे है और जीर्णज्वर को व क्षतक्षीण को पुष्टकरै है और तृषा, अरुचि, श्वास, शोष, जिह्वा रोग, कामला, हृद्रोग, पांडु, प्रदर, त्रिदोषजज्वर, वातरक्त, प्रतिश्याय, आमवात इनको हरे है एकवर्षतक नित्य खानेसे जरा याने बुढ़ापा जावे ॥ ज्वरमुक्तलक्षण ॥ इन्द्रिय प्रकाशमान हो, शरीर हलका हो, ग्लानिहो, चित्तस्वस्थ हो व प्रसन्नहो और सर्वोपद्रव की शांति हो यह ज्वर मुक्त के लक्षण हैं ॥ साध्यज्वरलक्षण ॥ अल्प दोषन में बलवान् ज्वर हो और उपद्रव रहित हो ये साध्य ज्वर के लक्षण हैं ॥ असाध्यज्वरलक्षण ॥ बहुत कारणों से बहु लक्षण ज्वर होवे है यह मृत्युरूप जलदी इन्द्रियों को नाशकरैहै और ज्वरक्षीण का व सूजावालाके ज्वर गम्भीररूप रात्रिमें बहुत देरतक रहै ऐसा

ज्वर प्राणनाशक होवै है और ज्वर केशोंका वेष सुंदर करै वह भी प्राणनाशक होवै है ॥ गम्भीरज्वरलक्षण ॥ जिस ज्वर में अन्तर्दाह हो, तृषा ज्यादहलगै, श्वास, कास, हो ये लक्षण गम्भीरज्वरके हैं असाध्यलक्षण ॥ जो ज्वर आरम्भ से विषम लक्षणवाला हो व जो ज्वर रात्रिमें बहुत देरतकरहै व क्षीण व रुक्ष मनुष्यको गम्भीरज्वर ये तीनोंज्वरअसाध्यहैं मनुष्यनको मारदेतेहैं ४२५ ॥ दूसराप्रकार ॥ कान के समीपमें पसीना ज्यादा आवै और सम्पूर्णगात्र चिकटहो और शरीर शीतलहो तब अवश्य मरै ॥ तीसराप्रकार ॥ जो ज्वरमें विह्वलहो व मूर्च्छा आवै व ज्यादा सोवै व बल रहैनहीं ऊपरजाड़ा लगै भीतर दाहहो तौ मृत्यु होवै ॥ चौथा प्रकार ॥ जिसके माथे पै पसीना आवै व ठंढाहो माथा, व शरीरकीनसें शिथिलहोजायँ उठताहुआ भी मोहको प्राप्तहो ऐसा स्थूलभी हो तौ दैवयोगसे जीवै पाचवां प्रकार ॥ जिसके रोम खड़े हुये हों और नेत्र लाल हों और हृदयमें ज्यादा शूलचलै और मुखमें श्वास ज्यादहहो ऐसामनुष्य अवश्य मरै ॥ अन्यअसाध्य लक्षण ॥ जो पुरुष स्वप्नमें प्रेतोंके संग मदिरा पीवै व जिसको स्वप्नमें कुत्तेसतावें वह मनुष्य घोर ज्वरको प्राप्तहो जल्दी मरै अथवा जिसको प्रभात समय में ज्वरहो और दारुण सूखी खांसी हो और बल, मांस शरीर में रहै नहीं ऐसा मनुष्य जल्दी मरै और जिसको तीसरे पहरकेवक्त ज्वरहो और कफ सहित दारुण कासहो और बल,मांस शरीरमें रहैनहीं ऐसामनुष्य मरै और जिस को ज्वरमें आपही दाह हो, तृषा ज्यादा लगै व मूर्च्छाहो व बल रहै नहीं और संधि टूटीसी दीखै ऐसारोगी जल्दी मरै और जिसको गो दुहनकालमें पीड़ा हो और पसीना ज्यादा आवै और लेप ज्वर हो ऐसा रोगी जल्दी मरै और जिसके मस्तक पै पसीना आवै और मस्तक ठंढा हो और शीत ज्वर आया करै और शरीर चिकटहो और कंठ पै स्थित पसीना छातीपर आवै नहीं ऐसारोगी निश्चयमरै और जिसको चिक्कणपसीना बहुतज्यादा आवै और शरीर शीतलहो ऐसा रोगी निश्चय मरै ॥ दूसराप्रकार ॥ हुचकी श्वास, तृषा, इन्हीं करि युक्तहो और भ्रम युतहो और नेत्रभी भया-

नकहों और निरंतर श्वास चलै और बलहीनहो ऐसा रोगीनिश्चय मरै॥ असाध्यज्वरलक्षण॥ जिसकी इन्द्रियां नाशहोजायँ इन्द्रियों की तेजी जातीरहै और शरीर कृश होजाय और अरुचि हो और ज्वर का बेग गंभीर व तीक्ष्ण हो ऐसे लक्षण वालेका इलाज बैद्य करै नहीं॥ ज्वरमोक्षपूर्वरूप॥ दाह, स्वेद, भ्रम, तृषा, कंप, विड्भेद, मूर्च्छा ज्यादा होवे और ज्यादा दुर्गंध युत हो ये लक्षण ज्वरमोक्ष पूर्व के हैं॥ ज्वरमुक्तलक्षण॥ शरीर हलका हो, मस्तक में खाज चलै और ओष्ठमें पड़पड़ी पड़ै और सबइन्द्रियां अपने अपने विषयोंकोग्रहण करने लगैं और शरीरकी सब व्यथा जाती रहै और सब शरीर में पसीना आवे भूख लगै, छींक आवे मल की प्रवृत्ति हो ये लक्षण ज्वर मुक्तके हैं॥ मधुरज्वरलक्षण॥ ज्वर, दाह, भ्रम, मोह, अतीसार छर्दि, तृषा, निद्रानाश, मुखलाल, तालू जीभ शोषणहो और बगलमें सिरसौं समान फुनसी निकसै ये मधुर ज्वरके लक्षण हैं यह ज्वर घृत पानसे अथवा स्वेदके रोकनेसे उपजै है॥ सुरसादियोग॥ तुलसी गोमयरस, जीरा, मरीमाखी, सावरसिंग, रक्तचन्दन, स्याहजीरा, बाला चिरायता, इन्द्रयव, गिलोय, इलायची, कमलाक्ष इन्हों को पीस पीवे मधुर ज्वरनाशहोवे॥ मुस्तादि॥ नागरमोथा, पित्तपापड़ा, मुलेठी मुनक्का, दाख इन्होंकाकाढ़ा अष्टमांश बाकीरहा शहतयुतपीवे यहपित्त भ्रमको व ज्वरको व दाहको व छर्दिको व मधुर ज्वरको हरै अथवा माखीकी बीट, सपेद ईख जड़, कपूर, कौड़ी, शङ्ख, तुलसीकी मंजरी बड़केपान ये सब बराबर ले काढ़ा करै अष्टमांश बाकीरक्खे तबपीवै यह मधुर ज्वर को हरै॥ चन्दनादि॥ रक्तचन्दन, बाला, धनिया कालाबाला, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, शुंठि इन्होंका काढ़ा मधुर ज्वर को हरै॥ मक्षिकादियोग॥ माखी गुड़ संयुक्त मधुरज्वर को व भ्रम को व मोह को व अतीसार को जल्दी नाशै॥ कृष्णमधुरलक्षण॥ ज्वर हो, नेत्रों में मोहहो, दन्तकाले होजायँ, व ओष्ठ काले होजावैं और जीभ, कंठ, मुख, नाक, ये सबलालहो और नेत्र चित्र वर्णहो और कंठमें मोती माला समान फुनसियों की माला पहिनी जायँ सातवेंदिन और इक्कीसदिन तक सिरसौं समान फुनसी सब

शरीर में होजावें ये लक्षण कृष्ण मधुर ज्वर के हैं ॥ सहस्रबेधपापाणादियोग ॥ हिंग, पाषाण, कछुवा की खोपरी, बड़ी इलायची तुलसीकेपत्ते, गोला, आंबकी गुठली, खसखस, इन्हों को गोमयरस में पीसप्यावे इससे कृष्ण मधुर ज्वरजावे ॥ भूनिंबादिकाढ़ा ॥ चिरायता, अतीस, लोध, नागरमोथा, इन्द्रयव, गिलोय, बाला, धनियां वेलफल इन्होंका काढ़ा शहद संयुक्त बिड्भेद को व श्वास को व कास को व रक्तपित्त को हरै है ॥ बासादिकाढ़ा ॥ बासा, दाख, हरीतकी इन्हों का काढ़ा शहत खांड़युत रक्तपित्त को व श्वास को व कास को व ज्वर को हरै है ॥ मधुकादिकाढ़ा ॥ मुलहठी, दालचीनी कुष्ठ, नीलेकमल, रक्तचन्दन, बच, त्रिफला, सादड़ा, बासा, मुनक्का दाख, सिरसवृक्ष, पद्माख, मूर्वा, भारंगमूल इन्हों का काढ़ा शहदयुत दाहको, व मूर्च्छा को, व तृषाको, व भ्रमको, व रक्तपित्त को हरै ॥ दुर्जलज्वरीकोपटोलादिकाढ़ा ॥ कडूपरवल, नागरमोथा, गिलोय, बासा, शुंठि, धनियां, चिरायता, कुटकी इन्हों का काढ़ा शहदयुत दुर्जल जनित ज्वर को हरैहै ॥ चिरायतादिचूर्ण ॥ चिरायता निसोत, बाला, पिपली, वायबिड़ंग, शुंठि, कुटकी इन्हों का चूर्ण शहदयुत दुर्जलज्वर को हरैहै ॥ हरीतक्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, निम्बपात, शुंठि, सैंधव, लवण, चीता इन्हों का चूर्ण दुर्जलज्वरको नाशै है ॥ शुंठयादिकल्क ॥ भोजनके आदिमें शुंठि, राई, हरड़ इन्होंकेकल्क को खावै यह कल्क नानाप्रकार के देशों के जलको सहे है ॥ आर्द्रकादि चूर्ण ॥ अदरक, जवाखार इन्होंकाचूर्ण नानाप्रकारके देशों के जलोंकोसहेहै इसको गरमजलसंगलेवे ॥ दुर्जलजेतारस ॥ बच्छनागविष २ भाग, कौड़ीभस्म ५ भाग, मिरच ६ भाग इन्होंकाचूर्ण वस्त्रसे छानि अदरखरस में खरल करै फिर मूंग समान गोली बांधै फिर जल के संग दो २ गोली प्रभात व सायंकाल भक्षण करै यह रस ज्वर को व दुर्जल को व अजीर्ण को व आध्मान को व विष्टम्भको व शूल को व श्वास को व कासको हरै है ॥ ज्ञानोदयरस ॥ इन्द्रयव १६ भाग, पित्तपापड़ा ४ भाग, जायफल ६ भाग, सफेदएरण्डमूल १ भाग इनसब के समान खांड़ मिलावे फिर नित्यखावे दुर्जलदो

ष मिटै ॥ हरिद्रकबृक्षयोग ॥ हल्दी, जवाखार इन्होंको गरमजल से लेवै यह अनेकदेशों के जलों के दोष को हरै ॥ मद्योद्भवज्वर ॥ मदिरा का अजीर्ण को विचारि खांड़युत जलपी के बमन करै व पित्तज्वर की चिकित्सा करै और इसज्वर की आदि में लंघन करै नहीं जिसको अपथ्यसे फिर ज्वर आजावै तिसको आदिमें लंघन करावै और जिसके उदरमें मलहो और अपथ्यसे ज्वर आजावै तिसे रेचनदेवै तो आराम होवै ॥ किरातादिकाढ़ा ॥ कुटकी, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा, गिलोय इन्हों का काढ़ा पुनर्ज्वर को हरै ॥ तिक्तादिकाढ़ा ॥ कुटकी, बाला, चिकणा, धनियां, पित्तपापड़ा नागरमोथा इन्हों का काढ़ा पुनर्ज्वर को हरै ॥ अपथ्यजज्वरलक्षण॥ अपथ्यजज्वरमें व मध्यजज्वर में प्रधान पित्त रहै है और दाह,शीत शिरमें शूल, उदरवृद्धि, अतीसार, मल बद्धता, कंडू ये सबहों अपथ्यजज्वर में ॥ कटुक्यादि ॥ कुटकी, पिपलामूल, नागरमोथा, हर्रे अमलतास इन्हों का काढ़ा सर्व ज्वरों को हरै है॥ आमलक्यादि चूर्ण ॥आमला, चीता, हर्रे, सैंधव निमक, पिपली इन्हों का चूर्ण सर्वज्वरों को हरै है और यह भेदी है, रुचि करै है, कफको जीतै है दीपन है, पाचन है ॥ गुडूच्यादिकाढ़ा ॥ गिलोय, धनियां, निम्बछाल, पद्माख,रक्तचन्दन इन्हों का काढ़ा सर्वज्वरों को व दाहको व लालपड़ती को व तृषा को व छर्दि को हरै है और रुचिकारक है ॥ क्षुद्रादि ॥ कटैली, चिरायता, शुंठि, गिलोय, एरण्डमूल इन्हों का काढ़ा आठप्रकार के ज्वरको हरै है ॥ नागरादि ॥ शुंठि, देवदारु धनियां, दोनोंकटैली, इन्हों का पाचनज्वरको हरै है और पिप्पल वृक्ष के पूजन से व हवन से व मन्त्रजप से व महादेव पूजन से व ब्राह्मण, गुरू पूजन से, व बिष्णुसहस्रनाम पाठ से, मणिधारणसे व दान से, व तपस्वी के आशीर्बाद से इनकर्तव्योंसे आठप्रकार के ज्वरोंका बेग नाश होवै है अथवा समुद्र के उत्तरतीर में द्विविद नाम बानर है उसके स्मरण करने से ज्वरनाशहोवै है ॥ वेलाज्वर ॥ शोकसे व क्रोध से व अजीर्ण से व संतापसे व बलहानि से अन्तकाल में भयङ्कर ज्वर उपजै है ॥ मूलिबन्धन ॥ नीलीकाजड़ सर्व

ज्वरों को हरै है व दूधीकी जड़ कानपै बांधै बेलाज्वर को हरै है॥ पिप्पलीचूर्ण॥ पिप्पली का चूर्ण शहद में मिलाय चाटै कास ज्वर हुचकी, श्वास इनको हरै और कंठको शुद्धकरै और प्लीहाको नाशै और बालकों को हित है॥ धान्यादिचूर्ण॥ धनियां, लवङ्ग, निसोत शुंठि इन्होंका चूर्ण गरमजल से खावै तरुणज्वर नाश होवै और इन्हों का काढ़ा अग्निमन्द को व श्वास को व बिषम अजीर्ण को वात इनको हरै है॥ गोरोचनादिचूर्ण॥ गोरोचन, मिरच, रास्ना कुष्ठ, पिपली इन्हों का चूर्ण गरमजलसे लेवै सर्वज्वर नाशहोवै॥ सितोपलादिचूर्ण॥ मिश्री १६ तोले, बंशलोचन ८ तोले, पिपली ४ तोले, इलायची २ तोले, दालचीनी १ तोले इन्होंका चूर्ण घृत शहद युत खावै यह कास को व श्वास को व क्षयी को व हस्त पाद, अंग इन्हों की दाह को व मन्दाग्नि को व जीभजकड़ना को व सुप्तजिह्वा को व पशुली शूलको व अरुचिको व ज्वरको व ऊर्ध्व-गत रक्तबिकार को व पित्तको नाशै॥ भारंग्यादिचूर्ण॥ भारंगी, का-कड़ाशृंगी, चव्रक, तालीसपत्र, मिरच, पिपलामूल, ये प्रत्येक आठ आठ तोले, शुंठि २४ तोले, पिपली ४ तोले, गजपिपली ४ तोले इलायची १ तोले, नागकेसर १ तोले, दालचीनी १ तोले, तमाल पत्र १ तोले, बाला १ तोले, मिश्री ४ तोले यहचूर्ण अष्टविधज्वर को व कास को व श्वास को व सोजा को व शूलको व उदर रोग का व आध्मान को व त्रिदोष को हरै है॥ अनन्तादिचूर्ण॥ धमासा बाला, नागरमोथा, शुंठि, कुटकी इन्होंकाचूर्ण १ तोला सुखोष्णजलके सङ्ग सूर्योदयसे पहिले खावै यह सर्व ज्वरों को व मन्दाग्नि को हरै॥ भेडोक्तसुदर्शनचूर्ण॥ तालीसपत्र, त्रिफला, बारीक इलायची त्रिकुटा, त्रायमाण, निसोत, मूर्वा, पिपलामूल, हल्दी, दारुहल्दी कचूर, चिकणामूल, कोष्ट, कटैली दोनों, नागरमोथा, पित्तपापड़ा निंब, पोहकरमूल, भारंगी, अजमान, बाला, चवक, चित्ता, सपेद कमलकन्द, तगर, काला बाला, बायबिड़ंग, बच, धमासा, कुड़ा-छाल, गिलोय, इन्द्रयव, देवदारु, पीतबाला, सेंबाबीज, करूपरवल, कुटकी, पद्माख, तमालपत्र, अतीस, काकोली, मुलहठी, केसर, वंश-

लोचन, लवंग, पिठवण, दगड़फूल, सालवण, सूखीआंवकी गुठली इनको बराबरले इनसबसे आधाचिरायता, सबको मिला चूर्णकरै यह सुदर्शन चूर्ण ज्वरको, द्वंद्वज्वरको, त्रिदोषज्वरको, विषमज्वर वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर, धातुज्वर, अभिघातज्वर, सामज्वर मानसज्वर, दाहज्वर, शीतज्वर, तृतीयकज्वर, चातुर्थिकज्वर, बिपर्य्यज्वर, एकाहिकज्वर, द्व्याहिकज्वर, सन्निपातज्वर, पक्षज्वर, मासज्वर, तृषा, दाह, मोह, भ्रम, दैन्य, तन्द्रा, श्वास, कास, अरुचि, पाण्डु, हलीमक, कामला पशुलीशूल, पृष्ठशूल, जानु शूल, स्त्री का रजोदोष, वात, पित्त, शिरोग्रह, नानाप्रकारके देश, जलजदोष, त्रिकशूल, सम्पूर्ण बालबिकार, दूषीविषजाविकार इनरोगोंको सुदर्शनचूर्ण गरमजलसङ्ग हरैहै जैसेसुदर्शनचक्र दैत्योंकोनाशै तैसे॥सुदर्शनचूर्ण॥ त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी, दोनोंकटैली, कचूर, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल, मूर्वा, धमासा, कुटकी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, मेंहदी बीज, बाला, निम्ब, पोहकरमूल, मुलेठी, कूड़ा, अजमान, इन्द्रयव, भारङ्गी, सेंबाबीज, त्रुटी, बच दालचीनी, पद्माख, कालावाला, चन्दन अतीसचिकणा, शालिपर्णी, पृथक्पर्णी, बायविड़ङ्ग, तगर, चीता, देवदारु, चवक, करूपरवल, पान, जीवक, ऋषभ, दोनोंके अभावमेंभूमि आँवला, लवङ्ग, वंशलोचन, सफेद कमल, काकोली, मुलहठी, तमालपत्र, जावित्री, तालीसपत्र, येसब बराबरले सबसे आधाचिरायता इनका चूर्णकरै यह सुदर्शन चूर्ण वातज्वर, पित्तज्वर, कफज्वर द्वंद्वज्वर, त्रिदोषज्वर, विषमज्वर, आगंतुकज्वर, धातुज्वर, सन्निपात ज्वर, पीनस ज्वर, एकाहिकादि ज्वर, मोह, तन्द्रा, भ्रम, तृषा, श्वास, कास, पाण्डु, शीतज्वर, कामला, त्रिकशूल, कटिशूल, जानुशूल, पशुली शूल, इनरोगोंको यह सुदर्शनचूर्ण शीतल जलकेसङ्ग सब रोगोंको नाशकरैहै दृष्टांत जैसे सुदर्शन चक्र सबको नाशैहै तैसे यह चूर्ण है ५२५॥ लघुसुदर्शनचूर्ण॥ गिलोय, पिपली, पिपलामूल, कुटकी, हर्र, शुंठि लवङ्ग, निंब, दालचीनी, चन्दन, इन सबसे आधाचिरायता इन्होंका चूर्ण यह लघु सुदर्शन चूर्णहै सर्वज्वरोंको हरै इसमें संशय नहीं॥ आमलक्यादिचूर्ण॥ आंवला, हर्र, सैंधव, चीता, पिपली

इन्होंका चूर्ण जीर्ण ज्वरको व अग्निमन्दको व मलबद्धताको नाशै है ॥ केसरादि ॥ बिजौराकीकेसर,शहत,सैंधवनिमकयुत जीभरोगको व तालु,गल,शोषकोहरै मस्तकपर लेपै॥ विदार्यादि॥ बिदारी,अनार लोध, कवट, बिजौरा, इन्होंकालेप मस्तकके ऊपरकरै तृषा,व दाह नाशहोवै॥ ज्वरघ्नीगुटिका॥ शुद्धपारा १ भाग इलायची ४ तोला राल लोन तो०४ पिपली तोला ४ हर्रे ४तोला अकरकरा ४ तोला गन्धक कटुतैलमेंशुद्ध४तोला इन्द्रबारुणी यानेगडूंभा४तोला इन्हों का चूर्ण गडूंभाके रसमेंकरै १मासाकी गोलीबांधै फिर गोली गिलोय के रससङ्ग लेवै सर्व ज्वर नाशहोवै॥ बलादिघृत ॥ चिकणा, गोखुरू कटैली, पृष्ठिपर्णी, धवकेफूल, निंब, पित्तपापड़ा,नागरमोथा, त्राय-माण, धमासा, इन्होंके काढ़ामेंभूमिआमला, कचूर, मुनक्का,पोहकर-मूल, मैदा, आंवला इन्होंका कल्क मिलाय फिर ६४ तोले घृत ६४ तोले दूध, इन सबको मिला घृतको सिद्धकरै यह घृत ज्वरको व क्षयीको व कासको व शिरशूलको व पशुली शूलकोहरैहे॥ मंजि-ष्ठाद्यघृत ॥ मंजीठ, अतीस,हर्रे, बच,शुंठि,कटुकी,देवदारु,हल्दी सब चार तोले इन्होंका काढ़ा करि फिर औषध गेरै शुंठि, पिपली,हिंग जवाखार, साजीखार, कटुपंचक, इन्होंका कल्क मिलावे १ तोलाएक फिर ६४ तोला घृत मिलावै ऐसे घृतको सिद्धकरै यह घृत कफज्वर कोव अण्डवृद्धि वहुचकीको व अरुचिको व श्वासको व पाण्डुको व मलबद्धताको व प्रमेहको व बवासीरको व प्लीहको व अपस्मार को व क्षय व उदावर्त्तको व मन्दाग्निको व कृमिको व कुष्ठको नाशैहे॥ कु-लित्थादिघृत ॥ कुलथी, बेरी, हरीतकी, बहेड़ा, आंवला, दशमूल, यव इन्होंका काढ़ा १६३८४ तोले जलमें बनावे फिर पंचकोल, सातवर्ण आंवला, हींग, तुंबरु, कचूर, पोहकरमूल, आकजड़, अतीस, बच चिरायता, नागरमोथा, काकड़ाशृंगी, धमासा, करंज, पाडल काष्ठ पाढुल, कटुकी,कटैली, परवल, निम्ब, पाथरी,कासिब्दा, मदनफल जटामासी ये सबको प्रत्येक एकएक तोला,सब लवण४तोले,जवा-खार १ तोला,सज्जीखार १ तोला,घृत६४तोला,इनसबको मिलाय सिद्धकरै यह घृत कफ व बातको व गृध्रसी वायु व संग्रहणीको व

गुल्मको व श्वासको व कासको व बवासीर को हरै है औरदीर्घज्वर वालोंको अमृत समानिहै ॥ अमृतादिघृत ॥ गिलोय, हरीतकी, बहेड़ा आंवला, परवल, धमासा, इन्हों में पकाया घृत विषमज्वर को व क्षयीको व गुल्मको व अरुचिको व कामलाको हरै है ॥ गुडूच्यादि-घृत ॥ गिलोयके रसमें सिद्ध घृत व त्रिफलाके रसमें सिद्धकियाघृत व मुनक्कादाखकेरसमेंसिद्धकिया घृत व चिकणाके रसमेंसिद्ध किया घृत ये सब घृत ज्वरको हरै हैं ॥ पंचातिकघृत ॥ बसा,निम्ब,गिलोय कटैली, परवल इन्होंके कल्कके बराबर घृत सिद्धकिया विषमज्वर पाण्डु,कुष्ठ,विसर्प,मूलव्याधि,अर्श,कृमिइन्होंकोहरैहै ॥ अमृतादि२ ॥ गिलोय, त्रिफला, परवल, धमासा इन्होंका काढ़ा सैंधव निमक ४ तोला दूध २५६ तोला घृत६४तोलाऐसे घृतकोसिद्धकरैइसघृतमें दूध ४ गुणागेर पकावै यहघृत विषमज्वरको व प्लीहाको व अरुचि को व मन्दाग्नि को नाशै है यह घृत परमोत्तम है ऐसे जानना ॥ महाषट्पलघृत ॥ करंज, चीता, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल चवक, लवण, जीरा, स्याहजीरा, सोराखार, जवाखार, बिडलोन हिंग, शेरणी, सैंधव,लवण, अदरखरस,घृत सबको मिलाय घृतको सिद्धकरै यह षट्पल घृत अरुचि को व अग्निमन्द को व प्लीहाको व ज्वर को व श्वास को हरै है ॥ प्रकार२ ॥ पिपली, पिपलामूल चवक, चीता, शुंठि, सैंधव नमक ये सब चार चार तोले इसब्रसे चौगुणे जल में काढ़ाकरै फिर काढ़ासे चौगुणा दूध फिर ६४ तोले घृत मिलाय सिद्धकरै यह घृत प्लीहको व विषमज्वरको व मन्दाग्नि को व अरुचि को हरै ॥ लघुलाक्षादितैल ॥ लाख, मजीठ, हल्दी इन्हों का कल्क तिल तैल छहगुणा कांजी के जल में सिद्धकरै यह तैल दाहको व शीतज्वरको हरै है ॥ लाक्षादितैल ॥ लाख १०तोला मंजीठ ६तोला चन्दन ४ तोला रक्तचन्दन ४ तोला दालचीनी ४ तोला तमालपत्र ४ तोला एकांगीमुरा ४ तोला नागरमोथा४तोला चिरायता २ तोला निसोत २ तोला शुंठि २ तोला गिलोय २तोला पिपली २ तोला पित्तपापड़ा २ तोला कटैली २ तोला बायबिडंग २ तोला शुंठि २ तोला आमला २ तोला बासा २ तोला हल्दी २

तोला वारुणी २ तोला निर्गुण्डी २ तोला इन्होंका कल्कतय्यारकरि ६०० तोले गौकादूध ४०० तोले तिलका तैल सबको मन्दाग्निसे पकावै यह तैल सर्व्वज्वरोंको नाशै और बल, वीर्य, पुष्टि इन्होंको पैदाकरै और इसके मर्दनसे श्रम, भ्रम जावै और कान्तिको बढ़ावै और अस्थिपीड़ाको नाशै और नींद को प्राप्तकरै॥ मध्यमलाक्षादि तैल॥ तैल ६४तोले इससे चारगुणा लाखकाकाढ़ा फिर नागरमोथा १ तोला कुष्ठ १ तोला मुलहठी १ तोला दारुहल्दी १ तोला भद्र-मोथा १ तोला मूर्व्वा १ तोला कुटकी १ तोला बड़ीसोप १ तोला रेणुकबीज १ तोला चन्दन १ तोला रास्ना १ तोला इन्होंका कल्क काढ़ा में मिलायतेलकोसिद्धकरै यहतेल अभ्यंगसे जीर्णज्वर,विषम ज्वर, राजयक्ष्मा, गर्भिणीरोग, बालकरोग सब जावैं॥ षट्तक्रतैल॥ लाख, हलदी, कुष्ठ, शुंठ, मंजीठ, सज्जीखार, मोरबेल, चन्दनइन्हों का काढ़ा तैल, छहगुणादूध सबको मिलाय तेलकोसिद्धकरैयहतेल शीतको व दाहको नाशै॥ स्वर्जिकाद्यतैल॥ सज्जीखार, कूठ, मजीठ लाख, मूर्व्वा,अतीश,शुंठ इन्होंका काढ़ा दूध, तेल सबको मिलाय तेलको सिद्धकरै यह दाह को व शीतज्वर को हरैहै॥ बलादितैल॥ चिकणामूलमुलहठी, मजीठ, पद्माख, एरंडमूल,चन्दन, समुद्रझाग हलदी, गेरू,कमलकंद इन्होंका कल्क, दूध मस्तु, चौगुनाजल, तेल सबको मिलाय तेलको सिद्ध करै यह तेल अंगों में मलने से बात पित्तज्वरको व जीर्ण ज्वरको नाशैहै॥ पटोलादितैल॥ परवल, निम्ब गिलोय, आँवला, मैनफल इन्होंका काढ़ामें तेल को सिद्ध करै यह तेल पिचकारी से गुदामें प्रवेश किया ज्वर को हरै है॥ चन्दनादि॥ चन्दन, कोष्ट,सिवणी, महुवाफूल,अगर इन्होंका काढ़ामें सिद्धकिया तेल पिचकारीसे गुदामेंदिया सर्वज्वरोंको हरैहै॥ पटोलादि॥ पड़वल मैनफल, निंब, गिलोय, महुवाके फूल, गोखुरू, खैर, काकड़ासिंगी महुवा,रिठा,वासा,असगंधयेएकएकतोलेसबतेल २५६ तोलेसबको मिलाय पकावै यहतैल पिचकारीसे गुदामें प्रवेशकिया सम्पूर्ण ज्वरों को व बात बिकारोंको हरैहै॥ आरग्वधादिनिरूहवस्ति॥ अमलतास वाला, मैनफल, चारप्रकारकी पर्णी, मधुकाठ इन्होंका काढ़ानिरूह

बस्तिदेवै ज्वरनाशहोय अथवा मालकांगनी, मैनफल, नागरमोथा मुलहठी, शतावरि इन्होंका कल्क घृत गुड़ युत व शहत युत बस्ति देवै तो ज्वर नाशहोवै ॥ तैलपाकविधि ॥ घृत, तेल, गुड़ ये सब एक दिनमें सिद्ध न करै और आपसमें १ दिन बीचमें दियाकरै तो गुण देवै है जब स्नेह कल्क अंगुलीमें वर्त्तमान होजावे और अग्निमें गेरें शब्द करेनहीं तबतो सिद्ध होवे है और नस्यमें स्नेहका कोमलपाक करै और मालिशमें तीक्ष्ण पाक तेलकाकरै और अभ्यंगमें मध्यपाक तेलकाकरै जो पाकतेलका अंगुलीसे ग्रहणकरै बिखरजाय वह खर पाकहोवैहै अभ्यंगमें खरहितहै, नस्यमें मृदुहितहै, पिचकारीमें गुदा वास्तव पानमें मध्यम हितहै परन्तु द्रव्य पाक मृदुकरै, खरनहीं खर पाक मस्तकपर मलनेसे बिकार पैदाकरै है ॥ चन्दनबलातैल ॥ चन्दन ६४बला ६४ तोला लाख ६४ तोला बाला ६४ तोला इनको १०२४ तोले जलमें पकावै जब चतुर्थांशरहै तब तेल तिलोंका तो०१२८गेरै फिर चन्दन, बाला, महुवाफूल, शतावरि, कुटकी, देवदारु, हलदी कूट, मंजीठ, अगर, कालाबाला, असगंध, चिकणा दारुहलदी, मूर्वा नागरमोथा, बेलचीही, दालचीनी, नागकेसर, रास्ना, लाख, निर्गुण्डी चांफा, शिलाजीत, सारिवा, लवण, सैंधवलवण येसबभाग कल्क करै दूध २५६। सबको मिलाय तेलको सिद्धकरै यह तेल अभ्यंग से सात धातों को बढ़ावे है और कास, श्वास, क्षयी, छर्दि, प्रदर रक्त पित्त, कफ, दाह, कंडू, फुनसी, शिररोग, नेत्रदाह, अंगदाह, बातक्षय, प्रमेह इनको हरैहै और बाल, वृद्ध, तरुणको भी श्रेष्ठ है। और पांडु, कामला, सोजा, सर्वज्वर इनको भी हरै ॥ अश्वगंधादितैल ॥ असगंध ६४ तोला चिकणा ६४ तोला लाख ६४ तोला और १०२४ तोला जल का काढ़ा चतुर्थांश रहै तब १९२ तोले तेल मिलावै और काढ़ा से चौगुणा दही का जल, फिर असगंध मैनशिल, देवदारु, रेणुकबीज, कोष्ठ, नागरमोथा, चन्दन, हलदी कुटकी, शतावरि, लाख, मूर्वा, मंजीठ, महुवाफूल, बाला, सरिवा इन्होंका कल्क मिला तेल को सिद्धकरै यह तेल सब ज्वरों को हरै और सब धातों को बढ़ावे। और मालिश से क्षय रोग को हरै ॥

बृहल्लाक्षादितैल॥ लाख काढ़ा ६४ तोला दूध ६४ तोला फिर लोध ४ तोला कायफल ४ तोला मंजीठ ४ तोला नागरमोथा ४ तोला केसर ४ तोला पद्माख ४ तोला चन्दन४ तोला बाला४तोला मुलेठी ४ तोला इन्हों का कल्क। तेल सब को मिलाय तेल को सिद्धकरै यहतेल दंतरोगको व सर्बज्वरों को नाशैहै और बलपुष्टि बढ़ावै है ॥ पंचममहालाक्षादितैल ॥ लाख, हलदी, मंजीठ, बेरी मुलेठी, चिकणा, बाला, चन्दन, चंपक, नीलकमल ये प्रत्येक चौबीस चौबीस तोला इन सबसे चौगुना जल चतुर्थांश रहै तब रेणुकबीज, पद्माख, असगंध, बेतस,कूट, देवदारु, नख, दालचीनी, बड़ीशोय, कमल, जटामासी, मुलेठी ये सब एक एक तोला इन्होंका कल्क पूर्वोक्त काढ़ा में मिला मस्तु ५५६ तोला कांजी ५५६ तोला दूध ५५६। तोला तैल ६४ तोला सबको मिला तेल को सिद्धकरै यह तेल दाहको व वायुको व कफको व सर्ब ज्वरों को व ग्रह पीड़ा को व राक्षस पीड़ाको व बालकोंके रोगों को हरै है इसमें संशय नहीं ॥ निरूहवस्तिद्रव्यमान ॥ बात विकार में कषाय ६ पल और पित्त विकार में कषाय ८ पल कफ विकार में कषाय ११ पल ऐसे निरूहवस्तिमें वर्त्तै। और स्नेहवात विकारमें ६ पल और पित्तविकार में ४ पल स्नेह कफ विकार में ३ पल निरूहवस्तिमें ऐसेवर्त्तै। शहत तीनोंदोषोंमें ४ पल वर्त्तै और कल्क २ पल वर्त्तै और सेंधानिमक माशे १० वर्त्तै और मांस, रस, दूध, आम्ल मत्स्य ये सब पल पलभरवर्त्तै ऐसे निरूहवास्ति में वर्त्तना ॥ चतुर्थलाक्षादि तैल॥ लाखका रस समान तिलका तेल इससे चौगुनी मस्तु और असगंध, देवदारु, रेणुकाबीज, कूट, नागरमोथा, चंदन मूर्वा, कुटकी, रास्ना, शतावरि, मुलहठी ये औषध सम भाग लेवै ये सब मिलाय तेलको सिद्धकरै यह मालिश करने से सर्वज्वरोंको व क्षयीको व उन्मादको व श्वासको व मृगीको व वायुको व राक्षस पीड़ाको व भूत बाधाको नाशै और गर्भिणी को हित है॥ परीक्षा ॥ तेलका शब्द जातारहै और फेनरहैनहीं और गन्धवर्ण अच्छाहोजाय तो सिद्धजानो अथवा फेन अत्यन्तआवै यहभी तेल

अच्छा होवैहै और सिद्धतेल एकवर्ष से व आधावर्ष से उपरांत हीनवीर्यहोवैहै और घृत एकवर्ष उपरांत कामका नहीं और गुड़ १ वर्ष उपरांत कामकाहोवैहै और चूर्ण २ महीने उपरांत कामका नहीं। और गोली अवलेह १ वर्ष से उपरांत कामके नहीं और घृत ४मासमे उपरांत कामका नहीं सिद्ध किया ॥ महाज्वरांकुश ॥ पारा ३ माशे, वचनागविष ३ माशे, गंधक ३ माशे, धतूराकेबीज ६ माशे इन सबसे दूनी चोकलेवै इन्होंका महीनचूर्णकरै यहचूर्ण रत्ती २ निम्बु रसमें वा अदरख रसमें देवै यह त्रिदोषको व सब बिषमज्वरोंको हरैहै॥ज्वरघ्नीवटिका ॥ शुद्धपारा १ भाग, शिलाजीत ४ भाग, पिपली ४ भाग, हरीतकी ४ भाग, करकरा ४ भाग कटुतैल में शुद्धगन्धक ४ भाग, गड़ूभाफल ४ भाग इनको महीन पीस गड़ूभाके रसमें गोलीबांधै ४ उड़दसमान गोली गिलोयकेरस के संगलेवै ज्वरमात्र को नाशै ॥ ज्वरमुरारिरस ॥ कलखपरिया के चूर्णको निंबुके रसमें २१ भावनादेवै फिर नवनीत ताजा घृत में खरलकरै यह रत्ती ६ खांड़के संग दिया नवज्वरको हरैहै ॥ स्वर्णमालतीवसंत ॥ सुवर्ण १ भाग, मोती २ भाग, मिरच ३ भाग, खपरिया ८ भाग इन्हों का चूर्णकरि नवनीत घृत में खरल करावै फिर नींबूके रसमें खरलकरै जब तक चिकनाई नाशनहो तब तक खरल करै यह बसंतरस रत्ती २ पिपली, शहतसंग दिया सबरोगों में हितहै ॥ लघुमालतीवसंत ॥ खपरिया २ भाग, मिरच १ भाग इनको लूणीघृत में खरल करै फिर नींबूके रसमें खरलकरै जबतक चिकनई नाश न हो तबतक खरलकरै फिर रत्ती ६ पिपली, शहत संगदिया जीर्णज्वर को व धातुगतज्वरको व अतीसारको व रक्तातिसारको व रक्तविकार को व ज्यादा पित्तविकार को व प्रदर को व बवासीर रक्तको व विषमज्वर को व नेत्ररोग को हरैहै दृष्टान्त॥ जैसे सिंह हस्तीको तैसे और बालकों के सबरोगों को हरैहै और जयन्ती के फूल के संग गर्भिणी को देवै सर्वज्वरों को हरै और गर्भकी पालना करै ॥ दार्व्यादिवटिका ॥ दारुहलदी १ तोला तूतिया १ तोला खपरिया १ तोला इन्हों को धतूराके रसमें खरल

करै दिन ३ तक इसकी गोली चना समान करै फिर २१ मिरच ७ तुलसी के पत्ते इन्होंके संग २ गोलीखावे, पथ्य दूधखांड़पीवै ये गोली तरुणज्वरको व विषमज्वर को व सर्वज्वरको हरैं ॥ हुताशनरस॥ शुंठि १ तोला सुहागा १ तोला मिरच १ तोला कौडी भस्म १ तोला वचनागविष पावतोला इन्होंका चूर्ण रत्ती १ देवै यह ज्वरको नाशै ॥ दूसरालघुमालतीवसंत ॥ खपरिया को मनुष्य के मूत्रमें २१ दिनतक भिगोवै फिर इसकी त्वचाकोदूरकरे फिरआधा भाग मिरच चूर्णमिलावे फिर सबको नवनीत घृत में खरल करै फिर नींबूके रसकी १०० पुटदेवै ऐसे रस लघुमालतीबसंत सिद्ध होवै है यह पिपली, शहत, मिश्री इन्होंके संगदिया धातुगत ज्वर को व पित्तको व भ्रमको व रक्तपित्तको व रक्तातीसारको व ग्रहणी को व बवासीर को नाशै है इसमें पथ्य मधुर दही व दूध देवै॥ अपूर्वमालतीबसंत ॥ वैक्रांतभस्म, अभ्रकभस्म, तांबाभस्म, सुवर्ण माक्षिक, चांदीभस्म, वंगभस्म, मूंगाभस्म, पाराभस्म, लोहभस्म सुहागा, शंखभस्म, ये सब बराबरले इनको शतावरिके रसमें व हलदी के रसमें सातपुट देवै फिर चांदनीमें रक्खै यह रस पिपली शहतके संग रत्ती तीनदिया जीर्णज्वरको व धातुज्वरकोहरैहै और गिलोयसत, मिश्रीसंगरस प्रमेहको हरै और यह बिजौरा रस के संग अश्मरी कहे पथरी को हरै ॥ दूसरालघुमालतीवसंत ॥ खपरियाचूर्ण २१ दिनतक घोड़ाके मूत्र में भिगोवै फिर धूपमें सुखावै जबतक गीलापन न हटै तबतक पीछे मरिचचूर्ण ४ तोला, हिंगलू ८तोले सबका चूर्णकरि गौके लूनीघृतमें खरलकरै पीछे १००नींबू के रसमें खरलकरै जबतक चिकनाई न हटै तबतक खरलकियेजावै यह रस रत्ती ४ शहत पिपली संग देवै यह गजकेशरि रस संग्रहणीको व अतीसार को व ज्वरको व क्षयीको व बवासीरको व शूलको व अग्निमन्दको व वातविकार को व प्रदर को व बवासीर रक्तको व विषमज्वर को व नेत्ररोग को हरै ॥ लघुविसूकाभरणरस ॥ वच नागविष ४ तोला पाराभस्म ३ माशे इन दोनों को चूर्ण करै चूर्णको कांचके२प्यालोंमें धर संपुट करै और मुद्रित करि मन्द २

अग्नि से तपावे २ पहर तक जो रस उपरला पात्र में लगे वह पवन बंदकरि शीशीमें रक्खै सन्निपात रोगमें मस्तकपर मलै दूध संग सन्निपात को व सर्व विषको हरै जो ताप लगै तो मधुर रस देवै। यह सन्निपात को बहुत जल्दी नाशकरैहै। ऐसेजानो॥ जलचूड़ामणिरस॥ पाराभस्म १ भाग, गन्धक १ भाग, मैनशिलपाव भाग, सोनामक्खी पावभाग, पिपली पाव भाग, शुंठि पाव भाग मिरच पाव भाग, इन्होंका चूर्णकर मत्स्य के पित्ता में खरल करै फिर मयूर के पित्ता में खरलकरै ऐसे सुखाय २ सात पुटदेवै फिर यह रस रत्ती २ मुसली के रसके संग अथवा पंचकोल के काढ़ाके संग सन्निपातको हरैहै॥ कनकसुन्दररस॥ धतूराके बीज ८ शाण पारा १२ शाण, गंधक १२ भाग, ताम्रभस्म २ शाण, अभ्रकभस्म ४ शाण, सोनामक्खी भस्म २ शाण, बंगभस्म २ शाण, शुद्धसुरमा ३ शाण, लोहभस्म ८ शाण, शुद्ध बचनागविष ३ शाण, लांगली तोला ४ इन्होंको नींबूके रसमें एकदिन खरलकरै फिर सकोरा में धर संपुटकरै मन्द २ अग्निमें पकावै शीतलहोनेपर महीनचूर्णकरै यह रस माशे १ अदरख रसके संग व लहसुनके रसके संग सान्निपात को व किलासको व सर्वकुष्ठों को व विसर्प को व भगंदर को व ज्वरको व विषको व अजीर्ण को हरै॥ सन्निपातभैरवरस॥ पारा ३ कर्ष, गंधक ३ कर्ष, इन्होंकी कज्जलीकरै फिर चांदी भस्म कर्ष १। अभ्रकभस्म ताम्रभस्म १ कर्ष, बंगभस्म १ कर्ष, शीशाभस्म १ कर्ष, लोहभस्म १ कर्ष सबकोकज्जलीमें मिला इनको शैंवारसमें व ज्वालामुखीरसमें व शुंठिरसमें व बेलपत्ररसमें व चावल के रस में इन्होंमें प्रत्येक पहर १ एक २ खरलकरै फिर गोला करि वस्त्र में धरै फिर लवणपूरित कांच पात्र में धरै फिर कांचकी शीशी को थाली में घाल बालुका यंत्र से २ प्रहर तक पकावै फिर शीतल होनेपर द्रव्यको काढ़ि चूर्णकरै फिर मूंगाचूर्ण १० माशे वचनागविष ४ माशे ये मिला सर्पके गरल में एक दिन खरल करै फिर तगर रसमें मुसली रसमें फिर जटामासी रसमें फिर चोक रस में फिर पिपली रसमें फिर नीलपुष्पीरस में फिर तमालपत्र रस

में फिर इलायची रस में फिर चीता रस में फिर रानतुलसी रस में फिर बड़ी सौंफरस में फिर देवडांगरी रस में फिर धतूरा रस में फिर अगस्त रस में फिर मुण्डी रस में फिर महुवा रस में फिर मैनफल रसमें खरल करताजावै यह रस रत्ती २ विजौरा रसमें व अदरख अर्कमें १६ मरिचचूर्ण संगदिया जल्दी सन्निपात को हरै ॥ रसपर्पटी ॥ पारा को अर्णीके रसमें शुद्धकरै एरण्डके रस में फिर भृंगराज रसमें फिर काकमाची रसमें ऐसे पारा को शुद्ध करै पीछे गंधक को भी ऐसे शुद्ध करै पूर्वोक्त रसों से फिर गन्धक को भृंगराज रसमेंपीसि धूपमें सुखावै सातबार व तीनबार फिर पारासंग चूर्णकरि जब चूर्णकज्जल सम होजावै पारा दीखे नहीं तब निर्धूम में बेरी का कोइला अँगार से कछुक द्रव करले फिर महिषीगोबर केला के पत्ता में धरि दूसरा केला के पत्ता से दाब-पीड़नकरै जब शीतल होजाय तब पत्तासे उठा चूर्णकरै ऐसे पर्पटी-रस सिद्ध होवै है और सृष्टि आदिमें ज्वरादि व्याधिग्रस्त संसार को देखि महादेवजी कृपाकरि अमृत समान रस पर्पटी को रचते भये इस रसको रत्ती १ भुनाजीरा रत्ती १ भुनीहींग रत्ती १ मिलाय खावै ऊपर शीतल जल तीन चुलूभर पीवै हमेशकी हमेश रत्तीएक बढ़ावै और दशरत्तीसे ज्यादा एकदिनमें खावै नहीं और दशादिनसे रत्ती एक एक रोज घटावै ऐसे दिन २० तक खावै और शिव गुरू ब्राह्मण इन्हों को पूजनकरि श्रद्धाकरि खानेका आरंभ करै, पथ्यमें दूध, व मांस रसलेवै यह रस ज्वरको व संग्रहणीको व अतीसारको व कामलाको व पाण्डुको व शूलको व प्लीहको व जलोदरको नाशै और बल, वीर्य्य, पुष्टि इन्होंको पैदाकरै और इसकाखानेवाला १०० वर्षजीवैऔरजवानसमरहै ॥ रविसुन्दररस ॥ हरताल २ भाग, तांबामृत २ भाग, पारा १ भाग, गंधक १ भाग, बचनाग विष १ भाग, इन को २१ रात्रितक सूर्य्यकी धूपमें निंबके रसमें खरलकरै फिर रत्ती १ मिश्री संगदेवै यहरस आठ प्रकारके ज्वरोंकोहरै ॥ कज्जलीगुण ॥ शुद्धपारा, शुद्ध गंधक, इनको खरलकरै पारा न दिखै और कज्जल सम होंजाय, तबतक यह कजली बल वीर्य्यको बढ़ावै और नाना

प्रकारके अनुपान के संग सम्पूर्ण रोगोंको हरतीहै ॥ गदमुराररिस ॥ पारा, गंधक, शीशाभस्म, लोहभस्म, अभ्रक, तांवा, येसव वरावर भाग और आधाभाग विष इन्होंका चूर्ण गदमुरारि होवेहै यहरत्ती १ अदरखकेरसकेसंग आमज्वरको हरैहै ॥वालार्करस॥ पारा सिंगरफ, जयपाल गंधक इनको जयपालजड़के काढ़ामें खरलकरि दो पहरदेवे ज्वरकोनाशै जैसे सूर्य्य अँधेराको ॥ ज्वरांकुश ॥ पारा,गंधक, वचनागविष, ये सवसमभाग तीनोंके वरावर धतूरावीज, इन चारों से दुगुणा शुंठि मिरच, पिपलीचूर्ण, इन्होंकोपीस गुंजा २ नींवूरसमें व अदरख रसमें मिलाय देवै यह ज्वरोंको व विषमज्वरोंको व सन्निपातको एक पहर भीतर हरैहै ॥ विश्वतापहरण ॥ पारा, ताम्र भस्म निसोत,गंधक, कुटकी, जयपाल, पिपली, कुचिला, हरीतकी इन्होंका चूर्ण धतूराके रसमें १ दिन खरलकरैयहरसरत्ती ६ अदरखअर्कसंग खावै तरुण ज्वर जावै इसपै पथ्य मूंग यूष चावलहै ॥ सन्निपातभैरवरस ॥ पारा, गंधक, मंडूरभस्म, ये सव वरावर भाग इन सवोंकी वरावर वत्सनागविष, इन्होंके चूर्णको अदरख रसमें भावना देवै फिर भृङ्गरसमें फिर विजौरा रसमें फिर भांगरसमें फिर निर्गुण्डी रसमें फिर भृङ्गराज रसमें ऐसे सवोंमें भावना देवै यहरस माशे २ देवै सन्निपात को हरै और इस पै शीतल पवन करावै निर्मलजल से स्नान व पान करावै पथ्य दूध खांड़देवै ॥ त्रिभुवनकीर्त्ति ॥ हिंगल वत्सनाग विष, शुंठि, मिरच,पिपली, सुहागा, पिपलामूल इन्हों के चूर्णको तुलसी रसमें खरलकरै एक दिन फिर अदरख रसमें खरल करै एक दिन तक धतूरा रसमें खरलकरै १ दिन तक ऐसे दिन ३ तक खरल करै यहरस रत्ती १ अदरख अर्कके सङ्ग खावै सर्व ज्वर नाशहो और तेरह सन्निपात नाश होवैं ॥ मृतप्राणदायीरस ॥ पारा गंधक, सुहागा, वत्सनागविष, धतूराके वीज ये सव समभाग इन्हों को धतूराके वीजोंके काढ़ामें भावना देवै १ पहर तकपीछेवत्सनाग विषके काढ़ा में १ पहर तक खरलकरै फिर धतूराके रसमें भावना देवै ऐसे प्रत्येक तीनतीनभावनादेवै, फिर शुंठि, मिरच, पिपली इन्हों के काढामें ५ भावनादेवै ऐसे सिद्धकरै यह रत्ती १ दिया ज्वरको व

सन्निपातको व तरुण ज्वरको व कफ रोगको नाशै, पथ्य दूध भात क्षीर दही भात, तक्रभात खांड़येलेवै और ज्वरातीसारमें व आमातीसारमें व संग्रहणीमेंवबवासीरमें शहत खांड़युत देवै और बातज्वरमें व प्रकम्पबायु में व बाहुकंपमें व एकांग बायुमें शुंठि, मिरच, पिपली चीता इन्हों के चूर्ण युतदेवै मृगीरोग में व उन्माद में खांड़ धतूरा बीज युतदेवै ॥ ज्वरोपद्रव ॥ श्वास १ मूर्च्छा २ अरुचि ३ छर्दि ४ तृषा ५ अतीसार ६ मलबद्धता ७ हुचकी ८ खांसी ९ अंगभेद ये १० ज्वर के उपद्रव हैं ॥ ज्वरोपद्रवचिकित्सा ॥ जो ज्वरमें उपद्रव उपजे तो वैद्य ज्वरका इलाज करै मूल ब्याधि शांतहुये उपद्रव भी शांत होजावै इसवास्ते पहिले ब्याधिको हरै पीछे उपद्रव को अथवा कुशल वैद्य पहिले उपद्रवको हरै तब बलाबल बिचारि चिकित्साकरै समझ करि ॥ सिंहयादिकषाय ॥ कटैली, दोनों धमासा, परवल, काकड़ासिंगी भारंगी, पोहकरमूल, कुटकी, कचूर, कैरेया इन्होंका काढ़ा सन्निपातोद्भव श्वासको हरै ॥ द्वात्रिंशांगकाढ़ा ॥ भारंगी, निंब, नागरमोथा हरीतकी, गिलोय, चिरायता, बासा, अतीस, त्रायमाण, कुटकी, बच शुंठि, मिरच, पिपली, स्योनाक, कूड़ा, रास्ना, धमासा, परवल, पाडल कचूर, दारुहल्दी, विशाला, निशोत, ब्राह्मी, पोहकरमूल, छोटीकटैली बड़ी कटैली, हलदी, बहेड़ा, देवदारु इन्हों का काढ़ा सन्निपातोद्भव श्वासको व कफ कासको व हृदय रोगको व हुचकीको व बायुको व मन्यास्तंभको व गलामयको व आर्दितको व मलबद्धताकोनाशै है ॥ मद्ध्वादिकाढ़ा ॥ पिपली, कायफल, काकड़ासिंगी इन्हों का चूर्ण शहदयुत महाश्वास को हरै है ॥ श्वासाबरदाग ॥ बन उपलों की अग्नि में लोहाको तपाय चाकू आदिको हाथ के पंजा पै दागदेवै श्वास नाश होवै ॥ आर्द्रकादिनस्य ॥ अदरक रसकी नस्यदेनेसे मूर्च्छा नाश होवे है अथवा मैनशिल, मिरच, सैंधव निमक इन्हों के अंजन से मूर्च्छा जावै ॥ शीतांभसादियोग ॥ शीतल जलसे नेत्रों को सेंकै व सुगंध धूपखवै व सुगंधित द्रव्य सुँघावै व कोमल ताड़के बिजनाकी पवन करवावै व कोमल केला के पात स्पर्श करवावै इन कर्मों से मूर्च्छा नाशहोवै और अदरक, सैंधव मिलाय मुख में रक्खै

बिजोरा की केसर सींधायुत मुख में धरै इन्हों से अरुचि नाशहोवै ७२५॥ सैंधवादियोग ॥ सैंधव लवण महीन पिसा जलमें मिलाय नस्यलेने से हुचकी नाशहोवैं अथवा शुंठि, खांड़, तिक्तरस ये भी हुचकी को नाशैं अथवा हींग के धूम सेवनसे हुचकी नाश होवैं॥ अश्वत्थक्षार ॥ पीपलकी सूखीछाल अग्नि में जलाय राखकरि जल में मिलावै यह जल पानकरने से हुचकी को व छर्दि को नाश करै॥ शुष्कअश्वपुरीषयोग ॥ घोड़ेकी सूखीलीद के धूम सेवन से हुचकी नाशहोवै हैं। पकायेहुये यवों के रससे भी नस्यलेनेसे हुचकी मिटै हैं॥ ज्वरकासीकणादि ॥ पिपली, पिपलामूल, बहेड़ा, पित्तपापड़ा, शुंठि इन्होंकाचूर्ण शहदयुत अथवा वासाकारस शहदयुत कास को हरै है॥ पुष्करादिचटणी ॥ पोहकरमूल, शुंठि, मिरच, पीपल काकड़ासिंगी, कायफल, धमासा, अजमान इन्होंकाचूर्ण शहदयुत कासको हरैहै॥ बिभीतकयोग ॥ बहेड़ाको घृतमेंभिगोय और गोबर से लपेट अग्निमें मन्दगरमकरै शीतलहोनेपर मुखमें लेनेसे खांसी को हरैहै॥ लवंगादिबटी ॥ बहेड़ादल, लवंग, मिरच ये सम भाग इनसबोंके समान खैरसार इनकोपीस बबूलकी जड़के काढ़ाकेजल से गोलीबनावै ये गोली बहुत जलदी कासको हरती है॥ ज्वरीदाहचिकित्सा ॥ इसमें दाहाधिकार की लिखी चिकित्सा करै और ज्वर के अबिरुद्ध क्रियाकरै॥ गडूच्यादि ॥ गिलोय का काढ़ा शहद मिश्रीसंयुक्त छर्दिको शांतकरै अथवा माखीका बिष्ठा शहद संयुक्त छर्दि को हरै अथवा माखीबीट, चन्दन, मिश्रीसंयुत छर्दि को हरै॥ दन्तशठादिकाढ़ा ॥ बिजौरा, अनार, जम्भीरी निम्बू, बेरी, आम्लबेतस इन्हों का कल्क मुखमें धरै अथवा इन्हों का लेपकरावै तो ज्वरमें तृषा नाशहोवै अथवा चांदीकी गोली मुखमें धरी तृषा को हरै॥ जलादियोग ॥ शीतल जल शहत संयुत कंठ तक पान करि बमन करै इस से तृषा हरै अथवा कूट, बड़ छाल, धानकी खील इन्हों का शहत में अवलेह तृषा को नाशै॥ ज्वरातीसारचिकित्सा ॥ बलवान् को लंघनकरावै इसके सम औषधि ज्वरातीसार में नहीं है॥ वत्सादन्यादिकाढ़ा ॥ कूड़ाछाल, गिलोय, नागरमोथा, चिरायता

निंब, अतीस, शुंठि इन्हों का काढ़ा ज्वरातीसार को हरै अथवा शुंठि, गिलोय, कूड़ाछाल, नागरमोथा इन्होंका काढ़ा ज्वरातीसार को हरै ॥ पाढ़ादि ॥ पाढ़ा, गिलोय, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, शुंठि चिरायता, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ा दारुणज्वरातीसार को हरै है ॥ ज्वरेमलबद्धताचिकित्सा ॥ विड्बन्धन में बातनाशक जानु लोमन कर्मकरै अथवा करड़ी फलवती को गुदामें चढ़ा मलको प्रवर्त्तन करावै ॥ पथ्यादिकाढ़ा ॥ हरीतकी, अमलतास, कुटकी, निशोत आमला इन्हों का काढ़ा जीर्णज्वर को व मल बद्धता को नाशै ॥ ज्वरीपथ्य ॥ वमन, लंघन करावै काल प्रभाते यवागू देवै और पसीना देवै और कटु, तिक्तरस देवै ये पाचन रूप औषधि तरुण ज्वर में पथ्यहै। और सन्निपात में ये सर्व करावै और आम व कफनाशक क्रियाकरावै। अवलेह, अंजन, नस्य, गण्डूष रसक्रिया ये सब करावै। और पैरों में व हाथों में व कंठमें व कपोल द्वयमें पसीना आवै तो भुनीहुई कुलथी का चूर्ण मलवावै ॥ तरुणज्वरमें अपथ्य ॥ स्नान, रेचन, मैथुन, काढ़ा, व्यायाम, दिनमें शयन, तेला-दि मर्दन, दूध, घृत, द्विदलअन्न, मांस, तक्र, मदिरा, स्वादु पदार्थ जड़पदार्थ, द्रवपदार्थ, भारी पदार्थ, अन्न, वायु, भ्रमण, क्रोध इतने कर्म्म तरुण ज्वरमें करने नहीं ॥ मध्यमज्वरमें अपथ्य ॥ पुराने साठी चावल, बैंगन, करेला, सौभांजन, वंशांकुर, तुरी, आषाढ़फल, मूंग मसूर, चणा, कुलथी रानमूंग इन्होंका यूष, पाढ़ा, गिलोय, बथुवा चावल पदार्थ, जीवंतीशाक, काकमाची, मुनक्का, दाख, कैथा, अनार-फल और हलके पदार्थ सब मध्यम ज्वरवाले को हित हैं ॥ ज्वरमें पथ्य ॥ दूसरे मतका। चावल पदार्थ, बथुवा, काकमाची, पित्तपापड़ा परवल, तिक्तशाक, गिलोय, पालाभाजी, कालशाक, निम्ब फूल मारीष, दार्वीफल, जीवंती, चांगेरी, चूकाकूड़ा व भेंड़दूध पदार्थ प्रियशाक, मूंग, मसूर, चणे, कुलथी, रानमूंग इन्होंका यूष और लवा तीतर, कपिंजल, मृग, शरभ, मृगजाति इन पशुओंके मांस ये सबज्वर वालेको पथ्यहैं और मयूर, सारस इन पक्षियों के मांस और कुक्कुट मांसज्वरवालेको अपथ्य याने बुरेहैं। बैंगनआदि शाकअच्छे हैं परंतु

स्नेहयुक्त देवेनहीं चावल व अन्न, एकवर्ष पुराने देवै और गेहूंरोटी करनेवास्ते २ वर्षके पुराने वर्त्तै और रोटी बहुत अल्प खावै ज्वर-वाला॥ जीर्णज्वरमेंपथ्य॥ विरेचन, वमन, अंजन, नस्य, धूमपान अरुवासनवस्ती, नलकावेधना, ज्वर शांत करनेवाली औषधि का देना व लेप, औषधियों के तेलका लगाना, स्नान, शीतल उपचार एण, कुलिंग, हरिण, मोर, लवा, तीतर, मुरगा, कुरच पृषत, चकोर कपिंजल, बटेर, कालपुच्छ इन जीवों का मांस, गौ तथा बकरी का दूध व घृत, हड़, पहाड़ी झरणोंका जल, एरण्डतेल, सफेद चन्दन चन्द्रकी चांदनी, स्त्रियाका आलिङ्गन ये सब पुराने ज्वर में पथ्यहैं॥ आगंतुकज्वर पथ्य॥ इस ज्वर में लंघन करे नहीं और घृत का पीना और मलना योग्य है और रक्तमोक्ष, मद्यपान, मांसरस भक्षण ये भी हित हैं और क्षत तथा घाव से उपजे ज्वर में क्षत व घाव की चिकित्सा करनी चाहिये और विषसे उपजे ज्वर में विष तथा पित्त की चिकित्सा करै और क्रोधसे उपजे ज्वर में पित्तनाशक क्रिया व मधुर वचन बोले और अभिचार व अभिशापसे उपजे ज्वरमें जप होम करावे और उत्पात तथा ग्रहपीड़ासे उत्पन्न ज्वरमें दान तथा स्वस्तिवाचन आदि औषधि है और कामसे उत्पन्न ज्वरमें कामके जीतनेवाली क्रिया करनीचाहिये और शोक तथा भयसे उत्पन्नमें सब बातकी हरनेवाली क्रिया करनी चाहिये-और धीरज देना, प्यारी वस्तुका मिलना, तथा आनन्द देनेवाली वस्तुका लाभ ये सबकाम तथा क्रोधसे उत्पन्न ज्वरमें विशेषकारि उपकारकहैं और भय तथा शोक से उत्पन्न ज्वर में काम व क्रोध में कही हुई औषधि करनी योग्यहै। भूतके आवेशसे आयेहुये ज्वरमें भूतका बांधना, कबुलाना ताड़नकरना उचित है और मनके क्षोभ से उत्पन्न ज्वर में मनका शांतकरना उचितहै आगंतुक ज्वरमें पहिले वैद्योंने ये पथ्य कहे हैं॥ विषमावर॥ वमन, रेचन, विष्णुसहस्रनाम का पाठ, वेदका सुनना देवता, ब्राह्मण, गुरू इन्होंका पूजन, ब्रह्मचर्य्य, तप, नियम, होम दान, जप, साधुओं का दर्शन, सत्य बोलना, रत्न तथा औषधियों का धारण करना, मङ्गलाचरण ये सर्व ज्वरों को हरै हैं॥ सर्वज्वरों

में अपथ्य ॥ अधिवासन कर्म्म, लालफूलोंकी माला तथा लालवस्त्रों का पहनना, वमन के वेगका रोकना, दतून करना, अहित भोजन विरुद्ध अन्न, तथा पान, विदाही तथा भारी वस्तु, बुरा जल, खार खटाई, पत्र, शाक, निरूहणवस्ति, खस, तांबूल, कलींदा, कटहल का फल, तोड़ीमछली, तिलकीखली, नवीनअन्न, चूनकीबनी वस्तु अभिष्यंदी सब वस्तु इन सबों को ज्वरवाला त्यागे और ज्वर छूट-जानेके पीछे जबतक बल न आवे तबतक व्यायाम कहे दण्ड,कुश्ती आदि, स्त्रीसंग, स्नान और बहुत चलना, फिरना इनको बचावे॥ मन्त्र॥ वज्रहस्तोमहाकायोवज्रतुण्डोमहेश्वरः हतोसिवज्रतुण्डेनभू-म्यांगच्छमहाज्वर।ठःशःशंतः। तालपत्रेलिखित्वातुकंठेबाहौचबन्धयेत् ॥ पेय॥ आम्रतिक्तपान। हज़ार करिये या घृतसंयुक्त पीवै तीन दिनतक चातुर्थिज्वर नाश होवै ॥ ज्वरमुक्तलक्षण ॥ धातुओंकासं-क्षोभसे व दोषोंके संचलन से मोक्षकाल में ज्वर बेग ज्यादा होवै है त्रिदोषजज्वर व अन्तर्बेग ज्वर व धातु गतज्वर इन्होंमें और अन्य ज्वरों में पसीना आयकरि ज्वर मोक्षहोवैहै ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांज्वरप्रकरणम् २४०

अतीसारी कर्म्मविपाक जो स्मार्ताग्नी को ब्राह्मण, क्षत्री वैश्यहोके त्यागे सो अतिसार रोगी होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ अग्नि रश्मी इसमंत्र का जप १००० करावे और दशांश होम करावे और घृत, तिल, सुवर्ण इन्होंकादान ब्राह्मणको देवै ॥ दूसराप्रकार ॥ जो अग्नित्रयीका नाशकरै वह अतिसाररोगीहोवैहै ॥प्रायश्चित्त ॥ तोला ४ अथवा २ सोनाकी व तांबा की मूर्त्ति अग्निदेव की बनावे और मूर्त्तिको अग्निसे तपाय लाल चन्दनसे लेपदेवै और लालबस्त्र पहनादेवै और लालफूलोंकी माला पहनावे और बकरा के ऊपर सवार करादेवै और मोती गहनोंसे भूषितकरै और कांति मूर्त्तिकी वढ़ावे फिर उसमूर्त्तिको ब्रह्मचारी वा अग्निहोत्री ब्राह्मणको पहि-ले वस्त्रादि पहनाके स्वस्थचित्तकरि उसमूर्त्तिको दान करदेवै मंत्र पढ़ताहुआअग्निकेप्रसन्नवास्ते॥मंत्रः॥तेत्रारूपोग्निरीउपस्त्वमंतत्त्वचासिवैन्नृणाम् त्वंवेत्थप्राक्तनंपाप मतिसारंविनाशय। एवंकृत्वान

रःसम्यगतिसारंव्यपोहति । निरुजःससुखीनित्यंदीर्घमायुश्चविंदति ॥तीसरेप्रकारकाकर्म्मविपाक॥ स्त्री को मारने वाला अतिसारी होवैहै ॥ प्रायश्चित्त ॥पीपलवृक्ष १० ऐसेकरि नित्यसींचै औरशर्करा धेनुका दानकरै और ब्राह्मण सन्त १०० कोभोजन देवै ॥ रक्तातीसारकर्मविपाक॥ जो बनमें अग्निदेवै सो रक्तातीसाररोगीहोवै ॥प्रायश्चित्त ॥जलकादानकरै और बटवृक्ष को रोपै ॥अतीसारनिदान॥ मैदा आदि गरिष्ठ बस्तु और शीतलबस्तु और पतलीबस्तु खानेसे और भोजनकेऊपर भोजनकरनेसे और विषम भोजन तथा अति भोजन से और अधिक चिकनी और रूखी और गरमबस्तुके खानेसे और विरुद्धफल देनेहारा हीनाधिक योगसे और विषसे व भयसे व शोक से व दुष्टजल व मदिराकेज्यादा पानसे व ऋतुविपरीत भोजनादिसे व जलमें ज्यादा क्रीड़ाकरनेसे व मलमूत्रके वेगरोकने से व कृमि दोषसे मनुष्योंके अतिसार पैदाहोवैहै ॥संप्राप्ति॥ मनुष्यके शरीरमें इनकुपथ्यों से जलधातु बढ़ै तो उदरकी अग्निको शांतकरै और वह जल पवनको प्रेरितविष्ठा से मिल गुदाके मार्ग्ग से पतला होकर नीचे अधिक उतरै उसको अतिसार जानिये। वात १ पित्त २ कफ३ सन्निपात४ शोच५ आम६ इन भेदों से यह अतिसार छः प्रकारका है ॥ अतिसारपूर्वरूप ॥प्रथम हृदय, नाभि, गुदा, उदर पेडु इनमें पीड़ाहो और सबअंगन में हड़फूटन हो और गुदा की पवनरुकजाय, बद्धकोष्ठ और अफाराहो अन्न पचैनहीं तो जानिये कि मनुष्य के अतिसार होगा ॥ अतिसारपूर्वरूपचिकित्सा ॥ इसके आदिमें लंघन हितहै वह पाचन करैहै और इसमें तृषादि उपद्रव होवे तो षड़ंगयूषदेवै । मूंगयूष, रस, तक्र, धनियां, जीरा, सैंधव निमक यहषड़ंगयूषहोते हैं यह अग्निको दीप्तकरै और संग्रहणी को नाशैहै और अरोचकज्वर में व प्रवाहिका में श्रेष्ठ है ॥ विल्वादिषड़ंगयूष ॥बेलफल, धनियां, जीरा, पाठा, शुंठि, तिल इन्हों को पीसि यूष देवै अतिसार नाशहोवै ॥ यवागू ॥यवागू देइ तृषाको हरैहै हलकी है और अग्निको दीपन करै है और वस्तिको शुद्धकरै है और विरेचन में व अतिसार में यवागू सारेहित हैं ॥ बर्जनीय ॥ क्षीण, वृद्ध

बालक,गर्भिणी इन्होंको वर्जितकरि अन्यका अपक्क अतिसार बढ़ा हुआको बन्ध औषधिसे करे नहीं ॥ अतिसारावरलंघन ॥ अतिसार में आदिमें लंघन करावे देहका बलाबल देखिके पीछे शुंठि, मिरच पिपली इन्होंका पाचनदेवे और पित्ताधिक अतिसार में लंघन करावे नहीं और पित्ताधिक ज्वरमें भी लंघन करावे नहीं और इन्हों को पाचन कषाय भोजन बरोबर दिवावे ॥ दीपन ॥ अजमान, शुंठि बाला, धनियां, बेलफल, द्विपर्णी इन्होंका काढ़ा दीपन व पाचनहै ॥ अतिसारप्रक्रिया ॥ अतिसार में व ज्वरमें व रक्तपित्तमें व नेत्र रोग के आदि में औषध करे नहीं इन रोगों का वेग दुस्तर है ॥ दूसराप्रकार ॥ सम्पूर्ण अतिसारों में पका आमको जानि चिकित्सा करै और आमातिसार में लंघन श्रेष्ठ है पीछे पाचनदेवे अथवा लंघनानन्तर पातल लघु भोजन करावे ॥ धान्यपंचकपाचन ॥ धनियां बाला, बेलफल, नागरमोथा, शुंठि इन्होंका काढ़ा आमशूल नाशक है और ग्राही है और भेदी है और दीपन पाचन है पित्ताधिक में शुंठिको वर्जिकर धान्य चतुष्कको बरते ॥ धातक्यादिमोदक ॥ धौंके फूल, शुंठि, पाषाणभेद, बेलफल, अजमोद, नागरमोथा, मोचरस चुका इन्हों का मोदक सर्वातीसार को हरे है ॥ कुटजाष्टककाढ़ा ॥ कुड़ाछाल, बालबेल, अतीस, नागरमोथा, धौंकेफूल, अनार, लोध पाषाणभेद इन्होंका काढ़ा शहत, मोचरस संयुक्त पीवे यह दारुण अतिसार दाह युक्त को व रक्त शूलको व आम व्याधिको हरै है ॥ वातातीसारनिदान ॥ कछुक ललाई लियेहुये मलउतरै और मलमें झागमिले हों और रूखा और थोड़ा बारम्बार आम सहित आवै औ दिशाके समय पेड़ु में पीड़ाहो तो बातका अतिसार जानिये॥ पूतिकादिकाढ़ा ॥ करंज, पिपली, शुंठि, चिकणा, धनियां, हरीतकी इन्होंका काढ़ा सायंकालमें पीवे बातातिसार नाश होवे ॥ पथ्यादि॥ हरीतकी, देवदारु, शुंठि, नागरमोथा, अतीस, गिलोय इन्हों का काढ़ा दारुणबातातीसार को नाशै ॥ वचादि ॥ बच, अतीस, नागरमोथा, इन्द्रयव इन्होंकाकाढ़ा बातातिसारकोहरै ॥ सुवर्चलादिकाढ़ा ॥ सुबल लवण, वच, हिंग, चिरायता, चीता, अतीस, शुंठि, मिरच

इन्हों का काढ़ा बातातीसार को हरै है ॥ कपित्थाष्टक ॥ पिपली ८ भागकैथाके ६ भागखांड़, अनारदाना ३ भाग, अमली ३ भाग बेलफल ३ भाग, धौकेफूल३ भाग, अजमोद ३ भाग, पिपली३ भाग मरीच १ भाग, जीरा १ भाग, धनियां १ भाग, पिपलामूल १ भाग बाला १ भाग, सैंधवनिमक १ भाग, आजमान १ भाग, दालचीनी १ भाग, तमालपत्र १ भाग, इलायची १ भाग, नागकेसर १ भाग, चीता १ भाग, शुंठि १ भाग इन्हों को महीन पीस चूर्णकरै यह जलसम्बन्धी रोगोंको व संग्रहणी को व अतीसारको नाशै है ॥ लाइचूर्ण ॥ चीता त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली, बायबिड़ंग, दोनों जीरा, भिलावां आजमान, हिंग, सांभर, ठांकणखार, सैंधवलवण, विड़लवण, सोंचर लवण, कालालवण, गृहधूम, बच, कूट, नागरमोथा, अभ्रक, गंधक यवाखार, सज्जीखार, अजमोद, पारा, बांझककोड़ी, गजपिपली इन्हों का चूर्णकरि समभाग फिर सबकी बराबर इन्द्रयव मिलाय चूर्णकरै सूर्य्योदय में चूर्ण २ तोले देवै यह मन्दाग्नि को व कास को व बवासीरको व प्लीहाको व पाण्डुको व अरुचिको व ज्वरको व प्रमेह को व सूजन को व बिष्टम्भ को व संग्रहणी को व सर्वाती-सारको व शूलको व आमबात को व सूतिका रोगको व त्रिदोषज व्याधिको नाशैहै और इसके भक्षणसे काष्ठ भी जीर्णहो इसमें पथ्य नहींहै स्नान, मैथुन, मांस ये बर्जित नहीं और कांजी, खट्टा दही येभी बर्जितनहीं ॥ कुटजचूर्ण ॥ इन्द्रयव, नागरमोथा, धौकेफूल, लोध शुंठि, मोचरस इन्होंका चूर्ण गुड़ तक्र संयुतपीवै जल्दी अतीसार नाशहोइ ॥ शुंठिचूर्ण ॥ धौकेफूल, मोचरस, अजमान इन्होंका चूर्ण तक्र संगपीवै उग्रअतीसार नाशहोवै ॥ बृहल्लवंगादि ॥ लवंग, इलायची तमालपत्र, कमलकंद, बाला, जटामांसी, तगर, कालाबाला, कं-कोल, कृष्णागर, नागकेसर, जायफल, केसर, जावित्री, जीरास्याह जीरा सफेद, शुंठि, मिरच, पिपली, पुष्करमूल, कचूर, त्रिफला, कूट बायबिड़ंग, चीतामूल, तालीसपत्र, देवदारु, धनियां, अजमान मुलहठी, खैर, आम्लबेतस, बंशलोचन, किरमाणी, अजमान, कपूर अभ्रकभस्म, काकड़ासिंगी, कालाअतीस, पिपलामूल, अरणी, सांवां

नागरमोथा, श्वेतअतीस, शतावरि, गिलोयसत, निशोत, धमासा ये सब बराबर भागले और सबोंकी बराबर खांड़ले मिलाय चूर्ण बनावै और प्रभात शामको माशे १० खावे यह बल वीर्य्य पुष्टिको बढ़ावे है और प्रमेहको व कासको व अरुचिको व क्षयीको व पीनस को व राजयक्ष्माको व रक्तदाहको व संग्रहणीको व सन्निपात को व हुचकीको व अतीसारको व प्रदरको व गलग्रहको व पाण्डुको व स्वर भंगको व अश्मरी रोगकोनाशैहै ॥ विजयायोग॥ रात्रिमेंभुनीहुई भांग के चूर्णको शहत के संग खावे यह अतीसारको व निन्दनाशको व संग्रहणीको नाशै और अग्निको दीपनकरै ॥ कुटजावलेह ॥ कुड़ाकी जड़को बारीक कूट १०२४ तोलेजल में काढ़ाकरै चतुर्थांशरक्खै इसमें संचललवण, जवाखार, विड़लोन, सैंधव, पिपली, पाड़लमूल इन्द्रयव, जीरा इन्हों का चूर्ण पूर्वोक्त काढ़ा में मिलाय अग्नि से पकावे शीतल होनेपर २ पल फिर इसमें से बेरसमानले शहत संयुक्त करिदेवे यह पका अतीसार को व कच्चा अतीसारको व नानावर्ण वेदनायुत अतीसार को व दारुण अतीसारको व संग्रहणी को व प्रवाहिका को नाशै है ॥ दूसराकुटजाद्यवलेह ॥ कुड़ाकी छाल का चतुर्थांश काढ़ा करि तिस में नागरमोथा, दूध, बायबिड़ंग बिजौरा, सेंधानिमक, धौकेफूल, पिपली इन्होंका चूर्ण बराबर ले पूर्वोक्त काढ़ामेंमिलाय अग्निमेंपकावे जब घनहोजाय तब शीतल करि शहत मिलावे यह अतीसार को व बवासीर को व संग्रहणी को व भगंदर को व श्वास को व प्रमेह को हरै है ॥ कुटजपुटपाक ॥ कुड़ाकी आली छाल १६ तोले लेवै इसे चावल के धोवनसे पीसैं गोलाकरि जामनके पत्तोंसे वेष्टित करै ऊपर सूत लपेटै फिर ऊपर गेहूंका चून लपेटै फिर करड़ी गारा से लपेटि गोमयकी अग्नि में पकावे जब अंगार समान होजाय तब अग्नि से काढ़े इसका रस निचोड़ शीतल होनेपर शहत मिलाय चाटै यह सब अतीसारोंको नाशैहै तण्डुल, जल, कण्डितचावल ४तोले आठगुणा जलमेंगेरै भिगोय जल सब कर्ममें बरतै॥ मृतसंजीवनरस ॥ पारा, गन्धकसम भाग चतुर्थांश वत्सनाग विष सबोंके समान अभ्रकभस्म इनसब

को धतूराके रसमें खरल करै फिर सर्पाक्षी कषायमें खरलकरै १ पहरतक फिर धौके फूल, अतीस, नागरमोथा, शुंठि, बाला, जीरा अजमान, यव, बेलफल, पाढ़ा, हरीतकी, पिपली, कुडाछाल, कैथ अनारफल, बला ये सब प्रत्येक कर्षतोलले इन्होंका कल्ककरै फिर चौगुणा जलमें पकावै चतुर्थांश रक्खै इससे पूर्वोक्त रसको ३ दिन खरल करै फिर बालुका यन्त्रमें घालि १ मुहूर्त्त पकावै फिर शीतल होनेपर ४ रत्ती अनुपानके संगदेवै असाध्य अतीसारको भी नाशै अनुपानकहेहैं ॥ शुंठि, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, बच, पिपली अजमाइन, धनियां, बाला, कुड़ाछाल, हरीतकी, धौकेफूल, इन्द्रयव पाढ़ा, बेलफल, मोचरस इन्होंका चूर्ण शहत युत इसको अनुपान कहते हैं ॥ कारुण्यसागर ॥ पारा एक भाग भस्म २ भाग गन्धक ४ भाग अभ्रक भस्म इनको एरण्डतेलमें खरलकरै फिर १ पहरअग्नि से पकावै फिर भृङ्ग रसमें खरल करै फिर इसमें जवाखार, सज्जी-खार, सुहागा, लवण, सैंधवलवण, बिड़लवण, संचरलवण, बत्स-नागविष, शुंठि, मिरच, पिपली, चीता, जीरा, केशर इनकासमभाग चूर्ण मिलावै यह रस कारुण्यसागर माशा २ देवै यह अतीसार को व जरा अतीसारको व शूलयुत अतीसारको व रक्तातीसार को व शोथयुत अतीसार को व संग्रहणी को नाशै है और अनुपान व अनुपान बर्जितदेवै ॥ कुंकुमबटी ॥ अफीम, केशर, शहतमें खरलकरि १ चावल तोलदेवै अतीसारको हरैहै यह गुरुमुखसे नुसखासुनाहै ग्रंथमें कहीं देखा नहीं ॥ कपित्थादिपेय ॥ कैथा, बेलफल चुका, तक्र अनार ये सब मिलाय पेया करि प्यावै ग्राहिणी है, पाचनी है और बाताधिक अतीसार में पंचमूलकी पेया प्यावै ॥ पंचमूलादिपेया ॥ पंचमूल, चिकणा, शुंठि, धनियां, कमल, बेलफल इन्हों की पेया बातातीसार को हरै सूक्तकेसंग ॥ मसूरादिघृत ॥ मसूर ४०० तोले जल दशसेर चौबीस तोलेमें काढ़ा करि चतुर्थांश रक्खै फिर इसमें बेलफल चूर्ण ३२ तोलेगेरै फिर घृत ६४ तोलेगेरै सबको मिलाय घृतकोसिद्धकरै यह घृतसर्बअतीसारको व संग्रहणीको व भिन्नबिट-कताको व प्रवाहिका को नाशैहै ॥ लोकनाथरस ॥ पाराभस्म १ भाग

गन्धक ४ भाग इनको खरलकरै फिर कौड़ीभस्म, सुहागा मिलाय गोलाकरि सकोरामें धरै दूसरे सकोरासे संपुटदे और खाम गज पुटमें फूंक देवै और शीतल होने पर चूर्ण करि यह लोकनाथ रस ४ रत्ती शहतसंग अथवा शुंठि, अतीस, नागरमोथा, देवदारु, बच इन्होंका कषाय के संग दिया अथवा क्षीरणीका कषाय संग ताता-तीसार को नाशैहै ॥ महारस ॥ पाराभस्म, लोहाभस्म, मिरच, घृत ये सब समभाग इनको थोहरके दूधमें खरल करै पीछे काकमाची के रस में खरलकरै १पहरतक गोलाकरि भूधर यन्त्र में अग्नि से पकावै एकदिनतक शीतल होनेपर १॥ माशा देवै ऊपरसपंक्षी चूर्ण १०माशा दहीसंग पिलावै यहबातातीसारको हरैहै॥ द्वितीयमहारस॥ पारा, गंधक, मिरच, सुहागा, पिपली, धतूराके बीज ये सब समान भागले फिर इन्हों को भृङ्गी के रस में खरल करै २ पहर तक यह कनक सुन्दर रस रत्ती २ दिया बातातीसारको नाशैहै इसमें पथ्य दही, चावल, घृत गौका ये हैं ॥ बातातीसारभाजी ॥ फांज, शावरी गुग्गुल, कैथा, अनार, बेरी, क्षीरणी, बाकुची, अरणी वा पत्री इन्होंकी तर्कारी भाजी पकीहुई अतीसार बाताधिक को श्रेष्ठ है पित्तातीसारनिदान ॥ मल पीला, लाल, हरा और दुर्गन्धि युक्त पतला हो और गुदा पकजाय शरीर में पसीना, दाह, मूर्च्छा ये लक्षण पित्तातीसारके हैं ॥ चिकित्सा ॥ आमातीसारको व पित्ताती-सारको लंघनसे नाशै और लंघनके पीछे यवागू, मण्ड, तर्पण ये प्यावै अथवा चन्दन, नागरमोथा, परवल, जीरा, शुंठि इन्हों का काढ़ा देवै अथवा खट्टा पेया देवै अथवा तक्रभिन्न ग्राहिणी पाचनी पेया देवै ॥ पित्तातीसार पाणी व अन्न ॥ धनियां, बाला इन्हों का जल दाहको व तृषाको व अतीसार को नाशै है और बाला, पाढ़ा इन्हों के काढ़ा में सिद्ध अन्न खवावै ॥ मधुकादियोग ॥ मुलहठी कायफल, लोध, अनारकी छाल व फल इन्हों का कल्क शहत युत चावल जल के संग देवै पित्तातीसार नाश होवैं ॥ शुंठ्यादि ॥ शुंठि, ब्राह्मी, हिंग, हरीतकी, इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा शहत युत पित्तातीसार को नाशै ॥ विल्वादिकाढ़ा ॥ बेलफल, इन्द्रयव, नागर-

मोथा, बाला, अतीस इन्हों का काढ़ा आमसहित पित्तातीसारको हरैहै॥ कटूफलादि काढ़ा॥ कायफल, अतीस, नागरमोथा, कुड़ाकी छाल, शुंठि इन्हों का काढ़ा शहतयुत पित्तातीसार को हरै॥ मधुयष्ट्यादिकाढ़ा॥ मुलहठी, लोध, कमलकन्द, खांड़ ये समभाग शहत दूध संग पीवै रक्त पित्तातीसार नाश होय॥ समंगादिचूर्ण॥ बला, धौकेफूल, बेलफल, सेंधानिमक, विडलवण, अनारकीछाल इन्होंका चूर्ण चावल पानीसंग शहतयुत पीवै पित्तातीसार व शूलनाशहोवै अतिविषादियोग॥ अतीस, कुड़ाकी छाल, इन्द्रयव इन्हों को चूर्ण शहतयुत चावल पानी से पीवै पित्तातीसारनाशहोवै॥ जंघादिचूर्ण॥ जामुन, आमकी गुठली, मुनक्कादाख, हरीतकी, पिपली, खजूर, शाल्मली, भवरसाली, गूलरछाल, लोध इन्होंका चूर्ण समभाग शहत संग पिये रक्त व पित्तातीसार को नाशै॥ लोकेश्वररस॥ पाराभस्म १ तोला सोना भस्म पावतोला इन दोनों से दुगुना गंधक इन्हों को चीतारस में खरलकरै इसको कौड़ी में भरि सुहागा से मुंहको बंद करै फेर माटी चूर्णलिप्त भांड़मे धरै कौड़ीको फेर पात्रका मुंह बंदकरि गजपुटमें फूंकदेवै शीतल होनेपर ४ रत्ती शहत के संग देवै यह सर्वातीसार को हरैहै इससे बालबेल, गुड़, तेल, पिपली शुंठि इन्होंको शहतमें मिलावै यह अनोपान श्रेष्ठहै॥ दूसरा प्रकार॥ लोकनाथ रस ४ रत्ती चावल के धोवन संग देवै, वत्सकादि घृत कुड़ाकी छाल १६ तोले काढ़ा में ४ तोले घृत को पकावै यह घृत पित्तातीसार को हरै और दीप्त पाचन है॥ कफातीसार निदान॥ मलचिकना, सपेद, गाढ़ा दुर्गंधिलिये शीतल थोड़ीपीड़ालिये उतरै और शरीर भारीहोय और भोजनमें अरुचिहो ये लक्षण कफातीसार के हैं॥ चिकित्सा॥ कफातीसारमें लंघन व पाचनहितहै और आमातीसार नाशक औषध व दीपन गणहित है और आमातीसार को पहली आदि में औषध बन्द करै नहीं जो बन्द करै तो बहुत रोगों को पैदाकरै है॥ पथ्यादिकाढ़ा॥ हरीतकी, चीता, कुटकी पाठा, बच, नागरमोथा, इन्द्रयव, शुंठि इन्हों का काढ़ा अथवा कल्क कफातीसार को हरै है॥ कृमिशत्रादि॥ वायबिड़ंग, बच

बेलफल, रस, धनियां, कायफल इन्हों का काढ़ा कफाधिक अतीसारको हरैहै ॥ पूतिकादि ॥ करंज, शुंठि, मिरच, पिपली, बेलफल चीता, पाढ़ा, अनार, हिंग इन्हों का कल्क कफातीसार को नाशै ॥ गो कंटकादि काढ़ा ॥ गोखुरू, कांगनी, कटैली इन्हों का काढ़ा आमातीसार को हरे दीपन है, पाचन है ॥ चव्यादि काढ़ा ॥ चवक अतीस, कूट, बेलफल, शुंठि, कुड़ाकी छाल, इंद्रयव, हरीतकी, शुंठि इन्होंका काढ़ा छर्दि को व कफातीसार को हरे है ॥ कणादिचूर्ण ॥ पाढ़ा, बच, शुंठि, मिरच, पिपली, कूट, कटुकी इन्हों का चूर्ण गरम जलके संगलेय कफातीसारको हरे है ॥ हिंग्वादि ॥ हिंग, सेंधालवण शुंठि, मिरच, पिपली, हरीतकी, अतीस, बच इन्होंका चूर्ण गरम जलकेसंग लेय कफातीसार को हरैहै ॥ बबूलादियोग ॥ बबूल के पान, जीरा, स्याहजीरा इन्होंका कल्क माशे १० रात्री में खवावै कफातीसार जावे ॥ पथ्यादि चूर्ण ॥ हरीतकी, पाढ़ा, बच, कूट, चीता कटुकी इन्होंका चूर्ण गरम जलके संगलेवै कफातीसार जावे ॥ भयादिचूर्ण ॥ हरीतकी, अतीस, हिंग, सेंधानिमक, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंका चूर्ण गरम जल संगलेवै कफातीसार को नाश करै अथवा छोटीहड़, कालानिमक, हिंग, सेंधानिमक, अतीस, बच इन्हों का चूर्ण गरम जलके संग कफातीसार को हरे है ॥ शुंठीपुटपाक ॥ शुंठी को बारीक चूर्ण करि जलसे पीसै फेर गोला बनाय एरंडके पत्तोंका कल्कसे लपेटै पीछे बेलपत्र के पत्तों के कल्क से लपेटै पीछे सूतसे लपेटै पीछे माटी गारासे लपेटै पीछे कोमल अग्नि से पकावै पीछे शीतल होने पर २ माशा शहत युत ४ तोले तक्र के संगलेवै यह उग्र अतीसारको व सूजनको व कासको हरैहै और कांति अग्निको बढ़ावैहै ॥ त्रिदोषअतीसारनिदान ॥ जिसका मल शूकरके मांस सदृश हो और अनेक रूप दीखे और तंद्रा, मोह, तृषा शोक, भ्रम ये बातें बालक व वृद्ध व स्त्री के होयँ तो असाध्य जानिये ॥ कुटजावलेह ॥ कुड़ाकी छालका काढ़ा करि वस्त्र से छानि घन रूप करि तिसमें अतीस चूर्ण घालि पुनः पकावै इसको चाटै यहसन्निपातज अतीसारको हरैहै और कोइक वैद्योंका यह मतहै कि इस

अवलेहमें कषायसे अष्ट मांश अतीस रजगेरै और कोइक वैद्यचतुर्थांश अतीस रज मिलावै हैं ॥समंगादि ॥ चिकणा, अतीस, नागरमोथा, शुंठि, बाला, धोकेफूल, कुडाकी छाल, इंद्रयव, बेलफल इन्हों का काढ़ा सर्बअतीसार को हरैहै ॥ पंचमूलीवलादि काढ़ा ॥ पंचमूल, चिकणा, बेलफल, गिलोय, नागरमोथा, शुंठि, पाढ़ा, चिरायता बाला, कुड़ाकीछाल, इंद्रयव इन्होंकाकाढ़ा सन्निपातज अतीसारको व ज्वरको व छर्दिको व शूलको व श्वासको व कासकोहरैहै ॥ पंचमूलप्रोजना ॥ पित्तातीसार में लघु पंचमूल बरतै और बातातीसार में वृहत्पंचमूल बरतै ॥ कुटजपुटपाक ॥ शूलरहितपकाहुआ पुरानाअतीसारको कुटज पुटपाक से हरै दीप्त अग्नि वालाको ताजी कुड़ाकी छालकोचावलके धोवनसे पीस गोला बनाय जामुनके पत्तोंसेवेष्टन करि फिर सूतसे बेष्टन करि फेरि घन गारासे लेपन करि अग्नि में तपाय शीतल होनेपर रस निचोड़ शहत में मिलाय अतीसारी को देवै यह सर्बातीसारको हरैहै यह कृष्णात्रेयका मतहै ॥ सूतादिवटी ॥ पाराभस्म, सोनाभस्म, तांबाभस्म, ये बराबर भाग इन तीनों के सम खैरसार, मोचरस मिलाय फिर इन्होंको शाल्मली रस में २ पहर तक खरल करै फिर चना समान गोली बनावै जीरा चूर्णके संगखावैसन्निपातजअतीसारको व ज्वरातीसारकोनाशकरैनिश्चय॥ चतुः समाबटी ॥ हरीतकी, शुंठि, नागरमोथा, गुड़ येसबबराबरले पीस गोली बनावै यहगोली सन्निपातजअतीसारको व आमातीसारको व अनाहको व बिड्बन्धको वबिशूचिका वकृमिकोअरोचककोहरै और अग्निको दीप्तकरै ॥ तृप्तिसागररस ॥ पाराभस्म १ भाग गन्धक २ भाग अभ्रक ४ चारभाग ये पदार्थ एकदिन कटु तेलमें खरलकरै फिर पात्रमें घालि चूल्हे पर चढ़ाय बालुका यन्त्रसे पकावै फिर कनेरकी जड़के रसमें एकप्रहरतक पकावै फिर इसमें जवाखार, सज्जीखार सुहागा खार, पाँचोलवण, चीता, जीरा, स्याहजीरा, बायबिड़ंग इन्होंके चूर्ण तीन तीन माशे प्रत्येक मिलावै यह १ माशा खावै सन्निपातातीसारको व संग्रहणी को व ज्वरको नाशकरै ॥ आनन्दभैरवी ॥ कुटकी, बेलफल, गिरी, गिलोय इन्होंके चूर्णको दहीके संग

पीसे फिर गोली बांधे ये गोली अतीसार दारुण को नाशै ॥ शोक-भयातीसारनिदान ॥ पुत्र, मित्र, स्त्री, धन, आदि के नाशसे उपजा जो शोक वह उदरकी अग्निको मन्दकरै और शरीर के बाहर का तेज उदरमें जाके रक्त बिगाड़े है वह रक्त विष्ठा से मिलिके अथवा न मिलके गुदा के द्वारा गुंजा सदृश निकले तो उसको शोकातीसार जानिये वह शोक दूर होनेही से जाता है और उसीतरह किसी प्रकारके भयसे उपजा जो भयातीसार उसको भी जानलो ये अतीसार कष्ट साध्य हैं ॥ चिकित्सा ॥ भयजव शोकजअतीसार वातातीसार समान होयहैं इन्हों में वातनाशक क्रियाकरै अथवा आनन्द व आश्वासन करनेवाली क्रिया करावै ॥ पृश्निपर्ण्यादि ॥ पृश्निपर्णी, वाला, बेलफल, धनियाँ, कोष्ट, शुंठि, वायबिड़ंग, अतीस नागरमोथा, देवदारु, पाढ़ा, कुड़ाछाल इन्होंका काढ़ा मिरच चूर्ण युत शोकातीसारको नाशैहै ॥ आमातिसारनिदान ॥ जिस पुरुष के प्रथम भोजनका अजीर्ण हो वह पीछे गरिष्ट बस्तुखाय तो उसके कोष्टमें बात पित्त कफ ये तीनों जायकरि धातुके समूह को व मल को बिगाड़े हैं वहमल शूलसंयुक्त दुर्गन्धि लिये अनेक प्रकारका गुदा के द्वारा निकलता है उस को बैद्य आमातीसार कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ आमके पकनेबिना कोई क्रिया हितनहीं और आमातीसारमें लंघन हितहै आदिमें पीछे पाचन देवै अथवा लंघनकेपीछे सद्रव हलका पथ्य देवै ॥ सिद्धांत ॥ बलवान् रोगी को आमातीसारमें लंघन समान कोई औषधि नहीं है यह लंघनदोष समूहको शांत व पकावे है और आमातीसार में पहिले औषध दे दस्त वन्धनकरै जो आदिमें बंध करेतो सूजन पाण्डु, प्लीहा, कुष्ठ, गुल्म उदरज्वर, दण्डक, आलसृक, अध्मानये रोगउपजैहैं और संग्रहणी को व बवासीर को पैदा करैहै इसवास्तेआमको आदिमें स्तम्भन करै नहीं जो स्तम्भन करे तो मृत्युहोवै ॥ धान्यकादि ॥ धनियां शुंठि इन्हों का काढ़ा एरण्डजड़ चूर्ण युत आमातीसारको हरै और दीपन पाचनहै ॥ अभया रेचन ॥ अल्पातीसारमेंवाशूलयुतअतीसार में हरीतकी, पिपली इन्हों का काढ़ादेवै रेचन करवावै ॥ बिड़ंगादि ॥

दीप्ताग्निपुरुषबहुत दोषयुक्तबद्धरूपदस्त लगाकरे तिसको विड़ंग त्रिफला, पिपली इन्होंका काढ़ा देरेचन करावै ॥ क्षुधितावर ॥ क्षुधा कर पीड़ित को अतीसार रोग उपजै तो मारुत नाशक औषध दे दीपन औषधदेवै ॥ देवदारुजलपान ॥ जोअतिगांठयुतदस्तआवेतो पहिले बमन करवावै पीछे लंघन अथवा देवदारु, बच, कोष्ट शुंठि,अतीस, हरीतकी इन्होंमें दूध सिद्ध पीवैसर्व अजीर्णजअतीसार नाशहोवै ॥ चित्रकादि ॥ चीता, पिपलामूल, बच, कटुकी, पाढ़ा इंद्रयव, हरीतकी, शुंठि, इन्होंका काढ़ा आमातीसार को व बातातीसारको व कफाती सारको व पित्ताती सारकोहरैहै ॥ विश्वादियोग ॥ शुंठि, हरीतकी, नागरमोथा, बच, अतीस, देवदारु, अथवा शुंठि नागरमोथा, अतीस, अथवा शुंठि, नागरमोथा, अतीस, गिलोयये तीनों काढ़े आमाती सारको हरैहैं इसमें सन्देह नहींहै ॥ पथ्यादि ॥ हरीतकी, दारुहल्दी, बच, नागरमोथा, अतीस इन्हों का काढ़ा आमातीसारको हरैहै ॥ एरण्डादिरस ॥ एरण्ड रसमें शुंठिको पीस गरम करिदेवै यह आमातीसार को व शूलको हरै है और दीपन पाचनहै ॥शुंठ्यादिचूर्ण॥ शुंठि,अतीस, हिंगभूनी,नागरमोथा, इन्द्रयव चीता इन्हों का चूर्ण गरम जलसंग लेय आमातीसार को हरै है। हरीतक्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, अतीस, सेंधानिमक, कालानिमक, बच, हिंगइन्होंकाचूर्णगरमजलकेसंगलेवैआमातीसारजावे और ग्राही है अग्निकोदीप्तकरैहै ॥ शुंठीपुटपाक ॥ शुंठिकाचूर्ण कलुकघृतमें भिगोय करिएरण्डके पत्तोंसे वेष्टनकरि फिरसूतसे फिरगारा से फिरमन्द २ अग्निमें पकावै शीतल होनेपर रस निचोड़ मिश्री के संग प्रभात में चाटै यह आमातीसारकी पीड़ाको व कुक्षि शूलको व आमशूल को व मल बद्धता को व आध्मानको व अतीसारको नाशैहै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि, जीरा, सेंधा, हिंग, जायफल, आमगुठली, बड़ पान भुइतर बड़ इन्होंका चूर्ण वस्त्रसे छानि दहीमें गोली बांधे फिरदही के संगही गोली खावे यह आमातीसार को व अग्नि मन्दता को व अरुचिकोजलदी नाशैहै॥ तीसराशुंठ्यादिचूर्ण ॥ सतुवाशुंठि, मिरच भांग ये सम भागले इन्होंका चूर्ण शीतल जल के संग खावै शूल

को वा आमातीसारको हरै पथ्य दहीचावलखावै ॥ साखरुण्डचूर्ण ॥ भांग, खांड़, साखरुण्ड, जीरा इन्होंकाचूर्ण दही संगलेवै आमातीसारको व रक्तातीसार को हरै ॥ यवान्यादि ॥ अजमान, शुंठि, बाला धनियां, अतीस, नागरमोथा, नालबेल, द्विपर्णी इन्होंकाकाढ़ा दीपन पाचनहै ॥ कलिंगादि ॥ कुड़ाकीछाल, अतीस, हिंग, हरीतकी, सांभर नोन, बच इन्होंकाकाढ़ा शूलको व बिड्बंधकोहरै और दीपनपाचन है ॥ त्रिकण्ठादियवकांजी ॥ गोखुरू, एरण्डमूल, बेलफल ये पदार्थ मिलाय यवकीकांजी आमातीसारको व शूलकोहरै अथवा हरीतकी शहत युत अतीसारकोहरै ॥ ह्रीवेरादि ॥ बाला, अदरख, नागरमोथा भद्रमोथा, कालाबाला इन्होंका काढ़ा अतीसारज तृषाको हरै है ॥ त्र्यूषणादि ॥ शुंठि, मिरच, पिपली, अतीस, हिंग, बच, संचलनिमक हरीतकी इन्होंकाचूर्ण गरमजलसंग आमातीसारकोहरैहै ॥ पाढादि ॥ पाढ़ा, हिंग, अजमोद, बच, पिपली, पिपलामूल, चबक, चीता, शुंठि नागरमोथा इन्होंकाचूर्ण गरमजलकेसंग सैंधवयुक्त आमातीसारको हरै है ॥ पयमुस्तायोग ॥ दूध १ भाग, जल ३ भाग, नागरमोथा २० भाग इन्हों को पकाय दूध मात्ररहै तब उतार पीवै यह आमातीसारको व शूलको हरैहै ॥ आमपक्वातीसारलक्षण ॥ जो मल जल में तिरै और आम जल में डूबजाय और दुर्गंध युक्त सपेदाई लिये चिकनाहो तिसे आम कहेहैं इनलक्षणोंसे विपरीतहो और हलका वह आमपक्व कहावे है ॥ असाध्यलक्षण ॥ जामुनकाफल पकाहुआ समान हो अर्थात् सचिक्कण श्याम हो और श्याम रोहित हो अथवा घृत, तेल, वसा, मज्जा, वेशवार इन्हों समानहो अथवा दही मांसधोवन जल समान हो अथवा काला, नीला, अरुण रंगका हो अथवा मलाहुआ सुरमा समानहो अथवा अनेकवर्ण वालाहो अथवा धातुस्नेह की चन्द्रिका युत हो अथवा गांठ युक्तहो और दुर्गंधि युत हो अथवा मस्तक स्नेह समानहो ऐसे प्रकारका दस्त वालारोगी असाध्य होयहै और तृषा, दाह, अरुचि, श्वास, हुचकी पसलीशूल, मूर्च्छा इन्हों युक्त अतीसार वाला असाध्य होहै और जिस अतीसारकी गुदा पकजावै और मन किसी बातमें लगै नहीं

और ज्यादा बकवाद करे यह भी असाध्य होय है इन्हों को वैद्य त्याग देवै और जिसकी गुदा बहेजावे और बलक्षीणहो और अत्यंत सूजन युतहो और गुदापै फुनसियां निकस आवैं और अग्निमंद हो ऐसा अतीसार वाला निश्चय मरै ॥ उपद्रव ॥ सूजन, शूल, ज्वर, तृषा, श्वास, कास, अरुचि, छर्दि, मूर्च्छा, हुचकी ये उपद्रव अतीसारके देखि वैद्य त्यागदेवै। और श्वास, शूल तृषाइन्होंसे युतको और ज्वर पीड़ित के वृद्ध अवस्था में अतीसारहो तो निश्चयमरै लोध्रादिचूर्ण ॥ लोध, धौकेफूल, बेलफल, नागरमोथा, आमकी गुठली कुड़ाकी छाल इन्होंका चूर्ण महिषी तक्रसंग पियाय पक्कातीसार को हरैहै ॥ पद्माादिचूर्ण ॥ पद्माख, मजीठ, मुलेठी, बेलफल, गूलरइन्हों काचूर्ण शहत संग खावै अतीसारकोहरै ॥ कुटजादि॥ कुड़ाकीछाल अतीस इन्हों का चूर्ण शहद संगलेय अतीसार को व रक्त पित्तको हरैहै ॥ अवष्टादिगण ॥ पाढ़ा, धौकेफूल, मजीठ, लोध, कमलकेसर महुआ, बेलफल इन्होंका काढ़ा पक्कातीसारको हरै है ॥ समंगादि चूर्ण ॥ लज्जावंती, धौकेफूल, मजीठ, लोध अथवा मोचरस, लोध, अनार, अनारछाल अथवा आमकी गुठली, लोध, बेलफलगिरी अथवा मुलहठी, अदरख, दीर्घवंती, दालचीनी ये चारोंचूर्णचावलके धोवन संगदेय व शहद संगदेय अतीसारकोहरैहै॥ कंचटादिचूर्ण ॥ गजपिपली, जामुन, अनार, शृङ्गाटक पान, बेलफल, बर्हिष्ट, नागरमोथा, शुंठ इन्होंका चूर्ण गंगानदी बहतीहुईको बन्दकरै अतीसार की कौन कथा है ॥ अंकोटकल्क ॥ अंकोट जड़ का कल्क शहत युत चावल धोवन संगलेय अतीसारकोनाशकरै दृष्टांत। जैसे सेतुबहती नदी को तैसे ॥ मोचरसादि चूर्ण ॥ मोचरस, नागरमोथा, शुंठि, पाढ़ा अरल, धौकेफूल इन्होंकाचूर्ण मट्ठाकेसंग दारुणअतीसारकोनाशै है मुस्तादिचूर्ण ॥ नागरमोथा, मोचरस, लोध, धौकेफूल, बेलफल, इन्द्रयव इन्होंकाचूर्ण गुड़युत तक्रसंगलेय दारुणअतीसारकोनाशैहै॥ विश्वादिबटी ॥ शुंठि, जीरा, सैंधव, हिंग, जायफल, आमकी गुठली शंखटुकड़े इन्होंको दहीमें पीसैफेर कछुक अग्निपै पकायगोली १० माशे की बनावै ये गोली पक्कातीसार को व अपक्कातीसार को व

शूलको व संग्रहणीको व चिरकालके अतीसारको व नवीन अती-
सारको हरैहै ॥ वटप्ररोहयोग ॥ बड़का प्ररोहको पीसि चावलधोवन
सेफेरतक्र संगपीवै अतीसार नाशहोवै॥कुटजावलेह॥आलीकुड़ाकी
छाल ४०० तोलेजल १०२४ तोलेमें पकाय चतुर्थांश रक्खे फेर
वस्त्रसेछानि फेर पकावै पीछे इसमें लज्जावंती ४तोले धौंकेफूल ४
तोले बेलफल ४ तोले पाढ़ा ४ तोले मोचरस ४तोले नागरमोथा
४ तोले अतीस ४ तोले इन्हों को मिलाय पकावै जब तक दर्वी
कर्चीये तब तक यह जलके संग व बकरी के दूधसंग मंडसंगलेय
नानावर्ण अतीसार को व शूलको व रक्त प्रदरको व बवासीर को
हरै है ॥ रालयोग ॥ रालमिश्री युत पुराना अतीसार को नाशै है।
नाभिलेपणीय आमला, रालबाल इन्होंको अदरखके अर्कमें पीसि
नाभिमण्डलके लेपै यह नदी वेगोपम अतीसारकोहरैहै ॥ पाढ़ादि
योग ॥ पाढ़ा गोके दहीमें पीसि अथवा आंबकीगुठलीदहीमें पीसि
नाभिमंडलके लेपकरि अतीसारकोनाशैहै ॥ जातीफलादि ॥ जाय-
फल, शुंठि,रालकेनी, खजूर ये प्रत्येक छः छः माशे सब के समान
रानशेणीकी राख ये सबएकत्र करि प्रभात व शामदोबेल १॥माशा
चावल धोवन जलकेसंग लिह्लिया जीर्णातीसारको व रक्तातीसार
को व शूलकोहरैहै ॥ रक्तातीसारनिदान ॥ जोपित्तातीसारमेंपित्तका-
रकद्रव्य अत्यन्त खावै उसके उग्ररक्तातीसारहोहै ॥ यष्ट्यादिकाढ़ा॥
मुलहठी,खांड़,लोध,महुआ, नीलकमल इन्होंकाकाढ़ाबकरीकादूध
घालि सिद्धकिया रक्तातीसारको नाशकरैहै इसमें कोइकसंदेह नहीं
यहपरमोत्तमहै ॥ कुटजादि ॥ कुड़ाछाल,अतीस,बेलफल,बाला,रक्त
चंदन इन्होंकाकाढ़ाआमातीसारको व दाहको व रक्तशूलको व सर्वा-
तीसारकोनाशैहै॥वत्सकादिकाढ़ा ॥ कुड़ाछाल,अतीस,बेलफल,बाला
नागरमोथा इन्होंकाकाढ़ाआम सम्बन्धी शूलको व रक्तातीसारको
व पुरातन अतीसारकोहरैहै ॥ तंडुलजलयोग ॥ छोटीहड़जीरामेंदोनों
कछुक भूनै इन्होंका चूर्ण चावलके धोवनके संगलेय अतीसारको
हरै है ॥ डालिंबादि ॥अनारकीछाल कुड़ाकीछालइन्होंकाकाढ़ाशहत
यत रक्तातिसारको हरैहै ॥ चन्दनादियोग ॥ चावलकेधोवनमेंचन्दन

मिश्री मिलाय पीवै यह रक्तातीसारको व तृषाको व दाहको व मोह कोनाशैहै ॥ ह्रीवेरादि ॥ बाला, अतीस, नागरमोथा, बेलफल, धनियां कुड़ाछाल, मंजीठ, धौकेफूल, लोध, शुंठि इन्होंकाकाढ़ा दीपन पाचनहै और अरुचिको व आमको व मलबद्धताको व शूलको व रक्तातीसारको व सज्वर अतीसार को नाशैहै ॥ बिल्वादियोग ॥ बेलफल बकरीदूधमें सिद्ध खांड़ मोचरस मिलायपीवै अथवा कुड़ाकीछाल चूर्ण मिलाय पीवै यह रक्तातीसार को नाशैहै ॥ कलिंग यव षट्क ॥ हरीतकी, अतीस, संचलनोन, हिंग, कुड़ा की छाल, यव इन्हों का चूर्ण रक्तातीसारको व शूलको हरैहै ॥ कुटजक्षीर ॥ कुड़ाकीछाल ८ तोले चौगुने जलमें पकाय चतुर्थांश रक्खै पीछे ८ तोला बकरीका दूध मिलावे शीतल होने पर ८ माशे शहतमिलाय पीवै यहरक्तातीसारको नाशैहै ॥ रसांजनादि चूर्ण ॥ रसोत, अतीस, इन्द्रयव, कुड़ाकीछाल, धौकेफूल, शुंठि इन्होंको शहत संयुक्त चावल धोवन जलके संगलेवै दारुण रक्तातीसार नाशहोवै ॥ कुटजावलेह ॥ कुड़ाकी छाल ४ तोले आठगुना जलमें पकाय अष्टमांश रक्खै पीछेअनार कारस मिलाय फिर पकावै कुड़ा काढ़ा समान अनार समान है फिर शीतल होनेपर १० माशे तक्र के संग पीवै रक्तातीसार नाश होवै और मरण पाय भी जीवै ॥ लक्ष्क्यादिस्वरस ॥ हरफारेवड़ी बेरी, जामल, चारोली, आंब, अर्ज्जुन इन्हों की छाल रस दूधशहत युत रक्तातीसार को नाशै ॥ गुड़बिल्वयोग ॥ बेलफल गुड़संयुक्तखावै रक्तातीसार, आम, शूल, अवष्टम्भ, कुक्षिरोग इन्होंका नाश होवै॥ शतावरीकल्क ॥ शतावरी के कल्क को खाय ऊपर दूध पीवै अथवा शतावरी कल्क में घृत को सिद्धकरि खावै रक्तातीसार नाश होवै॥ बलादिकल्क ॥ कालेतिल १ भाग, खांड़ २ भाग, बकरीकादूध ४ भाग इन्होंको मिलायपीवै रक्तातीसार नाशहोय ॥ नवनीतावलेह ॥ गौके दूध में नवनीत घृत गौका व शहद व मिश्री मिलाय पीवै यह रक्तातीसार को बन्द करै ॥ शाल्मलिपुष्पयोग ॥ शाल्मलिवृक्षके आलेफूलोंको पीस पुटपाककरि ऊखलमेंकूटि ४ तोलेरस गरमदूध में काढ़ै फेर १२ तोले घृत मिलावै फेर १२ तोले तेल मिलावै फेर

मुलहठीका कल्क १२ तोले मिलावे फेर शहद १२ तोले मिलावै इन को मिलाय देवै यह रक्तातीसार को नाशकरै पथ्य दूध भात खावै गुदपाक ॥ बहुत दस्तहोने से जिसकागुदा पित्तकरिके जलै वा पक जावै तब सेचन व प्रक्षालन करवावै ॥ पटोलादि काढ़ा गुदक्षालनार्थ ॥ परवल, मुलहठी, महुवाकी छाल इन्होंका काढ़ा शीतलकरि गुदा को सेचन करै व प्रक्षालन करै ॥ दूसरा ॥ बकरीका दूध शहद खांडयुत इस के सेचन से वा प्रक्षालन से व पान से गुदा की दाह व पाक नाशहोवै ॥ चांगेरीघृत ॥ गुदाकी कांच बाहर निकसना नाश वास्ते चांगेरी घृत बरतै और ज्यादा कांच गुदा की निकले तो व ज्यादा पीड़ा हो तो मूषा के मांस से स्वेदन गुदा को करावै मूषकमांसस्वेद ॥ गुदभ्रंश में मूषा के मांसका बफारादेवे व मूषा के मांसकोबांधे अथवा गुदभ्रंशमेंशंख टुकड़े, मूषामांस इन्होंकोपकाय तेल लवणयुतकरि इससे पसीना गुदाके दिवावै जल्दीगुदभ्रंश नाश होवै ॥ गोधूमचूर्णस्वेद ॥ गेहूंके चून को जलमें ओसनकरिघृत मिलाय गोलाकरि अग्निसे तपाय २ स्वेदनकरै तो गुदभ्रंश जावै गुदांतप्रवेशन ॥ गुदभ्रंश में गुदा को स्नेहसे चुपड़ि २ अंतः प्रवेश करै पीछे मूषा के मांस से स्वेदन करै यह उपाय गुदभ्रंश को हरै घृत ॥ चूका, बेरी, निंबु, जवाखार, शुंठि इन्हों के काढ़ा में घृत को सिद्धकरि पानकरै तो गुदभ्रंशजावै ॥ कमलपत्रलक्षण ॥ कोमलकमल का पान खांडयुतखावै तिसके गुद निर्गम नहीं होवै ॥ ज्वरातीसार चिकित्सा ॥ जो औषध ज्वरमें कही हैं व अतीसारमें कही हैं तिन्होंसे ज्वरातीसार में कर्म न करै और नवीन क्रियाहै सो कहतेहैं ॥ उत्पलषष्टिक ॥ ज्वरातीसार में लंघन ज्यादा करावै पीछे कमलकंद, साँठी चावल, धानकीखील इन्होंका माड़ देवै ॥ दाडिमावलेह ॥ अनाररस १ सेर जल ५ सेर इन्होंका चतुर्थांश काढ़ाकरै इसमें खांड १ सेर मिलावै, शुंठि ४ तोला पिपलामूल ४ तोला पिपली ४ तोला धनियां ४ तोला अजमान ४तोला जावित्री ४तोला कासिवदा ४तोला जीरा ४तोला बंशलोचन ४तोला भांग ४तोला निंबपत्ते ४तोला लज्जावंती ४ तोला कुड़ाछाल ४ तोला शाल्मली ४ तोला अरला

४ तोला अतीस ४ तोला पाढ़ा ४ तोला लवंग ४ तोला घृत १ सेर शहद १ सेर सबको मिलाय अवलेहकरै यह ज्वरातीसार को नाशै कणादिकाढ़ा ॥ पिपली, गजपिपली, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा शहद खांड़ युतप्यावै तृषा व छर्दि नाशहोवै ॥ पाढ़ादिकाढ़ा॥ पाढ़ा इन्द्रयव, चिरायता, नागरमोथा, पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ाआमातीसार को व ज्वरको नाशकरै॥ नागरादिकाढ़ा ॥ शुंठि,अतीस,नागरमोथा, चिरायता, गिलोय, कुड़ाकीछाल इन्होंकाकाढ़ा सर्वज्वरोंको व सर्व अतीसारों को हरै ॥ कलिंगादि ॥ कुड़ाकीछाल, अतीस,शुंठि चिरायता, बाला इन्होंकाकाढ़ा ज्वरातीसार संबंधी संताप को नाश करै॥ गुडूच्यादि ॥गिलोय,अतीस,धनियां,शुंठि,बेलफल,नागरमोथा बाला,पाढ़ा,कुड़ाछाल, चिरायता, रक्तचन्दन,कालाबाला,पित्तपापड़ा इन्हों का काढ़ा शहद मिलाय पीवै यह ज्वरातीसार को व हल्लास को व अरोचक को व छर्दि को व पिपासा को व दाह को नाश करै है ॥ वत्सकादि ॥ इन्द्रयव, देवदारु, कटुकी, गजपिपली इन्होंका काढ़ा अथवा गोखुरू, पिपली, धनियां, बेलफल, पाढ़ा, अजमान इन्हों का काढ़ा ज्वरातीसार को व दाह को नाशै है॥ उशीरादि॥ बाला, कालाबाला, नागरमोथा, धनियां, बेलफल, मंजीठ धौकेफूल, लोध, शुंठि इन्होंकाकाढ़ा दीपन पाचन है और अरुचिको व आमातीसारको व बिड्बंधको व शूलको व रक्तातीसारको व ज्वरातीसार को व अतीसार को हरै है॥ बिल्वादि ॥ बेलफल, बाला, चिरायता, गिलोय, धनियां, शुंठि,कुड़ाछाल, नागरमोथा, आंवला इन्होंका काढ़ा ज्वरातीसार को व शूलको हरैहै ॥ पंचमूलादि॥पंचमूल,कटैली,नागरमोथा, बाला, कुड़ाछाल, इन्द्रयव, बाला, कटुकी गिलोय, शुंठि, बेलफल इन्होंकाकाढ़ा, ज्वरातीसार को व बातको व कासको व श्वासको व शूलकोहरैहै ॥ अरलवादि ॥ अरलू,अतीस नागरमोथा,शुंठि,बेलफल, अनार इन्होंका काढ़ा सर्वअतीसार को हरैहै ॥ उत्पलादि ॥ कोष्ट,अनारछाल, कमलकेशर इन्होंकोपीसचावलधोवनसेपीवै ज्वरातीसारनाशहोवै ॥ व्योषादिचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच पिपली,इन्द्रयव,निम्ब,चिरायता,भंगरा,चीता,कटुकी,पाढ़ा, दारुह-

लदी, अतीस सबसमान भाग सबकेसमान कुड़ाकीछाल सबकोएकत्रकरि चावलधोवन जलसंगपीवै अथवा शहतमेंअवलेहकरिचाटै यहपाचनहै और ग्राही है और तृषा, अरुचि, ज्वरातीसार, कामला संग्रहणी, गुल्म, प्लीहा, सूजन, पांडु, प्रमेह इन्हों को हरै है ॥ इसबगोलयोग ॥ इसबगोल की फंकी ज्वरातीसारको हरै है यह अनुभवसे लिखाहै और लाजा, सांठीभात, कमलकन्द इन्होंका मंठ ज्वरातीसार में हितहै ॥ पृश्निपर्ण्यादिपेया ॥ पृश्निपर्णी, बला, बेलफल, शुंठि कमल धनियां, अनारकारस इन्होंकी पेया ज्वरातीसार शूलकोहरै ॥ बिजया योग ॥ एरण्डमूल, बेलफल, यव, गोखुरू इन्होंको पेयामें भांग अथवा मोचरस शहद मिलाय पीवै यह उदररोगको व सर्वशूलको व विषमज्वरको व कासको व हुचकीको नाशैहै ॥ पंचामृतपर्पटीरस ॥ पारा लोहभस्म, तांबाभस्म, अभ्रकभस्म येसब बराबर भाग, गंधक२भाग इन्हों को लोहा के पात्र में घालि बड़बेरी के काष्ठ की अग्नि से कोमलपाकरस बनावै पीछे रसको केला के पत्ते पै लेपन करै जब पपड़ी जमै तब उतारले यहरस अग्नि को दीप्तकरै है और ज्वरातीसारको व कासको व कामला को व पाण्डुको व प्रमेह को हरैहै और मलबद्धमें व जीर्णज्वरमें बकरीका मूत्र४तोलेकेसङ्ग यहरस देवै और तेल खट्टापदार्थ नहीं खावे ॥ दरदादिपुटपाक ॥ सिंगरफ१भाग अफीम १॥ भाग, सुहागा खार आधाभाग, जायफल आधा भाग इन्होंको पीसि गोलाकरि पुटपाककरै शीतलहोने पर मूंगके समान गौ के दूध के संग खावै यह ज्वरातीसार को व अग्नि मन्दको व निन्द नाशको व अरुचिको नाशै और बल, पुष्टिको बधावै ॥ दुग्ध योग ॥ आधाजल आधा दूध एकत्रकरि पकावै जलजलाकरि दूध मात्र रहै तब उतारले शीतलकरि पीवै यह बद्धबातको व शूलको व प्रवाहिका को व रक्त पित्तको व तृषाको व अतीसारको व रक्त विकारकोहितहै अमृतसमहै ॥ कट्फलादि ॥ कायफल, मुलहठी, लोध अनारकीछाल इन्होंकाचूर्ण चावल जल संग खाय बात पित्तातीसारकोहरै है ॥ पित्तकफाद्यतीसार निदान ॥ दोषोंके लक्षण मिले वह द्विदोषज अतीसारहोय है तिसकी चिकित्सा कहते हैं ॥ मुस्तादि ॥

नागरमोथा, अतीस, मूर्वा, बच, कुड़ाछाल इन्हों का काढ़ा शहद संयुक्त पित्तकफातीसारको हरैहै ॥ समंगादि ॥ लज्जावंती, धौकेफूल बेलफल, आमकी गुठली, कमलकेशर इन्होंका काढ़ा अथवा बेलफल, मोचरस, लोध, कुड़ाकीछाल, इन्द्रयव इन्होंका काढ़ाअथवा चूर्ण चावल धोवनके संगलेय कफपित्तातीसारकोहरैहै ॥ वातकफातीसार निदान ॥ स्वादु, कटुरस सेवनसे बात कफ कोपकरि अतीसारको पैदाकरै अग्निको मन्दकरके वह अतीसार में द्रवमल हो और झाग सहितहो और आम गन्धिकहो व शब्द सहित दस्तहो मूर्च्छा, भ्रम, ग्लानि येभी हों और सक्थि, कमर, गोड़ा, मगर हाड़ इन्होंमें शूलहो लक्षण बात कफातीसार केहैं ॥ चित्रकादि ॥ चीता अतीस, नागरमोथा, बला, बेलफल, शुंठि, इन्द्रयव, कुड़ाछाल इन्हों का काढ़ा बात कफातीसार कोहरैहै ॥ उपचारक्रम ॥ जो वातातीसार में पाचनवग्राही कहते हैं वे इसमें भी प्रयुक्त करने योग्य हैं ॥ बिल्वादि ॥ बेलफल, आमकी गुठलीका रस, खांड़ शहत संयुक्त करि पीवै यह छर्दिको व अतीसारको हरै ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे अग्नि घृतको ॥ प्रियंग्वादिकाढ़ा ॥ प्रियंगु, अंजना, नागरमोथा इन्हों का चूर्ण किम्बा कल्क शहद युत चावल धोवन जलके सङ्गलेवै यह तृषा को व छर्दि व अतीसार को नाशै ॥ आम्रादि ॥ आमकी गुठलीकीगिरी बेलफल इन्हों का काढ़ा शहद खांड़ संयुक्त करि पीवै यह छर्दि संयुक्त अतीसारको नाशै ॥ मुद्गकषाय ॥ भुनीहुई मूंगोंका व धानकी खीलकाकाढ़ा खांड़ शहद युत छर्दिको व अतीसारको व तृषाको व दाहको व ज्वरको व भ्रमको नाशकरैहै ॥ पटोलादि ॥ परवल, इन्द्रयव धनियां इन्होंका काढ़ा शीतलकिया शहद खांड़ युक्तकरि पीवै छर्दि को व अतीसारकोहरैहै ॥ जंब्वादिकाढ़ा ॥ जामन, आंब, पल्लव, बाला बड़काप्ररोह, शृङ्गाटक इन्होंकाकाढ़ा अथवा चूर्ण अथवा रस शहद युत सेवनकरै छर्दि, ज्वर, अतीसार, मूर्च्छा, तृषा, ज्यादा अतीसार इनकोहरै ॥ पुरीषातीसारावर ॥ दीप्ताग्निवालेके झागसहित मलहो ज्यादानिकसै वह रात्र, शुंठि, दही, घृत, तेल, दूध ये पदार्थ प्राशनकरावै ॥ पुरीषक्षयावर ॥ दीप्ताग्निवालेके मलक्षयहो तो बला, शुंठि इन्हीं

में सिद्धकिया दूध, तेल, गुड़युत प्यावै॥ दूसराप्रकार॥ केलाकी घड़ दही घृत मिश्रितखावै अथवा हलका अन्न भोजनकरै पुरीषक्षयमें हित है॥ शोफातीसारी देवदार्व्यादि काढ़ा॥ देवदारु, अतीस, पाढ़ा बायबिड़ंग, नागरमोथा, मिरच, कुड़ा इन्होंकाकाढ़ा शोफातीसारको हरैहै जैसे समुद्रको अगस्त्यजी तैसे॥ बिड़ंगादिकाढ़ा॥ बायबिड़ंग अतीस, नागरमोथा, देवदारु, पाढ़ा, कुड़ा, मिरच इन्होंकाकाढ़ा शोथातीसार को हरै है॥ किराताादि॥ चिरायता, नागरमोथा, गिलोय शुंठि, चन्दन, बाला, कुड़ा इन्होंका काढ़ा शोफातीसार को हरै है॥ पाढ़ादि॥ पाढ़ा, अतीस, कुड़ाछाल, नागरमोथा, दारुहल्दी, बायबिड़ंग मोचरस इन्होंका काढ़ा शोथातीसार को नाशै जैसे समुद्र को बड़वाग्नि॥ शोथघ्न्यादि॥ पुनर्नवा, इन्द्रयव, पाढ़ा, बायबिड़ंग, अतीस नागरमोथा इन्होंका काढ़ा शुंठि, मिरच, पिपली चूर्णयुत शोथातीसारको नाशैहै॥ भस्त्रातीसारनिदान॥ शीतवायुयुक्त कोष्ठकी अग्नि भोजन को पकावैनहीं और तृषार्त्तहो परन्तु जलपानकरैनहीं और मल शिथिल व चिकणा व पतला व आमयुतहो ये लक्षण भस्त्रातीसारकेहैं॥ शाल्मलिचूर्ण॥ मोचरस, अजमान, धवकेफूल, तिल, राल लोध, घृतमें इनकाचूर्णबनाय खावै भस्त्रातीसार नाशहोवै॥ हिंग्वादिजलयोग॥ हिंग, शुंठि, बायबिड़ंग, संचलनोन इन्होंका चूर्ण जल २ दोतोले संगलिया भस्त्रातीसार का नाशकरै॥ रोहिण्यादिपाचन॥ कटुकी, अतीस, पाढ़ा, बच, कूट इन्होंका काढ़ा पिये सर्वातीसारका नाशकरै॥ ह्रीबेरादिकाढ़ा॥ बाला, धवकेफूल, लोध, पाढ़ा, लज्जावंती कुड़ाछाल, धनियां, अतीस, नागरमोथा, गिलोय, बेलफल, शुंठि इन्होंकाकाढ़ा पुराने अतीसारको व अरुचिको व आमको व शूल को व ज्वरकोहरैहै॥ धातक्यादि॥ धवकेफूल, बेलफल, लोध, बाला गजपिपली इन्होंका काढ़ा शीतल किया शहद संयुक्त बालकों को देवै यह सर्वातीसार को हरै है॥ आनन्दभैरव॥ सिंगरफ, पारा, बच-नाग, मिरच, सुहागाखार, पिपली ये पांचोंसमभाग खरलकरि चूर्ण करै यह आनन्दभैरवरसहै और १ रत्ती वा २ रत्ती बलाबल देखि प्रयोककरै और रसकोशहदमें मिलाय और इन्द्रयव, कुड़ाकी छाल

के चूर्णदशमाशे के संग सन्निपातज अतीसारको हरै है पथ्य दही चावल व गौकाघृत वा तक्रदेवे और तृषालगे तो शीतलजलप्यावे और रात्रि में भांग थोड़ीसी देवै ॥ आनन्दरस ॥ जायफल, सैंधव सिंगरफ, कौड़ीकी भस्म, शुंठि, बचनाग, धतूराके बीज, पिपली ये सब एकत्र खरलकरि १ रत्ती गोलीकरै ये गोली उदररोगको व बातको व शूलको व आमातीसारको व संग्रहणी व योनिरोगको नाशकरैहै ॥ दाड़िमाष्टक ॥ बंशलोचन १तोले और दालचीनी, तमाल पत्र, इलायची, नागकेशर ये ३ तोले और अजमान, धनियां, जीरा पिपलामूल, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंकाचूर्ण ४ तोले अनार ३२ तोले मिश्री ३२ तोले सबकोमिलाय सिद्धकरै यहचूर्णकपित्थाष्टक चूर्ण के फलकीसमान फलदायक है ॥ लघुगंगाधरचूर्ण ॥ नागरमोथा, इन्द्रयव, बेलफल, लोध, मोचरस, धवकेफूलइन्होंकाचूर्णगुड़तक्र के संगखावें यहचूर्ण सर्वातीसार को व प्रवाहिकाकोहरै है ॥ वृद्ध-गंगाधरचूर्ण ॥ नागरमोथा, टेंठु, शुंठि, धवकेफूल, लोध, वाला, बेल-फल, मोचरस, पाढ़ा, इन्द्रयव, कुड़ाकीछाल, आंबका बीज, अतीस लज्जावंती इन्होंकाचूर्ण शहदयुत चावलधोवन जल के संगलेय यह प्रबाहिका को व सर्वातीसारको व संग्रहणी को नाशै है यह नदीबेग समान अतीसार को बन्दकरै ॥ अजमोदादिचूर्ण ॥ अजमोद मोचरस, अदरख, धव के फूल इन्होंकाचूर्ण गौ के दहीयुत नदीवेग समान अतीसार को बन्दकरै ॥ वृहद्दाड़िमाष्टक ॥ अनार की छाल ३२ तोले खांड़ ३२ तोले पिपली ४ तोले पिपलामूल ४ तोले अज-मान ४ तोले मरीच ४ तोले धनियां ४ तोले जीरा ४ तोले शुंठि ४ तोले बंशलोचन १६ माशे दालचीनी ८ माशे इलायची ८ माशे नागकेशर ८ माशे तमालपत्र ८ माशे सबको मिलाय तय्यारकरै यह अतीसार को व क्षय को व गुल्म को व संग्रहणी को व गलग्रह को व मन्दाग्नि को व पीनसको व कासकोहरै है ॥ धातक्यादिचूर्ण ॥ बेलफल, धवके फूल, मोचरस, नागरमोथा, लोध, कुड़ाछाल, शुंठि इन्होंकाचूर्ण गुड़तक्र के संग खावे अतीसार नाशहोवै ॥ भल्लातादि चूर्ण ॥ भिलावा के दोखण्ड भुनेहुये ८ तोले शुंठि ४ तोले हरीतकी २

तोले गेहूँ ४ तोले मेथी, जीरा १ कर्षभर सिरसम ८ माशे अजमान २ तोले पिपली १ तोला हिंग १ तोला चीता १ तोला बिड़लोन १ तोला सेंधा १ तोला जीरा १ तोला इन्होंकाचूर्ण दहीकेसंगखावे सब अतीसारनाशहोवैं॥ लघुलाइचूर्ण ॥ पारा, गंधक, शुंठि, मिरच, पिपली अजमान, मिरच, स्याहजीरा, संचलनोन, सेंधानोन, हिंग, बिड़-लोन ये समभाग ले इनसबों की बराबर कुड़ाकीछाल सबको मि-लाय चूर्णकरै यह संग्रहणी को व शूलको व आनाहवायुको व अनेक प्रकार अतीसार को हरै है ॥ यवान्यादिचूर्ण ॥ अजमान, पिपलामूल दालचीनी, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, शुंठि, मिरच, चीता बाला, जीरा, धनियां, संचलनोन ये सम भागलेवे आंबछाल, धव के फूल, पिपली, बेलफल, अनार दीप्यक ये तीनगुणे और खांड छःगुनी कैथ आठगुणी इन्हों को एकत्र करि चूर्ण करै यह अ-तीसार को व संग्रहणी को व क्षयी को व गुल्म को व गलरोग को व कासको व श्वासको व अरुचिको व हुचकी को हरै है॥ बल्व-कादिघृत ॥ इन्द्रयव, दारुहलदी, पिपली, शुंठि, लाख, कटुकी इन्हों में सिद्धघृत मंडयुत अतीसारको हरै ॥ बिल्वतेल ॥ बेलफल ४०० तोले इन्होंका काढ़ा चतुर्थांश रक्खे फेरदूध, तेलमिलायपीछे बेल-फल, धवकेफूल, कोष्ट, शुंठि, रास्ना, पुनर्नवा, देवदारु, बच, नागर-मोथा, लोध, मोचरस इन्होंका कल्कयुत करि कोमल अग्नि से पकावे जब तेल शेष रहै तब सिद्धजाने यह संग्रहणीको व बवासीर को व अतीसारको नाशै यह आत्रेयका मतहै। और जोग्रहणीमें व बवासीरमें स्नेह कहे हैं वे सब अतीसारमें भी बरतै ॥ शंखोदररस ॥ पारा भस्म, गन्धक, लोह, बिष, बचनाग, शुंठि, मिरच, पिपली ये सम भाग निम्बरसमें खरलकरै पीछे चोपुट शंखमेंभरै फेर गारासेबेष्ट-न करि गजपुटमें फूंकदे पीछे शीतल होनेपर बिष, बचनाग ६ रत्ती मिलावै फेर रस, जायफल, भांग, शहदके संगदेवे अतीसार में और चीता, अदरखरस, भांग, शुंठि इन्होंके चूर्णकेसंग संग्रहणी में देवे। और शहदके संग अथवा मरिच घृतके संगदेय अग्निमंदता को व क्षयको व उदररोगको हरै हैं। पथ्य दही, शाक, दूध, तक्र

येदेवै ॥ मूलिकाबन्ध ॥ रक्तसूत्रसे गिलोयबेलको अथवासर्पाक्षीबेल को अथवा सहदेयी जड़को कटिऊपरबांधे तो अतीसारनाशहोवै॥ दाड़िमीबटी ॥ शुंठि, जायफल, अफीम दोगुणी, कच्चे अनारकेबीज सबकी तुल्य मिलावे इनको कच्चे अनार फलमें घालि पुटपाक में अग्निसे पकाय अनार फल सहित द्रव्यको पीस कल्ककरिगोली बनावै बेरकी गुठली समान यह गोली ८ तक्रके संगदेइ पक्वातीसारको हरै ॥ बब्बूलादिरस ॥ मोटे बब्बूलके पत्रके रससे अथवा स्योनाकछाल के रससे अथवा कूड़ाछालके रससे पानकियेसेसर्वातीसार नाशहोय हैं ॥ न्यग्रोधादिपुटपाक ॥ बट, गूलर, पीपल, पायरी जलबेतस इन्होंका कल्क, सपेद तीतर पक्षी के उदरकी आंतकाढ़ि उसमें कल्कको भरि पुटपाक विधिसे पकावे शीतल होनेपर रस निचोड़ शहद मिलाय चाटै यह सर्व अतीसारोंकोहरैहै ॥ अहिफेन योग ॥ अफीमको खोपरीमें कोमल पकाइ पक्वातीसारमें देवे इससे ज्यादा कोई औषध नहीं है ॥ मुक्ताभस्मयोग ॥ मोतियोंकी भस्म १ रत्ती व आधीरत्ती को कपूरकी धूपदे जायफल के संग दोषबलाबल देखिके देवै यह अतीसारको हरैहै ॥ जातिफलादिबटी ॥ जायफल, खजूर, अफीम समभाग लेवै फेर पानकी बेल के रसमें ३ रत्ती की गोली बांधे फेर ये गोली तक्र के संगखावे अतीसारको हरै॥ दृष्टांत ॥जैसे अग्नि लाकल्यको ॥ मरीचादिबटी ॥ मरीच, खपरिया अफीम इन्हों को चावल के धोवन जलसे खरल करि गोली बांधेये गोली सर्व अतीसारको हरै अथवा जीरा, भांग, बेलफल अफीम ये पदार्थ समभागले दही के जलकी संग गोलीबांधे येगोली सर्व अतीसारको हरै हैं ॥ अंकोलकल्क ॥ अंकोल वृक्षकाकल्क शहद युत चावल धोवन जलके संगलेय अतीसार को व विषको हरैहै॥ कपित्थकल्क ॥ कैथकी गिरी, शुंठि, मिरच्च, पिप्पली, शहत, खांड़ इन्होंका कल्क अथवा कायफलका चूर्ण शहद युत उदरके रोगोंको हरैहै ॥ आर्द्रकुटजावलेह ॥ आली कुड़ाकीछाल १ तोला प्रमाण थोड़ीकूटी एकद्रोण प्रमाण जलमें पकाय चतुर्थांश राखे, पीछे लज्जावंती ४ तोले, धौकेफूल ४ तोले, बेलफल ४ तोले, पाढ़ा ४ तोले

मोचरस ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, अतीस ४ तोले इन्हों को काढ़ामें गेरै पीछे अग्निपै पकावै जब तक दर्वीकल्पिप तब तकफेर इसको जलके संग वा बकरी दूधके संग अथवा मांड़ के संग पीवै यह सब अतीसारोंको व प्रदरको व बवासीरको व प्रबाहिका को हरैहै॥ दाडिमपुटपाक॥ अनारके पुटपाक में पकाय रस निचोड़ि शहद संयुक्त पीवै सर्व अतीसार नाशहोवैं॥ जातिफलादिपुटपाक॥ जायफल, अफीम, सुहागाखार, गन्धक, जीरा ये समभागले इन्हें को कच्चे अनार के बीजोंसे पीस कल्क करै फेर इस कल्कको अनार फलमें भरै फेर गेहूंके चूनसे अनारको वेष्टन करि अग्निपै पकावै फेर इसका रसदेवै यह दीपन पाचनहै और अतीसारकोबंधकरैहै॥ मोचरसादिपुटपाक॥ मोचरस, अफीम, जायफल, बेलफल, गिरी इन्होंका चूर्ण बिजौराफल में भरि पुटपाक बिधिसे पकावै यह रस अतीसारको हरैहै॥ प्रबाहिकासंप्राप्ति॥ शरीर में बायु कुपित हो और अपथ्यपदार्थ खानेवाला मनुष्य के संचित कफसेमिल अल्प पतला मल ज्यादा गुदासे गिरै तिसे प्रबाहिका कहै हैं और बात जन्य प्रबाहिकामेंशूलहोयहै और पित्तजन्य प्रबाहिकामें दाहहोयहै और कफजन्य प्रबाहिकामें कफयुतहोयहै। रक्तजन्यमें रक्त सहित मलआवै ये प्रबाहिकारुक्षवस्नेह ऐसा पदार्थसेवनसे होयहै इनका चिह्न व चिकित्सा व आमपाक अतीसारके समान जानना योग्यहै॥ अतीसारनिवृत्तिलक्षण॥ जिसके मलआये बिना मूत्रउतरै और गुदा की पवन अच्छेप्रकारसे चलै और कोठा हलकाहो और अग्निदीप्त हो तिसके अतीसार दूरगया जानिये॥ बालबिल्वयोग॥ बेलफल कल्क, तिलकल्क इनको दही, स्नेह, अम्लयुत भक्षणकरै यहप्रबा-हिकाको हरैहै॥ मुद्गयूषादि॥ मूंगकायूष, रस, तक्र, धनियां, जीरा, सेंधा इन्हों को मिलादेवै यह अग्नि को दीप्तकरै है और ग्रहणी, अरुचि ज्वर, प्रबाहिका इन्हों में श्रेष्ठहै॥ बिल्वादि॥ बेलफल, मिरचइन्होंका काढ़ा गुड़ तेलयुत पानकरनेसे ३ दिनतक पुरानी प्रबाहिका नाश होयहै अथवा बेलके पत्तों के तंतू, गुड़, लोध, तेल, मिरच ये सम भाग चूर्णकरि चाटनेसे प्रबाहिका जावे है॥ मुस्तावत्सकादियोग॥

नागरमोथा, इन्द्रयव, मोचरस, बेलफल, धवकेफूल, लोध इन्होंका चूर्ण रईसेमथा दहीकेसंग लेय नदीबेग समान अतिसारको हरैहै॥ तैलादियोग॥ तेल, घृत, दही, शहद, अतीस, शुंठि, राब इन्हों को मिलाय पीनेसे जल्दी प्रबाहिका नाशहोयहै॥ त्र्यूषणादियोग॥ शुंठि मिरच, पिपली, त्रिफला, चीता, गजपीपली, बेलफल, काकड़ासिंगी जटामांसी, बायबिडंग, कटेली इन्होंका काढ़ा एकभाग, गोमूत्र ४ भाग याने ३॥ सेर इन्होंमें घृत ६४ तोले सिद्धकरि ८ माशे खावे प्रबाहिका नाशहोवे॥ मुस्तादिबटी॥ नागरमोथा, मोचरस, लोध धवकेफूल, बेलफल, इन्द्रयव, अफीम, पारा, गंधक इन्होंका चूर्ण ३ रत्ती गुड़तक्र के संगखावे यह अतीसार को व प्रबाहिका को व संग्रहणीको हरै है॥ पथ्य॥ बमन, लंघन, सोवना, पुराने साठीधान यवागू, खीलकामांड़, मसूर तथा अरहरकी दालकाजल, शशा, एण हरिण, कपिंजल इन्होंके मांसकारस सबप्रकारकी छांटी मछलीसींग मछली, मधुरालिका, तेल, बकरीकादूध, बकरीका घृत, गौकादही औरमठा, गौ तथा बकरीकादही अथवा दूधकामक्खन, नवीनकेलेके फूलतथाफल, शहद, जामुनफल, गजपीपरी, अदरख, नींब, कमलजड़ बिकंकत, कैथ, मोलसिरी, बेलफल, तेन्दु, दोनोंप्रकार के खट्टे मीठे अनार, तिललक, पाढ़, चूकेकाशाक, भांग, मजीठ, जायफल, अफीम जीरा, कुड़ा, धनियां, बकायन और सब कसायलीरस दीपन तथा हलकी सब खानेकीबस्तु और नाभिके दो अंगुल नीचे तथा रीड़की जड़में अर्द्धचन्द्रके आकार दागना ये सब अतीसारमें पथ्यहैं पाणी दशांश व षोड़शांश, किंबा शतांश ऐसाजलउबालनेमेंशेषरहाशीतल होनेपर पाचनहै व ग्राहकहै व दीपनहै व दोष नाशकहै और जैसा जैसाजलश्टत अतिसारी को व ज्वरी को दिया जाता है तैसा तैसा गुणदायक होय है॥ अपथ्य॥ स्वेदन, अंजन, रुधिरनिकालना, जल पीना, स्नानकरना, स्त्रीभोग, जागना, धूमकापीना, नासलेना, तेल लगाना सब प्रकारके बेगोंका रोकना, रूखीबस्तु, अहित भोजन यव, बथुईकाशाक, काकमाची, मोठ, मीठारस, सहिंजना, आम सुपारी, कोहला, तूंबी, बेर, भारीअन्न, पान, तांबूल, ईष, गुड़, मद्य

पोइकाशाक, दाख, अमलबेत फल, लहसुन, आंवला, बुरा जल दहीकातोड़, घरकापानी, नारियल, स्नेहन, कस्तूरी, सब पत्रशाक खार, सब रेचक बस्तु, सांठी, ककड़ी, नोन, खटाई ये सब पदार्थ अतीसारमें अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासक रविदत्तवैद्य रचित निघण्ट रत्नाकरभाषायामतिसारप्रकरणम् ॥

संग्रहणीकर्म्मविपाक ॥ जो आप बिवाहकरि दोष रहित व कटु वचन बर्जितभार्याको कारण बिना त्यागै उसके संग्रहणीरोग पैदा होवै ॥ संग्रहणीशांत ॥ संग्रहणीकी शांतिवास्तेशिवसंकल्पसूक्तकेजप एकहजारआठकरावे और सोना व मधु इनका दानबित्तकेमाफिक करावै और सूर्य्यके मंत्रका जप करवावै औरगौ अच्छीवस्त्र व गहनादिसे शृङ्गारि ज्यादा दूधदेनेवाली और शीलस्वभाववालीकुटुंब वाले ब्राह्मण को दान करिदेवै ॥ दम्भ ॥ नाभि के दो अंगुल नीचे तथा बांसके हाड़की जड़ में अर्द्धचन्द्राकारदाग प्रज्वालित लोहासे देवै ॥ दूसरा प्रकार ॥ नाभिके दो अंगुल नीचे व दोनों बस्तियों के मध्यमें तांबाकी व लोहाकी व सुबर्णकी शलाकाको गरम करि दाग दिवावै और पूपस्त्रावहोइ ऐसे पथ्य करावै और शीतल जल पान करावै यह कर्म सब प्रकार की संग्रहणी को हरै है ॥ गुदरोग कर्म-बिपाक ॥ देवताके मंदिरको व जलके स्थानको नाशकरै उसकेगुद रोग हो ॥ पापरूपदारुणप्रायश्चित्त ॥ एक मास तक देवपूजा करै पीछे २ गोदानकरै और एकप्राजापत्य दानदेवै इन कर्मोंसे गुदाके रोग नाश होते हैं ॥ संग्रहणीनिदान ॥ प्रथम मनुष्य के अतीसार होके जातारहा हो फिर उस मनुष्य के कुपथ्य करने से मन्द हुई जो अग्नि सो पुरुष के उदर में रहनेवाली जो छठीकला जिसका नाम संग्रहणी कहते हैं इससंग्रहणी कला में अग्निहि का बल है सो वो कला अग्निहि को बिगाड़े है ॥ संग्रहणीलक्षण ॥ प्रथम बात

पित्त कफ सन्निपात इनभेदोंसे संग्रहणी ४ प्रकारकीहै यह जोवात पित्त कफ है सो अधिक कुपथ्य से और अधिक भोजन करने से कच्चेही अन्नको गुदा के द्वारानिकाले है अथवा पक्केअन्नको भी निकाले तो भी कभीपीड़ा और कभीमलपतला कभीबांधाहुआ उतरे और मल दुर्गंधि युत द्रवे बार बार ये लक्षण संग्रहणी के आयुर्वेद केजाननेवाले वैद्यकहते हैं॥ संग्रहणीकापूर्वरूप॥ तृषाबढ़े व आलस्य आवे और बलका नाशहोवे और बिशेषकरि दाहहो और अन्नदेर से पकै और शरीरभारीरहे ये लक्षण संग्रहणी पूर्वरूपके हैं॥ बात की संग्रहणी के उत्पत्तिसमेत लक्षण॥ जो पुरुष वादीवस्तुको अधिक सेवनकरे और मिथ्याहार और मैथुनादिक अधिककरे तिसपुरुषके बात कुपितहोकर जठराग्नि को बिगाड़बातकी संग्रहणीको करै है सो जिस पुरुषके अर्द्धपक्क अन्नपचे और कण्ठसूखे, क्षुधा तृषालगे कानोंमें शब्दहो और पशली जंघा पेडू और कांधोंमें पीड़ाहो और कभी कभी बिशूचिका हो आवे हृदय दूखे शरीरदुर्बल होजाय जिह्वा का स्वादजाता रहे मीठे आदिक रसों के खानेकी इच्छारहे और भोजनकरे तो जिह्वा आनन्द न पावे और उदरमें गोला फिया की आकारहोय पैर दूखनेलगें और थोड़ासा शीघ्रता समेत पवन सरै बारम्बार दिशाजाय और श्वासकासभी हो ये लक्षण बातकी संग्रहणीके हैं॥ शुंठीघृत॥ शुंठिके कल्कमें सिद्ध घृत खावे तो ग्रहणी पांडुरोग, प्लीहा, कास, ज्वर इन्होंका नाशहोवे॥ पंचमूलघृत॥ पंचमूल छोटीहड़, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल, सेंधानिमक, रास्ना सज्जीखार, यवाखार, जीरा, वायबिड़ंग, कचूर इन्हों के कल्क में घृत सिद्धकरि पीछे बिजौरारस में सिद्धकरि फेर अदरख रस में फेर सुखे पंचमूलकाढ़ामें फेर बेरीछालके काढ़ामें फेर चूका रस में फेर अनार के रसमें फेर दही मस्तु में फेर तक्रमें फेर मदिरामें फेर सौवीर में फेर तुषोदकमें फेर कांजीमें ऐसे सबोंमें सिद्धघृतको करि पीवै यह अग्निको बढ़ावै है और शूल, गुल्म, उदररोग, मलबद्धता कृशता, बातरोग इन्होंको हरैहै॥ संग्रहणीचिकित्सा॥ संग्रहणी में अजीर्ण के समान उपचार करावे। और लंघन व दीपन औषधदेवे

व अतीसार की औषध भी देवै और आमपक्कदेखि इलाजकरै और पेया व हलका अन्न पंचकोलादि युत देवै और दीपनपदार्थ व तक्र ये संग्रहणीमें हितहैं ॥ तक्रसेवन ॥ जो हजारहा औषध देनेसे संग्रहणीमें आराम न होतो तक्रसेवनसे अवश्यआरामहोवै ॥ बातसंग्रहणीचिकित्सा ॥ पकाहुआ बातसंग्रहणी में दीपन औषधसे व घृतसे उपचारकरै॥ शालिपर्ण्यादि ॥ शालिपर्णी,बला, बेलफल,धनियां,शुंठि इन्होंका काढ़ा आध्मान शूलसहित बातकी संग्रहणीकोहरैहै ॥ तक्र सेवन ॥ संग्रहणी रोगवालोंको गौकातक्र हलकाहै और ग्राहीहै दीपनहै और त्रिदोषको शमनकरैहै और तक्रको मीठेको शुंठीयुतपीवै और शनैःशनैःअन्नकोकमखावै और तक्रको ज्यादापानकरताजाय बल्किन तक्राहारी होजाय अन्नको त्यागदेवै और क्षुधा में व तृषा में तक्र शुंठियुतपीवै और मौनी रहै ज्यादा भाषण करै नहीं और मैथुन व क्रोधको बर्जिदेवै ऐसेप्रकार जो तक्रकोसेवै उसके संग्रहणी रोग नाशहोवै जल्दी ॥ दृष्टान्त ॥ जैसे मिथ्यावादी के लक्ष्मी नाश तैसे ॥ दूसराप्रकार ॥ बातसंग्रहणी में खट्टा तक्र सेंधायुत पीवै और पित्तसंग्रहणी में तक्र मीठा खांड़युतपीवै और कफसंग्रहणी में तक्र खार व शुंठि, मिरच, पीपलीचूर्णयुत पीवै और हिंग,जीरा,सेंधायुत तक्रपीवै यह अर्शको व संग्रहणीको व अतीसारको व वायुकोनाशैहै॥ मधुपक्कहरीतकी ॥ बड़ीहरीतकी १०० दोलायंत्र में गौका गोबर से स्विन्नकरि पसीनाकाढ़ि दे पीछे बारीक शलाकासे सबोंको छिद्रित करै पीछे ४०० तोले शहद वस्त्रसे छनाय मिलावै फेर चिकणेपात्र में घालै पीछे शहदसे काढ़ि और शहदमेंगेरै डूबीरहै ऐसीतरह १५ दिन रखिये ताहि पीछे और शहदमें गेरै महीना १ ताईं पीछे हड़ों सहित शहदके बासनमें शुंठि १ तोला, मरीच १ तोला,लवंग १ तोला वंशलोचन १ तोला, पिपली १ तोला इन्होंका चूर्ण बासनमें गेरै ऐसे मधुपक्क हरीतकी सिद्धहोयहै एकरोज प्रभातमेंखावै इससे बल वर्ण अग्नि बढ़ते हैं और सबरोगनको हरैहै विशेषकरिके दुष्टबात को व संग्रहणीको व आमको व दुष्टलोहूको व जीर्णज्वरको व प्रतिश्यायको व व्रणको व विस्फोटकको व बातशूलको व संग्रहणी

को व सशूलसंग्रहणी को हरैहै॥ यूष॥ मूंगकायूष,रस,तक्र, धनियां जीरा, सेंधा इन्होंको मिलाय संग्रहणी में पीवै॥ कपित्थादियवागू॥ कैथ, बेलफल, चूक, अनार इन्होंका यवागू आमको पकावैहै और संग्रहणी को हरैहै॥ पित्तसंग्रहणीनिदान॥ जो पुरुष मिरचआदि गरमवस्तु अधिकखाय उसकापित्त बिगड़कर जठराग्नि को वुझादे है और नीला पीला पतला जलसहित कच्चामल उतरै और खट्टी डकारआवै और कंठमें दाह और अन्नमें अरुचि और तृषालगै ये लक्षण पित्तकी संग्रहणीके हैं॥ चन्दनादिघृत॥ चंदन, पद्माख, बाला पाढ़ा,मूर्वा,शुंठि,मिरच,पिपली,बच,सारिवा,गोकर्णी,सांतण, फालसा परवल, गूलर, पीपल, बड़, पाथरी, कैथ, कटुकी, हरीतकी, नागरमोथा, नींब ये प्रत्येक आठआठतोले लेवै जल १०२४ तोलेमें काढ़ा चतुर्थांश रक्खै फेर इसमें घृत ६४ तोले गेर पकावै फेर चिरायता १तोला, इन्द्रयव १ तोला, काकोली १ तोला, पिपली १ तोला, कमल १तोला इन्होंका चूर्ण मिलावै घृतको सिद्धकरै इसके खाने से पित्तकी संग्रहणी नाशहोवै॥ तिक्तादिकाढ़ा॥ कटुकी,शुंठि,रसौत,धव के फूल, हरीतकी, इन्द्रयव,नागरमोथा,कुड़ाकी छाल, सपेदअतीस इन्होंकाकाढ़ा अनेकप्रकार की संग्रहणीको व गुदशूलको व पित्तकी संग्रहणीको हरैहै॥ श्रीफलादिकल्क॥ कोवल्ली,बेलफल इन्होंकाकल्क शुंठि चूर्ण गुड़सहित खाय यह संग्रहणीको नाशै पथ्य तक्रपीवै॥ नागरादिचूर्ण॥ शुंठि,अतीस,नागरमोथा,धवकेफूल,रसौत,कुड़ाछाल इन्द्रयव, बेलफल, पाढ़ा, चिरायता, कटुकी ये बराबर सब इन्होंका चूर्ण शहदसंयुक्त चावलधोवनके संगलेय यह पित्तकी संग्रहणीको व रक्तसंग्रहणी को व बवासीरको व हृदयरोगको व गुदरोगको व शूलको व प्रवाहिकाको नाशकरैहै॥ यवान्यादिचूर्ण॥ अजवाइन,पिपलामूल,दालचीनी,तमालपत्र,इलायची,नागकेशर,शुंठि,धवकेफूल अमली, पिपली, बाला इन्होंकाचूर्ण एक भाग मिश्री ६ भाग मिलाय १तोला नित्यखावै ऊपर बकरीका दूधपीवै यह पित्तकी संग्रहणीको व पित्त की प्रवाहिकाको हरैहै इसमें संदेह नहीं यह धन्वन्तरिमतहै॥ चन्दनादिचूर्ण॥ चंदन,पद्माख,बाला,पाढ़ा,मूर्वा,टेंटु,सौ-

शृङ्गी, अतीस, तमालपत्र, दालचीनी, इलायची, देवदारु, मिरच इन्हों का चूर्ण शहदसंग अवलेहकरचाटै ऊपरआधाजल और आधादूध बकरीका पकाय जलजलै दूधरहे वह पीवै राति में और क्षीरिणी शाकखावै और दही भात व खीलकामांड़ खावै ॥ रसांजनादिचूर्ण ॥ रसोत, अतीस, इन्द्रयव, कुड़ा, शुंठि, धवकेफूल इन्होंकाचूर्ण शहदयुत चावल धोवन जलकेसंग खावै यह पित्त संग्रहणीको व बवासीरको व रक्तपित्तको व पित्तातीसारकोहरैहै ॥ भूनिंबादिपुटपाक ॥ चिरायता कटुकी, हरीतकी, परवल, निम्ब, पित्तपापड़ा ये समानभागलें महिषी मूत्रमेंपीस गोलाकरि पुटपाकविधिसेपकाय रसनिचोड़ १तो० शहद युतखावै यह अग्निको दीपनकरै और पित्तसंग्रहणीको हरै ॥ आम्रादियोग ॥ आमकीगुठली, शुंठि, गोकाशृङ्ग, कुड़ा इन्होंको आमकेरसमें तीनदिन तक खरलकरै फेर मिश्री मिलायपीवै यह पित्तकी संग्रहणी को व ज्वरातीसारको व रक्तस्रावको व शूलको नाशैहै॥ आम्रादिपेया ॥ लालआंब व आम्रतक जामन इन्होंकी जड़का काढ़ा करि पीवै तो संग्रहणी नाश होवै पथ्य सांठीचावलकी यवागूहै ॥ कफसंग्रहणीनिदान ॥ भारी अति चिकनी और शीतल वस्तु को जो मनुष्य भोजन करिकै सोयजावै उस मनुष्यके कफ कोप होनेसे अन्नआधा पचै हृदयदूखै वमन और अरोचकताहो मुख मीठारहै खांसी और पीनसहो पेट भारीरहै मीठीडकारआवै और स्त्रीप्यारी न लगै आंव सहित मल उतरै बल बिना शरीर पुष्टदीखै आलस्य अधिकआवै ये लक्षण कफकी संग्रहणीकेहैं ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ कचूर, शुंठि, मिरच, पिपली हरीतकी, यवाखार, सज्जीखार, पिपलामूल, विजौरा इन्हों का चूर्ण लवण, नींबूरसके संगखावै कफकीसंग्रहणी नाशहोवै ॥ रास्नादिचूर्ण ॥ रास्ना, हरीतकी, कचूर, शुंठि, मिरच, पिपली, यवाखार, सज्जीखार सेंधा, सांभर, विड़लोन, पिपलामूल, विजौरा इन्होंकाचूर्ण गरमजलके संगले यह कफ संग्रहणीको हरैहै ॥ पथ्यादितक्रयोग ॥ हरीतकी, पिपली, शुंठि, चीता इन्होंका चूर्ण तक्रकेसंग अथवा शुंठि, पिपलीचूर्ण तक्रके संगलेय यह शूलसहित संग्रहणी को व कफ संग्रहणी को हरैहै ॥ चतुर्भद्रादिकाढ़ा ॥ गिलोय, अतीस, शुंठि, नागरमोथा इन्हों

का काढ़ा ग्राही है,दीपन है,पाचन है और आम संग्रहणीको हरैहै ॥ कठिनमल चिकित्सा ॥ जिसके मल कठिन हो कष्टकरिकै मलउतरै उसे घृतमें लवण मिलाप्यावे क्लेश शांति के वास्ते ॥ बिडंगादियोग ॥ बायबिड़ंग, अजमान इन्होंको पीस गरम जलके संग पीवै विष्टंभ नाश होवे बात कफ संग्रहणी में कुटजावलेह हित है और पर्पटी रस ८ रत्ती शहद घृत युतहित है ऊपर हिंग, जीरा, शुंठि, मिरच पिपली इन्होंका चूर्ण २ माशेखावे अथवा तक्रसेवनसे कफसंग्रहणी कोनाशकरै ॥ कचूरादिचूर्ण ॥ कचूर, पांचोलवण, रास्ना, शुंठि, मिरच पिपली, हरीतकी, यवाखार,सज्जीखार, बिजौरा इन्होंका चूर्ण गरम जलके संगखाय यह बल,वर्ण, अग्निको बढ़ावै और कफ बातसंग्रहणी को हरै है ॥ तालीसादिबटी ॥ तालीसपत्र ४ तोले चवक ४ तोले मिरच ४ तोले पिपली ८ तोले पिपलामूल शुंठि १२ तोले चातुर्जात १ तोले बाला १ तोले इन्होंकाचूर्णकरितिगुनागुड़घालि २ तोले की गोलीबनावै नित्यखावै यहगोली कष्टतर संग्रहणी को व छर्दिको व कासको व श्वासको व ज्वरको व अरुचिको व सूजनको व गुल्मको व उदररोगको व पांडुकोनाशै है ॥ कफपित्तसंग्रहणीपर ॥ पाराएकभाग गंधकतीनभाग इन्होंकीकजलीकरि इनकी बराबरक्षुद्र शंख, मिरच, शहदयुत करि ४ माशेदेवै यह कफ पित्तकी संग्रहणी को नाशै है ॥ मुसल्यादियोग ॥ मुसलीको तक्र में खरल करै अथवा चावलके धोवन में खरलकरि १ तोले खावै पथ्यतक्र चावलखावै यह संग्रहणी को नाशै है ॥ बात पित्त संग्रहणी पर शुंठ्यादि गुटिका ॥ शुंठी,शतावरी,नागरमोथा, कौंचकेबीज, दूधी,गिलोय,मुलहठी,सेंधा इन्होंका बारीक चूर्णकरि और इसचूर्णके समान भांगकोमलभुनी हुईमिलावै पीछे घृतकरि चिकनेपात्र में गौका दूध दशगुणापकावे फेर द्रव्य को दूध में मेलै जबतक ज्यादाकरड़ा हो तबतक फेर नित्य एक तोला शहद और तीन तोले मिश्री के संग लेवै यह पित्त बात संग्रहणी को व कफ पित्त संग्रहणी को नाशै है॥ सन्निपात संग्रहणी निदान लक्षण कहते हैं ॥ जिसमें बात पित्त कफ तीनों के लक्षण मिलैं उसको सन्निपात की संग्रहणी जानिये ॥

औरआमबातकीसंग्रहणीकालक्षण ॥ पतला सपेद चिकना मलजाय कटिमेंपीड़ाहो और आंवलिये पतलामल उतरै और वायुघनीसरै पीड़ा घनीहोय कभी अच्छा दीखे पीछे पंद्रहवेंदिन महीना में फेर होआवै अथवा रोजीना यह रोगरहै आंतबोलाकरै आलस्यआवै शरीर दुर्बल होजाय पेटमेंपीड़ाहो दिनमेंरहै रातिमें अच्छाहोजाय ये लक्षण आमबातकी संग्रहणीके हैं यह बहुत दिनोंकीअसाध्यहो है ॥ घटीयंत्रसंग्रहणीलक्षण॥ शरीर सुन्नरहै पांशुमें शूलचलै पेट बोला करै और संग्रहणी के लक्षणहों और जलघटीके समान शब्दहो ये लक्षण घटीयंत्र संग्रहणीके हैं यह भी असाध्यहै। जो अतीसारके असाध्य लक्षणहैं वही संग्रहणीके जानो और वृद्धमनुष्यके संग्रहणीरोग प्रकटहुआ अत्यन्त असाध्यहै और अतीसारके जो उपद्रव हैं सो सब संग्रहणीमेंभी होयहैं ॥ ज्वालालिंगरस ॥ शुद्धपारा, सुवर्ण भस्म, मिरच, तूतिया ये समभाग इन्होंको ज्वालामुखीके रसमें व चीताके रसमें मन्दमन्द पकावै पीछे १ दिन खरलमें मर्दनकरै यह रस ज्वालालिंग सन्निपातकी संग्रहणीको हरै इसमें अनोपान चीता की जड़को १ कर्षभर तक्रमें पीसपीवै पथ्य तक्रचावलखावै ॥ ग्रहणीकपाटरस ॥ चांदीभस्म, मोतीभस्म, सुवर्णभस्म, लोहाभस्म ये प्रत्येक तोला २ भर गंधक २ तोला पारा ३ तोला इन्होंको मिलाय कैथकेरसमें खरलकरै पीछे द्रव्यको हरिणके सींगमेंभरि पुटदे पुटपाकविधिसे मन्द २ पकावै शीतलहोनेपर द्रव्यको खरैटीके रसमें सातभावना देवै फेर ऊंगाके रसमें तीनभावना देवै ऐसेरस सिद्धहो १ माशा शहद व मरीचचूर्ण के संग खावै यह सम्पूर्ण अतीसारों को व सन्निपातसंग्रहणी को हरै और अग्नि को बढ़ावै ॥ दूसरा प्रकार ॥ पारा १० भाग, गंधक १० भाग, अतीस १० भाग, मोचरस ३ भाग, बच ३ भाग, भांग ३ भाग इन्होंको नींबूकेरसमें खरल करै जब घनहो तब सिद्धजाने यह दूसरा ग्रहणीकपाट रसहै ॥ तीसराप्रकार ॥ कौडियोंको शुद्धकरै फेर कौड़ियों की गिनती समान भिलावा लेवै फेर बब्बुलके कांटासे स्रोतोंकोछेदि तेलचतुर्थांशकाढ़ै फेर कौड़ियोंके बराबर तोल गंधकमिला सबकोखरलकरै फेरभांग

के रसकी ७ पुट देवै यह ९ रत्ती औषधोंके अनोपान संग देवै यह महादेवका कहा ग्रहणी कपाट रसहै ॥ वज्रकपाटरस ॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म, गंधक, यवाखार, सुहागाखार, अरणी, बच ये समान भागले पीछे इन्हों को भांगके रसमें व नींबूके रसमें व भृङ्गराज के रसमें तीन दिन तक खरलकरे पीछे गोलाकरि सुखाय लोहापात्र में वा सकोरामें घालि संपुट दूसरेपात्रसे करि मुद्रितकरै पीछे मन्द २ अग्निसे ४ घड़ीतक पकावै पीछे द्रव्यको काढ़ि पाराके बराबर अतीस व मोचरस मिलावै पीछे सबको कैथाकेरसमें सातभावना देवै पीछेभांग के रसकी सातभावना देवै पीछे धवकेफूल व इन्द्रयव व नागरमोथा व लोध व बेलफल व गिलोय इन्होंके पृथक् पृथक् रसोंमें एक एक भावना देवै पीछे घनरूप करि तैयार करै यहरस १ माशा शहदके संग खावै पीछेअनोपान चीता, शुंठि, बायबिड़ंग बेलफल, लवण सबबराबरले चूर्णकरि गरम जलकेसंग खावै यह सन्निपात की संग्रहणी को हरै ॥ ग्रहणीकामदवारणसिंह ॥ शुद्ध पारा, सिंगरफ, चीता, अभ्रक, सुहागाखार, जायफल, धतूराबीज अतीस, शुंठि, मिरच, पिपली, हरीतकी, गोसाराख, अजमान बचनागबिष, बेलफल, इन्द्रयव, कैथ, बाला, मोचरस, अनार धवके फूल, नागरमोथा, शाल्मली फूल, अफीम सबको धतूरा के पत्तों के रस में खरल करि मरिच समान गोली बांधै एक गोली शहद युत खावै यह उग्र संग्रहणी को व ज्वर युत संग्रहणी को व बिशूचिका को व अग्निमन्दता को व शूलको व बिबन्ध को व गुल्म को व पांडु को व रक्तस्राव को व आम को हरै है ॥ पारदादि बटी ॥ पारा, गन्धक, चांदी भस्म, विष बचनाग, तांबाभस्म त्रिफला, त्रिसुगन्धी, चीता, बाला, पित्तपापड़ा, हल्दी, दारुहल्दी ये सब मिलाय बराबर खरल करै ये वटी संग्रहणी को व बिष्टम्भ को व आठ प्रकार की संग्रहणी को व शोथातीसार को हरै है ॥ सज्जीक्षारादि योग ॥ सज्जीखार, यवाखार, भांग, अतीस, अजमान, पारा, गंधक ये सब समान लेवै इन्हों को नींबू के रस में खरल कर आधा माशा शहद में मिलाय खावै घृत खांड़ मिलाय

खावै ऊपर यह संग्रहणी को व ज्वरातीसार को व शोथसंग्रहणी को व शूल संग्रहणी को हरै ॥ बराटादि योग ॥ पीली कौड़ियों को जलाय लेवे और गंधक, पारा बराबर मिलावे इन्हों को नींबू के रसमें खरलकरै यह १ माशा रसखावै ऊपर मरिचचूर्ण घृत मिलाय चाटै यह संग्रहणीको नाशै पथ्य तक्रचावल खावै ॥ सुवर्णरसपर्पटी ॥ पारा ४ तोले सुवर्ण १ तोला एकत्रकरि नींबूरस में खरलकरै जब तक एकत्वको प्राप्तहो तबतक पीछे गरमजल से क्षालनकरि पीछे ४ तोले गंधकमिलावे फिर सुन्दर लोहे के पात्र में द्रव्य को घालि मंदमंद अग्निसे पकावै बड़बेरीकी जड़रूपी लकड़ियोंसे और लोहा के पलटासे चलाताजावै जब पकजावै तब केलाकापात्र गोबरऊपर रख उसपर द्रव्यकोरखि दूसरेकेला के पत्तासे ढकि पीड़नकरदेवै जब शीतल होजाय तब १ रत्ती क्रमवृद्धि से सेवनकरै यानी रोज १ रत्ती बढ़ाताजावै १ माशासेती ऊपर मात्राको बढ़ावैनहीं शहद शुंठि, मिरच, पिपली चूर्णके संग मिलाय रसको चाटै यह संग्रहणी को व शोषको व क्षयीको व कासको व दमाको व प्रमेह को व शूल को व अतीसार को व पांडुरोग को हरैहै और बल, वीर्य्य, अग्निको बढ़ावैहै ॥ पर्पटी ॥ पारा, गंधक इन्होंकी कजलीकरि शहदमें मिलाय चाटै संग्रहणी नाशहोवै पथ्य से रहै ॥ ग्रहणीगजकेशरीरस ॥ गंधक पारा, अभ्रकभस्म, सिंगरफ, लोह, जायफल, बेलफल, मोचरस वचनागविष, अतीस, शुंठि, मिरच, पिपली, धवकेफूल, अष्ठा, हरीतकी कैथ, नागरमोथा, अजमान, चीता, अनार, कुड़ाछाल की राख १। तोला धतूरा बीज १ तोला अफीम ४ तोला इन सबको धतूरा के पत्तोंके रसमें खरलकरि मरिचके समान गोलीबांधै और एकगोली सेवन करै संग्रहणी को व रक्तशूल को व आमशूल को व पुराने अतीसारको व ज्वरको व विशूचीको व साध्यासाध्य संग्रहणी को हरैहै ॥ अग्निसूनुरस ॥ कौड़ीभस्म १ भाग, शंखभस्म २ भाग, गंधक पारामिलके १ भाग, मिरचचूर्ण ३ भाग इन्होंको नींबूकेरस में खरल करै तैयारहोवै यह अग्निसूनुरस अग्निमन्दता को हरैहै और घृत खांड़ के संगखाय क्षीणनरोंको हितहै और पिपलीचूर्ण घृतमेंमिलाय

रसखाय संग्रहणीकोहरैहै और तक्रके संगखानेसे शोषज्वर, अरोचक, शूल, गुल्म, पांडु, उदररोग, बवासीर, संग्रहणी ये रोग नाश होयँ हैं॥ ग्रहणीकपाटरस॥ पारा १ भाग, गंधक २ भाग, त्रिकुटा ३ भाग, जीरा २ भाग, सुहागाखार २ भाग, धनियां २ भाग, हिंग २ भाग, स्याहजीरा २ भाग, अजमान २ भाग, कालानोन ४ भाग सबों के बराबर पीली कौड़ी भस्म मिलावे सबको मिलाय चूर्णकरै यह ग्रहणीकपाटरस २ माशे तक्रके संगखावैतो संग्रहणीनाशहोवै॥ सूतादिगुटी॥ पारा, गंधक, लोह, बचनागविष, चीता, तमालपत्र बायबिडंग, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, इलायची, पिपलामूल, नागकेसर, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पीपल, तांबाभस्म ये सब बराबरभाग ले इनसबों से दूनागुड़ मिलाय गोली बनावै एकगोली कासको व श्वासको व क्षयीको व गुल्मको व प्रमेहको व विषमज्वरको व लूता को व संग्रहणीको व अग्निमन्दताको व शूलको व कुक्षिरोग को व हाथपैर के रोगोंको हरै॥ कणादिलेह॥ पिपली, शुंठि, पाढ़ा, त्रिफला शुंठि, मिरच, पिपली, बेलफल, चंदन, बाला इन्होंकालेह सर्वअतीसार को व सर्वोपद्रवयुत संग्रहणी को व प्रबाहिकाकोहरै है॥ अभ्रकादि॥ पारा, गंधक, बचनागविष, शुंठि, मिरच, पिपली, सुहागाखार, लोह भस्म, अजमोद, अफीम ये समभागले सबोंकी बराबर अभ्रकभस्म इन्होंको चीता, दालचीनी इन्हों के काढ़ा में १ पहरतक खरलकरै और मरीचसमान गोली बनावै एकगोली रोज़खावै चारविध की संग्रहणीको हरै॥ सूतराज॥ पारा १ भाग, गंधक २ भाग, अभ्रक भस्म ८ भाग इन्हों को चूर्णकरि ६ रत्ती या १२ देवै १ मंडलतक यह संग्रहणीको व क्षय को व गुल्मको व अर्शको व धातुज्वर को हरै है॥ पूर्णचन्द्ररसेन्द्र॥ पारा, गंधक, असगंध, गिलोय, मुलहठी इन्होंके काढ़ामें एकदिनतक खरलकरि क्षुद्रशंखकी भस्म व मोती की भस्म व मंडूरभस्म ये तीनोंभस्म पारा बराबर मिलावै सबको कोहलाके रसमें एकदिन खरलकर गोलाबनाय भूधरयन्त्रमें पकावै शीतलहोनेपर पानकीबेलके रसमें १ पहर खरलकरै यह पूर्णचन्द्र रस शहद घृत के संग खाय पुष्टि, वीर्य, अग्नीको बढ़ावै और

प्रायतासे यहतक्र के संगदिया पित्तरोगको व पित्तकी संग्रहणीको व पित्तकी बवासीरको हरैहै और स्त्रियोंकी सन्ताप नाशकरनेके वास्ते शाल्मली रस के संगदेवै किम्बा शतावरी सिद्ध घृतकेसंगदिवावै॥ चित्राम्बररस ॥ शुद्धपारा, शुद्धगंधक, अभ्रकभस्म इन्हों को बराबर ले महीनपीसै पीछे लोहेके पात्र घृताभ्यक्त में कोमल २ अग्नि से पकावै और लोहेके पलटासे चलाताजावै पीछे जीराके काढ़ा में ३ दिन खरल करै यह चित्राम्बर रस १ माशा खावै यह सर्वोपद्रव सहित संग्रहणीको व आमशूलको व प्रबाहिकाको हरै है॥ अगस्ति सूतराज॥ पारा १ तोला गंधक १ तोला सिंगरफ १ तोला धतूरा बीज २ तोला अफीम २ तोला इन्होंको भृंगराजरस में भावना दे सिद्धकरै यह अगस्तिसूतराज रस १ रत्ती शुंठि, मिरच, पिपली शहद इन्होंके संगखावै यह बात को व शूल को व कफको व बात विकारको व अग्निमन्द को व नींदको हरै और घृत मिरचचूर्ण के संग प्रबाहिका को हरै और जीरा, जायफल के संगखावै तो छः प्रकारके अतीसारनाशहों॥ कनकसुन्दररस॥ सिंगरफ,मरिच,गंधक पिपली, सुहागा, वचनाग, धतूराबीज ये बराबर ले भांगके रस में १ पहरतक खरलकरै पीछे चनासमान गोलीबनाय एक गोलीरूप कनकसुन्दर रस खावै तो संग्रहणी को व अग्निमन्दताको व ज्वर को व तीव्र अतीसार को नाशै पथ्य दही चावल अथवा तक्रचावल है॥ क्षारताम्ररस॥ शंखभस्म, जवाखार, तांबाभस्म, कौड़ीभस्म लोहभस्म, मंडूर, सुहागाखार, शुंठि, मिरच, पिपली, सेंधा ये सब बराबर लेवै इन्हों को भृंगराजके रस में खरलकरै फेर बासारस में फेर अदरखरसमें भावना दे चना बराबर गोलीकरै यह क्षार ताम्र रस कासको व श्वासको व प्रतिश्यायको व जीर्णज्वरको व मंदाग्नि को व संग्रहणी को यथोक्त अनोपान के संग सेवनकरा सातरात्री में नाशै है पुरानेरोगमें १५ दिनदेवै और व्याधिनाशक पथ्य करावै॥ चित्रकादिगुटी॥ चीता, पिपलामूल, सज्जीखार, जवाखार, लवण सेंधा, पादलोन,शुंठि,मिरच,पिपली,हिंग,अजमान, चबक इन्होंको कूट बिजौराके रसमें किंवा अनार के रसमें गोलीबनावै यह गोली

भक्षणकरी आमको पकावै और अग्निकोबढ़ावै॥ शंबूकयोग ॥ शंख-भस्म, सेंधा बराबर भाग शहद में मिलाय तीनमाशे चाटै यह संग्रहणीकोहरै॥ कांकायनगुटी ॥ हरीतकी २० तोला जीरा ४ तोला मिरच ८ तोला पिपली १२ तोला पिपलामूल १६ तोला चवक २० तोला चीता २४ तोला शुंठि २८ तोला जवाखार८ तोला भिलावां ३२ तोला सूरण ६४ तोला सबोंसे दूनागुड़ मिलाय गोली १ तोला की बनावै प्रातःकाल में एकगोली नित्यखावै ऊपर खट्टा तक्रपीवै यह अग्निको बढ़ावै और संग्रहणी व पांडुकोहरै कांकायन ऋषि के शिष्यों के अर्थकही है यह गोली शस्त्र व क्षारादि विना गुदाकेरोगोंको नाशकरनेवालीहै इसमें सन्देह नहींहै॥ महाकल्याण गुड़ ॥ पिपली १ तोला,पिपलामूल १ तोला, चीता १ तोला,गजपिपली १ तोला, धनियां १ तोला, बायविड़ंग १ तोला, अजमान १ तोला,मिरच १ तोला, त्रिफला १ तोला, अजमोद १ तोला, कमलकंद १ तोला, जीरा १ तोला, सेंधा १ तोला, सांभर १ तोला पादनोन १ तोला, विडनोन १ तोला, अमलतास १ तोला, दालचीनी १ तोला,तमालपत्र १ तोला, छोटीइलायची १ तोला, बड़ी इलायची १ तोला, शुंठि १ तोला, इन्द्रयव १ तोला, मुनक्कादाख १६ तोला, निसोत ३२ तोला, गुड़ २०० तोला, तिलकातेल३२ तोला, आंवलारस ६४ तोला सम्पूर्ण एकत्र करि मंद २ अग्निसे पकावै और इसको गूलरफल समान तोल अथवाआंवलाफलसमान तोल अथवा बेरी फल समान तोल खावै अथवा अग्नि बल को देखिकरि खावै यह संपूर्ण संग्रहणी को व बीसप्रकार की प्रमेह को व उरोघात को व प्रतिश्यायको व दुर्बलताको व अग्निमंदताको व सम्पूर्ण ज्वरोंको नाशैहै और कांति,बल,बुद्धिकोबढ़ावैहै और यह सेवन करनेसे रक्तपित्तको व बिड्बंध कोव धातुक्षीणको व अवस्था क्षीणको व स्त्रीक्षीणको व क्षयीको हितहै यह महाकल्याण गुड़है॥ कूष्मांडगुड़॥ पकेहुये कोहलोंको शुद्धकरि त्वचा दूरकरि ४०० तोले गूदालेवै घृत ६४ तोले ताम्रपात्रमेंघालि गूदाको मन्दमन्द अग्नि सेपकावैपीछे पिपली४तोले पिपलामूल४तोले चीता४तोले गजपि-

पली४तोले धनियां ४ तोले बायबिड़ंग४तोले शुंठि४तोले मिरच४ तोले त्रिफला ४ तोले अजमोद ४ तोले कूड़ाकी छाल ४ तोले जीरा ४ तोले सेंधा ४ तोले निसोत ३२ तोले तिलतेल ३२ तोले गुड़ ६० तोले आंवलाका रस १६२ तोले इन सबको मिला मन्द मन्द अग्नि से पकावे जब करछी के चिपने लगे तब अग्नि से उतारलेवे इसको आमला तोल समान व बेरतोल समान व गूलर फलतोल समानखावे अथवा अग्निका बलाबल देखि खावे नित्य-प्रति यह संग्रहणी को व कुष्ठको व बवासीर को व भगन्दर को व ज्वरको व आनाहको व हृदय रोगको व गुल्मको व उदर रोग को व बिषूची को व कामला को व पांडुको व इक्कीस प्रकार के प्रमेहों को व बातरक्त को व कफको व बातको व रुधिरको व विसर्पको व दद्रू को व क्षयी को व हलीमक को व पित्तको व हरै है और व्याधिक्षीणको व अवस्थाक्षीणको व स्त्रीक्षीणको हितहै और बन्ध्या स्त्रीको पुत्रदेय है बलवीर्य्य को बढ़ावे है और बूढ़ापनाको हरै है॥ कल्याणगुड़॥ आमलाकारस४०० तोले गुड़२००तोलेइन्होंका पाक बनायपीछे ये औषध मेले पाढ़ा४तोले धनियां४तोले अजवाइन४ तोले जीरा ४ तोले शेरणी ४ तोले ४ चबक ४ तोले चीता ४ तोले सेंधा ४ तोले गजपिपली ४ तोले अजमोद ४ तोले बायबिड़ंग४ तोले पिपला मूल ४ तोले शुंठि ४ तोले मिरच ४ तोले पिपली ४ तोले हरीतकी ४ तोले बहेड़ा ४ तोले आमला ४तोले तेल १६ तोले निसोत ४ तोले ये सब मिलाय अवलेह समान करै इसको भोजन से पहिले १ तोले खावे यह कल्याण गुड़ संग्रहणी को व बवासीरको व श्वासको व कास को व शोषको व सोजाको व उदर रोगको हरैहै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ शुंठि, नागरमोथा, अतीस, गिलोय इन्होंका काढ़ा मंदाग्नि को व आमबात को व आम संग्रहणी को नाशै है॥ पुनर्नवादि॥ सांठीजड़, मिरच, बांणपुंखा, शुंठि, चीताजड़ हरीतकी, करंजछाल, बेलफल इन्होंका काढ़ा बवासीर को व गुल्म को व संग्रहणी को हरै है॥ नागरादि काढ़ा॥ शुंठि, बाला, धनियां अजवाइन, अतीस, नागरमोथा, सालपर्णी, पृष्ठपर्णी इन्होंकाकाढ़ा

दीपन पाचन है ॥ अतिबिषादि काढ़ा ॥ अतीस, नागरमोथा, धा-
लाधवकेफूल, कूड़ाकीछाल, लोध, पाढ़ा इन्होंकाकाढ़ा संग्रहणीको व
सर्व ज्वरको व अरोचकको व अग्निमांद्य को हरै है और धातु को
बढ़ावे है॥ भूनिंबादिचूर्ण ॥ चिरायता, इन्द्रयव, शुंठि, मिरच, पिपली
नागरमोथा, कटुकी ये प्रत्येक एक एक तोले, चीताजड़ २ तोला
कूड़ाछाल १६ तोला इन्होंका चूर्णकरि गुड़के शरबतके सङ्गखावै
तो संग्रहणी बिकार नाशहोवै ॥ बिल्वादिदुग्ध ॥ बेलफल, नागरमोथा
इन्द्रयव, बाला, मोचरस इन्हों करि सिद्ध बकरीके दूधके पीने से
तीनदिन तक संग्रहणी बिकार नाशहोय और १ महीना सेवनकरने
से असाध्य व दुष्टरक्तबिकार नाशहों॥ त्र्योषादि ॥ शुंठि, मिरच, पिपली
अजमान, अजमोद, बायबिड़ंग, चीता, हींग, असगंध, सेंधा, जीरा
स्याहजीरा, कालालवण, बेरीछाल, धनियां इन्होंकेबराबर भांग चूर्ण
लेवै और यहभांगका चूर्ण व लवंग चूर्ण शहद, घृतकेसङ्गखावै माशे
४यहदीप्ति, पुष्टि, कान्ति, बल इन्होंकोबढ़ावेहैऔर संग्रहणीकोहरै है॥
तालीसादिचूर्ण ॥ तालीसपत्र, बच, हलदी, शुंठि, मिरच, पिपली, पिप
लामूल, चीता, चवक, आंवला, हलदी, बेलफल, अजमोद, कचूर, चातु
र्जात, लवंग, धव के फूल, अतीस, जायफल, अजमान, पाढ़ा, मोचरस
आमसोल, पांचोलवण, जीरा, स्याहजीरा, बायबिड़ंग, अमलबेत
अमली, त्रिफला, पलसपापड़ी, जटामांसी, तरवड़, बाला, इलायची
ब्राह्मी, जवासा, भूमिआंवला, कुलिंजन ये सब बराबरलेवै और इन
सबों के बराबर खरेंटीले और इन सबों के बराबर जमाले फिर सबों
के बराबर मिश्रीले सबको मिला चूर्णकर नित्यखावै यहतालीसादि
चूर्णसंग्रहणीको व क्षयीको व कासको व श्वासको व अरुचिको व प्लीहा
को व बवासीरको व अतीसारको व ज्वरको व बातको व स्थूलताको
व प्रमेहको व अपस्मारको व पांडुको व गुल्मको व उदर रोग को व
कफज ब्याधि को व पित्तजब्याधिको व उन्मादको व आध्मानको व
बिशूचिका को नाशै और बालकोंको हितहै और बाणीको शुद्धकरै
और अग्निमांद्यको व सर्बरोगोंमेंहितहै और पुष्टि, आयुर्बल, क्रांति
स्मृति इन्होंको बढ़ावे यह तालीसादि चूर्ण भूमिमण्डल में अमृत

रूप है ॥ मसूरादियोग ॥ मसूरके काढ़ामें बेलफलकी गिरीको पकाय खावै यह कुक्षिरोग को व संग्रहणी को व पांडुरोग को व कामला को नाशै ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल, शुंठि इन्होंका काढ़ा सूजनको व आमसंग्रहणीको हरैहै ॥ कुटजावलेह ॥ ४०० तोले कूड़ाकीछाल को १६३=४ तोले जलमें पका चतुर्थांश राखै इसको वस्त्रसेछानि २०० तोले गुड़ १ टंक घृत मिला कोमल अग्निसे पकावे पीछे ये औषधमेलैलज्जावंती२तोला,बला२तोला,बेलफल२तोला,शिला-जीत २तोला, सांठी=तोला, नागरमोथा=तोला, भिलावा= तोला धवकेफूल =तोला,गजपिपली =तोला, चुका= तोला,बाला=तोला कटैली = तोला, बड़ीकटैली = तोला, चीताजड़ = तोला, भारंगी = तोला, पिपलामूल = तोला, बायविड़ंग = तोला, छोटी हरीतकी = तोला, नागकेशर = तोला, मुलहठी = तोला,दिंडा = तोला, तमाल पत्र=तोला,शुंठि=तोला,इन्द्रयव = तोला,पाढ़ा=तोला,इलायची = तोला, जीरा = तोला, स्याहजीरा=तोला, जावित्री = तोला, जायफल = तोला, लवंग=तोला, तगरचूर्ण = तोला सबको मिलाय लेह ब-नावै इसको तक्रकेसंग देवै यह संग्रहणीको व अनेकविधि अतीसार को व सबरोगों को यह कुटजावलेह हरैहै ॥ द्राक्षासव ॥ मुनक्कादा-ख४००तोले =१९२तोले पानीमें पका चतुर्थांश राख वस्त्रसे छानि शीतलहोनेपर शहद१००तोला मिश्री १०० तोला धवकेफूल ६० तोलामिलावे पीछे कंकोल ४ लवंग ४ जायफल४मिरच४ दालचीनी ४एलाची४तमालपत्र ४ नागकेशर ४ पिपरी४ चवक४चीता४ पिप-लामूल ४तोला पित्तपापड़ा ४तोला ये सब चारचार तोले ले मिला-य घृतके चिकने बरतनमें घालि चन्दन अगरकी धूपदे और कपूर की प्रतिबासदे तैयार करै यह द्राक्षासव दीपन है और संग्रहणी को व बवासीरको व उदावर्त्तको व गुल्मको व उदररोगको व कृमि को व कुष्ठको व व्रणको व नेत्ररोगको व शिररोगको व गलरोगको व ज्वरको व आमको व महाव्याधि को व पांडुको व कामला को हरैहै ॥ बिल्वादिघृत ॥ बेलफल, चीता, चवक, अदरख, शुंठि इन्होंका काढ़ा व कल्क करि सिद्ध बकरी के घृत को बकरी के दूधसंग लेवे

यह संग्रहणीको व सूजनको व अग्निमांद्यको व अरुचिको हरैहै॥ चित्रकघृत॥ चीताका काढ़ा व कल्कमें सिद्धघृत खानेसे गुल्मको व सूजन को व प्लीहाको व शूलको व बवासीर को हरैहै और दीपनहै॥ चांगेरीघृत॥ पाठा, गोखरू, शुंठि, पिपली इन्हों के बराबर चूर्ण ले सोलह गुणा पानी में काढ़ा चतुर्थांशरक्खै वस्त्रसेछानि इसकीसमान घृतले और घृतके सम तोल चूकाका रसले और चूकारससे तीन गुणा दही ले और गंडाली ८ तोला, पिपलामूल ८ तोला, शुंठि ८ तोला, मिरच, पिपली ८ तोला, चवक ८ तोला, चीता ८ तोला गेरि मिलाय मन्दाग्नि से पकावै जब घृत सिद्धि हो तब उतारे इसको पान करावै किंबा भोजन करावै यह संग्रहणीको व अतीसार को हरै और अग्नि को दीपन करै रुचीको उपजावे॥ दाडिमाष्टक॥ अनार ८ तोला, शुंठि ८ तोला, मिरच ८ तोला, पिपली ८ तोला, त्रिजातक ४ तोला, मिश्री ३२ तोला इनको मिला चूर्ण करि खावै यह दाड़िमाष्टक दीपन है रुचि देयहै और कंठको हितहै और संग्रहणी को हरै है॥ दूसरा प्रकार॥ अनार ३२ तोला त्रिसुगन्धी ४ तोला, जीरा २ तोला, धनियां २ तोला, त्रिकटु १२ तोला, पिपलामूल ४ तोला, दालचीनी १ तोला, वंशलोचन १ तोला, बाला १ तोला, मिश्री ३२ तोला सबको मिला चूर्ण करि खावै यह आमातीसार को व कासको व हृदय पसलीशूल को व अरुचिको व गुल्मको व संग्रहणी को हरै है॥ लाइचूर्ण॥ गन्धक १ भाग पारा आधा भाग इन्होंका कज्जली करै शुंठि, मिरच, पीपल येमिलाके १ तोला पांचो लवण प्रत्येक डेढ़ डेढ़ तोला हींगभूनी दोनों जीरे १ तोला सबों से आधी भांग मिला चूर्ण करि १ टंक तक्र के संग खावै तो संग्रहणी नाश होवै॥ मुस्तादि॥ नागरमोथा अतीस, बेलफल, इंद्रयव इन्होंका चूर्ण शहद युत खानेसे सन्निपात जनित संग्रहणी को हरै है इसमें सन्देह नहीं धन्वन्तरीका मतहै॥ लवंगादिचूर्ण॥ लवंग, कंकोल, बाला, चन्दन, तगर, नील कमल स्याहजीरा, इलायची, पिपली, अगर, भंगरा, नागकेशर, पिपली शुंठि, जटामांसी, कालाबाला, कपूर, जायफल, वंशलोचन सिद्धार्थ

ये सब बराबर भागले महीन चूर्ण करावे यहचूर्ण रोचनहै व तृप्ति करैहै व अग्निको दीपन करैहै व बल बीर्य्यको बढ़ावैहै और त्रिदोष को व बवासीर को व मल बद्धताको व तमकको व गलग्रह को व कासको व हुचकीको व अरुचिको व क्षयीको व संग्रहणीको व अतीसारको व रक्तक्षयको व प्रमेहको व गुल्मको हरै है ॥ पाढादिचूर्ण ॥ पाढ़ा, अतीस, इन्द्रयव, कूड़ाछाल, नागरमोथा, कटुकी, धवकेफूल रसौत, शुंठि, बेलफल इन्होंकाचूर्ण चावल धोवन जलके सङ्गलिया संग्रहणी को व प्रवाहिकाको व गुदरोगको व अर्शकोहरैहै॥ तक्रसेवन॥ संग्रहणी रोगमें अरुचिहो तो बिजौरा की केशर अदरख अर्क सेंधा निमक मिला तक्रको प्रभात या भोजन कालमेंसेवनकरै॥ चित्रकादि तक्र योग ॥चीता, अजमोद, सेंधा, शुंठि, मिरच इन्होंको खट्टे तक्र के संग सातदिन तक खावै यह अग्नि दीपनहै और संग्रहणीको व अतीसारको हरैहै ॥ योगांतर ॥ ७६८ तोले तक्रमें सांभर ३२ तोले हरीतकी ६० तोले घालिपकावै पीछे घृत १६ तोले तिलतेल १६ तोले शुंठि १६ तोले चीता १६ तोले जीरा ४ तोले मिरच ४ तोले पिपली ४ तोले अजमान ४ तोले ये मिला स्नेह सिद्धकरै यह संग्रहणी विकार को नाशैहै॥ शंखबटी ॥ चिरमटी ४ तोले खार ४ तोले सेंधा ४ तोले बिड़लोन ४ तोले संचल ४ तोले इन्होंको नींबूकेरसमें कल्क करि शङ्ख को अग्निमें तपाय भस्मकरि तोले ४ मिलावै पीछे हींग ४ माशे शुंठि ४ माशे मिरच ४ माशे पिपली ४ माशे पारा ४ माशे बचनागविष ४ माशे गन्धक ४ माशे इन्होंको मिलाय गोली बांधे यह शङ्खवटी संग्रहणीको व क्षयीको व पंक्तिशूलको नाशैहै॥ जातिफलादितक्र ॥ जायफल, शुंठि, आंवला, बायबिड़ङ्ग, हींग, जीरा ये सम भागले और गन्धक २ भाग माठामें पिसीराई व लहसुन मिला और हींगको भूनकर गेरै यह चूर्ण ८ माशेखावै यह आमकी संग्रहणी को नाशै है ॥ वार्त्ताकगुटी ॥ १६ तोले थोहरकांटे ३ तोले सेंधा ३ तोला बिड़लोन ३ तोला सांभर बेंगनगूदा १६ तोला आकजड़ ८ तोला चीता ये सब मिलाय बैंगनके रस में मिलावै और पकावै पीछे गोली बांधे एक गोली भोजन करि खाया करै

यह अन्नको पकावै और संग्रहणी को व कास को व श्वास को व अर्शको व बिशूचिकाको व हृद्रोगको हरैहै॥ भल्लातकक्षार॥ भिलावां शुंठि, मिरच, पिपली, हरड़, आंवला, बहेड़ा, सांभर, कालानोन, सेंधा नोन, घरका धूसा ये सब तोले आठले गौके गोबर की अग्नि से जलावै खार सिद्धहो यह खार घृतके सङ्ग पियै अथवा भोजन में मिला खाय तो हृदयरोग को व पांडुको व संग्रहणीको व गुल्म को व उदावर्त्तको व शूलकोहरैहै॥ चवकादिचूर्ण॥ चवक, चीता, बेलफल शुंठि इन्होंका चूर्ण तक्रकेसङ्ग खाय तो दुष्टसंग्रहणीको हरैहै॥ रुचकादिचूर्ण॥ कालानोन, चीता, मरिच इन्हों का चूर्ण तक्र के सङ्ग खाय तो संग्रहणीको व उदररोग को व गुल्मको व बवासीर को व अग्नि मांद्यको व प्लीहाको हरैहै॥ कपित्थाष्टकचूर्ण॥ कैथा ८ भाग खांड़ ६ भाग, अनार ३ भाग, अमली ३ भाग, बेलफल ३ भाग धवकेफूल ३ भाग, अजमोद ३ भाग, पिपली ३ भाग, मरिच १ भाग, जीरा १ भाग, धनियां १ भाग, पिपलामूल १ भाग, बाला १ भाग, सञ्चरलोन १ भाग, अजमोद १ भाग, दालचीनी १ भाग इलायची १ भाग, तमालपत्र १ भाग, नागकेशर १ भाग, चीता १ भाग, शुंठि १ भाग इन्होंकामहीनचूर्णकरै यहकपित्थाष्टकचूर्ण गलके रोगोंको व अतीसारको व क्षयीको व गुल्मको व संग्रहणीको हरैहै॥ लाहीचूर्ण॥ दालचीनी, तमालपत्र, बेला, शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला पारा, गन्धक, अजमोद, बड़ीसौंफ, बायबिड़ंग, हलदी, दारुहलदी बेलफल, चीता, जीरा, मोचरस, सज्जीखार, जवाखार इनसबकी चौगुनीभांग सबकाचूर्णकरै यह संग्रहणीको व सूतिकारोगको व सब रोगोंकोहरैहै और अग्निकोदीपनकरै और तक्रकेसङ्गखाय तो शरीर में कांतिपैदाकरै यहलाहीचूर्ण अनुभवसे लाही नामकदाईको कहा है॥ जातिफलादि॥ जायफल, लवंग, बेला, तमालपत्र, दालचीनी नागकेशर, कपूर, चन्दन, कालेतिल, बंशलोचन, तगर, आंवला, तालीसपत्र, पिपली, हरीतकी, स्याहजीरा, चीता, शुंठि, बायबिड़ङ्ग मिरच येसब समानलेवै इनसबोंके समभाग भांगले सबके बराबर खांड़ले सबको मिलाय १ कर्षभर शहदके सङ्ग खावै यहसंग्रहणी

को व कासको व श्वासको व क्षयी को, अरुचि को व बात कफ विकार को हरैहै ॥ ॥ बेलफलादिचूर्ण ॥ बेलफल, नागरमोथा, बाला मोचरस, इन्द्रयव इन्होंकाचूर्ण बकरीके दूधसङ्गखाय तो संग्रहणी को व आंव रक्तको हरै ॥ दूसराजातिफलादिचूर्ण ॥ जायफल, चीता बाला, बायबिड़ंग, तिल, कपूर, जीरा, बंशलोचन, त्रिसुगन्ध, बहेड़ा शिवाय त्रिफला, त्रिकटु, गजपिपली, तगर, तालीसपत्र, लवंग इन्होंका चूर्ण सम भागले इससे दूनी मिश्रीले मिलाय खावै यह संग्रहणीको हरैहै ॥ पथ्य ॥ नींद, बमन, लंघन, पुराने साठीचावल खीलोंका मांड़, मसूर, अरहर, मूँग इन्होंका यूष, निःशेषकरि घृत निकला हुआ गौके दूधका दही व मट्ठा अथवा दूधमें से निकाला हुआ बकरीकामक्खन और बकरीका दूध, दही, तिलकातेल, मदिरा शहद, कमलकी जड़, मौलसरी, दोनोंप्रकारके अनार नवीन और सुन्दरबस्तु केलेकाफूल तथा फल तरुण बेलफल, सिंघाड़ा, चूका-शाक, भांग, कैथा, कुड़ा, जीरा, कसेरू, मट्ठा, जल, चौलाई के पत्ते तिलकवृक्षकेपत्ते, जायफल, जामन, धनियां, तेंदु, बकायन, अतीस अफीम, कच्चामांस खानेवाले जीवोंका तथा लवा, तीतर, शशा, एण इन्होंके मांसके रस, सब प्रकारकी छोटी मछली, खुड्डीश, मधुशल खलिस नाम मछली, सबकसायलेरस नाभिसे दो अंगुलनीचे तथा बांसके मूलमें अर्द्धचन्द्रके आकार तपायेहुये लोहसे दागना ये सब संग्रहणीमें पथ्यहैं ॥ अपथ्यम् ॥ रुधिर निकालना, जागना, जलपीना नहाना, स्त्रीसंग, बेगोंकारोकना, नासलेना, अंजन, स्वेदन, धूमपान परिश्रम, बिरुद्धभोजन, घाम, गेहूं, मोठ, मटर, उड़द, यव, अदरख धरतीकेफूल, पोयशाक, बथुआ, राजमाष, काकमाची, कोहला, तूंबी मीठारस, सहिंजन, सब प्रकार के कन्द, ताम्बूल, ईष, बेर, आंब ककड़ी, सुपारी, लहसन, अन्नकी कांजी, तुषोदक, दूध, गुड़, दही का तोड़, नारियल, सांठी, कटेलीका फल, बांसकी कोंपल, सब पत्र शाक, बुराजल, गोमूत्र, कस्तूरी, खार, सबरेचक बस्तु, दाख ख-टाई, खारी रस, भारी अन्न तथा जल, सब प्रकार के पुआ ये सब संग्रहणी में अपथ्य हैं २२५ ॥ इतिसंग्रहणीप्रकरणम् ॥

अर्शयानीबवासीरप्रकार ॥ अर्श रोगी कर्म्मबिपाक जो मासिक तनख्वाह देकरि गुरु से पठन करै वा मासिक तनख्वाह थापि शिष्य को पठन करावै तथा ऐसेही प्रकार हवन करै व जपादिक करै व करावै वह बवासीरका रोगीहोवै ॥ सामान्यार्शनिदान ॥ बात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ लोहू ५ एक शरीरके साथ उपजैं ऐसे ६ प्रकारकी बवासीर होय हैं गुदाकी तीनों आंटियांमें। और पहली आंटमें बवासीर एक दोष से उपजे और नवीनहो वह सुख साध्य है और दूसरी आंट में यानी बीच की आंट में बवासीर हो तो दो दोषों से उपजी और एक बर्ष से ज्यादह की न हो वह कष्ट साध्य होय है जो तीसरी भीतर की आंटी में शरीर के संग उपजी हुई सन्निपात यानी तीनों दोषों से युत हो वह असाध्य है ॥ बवासीर का पूर्बरूप ॥ अन्न का परिपाक अच्छी तरह हो नहीं अन्न कोषही में रहे और बन्ध कोष्ठ हो अग्नि मन्द होजाय और डकार बहुत आवैं शरीर कृश होजाय कोषमें अफरा रहै और अङ्ग में पीड़ाहो ये लक्षण बवासीर के पूर्बरूप के हैं ॥ बवासीररूप ॥ मिथ्याहार विहारादिक से कोप को प्राप्त हुये जो बात पित्त कफ दोष सो गुदा की तीनों आंटके ऊपर त्वचा और मांस और मेदाने बिगाड़ि नाना-प्रकार के मांस के अंकुरों को मस्सा के आकार गुदा के ऊपर रहै ताको बैद्य बवासीर कहै हैं ॥ चिकित्साप्रक्रिया ॥ बवासीर, अतीसार संग्रहणी ये रोग प्रायता से आपस में कारण होके उपजै हैं और अग्नि दीप को नाशै हैं इस वास्ते इन रोगोंमें विशेषकरि अग्नि की रक्षा करनी उचित है बवासीर में चार उपाय कहे हैं औषध १ खार २ शस्त्र ३ अग्नि ४ इन्होंसे साध्य बवासीर में आराम होय है और इन चारोंमें औषध मुख्यहै और सूजा हुआ कठिनमस्सा हो तो उसे चिरादे किम्बा जोंकलगाय लोहू कढ़ावै बारंबार आरामहो और जो बायु को अनुलोमन करै और अग्निको दीपन करै ऐसे पान व औषध बवासीरवाले को हित हैं और बायु की बवासीर में स्नेह व स्वेदन हित हैं और पित्तकी बवासीरमें रेचन हित है और कफकी बवासीर में वमन हित है और मिलेहुये दोषों की

संग्रहणी में मिलीहुई चिकित्सा हित है और रक्त की बवासीर में पित्त की बवासीर का इलाज हित है और जो बवासीर में दस्त पतला कईबेर लगै तो बातातीसार का इलाज करै और बवासीर में गाढ़ा दस्त आयाकरे तो उदावर्त्तका इलाज करै और लोहू बहै ऐसे बवासीरमें रक्तपित्त नाशक इलाजकरै और दस्त न आवै तो विड्बन्ध नाशक इलाजकरै ॥ बातार्शनिदान ॥ कसैला, कड़ुवा, तिक्त रूखा, ठंढा, हलका, कमखाना, ज्यादह खाना, मदिरा, स्त्रीसंभोग इन्हों का सेवन तथा लंघन, ठंढकाल, ठंढदेश दै कुश्ती, दण्ड, शोक, बायु घाम इन्होंका स्पर्श येसब बायुकीबवासीरके कारणहैं ऐसे जानो॥ बातार्श लक्षण॥ जिसकी गुदाका मस्सा चिमचिमी को लिहे हो और कालाललाई को लिहे दरदड़ा कठोर और वाका मुंह फटाऐसा हो और छोटाबेर अथवा कपास बिंदोला अथवा सरसीम इन्हों के सरीखाहो व कदम्बके फल सरीखा हो और मथवायहो और पसलियों में, कांधा में, कटि में, जांघ में, पेडू में, बहुत पीड़ा हो छींक और डकार आवैनहीं हियो दूखे भूँख लगै नहीं और कास, श्वास अग्नि मन्द कानमें शब्द भ्रम, गोला, तिल्ली येभी हों और मुख नेत्र, नख, त्वचा, विष्ठा, मूत्र ये कालेरंगहों ये लक्षणबायुकी बवासीर केहैं ॥ अर्कपत्रक्षार ॥ ताजे आकके पत्ते लावै, पांचोलक्षण इन्होंको तेल में व खट्टे रसमें मिला अग्नि से दग्ध करि खार बनावै यह गरम जलके संगलेय व मदिराके संगलेय तो बातकी बवासीरको हरैहै॥ विडंगादिचूर्ण ॥ बायबिड़ंग, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपलीतिगुनी खांड़, मूषाकरणी, निशोत, कंपिली इन्होंकाचूर्ण बराबरशहदकेसंग अथवा गुड़केसंग व मिश्रीके संगलेय तो बातकी बवासीरको हरै है लवणादिमट्ठा ॥ सेंधा, चीता, इन्द्रयव, कालानोन, बेलफल, निम्ब छाल इन्होंका चूर्ण घालिमठाको ७ दिनपीवै तो बायुकी बवासीर जावै॥ मरिचादिचूर्ण ॥ मरिच, पिप्पली, कुलिंजन, सेंधा, जीरा, शुंठि, बच हींग, बायबिड़ंग, हरीतकी, चीता, अजवाइन इन्होंका चूर्ण करि दुगुना गुड़ मिलाय १ तोला खावै ऊपर गरम जलपीवै यह सर्व बवासीरों को नाशै और बिशेषकरि बायुकी बवासीरको नाशै॥ सूर

णमोदक॥ जमीकन्दके रसमें मिरच, पिपली, शुंठि, चीता, श्रेष्ठजीरा हींग, अजवाइन, अजमोद ये सबबराबरमिलाय और इन्होंकाचौथा हिस्सा सेंधानोन डार सुखावे पीछे नींबूके रसमें १ दिन खरल करे पीछे गोलीबनावे यह सूरणमोदक रोगों को हरे और रोगियों को श्रेष्ठहै और बिशेष करि शूलको व संग्रहणी को व अतीसारको व प्रवाहिकाको व गुल्मको व बवासीर को व बायु प्रकोप को नाशै है और अग्निको दीपनकरैहै और बालक वृद्धकोभी हितहै और गर्भिणी को व रक्त पित्त वाले को सूरणमोदक कभी न देवे॥ बाहुशाल गुड़॥ इन्द्रबारुणी, नागरमोथा, शुंठि, जमालगोटाकी जड़, छोटी हरीतकी, निसोत, कचूर, बायबिड़ंग, गोखुरू, चीता, तेजबल, अकरकरा ये प्रत्येक दो दो कर्ष भर लेवे और जमीकन्द ३२ तोला बरधारा १६ तोला भिलावां १६ तोला इन सबों के चूर्णकोद्रोण भर जल में काढ़ाकरि चतुर्थांश रक्खै इस काढ़ासे तीन गुणागुड़ मिलाय फेर पकावे सुन्दर पक जाय तब चीता ४ तोला निसोत ४ तोला दंतीमूल ४ तोला तेजबल ४ तोला शुंठि, मिरच, पिपली चूर्ण ३ तोला इलायची ३ तोला मिरच ३ तोला दालचीनी ३ तोला मिलाय पीछे शहत १ सेर मिलावे ऐसे बाहुशाल गुड़ सिद्ध होय है यह बवासीर को व गुल्मको व बातोदरको व आमबातको व प्रतिश्याय को व संग्रहणी को व क्षयीको व पीनस को व हलीमक को व पांडु को व प्रमेहको हरे है यह रसायन है॥ पित्तार्शहेतु॥ कड़ुवा, खट्टा, लवण, गरम ऐसे पदार्थों का सेवन व कुश्ती, दण्ड अग्नि, घाम इन्होंका सेवन, गरमदेश, गरमकाल, क्रोध, मदिरा दूसरे के उत्कर्ष को नहीं सहना, विदाहि, तीक्ष्ण, गरम ऐसे पान व अन्न ये सब पित्तकी बवासीरके कारणहैं॥ पित्तार्शलक्षण॥ मस्सा नीला मुँहहोय और लाल पीला सुपेदाई लियेहो और उस मस्सा में महीनधारा सों गरम २ लोहू जाय और महीन कोमलमस्साहो और जोंक कैसा मुखहो, शरीर में दाहहो, ज्वर भी रहै और पसीना आवे, प्यास बहुत हो, मूर्च्छा हो, अरुचि हो, मोह हो और मल पतला नीला पीला लाल व आम युतहोय व मध्य समान व हल्दी

समान त्वचा, नख, मूत्र हों ये लक्षण पित्त की बवासीर के हैं ॥ तिलादिचूर्ण ॥ तिलोंका चूर्ण,लालरतालूबीज, नागकेशर इन्हों का चूर्ण खांड़युत खानेसे पित्तकी बवासीर नाशहोवे ॥ तिलादिकाढ़ा ॥ तिल भिलावां इन्होंका काढ़ा किंवा इन्द्रयवों का काढ़ा शहत युत रात्रिमें पीनेसे पित्तकी बवासीर नाशहोयहै पथ्य मूंगरस सांठीचावल काहै ॥ भल्लातामृत ॥ गिलोय,कललावी,काकड़ाशिंगी,मुण्डी, चिरमठी,केतकी इन्होंके रसमें भिलावां को १ दिन खरलकर ४ माशे खावे यह भल्लातामृत सब बवासीरोंको हरे है ॥ धतूरादिचूर्ण ॥ धतूरा फल पका,पिपली, शुंठि, हरीतकी, नेत्रबाला इन्होंका चूर्ण ८ रत्ती शहत मिसिरी घृत १ तोला सङ्ग खावे पित्त की संग्रहणी को हरे है ॥ भल्लातकादिमोदक ॥ भिलावां, तिल,हरीतकी इन्हों का चूर्ण गुड़युत करि मोदकबनाय १ तोला खावे यह पित्तकी बवासीरको हरे है ॥ बोलबद्धरस ॥ गिलोयसत,पारा, गन्धक ये समान भाग इन सबोंके बराबर रक्तबोल लेवे इसको शाल्मली के रसमें खरल करे ऐसे बोलबद्ध तैयार होय है यह शहत संयुक्त ३ माशे खाने से रक्तार्श, पित्तार्श, पित्तविद्रधि, रक्तप्रमेह, रक्तपित्त स्त्री का रक्त प्रदर नाश होय है ॥ लोहादिमोदक ॥ लोहभस्म, इन्द्रयव, शुंठि भिलावां, चीता, बेलफलगिरी, बायबिड़ंग, छोटी हरड़ इन्हों को चूर्ण समान ले सबके बराबर गुड़मिलाय १ कर्षभरखावे अर्शनाश होवे ॥ तीक्ष्णमुखरस ॥ पारा भस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, तांबा कांत, मंडूर, गन्धक ये सब बराबर कुमारी रस में खरल करे १ दिन पीछे अंधमूषा यंत्र में ३ दिन तक तुषाग्नि से पकावे इसका चूर्ण मिसिरी संग १ माशा खावे यह पित्त की बवासीर को हरे है इसमें अनोपान घृत, खांड़, शहत का है ॥ कफार्शनिदान ॥ मीठा चिकना, शीतल, खट्टा, भारी अन्न इन्हों का सेवन व्यायाम न करना दिन में शयन करना सुंदर शय्या व आसन पर सुख से बैठना,पूर्ववायुका सेवन, शीतकाल,शीतदेश,चिन्तारहित,आलस्य में रहना ये सब कफकी बवासीर के कारण हैं ॥ कफकीबवासीरका लक्षण ॥ गुदामें मस्साकीजड़ बड़ीहो और मस्सा करड़ाहो सपेद हो

मन्द पीड़ा ऊंचा भारी कफ सों लिपटा हो खुजाल हो वह प्यारी लगै और पेडूमें अफारा रहै गुदामें खाज बहुतहो और कास,श्वास होय हिया दूखै अरुचि और पीनस भी हो मूत्रकृच्छ्र मथवाय हो शीतलागे अग्नि मन्द और वमन भी हो कफसे लपटो मलजाय और गुदा के मस्से में लोहू जाय नहीं और शरीर का रंग पीला चिकना हो और आमवात भी हो और चरबी व कफ मिला मल बहै और मस्सा न स्रवै न फूटै और त्वचा,मूत्र,मल,नेत्र,नख सपेद रंग हों ये लक्षण कफकी बवासीरके हैं ॥ कफार्शचिकित्सा ॥ कफकी बवासीर में गुदा में व पांशु में जोंक लगाय रक्त कढ़ावै व आक के रसमें औषध मिलाय लेपकरै अथवा दाह करावै ये सब हितहैं॥ सामान्य चिकित्सा ॥ जमीकन्द, कासमर्द, सहिंजन, बैंगन, बालुक इन्होंके शाकको पकायखावै पथ्य गेहूं चावलका अथवा कसुंभाके कोमल पत्तों को कांजीमें पीस खावै अथवा अग्निरस ४माशे खावै अथवा आनन्दभैरवरस १रत्ती खावै अथवा काकमाची, देवडांगरी बीज, गुड़ इन्हों को पीस लेप करने से बवासीर शूल नाश होवै॥ अर्शभेदललित ॥ गुदा द्वारके पृष्ठ भाग में सपेद अंकुर पैदाहो इसे शूल कहे हैं यहभी कफार्शका भेदहै इसको लेप व रसायनसे शांत करै॥ देवदाल्यादिलेप ॥ देवडांगरी के बीज, सेंधा इन्हों को कांजी में पीस लेप करने से शूल रोग नाशहो॥ कांचनीलेप ॥ हलदी,लवंग चूर्ण, लोह, मैनशिल, गजपिपली इन्हों को जलमें पीस लेप करने से बवासीर नाश हो अथवा सीसाकी नलीसे घृत सेंधायुत कडुवा काढ़ा गुदामें चढ़ावै यह विड्बंधको हरै है॥ सूरणादि लेप ॥ जमीकंद हलदी,चीता,सुहागा,खार,गुड़ इन्होंको कांजी में पीस गुदाके लेप करने से बवासीर जावै॥ कटुतुंबीलेप ॥ आली कटुतुंबी को कांजीमें पीस लेप करने से बवासीर जड़से नाश होय है॥ पीलुवर्त्तीतैल ॥ पीलुका तेलमें बत्तीको भिगोय गुदामें चढ़ानेसे बवासीर में आराम हो और बलीमें बेदना होवेनहीं॥ दंत्यासव ॥ दशमूल ४ तोले चीता ४ तोले जमालगोटा जड़ ४ तोले इन्हांको २०४८ तोले पानीमें चतुर्थांशकाढ़ाकरै शीतल होनेपर गुड़ ४ तोले इलायची ४तोले मिलावै

पीछे घृत से चिकने बासन में घालि १५ दिनतक धरा रक्खे पीछे शक्ति अनुसार पीवे यह दंत्यासव बवासीर को व संग्रहणी को व पाण्डु रोगको हरे और सब व्याधिमात्रको हित है ॥ पथ्यादिगुड़ ॥ हरीतकी १२८ तोले आंवला६४ तोले कैथ ४० तोले इन्द्रायण २० तोले बायबिड़ंग ८ तोले पिपली ८ तोले लोध ८ तोले मिरच ८ तोले सेंधा ८ तोले रालबालुफल ८ तोले इन्होंको २०४८ तोले पानी में चतुर्थांश काढ़ा करे शीतल होनेपर गुड़ ८०० तोले धवके फूल २० तोले मिलाय घृतचिकनेबासनमें घालियथाशक्ति पीवै यह बवासीरको व संग्रहणीको व पाण्डुरोगको व हृदय रोगको व प्लीहा को व गुल्मको व मंदाग्निको व उदर सूजनको व कुष्ठको हरैहै और यह परमौषधहै ॥ भल्लातकहरीतकी ॥ भिलावां, छोटीहरीतकी, पाढ़ा कटुकी, अजमान, जीरा, कूट, चीता, अतीस, बच, कचूर, पुष्कर-मूल, हींग, इन्द्रयव, शुंठि, संचलनोन ये सब बराबर ले गौके मूत्र में खरलकरि छायामें सुखाय गोली तैयार करै १ माशाभर गरम जलके सङ्गखावै कफकी बवासीर नाशहोयहै ॥ लांगल्यादिमोदक ॥ कललावी, इन्द्रयव, पिपली, चीता, उंगा, चावल, चिरायता, सेंधा ये सब बराबर ले और दुगुना गुड़ मिलाय १ तोलेकी गोली बांध खावै यह लांगल्यादिमोदक कफकीबवासीरकोहरै ॥ पथ्यादिमोदक ॥ हरीतकी४तोले शुंठि ४ तोले पिपली ४तोलेइन्होंका चूर्ण करिदाल-चीनी १ तोले इलायची १ तोले तमालपत्र १ तोले गुड़ ४० तोले मिलाय १० माशे खावै यह बवासीर को नाशै ॥ यवान्यादिमोदक ॥ अजमान, बहेड़ा, हरीतकी, जीरा, पिपली इन्होंको बराबर ले चूर्ण करै और दुगुना गुड़ मिलाय १० माशेखावै यह बवासीरको हरै है भल्लातकादिलेप ॥ भिलावां, हाथीकाहाड़, जमालगोटाकीजड़, निंब कपोतकी बिष्ठा, गुड़, सौराष्ट्री, माटी, बचनाग बिष इन्हों का लेप कफकी बवासीर को हरै है ॥ शृङ्गबेरक्वाथ ॥ अदरखका काढ़ा पीनेसे कफकी बवासीर जावै ॥ रक्तार्श निदान ॥ रक्तबिकार करि उपजी बवासीर में मस्सा पित्तार्श सरीखाहो किम्बा बड़का प्ररोह सरीखा हो किम्बा चिरमठी वा बिद्रुम सरीखा हो और उन मस्सों से लोहू

की धार गरम और बहुत पड़े और मल गाढ़ा होकर उतरै और लोहूका बहुत जावा सुंबाका शरीर मेढक का बर्ण सरीखा होजाय और अधोबायु अच्छीतरह सरै नहीं और बर्ण, बल, उत्साह, तेज इन्होंकी हानिहो और इन्द्रियां कृष्ण बर्ण हों और काला, कठिन रूखा ऐसा मल उतरै ये लक्षण रक्तकी बवासीरके हैं ॥ वातादियुक्त रक्तार्शलक्षण ॥ मस्सा में लोहूजाताझाग हो और कटि में गुदा में जंघामें पीड़ाहो, शरीर दुर्बलहो ये लक्षण हों तो लोहूकी बवासीर में बायुका मिलाप जानिये और वाकोमल सुपेद, चिकना भारी ठंढा हो और मस्सामें सुमोटी धार और नमी पड़े और जाकीगुदा के कफ सोही लागा रहै तो बवासीर कफके संबंध को लिये लोहू की जाननी योग्य है ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ स्वयमग्नि रस को खाइ ऊपर खांड़, घृत शहत को मिलाय १० माशे अनोपान करै यह बवासीरकोहरै ॥ अश्वगंधादिधूप ॥ असगंध, निर्गुण्डी, कटैली, पीपल इन्होंकी धूप लेनेसे बवासीर नाशहोवै ॥ अर्कमूलादिधूप ॥ आककी जड़, जांटीपान, मनुष्यके बाल, सांपकी कांचली, बिलावकाचाम घृत इन सब को मिला धूप देने से गुदाके बवासीर नाशहोवैं ॥ पिपीलिकातेल ॥ पिपली, मैनफल, बेलफल, बच, मुलहठी, कचूर, शतावरी, पुष्करमूल, कूट, चीता, देवदारु ये सब समान भाग ले कल्क करै और कल्कसे चौगुना तेल और तेलका द्विगुना दूध इन्होंको पकाय तेलमात्र बाकी रक्खे यह बायुकी बवासीर वालेको अनुवासन बस्तीमें श्रेष्ठ है और यह पिपीलिकादि तेल लेपनमें व मलने में हितहै ॥ बिषमुष्टिचूर्ण ॥ कुचिला के बीज सात किम्बा ८ किम्बा ६ को पीस मिसिरी मिलाय बलाबल देखि खावै यह रक्तकी बवासीरको व महा प्रमेह को व त्वचा दोषको व कृमि रोग को नाशैहै नवनीतादियोग ॥ नूनीघृत, तिल इन्हों को मिला खाने से अथवा नागकेशर, नूनीघृत, खांड़ इन्हों को मिला खाने से अथवा अधबिलोइ दही व तक्र सेवन से रक्तकी बवासीर नाशहोयहै ॥ भल्लातकामृत ॥ भिलावे २५६ तोला दूध २५६ तोला पानी १०२४ तोला सबको मिला अग्निसे पकाय दूधमात्र रहनेदेवै और दूधके

बराबर घृत मिलावै और घृतके चतुर्थांश मिसिरी मिलावै और मिसिरी समभाग आँवला और शहतमिलावै और मिसिरीसे आधा भाग हरीतकीकाचूर्ण मिलावै और हरीतकीसे आधाभाग लोहाकी भस्म व गिलोयसत मिलावै इनसबको चिकने घड़ेमेंघालि अन्नका भराकोठा व खत्तीमें दाबदेवै सात दिन के बाद घड़ा को काढ़ि एक तोलाघृतको रोजखावै यह भल्लातकामृत रक्तकी बवासीरको जल्दी हरै और खारा व तीक्ष्णपदार्थका परहेजरक्खै और तेलशरीरमेंमले नहीं॥सिद्धरस॥घृत १२८तोला बकरीकादूध १२८तोला बकरीकादही १२८ तोला बकरा के मांस का रस १२८ तोला अनाररस १२८ तोला और आंवला १ तोला शुंठि १ तोला मिरच१तोला पिपली १ तोला नागरमोथा १ तोला बेलफल की गिरी १ तोला कैथकी गिरी १ तोला अमली १ तोला धवकेफूल १ तोला रक्तचन्दन १ तोला सपेदचन्दन १ तोला बाला १ तोला कालाबाला १ तोला लोध १ तोला राल १ तोला पद्मकेशर १ तोला मजीठ १ तोला बेरीछाल १ तोला चवक १ तोला दालचीनी १तोला इलायची१ तोला पद्माख १ तोला बला १ तोला मुलहठी १ तोला मोचरस १ तोला कमल १ तोला इन सबोंको मिलाय अग्निपै पकावै जब घृतमात्र आयरहै तब उतारले यह बवासीर को व संग्रहणी को व मूत्रकृच्छ्रको व पांडुरोग को व ज्वर को व कटिशूलको व अतीसार को हरै है ॥ शिवरस ॥ पारा, वैक्रान्तमणि, तांबाभस्म, कांतभस्म अभ्रक भस्म, गंधक येसब बराबर भागले अनारके रसमें इन्होंको खरलकर १ माशा खाने से यह शिवरस बवासीर को नाशै ॥ अपामार्गबीजादि ॥ उंगाके बीज, चीता, शुंठि, हरीतकी, नागरमोथा, चिरायता ये सब समभागले और सबोंके बराबर गुड़ मिलाय१० माशे रोजखावे औषध के जरा पीछे तक्रभात खावै बवासीर जावे लोहामृतरस ॥ लोहभस्म ७२ तोला शुंठि मिरच पीपल मिलाके १ तोला त्रिफला १ तोला दारुहलदी १तोला चीता १तोला नागरमोथा १ तोला धमासा १ तोला चिरायता १ तोला निम्ब १तोला प्रवल १ तोला कटुकी १ तोला गिलोय १तोला देवदा[illegible] तोला

बायबिडंग १ तोला पित्तपापड़ा १तोला इन्होंकोमिलाय चूर्णकरि १० माशे घृत शहतमें मिलाय चाटै यह लोहामृत बवासीर को व संग्रहणीको व बात को व पित्तको व कफको नाशै है ॥ बिम्बीपत्रादि लेप ॥ देवदारु के पान, शुंठि इन्हों को पीस लेपन करनेसे बवासीर शांतहो ॥ ज्योतिष्कबीजलेप ॥ मालकांगनी के बीजों को पीस कल्क बनाय लेपकरनेसे रक्तकी बवासीर नाशहोय है इसमें सन्देह नहीं है यह धन्वन्तरिजी महाराजका मतहै ॥ गुंजाकूष्माण्डलेप ॥ चिरमठी कोहलाकेबीज, जमीकन्द इन्हों को पीस बत्ती को लेपन करै और छायामें सुखावे इसको गुदामें चढ़ाने से बवासीर नाशहो ॥ कनकार्णवरस ॥ नवीन आँवलाचूर्ण ४०० तोले बायबिड़ंग ४ तोला मरिच ४ तोला पाढ़ा ४ तोला चवक ४ तोला चीता ४ तोला बाला ४ तोला मजीठ ४ तोला पिपलामूल ४ तोला लोध ४ तोला सुपारी ४ तोला पिपली २ तोला गजपीपली २ तोला कूट २ तोला दारुहलदी २ तोला नागरमोथा २ तोला शतावरी २ तोला दोनों सारिवा ४ तोला गडूंभा की जड़ २ तोला नागकेशर १६ तोला सबचूर्णसे आठगुणा जलमें काढ़ापकाय चतुर्थांशरक्खे और बबसे छानि बराबर तोल दाखकारस मिलावे और ४०० तोले मिश्री ६४ तोले शहत मिलाय तैयारकरै पीछे खांड़ गुड़का धूप दियेहुये चिकने बासनमें पूर्वोक्त द्रव्यको घालै पीछे दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र १ तोला नेत्रबाला १ तोला नागकेशर १ तोला कालाबाला १ तोला सुपारी १ तोला इन्होंका चूर्ण घालि बरतनका मुखबन्दकरि १५ दिनतक धरा रक्खै पीछे यह कनकार्णवरसको बलाबल देखि पीवै यह दीपनहै और सब रोगों को हरै है और बिशेषकरि बवासीरको व संग्रहणीको व पांडुरोग को व सूजनकोनाशैहै ॥ योगराजगुग्गुल ॥ पिपली, गजपिपली, चीता बायबिड़ंग, इन्द्रयव, धमासा, कटुकी, पिपलामूल, भारंगी, पाढ़ा अजमान, मूर्वा, शुंठि, हींग, चवक ये सब समान भागले और इन सबोंके बराबरतोल गूगुलइन्होंकाचूर्णकरि शहतसंग १० माशेखावै यह सबाज गुग्गुल रक्तकी बवासीरको व बातकी बवासीर को

व गुल्मको व संग्रहणी को व पांडुकोहरै है अथवा शलके चूर्ण को कडुवेतेलमें मिलाय धूपदेनेसे गुदाके बवासीर मरसाकालोहूबहना बन्दहोवै ॥ कपूरधूप ॥ कपूरकाधूप गुदामें देनेसे मस्सा में से बहता लोहू बन्दहोय है ॥ पयसादियूष ॥ तिल, मूंग, तूरी, मसूर इन्हों का काढ़ा किंवा यूष के संग मीठे चावल कछुक खट्टा व सुगंधयुत को खावै ॥ कालकलांतकवटी ॥ पारा, बंगभस्म, हरताल, सेंधा, कललावी, तूरी ये चारचार तोले लहसुन १६ तोले इन्होंको मिलाय करेला के रसमें १ दिन खरलकरै पीछे १ रत्तीखावै और १ रत्ती गुदामेंलेपै ये कालकलांतकवटी रक्तबातको व कफ की बवासीरको हरै इसकेऊपर अनोपानयहहै मिलावाँ, त्रिफला, जयपाल, चीता ये सब बराबर ले और इनसबोंके बराबर सेंधाले इन्होंका चूर्ण करि खोपरीपर बहुत देरतक मन्दमन्द अग्निसे पकावै पीछे १० माशे तक के संगखावै यह अनोपानहै ॥ अपामार्गादिकल्क ॥ उंगाकेबीजों के कल्कको चावल धोवन जलके संगखावै रक्तका बवासीर नाश होवै ॥ पद्मकेशरयोग ॥ कमलकीकेशर, नवनीतघृत, शहत, नागकेशर मिसिरी ये सब समानभाग ले रक्त की बवासीर में खावै आराम हो ॥ समंगादिदुग्ध ॥ लज्जावन्ती, कमल, मोचरस, लोध, तिल, चंदन इन्होंसे सिद्धकरीका दूधपीनेसे रक्तकी बवासीर नाशहोवै ॥ काढ़ा ॥ चन्दन, चिरायता, कटुकी, धमासा, शुंठि, दारुहलदी, दालचीनी वाला, निम्ब इन्होंका काढ़ा रक्त की बवासीर को हरै है ॥ द्राक्षादि योग ॥ दाख, हलदी, महुवा, मंजीठ, नीलकमल इन्होंकेचूर्णको बकरी के दूधके संगखावै रक्तकी बवासीर नाश होयहै ॥ त्रिकट्वादियोग ॥ शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, जयपाल, चीता, मिलावाँ, सेंधा, सोरा सांभर, तेल, घृत, बकरीकी मज्जा व चरबी व मूत्र इन्होंको गोमूत्र मनुष्यमूत्र, महिषीमूत्र, गधामूत्र, घोड़ाकामूत्र इन्हों में ३ दिन तक खरलकरै फेर सुखाय गजपुटमें पकावै पीछे ८ माशे यह घृत के संगखावै बात की बवासीर नाशहोवै और यही दूध के व मांस रसके संगखावै तो गुल्म को नाशै ॥ विड्बन्ध ॥ शीशाकी नलीबनाय उसे घृत व सेंधानिमकसे लेपकरि गुदामें रोजचढ़ावै मलरोधनाश

होवै ॥ रक्तस्राव ॥ धूपनसे व लेपसे व अभ्यंगसे मस्सोंमें आराम न हो तौ जोंक लगवावै ॥ दूसराप्रकार ॥ विड्बन्ध करनेवाला व ज्यादा खाजकरनेवाला व लोहू बहानेवाला ऐसे तीन प्रकार के बवासीर में जोंक लगवायकरि लोहूकढ़ावना इसके समान कोईउपाय नहीं है ॥ सत्तूपिण्डीबन्धन ॥ सत्तू की पिण्डी बनाय तेलसे अथवा घृतसे भिगोय पिण्डीको गुदापैबाँधै तो बवासीरमें आरामहोवै ॥ नाशार्श चिकित्सा ॥ नाकमें व नाभिमें व शिश्नमें व नेत्रमें व कानोंमेंअर्शहो तो जहांजहां की कहीहुई क्रियाकरै ॥ रजनीचूर्ण ॥ हलदीके चूर्णको थोहर के दूधमेंपीस उसमें बारम्बार सूत्र को भिगोय मस्सा ऊपर बांधै तो बवासीरअच्छाहो और भगन्दरपै बांधै तो भगन्दरअच्छा हो ॥ चामखील ॥ चामकील को सेंकि खारसे व अग्निसे जलावै ॥ दुग्धिकादिघृत ॥ दूधी, कटैली इन्होंकाकल्क १ भाग दूध ४ भाग घृत १ भाग इन्होंको पकावै जब घृतमात्र बाकीरहै तब अग्निसे तारै यह भोजन में व पीनेमें व लेपमें बवासीर को हरै ॥ व्योषादि मोदक ॥ गुड़, शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, मिरिच, तिल, भिलावाँ चीता इन्होंके चूर्णकी गोली खानेसे बवासीरके व त्वचा के विकार को हरैहै ॥ गुडचतुष्क ॥ शुंठि, पिपली, हरीतकी, अनारफलइन्होंको गुड़मेंमिलाय नित्यखानेसे आमको व अजीर्णको व बवासीरको व मलबद्धता को हरै है ॥ कार्पासमज्जागुटी ॥ कपास के बिन्दोला की गिरी, लहसुन, सज्जीखार, हींग इन्होंकीगोली घृतमें बेरकेसमान बनावै यह बवासीरको नाशैहै ॥ त्रिफलादिगुटिका ॥ त्रिफला, पांचो लवण, कोष्ठ, कटुकी, देवदारु, बायबिड़ंग, निम्बोली, चिकनी हलदी दारुहलदी, सज्जीखार ये सब पदार्थ मिलाय करंज की छाल के रसमें घोटै बेरकीगुठली समान गोली बनावै ये गोली अनेकरोगों में अनोपानों के संग सुखदेय हैं सो कहतेहैं तक्र के संग बवासीर को हरै है और खट्टेरसों के संग गुल्म को हरै है और गर्म्मपानी के संग अग्निको दीपन करैहै और बायबिड़ंग के काढ़ा के संग कृमि रोग को हरै है और खैर के काढ़ा के संग त्वचा रोग को हरै है और शीतल पानी के संग मूत्रकृच्छ्र को हरै है और तेल के संग

हृदय रोग को हरैहै और कूड़ाकास्वरस किंवा इन्द्रयवरस इन्हों के संग सर्वज्वरों को हरैहै और बिजोरा के रस के संग शूल को हरैहै कैथा व तिन्दूक रसके संग सब बिषोंको हरैहै और इन्द्रगोप कृमिके संग सब कुष्ठोंको हरैहै और पिपलीके काढ़ाकेसंग जलोदर को हरैहै और भोजनके ऊपर खाने से भुक्तको जरावे है और सब नेत्र रोगों में शहत में घिस अंजन करै और लेप करने से नारी के प्रदर रोग को हरैहै और व्यवहार में तथा द्यूतयानी जूआ खेलनेमें तथा संग्राम में तथा मृगयादि में स्पर्श करने से बिजय प्राप्तहोय है ॥ गुग्गुलादिवटी ॥ गूगुल, लहसुन, निंबोली, हींग, शुंठि इन्होंकी गोली शीतल जल के संग खाइ बवासीरको जल्दी हरैहै ॥ चन्द्रप्रभा वटी ॥ लोह भस्म८तोला शुद्ध गुग्गुल८तोला खांड़ १६ तोला शिलाजीत ३२ तोला बंशलोचन ४ तोला बायबिड़ंग १ तोला त्रिफला १ तोला शुंठि मिरच पिपली मिल १ तोला चिरायता १ तोला गजपिपली १ तोला हलदी १ तोला दारुहलदी १ तोला पिपलामूल १ तोला देवदारु १ तोला सांभरनोन १ तोला सेंधानोन १ तोला धनियां १ तोला सोनामाखी १ तोला कचूर १ तोला अतीस १ तोला सोना भस्म १ तोला सज्जीखार १ तोला यवाखार १ तोला बच १ तोला नागरमोथा १ तोला तमालपत्र १ तोला जमालगोटाकी जड़ १ तोला इलायची १ तोला इन्होंका चूर्ण करि शहतमें गोली १० माशेकी बांधे १ गोली रोज खावै यह चन्द्रप्रभावटी सब बिधिके बवासीरको व पाण्डु रोगको व भगंदरको व मूत्रकृच्छ्र को व प्रमेह को व क्षयीको व कासको हरैहै ॥ सूरणपुटपाक ॥ जमीकन्दको पुटपाक करि पकाइ रस काढ़ि रस तेल संयुक्त खाने से बवासीर को नाशै है ॥ चित्रकादिदधि ॥ चीताकी जड़की छालको पीस घड़ाको भीतरसे लेपै उस घड़ा में दही जमावै वह दही वा तक्र सेवन से बवासीर हरैहै ॥ कांचन्यादिविषयोग ॥ हल्दी, सोमलविष, यवाखार, सिंगरफ इन्होंको पानीमें पीस गोली बांधि मस्साके लेप करने से बवासीर नाश होवै और दूध गरमकी भाफ लेवै और दूधघृत युक्त चावल को सेवन करै यह सिद्धि योग बवासीरको हरैहै ॥ वृद्धदारुमोदक ॥

बरधारा, भिलावाँ, शुंठि ये सब बराबर ले चूर्ण करि दुगुने गुड़ में मोदक करि खानेसे छह प्रकारकी बवासीरको नाशैहै ॥ सूरणवटक ॥ सूखे जमीकंदका चूर्ण ३२ तोला चीता १६ तोला शुंठि ४ तोला मरिच चूर्ण २ तोला इन्हों को दुगुने गुड़ में मिलाय गोली बनाय खाने से बवासीर को हरैहै ॥ वृहत्सूरणवटक ॥ जमीकंद १६ भाग बरधारा १६ भाग मुसली ८ भाग चीता ८ भाग हरीतकी ४भाग बहेड़ा ४ भाग आँवला ४ भाग बायविड़ंग ४ भाग शुंठि ४ भाग पिपली ४ भाग भिलावाँ ४ भाग तालीसपत्र ४ भाग दालचीनी २ भाग इलायची २ भाग मरिच २ भाग इन्होंका चूर्ण करि दुगुने गुड़में मिलाय गोलीबनावे यह गोली खाने से बवासीर को हरे और अग्निको दीपनकरै और बातकफकी संग्रहणी को व श्वासको व कास को व क्षयी को व प्लीहा को व श्लीपद को व सोजा को व हुचकी को व प्रमेहको व भगंदरको व वलीपलितको हरै है और यह गोली स्त्री भोग की इच्छा को पैदाकरैहै और रसायन है॥ कोशातकीघर्षण ॥ कड़वी तोरई को मस्साके घिसके लगानेसे गुदा के मस्से नाशहोय हैं॥ निशादिलेप ॥ हलदी, कायफल, थोहर का दूध सेंधा इन्हों को गोमूत्रमें पीस लेप करनेसे बवासीर नाशहो॥ अर्कमूलादिलेप ॥ आककीजड़ सहिंजनाकी जड़को पीस लेप करने से बवासीर जावै॥ निंबादिलेप ॥ निंबपान पीपलपान इन्होंको पीस लेप करने से अथवा कटुतुंबी, गुड़ इन्होंको कांजीमें पीस लेपकरने से बवासीर नाशहोय है ॥ एरण्डमूलादि ॥ एरण्ड की जड़, देवदारु रास्ना, मुलहठी, नूनी घृत इनको पीस सबों से चौगुणी यवों की पीठी मिलाय और गौके दूध में पकाय सिद्धकरै इससे बवासीरके स्वेदन कर्म करि पसीना काढ़नेसे अथवा इसीको बवासीर ऊपर पिण्डीकरि बांधनेसे शूलसहित बवासीर नाशहोयहै ॥ स्नुह्यादिलेप ॥ थोहर दूध, चीता, लांगली, जमालगोटाकी जड़ इन्हों को पीस लेपनेसे बवासीर नाशहोवे यह कृष्णआत्रेयजीकामतहै ऐसेजानना योग्यहै ॥ कृष्णाशिरीषलेप ॥ जटामांसी, पिपली, सिरसबीज, सेंधा साबरसींग, रीछकीविष्ठा, चिरमठी, आक दूध इन्हों को गोमूत्रमें

पीस मस्सापर ३ दिनतकलेपकरै जलदीबवासीर नाशहो ॥ अर्कादि लेप ॥ आकका दूध, थोहरका कांटा, कटुकी, तूंबी के पात, करंजवा इन्हों को बकरा के मूत्रमें पीस लेपकरनेसे बवासीरका नाशहोवै ॥ गुंजासूरणलेप ॥ चिरमठी, कोहला, जमीकन्द इन्हों की बत्ती गुदा में चढ़ानेसे बवासीरशान्तहो ॥ गौरीपाषाणलेप ॥ शंखिया १० माशे थोहरके कांटे इन्हों को पीस पुटपाक बिधान से पकाइ रस काढ़ि खाचीनी कोलींजन इन्होंको पीस कल्ककरि बवासीरपर लेपकरने से बवासीर हरै है ॥ न्यग्रोधपत्रलेप ॥ बड़के पत्तोंको अग्निसे जलाइ राखकरि तेलमेंमिला लेपकरनेसे बवासीरशांतहो ॥ कटुतुंबादिलेप ॥ कटुतूंबी के पत्ते जमालगोटाकी जड़ मुरगाकी बिष्ठा, सफेद मुसली असगंध, चीता ये समान भागले इन्हों के चूर्ण को आकके दूधमें खरलकरि भावना देवै पीछे थोहरके दूधमें खरलकरि तैयार करै इसको वस्त्रकी बत्ती से चारोंतरफ़ पीछे उसबत्तीको प्रभातमें लेप करवावै और शाममें गुदाके अन्दर प्रवेश करै और कछु पीड़ाहो तो अग्निसे सेककरवावै और जो पीड़ा शांत न हो तो गरमजलमें गुदाको डबोय बैठजावै नसों की पीड़ा शांत होवै और सचिक्कण व मीठा अन्न खवावै और शीतलजलका पान करवावै यहबिधि नि-श्शंक मनुष्यको होकरि ७ दिन तक करनी चाहिये इससे निश्चय बवासीर नाशहोवै ॥ देवदालीबीजलेप ॥ देवडांगरीके बीज सेंधानोन इन्होंको कांजीमें पीस लेपकरनेसे अतिकठोर मस्सा भी नाशहोवै ॥ चव्यादिघृत ॥ चाव, शुंठि, मिरच, पिपली, पाढ़ा सबतरह के खार धनियां, अजमाइन, पिपलामूल, बिड़लोन, सेंधानिमक, चीता, बेल-फल, हरीतकी इन्हों को पीस कल्क करि घृतको सिद्ध करि पीछे चौगुना दही मिला सिद्धकरै जबघृतमात्र रहै तब उतार लेवै इसके खानेसे प्रवाहिका, गुदभ्रंश, मूत्रकृच्छ्र, गुदस्राव, गुदा के समीप का शूल ये सबनाशहोवैं ॥ शुंठीघृत ॥ शुंठि १२० तोलेको द्रोणतोले भर पानीमें पकाय काढ़ा चतुर्थांशरक्खे इस काढ़ा के सेवन अथवा शुंठिकेकल्कमें घृतको सिद्धकरि सेवनसे बवासीर, कुष्ठ, श्वास, कास प्लीहा, पाण्डु, बिषमज्वर, तृषारोग, अरुचि ये रोग नाशहोयहैं यह

शुंठीघृत कृष्णात्रेयको कहाहै और अदरखकेरसमें घृतको सिद्धकरि खाने से कुक्षि रोगजावै ॥ लघुचव्यादिघृत ॥ चाव, कटुकी, इन्द्रयव शतावरि, पांचोलवण इन्हों में सिद्ध घृत के खाने से बवासीर व संग्रहणी इन्होंका नाशहो और अग्निदीपनहो ॥ ह्रीवेरघृत ॥ वाला कुट, लोध, मंजीठ, चाब, चन्दन, धमासा, अतीस, बेलफल, धवके फूल, देवदारु, दारुहलदी, दालचीनी, शुंठि, जटामांसी, नागरमोथा यवाखार, चीताजड़ इन्हों को चूकाके रसमें खरल करि कल्क को तैयारकरि इसकल्कमें घृतको सिद्धकरि खानेसे बवासीर, अतीसार संग्रहणी, पाण्डुरोग, ज्वर, मूत्रकृच्छ्र, गुदभ्रंश, अरुचि, वस्ति, आनाह प्रवाहिका, रक्तस्राव, मस्साजड़ इन्हों को हरैहै और त्रिदोष को हरैहै ॥ रोहितारिष्ट ॥ रोहितवृक्ष १ तोला भरको चारद्रोणभर जल में पकाय काढ़ा चतुर्थांश रक्खै शीतल होने पर गुड़ ८०० तोले मिलावै औरधवकेफूल६४तोलेपंचकोल४तोलेदालचीनी इलायची तमालपत्र मिलके ४ तोले त्रिफला४ तोले इन्होंकाचूर्णकरि मिलाय बासनमें घालि धरदेवे पीछे १ महीनाके बादपीने से संग्रहणीको व पाण्डुको व हृदय रोगको व प्लीहाको व गुल्मको व उदररोगको व कुष्ठको व सोजाको व अरुचिको यह रोहितारिष्ट नाशैहै ॥ मधुपक्क हरीतकी ॥ कदंब, निंब, चिरमठी इन्होंकी छालका चूर्ण ६४ तोले और बकरी मूत्र गोमूत्र भैंसमूत्र तीनोंमिलाकरि १००४ तोले इन्हों का काढ़ा करि चतुर्थांश रक्खै पीछे हरीतकी बड़ी १०० काढ़ामें गेरि पकावै जब हरीतकी कोमल होजाय तब महीन कांटा से छिद्र हरड़ों में करिदेवै पीछे सज्जीखार और भांगके चूर्ण से हड़ोंको भरिसूतसे लपेट देवै पीछे ३ दिनतक शहदमें हड़ोंको डुबाइ रक्खै नित्यशहद युत हड़ोंकोखावै सन्निपातकी बवासीरको हरैहै ॥ गोजिह्वादिकाढ़ा ॥ गोभी जड़ १ भाग मोरशिखा २ भाग धनियां १ भाग इन्हों को जलमें काढ़ा अष्टमांश में शहद मिश्री मिलायपीने से छह प्रकारकी बवासीरको हरैहै और बवासीरकी खाजको व संग्रहणीको व शूल को हरैहै ॥ कल्याणलवण ॥ भिलावाँ, त्रिफला, जमालगोटाकी जड़ चीताकीजड़ ये सब बराबर ले और सेंधानोन दुगुना ले सकोरा में

घालि कपड़माटी देकरि गोके गोबर के गोसों से फूंक देवै यह कल्याणलवण बवासीर को हरैहै ॥ तक्रादियोग ॥ तक्रमें सांभरनोन मिलाय पीनेसे बायु व मलको अनुलोमन करैहै और इसकेसेवनसे गुदामें बवासीरउत्पन्नहोवे नहीं और बल, वर्ण अग्नि इन्होंकोबढ़ावे है और नाड़ीके स्रोतोंको शुद्धकरि रसको अच्छीतरह पकावैहै और शरीरको पुष्टकरैहै और मनकोप्रसन्न करैहै और बातकफके बिकार सैकड़ोंनाशैहै॥दूसराप्रकार ॥कब्जियतमेंतक्रअजमानशुंठिमिला हित है और इसतक्रके सेवनसे बवासीर नाशहोवै और गोकेदूधकेतक्रमें चीताके चूर्णकोमिलायरोज़ पीनेसेबवासीर नाशहोयहै अथवा नित्य अन्नकोत्यागकरि७दिन व १०दिन व १५दिन व १ महीनातकतक्रके सेवनकरनेसे अनेकरोग नाशहोय हैं अथवा हरीतकीचूर्ण युततक्र किम्वा त्रिफला चूर्णयुत तक्र पीने से बवासीर जावैहै अथवा हींग हपुंचीता इन्होंसे युत तक्रके पीनेसे अथवा पञ्चकोल युत तक्रपीने से बवासीर नाश होयहै अथवा चीताकी जड़को पीसघड़ाके भीतर लेप करि उस घड़ामें दही जमाय व तक्रकरि पीनेसे बवासीर नाश होयहै अथवा मुसली कटुकी इन्हों के चूर्णको तक्रके सङ्ग खानेसे बवासीर नाशैहैं ॥ अरलुत्वक् ॥ अरलू छाल ८ तोला चीता ८ तोला इन्द्रयव ८ तोला करंजवा, सेंधानोन,शुंठि इन्होंके चूर्णको गौकेमट्ठा में घालि ७ दिन पीनेसे जड़ सहित बवासीर को हरैहै॥ शर्करासव ॥ धमासा १ सेर चीताजड़८तोला बासा८ तोला हरीतकी८तोला आँवला ८ तोला पाढ़ा ८ तोला शुंठि ८ तोला इन्होंको द्रोण तोलाभर पानी में चतुर्थांश काढ़ा करै और शीतल होनेपर खांड ४०० तोले मिलाय बासन चिकने में घालि १५ दिनतक मुख को बन्दकरिकै धरा रक्खै पिपली, चाब, कांगड़ी शहद, घृत इन्हों से पहिले पात्र को लेपन करि घालै ऐसे जानो इस शर्करासवकी मात्रा बलाबल देखि पीनेसे बवासीर, संग्रहणी, उदावर्त्त, अरुचि, अग्निमांद्य, हृदय रोग, पाण्डुरोग सर्वरोग नाश होयहैं॥ द्राक्षासव ॥ मुनक्कादाख ४०० तोला ८१७२ तोले पानी में काढ़ा चतुर्थांश करै शहद ४०० तोला खांड़ ४००तोलाधवकेफूल २८तोला इन्होंकोघीके चिकनेबासन में

घालि इसमें जायफल २ तोला लवंग २ तोला कंकोल २ तोला हरपररेवड़ी फल २ तोला चन्दन २ तोला ये सब दो २ तोला घालि २१ दिनतक धरारक्खे पीछे बलाबल देखि खाने से यह द्राक्षासव गुदाके मस्सों को नाशैऔर शोकको व अरुचिको व हृदय रोग को व पाण्डु को व रक्त पित्त को व भगंदर को व गुल्म को व उदर रोगको व कृमि रोग को व ग्रंथिको व क्षतक्षयको व ज्वरको व वातको व पित्तको नाशै है और बलवर्णको बढ़ावैहै ॥सन्निपातार्शधूप॥ गेहूं चून ४ तोला हींग २ माशे भिलावाँ ४ माशे इन्हों की धूप सन्निपातकी बवासीरको हरैहै ॥ हपुषादितक्रारिष्ट॥ हपुषा यानी थोर शेरणी, मेथी, धनियां, जीरा, सौंफ, कचूर, पिप्पली, पिपलामूल चीता, गजपिपली, अजमाइन, अजमोदइन्होंकाचूर्ण अल्प खट्टातक्र में मिलाय घीके चिकने बरतनमें घालि जब कटुक व खट्टा यहतक्रारिष्ट प्रातःकालमें व भोजनकाल में व तृषाकाल में बलाबल देखि मात्रालेवे यहदीपनहै और रुचिको उपजावेहै और वर्णको बढ़ावे है और कफ बात को अनुलोमन करै और गुद रोग को व गुद सोजाको व गुद खाजको हरैहै और बलको बढ़ावे है ॥ भर्जितहरीतकीयोग ॥ घृत में भूनी हरीतकी किम्बा पिपली गुड़ युत किम्बा निसोत इन्हों के खाने से मलका अनुलोमन करै है ऐसे जानो ॥ पाहाड़मूलयोग ॥ धमासा, बेलफल, अजमाइन, शुंठि इन्हों में एक एक से संयुक्त पाठा बवासीर को हरै है ॥ सन्निपातिकसहजलक्षण ॥ सबों के लक्षणहों तो सन्निपातका अर्श वा सहज अर्शहोयहै और बातादिहेतु और लक्षण दोवोंके हों तो द्वंद्वज बवासीर जानो ॥ अजीर्णहरमहोदधिबटी ॥ शुद्ध जेपाल का बीज, चीता, शुंठि, लवंग गन्धक, पारा, सुहागाखार, मिरच, वरधारा, वचनागाबिष ये सबबराबर ले इन्हों को दो पहरतक खरलकरि जमालगोटा की जड़के रस से १५ भावनादेकरि पीछे नींबूरसमें ३ भावना देकरि पीछे चीता रस में ३ भावना देकरि पीछे अदरख अर्क में ७ भावना देकरि गोली सूखी मटर के समान बनावे और नित्य खावे यह गोली शूलको व अजीर्णको व ज्वर को व कासको व अरुचिको व पांडुरोग

को व उदररोगको व आमबात को व बस्तीकाआटोप को व पेट के गुड़गुड़ शब्दको व हलीमक को व मंदाग्निको हरैहै और भूख को बढ़ावे है और सब रोगों में हितहै ॥ क्षुधासागरबटी ॥ शुंठि, मिरच पिपली, त्रिफला, पांचों लवण, सज्जीखार, सुहागाखार, जवाखार पारा, गंधक ये सब समान भाग और बचनागाबिष २ भाग इन्हों को पीस अदरखके अर्कमें गोली चिरमठीसमान बांधै ये गोली २ अजीर्ण में सात व पांच लवंग चूर्ण के संग खावै येक्षुधासागरनाम की गोली सूर्य्य ने प्रकट करी हैं ॥ अग्नितुंडबटी ॥ शुद्धपारा, बच-नागबिष, गन्धक, अजमाइन, त्रिफला, सज्जीखार, जवाखार, चीता सेंधा, जीरा, कालानोन, बायबिड़ंग, सांभर, शुंठि, मिरच, पिप्ली, ये सम भाग ले इनसबोंके समान भाग कुचला के बीज इन्हों को जंबीरी नींबू के रसमें खरलकरि मरिच के तुल्य गोली बनाइखाने से अग्नि मन्दता जावै॥ अनोपान ॥शुंठिगुड़ मिला २तोलाखावैयह अग्नितुंडबटीगोली रोगमात्रको हरैहै ॥ क्षुद्बोधकरस ॥ शुंठि, मिरच पिपली तीनों मिलाय एक भाग सेंधानोन२भाग गन्धक ३ भाग इन्होंको नींबू के रसमें देरतक खरल करै यहक्षुद्बोधक रस है ॥ दू-सराप्रकार ॥ सुहागाखार, पिपली, बचनागबिष ये समान भाग मिरच २ भाग इन्हों कोपीस नींबू के रसमें मटर समान गोलीबनावै एक गोली रोज खावै अजीर्ण नाशहो और अग्नि दीपन हो और कफभी नाश होवै ॥ भस्मबटी ॥ हरीतकीकुचलाकेबीजइन्होंकोशुद्ध करि २० तोला ले बारीक पीस बहेड़ाजलमें पकावै पीछेहिंग४तोला बायबिड़ंग ४ तोला सेंधानोन खारीनोन कालानोन मिलके ४ तोला अजमोद ४ तोलाअजमाइन४ तोला खुरासानी ४ तोलाशुंठिमिरच पीपल मिलके ४ तोला गन्धक ४ तोला इन्होंको महीनपीस नींबू के रसकी भावना देवै पीछे बेरकी गुठली समान गोलीबनाइसेवन करनेसे अजीर्ण को व हृदय रोगको व गुल्मको कृमिको व प्लीहा को व अग्निमन्द को आमवात को व शूल को व अतीसार को व संग्रहणीको व जलोदरको व बवासीरको व कृमिजरोगोंको व बात-जरोगको व कफज रोगकोहरैहै ॥ शंखबटी॥ अमलीका खार४ तोला

पांचोंनोन ४ तोला इन्होंको छोटेनींबूके रसमें खरलकरि पीछे शंख को अग्निपै तपाय ४ तोले टुकड़े मिलाय ७ दिनतक पूर्वोक्तरस में खरल करैपीछे शुंठि मिरच पीपली इन्होंकाचूर्ण४तोला हींग २तोला पारा४ माशे बचनाग विष ४ माशे गंधक १ माशे मिलाय घोटिकरि बेरकी गुठली समान बनाइ गोली सम्पूर्णकालोंमें सबअजीर्णनाश के वास्तेखावै और यहगोली सर्वज्वरोंको व शूलको व उदररोगको व बिशूचीको व बिड्बन्धको व अग्निमांद्यको व गुल्मकोहरैहै यहशंखबटीहै ॥ अग्निकुमाररस ॥ पारा,बचनागाबिष,गन्धक,सुहागाखारये सब बराबरले मरिच८भाग, शंखभस्म, कवड़ीभस्म, मिलके२भाग इन्होंको पका जंबीरीनींबूकेरसमें खरलकरि७भावनादेवे यहअग्निकुमाररस २ रत्तीखानेसे बातज अजीर्ण को विशूचिकाको व क्षयी को जल्दीनाशैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ पारा, गन्धक, सुहागाखार येसब समानभागले बचनागबिष ३ भाग, कवड़ीभस्म व शंखकी भस्म मिलके २ भाग,मिरच ८ भाग इन्होंको पीस पकेहुये जंबीरी नींबूके रसमें खरलकरि भावना देनेसे अग्निकुमाररस सिद्ध होय है यह अजीर्ण को व वायुको व गुदबातको व गुल्मबात को व बिशूचीको हरैहै ॥ तीसराप्रकार ॥ सुहागाखार व पारा व गन्धक समानभाग बचनागविष ३ भाग, कवड़ीभस्म, शंखभस्म, मिलकरि २ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको जंबीरीनींबू के रसमें १ दिन खरल करे पीछे नागरपानकी बेलिकेरसमें १ दिन खरलकर पीछे चीतारसमें १ दिन खरलकरि पीछे साहिंजनेकी जड़के रसमें १ दिन खरलकरे पीछे बिजौराकेरसमें १ दिन खरलकरि अग्निकुमार तय्यार होवैहै यह अजीर्णको व शूलको व मंदाग्निको व प्लीहाको व पांडुको व सब बातरोगोंको व मूत्ररोगको व खांसीको व बवासीरको व अतीसारको व संग्रहणीको व सन्निपातको हरैहै ॥ चौथाप्रकार ॥ गंधक पारा समानभाग,बचनागविष आधाभाग,तांबाभस्म १ भाग इन्हों को पीस हंसपक्षीरसमें खरलकरि कांचकी शीशीमेंघालि बालुका यंत्रमें तीनप्रहरतक पकावै शीतलहोनेपरकाढ़ि बचनाग आधाभाग मिलावै पीछे १ रत्तीरस और शुंठि मिरच पिपली सेंधानोन इन्हों

करि युत अदरखअर्कके संग खानेसे मंदाग्निको व सन्निपातको व धनुर्वातको व अजीर्णको व शूलको व क्षयीको व कासको व गुल्मको व प्लीहाको हरैहै ॥ बृहत्क्रव्यादिरस ॥ गंधक ८ तोला लोहेके पात्रमें शुद्धकरि और पतलाकरि पारा ४ तोला तांबा ४ तोला लोहा ४ तोला मिलाय बारीक पीस लेवै पीछे लोहेके पात्रमें घालि दूसरे पात्रसे ढकि देव पीछे वस्त्रसे छानि लोहेके पात्रमेंघालि एरंडपत्र ४ तोले मिला कोमल अग्निसे पकावे उसे बारम्बार लोहाकी पलटी से चलाताजावे पीछे ४ तोले नींबूको रस मिलावै पीछे पंचकोलके काढ़ामें ५० भावनादेवे पीछे अम्लबेतसकेकाढ़ामें ५० भावनादेवे पीछे द्रव्यकेबराबर १ तोला सुहागा भुनाहुआमिलावे और द्रव्यसे आधाभागकालानोन मिलावै और इन सबोंके बराबर मरिचमिलावै पीछे चनेके खारके जलमें ७ भावना देवै पीछे सुखाय कांच की शीशीमें घालै ऐसे रस सिद्ध होयहै इसको १२ रत्ती खानेसे अति- कठोर व भारी अन्नादि खायापचै है और इसरस को कडुवारस व खट्टातक्रके संगखावे और कंठतकभोजन अड़ामेंखानेसेरसकोजल्दी भस्मकरि फेर भूखलगैहै और अग्निमंदताको हरैहै यह रस मंथान भैरव ने सिंहलदेशके राजा के वास्ते कहाहै और गलकेरोग को व कुष्ठको व आमको व कंधाकेमोटापनको व शूलको व गुल्मकोवप्लीहा को व सबरोगों को व वातग्रंथीको व उन्मादको हरैहै ॥ क्रव्यादिरस॥ तक्र मस्तु व नींबूरस ६४ तोला अदरख रस २१ तोला त्रिफला १६ तोला इलायची ४ तोला लवंग १५ तोला चीता १ तोला सुहागा १ तोला शुंठि ६ तोला मिरच ६ तोला पिपली ६ तोला इन्होंको पीस बस्त्रसे छानि रसक्रब्यादि सिद्धहोयहै यह राम राजा ने कहाहै ॥ बड़वानलचूर्ण ॥ पारा १ भाग गन्धक २भाग शीशाभस्म १ भाग व बंगभस्म १ भाग मिरच १६भाग इन्होंको मिलाय बड़वा- नल चूर्ण होयहै ॥ अग्निदीपनीवटी ॥ गन्धक, मिरच, शुंठि, सेंधानोन इन्द्रयव इन्होंको नींबूकेरसमें खरल करि चने समान गोली बनाइ खानेसे अग्नि दीपन होताहै ॥ अग्निकुमार ॥ पारा, गन्धक, बच्छनाग विष ये समान भाग कवड़ी भस्म ३ सज्जीखार १ भाग पिपली १

भाग शुंठि ८ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको जबतक काजल सरीखा हो तबतक खरल करे पीछे जंबीरी नींबूके रसमें सात भावना देइ पीछे अदरख के अर्कमें ७ भावना देइ यह अग्निकुमाररस २ रत्ती खाने से आम संचयको व अग्नि मंदता को व अजीर्णको व कफको हरे है॥ लघुपानीयभक्तवटी॥ पारा आधाभाग बायविडंग १ भाग मिरच १ भाग अभ्रक १ भाग इन्हों को चावलके माड़माहिं खरल करि चिरमटी समान गोली बनाइ मांडके संगखावै यह अग्निको बढ़ावेहै इसपै पथ्य नहीं है॥ राजवल्लभरस॥ पारा ४ तोला गन्धक १ तोला चीता ४ तोला नसदर ६ तोला इन्होंको महीन पीस वस्त्रमें छानि १ माशा खानेसे यह राजवल्लभरस अजीर्णको व त्रिदोषको हरै है॥ लब्धानन्दनरस॥ पारा, गंधक, लोहाभस्म, अभ्रकभस्म, वचनाग विष ये समानभागले और मिरच ८ भाग सुहागाखार ४ भाग इन्हों कोपीसभृङ्गराजके रसमें ७ भावना देवै पीछे खट्टाअनारके रस में ७ भावना देवे यहरस २ रत्ती पानके टुकड़ाके संग खानेसे वात व कफसे उपजे रोगोंको व मन्दाग्निको व संग्रहणी को ज्वर को व अरुचिको व पांडुरोगको जल्दीहरैहै॥ महोदधिवटी॥ बचनागबिष १ भाग, पारा १ भाग, जायफल २ भाग, सुहागाखार २ भाग, पिपली ३ भाग, शुंठि ६ भाग, कौड़ी भस्म ६ भाग, लवंग ५ भाग इन्हों को पीस मिलाय गोलीबनावै यह महोदधिवटी नाशहुये अग्निको दीपनकरैहै॥ सूरणचूर्ण॥ जमींकंद, नागकेशर, चिरमिटी, मिश्री इन्हों को शहद युतकरि अथवा नोणीघृतयुतकरि खानेसे बवासीरनाश होवै॥ वैक्रांताख्यरस॥ पाराभस्म, अभ्रकभस्म, वैक्रांतभस्म, कांतभस्म, तांबाभस्म ये समान भाग ले इन सबोंके बराबर गन्धकले और भिलावां मिलाय १ दिनतक खरल करावै पीछे भिलावां को तेलमेंगोली २ रत्तीकीबनाइ खानेसे गुदाके रोगोंको व द्वंद्वजअर्शको व सन्निपातजअर्शकोहरै और मुसलीचीतामिलके ८ भाग, कुट १६ भाग, पिपली २ भाग, पिपलामूल २ भाग, बायविडंग ४ भाग, मिरच १ भाग, कटु १ भाग, शुंठि १ भाग, ब्रह्मदंडी १ भागइन्होंकाचूर्णकरि दुगनागुड़मिला गोली १ तोलाकी बनाइखावै पीछे यह अनुपानके

संग वैक्रांतरस साध्य व असाध्य व बवासीरकोहरैहै ॥ पर्पट्यादियोजना ॥ पर्पटी रस ८ रत्ती गोमूत्रके संग लेनेसे किम्बाताम्रपर्पटी रस गुड़,शुंठि,हरीतकीके संगलेनेसे बवासीरनाशहोयहै औरइसपर अनुपानकहतेहैं। जीवंती४ तोला,पुष्करमूल ४ तोला,चीता४तोला बेलफलकीगिरी ४ तोला, कचूर ४ तोला कनेर की अथवा अर्जुन वृक्षकी छाल ४ तो० जवाखार ४ तो० जीरा४ तो० अमली८तो० धानकीखील १६ तो० तिलतेल ८ तो० घृत ८ तो० इन्होंका चूर्ण १० मांशे अनोपानहै इस नुसखा में बहुतसी औषध भूलकरिगेरै॥ कुटजावलेह ॥ कूडाकी छाल १ तोलाभरि इसको थोडी कूटकरि द्रोणभरिपानीमेंपकाइ चतुर्थांश काढारक्खे पीछेइसको वस्त्रमेंछानि इसमें गुड १२० तोले मिलाय पकावै जब कछुक करड़ाहोजाय तब रसोत ४ तो० मोचरस ४ तो० शुंठि मिरच पिपली मिलाके ४ तो० त्रिफला ४ तो०लज्जावंती४ तो० चीता ४ तो० पाढा ४ तो० बेलफल४तो० इन्द्रयव ४ तो० बच ४ तो० भिलावाँ ४ तो० अतीस४ तो० वायविड़ंग ४ तो० वाला ४ तो० ये सब मिलावै और एक कुड़वघृत मिलावै जब शीतल होजाय तब एककुड़वप्रमाणशहद मिलाइ अवलेहकरि बकरीके दूध व तक्रकेसंग अथवा बकरीकेदही के संग व घृतके संग अथवा जलके संग यह अवलेह खानेसे सब बवासीरों को व भगंदरादि रोगों को व अतीसारको व अरोचक को व संग्रहणी को व पांडुको व रक्तपित्तको व कामलाको व अम्लपित्तको व सोजनको व कृशताको व प्रवाहिका को हरैहै इससेवन में हलके पथ्यखावै ॥ कूष्मांडावलेह ॥ कोहला के टुकड़े व जमींकंद को युक्तिसे पकाइ देनेसे बवासीर व गुड़ वात व मंदाग्नि नाशहोवै ॥ भल्लातकावलेह ॥ पकेहुये भिलावां की दोदा फाड़करि १०२४ तोले लेवै पानी ४०९६ तोले में काढ़ा चतुर्थांश करि चौगुनादूध मिलाय फेर पकाइ जबतक घनरूप हो तबतक और मिश्री ६४ तोलामिलाइइसकोबरतनमेंघालि ७ दिनतक धरारक्खे पीछे बलाबलदेखि खानेसे गुदाके सब बिकार नाशहोयहैं और केशोंकोकाले करै है और दृष्टि गरुड की सरीखीहोय है और चन्द्रमाकीसी

कांतिहोयहै और घोड़ाकेसरीखा बलहो और मयूरकेसेस्वरको पैदा करैहै और अग्निकीसी दीप्तिकरै है और स्त्रियोंको प्यारदेयहै और आरोग्यता को प्राप्तकरै है और इसका सेवने वाला ३०० वर्ष अथवा २०० वर्ष तकजीवै और इसमेंकोई पथ्यनहींहै और अन्न व पान व स्त्रीसंग वर्ज्जित नहींहै ॥ स्नुहीक्षीरलेप ॥ थोहरका दूध हलदी इन्होंको गोमूत्रमें मिला लेपकरनेसे और गौकेदूधमें चीता का चूर्ण मिलाय रोज़ पीनेसे बवासीर नाशहोवै पथ्य दूधकाहीकरै॥ कोकम्बादिचूर्ण ॥ कोकंबवृक्षका पंचांग ८० माशे भिलावाँगिरी ४० माशे इन्होंको महीन पीस १० माशे खानेसे गुदाके अंदर के व बाहिरकेमस्से नाशहोवैं॥ समशर्करयोग ॥ शुंठि६भाग,पिपली५भाग मिरच ४ भाग, नागरपान २ भाग, दालचीनी १ भाग, इलायची १ भाग इन्होंका चूर्णकरि बराबर खांड़ मिलाय खाने से बवासीर को व अग्निमंदता को व गुल्मको व पेटरोगको व सूजनको व पांडुरोग को व मस्साको नाशैहै ॥व्योषादिचूर्ण॥ शुंठि,मिरच, पिपली, भिलावां बायबिड़ंग, तिल, हरीतकी इन्होंका चूर्ण गुड़युत खाने से बवासीर को व सूजनको व बिषको व कुष्ठको व विड्बंधको व अग्निमंदको व कृमिको व पांडुरोगको हरैहै ॥ करंजादिचूर्ण ॥ करंजवा, शुंठि, इंद्रयव अरलु,सैंधानोन,चीता इन्होंकाचूर्ण तक्रकेसंग खानेसे बवासीरको व रक्तकीबवासीरकोनाशैहै॥विजयाचूर्ण॥त्रिफला,त्रिकुटा, त्रिसुगंध,वच हींग, पाढ़ा, सज्जीखार, जवाखार, हलदी, दारुहलदी, चाव,कटुकी इंद्रयव, शतावरि, पांचोंलवण, पिपलामूल, बेलफल, अजमोद यह अट्ठाईस औषधोंकागणहै और येसब समान भागलेके महीनपीस इसको एरंडतेलमें मिलाय१०माशेगरमजलकेसंग खानेसे बवासीर कोवश्वासको व शोषको वभगंदरको व हृदयशूलको व पसलीशूलको व बातगुल्मको व उदररोगको व हुचकीको व प्रमेहको व पांडुरोग कोव कामलाकोव आमबातको व उदावर्त्तको व अंत्रवृद्धिको व गुदा के कृमिको व संग्रहणीको हरै है और यह विजयाचूर्ण सबरोगोंको नाशैहै और महाज्वरवालों को व भूतबाधावालोंको व बंध्यास्त्रियों को हितकारक है ॥ देवदाल्यादियोग ॥ देवदाली के काढ़ासे गुदा

शौच लेनेसे अथवा देवदालीके हिमसे शौचलेने से गुदाके मस्से नाश होजायँ हैं इसमें संदेह नहीं ॥ मरीचादिमोदक॥ मिरच, शुंठि चीता, ज़मीकंद इनको यथोत्तर दुगुनालेकर गुड़सबकेसमान मिला मोदक बनाइ खानेसे बवासीर को हरै है ॥ प्राणदमोदक ॥ तालीस-पत्र, चीता, मिरच, चवक ये बराबरले पिपली २ भाग पिपलामूल १२ तो० शुंठि १२ तो० दालचीनी ४ तो० तमालपत्र ४ तो० नाग-केशर ४ तोला इन सबका तिगुना गुड़मिलाय मोदक बनावै यह कासको व श्वास को व मंदाग्निको व बवासीरको व प्लीहाको व प्र-मेहको नाशैहै ॥ कांकायनगुटी ॥ बड़ीहरीतकी की छाल २० तोला मिरच ४ तोला जीरा ४ तोला पिपलामूल ४ तोला चाव ४ तोला चीता ४ तोला शुंठि ४ तोला भिलावां ३२ तोला तेलिया देवदारु ६४ तोला जवाखार ८ तोला इनसबोंका दुगुना गुड़मिला गोली बनावै ये गोली कांकायन मुनीने प्रजाके कल्याणके वास्ते कही हैं गुदाके रोगोंको हरैहै और जो खार व शस्त्रसे बवासीर अच्छा नहो वह कांकायन गुटीसे होताहै ॥ सूरणमोदक ॥ चीताकीजड़ ४ तोला जमीकन्द ८ तोला शुंठि २ तोला मिरच ८ माशा भिलावां १ तोला पिपलामूल १ तोला वायबिड़ंग १ तोला त्रिफला १ तोला पिपली १ तोला तालीसपत्र १ तोला बरधारा ८ तोला ताड़मूल १ तोला दालचीनी ८ माशे इलायची ८ माशे मिरच ८ माशे इनसबों को मिला चूर्णकरि दुगुना गुड़ मिलाय मोदक बनावै यह सूरणमोदक १० माशे खानेसे बवासीर को हरैहै और अग्नि को उपजावै है लघुसूरणमोदक ॥ पिपली, मिरच, शुंठि, चीता, जमीकंद ये समान भाग ले और दुगुने गुड़ में गोली बनाय खाने से बवासीरको हरै और दीपन पाचनहै॥ अर्शकुठार ॥मीठातेलिया शोधापारा येसमभाग ले इन दोनोंके समान गन्धक ले इन्हों को कलहारीकी जड़के रस में खरलकरि पीछे जमीकन्द सपेद रंगके संग खरल करि गोला बनाइ बरतनमें घालि चुल्हीपर चढ़ाइ अग्नि समान अच्छा पके तबतक पकाइ शीतल होनेपर यह अर्शकुठार रससिद्ध होयहै यह रक्तबातको व बवासीर को नाशैहै ॥ अभ्रकहरीतकी ॥ अभ्रक भस्म

८० तोला गंधक २० तोला लोहभस्म २० तोला और सोनामाखी इनतीनोंसे दुगुना हरीतकी ४०० तोला आंवला ८०० तोला इन्हों के चूर्णको जंबीरी नींबूके रसमें १ दिन खरल करै पीछे भृङ्गराज के रसमें १ दिन खरल करै पीछे सांठीके रसमें १ दिन खरल करै पीछे पातालगारुड़ी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे भिलावां के रसमें १ दिन खरल करै पीछे चीताके रसमें १ दिन खरलकरै पीछे कोरांठके रसमें १ दिन खरल करै पीछे हस्तशुण्डीके रसमें १ दिन खरल करै पीछे कलहारी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे खीरनी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे जलकुंभी के रसमें १ दिन खरल करै पीछे शहद व घृतमिलावै पीछे चिकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे १ तोला रोज़ खाने से सन्निपातज बवासीर को हरै॥ मंत्र॥ कंकर कुरंतरंकरकंताहिलतिरी ये राजकरंतर आरक्तासारक्ता जोजाएइह-मंत्राताके बस न होय अरिसाजाए वुझप्रकट न करिताकेसप्तकपिला गाकी हत्या इस मंत्रका जप रोज़ करनेसे बवासीर शांतहो॥ सूरण पुटपाक॥ जमीकंद के ऊपर माटी लगाइ पुटपाककी समान पकाइ लवण तेलसंयुत करि खानेसे बवासीरजावै॥ कासीसादितैल॥ हिरा कसीस, कलहारी, कूठ, शुंठि, पिपली, सेंधा, मैनसिल, कनेर, बायविडंग चीता, वासा, जमालगोटाकी जड़, कड़वीतोरीके बीज, चोक, हरताल ये सब प्रत्येक कर्ष कर्षभरिले तिलका तेल १ प्रस्थभर मिला पकाइ पीछे थोहरका दूध ८ तोला आकका दूध ८ तोला मिलावै तेलसे चौगुना गोमूत्र मिलाके पकाइ जब तेलमात्र आयरहै तब उतारलेइ यह खरनाद ऋषीने कहाहै यहतेल खारकी तरह बवासीरको लगाने से नाशै है॥ जाप्यलक्षण॥ बवासीरकी बीमारी में जो उमर बाक़ी हो और अच्छा वैद्य, अच्छा औषध, अच्छा परिचारक, समझवान पथ्य करनेवाला रोगी और अग्नि दीपन ये सब जिसके हों वह बवा-सीर वाले के जाप्य हैं और इससे विपरीत हो तो असाध्य जानो॥ उपद्रवोंसेअसाध्यलक्षण॥ हाथ, पैर, नाभि, गुद, मुख इन्हों में सूजन हो ऐसा बवासीर वाला असाध्यहोयहै और हृदयमें शूल व पसली में शूल हो ऐसा बवासीरवाला भी असाध्यहोयहै॥ दूसरेअसाध्यलक्षण॥

हृदयमें शूलहो और पसलीमें शूलहो और मोहहो और छर्दिहो अंग में पीड़ाहो ज्वरहो, तृषाहो गुदा पकजावै ये लक्षण असाध्य बवासीर केहैं अथवा तृषा, अरुचि, शूल येहों और मस्सामें लोहू बहुतस्रवै और सोजाहो व अतीसारहो ऐसा बवासीर मनुष्यको मारदेयहै और अर्शरोग लिंगमें और सुंडीमें और नाकमें भी होयहै॥ चर्मकीलसंप्राप्ति॥ व्यानवायु कफको ग्रहणकरि खालके बाहिर अर्शको पैदाकरैहै वह अर्श कीलासरीखाहो और खरधराहो उसे चर्मकील कहते हैं॥ वातादिभेद लक्षण॥ वाताधिक चर्मकीलमें सुई चुभनेसरीखी पीड़ाहो और कर्कशपनाहो और पित्ताधिक चर्मकीलका रंगकाला व रक्तहो और कफाधिकमें मस्से चिकने और गठीलेहों और खाल सरीखा वर्णहोयहै॥ दोषकोपअर्शरोग॥ पांचप्रकारका बायु और पांचप्रकारका पित्त और पांचप्रकारका कफ ये सबगुदाकी तीनोंबलियोंके माहिं कोप को प्राप्तहोयहैं बवासीर रोगमें इसवास्ते बवासीर रोग अनेक रोगों को प्राप्तिकरैहै और दुःखदेनेवालाहै और संपूर्णदेहको उपतापकरै है और प्रायता करिकै कष्टसाध्य होयहै ये सब लक्षण बवासीरके हैं असाध्यलक्षण॥ सन्निपातक व सहजन्मा बवासीर भीतरकी बली में कोपको प्राप्तहुआ मोटे पेटवाले के और पैर, हाथ, गुदा, पेट आंड इन अङ्गों में से सोजावाले के और पसली, हृदय इन्होंमें शूलवाले के असाध्य है और हृदयमें शूलहो, पसलीमें शूलहो, बमनहो, ज्वर हो, मोहहो, तृषाहो, गुदाकापाकहो, अग्निमन्दहो, अरुचिहो, अङ्गभङ्गहो, ये लक्षण वाला बवासीररोगी अवश्यमरै और नेत्रोंमें अंधताहो, पेट, नेत्र, हाथ, पैर, गुद, आंड इन्हों में सूजन और तृषाहो शूलहो, श्वासहो, शोषहो अतीसारहो, ज्यादह रक्तमस्सा से निकस जाय ऐसा बवासीर वाला अवश्य मरै है॥ बवासीरपथ्य॥ बिरेचन लेपन, रुधिरकाढ़ना, खारलगाना, अग्नि से दागना, शस्त्र से काटना, पुराने लालधान, सांठीचावल, यव कुलथी, और गोह, मूसा हाथी, ऊंट, कछुवा, भेड़, कुलिङ्ग, बकरा, गधा, बिलाव, बंदर, तरषू पपैया, गीदड़, काक, इन्हों के मांस, और थोड़े मांसवालों का मांस और बाजआदिका मांस, परवर, शालिंचशाक, लहसन, चीता

सांठी, बथुआ, जमीकन्द, जीवंतीशाक, करौंदा, मदिरा, छोटी इलायची, हरीतकी, गौका मक्खन व मट्ठा, कंकोल, आमला, कालानोन, कैथ, ऊंटकामूत्र, घृत, दूध, भिलावां, सरसोंका तेल, गोमूत्र कांजी, तुषोदक, और बातका नाशक तथा अग्नि का बढानेवाला अन्न व पान ये सब बवासीर में पथ्यहैं ॥ अथ अपथ्यम् ॥ कच्छदेश का मांस, मछली, पिण्याक अर्थात् खलीदही व पिसीवस्तु, उड़द करेला, बांसकी कोंपल, निष्पाव, बेल तूंबी, पोइशाक, आमका फल सब प्रकार के आलू, बिष्टम्भी, और भारी बस्तु, घाम ज्यादह जलपान, बमन, वस्तिकर्म्म, स्नेहका पीना, रुधिरका निकालना नदियों का जल, सब बिरुद्ध बस्तु, पूर्वके पवन का सेवन, बेग का रोकना, स्त्रीकासंग, पीठकी सवारी, अधिक खांसना और यथायोग्य दोषकीबढ़ाने वालीबस्तु इनसबों को बवासीर वाला त्यागदेवे और रक्तपित्तके रोगियों को जो पथ्य तथा अपथ्य कहेंगे वही चर्मकीलमें व खूनी बवासीर वालेको भी जानिये पान, यान, दिन में शयन भारीअन्न, ज्यादह भोजन, ब्यायाम, कलह, तीक्ष्णखारविधि इन्हों को त्यागे और जो पथ्य बवासीर में है वही चर्म्मकीलमें भी और औषध भी बवासीर और चर्मकील की समानहै ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायां बवासीरप्रकरणम् ॥

अथअजीर्ण कर्मविपाक ॥ जो द्रव्यवाला होके बलिबैश्वादिकर्म्म न करै। उसके मंदाग्नि होयहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ वह मनुष्यतीन प्राजापत्यकृच्छ्रव्रतकरके १०० ब्राह्मणको भोजन करावे ॥ पाराशर ॥ जो मनुष्य गौकेमांसको भक्षणकरै उसके मन्दाग्निरोगहोय ॥ प्रायश्चित्त ॥ वह मनुष्य प्राजापत्य कृच्छ्र को वा कृच्छ्रातिकृच्छ्रव्रत करै और अग्निके मन्त्रको जपकरै और श्रीसूक्तका पाठ करै ॥ और कर्मपाक संग्रह ॥ जो मनुष्य कारण बिना दूसरे मनुष्य को जहर देवै उसके मंदाग्नि रोग कल्पपर्य्यंतहोयहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इसपापके

नाशकेवास्ते यातेरुद्र इसमंत्रसे १०८ बार अग्निमें घृतकी आहुति देवे और तामग्निवर्णाम् इससूक्तके जाप १००० करावे और ४० ब्राह्मणोंको भोजनदेवे इससे आरामहोय ॥ अजीर्णउत्पत्ति ॥ प्रथम मनुष्यके मंदाग्नि १, तीक्ष्णाग्नि २ विषमाग्नि ३ समाग्नि ४ इनभेदोंसे जठराग्नि ४ प्रकारका होताहै और जिसकी कफप्रकृति होय उसके मंदाग्नि होयहै और जिसकी पित्तप्रकृतिहोय उसकेतीक्ष्णाग्नि और जिसके बातप्रकृतिहोय उसके बिषमाग्नि और जिसके बातपित्त कफतीनोंसे मिलीहुई प्रकृतिहोय उसके समाग्नि होयहै॥ विषूच्यादिनिदान ॥ अजीर्ण, आम, बिदग्ध ऐसे तीनप्रकारका अजीर्णहोयहै और अजीर्ण के कोपसे बिषूची, आलसिका, बिलंबिका ये होयहैं ॥ चारोंअग्नियोंकेकार्य ॥ बिषमाग्नि बायुके रोगों को पैदाकरै है और तीक्ष्णाग्नि पित्तके रोगोंको पैदाकरै है और मन्दाग्निकफके रोगोंको पैदाकरै है और समाग्निमें भोजनकिया अच्छी तरह पचैहै और मंदाग्निमें थोड़ा भोजनभी खायानहीं पकेहै और बिषमाग्नि में भोजन कभी पके कभी न पके है और तीक्ष्णाग्नि में ज्यादह भोजन किया भी सुखसे पके है इनसबों में समाग्नि श्रेष्ठहै॥ हिंग्वष्टक ॥ शुंठि, मिरच, पिपली, अजमाइन, सेंधा, जीरा, स्याह जीरा, हींग ये सबबराबर भाग ले इन्होंका चूर्णकरि घृतके संगभोजन के पहिली ग्रासमें खानेसे जठराग्निको बढ़ावै और बात गुल्म को नाशैहै ॥ विडंगादिचूर्ण ॥ बायबिड़ंग, भिलावां, चीता, हरीतकी शुंठि इन्होंके चूर्णमें बराबरभाग गुड़ घृतमिलाखानेसे मंदाग्निको हरैहै और बड़वाग्निके समान जठराग्निकोहरैहै ॥ जीरकादिचूर्ण॥ जीरा, कालानोन, शुंठि, पिपली, मिरच, बायबिड़ंग, सेंधा, अजमोद हरीतकी ये सब प्रत्येक तोला तोलाभर और निसोत ४ तोला इन्होंका चूर्ण जठराग्निको पैदाकरै और रेचन पाचनहै॥ बड़वानलचूर्ण ॥ सेंधा १ भाग, पिपलामूल २ भाग, पिपली ३ भाग चवक ४ भाग, चीता ५ भाग, शुंठि ६ भाग, छोटी हरीतकी ७ भाग इन्होंकाचूर्णकरै यह बड़वानलचूर्ण अग्निको दीपनकरैहै ॥ बह्निनामकरस ॥ जावित्री १॥ तोला, जायफल १॥ तोला, मिरच ४ तोला

गन्धक ६ माशे, पारा ६ माशे, लवंग ६ माशे, बच्च नागविष ६ माशे इन्होंको अमलीके रसमें खरलकरि उड़दसमान खानेसे अग्निको बढ़ावै और शूलको व बायुकोहरै यह बह्निनामक रसहै॥ कर्मविपाक॥ अन्नकी चोरी करने हारेके अजीर्णरोग होयहै॥ प्रायश्चित्त॥ तीनब्रत करके प्राजापत्य प्रायश्चित्त करै और अग्निरश्मी, इस मंत्रसे १००८ आहुति चरुघृतकी अग्निमेंदेवै अथवा जपकरै॥ दूसराप्रकार॥दूसरेको अन्नभोजन करनेमें बिघ्नकरै वह अजीर्णीहोय वह अग्नि में लक्ष १००००० आहुति दिवावै॥ भस्मकनिदान॥ जिसके तीक्ष्णाग्नि जठरमेंहोय वह पथ्य अपथ्य को न जानै और रूखा, कडुवारस नित्यखावै और दूध घृत वर्जितअन्नको नित्यखावै इन्होंसे कफघटि और पित्त बायुका सहायकारीहोय अपने स्थान में अत्युग्र अग्निको पैदाकरैहै तब वह बायुयुक्त पित्त देहको रूखा करदेयहै तब तीक्ष्णतासे वारम्बार अन्नको पकावैहै और अन्नपाक के अनन्तर रक्तादि धातुको पकावैहै तिससे दुर्बलता, रोग, मृत्यु इन्होंको प्राप्तकरै है इस रोगवाला अन्नका भोजन करते शांतिको प्राप्तहोय और अन्नजीर्ण होनेपर ब्याकुलहोय और तृषा, कास दाह, मोह ये रोगभस्मक के उपद्रवसे पैदाहोयहैं॥ भस्मकलक्षण॥ कफ क्षीण मनुष्य के अपने स्थान में पित्त बायुका सहायकारी हो तीव्र अग्नि को पैदाकरै है उसे भस्मक कहे हैं यह तिस, दाह मूर्च्छा, श्वासको प्रकट करि अन्नके भोजन व शरीरके धातुओं को खाय शरीरको मारदेयहै और खायाहुआ भोजन तो क्षणभरमें भस्मकरदेयहै इसवास्ते यहरोग भस्मकनामहै॥ चिकित्साक्रम॥ भारी चिकना, सांद्र, हिम, मण्ड, स्थिर ऐसे अन्न, पान पित्तनाशक औषध बिरेचन इन्होंसे भस्मकको शान्तकरै॥ भस्मक चिकित्सा॥ भस्मक रोगमें पहिले कफको जीतै पीछे पित्तको जीतै पीछे बायु को जीतै समधातु वाले मनुष्यके समाग्नि अन्नको पकावै और बल, पुष्टि आयु इन्हों को बढ़ावे है और अग्नि भोजन को पकावे है और वक्त ऊपर भोजन न मिले तो बातादि दोषों को पकाइ खावे है और दोष नाशहुये पर धातुओंको पकाइखावैहै और धातुका नाशकरि

प्राणोंको पकाइ नाशै है और भस्मक रोगवाले को अजीर्ण में भी बारम्बार भोजनदेवे क्योंकि भोजनरूप इंधन न मिलने से अग्नि रोगीको मारदेहै ॥ शमन ॥ भस्मक अग्निके शांतिवास्ते भैंसकादूध व दही व घृतका सेवन करै अथवा यवागूमें घृत व मोम मिलाइ सेवन से भस्मक नाश होवै ॥ विरेचन ॥ बारम्बार दूध का सेवन पित्तके नाशकरने वास्ते करावे अथवा काले व सपेद निसोत में पकाय दूध प्याइ रेचन कराना अच्छा है अथवा कफकारक व भारी व मीठे भोजनकरि दिनमें शयनकरै यहभी भस्माग्नि में हित है ॥ कोलास्थियोग ॥ बेरकी गुठलीकी गिरीका कल्ककरि जलके संग सेवन करनेसे बहुत जलदी भस्मक नाशहोयहै अथवा गूलर की छालको नारीके दूधमें पीस खानेसे अथवा इन दोनोंमें गौकेदूधको सिद्ध करके पीनेसे भस्मक नाश होवै अथवा सपेद चावल, सपेद कमल इनको बकरीके दूधमें खीरबनाइ और घृतमिलाइ १२ दिन तक खानेसे भस्मक नाशहोवै ॥ बिदारीकल्क ॥ भूमिकोहलाका रस ८ भाग, दूध ११ भाग, भैंसघृत १ भाग, हरणबेल, मुलहठी, रान मूंग, रानउड़द, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभ इन्होंका कल्क १ भाग इन सबोंको मिलाय पकाइ घृत को सिद्ध करि खानेसे भस्मक नाशहोवै अथवा त्रिफला, नागरमोथा, बायबिडंग, पिपली, खांड़, ऊंगाकेबीज सपेद इन्होंका लेहभस्मकको नाशैहै॥ अपामार्गादियोग ॥ ऊंगाके बीजों को पीसि दूधमें खीर बनाइ सेवन करनेसे उग्रभस्मक रोगनाशहोवै। ककेलाकी घड़पकीहुई २४ तोले और घृतमें मिलाइ प्रभातमें खाने से ४१ दिनतक यह अग्निकी तीव्रताको व भस्मक रोगको नाशै और अग्निको मंदकरै यहअनुभवसे कहाहै॥ अजीर्णाचेःभेद ॥ कफसे आमाजीर्ण १ पित्तसे बिदग्धाजीर्ण २ बायुसेबिष्टब्धाजीर्ण ३ रसशेष अजीर्ण ४ कोईके मतमेंवातादिदोषरहित दिनपाकी यहप्रतिबासर ६ ऐसे ६ प्रकारका अजीर्ण होयहै ॥ अजीर्णनिदान ॥ ज्यादह जलके पीनेसे वा अकालमें भोजन करनेसे वा मलमूत्रादिवेगके रोकनेसे वा समयमेंशयनका विपर्य्यय होनेसे हितकारक व थोड़ाभी अन्न भोजनकिया पकैनहीं है अथवा

ईर्षा, भय, क्रोध, लोभ, शोक, दीनतापना, बैरभाव इन्होंके सेवनसे संयुक्त मनुष्य के अन्नपके नहींहै॥ आमाजीर्णलक्षण॥ शरीर भारी रहै,बमनकीइच्छारहै,गालपै व नेत्रकूटपैसोजाहो जैसाभोजनकिया हो वैसा कच्चामलजावै,डकारआवै ये लक्षण आमाजीर्णकेहैं॥ बचादिबमन॥ आमाजीर्णमें बच, सेंधानोन इन्होंका चूर्ण गरम जल में मिलायपानकरि बमनकरना श्रेष्ठहै पीछे धनियां,शुंठि इन्होंका काढ़ा करिदेवै यह आमाजीर्णको व शूलको नाशै और बस्तिको शोधनकरै॥ लवंगादिकाढ़ा॥ लवंग व हरीतकी इन्होंकेकाढ़ामें सेंधानोन मिलाय पीनेसे अजीर्णको नाशै और यहरेचनकरैहै॥ वैश्वानरक्षार॥ थोहर आक,चीता,एरंड,लवण,सांठी,तिल,ऊंगा, केला,ढाक, अमलीइन्हों की भस्मकरि राख ६४ तोले लेवै और २५६ तोले पानी में मिलाय चतुर्थांश काढ़ाकरि ६४ तोले लवणघालि निधूमकठिन खारहो तब बारीक पीसि अजमाइन २ तोले जीरा २ तोले शुंठि२तोले मिरच २ तोले पिपली २ तोले स्थूलजीरा २ तोले हींग २ तोले इन्होंका चूर्ण मिलावै। पीछे सबको अदरकके अर्कमें भावना देवै पीछे सुखावै पीछे प्रभातमें अग्नि बलाबलदेखि इसको शीतलजलके संगखावै और जब यह औषध जीर्णहोजाय तब जांगल देशके जीवोंकेमांस का रस व यूषइन्होंसें कछुक अम्ल व लवणमिलाय मन्दमन्दगरम गरम पीवै व अग्निको दीपन करनेवाले पदार्थ खवावै यहअग्निको व बलको व आरोग्यको बढ़ावै और तक्रका अनोपान करावै अथवा तक्रके सङ्ग अन्न खवावै इससे मन्दाग्नि,बवासीर, बायु, कफ,सर्वांग सोजा,शूल,गुल्म,उदररोग,आम,पथरी,मलमूत्र संबंधी बायुके रोग नाशहोवैं॥ सामुद्रादिचूर्ण॥ खारी नोन, कालानोन, सेंधानोन, जवाखार,अजमान,हरीतकी,पिपली,शुंठि,हींग,बायबिडंग येसबबराबर ले चूर्णकरि घृतमें मिलाय भोजनसे पहिले पांचग्रास चूर्णकेकरै यह अजीर्ण को व बातको व गुदबात को व गुल्मबात को व प्रमेहको व बिषमबातको व बिशूचिका को व कामलाको व पाण्डुको श्वासको व कासको हरै है॥ हरीतक्यादियोग॥ हरीतकी अथवा शुंठि,गुड़केसंग खानेसे अथवा सेंधानोन युत खानेसे निरन्तर अग्निको दीपन करै है

आमाजीर्णादिपरगुडादि ॥ गुडकेसंगमिली शुंठिको अथवा गुड़,पिपली को अथवा गुड़हरीतकी को अथवा गुड़ अनारके खानेसे आमाजीर्ण ववासीर,मलावष्टंभ नाशहोयहै॥ गुडाष्टक ॥शुंठि,मिरच,पिपली,जमालगोटाजड़, निसोत, चीता, पिपलामूल इन्होंके चूर्ण में गुड़मिलाय खानेसे प्रभात में यह गुडाष्टक बलको व अग्निको व वर्णको बढ़ावै है और सूजनको व उदावर्त्त को व शूल को व प्लीहा को व पांडु को हरै है॥ पथ्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, पिपली, कालानोन इन्हों के चूर्ण को मस्तुकेसंग अथवा गरमजलकेसंग खानेसे और दोषोंको बिचार देखिकर वैद्यके बर्त्तावनेसे ४ प्रकारके अजीर्ण को व मन्दाग्नि को व अरुचिको व आध्मान वायुको व बात गुल्मको व शूलको जल्दी नाशै है॥ वृहच्छंखबटी ॥ थोहरखार ४ तोला आकका खार ४ तोला अमली खार ४ तोला ऊंगाखार ४ तोला केलाखार ४ तोला तिलकाखार ४ तोला पलाशका खार ४ तोला खारीनोन ४ तोला सांभर नोन ४ तोला सेंधानोन ४ तोला कालानोन ४ तोला मनयारीनोन ४ तोला और सज्जी का खार, जवाखार, सुहागाखार तीनों मिलके ४ तोला इन्हों का बारीक चूर्णकरि इसको ६४ तोले नींबू के रसमें गेरै पीछे अग्निपैतपाये शंखके टुकडे ४ तोले गेरै ऐसे ७ बार तपाय तपाय द्रव करै पीछे शुंठि १२ तोला मिरच ८ तोला पिपली ४ तोला भुनीहींग २ तोला पिपलामूल २ तोला चीता २ तोला अजमान २ तोला जीरा २ तोला जायफल २ तोला लवंग २ तोला पारा १ तोला गंधक १ तोला बचनागविष १ तोला सुहागा १ तोला मैनासिल १ तोला इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्त चूर्णमें मिलावै पीछे १६ तोला चूकाके रसमें खरलकरि १ माशाकी गोली बनावै यह वृहच्छंखबटी सब प्रकार के अजीर्णों को व सब शूलोंको व विशूची को व आलसिका को नाशैहै॥ लघुक्रव्यादिरस ॥ पारा १ भाग गन्धक २ तोला लोहाकी भस्म ६ माशे पिपलामूल ६ माशे पिपली ६ माशे चीता ६ माशे शुंठि ६ माशे लवंग ६ माशे काला नोन १ तोला सुहागा २ तोला मरिच २ तोला इन्होंका चूर्णकरि खट्टेरस में ७ भावना देवै यह १ माशा तक्र के संग खाने से खाये

भोजन को जीर्णकरै और अग्नि को दीपनकरै औ यहलघुक्रव्यादिरस सब प्रकार के अजीर्णों को नाशै है॥ बिदग्धाजीर्णलक्षण॥ भ्रमहो, तृषालगै, गरमी के नानाप्रकार के रोगहों, धूमानेलीया खट्टीडकारआवै दाह अरु पसीनाहो ये बिदग्धाजीर्ण के लक्षणहैं॥ बिदग्धाजीर्ण निदान॥ इस अजीर्ण में अन्नको शीतल जल को पान करिके पकावै तब शीललता से पित्तका नाशहोके आलापना से गुदाद्वारा निकालै है॥ निद्रानियम॥ भोजनके पहिले दिनमें शयन करनेसे पाषाणसमान अन्नभी जीर्णहो और भोजनके अंतमें शयन करने से दिनमें बात पित्त कफ ये कोपैहैं अथवा हींग, शुंठि, मिरच पिपली, सेंधा इन्हों के पानीमें पीस पेटके लेपकरि दिनमें शयन करने से सब प्रकार के अजीर्ण नाशहोय हैं॥ दिवानिद्रा॥ कसरत करिकै व स्त्रीसंग करिकै व गमन करिकै व सवारीपै फिरिकै इन्हों के सेवनसे थकेको व अतीसारवालेको व शूलवालेको व श्वासवाले को व तृषावालेको व हुचकी वालेको व वायुरोग वालेको व क्षय बालेको व कफक्षीण को व बालक को व मद वालेको व वृद्धको व अजीर्णवालेको व रात्रिमें जागेहुयेको व उपवास व्रत करनेवालेको दिनमें यथेच्छ शयन करवावै॥ बिष्टब्धाजीर्णलक्षण॥ शूलहो पेट में अफराहो बायुकी नानाप्रकारकी पीड़ाहो और मल व अधोवायु रुकजाय और शरीर जकड़बंध होजाय और मोहहो अंगमेंपीड़ाहो ये बिष्टब्धाजीर्णके लक्षण हैं॥ शास्त्रार्थ॥ विष्टब्धाजीर्ण में स्वेदन कर्म करावै और लवण युत पानीपीवै॥ रसशेपाजीर्णलक्षण॥ हिया दूखै और अन्नमें अरुचिहो शरीरभारीरहै ये लक्षण रसशेषअजीर्ण केहैं॥ शास्त्रार्थ॥ रसशेषमें दिनमें शयन करावै और पवन बर्जित स्थानमेंरक्खै॥ अजीर्णकारण॥ बिनाबिचारेखानेकेलोभी पशुकेसमान भोजन करैं उनको अनेक रोगोंका मूल अजीर्ण प्राप्तहो॥ अजीर्णकासामान्यलक्षण॥ ग्लानिहो, शरीरभारीहो व विष्टंभहो, भ्रमहो अपानबायु सरैनहीं ये सामान्याजीर्णके लक्षणहैं॥ अजीर्ण के उपद्रव॥ मूर्च्छाहो, प्रलाप, छर्दि, मुखसेपानीपड़ै, ग्लानि हो भ्रमहो ये उपद्रव होवैं तो वह मरजाय अलपआमसोदाषोंसे बंध होय वह

अग्नि का मार्ग रोंकेनहीं तब अजीर्णमें भी भूखलागे वा कच्चीभूख में जो खावै सो बिषके समान मारदेयहै और आयतासे भोजनकी विषमता होने से मनुष्योंके अजीर्ण होयहै वह अजीर्ण अनेक प्रकारके रोगों को उपजावैहै और जब अजीर्ण का नाशहो तभी वह रोगभी नाश होवै ॥ भास्करलवणचूर्ण ॥ पिपली ८ तोला पिपलामूल ८ तोला धनियां ८ तोला स्याहजीरा ८ तोला सेंधानोन ८ तोला मनयारी नोन ८ तोला तालीस पत्र ८ तोला नागकेशर ८ तोला कालानोन ८ तोला मरिच ४ तोला जीरा ४ तोला शुंठि ४ तोला दालचीनी २ तोला इलायची २ तोला सामुद्रनोन ३२ तोला अनारदाना १६ तोला अम्लबेतस ८ तोला इन्होंकाचूर्णकरे और घृतसे चिकना और कलुक मदिरा गंधयुत अमृत के समानहै यह लवणभास्कर भास्कर यानी सूर्य्य ने जगत्के कल्याण वास्ते प्रकट कियाहै और यह चूर्ण बातरोगको व कफरोगको व आमरोग को व वातगुल्म को व वातशूल को हरैहै और तक्र व मस्तु व मदिरा व सिंधु व कांजी इन्होंके संग खानेसे मंदाग्निको व हृदयरोग को व आमदोष को व उदर रोगोंको व अनेक प्रकारके रोगोंको लवणभास्कर नाशैहै ॥ अग्निमुखचूर्ण ॥ हींग १ भाग, बच २ भाग पिपली ३ भाग, अदरख ४ भाग, अजमान ५ भाग, छोटी हरीतकी ६ भाग, चीता ७ भाग, कुट ८ भाग इन्हों का चूर्ण करि खाने से मदिराके संग व दही के मस्तुके संग व गरम पानीके संग उदावर्त्तको व अजीर्ण को व प्लीहाको व उदर रोगको व अंगगलताको व विषखाने को व बवासीर को व शूलको व गुल्मको व कास को व श्वास को व क्षयीको यह अग्निमुख चूर्ण हरैहै और दीपन है॥ वृद्धाग्निचूर्ण ॥ सुहागाखार, जवाखार, चीता, पाढ़ा, करंज, सेंधानोन, सांभर नोन, कालानोन, मनयारी नोन, खारीनोन, छोटीइलायची, तमालपत्र, भारंगी, बायबिडंग, हींग, पुष्करमूल, कचूर, दारुहलदी, निसोत, नागरमोथा, बच, इन्द्रयव, आमला, जीरा, आमसोल, धमासा, कलौंजी, अम्लबेतस, अमली, अनारदाना, शुंठि, मिरच पिपली, भिलावां, अजमोद, अजमान, देवदारु, नेत्रबाला, अतीस

हपुषा अमलतास, सपेद निसोत, तिल, सहिंजन, घंटापाटली वृक्षयानी लोध्रविशेष, कोकिलाक्ष, पलाश इन्होंका दूध गोमूत्रमें भावनादियाँ लोहमंडूर ये सब बराबर भागले महीनचूर्णकरै इसचूर्णको विजोरा के रसमें ३ दिन भावनादेवै पीछे ३ दिन कांजीमें भावनादेवै पीछे ३ दिन अदरख के रसमें भावना देवै यह वृद्धाग्नि चूर्ण अग्निको बढ़ावैहै और विधिसे खायाहुआ जल्दी रोगोंको हरैहै और विशेष करि अजीर्ण को व गुल्मको व प्लीहाको व उदर रोगको व संग्रहणी को व पांडुरोग को व श्वासको व कासको व प्रतिश्याय को व क्षयको व शोषको व कफजविद्रधिको अंत्रवृद्धिको व अष्ठीलाको व बातरक्तको व उल्वण बातादिदोषोंको हरैहै और अग्निकोबढ़ावै और इसमें सब तरह के पदार्थ पथ्यहैं इसचूर्ण के खानेकीमात्रा १ तोलाहै और जो सूखे औषधहैं उनको इसीमेंकहे द्रव औषधोंमें गो दोहन काल तक पकावै यह वृद्धाग्निमुखचूर्णराजब्रह्माजी का बनाया अश्विनीकुमारों का प्रकट किया है॥ यावशूकादिचूर्ण॥ जवाखार, शुंठि, हरीतकी इन्होंका काढ़ा अथवा चूर्ण अजीर्णसे उपजे रोगको हरैहै॥ लघुचित्रकादिचूर्ण॥ चीता, अजमोद, सेंधानोन, शुंठि मिरच इन्होंके चूर्ण को खट्टे तक्रके संग खानेसे ७ दिन तक यह अग्निको बढ़ावै और बवासीरको नाशैहै॥ शुंठ्यादिचूर्ण॥ शुंठि, जवाखार इन्होंका चूर्ण घृतयुत खानेसे अथवा गरम पानीकेसंगखानेसे भूख लगावे है॥ कणादिचूर्ण॥ पिप्पली, सेंधानोन, हरीतकी, चीता इन्हों का चूर्ण गरम जलके संगखानेसे प्रभातमें भूखलगावै और अग्नि को बढ़ावे है॥ कपित्थादियोग॥ कैथा, तक्र, चूका, मिरच, जीरा, चीताकी जड़ इन्हों का चूर्ण कफ बात को हरै है और ग्राही है और बलको बढ़ावैहै और दीपन पाचनहै॥ ज्वालामुखचूर्ण॥ हींग १ तोला अम्लबेतस १ तोला शुंठि मिरच पीपल १ तोला चीता १ तोला जवाखार १ तोला गुड़ ४ तोला इन्हों को मिलावे यह ज्वालामुख चूर्ण अग्निको बढ़ावैहै और अजीर्ण मात्रको नाशैहै॥ व्योषादिचूर्ण॥ शुंठि, मिरच, पिप्पली, इलायची, हींग, भारंगी, खारी नोन, जवाखार, पाढ़ा, अजमान, अमली, दालचीनी, चाव, चीता

गजपिपली, सालीभस्म, पिपलामूल, जीरा, सांभरनोन ये सबबरा-
बर ले चूर्णकरै और घृत युत करि खानेसे ३ दिनमें सम रोगों को
हरैहै और यह अग्निरूप चूर्ण अजीर्णकोतो उसीवक्तहरै॥ शुंठ्यादि
चूर्ण॥ शुंठि५ भाग,पिपली ४भाग,अजमोद३ भाग,अजमाइन२भाग
सांभर नोन १ भाग, हरीतकी १६ भाग इन्हों के चूर्ण को खाने से
पेटके गुड़गुड़ शब्द को व आमको व गुल्म को व मलकोहरै और
यह चूर्ण पाषाणको भी भस्मकरै और अजीर्णकातो क्याकहनाहै॥
विश्वादिचूर्ण॥ शुंठि १ तोला मिरच २ तोला पिपली ३ तोला नागर-
पान ४ तोला दालचीनी ५ तोला छोटी इलायची ६ तोला ये पदार्थ
क्रम वृद्धिसे लिये चूर्ण करि और बराबर की खांड मिलाय खानेसे
अरुचि को व श्वास को व बवासीर को व गुल्मको व छर्दिकोहरै॥
चित्रकादिचूर्ण॥ चीता, चाव, मिरच, पिपली, हींग, गजपिपली, कचूर
अजमान, शुंठि, जवाखार, पांचोंतरह के नोन इनसबों को बराबरले
बिजौराकेरसमें भिगोवै अथवा अनारकेरसमें भिगोवै पीछे यह चूर्ण
खानेसे आमरोगको व संग्रहणीको व कफको व बायुको व अग्नि म-
न्दताको नाशैहै॥ लवणादिचूर्ण॥ मनयारीनोन, चीता, जीरा, स्याह
जीरा, अजमान, हरीतकी, शुंठि, मिरच, पीपल, कालानोन, दालचीनी
अमली, अजमोद, अम्लवेतस, बायबिड़ंग यह चूर्ण सम्पूर्ण अजीर्णों
को नाशैहै॥ बड़वानलचूर्ण॥ हरीतकी, करंजवाकीछाल, चीता, पिपला-
मूल, शुंठि, मिरच, पिपली, खांड इन्हों को बराबर भाग मिलाइ
खानेसे यह बड़वाग्नि चूर्ण अजीर्णको हरैहै॥ पञ्चाग्निचूर्ण॥ अम्ल-
वेतस, अर्जुनवृक्ष, थोहर, मूर्वा, जमींकंद इन्होंके चूर्ण को तक्र के
संग खानेसे जठराग्नि बढ़े॥ विश्वभेषजचूर्ण॥ शुंठि, हींग, सुहागाखार
पिपली, कालानोन इन्होंके चूर्ण को सहिंजन के रसकी भावना दे
खानेसे शूलको हरै और भूखको बढ़ावै॥ संजीवनीगुटी॥ बायबिड़ंग
शुंठि, पिपली, हरीतकी, चीता, बहेड़ा, बच, गिलोय, भिलावाँ, अतीस
इनको बराबर भाग ले गोमूत्रमें खरल करि १ रत्तीकीगोली बांधै
यहगोली अदरख के अर्कके संग खाइ और अजीर्ण में १ गोली देवै
और विशूचीमें २गोलीदेवै औरसांपडसेको ३ गोलीदे और सन्निपात

में४गोलीदेवै यह संजीवनी गोली मनुष्यको जिवावेहै॥ धनंजयवटी॥
जीरा१तोला चीता१तोला चाव१तोला कालानोन १ तोला वच १
तोला दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला कपूर १ तोला हंस-
पादी १ तोला अजमोद १ तोला नागकेशर १ तोला अजमान ८
माशे पिपलामूल ८ माशे सज्जीखार ८ माशे हरीतकी ८ माशे
जायफल२तोला लवंग २ तोला धनियां३तोला तमालपत्र३ तोला
पिपली४तोला सांभरनोन४तोला मिरच ७तोला निसोत ८ तोला
खारीनोन १० तोला सेंधानोन१० तोला शुंठि १० तोला चूका३२
तोला अमली१६तोला इन्होंको पीस गोली बनावै यह धनंजयवटी
धनंजय अग्निको बढ़ावै और अजीर्ण को जरावै और शूलकोशरीर
से बाहरकरै और विड्बंधको व अफराको व संग्रहणीकोनाशै और
रुचि को उपजावै॥ शंखवटी॥ असलीखार, पीपलखार, थोहरखार
ऊंगाखार, आकखार, पांचोनोन ये सब प्रत्येक आठआठ तोले
शंखभस्म २ तोला त्रिफला १ तोला लवंग २ तोला इन्होंका चूर्ण
करि निम्बूके रसमें ७ भावना देइ यह शंखवटीरस १ रत्ती खाने से
अग्नि को दीपन करै और पाचनहै और यह वातके अजीर्ण को व
पित्ताजीर्ण को व कफाजीर्णको व विशूचीको व शूलको व आनाहको
हरै इसमें सन्देह नहीं॥ लवंगामृतवटी॥ मिरच ३ तोला पिपली ३
तोला अजमाइन ८ तोला चीता ८ तोला सांभरनोन सेंधानोन
कालानोन मिलके ४ तोला पिपलामूल७तोला शुंठि हरीतकी १०
तोला बहेड़ा६तोला आमला ६तोला भिलावां ६तोलाजीरा६ तोला
चाव६तोला इन्द्रयव२० तोला लवंग४५ तोला लेवे इन्होंका चूर्ण
करि बस्त्रमें छानि अदरखकेरसमें३ भावनादेवै पीछे चूकाकेरसमें ३
भावना देवै पीछे २ माशाकी गोली बांधै ये लवंगामृत गोली खाने
से अग्निको दीपन करै और बल,आयु को बढ़ावै और रजस्वला
नारी सम्बन्धी रोगों को हरै॥ व्योषादिगुटी॥ शुंठि, मिरच, पिपली
पिपलामूल, इलायची, पांचोंनोन, जीरा, स्याहजीरा, धनियां, नाग-
केशर, कैथा, दालचीनी, चूका, अमली, सेंधानोन इन्होंकाचूर्णकरि
अदरखके रसमें व नींबूके रसमें भावना देइ खानेसे रोगों को हरि

अग्निको दीपनकरै ॥ हरीतक्यादिवटी ॥ छोटीहरीतकी ६ भाग पिपली ४ भाग गजपिपली ४ भाग चीता १ भाग सेंधानोन १ भाग इन्हों को महीन पीस गोली बनाइ खानेसे अग्नि को दीपन करै ॥ तक्रहरीतकी ॥ शैत १०० बड़ी हरीतकियों को तक्रमें उबालि अग्नि से बीज काढ़ै पीछे पिपली १ तोला पिपलामूल १ तोला चवक १ तोला चीता १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पिपली १ तोला खारीनोन १ तोला सेंधानोन १ तोला मनयारीनोन १ तोला कालानोन १ तोला सांभरनोन १ तोला हींग १ तोला जवाखार १ तोला जीरा १ तोला अजमोद १ तोला निसोत ८ माशे इन्होंका चूर्ण करि कपड़ा माहँ छानि चूका के रसकी भावना देइ इस द्रव्य को पूर्वोक्त १०० हरीतकियों का गर्भ में स्थापन करि भरै पीछे सुखाय एक हरीतकी नित्य सेवन करने से अजीर्ण को व मन्दाग्निको व पेट रोगको व शूलको व संग्रहणीको व बवासीरको व विड्बन्धको व अफराको व आमवातको यह अमृत हरीतकी नाशै है ॥ चित्रकगुड़ ॥ चीता, दशमूल इन्होंका काढ़ा ८०० तोला गिलोय कारस २५६ तोला हरीतकी २५६ तोला गुड़ ४०० तोला इन्होंका पाक अग्निपै बनाइ दुसरे दिन शीतल होनेपर ३२ तोला शहद जवाखार २ तोला मिलाइ एकत्र करै यह अश्विनीकुमारोंने अग्निकी वृद्धिके वास्ते कहाहै और यह खानेसे अजीर्णको व श्वासको व खांसीको व कृमि रोगको व क्षयरोगको व गुल्मको व पेटकेरोगों को व बवासीरको व सबतरह के कुष्ठ को व अंत्रवृद्धिको नाशै है और सैकड़ों दवाइयों से जो पीनस अच्छा न हुआहो उसकोभी ३ दिनमें चित्रक गुड़ नाशै है ॥ द्राक्षादियोग ॥ जिसके पेट में दाहहो और भोजनकिया पदार्थ भी शरीरको जलावै और हृदयके व कोठाके मलभीजलै उसमनुष्य को मुनक्का, दाख, मिश्री, शहदमें मिलाय देवै अथवा हरीतकी मिश्री शहद में मिलाय खवावै सुखप्राप्तहोवै ॥ यवागू ॥ चीता १ भाग चवक २ भाग, शुंठि ३ भागले यवागू बनाय खानेसे गुल्मको व वायुशूलको हरै है और आश्चर्यरूप अग्निको पैदाकरैहै॥ कव्यादिकल्क ॥ इलायची, लवंग, मिरच, सीपीभस्म, चूका, शुंठि, सेंधानोन, भटोरा

पांचोनोन इन्होंका चूर्णकरि कपड़ामेंछानि यह क्रव्यादिरस अजी-र्णको हरैहै ॥ क्षारयोग ॥ सज्जीखार ४ तोला जवाखार ४ तोला सुहागाखार ४ तोला पारा ४ तोला लवंग ४ तोला सेंधानोन ४ तोला मनयारीनोन ४ तोला कालानोन ४ तोला पिपली ४ तोला गंधक ४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला बचनागविष १ तोला इन्होंको महीन चूर्णकरै पीछे इसको आक के दूधमें ७ दिन तक खरलकरि अंधमूषा यंत्रमें धरि गजपुटमें फूंकदेवै स्वांगशीतलहोने पर काढ़ै पीछे लवंग ४ तोला मरिच ४ तोला फटकड़ी ४ तोला इन्होंका चूर्ण करि पूर्वोक्त में मिलाय महीनपीसि सुन्दर बर्त्तन में घालिरक्खै पीछे २ रत्ती रोजखाने से भुक्तको जीर्णकरै और भूखको जगावै और आम को व कफरोग को नाशै ॥ अग्निमुखरस ॥ पारा गंधक, बचनागविष इन्होंको बराबर भागले अदरख के अर्क में खरलकरिऔर पीपलकाखार, अमलीकाखार, ऊंगाकाखार, जवाखार सज्जीखार, सुहागाखार, जायफल, लवंग, शुंठि, मिरच, पिपली त्रिफला ये सब बराबर भागलेवै औ शंखभस्म, जवाखार, पुष्कर-मूल, सज्जीखार, पलाशखार, तिलकाखार ये सबभी बराबर भाग ले जीरा २ भाग हिंग २ भाग इन्होंको नींबूकेरस में खरल करि १ रत्ती की गोली बनायखावै ये गोली पाचनी है दीप्रनी है और अजीर्णको व शूलको व विशूचीको व हुचकीको व गुल्मको व उदरके रोगोंको नाशै है यह बह्निमुखरस है ॥ अजीर्णारिरस ॥ शुद्धपारा ४ तोला, शुद्धगन्धक ४ तोला, हरीतकी ८ तोला, शुंठि १२ तोला पिपली १२ तोला, मिरच १२ तोला, सेंधानिमक १२ तोला, भांग १६ तोला इन्हों को चूर्ण करि नींबूकेरस में ७ भावना देवै और बारम्बार धूपमें सुखावै यह अजीर्णारिरस दीपन पाचन है और हमेशका भोजन से दुगुना भोजन कियेको पचावै अथवा रेचन करिशुद्धकरै ॥ पाशुपतरस ॥ पारा १ तोला, गंधक २ तोला, कांतभस्म ३ तोला इनसबोंके समान भाग बचनागविष लेवै इन्होंको चीता के रसमें खरल करैपीछे शुंठि, मिरच, पिपली २ भाग लवंग २ भाग इलायची २ भाग जायफल १ भाग जावित्री १ भाग पांचोनोन १

तोला थोहरकाखार २ तोला आककाखार २ तोला अमली का खार २ तोला ऊंगाकाखार २ तोला पिपलकाखार २ तोला सुहागाकाखार १ तोला जवाखार १ तोला हींग १ तोला जीरा १ तोला हरीतकी १ तोला येलै पीछे इन्होंको नींबूके रसमें खरल करै और धतूराके बीजोंकी भस्म ७ भाग मिलाय यह पाशुपतरस है इसकी गोली चिरमटी समान बनावै और खाने से सब अजीर्णों कोनाशै और तालमूल तक्रकेसंग गोली खानेसे पेटकेरोगोंकोनाशै है और मोचरसके संग गोली खानेसे अतीसारको नाशैहै और तक्र सेंधानोनके संग गोलीको खानेसे संग्रहणीको नाशै और शुंठि,हींग कालानोन इन्होंके चूर्णके संग गोली खानेसे शूलको नाशै और तक्र के संग गोली खानेसे ववासीर को नाशै और पिपली चूर्णके संग गोलीखानेसे क्षयीको नाशै और शुंठि, कालानोनके संग गोलीखाने से वायुके रोगको नाशै और गिलोयरस खांड के संग गोली खाने से पित्तकेरोगको नाशै और पिपली,शहदकेसंग गोली खानेसे कफ रोगको नाशै इस गोलीसे अच्छी और गोली धन्वन्तरि के मत में नहीं है॥ आदित्यरस॥ सिंगरफ,वच, नागविष गन्धक, शुंठि, मिरच पिपली,त्रिफला,जायफल,लवंग,सेंधानोन,कालानोन,मनयारीनोन खारीनोन, सांभरनोन इन्होंका चूर्णकरि निम्बूके रससें ७ भावनादेइ पीछे आधीरत्तीकी गोलीबनाइ खानेसे यह आदित्यरस अजीर्णको नाशै और खायेपदार्थकोपकावै और जठराग्निकोबढावै॥हुताशनरस॥ वचनागविष १ भाग सुहागाखार ८ भाग मिरच १२ भाग इन्हों का चूर्णकरि खानेसे यह हुताशनरस अग्निको बढाइ बातकफको नाशैहै॥ अजीर्णकंटकरस॥ पारा,गंधक,वचनागविष येसमानभागले और मिरच ३ भागले इन्होंको बड़ी कटैलीकेरसमें २१ भावनादेइ ३ रत्तीखावै यह कंटकरस जलदी जठराग्निको बढावै और विशूची को व अजीर्णको व बायुके रोगोंको नाशै ॥ रामबाणरस॥ पारा १ भाग वचनागविष १ भाग गंधक १ भाग मिरच २ भाग जायफल आधाभाग इन्होंको अमलीकेरसमें खरलकरि तय्यारकरै यह राम बाणरस रावणरूपअजीर्णको नाशै और संग्रहणी को व आमबात

को व मन्दाग्निको व कफको व श्वासको व खांसीको व छर्दिको व कृमिको नाशै इसकीगोली चनासमान बरते और यह अग्निको भी दीपनकरैहै॥ दूसराप्रकार॥ शुद्धजयपाल ४ माशे वचनागविष १ माशे पारा १ माशे गंधक १ माशे सुहागा १ माशे इन्होंको भृंगराजकेरसमें बारम्बार खरलकरि २ रत्तीकेप्रमाण गोली बनायखानेसे यह रामबाणरस कफ, बात, अजीर्ण, विष्टम्भ, आध्मान, शूल, श्वास, कास इन्होंको हरै॥ ज्वालानलरस॥ इलायची १ तोला दालचीनी २ तोला अभ्रकभस्म ३ तोला लवंग ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ५ तोला शुंठि ६ तोला और इन सबों के समान मिश्रीले और इसमें सज्जीखार, सुहागाखार, जवाखार, पारा, गन्धक, पिपली, पिपलामूल, चवक, चीता, शुंठि, चीताजड़ येसमान भागले इन्होंकाचूर्ण ३॥ तोला ले और भूनीभांग ३॥ तोला सहिंजनकीजड़ १॥। तोला इन्होंको पूर्वोक्तमें मिलावै पीछे अरणीकेरसमें खरलकरै पीछे सहिंजन के रस मेंखरलकरै पीछे चीता के रसमें खरल करै पीछे अदरखके रसमें खरलकरि ऐसे ३ भावना धूपमें देइ लघुपुटमें फूंकदेवे शीतल होने पर काढ़ि अदरखके रसमें ७ भावनादेनेसे ज्वालानलरस सिद्धहोवे है इसको ४ माशेशहद मिलायखाइके ऊपर शुंठियुत गुड़का अनोपान करै यह अजीर्णको व अतीसारको व संग्रहणीको व मन्दाग्निको व कफरोगको व हल्लासको व छर्दिको व आलस्यको व अरुचिकोनाशै है॥ चिन्तामणिरस॥ पारा, गन्धक, तांबाकीभस्म, अभ्रकभस्म, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली, जयपाल येबराबरभाग ले इन्होंको कुम्भीके रसमेंखरलकरि सुखाइ कपड़ामें छानि सिद्धकरै यहचिन्तामणिरस अजीर्णको नाशै और आठप्रकारके ज्वरको व सबतरह के शूलोंको व आमबातको हरै इसकी मात्रा १ रत्ती अथवा २ रत्ती है॥ पंचमूलादिघृत॥ पंचमूल, हरीतकी, शुंठि, मिरच, पिपली, पिपलामूल, सेंधानोन, रास्ना, जवाखार, सज्जीखार, जीरा, बायबिड़ंग इन्हों का करि और बिजोरा रस, अदरख रस, तक्र, मस्तु, माड़ कांजी तुषोदक ये सब मिलाय घृतको मिलाय पकाइ सिद्धकरै यह घृतअग्नि को बढ़ावै और गुल्मको व शूल को व पेटके रोगोंको व

कासको श्वास को व वायु को व कफको हरै है॥ दशमूलादिघृत॥ मिरच २ तोला पिपलामूल २ तोला शुंठि २ तोला पिपली २ तोला भिलावां २ तोला अजमान २ तोला बायबिडंग २ तोला गजपिपली २ तोला हींग २ तोला काला नोन २ तोला जीरा २ तोला खारीनोन २ तोला धनियां २ तोला सांभर २ तोला सेंधा-नोन २ तोला जवाखार २ तोला चीता २ तोला बच २ तोला इन्हों का काढ़ा करि घृत ६४ तोला दशमूलकारस दूध आठगुणा मिलाय घृत को सिद्धकरि खानेसे मन्दाग्नि को व संग्रहणीको व विष्टंभ को व आम को व दुर्बलपना को व प्लीहा को व श्वास को व कासको व क्षयी को व बवासीर को व भगन्दर को व कफ रोगको व बातरोग को व कृमि रोग को नाशै दृष्टान्त जैसे सूखे काष्ठ को दावाग्नि तैसे॥ धान्यादिघृत॥ धनियां, जीरा इन्हों के काढ़ा में घृत को सिद्ध करि खाने से जठराग्निबढ़ै और रुचिउपजै और दोषोंकोहरै और बातपित्त को हरै॥ अग्निघृत॥ पिपली २ तोला पिपलामूल २ तोला चीता २ तोला गजपिपली २ तोला हींग २ तोला चवक २ तोला अजमोद २ तोला पांचोनोन २ तोला सज्जीखार २ तोला जवाखार २ तोला हंसपदी २ तोला इन्हों का काढ़ा अथवा कल्ककरि दही ६४ तोला सूक्त ६४ तोला घृत ६४ तोला अद-रखकारस ६४ तोला इन्होंको मिलाइ मंदाग्निसे पकावै यहअग्नि घृत मन्दाग्निको व बवासीरको व गुल्मको व पेटके रोगको व संग्र-हणीको व सूजनको व भगन्दरको व बस्तिकर्म को व कुक्षिरोगको हरै दृष्टान्त जैसे सूर्य अंधेराको तैसे॥ शार्दूलकांजिक॥ पिपली, अद-रख, देवदारु, चीता, चवक, वेलपत्र, अजमोद, हरीतकी, शुंठि, अज-मान, धनियां, मिरच, जीरा ये बराबर भागले इन्हों की कांजीबनाय पीनेसे यह शार्दूलकांजि अग्निको बढ़ावै और इन्हों को सिरसोंके तेलमें भूनि कांजीकरि पीनेसे दशरोगोंको हरै कासको व श्वासको व अतीसारको व पांडुरोगको व कामलाको व आमको व गुल्मको व शूलको व वायशूलको व पेटकी पीड़ाको व बवासीरको व सोजा को व भुक्तवांति को हरै और क्षीक्षीरपाक के समान इसकांजी को

सिद्धकरै ॥ विशूचिकादिसंप्राप्तिनिदान ॥ जो पुरुष के मन्दाग्नि में प्रथम आमाजीर्ण हुआ और पीछे वह पशुकी भांति अधिक गरिष्ठ वस्तुखाय तो उसके विशूचिका, मूर्च्छा, अतीसार, बमन, भ्रम, पीड़ा हड़फूटन, जम्हाई, दाह और शरीरका वर्ण और का और होजाय कम्प हृदय और मस्तकमें पीड़ा और शरीर में सुईचुभेकैसे लक्षण हों उसको वैद्य वैद्यविशूची कहतेहैं ॥ आलसकनिरुक्ति ॥ भोजनकिया हुआपचैनहीं और ऊपरनीचेजावे और आमाशयमें अलसीभूतरहै इसवास्ते इसको आलसक कहते हैं ॥ आलसक व दंडालसकलक्षण ॥ जिसकी कुक्षिमें ज्यादह अफरा हो और शब्दहो कुक्षिमें और निरुद्धहुआ पवन कुक्षिकानीधावनकरै और मल मूत्र व गुदाकी वायु रुकजावे और तृषालगै और डाकलगैयह अलसकके लक्षणहैं और बायुकोपीहुई कंपको, भ्रम, अफरा, शूलादिकको करै और पित्तकोप हो ज्वरको, अतीसारको, दाहको, पसीनाकोकरै और कफकोपि अंग भारीपनाको, छर्दिको, गुंगपनको, ज्यादहथूकनारहै और आलसक में बातादि दोष छर्दि अतीसार को वर्जिकरि तीव्रशूल को पैदाकरै है और नाड़ियोंके मार्गोंको रोकि तिरछेहो शरीरमें जाय शरीर को स्तंभनकरै दण्डके समान ये लक्षण दण्डालसकके हैं यह जलदी देहको नाशकरै है इसमें वैद्य इलाज करे नहीं ॥ विलंबिकालक्षण ॥ जिसका भोजनकिया अन्नकफ व पवनसेदुष्टहोइनीचे व ऊपर न जावै वह बिलंबिका होवै है वैद्यलोग इसको असाध्य कहे हैं और जिस मनुष्यके दांत व ओष्ठ व नख ये काले रंगहों और थोड़ी सञ्ज्ञाहो और छर्दि बहुत आवै और गड़े हुयेहों और स्वर बहुत हलकाहोजाय और सम्पूर्ण शरीरकी संधि शिथिलहों ये लक्षण विशूचीमें व अलसकमेंहों तो वहरोगी निश्चयमरै ॥ जीर्णआहारलक्षण ॥ डकार शुद्ध आवै और शरीर में उत्साहहो और मल मूत्र और पवन की अच्छी तरह प्रवृत्तिहो शरीर हलकाहोय भूख प्यास अच्छी तरह लगै तो अजीर्ण गया जानिये विशूचीके उपद्रव नींदकानाश, सब पदार्थों में अरति, कंप, मूत्रनिरोध, मूर्च्छा ये पांच उपद्रव विशूचीमें असाध्यहैं ॥ विशूचिकाचिकित्सा ॥ ज्यादह जो बढ़जावै तो पाणिनियाने

पैर के पीछाको दागदेवै अथवा गंधक किंवा केशर निंबूके रस में मिलायखानेसे विशूची जावै ॥ लशूनादिचूर्ण ॥ लशून, जीरा, सेंधानोन कालानोन, शुंठि, मिरच्च, पीपल, हिंग इन्हों को बराबर भागले निम्बू के रसमें खाने से विशूचिका को हरे ॥ अपामार्गादियोग ॥ उंगा की जड़को जलमें पीसि पीने से विषूचीका नाशहोवे अथवा करेला का रस तेलयुत पीनेसे विषूची जावै ॥ बिलंबिकाव अलसककीचिकित्सा ॥ बिलंबिका व अलसकमें बमन व रेचन हितहै और नलीसे वा फल की वत्तीसे वा शोधन औषधसे दंडा लसकमेंभी यही कर्मकरै और फलवत्ती, बमन स्वेदन, लंघन, अपतर्पण, ये सब आलसकमें हितहैं और विषूचीमें अतीसारोक्त उपचार करै ॥ बालमूत्रादिकाढ़ा ॥ बाल मुलाका काढ़ा पिपली चूर्णयुत पीनेसे विसूचीको नाशै और अग्नि को बढ़ावै ॥ तक्रयोग ॥ यव के सत्तू को तक्र में मिलाय और जवा-खार युतकरि अग्निमें गरमकरि पसीना लेनेसे किंवा बाफ लेनेसे किंवा सेककरनेसे किंवा हातगरम करि सेकनेसे विसूचिकाको नाशै है ॥ विल्वादिकाढ़ा ॥ बेलफल, शुंठि इन्हों का काढ़ा छर्दि को व वि-सूचिकाको हरै है अथवा बेलफल, शुंठि, कायफल इन्होंका काढ़ा पीनेसे विसूचिकाको हरैहै ॥ यवपिष्टलेप ॥ यवांकी पीठी, जवाखार इन्होंको तक्रमें मिलाय गरमकरि लेपकरनेसे उग्रभी पेटके शूलको हरैहै ॥ कुष्टादिलेप ॥ कूट, सेंधानोन इन्होंको आमसोलके तेल मेंमि-लाय गरमकरि मलनेसे विषूची को व शूलको हरैहै ॥ साधारणलेप ॥ दारुहलदी, हरीतकी, कूट, शतावरि, हिंग, सेंधानोन, इन्होंको खट्टा रसमें पीसिलेप करनेसे पेटका शूल व अफारा नाशहोवेहै ॥ लवंगा-दिचूर्ण ॥ लवंग ८ माशा, इलायची ६ माशा, जायफल ६ माशा, अफीम १ माशा इन्होंका चूर्णकरि ४ माशेचूर्ण गरमजलकेसंगखाने से दारुण विषूचीको व शूल को व अतीसार को व छर्दि को हरैहै पथ्यादिचूर्ण ॥ हरीतकी, वच, हींग, कूड़ाकी छाल, भृंगराज, काला नोन, अतीश, इन्होंका चूर्णकरि गरमजल के संग खानेसे अजीर्ण को व शूलको व विषूचीको व कास को हरैहै ॥ शंखद्राव ॥ सेंधानोन ५ भाग कालानोन ५ भाग सांभरनोन ५ भाग, मणयारीनोन ५ भाग

खारीनोन ५ भाग जवाखार ५ भाग, हीराकसीस ४ भाग, सुहा-
गाखार ४ भाग तूतिया ४ भाग गंधक ४ भाग नींबूकारस ४ भाग
तिलकाखार ४ भाग, डंगाकाखार ४ भाग नौसादर २ भाग,
सौराष्ट्री २ भाग, साजीखार २ भाग, इन सबों को जंभीरी नींबू
के रसमें खरलकरि नलिकायंत्र में २ पहरतक अग्निमें पकावै ऐसे
शंखद्राव सिद्ध होवे है यह सब दोषों को हरै और लोह व पाषाण
को भी द्रवकरै अजीर्ण का तो कहना क्या है इसमें संशय नहीं
दालचीनीतैल ॥ दालचीनीतमालपत्र, रास्ना, अगर, सहोंजनाकीजड़
कूट, बच, शतावरि इन्होंको नींबूकेरसमेंपीसि शरीरमें मलनेसेकिंवा
इन्हों में तेल को पकाय मलनेसे वायुशूलको व विषूचिकाकोनाशैहै
॥ चुक्रतैल ॥ चूका ४ तोला कूट २ तोला नींवछाल २ तोला सेंधानोन
१ तोला पिपली १ तोला जायफल १ तोला कडुवातेल १६ तोला इन्हों
को मिलाय तैलको सिद्धकरै यह चुक्रादि तैल विषूचीको हरै और
सेंधानोन, कूट इन्हों को कल्क में चूकाके तैल को मिलाय इस की
मालिस से बिषूची व शूल नाशहो ॥ अर्कादितैल ॥ आकका रस ६४
तोला धतूरा का रस ६४ तोला सफेद थोहरका रस ६४ तोला
सहोंजनाका रस ६४ तोला कुटकल्क ८ तोला सेंधाकल्क ८ तोला
तेल ६४ तोला कांजी ६४ तोला इन्होंको मिलाय कोमल अग्नि
परि पकाय तेलको सिद्धकरै यह तेल खल्लीवात को व विषूचीको
व पक्षाघात को व गृध्रसीको नाशै है ॥ तक्र ॥ विषूची ज्यादह बढ़
जावे तो तक्र पानी मिलाय पीने से किंवा दही पानी मिलायपीने
से अथवा नारियल के जलको पीनेसे आराम होवे ॥ पानी ॥
विषूची में तृषा लगे अथवा ग्लानि हो तो लवंगका पानी अ-
थवा जायफलका पानी अथवा नागरमोथाका पानी पकाय शीतल
करि पियाने से आराम होवै ॥ बिलंबिका व आलसिकाचिकित्सा ॥
बिलंबिका में व आलसिकामें भी विषूचीनाशक औषध करै अलग
चिकित्सा नहीं है ॥ हस्तिकर्णयोग ॥ एरंड की जड़, थोरमुला, पि-
पली कन्द इन्होंमें पानीको पकायपीनेसे विषूचिकानाशहोवै ॥ निंबु
रसयोग ॥ नींबू के रसमें अमली को मिलाय पीने से विषूची को व

शोष को व कफको हरैहै अथवा सुहागाखार को दूधके संग पीनेसे विषूची व छर्दिको नाशैहै ॥ करंजादिकषाय ॥ करंजकीछाल निंबु उंगाकीजड़, गिलोय, कूड़ाकीछाल, अर्जुनवृक्षकी छाल इन्हों का काढ़ाकरि पीनेसे बमन लागि बिसूची को हरैहै ॥ उत्क्लेशलक्षण ॥ ग्लानि को प्राप्तहोइ अन्न शरीरके बाहर निकसे नहीं मुखमें पानी भरारहै ज्यादहथूकै और हृदयमें पीड़ा होय येउत्क्लेशके लक्षणहैं ॥ कटुत्रयरस ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, जीरा, हींग, सेंधानोन, गन्धक इन्होंको नींबूके रसमें खरलकरि खानेसे विषूची को व उग्र बिलंबिकाको हरै है ॥ व्योषादिअंजन ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, करंजफल दारुहल्दी हलदी, बिजौराकीजड़ इन्होंको पीसि गोलीबांधि छायामें सुखावै पीछेगोलीको पानीमेंघिस नेत्रोंमें अंजन करनेसे विषूचिका जावै ॥ अपामार्गाद्यंजन ॥ उंगाके पत्ते, मिरच बराबरभागले घोड़ाकी लारमें पीसिअंजनकरनेसे विषूचिको हरै ॥ बिल्वादिअंजन ॥ बेलपत्र की जड़, शिरसकी जड़, करंजके बीज, तगर, देवदारु, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली, हलदी, दारुहलदी, ये सबसमानभागले बकरा के मूतमें महीन पीस अंजन करने से सांप के विष को व लूता व बिच्छूके विषको व पेट रोगको व विषूचीको व अजीर्णको व तापको हरैहै ॥ मन्दाग्नि ॥ अजीर्ण विषूचीका, अलसक में पथ्य, कफ के अजीर्णमें प्रथमवमन और पित्तके अजीर्णको मलबिरेचन और बायु के में स्वेदन और भाफ, तथा हितकारी पथ्यापथ्य वस्तु अनेक प्रकारके व्यायाम, दीपन तथा हलके पदार्थ, पुरानीमूंग, लालधान विलेपी, खीलोंका मांड़, मूंगका पानी, मदिरा, और हरिण, मोर, शशा, लवा इन्होंका मांस और सब प्रकारकी छोटी मछली, शालिंचशाक, बेंतकी कोपल, बथुआ, कोमलमूली, लहसुन, बड़ा कुह्लड़ा, नवीन केलेकाफल, अदरक, पसरनी, काकमाची, चूकेका शाक, विसखपरेका शाक, आंवले, नारंगी, अनारखार, पित्तपापड़ा अमल, बेत, जंभीरीनींबू, बिजौरा, शहत, नोनीघृत, मट्ठा, कांजी, तुषोदक, धान्याम्ल, कडुआ तेल, हींग, और नोनके साथ अदरख, अजवाइन, मिरच, मेथी, धनियां, जीरा, दही, पान, गरम पानी कडुवे

तथा चिरपरेरस ये सब मन्दाग्नि और अजीर्णमें पथ्यहैं ॥ अपथ्यम् ॥ बिरेचन,विष्ठा मूत्र, वायु इन्होंके वेगोंका रोकना अनेकवार अथवा बहुत खाना जागना विषम भोजन रुधिरका निकलना शमीधान्य कहे फलीमें उत्पन्न अन्न जैसे उड़द, मूंग,मटर,आदि मछली मांस पोइशाक, जलकापान, पिसाअन्न, जामुन सबप्रकारके कन्दमिलाय लड्डू, दूधकी लाट अर्थात् फटा दूधका खोया, पन्ना, ताड़फल की मींगी, छोटा ताड़काफल, स्नेहन, बुराजल, विरुद्ध तथा अहित भोजनका खाना तथा बिरुद्ध अहित पीना विष्टंभी तथाभारीवस्तु ये सब अजीर्ण में अपथ्यहैं ॥ नित्यादित्यरस ॥ वच नागविष, तांबा अभ्रक,लोह,पारा,गन्धक,येसबसमानभागले इन्होंको चीताकेरसमें ७ भावना देवै यह एक माशा खानेसे ववासीर के मस्सांको व मल बंधको नाशै इसरसको गौके घृतकेसङ्ग खावे यह नित्यादित्यरसहै दूसराप्रकार ॥ पाराभस्म, अभ्रक, लोह, तांवा, वचनागविष, गन्धक ये सब समानभागले और इन सबों के बराबर भिलावां ले इन्होंकाचूर्णकरै पीछे इन्होंको जमीकन्दके रसमें ३ दिनतक खरल करै यह रस १ माशा घृतके सङ्ग खानेसे ववासीर को व हाथ पैर नाभि, मुख, गुदा, वृषण, इन्होंकी सूजन को व हृदय व पसुली के शूलको व असाध्य अर्शको व अजीर्णको यह नित्योदितरस नाशैहै ॥ अर्शकुठाररस ॥ शुद्धपारा १ भाग,शुद्धगन्धक २ भाग,लोह, व अभ्रक भस्म६भाग बेलफल१भाग चीता१भाग शुंठि मिरच पीपल १ भाग, जयपाल १ भाग हरीतकी १ भाग सुहागाखार, जवाखार, सेंधानोन ये मिलके ५ भाग, इन्होंका चूर्णकरि ३२ भाग गोमूत्रमें पकावे पीछे थोहरका दूध ३२ तोला मिलाय फेर पकावै जब जला जलिकर पिंडीरूपहो तब २ मासे की गोली बनाय खानेसे बवासीरको हरै यह अर्शकुठार रस है ॥ षडाननरस ॥ वैक्रान्तिमणि, तांबा, अभ्रक, गन्धक, पारा, कांत इन्होंको समान भागले ३ रत्ती खानेसे बवासीर को नाशैहै ॥ पीयूषरस ॥ शुद्धपारा, षड्गुण गन्धक जारणला काच पात्रमें बालुकायंत्रमें बनायाहुआ, सोनाकी भस्म लोहा का भस्म, अभ्रकभस्म, गन्धक ये सब बरावर भागले जमीं

कन्दके रसमें खरलकरि ७ भावनादेइ पीछे जमालगोटा की जड़ के रसमें ७ भावना देइ पीछे शुंठी के रसमें ७ भावना देइ पीछे काकमाची के रसमें ७ भावना देइ पीछे मदिरामें ७ भावना देइ पीछे भृंगराज के रसमें ७ भावनादेइ पीछे आकके रसमें ७ भावना देइ पीछे चीताके रसमें ७ भावनादेइ गोलाकरि शाली अन्नकी राशिमें ३ दिनदबाय काढ़ै पीछे चूर्णकरि १ माशा देने से उग्रबवासीर को व संग्रहणी को व शूलको व पांडुको व आम्लपित्त को व क्षयी को नाशै शहद में मिलायदेवै और यहरस छः महीने निरंतर खानेसे और यथारोग अनुपान करनेसे सम्पूर्ण रोगोंको हरैहै और इसरसको २ वर्षतक सेवन करने से बुढ़ापा हटै और इसका खाने वाला खटाई को और स्त्री संगको त्यागे और यह सेवन करने से पुष्टि, कांति, वीरज इन्होंको वढ़ावैहै॥ चक्रबंधरस॥ पारा गंधकइन्हों को सफेद सांठीके रसमें ३ दिन खरल कराय पीछे तांबाकी भस्म मिलाय खरल करावै पीछे इन्होंको चीताके रसमें पीछे हरीतकीयों के रसमें पीछे भृंगराजके रसमें खरलकरै पीछे शुंठिके रसमें पीछे मिरचके रसमें पीछे पीपलके रसमें खरलकरि २ रत्ती देनेसे बायु के बवासीर को हरै और यह चक्रबंधरस के गंधक की पुटलगाय वरतनेमें सब रोगों को हरैहै॥ पर्पटीरस॥ पारा, गन्धक इन्होंकी कज्जलीकरि घृत मिलाय और दुगुनाबोल मिलाय लोहाके पात्रमें घालि अग्निपर चढ़ाय पातलकरि उतार केलाके पत्तामेंधरि ऊपर दूसरे केलाके पत्तासे ढकि पीड़नकरै यह पर्पटीरस रत्ती १२ खाने से सम्पूर्ण प्रकारकी बवासीरको व सूजनको व अतीसारको व छर्दिको व अंगकीपीड़ाको व तृषाको व ज्वरको व अरुचिको व अग्नि मंदताको व गुदापाकको व हियाकी शूलको हरैहै॥ भल्लातकलेह॥ चीता १६ तोला, त्रिफला १६ तोला, नागरमोथा १६ तोला, पिपलामूल १६ तोला, चवक १६ तोला, गुलवेल १६ तोला, गजपिपली १६ तोला, ऊंगाकीछाल १६ तोला, सहदेइजड़ १६ तोला, आजबला १६ तोला, पानी २००४ तोलमें २००० भिलावेकोछेदि उसीमेंदेवै और पकाइ क्वाढ़ाचतुर्थांशरक्खै लोहेके पात्रमें तीक्ष्ण लोहाकाभस्म

२००तोला, घृत ३२तोला, शुंठि४ तोला, मिरच४तोला, पिप्ली ४ तोला, त्रिफला४तोला, चीता४तोला, सेंधानोन ४ तोला, मणयारी नोन४तोला, शोरा४तोला, कालानोन ४ तोला, वायविडंग ४ तोला वरधरा १६ तोला, तालमूल १६ तोला, जमींकन्द ३२ तोला इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्तमें मिलाय शीतलहोनेपर शहद ३२ तोले मिलावै पीछे वरतनमें घालिरक्खै दिनका भोजनकालमें अग्निका बलाबल देखिके खावै यह ववासीरको व संग्रहणीको व पांडुको व अरुचिको व कृमिको व गुल्मको व पथरीको व अफाराको व शूल को नाशै और शुका सरीखे नेत्र होय और बली व पलितको नाशै यह रसायनहै इसके सेवनसे सबतरहके रोगनाशहोवैं १२१०॥

इतिश्रीबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांअजीर्णविषूचिकादिप्रकरणम् ॥



कृमिनिदान ॥ प्रथम कृमिरोग २ प्रकारकाहै १ वाहिरली में २ भीतरली और बाहरलीको जन्मतो चारजगहहै। मलसूंउपजे लट १पसीने सूंउपजीजुम २ लीख ३ जमजूम४और इन्होंकेनामवीस २० हैं॥ वाह्यकृमिलक्षण॥ बाहिर के कृमि मलसे पैदा होतेहैं और तिलके सरीखे कृमि होवेहैं और वे केशों में व कपड़ों में रहते हैं वेकृमि सूक्ष्म रूपहो और वहुत पैरों वालेहों उन्हों को यूका व लीख कहतेहैं और दोनोंप्रकार के कृमिकोठा के रोगको व खाज को व गांठको पैदा करतेहैं ॥कृमिकाकारण॥ अजीर्ण में भोजन करनेवाले को मीठा व खट्टा व द्रवरूप व पीठी व गुड़ इन्हों के खानेवालेके और व्यायाम कहेकसरत नहीं करनेवाले को और दिनमें शयन करने वाले के और विरुद्ध भोजन करने वाले को कृमिरोग प्राप्त होवे है ॥पुरीषकफरक्तजकृमिकारण॥ उड़द पिठी अन्न, नोन, गुड़, शाक इन्हों के खाने से विष्ठा में कृमि पैदा होतेहैं और मांस, उड़द, गुड़, दूध, दही, कांजी इन्हों के खानेसे

कफोत्पन्नकृमि पैदाहोवेहैं औरबिरुद्धअन्न, अजीर्णमें अन्न, शाकभाजी इन्होंके खानेसे रक्तजकृमि पैदा होवेहैं ॥ पेटमेंकृमिवालेकेलक्षण ॥ ज्वरहो, रंग बदलजाय और शूलहो, हृदय में रोगहो औरग्लानि हो और भ्रमहो और अन्नमेंरुचि नहींहो और अतीसारहोयेपेटमें कृमिवालेके लक्षणहैं ॥ कफजकृमिलक्षण ॥ कफ से कृमि उत्पन्न हो आमाशयमें बढ़करि सब शरीरअंगोंमें प्रवेशकरेहैं और कितनेतो मोटी बध्नी सरीखे होवेहैं और कितनेक गिंडोआ सरीखे होवेहैं और कितनेक नाजके अंकुर सरीखे होवे हैं और कितनेक लम्बे व कितनेक सूक्ष्म रूप कृमिहोते हैं और इन्हों का रंग सफेद और कितनेक तांबाके रंग होवेहैं और ७ साल इन्हों के नामहैं अंत्राद १ उदरावेष्ट २ हृदयाद ३ महारुज ४ चुरव ५ दर्भकुसुम ६ सुगन्ध ७ ये नामहैं और ये सब नामों के अनुसार फल देतेहैं और ये कृमि का उपद्रव मुखसे पानीवहै और छर्दि हो और ज्यादाथुकथुकी हो और अन्न पचेनहीं और अरुचिहो औरमूर्च्छा, तृषा, अफरा, कृश-पणा, सोजा, पीनस येभीहो हैं ॥ रक्तजकृमिलक्षण ॥ लोहूकीवहनेवाली शिरामें उपजे कृमि रक्तज सूक्ष्म रूपहों और पैरोंकरि वर्त्तित हों और इन्होंका रंग लालहो और कितनेक दोष नहीं और इन्हों के ६ नाम हैं केशाद १ रोमविध्वंस २ रोमद्वीप ३ उदुंबर ४ सौरस ५ मातर ६ ये नामहैं येसब जलदी कुष्ठ रोगको पैदा करेहैं ॥ पुरीष-जकृमिलक्षण ॥ पक्वाशयमें पुरीषज कृमि उपजेहैं और नीचेकेअंगोंमें जाइ प्रवेश करतेहैं वढ़िकरि डकारको और श्वासाश्वासकोवविष्ठाकी गन्धको पैदाकरेहैं और येकृमिशूलके सरीखे चारोंतरफसे गोलरूप व मोटेहोवेहैं कितनेक कालरंग व पीले व सफेद रंगके होवेहैंइन्हों के नाम ५ हैंककेरुक १ मकेरुक २ सौसुराद ३ मलूना ४ लेलिहा ५ ये नामहैं येसब विड्भेद को व शूलको वविष्टंभको व कृशताको व खरखरी तपनको व निस्तेज पनको व रोमहर्षको व मन्दाग्नि को व गुदामें खाजरोग को और मार्गगये पैदा करतेहैं ॥ कृमिचि-कित्सा ॥ पुरीषज व कफज कृमियों की औषध इसी प्रकरण में कहेंगे और रक्तज कृमिकी औषध कुष्ठके औषध समान याने एक

सीहै और कृमिरोग वालेको निर्गुंडी आदिक घृतसे स्निग्ध करि पीछे बमन कराइ पीछे रेचन कराइ पीछे पिचकारी कर्मकरै और चावलोंकी पीठी, पिपली, सेंधानोन, वायविडंग इन्हों को भोपनी के रसमें पोली बनाइ पकाइ शहद के संग खाने से कृमिको पातन करै अथवा हमेशह कटु व तिक्तरस भोजनकरनेसे कफको व कृमि कोनाशैहै और रुचिको उपजावे है और अग्निको दीपनकरैहै अथवा हरीतकी, आरतुपर्णी, गेहूं चून इन्हों की रोटी बनाइपकाइ शहद के संग खानेसे कृमिको नाशै ॥ कृमिलेप ॥ माशे२पाराकोनागरपानकी बेलके रसमें खरल करै किंवा कालेधतूरा के रसमें खरल करै पीछे इसद्रव्यको कपडेपर लगाइ उसकपड़ाको मस्तक ऊपर ३ पहरतकबांधे इससे जूम व लीख शरीरसे झड़ैं यहनुसघा परीक्षा कियाहुआहै इसमें संशय नहींहै ॥ यवागू ॥ वायविडंग, चावल, शुंठि, मिरच, पीपल, सहोंजनाकीछाल, तगर इन्होंके तक्रमें यवागू बनाइ कालानोन मिलाइखानेसे कृमिरोग नाशहोवै ॥ त्रिवृतादिकल्क ॥ निशोत, पलाश, पापड़ी, खुरासानीजमाइन, कपिला, बायबिडंग इन्हों के चूर्ण में बराबर का गुड़ मिलाइ खाने से तक्रके संग कृमिके कोटि गणको नाशै अथवा पलाशबीज के रसमें शहद मिलाइ पीनेसे अथवा इसीके कल्कको तक्रके संग खाने से कृमिरोग नाशहोवेहै अथवा निंबके पत्तोंके रसमें शहद मिलाइ पीनेसे अथवा धतूराके रसमें शहद मिलाइ पीनेसे कृमिजावैं अथवा वायविडंग, मनशील इन्हो का कल्क व गोमूत्र व सिरसमका तेल इन्होंको सिद्धकरि यहतेल १ दिनमेंलीखोंको व जूमोंको हरै॥ विडंगादितैल ॥ वायविडंग, मनशील, गोमूत्र, निर्गुंडीरस इन्हों में तैलको सिद्धकरि मलनेसे लीखको व जूमको नाशै ॥ धतूरपत्रतैल ॥ धतूराके पत्तों के रसमें सिद्ध तैलके मलनेसे जूम नाशहोवेहै ॥ दाडिमादिकाढ़ा ॥ अनार की छाल के काढ़ामें तिलका तेल मिलाइ ३ दिन तक पीनेसे कोठा सेती कृमिगण को पातनकरै ॥ नियमनादिकाढ़ा ॥ निंब, त्रिफला, कूड़ाकीछाल, शुंठि, मिरच, पिपली, खैरकी छाल, निशोत इन्होंको गोमूत्रमें काढ़ाकरि ७ दिन पीने से कृमि

नाश करै ॥ विडंगादि ॥ वायविडंग के काढ़ामें वायविडंग का चूर्ण मिलाय पीनेसे कृमिरोगको हरै ॥ मुस्तादिकाढ़ा ॥ नागरमोथा, मूषापर्णी, इन्द्रयव, देवदारु, सहोंजना इन्होंके काढ़ामें पिपली, वायविडंग चूर्ण मिलाय पीनेसेदोनों मार्गोंके रस्ते कृमियोंको काढ़ैहै ॥ खदिरादिकाढ़ा ॥ खैर, कूड़ा, निंब, बच, शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, निशोत इन्होंका चूर्ण किंवा काढ़ा गोमूत्रमें पकाय ७ दिनतक देनेसे कृमिगणोंकोनाशैहै ॥ रस ॥ सिंगरफ १ तोला जैपाल६ माशे इन्होंका चूर्णकरि आक के रसकी १० भावना देवै पीछे एकमाशा रसको आकके दूध व हींगके साथदेवै यह कृमिगणकोनाशै ॥ पारदादियोग ॥ पारा, इंद्रयव, अजमान, मनशील, पलाशपापड़ा ये समान भागले चूर्णकरि देवडांगरीके रसमें १ दिनतक खरलकरि पीछे ४ माशे रसको मूषापर्णीका काढ़ा मिश्रीयुत के संगखावै यह कृमिके गणोंको नाशै है ॥ कृमिकुठार ॥ कर्पूर ८ भाग कूड़ाकीछाल १ भाग त्रायमाण १ भाग अजमान १ भाग वायविडंग १ भाग सिंगरफ १ भाग वचनागविष १ भाग केशर १ भाग पलसपापड़ी १ भाग इन्होंका चूर्णकरि भृंगराज के रसमें भावनादेय पीछेमूषापर्णी के रस में भावना देय पीछे ब्राह्मी के रसकी भावना देवै यह कृमि कुठार रस २ रत्ती धतूरा के पत्ता के संग खानेसे सबप्रकारके कीरमोंको नाशकरै ॥ कृमिमुद्गररस ॥ पारा १ भाग गनधकी २ भाग अजमोदा ३ भाग वायविडंग ४ भाग बकायण ५ भाग पिलसपापड़ी ६ भाग इन्हों का चूर्ण १ तोला शहद के सङ्ग खाने से कृमि रोगको हरै ॥ विडंगादिचूर्ण ॥ वायविडंग, सेंधानोन, हींग, हरीतकी कपिला, कालानोन, पिपली इन्होंके चूर्णको गरमजलके संगखाने से कृमिको व छर्दि को हरै ॥ दूसराप्रकार ॥ वायविडंगका चूर्ण १ तोला वा ६ माशे शहदसे खानेसे कृमि कोटिगणों को हरै ॥ यवानीचूर्ण ॥ खुरासानी अजमान चूर्णको नागरपानके संग खानेसे अथवा नींबके रसको पीनेसे कृमिजाल नाशहोवेहै ॥ निम्बादिचूर्ण ॥ निम्ब, अजमोद खुरासानीअजमान, हींग ये समान भागले चूर्णकरि गुड़में मिलाय खानेसे जल्दी कृमि नाश होवेहै अथवा वायविडंग, शुंठि, मिरच

पीपल इन्होंकाचूर्णसंयुक्त चावलका मण्डपीनेसे कृमिरोग नाशहोवे और जठराग्निवधे ॥ त्रिफलादिघृत ॥ हरड़, बहेड़ा, आमला, जमालगोटेकेबीज, निशोत, कपिला, गोमूत्र इन्हों में घृतको पकाइ खानेसे कृमिरोग नाशहोवे ॥ विडंगघृत ॥ त्रिफला १६२ तोला बायविडंग ६४ तोला और दीपनीयगण और दशमूल जितनामिले और योग्यहो इन्होंका २०४८ तोलेपानीमें काढ़ा चतुर्थांश रक्खे पीछे ६४ तोला घृत और ६४ तोला सेंधानोन मिलाय पकाइ घृत को सिद्धकरे पीछे इसघृतको खांडमें मिलाय खानेसे सबप्रकारके कृमिरोगोंको नाशहै,दृष्टांत । जैसे वज्र राक्षसोंको तैसे ॥सारनालयोग॥ कांजी, मूषापर्णी मिलाय पीनेसे किम्बा पलसपापड़ी तक्रसंग पीनेसे किम्बा हींग, अजमान को तक्रके संग पीनेसे कीरम नाशहोवें भल्लातकयोग ॥ भिलावां को दही के संग खाने से किम्बा भिलावां अमली मिलाय खानेसे कृमिरोग नाश होवे ॥ विडंगादियोग ॥ बायविडंग किम्बा नींबके पत्ते किम्बा पलसपापड़ी इन्हों को अलग अलग शहद में मिलाय खाने से कृमि जावें ॥ पलाशबीजयोग ॥ पलाशके बीज रत्ती ३ थोहर के दूध के संग खाने से कृमि रोग जावे ॥ खुरासानीओवाकल्क ॥ खुरासानी अजमाइन को बासी पानीमें पीस कल्ककरि खानेसे पेटके कोठाका कृमिजालको नाशै ॥ निशोत्तरादियोग ॥ सफेद निशोत को कांजीमें पीस खानेसे किम्बा टेभूरणीको गोमूत्रमें पीस खानेसे किम्बा मनशीलको कडुवा तेलमें पीसि मलने से कृमिरोग का नाशहोवे ॥ पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ पिपली ८ तोला पिपलामूल ८ तोला सेंधानोन ८ तोला स्याहजीरा ८ तोला चव्य ८ तोला चीता ८ तोला तालीसपत्र ८ तोला नागकेशर ८ तोला कालानोन ५ तोला मिरच ४ तोला शुंठि ४ तोला जीरा ४ तोला अनारकीछाल १६ तोला अम्लवेतस ८ तोला इन्हों का चूर्ण करि खावै यह पिप्पल्यादि गणनाशहुआ अग्निको फेरजगावे और बवासीरको व संग्रहणीको व गुल्मको व पेटकेरोगोंको व भगंदरको व कृमिको व खाजको व अरुचिकोनाशै और इसचूर्णको मदिरा के संग किंवा गरमपानीकेसंग खावे और इसचूर्णके उपरांत आमशोथ

का नाशकरनेवाला औषध और नहीं है ॥ आंखुपर्ण्यादिचूर्ण ॥ मूषा-पर्णीको कूटि पीठीमें मिलाय पुत्राबनाइखानेसे कृमिको नाशै इसके ऊपर कांजीको पीवै ॥ सुवर्चिकादिचूर्ण ॥ साजीखार,हींग,जावित्री,वा-यविडंग,केशर,पिपली,चीता,शुंठि,अजमान,पिपलामूल,नागरमोथा इन्होंकेचूर्ण को तक्रकेसंगखावे यह कृमिकोटिगणकोहरे है ॥ निम्बादि चूर्ण ॥ निम्बु,कूड़ा,वायविडंग,हींग इन्होंकेचूर्णमेंनिम्बकेपत्ते व अज-मोदमिलायशहदकेसंगखानेसेकृमिरोगकोनाशैहैइसमेंसंशयनहींहै॥ तैल ॥ चीता, जमालगोटा की जड़, कड़ी तोरई इन्हों के कल्क में कड़ुवा तेलको पकाय मलनेसे कृमि रोग को हरे अथवा वायबिड़ंग शिलाजीत, गोमूत्र इन्हों में तैलको पकाय शरीरमें मालिश करने से जूम व लीख नाश होवेहैं ॥ कपिलाचूर्ण ॥ कपिलाकाचूर्ण माशा ८ गुड़में मिलाय खानेसे पेटके कृमियोंको नाशै ॥ निंबादिरस ॥ निंबके पत्तों के रसमें शहद मिलाय पीनेसे किम्वा धतूरीके पत्तोंके रसमें शहद को मिलाय पीने से कृमि रोग नाश होवे है ॥ हरीतकीचूर्ण ॥ हरीतकी, हलदी, कालानोन ये समान भाग ले चूर्ण करि इसको गड़ूभाकेरसमें भावनादेइ खानेसे कृमिके समुदायकोनाशै ॥ साबित्र वटक ॥ पलाशबीज ८ तोला लोहभस्म ८ तोला हड़४तोला गिलोय ४ तोला बहेड़ा ४ तोला आंवला ४ तोला करंज २ तोला चव्य २ तोला शुंठि मिरच पीपल २ तोला चीता २तोला अजमाइन २तोला वायविड़ंग २तोला इन्होंकाचूर्णकरे पीछे तिलकातेल ८ तोलात्रिफला कारस ८४तोला खांड़ १२८ तोला इन्होंकोपकावेजबतककड़छीचिपे तबतकपीछेदालचीनी,तमालपत्र,इलायची,नागकेशर इन्होंकाचूर्ण मिलाय गोली बांधे ये साबित्र गोली खानेसे अग्नि को व बल को बढ़ावेहैं और कृमि रोग को व अग्निकी मन्दता को व पाण्डु को व ववासीर को व भगंदर को व बिषको व घाव को व कामला को व दुर्बल पनाको व गुल्म को व शोथको व उदर रोग को नाशैहै और बल को व उमर को बढ़ावे है और गुद रोग को व प्रमेह को हरे है और नेत्रों को हितहै और इस पर स्निग्ध भोजन करै और बात घामको सेवै ॥ अष्टसुगन्धधूप ॥ लाख, भिलावाँ, धूप, सफ़ेद बिष्णु-

क्रांताकी जड़ अर्जुनवृक्ष का फल व फूल, बायबिडंग, राल, गूगल इन्हों की धूप देने से सांप, मसे, डांस, बारीक कीड़े मच्छड़ ये सब शान्त होवेहैं ॥ ककुभादिधूप ॥ अर्जुनवृक्षके फूल, बायबिड़ंग, पृष्ठिपर्णी भिलावाँ, बाला, कलहारी, राल, चन्दन, कूट इन्हों की धूप देनेसे शय्याके खटमलों को नाशै और यहीधूप शरीरके देनेसे जूमोंको व लीखों को नाशै ॥ कृमिरोगमेंपथ्य ॥ आस्थापन तथा शिरका बिरेचन धूमा, कफनाशक बस्तु, शरीर का शोधन, पुराने साठीधान तथा धानलाल, परवर, बेतकीकोंपल, लहसुन, बथुवा, चीता, आक के पत्ते, नयाकेला, कटेली के फल, चिरपरीबस्तु, तालीसपत्र, मूषाका मांस, बायबिड़ंग, नींबके पत्ते, हड़, तिल तथा सरसों का तैल कांजी, खट्टा, पानी, तुषोदक, शहद, पकाहुआ ताड़काफल, भिलावां गोमूत्र, घृत, दूध, हींग, खार अजमोद, कत्था, कूड़ा, जंबीरीनींबू का रस, स्याहजीरा, अजमान, देवदारु, अगर, सीसमका खार चिरपरे तथा कडुवे कसायले रस ये सब कृमि रोगवालेको पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ बमन और बमनके वेगोंको रोकना, बिरुद्धखाना पीना दिनमें सोना, पतली बस्तु पिसाहुआ अन्न, अजीर्णमें भोजन, घृत उड़द, दही, पत्रशाक, दूध, मांस, खटाई, मीठारस जो कृमि रोग को दूर किया चाहे तो इन ऊपर लिखीहुई वस्तुओंको त्यागकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ शीतलपानी, मीठारस, दूध, दही, खार, घृत, कांजी पत्तोंवाले शाककीभाजी इन्होंको कृमिवाला त्यागे ॥ बिशालादिधूप ॥ कडु इन्द्राबन के पके हुये फलको गरम तवा पर गेरि धूप लेने से दांतों के कीड़े झड़पड़ैं ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघंटरत्नाकरभाषायांकृमिप्रकरणम् ॥

अथपाण्डुकर्म्मविपाक ॥ देवताके द्रव्यको व ब्राह्मणके द्रव्यको हरै वह पाण्डुरोगी होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ वह पुरुष कृच्छ्र चान्द्रायण व कृच्छ्राति कृच्छ्र चान्द्रायण व्रतकरै और कोंहलाको अग्नि में होम करि पीछे सुवर्ण का चांद व अच्छे कपड़ों का शक्ति के अनुसार दान करै इस कर्म्मसे पाण्डुरोग शान्त होवै शिरकी पीड़ा सहित पाण्डुरोग हरै जो अग्निष्टोमादि कर्म्म को आरम्भन करि समाप्त न करै उसके कपाल शूलयुक्त पाण्डुरोग होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ कृच्छ्र चान्द्रायण व कृच्छ्राति कृच्छ्र चान्द्रायण व्रतकरि अन्तमें मिष्ठभोजनसे १०० ब्राह्मणों को भोजन करवावै ॥ पाण्डुरोगनिदान ॥ प्रथम पांडु रोग पांच प्रकार सूं उपजैहै बायुको १ व पित्तको २ कफको ३ सन्निपातको ४ मट्टी खानेसे ५ ॥ निदानपूर्वकसंप्राप्ति ॥ घनाखेद करनेसे व घनी खटाई खानेसे व दिनके शयनसे और घनी तीखी वस्तु को खानेसे बातपित्त कफ मनुष्य के लोहू को बिगाड़ि करि शरीरमें त्वचा को पीली करदे हैं ॥ पूर्वरूप ॥ त्वचा फटने लगजाय अंगमें पीड़ा हो और माटी खानेकी इच्छारहै आंखोंकेऊपर सूजन होवै और मलमूत्र पीलारङ्ग हो, अन्नपचे नहीं तबवैद्य कहै कि तेरे पाण्डु रोग होगा सो इसको लौकिकमें पीलिया कहै हैं ॥ पाण्डुरोगचिकित्सा ॥ साध्यपाण्डु रोगीको स्निग्ध करि बमनकरै पीछे रेचन करवावै और हड़का चूर्ण घृत, शहद युत खाने से आराम हो अथवा हलदीचूर्णयुत घृत प्यावै अथवा त्रिफला, हिंगण इन्हों में सिद्ध घृतप्यावै अथवा रेचन देवै और बायका पाण्डुमें स्निग्धकर्म करै और पित्तके पाण्डु रोग में तिक्त व शीतल उपचारकरै और कफके पाण्डुमें कडुवा, रूखा, गरम उपचारकरै और मिश्र पाण्डुमें मिश्र उपचार करै ॥ बातपाण्डुनिदान ॥ जिसके त्वचा मूत्र नेत्र रूखे हों अथवा काले अथवा लालहों और शरीरमें कम्पहो और अफरा हो और भ्रमादिक हों ये लक्षणबायुके पाण्डु रोगके हैं ॥ मण्डूराद्यरिष्ट ॥ शुद्धमण्डूर २०० तोला लोहा के टुकड़े तिल सरीखे २०० तोला पुरानागुड़ २९२ तोला जलबेत ८ तोला चीता ८ तोला पिपली १६ तोला बायबिड़ंग १६ तोला हड़ ६४ तोला बहेड़ा

६४ तोला आमला ६४ तोला पानी १०२४ तोला इन्होंको वर्त्तन में घालि १५ दिनतक अन्नके कोठामें धरै पीछे अरिष्टका प्रमाण माफ़िक़ पीवै यह दोनों द्वारों से स्रावद करि पाण्डु रोग को नाशै है और कृमिको व बवासीरको व कुष्ठको व कासको व श्वासको व कफके रोगोंको व सब प्रकारके पाण्डु रोगोंको हरैहै ॥ पित्तकापाण्डु लक्षण ॥ मल मूत्र नेत्र जाके पीलेहों शरीर में दाहहो और तृषा व दाह व ज्वरभीहो और मल पतला होजाय और शरीर की त्वचा पीली होजाय ये लक्षण पित्तके पाण्डुके हैं आमलाका रस स्वच्छ १०२४ तोला इसको मन्दमन्द अग्निमें पकाय येऔषधगेरै पिपली ६४ तोला मुलहठी ८ तोला मुनक्का दाख ६४ तोला शुंठि ८ तोला बंशलोचन ८ तोला खांड़ २०० तोला मिलाय घनरूपकरि शहद ६४ तोला मिलाय यह पाण्डुको व हलीमकको व कामला को हरै है ॥ दुग्धयोग ॥ लोहके बर्त्तनमें दूध को गरम करिपीवै ७ दिन तक और पथ्यसेरहै तो पाण्डुको व क्षयीको व संग्रहणीको हरैहै ॥ कफ-पाण्डुलक्षण ॥ मुखसे थूक निकले शरीर में सूजन हो और तन्द्राहो आलस्य आवै और शरीर भारी हो, त्वचा, नेत्र, मूत्र सफ़ेद रङ्ग होयँ तो कफ को पाण्डु रोग जानिये ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल शुंठि इन्होंका काढ़ा कफयुक्त पाण्डुको व ज्वरको व अतीसारको व सूजनको व संग्रहणीको व कासको व अरुचिको व कण्ठरोगको व हृद्रोगकोहरै ॥ नागादियोग ॥ नागरपान शुंठि लोहाकी भस्म इन्होंको मिलाय खानेसे अथवा पिपली, हड़, लोहभस्म, शिलाजीत इन्होंको मिलायखानेसे अथवा गुग्गुलको गोमूत्रकेसङ्ग खानेसे कफका पांडु रोग नाशहोवै ॥ लोहभस्मयोग ॥ अति उत्तम लोहभस्म, घृत, शहद मिलाय खानेसे पांडुरोगको व कामलाकोनाशै ॥ मधुमण्डूर ॥ लोहका कीट ६४ तोला त्रिफलाकेकाढ़ामें १ पहरतकखरलकरि पीछेगजपुट में दो पहरतक पकाय इसीतरह २१ बारपुटदेवै पीछे गोमूत्रमें २१ पुटदेवै पीछे गवार पट्ठाके रसमें २१ बार पुट देवै ऐसे मधुमण्डूर सिद्धहोवे है इसमें ६४ पुटदीजाती हैं पीछे शुंठि, सफ़ेद मुसली, गि-लोय, शतावरि, गोखुरू इन्होंके चूर्णको मिलाने से पञ्चामृत कहे हैं

इसको शहद व पिपलीके चूर्णकेसङ्ग खानेसे पुरातनपाण्डुको हरै है और लोहूको बढ़ावे है और अनुपानोंके सङ्ग अनेक रोगोंको हरैहै॥ मण्डूरवटक॥ देवदारु, नागरमोथा, दारुहल्दी, शुंठि, मिरच, पिपली चवक, चीता, पिपलामूल, सोनामाखीकीभस्म, बायबिड़ंग, त्रिफला येसब समानभागले और मण्डूरभस्म२भाग इन्होंको आठमूत्रोंमें पकाय पीछे गोलीबांधि गोके तक्रकेसङ्ग खानेसे कामलाको व पांडु रोगको व प्रमेहको व बवासीरको व सोजाको व कुष्ठको व कफरोग को व उरुस्तंभको व अजीर्णको व प्लीहाकोनाशै और आठमूत्रयेहैं गौका १ भैंसका २ बकरीका ३ भेड़का ४ गधाका ५ घोड़ाका ६ ऊँट का ७ हाथीका ८ ऐसेहैं॥ मंडूरलवण॥ लोहकेकीटको अग्निकेसमान लालरङ्गकरि बारम्बार गोमूत्रमें बुझावे पीछे सेंधानिमक बराबर भाग मिलाय बहेड़ाकी अग्निसे पकावै पीछे इसको तक्रकेसङ्गअ-थवा शहदकेसंग खानेसे पांडुरोगको हरैहै॥ सन्निपातपांडुलक्षण॥ ज्वरहो, अरुचिहो, हियादूखे, छर्दिहोवै, प्यासहोवै और बलजातारहै इन्द्रियोंका ऐसा त्रिदोषका पांडुरोगी त्यागना वैद्योंकोयोग्यहै॥ स-न्निपात पांडुनिदान॥ नानाप्रकारके अपथ्य अन्नको भक्षण करने से मनुष्यके शरीरमें बातादिदोष कुपितहोके अतिभयंकर सन्निपातके पांडुरोगको पैदाकरै है॥ असाध्यलक्षण॥ नेत्रगोलक, कपोल, भृकुटी पैर, नाभि, लिङ्ग इन्होंमें सूजनहो और कोठा में कृमि पड़िरक्त व कफयुत मलद्रवे वह असाध्यहै और पांडुरोग पुरानाहो और आप बढ़िजावे और शरीरकेअंगोंमेंसूजनहो और सबपदार्थपीलेरङ्गदीखे और मलथोड़ा व हरा व कफरूप और बँधाहुआ द्रवे और गरीब होजाय और शरीरमेंसफ़ेदाईज्यादाहो औरछर्दि, मूर्च्छा, तृषा येभीहों ऐसा पांडुरोगी असाध्यहै॥ दूसराप्रकार॥ जिसरोगीका लोहू ऊपर नीचेके अङ्गोंमें चलाजाय तब शरीर सफ़ेदरङ्ग होजाय और दन्त नख, नेत्र ये जिसके सफ़ेदरङ्गकेहों और सबपदार्थ सफ़ेदरङ्ग दीखे वह पांडु रोगी निश्चय मरै॥ तीसराप्रकार॥ जिसके बाहु, जंघा शिर इन्होंमें सूजन हो और मध्य कहे बीचका देह दुर्बलहो ऐसा पाण्डु रोगी असाध्य होवैहै। और जिसके बाहु, जांघ, शिर ये

दुर्बलहो और बीच के शरीर में सूजनहो और गुदा में, लिङ्ग में अण्डकोश में सूजनहो और अंधेरी आवै और मृतप्राय हो अथवा ज्वरहो, अतीसारहो ऐसे पाण्डु रोगीको वैद्य चिकित्सा नकरै और जो इलाज करै तो यश मिलै नहीं ॥ त्रिफलादिलेह ॥ हड़ १ भाग बहेड़ा १ भाग, आमला १ भाग, शुंठि १ भाग, मिरच १ भाग, पिपल १ भाग, चीता १ भाग, बायबिडङ्ग १ भाग, शिलाजीत ५ भाग, चांदीभस्म ५ भाग, मंडूर ५ भाग, लोहभस्म ८ भाग, सोनामाखी ८ भाग इन्होंको कूटि चूर्णकरि शहद मिलाय लोहा के बर्त्तनमें घालि धरै पीछे १ तोला रोज़ खावै अग्निका बलदेखिके और यह चूर्ण जीर्ण होने पर भोजनकरै और इसपर कुलथी, काकमाची, कपोत का मांस इन्होंको बर्जिदेवै यह पाण्डुरोग को व विष को व कासको व श्वासको व क्षयीको व राजयक्ष्माको व विषमज्वरको व कुष्ठको व पेट के रोगको व प्रमेहको व सूजनको व अरुचि को व मृगीरोगको व कामलाको व गुदाके रोगोंको नाशैहै ॥ फलत्रिकादिकाढ़ा ॥ त्रिफला गिलोय, बासा, कटुकी, चिरायता, निम्बछाल इन्होंके काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे पाण्डु को व कामलाको हरै ॥ पुनर्नवादिकाढ़ा ॥ सांठी, निम्ब, कडूपरवल, शुंठि, कटुकी, गिलोय, दारुहलदी, हड़ इन्हों का काढ़ा सर्वांगकी सूजनको व पेटके रोगको व पाण्डुके रोगको व स्थूलताको व मुखसे पानीपड़ना को व कफके रोगको हरैहै ॥ बासादिकाढ़ा ॥ बासा, गिलोय, निम्ब, चिरायता, कटुकी इन्हों के काढ़ा में शहद, घृतमिलाय पीनेसे कामलाको व पाण्डुरोगको व रक्तपित्त को व हलीमकको व कफरोगको हरैहै ॥ दार्व्यादि ॥ दारुहलदी, दालचीनी, माखीभस्म, पिपलामूल, देवदारु इन्होंको प्रत्येक आठआठ तोले लेवै मंडूर १६ तोला इसको महीन पीसि आठगुणा गोमूत्र में पकाय पूर्वोक्त औषध मिलाय तोला भरकी गोलीबांधि तक्र के सङ्ग खावै और जीर्णहोनेपर भोजनकरै येमंडूरवटक पाण्डुरोगीको हितकारी है और कुष्ठको व सूजन को व उरुस्तंभको व कफरोगको व बवासीरको व कामला को व प्रमेहको व प्लीहाको नाशैहै ॥ किरातादिमण्डूर ॥ चिरायता, देवदारु, दारुहलदी, नागरमोथा, गिलोय

कटुकी,परवल,धमासा,पित्तपापड़ा,निम्ब,शुंठि,मिरच,पिपली,चीता हड़, बहेड़ा, आँवला,बायबिड़ङ्ग,ये समान भागलेवै इन सबोंके समान लोहाभस्मले मिलाय घृत शहद में गोली वांधे अनुपान से खावै ये गोली पांडुको व हलीमकको व सूजनको व प्रमेहको व संग्रहणीको व श्वासको व कासको व रक्तपित्त को व बवासीर को व उरुग्रहको व आमबातको व घावको व गुल्म को व कफ को व बिद्रधीको व सफ़ेद कुष्ठको नाशैहै॥ अथादिमोदक॥ लोह भस्म, तिल शुंठि,मिरच,पिपली, बड़बेरीफल ये समान भागले और इनसबोंके समान सोनामाखी भस्मले इन्होंको मिलाय शहद में गोली बांधि खानेसे दारुण पांडुरोगको हरै॥ पांड्वरिरस॥ पारा,गन्धक,अभ्रक भस्म,लोहभस्म ये समानभागले चूर्णकरि इसको कुमारपट्ठाके रस की ३ पुट देइ यह पांड्वरिरस रत्ती १२ खानेसे पांडु रोग को व कामलाको नाशैहै इसमें संशयनहींहै यहधन्वन्तरिकामतहै ऐसेजानो॥ पुनर्नवादिबटक॥ सांठी ४ तोला निशोत ४ तोला शुंठि४तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला बायबिड़ङ्ग ४ तोला देवदारु ४ तोला चीता ४ तोला कूट ४ तोला हल्दी ४ तोला दारुहल्दी ४ तोला हड़४तोला बहेड़ा ४ तोला आँवला४ तोला जमालगोटाकी जड़४तोला चबक ४ तोला कूड़ाकेबीज ४ तोला कटुकी ४ तोला पिपलामूल ४ तोला नागरमोथा ४ तोला काकड़ासिंगी ४ तोला सौंफ ४ तोला कायफल ४ तोला मण्डूर ८ तोला इसको आठ गुणा गोमूत्रमें पकाय गुड़ सरीखा पाक बनावै पीछे गोली बांधि खावै तक्रके सङ्ग यह पुनर्नवादि मण्डूर बटक अश्विनीकुमारों का रचाहै यह पाण्डुको व कामलाको व हलीमकको व श्वासको व कास को व क्षयको व ज्वरको व सूजनको व पेटके रोग को व शूलको व प्लीहाको व आध्मानको व बवासीरको व संग्रहणीको व कृमिको व बातरक्तको व कुष्ठको सेवन करनेसे नाशैहै॥ लोहासव॥ लोहभस्म १६ तोला शुंठि १६ तोला मिरच १६ तोला पिपली १६ तोला हड़ १६ तोला बहेड़ा १६ तोला आँवला १६ तोला अजमोद १६ तोला बायबिड़ंग १६ तोला नागरमोथा १६ तोला चीता

१६ तोला धौकेफूल ८० तोला इन्होंका चूर्णकरि शहद २५६ तोला मिलाय और गुड़ एक तोलाभर मिलाय और पानी २ द्रोण तोलभर मिलाय इसको घीके चीकने वर्त्तन में घालि १ मास तक धराराखै पीछे इस लोहासवको पीने से पांडुरोगको व सूजन को व गुल्मको व पेटके रोगों को व बवासीर को व कुष्ठको व प्लीहा को व खाजको व कासको व श्वासको व भगंदरको व अरोचक को व संग्रहणी को व हृद्रोगको नाशकरै है ॥ गोमूत्रलोह ॥ लोहके चूर्ण को ७ रात्रितक गोमूत्रमें भिगोइ पीछे दूधके संग खाने से पांडुरोग नाशहोवै ॥ गोमूत्रसिद्धमंडूर ॥ गोमूत्रमें मंडूरको पकाइ पीछे गुड़के संगखाने से पांडुरोगको व शूलकोनाशकरै ॥ नवायसादिचूर्ण ॥ चीता हड़, बहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, बायबिड़ंग, शुंठि, मिरच, पिपली ये समान भागलेवै और ६ भाग लोहकी भस्म इन्हों को मिलाय शहद घृतके संग अवलेह करि खावै ऊपर गोमूत्र अथवा तक्रका पानकरै यहपांडु रोगको व सन्निपातको व भगंदर को व सोजा को व कुष्ठको व पेटके रोगको व बवासीर को व मंदाग्नि को व अरुचि को व कृमिरोगको नाशै है ॥ दूसरानवायसचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच, पिपली हड़, बहेड़ा, आँवला, नागरमोथा, बायबिड़ंग, चीता, ये सम भाग ले और लोह चूर्ण ६ भागले इन्हों को कूटि चूर्ण करि घृत शहद में मिलाय खानेसे पांडुरोगको व हृदयरोगको व बवासीर को व कामलाको हरैहै और इस चूर्णको गोमूत्र संगपीने से बायुकापांडुरोग नाश होवै है और सूजन को व हृद्रोगको व उदर रोगको व कृमिरोगको व कुष्ठको व भगंदरको व अग्निमंद को व बवासीर को व अरुचिको नाशै है और इसी चूर्णको अदरखके अर्कके संगखावै तो कफके रोग नाश होवैं इसकी मात्रा १ रत्ती से लगाय ६ रत्ती तक खावै अथवा १८ रत्ती चूर्णको घृत शहदके संग मिलाय तक्र के संगखावै पांडुरोग नाशहोवै ॥ लोहादिचूर्ण ॥ लोहभस्म, शुंठि, मिरच पिपली, कंकोल, तिल, ये समान भागले और इनसबोंके समानभाग सोनामाखी की भस्मले मिलाय शहद युतकरि तक्रके संगखाने से पुराना पांडुरोगको हरै है ॥ शिलाजीतादियोग ॥ शिलाजीत, शहद,

बायबिडंग, घृत, हरीतकी, खांड, ये बराबर भागले चूर्णकरै पीछे १५ दिनतक खानेसे दुर्बलदेहवाला चंद्रमा पूर्णमासीकेसरीखा होजाय मंडूरबज्रबटक ॥ पिपली, पिपलामूल, चबक, चीता, शुंठि, मिरच, देवदारु, हड़, बहेड़ा, आंवला, बायबिडंग, नागरमोथा येसमभागले औरइन सबों से दुगुना मंडूरले पीछे इन्हों को आठगुणा गोमूत्र में पकाय गोलीबांधै १ तोला भरकी पीछे तक्रके संगखाने से पांडुरोग को व अग्निमंदताको व अरुचिको व बवासीरको व संग्रहणीको व सूजन को व उरुस्तंभको व हलीमकको व कृमिको व प्लीहाको व उदररोग को व गलरोगको नाशै है॥ हंसमंडूर ॥ मंडूरका चूर्ण करि आठगुना गोमूत्रमें पकावै पीछे पिपली ४ तोला पिपलामूल ४ तोला चबक ४ तोला चीता ४ तोला शुंठि ४ तोला देवदारु ४ तोला नागरमोथा ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४ तोला हड़ ४ तोला बहेड़ा ४ तोला आंवला ४ तोला बायबिडंग ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्त पाकमें मिलावै पीछे १ तोला रोज तक्र के संग खावै ऊपर पथ्य चावल तक्रलेवै यह पांडुरोगको व सूजनको व हलीमक को व उरुस्तंभको व कामलाको व बवासीरको हरै है॥ सिद्धमंडूर ॥ मंडूर ३२ तोला गोमूत्र २५६ तोला एकत्रकरिपकावै पीछे सांठी १ तोला निशोत १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पिपली १ तोला बायबिडंग १ तोला देवदारु १ तोला हल्दी १ तोला दारुहल्दी १ तोला पोहकरमूल १ तोला चीता १ तोला जमालगोटाकी जड़ १ तोला चबक १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आँवला १ तोला इन्द्रयव १ तोला कटुकी १ तोला पिपलामूल १ तोला नागरमोथा १ तोला अतीश १ तोला इन्हों का चूर्णकरि मंडूरके पाक में मिलाय १ तोला भरकी गोली बांधै यहसिद्धमंडूरबटक पांडुरोग को व सूजनको व उदररोगको व अफाराको व शूलको व कृमिरोग को व गुल्मको व सर्वरोग मात्र को नाशै है इस में सन्देह नहीं है॥ अमृतहरीतकी ॥ शतावरि २८ तोला भंगराज २८ तोला सांठी २८ तोला कुरंटक २८ तोला इन्होंका चूर्णकरि चौगुणापानीमेंकाढ़ा करि चतुर्थांशरक्खे और कपड़ा माहँ छाने पीछे हड़ १४४० तोला

मिलाय दूध १२० तोले मिलाय पकावे पीछे हड़ों को कांटासे वेध करि गिरीको काढ़े पीछे पारा २४ तोला, गंधक २४ तोला पात्र में क्षणमात्र पकाइ पात्रको अग्नि से उतारि द्रव्यको पलटा से चलाइ कठिन रूप करि चूर्णकरि पीछे गिलोय का शत २८ तोले मिलाय और शहद मिलाय गोली ३६० करि पीछे एक एक गोली हड़ोंका पेटमें घालि ऊपर सूतसे बांधि शहदसंयुक्त बर्तनमें घालि धरे पीछे एक गोली को रोज़ खाने से सूका पाण्डुरोग जावे ॥ पंचकोलघृत ॥ पिपलामूल, चीता, चबक, शुंठि, जवाय, दूध, दही, घृत, भारंग-मूल, कूट, पोहकरमूल, ये सम भाग ले और २०० हड़ ले इन्हों को चौगुने पानी में काढ़ा मंद मंद अग्नि ऊपर करावे पीछे घृतको उतारि ५ खानेसे किंवा नस्यलेनेसे किंवा बस्ति कर्मकरने से मनुष्यों को बहुत गुण दे है और पांडुको व हलीमकको व क्षयीको व राजय-क्ष्माको हरै है ॥ साधारणयोग ॥ चीताके चूर्णको आँवलाके फलको काढ़ामें भिगोय गौ के घृतकेसंग रात्रि में खाने से पांडुरोग नाशहोय है ॥ देवदालीयोग ॥ देवदाली के पंचांग का चूर्ण ४ माशे दूध के संग अथवा पानीके सङ्ग खानेसे १ महीनातक पाण्डुरोग को नाशै गोमूत्रहरीतकीयोग ॥ हड़ोंको गोमूत्रमें २१ दिनतक भिगोय पीछे एक हड़ रोज़खाने से पाण्डुरोगको नाशै अथवा जड़सहित कांसालुका चूर्णको खाने से पाण्डु रोग नाश होवै ॥ भूनिंबादि बटी ॥ चिरायता नागरमोथा, कडूपरवल, निम्ब, कटुकी, दारुहलदी, बायबिडंग, धमासा बहेड़ा, आंवला, हड़, शुंठि, पित्तपापड़ा, चीता, लोहभस्म ये सब समान भाग ले चूर्णकरि अदरखके रसमें गोलीबांधे पीछे १ गोली शहदके सङ्ग रोज़खानेसे उग्रपाण्डु रोग को नाशै ॥ मदेभसिंहसूत ॥ पारा, गन्धक हड़, बहेड़ा, आंवला, तांबा, शंख, लवंग, अभ्रक कांत, तीक्ष्णलोह, मंडूर, सिंगरफ, सुहागा ये सब समानभाग लेइ और इनसबोंसे तिगुना पुराना मंडूरलेइ पीछे इन्होंको गोमूत्रमें शुद्ध करि पीछे अग्निमें भूनि पीछे त्रिफलाकेरसमें खरलकरि पीछे भंग राजकेरसमें खरलकरि पीछे अदरखके रसमें खरलकरि सुखायपीछे त्रिफलाके रसमें भावनादेइ पीछे गिलोयके रसमें भावनादेइ पीछे

आठगुणा बासाके रसमें भावना देइ पीछे सांठीके रसमें अग्नि पर गरम करि करड़ा करै पीछे एक रत्तीकी गोली बनाइ रोग नाशक अनुपानके सङ्ग खावै ये गोली ज्वरको व पाण्डुको व तृषाको व रक्त पित्तको व गुल्मको व क्षयकोवकासको वस्वरभंगको वअग्निमांद्यको वमूर्च्छाको व बातब्याधिको व आठप्रकारकी महाब्याधि को व पित्त की महाब्याधिको व उन्मादकोहरैं और ज्यादहकहने से क्याहै यह मदेभसिंह सकल रोगोंकोहरै ॥ त्रैलोक्यनाथरस ॥ पारा १६ तोला गन्धक२० तोलागिलोयकासत१२तोलाशुंठि १२तोला मिरच १२ तोला पिपली १२ तोला तालमूल १२ तोला मोचरस १२ तोला अभ्रक २४ तोला लोह ३२ तोला इन्होंको मिलाय त्रिफलाके रसमें ६४ भावनादेवै पीछे अदरखकेरसमें ३२ भावनादेवै पीछेसहोंजना के रसमें १६ भावना देवै पीछे चीता के रसमें ८ भावना देवै पीछे कुवारपट्ठा के रसमें ८ भावना देवै पीछेअदरखके रसमें ८ भावना देवै इसकोमाशे६खावै खांड़ घृत के सङ्ग यहपाण्डुरोगको व क्षयीको व श्वासको हरै ॥ उदयभास्कर ॥पारा १ भाग गन्धक२भाग तांबा ८ भाग शिलाजीत३भाग हरताल२भाग त्रिकटु ४ भाग बचनागबिष २ भाग इन्होंको महीन पीसिनिर्गुण्डीके रसमें ७ भावना देइ पीछे अदरखके अर्कमें ७भावनादेइपीछे भृङ्गराजके रसमें ७ भावना देइ पीछे अरणीके रसमें ७ भावनादेइ और धूपमें सुखाताजावै और इसको अदरखकारस व शुंठि मिरच पीपल चूर्णकेसङ्ग खानेसेपाण्डु रोगको व कामलाको व सूजनको व अग्निमन्दताको व त्रिदोष ज्वर को व प्रमेहको व प्लीहाको व जलोदरको व संग्रहणीको व कुष्ठ को व धनुर्वातको नाशै और इसमें पथ्य चावल तक्रहै यह उदय भास्कर रस रोगरूपी अँधेराको हरैहै ॥ कामेश्वररस ॥ पारा४तोला गन्धक४ तोला चीता १२ तोला हड़१२तोला नागरमोथा २तोला इलायची २तोला पत्रज २ तोला त्रिकुटा ४ तोला पिपलामूल ४ तोला बच-नागविष ४ तोला नागकेशर १ तोला रेणुकबीज २ तोला इन्हों को आधातोलाभर पुरानेगुड़के पातमेंमिलाय पीछे अदरखके रसमें १पहरतक खरलकरि पीछे एकपहरतक घृतमें खरलकरि गोलीबेर

समानबनाइ खानेसे सूजनको व पाण्डुको हरैहै ॥ कालविध्वंसकरस ॥ पारा, सोना, रूपा, तांबा ये समान भागले नींबूके रसमें १ दिन खरल करि धूपमें सुखाय और इन सबों के समान पारा मिलाय कज्जली करै पीछे द्रव्यको बस्त्रमें बांधि इष्टिका यंत्रमें पकाय और नींबूरसमें गन्धक पीसि नीचेऊपर देवे पीछे गन्धक, देवारनारलघु गजपुटमें फूंकदेइ पीछे रसकेसमान लोहभस्म मिलाय दोनोंकटैली के रसमें पीछे निंबरस में एक एक दिन खरलकरै पीछे पांचगोसों में फूंकदेइ ऐसे नवपुटदेइ पीछे चीताके रसमें व आकके रसमें व करंजवाके रसमें पुट देइ पकावै मूषायंत्र में बार २ पकाय पीछे चूर्णकरि दशमांश बचनागविष मिलाय पीछे १ रत्ती रोज खावै यह कमल बिध्वंसक रस पांडुरोग को हरैहै इसमें संशय नहीं है यह धन्वंतरिका मत है ॥ पांडुवरीरस ॥ पारा, गन्धक, लोह ये समान भागले कुवार के पट्ठा के रसमें ३ भावना देइ गजपुटमें फूंकदेवै पीछे रत्ती१ २देवै पांडुको व कामलाको नाशकरै ॥ पांडुसूदन ॥ पारा गंधक, तांबाकीभस्म, जैपाल, गूगल ये समान भागले गौके घृत में गोली बनाय एकगोली रोज खाने से सूजनको व पांडुको हरै और इस रसपर शीतल जल व खटाईका त्यागकरै ॥ वंगेश्वर ॥ बंग, पारा इनको बराबर भागले कुवारपट्ठाके रसमें खरलकरै पीछे गोला बनाय कांचके बर्त्तनमें पकाय सफेदरंग चन्द्रमा सरीखाहो तब तक यह बंगेश्वररस पांडुको व प्रमेह को व दुर्बलताको व कामलाको नाशै है ॥ पांडुनिग्रहरस ॥ अभ्रकभस्म, पाराभस्म, गंधक, लोहभस्म मूसलीचूर्ण ये समानभागले पीसि मोचरसके पानी में १ दिन तक खरलकरि पीछे गिलोयके रसमें एकदिनतक खरलकरि पीछे त्रिफला के रसमें७दिनभावनादे पीछेअदरखके रसमें१ दिन भावनादेइ पीछे कुवारपट्ठाकेरसमें ७ दिन भावनादेइ पीछे चीताकेरसमें ७ दिन भावनादेइ पीछे सहोंजनाके अर्कमें ७ दिन भावनादेइ ऐसे पांडुनिग्रह रसहोवैहै यह रत्ती६ घृत व शहदमें मिलायखानेसे सूजनको व पांडुरोगको हरै इसपै यव, अमली, शुंठि, चीता, जैपाल, गरमदूध, चीकना अन्न, नवीन अन्न इन्होंको बर्ज्ज देवै ॥ अनिलरस ॥ तांबाभस्म, पारा

भस्म, गंधक, बच नागबिष ये समानभागले इन्होंको चीताके रसमें खरल २ घड़ी तक करै पीछे मन्दाग्नि ऊपर पकाय पीछे रत्ती २ की गोली बनाय खाने से सूजनको व पांडुरोगको नाशै॥ लोह सुन्दर॥ पाराभस्म १ भाग लोहभस्म २ भाग गन्धक भस्म ३ भाग महीन पीसि कांचकी शीशीमें भरि चुल्ही ऊपर बालुका यंत्र में १ दिन तक मन्दाग्नि से पकावै और पकाने से पहिले शीशीके मांह द्रव्यके ऊपर मोचरस, त्रिफलारस, गिलोयरस देइ पकावै पीछे शीतल होनेपर अदरख रसमें व शुंठि रसमें व मिरचरसमें व पीपल रसमें भावनादेइ यह लोह सुन्दररस शुकापांडुको नाशै है॥ चंदनादितैल॥ रक्तचंदन, सरला, देवदारु, दारुहल्दी, मुलहठी, एलाची, नेत्रबाला, कचूर, नख, शिलाजीत, पद्माख, नागरमोथा, केशर, कंकोल मूर्वा, जटामांसी, शिलाजीत, दगड़फूल, छोटीवड़ीहड़, दालचीनी, रेणुकबीज, चिरायता, सारिवा, कटुकी, अगर, नलिका, बाला, दाख इन्हों का काढ़ा करि पीछे तेलतिलोंका, मस्तु, लाखकारस ये तीनों बराबर भाग मिलाय मन्द मन्द अग्निपर पकाय तेलकोसिद्धकरै इसतेल को पीनेमें व बस्तिकर्ममें व नस्य में व मालिश में योजना करनेसे पांडुरोगको व क्षयको व कासको व ग्रहबाधाको व मन्दज्वरको व अपस्मारको व कुष्ठको व पामको नाशै और बल, पुष्टि, बुद्धि, स्मृति वीरज इन्होंको वढ़ावै यह चंदनादितैल रूपको व सौभाग्य को बढ़ाय संपूर्ण मनुष्योंको वशीभूत करै॥ मृत्तिकाभक्षणज पांडुनिदान॥ माटीको खानेसे बातादि दोष कोपको प्राप्तहोवै हैं और कसायली माटीखावै तो बातकोपहो और खारी माटीकोखानेसे पित्तकोपहो और मीठी माटीको खाने से कफका कोप होता है पीछे वही माटी सातधातुओंको और खाये हुये भोजनको रूखा व कडुआकरदेइहै फिर वही माटी पेट में बिगड़ करि पकीहुई नसों को फुला देइहै अथवा रस बहनेकी नसोंकोरोकदेइहै तो सबइंद्रियों का बलजाता रहैहै और शरीर का वीर्य्य और पराक्रम भी जाता रहता है फिर वहीमाटीशरीरकी खालको पीली करके बलबर्णअग्नि इन्होंको नाश करैहै तबउसको तंद्रा, आलस्य, श्वास, कास, शूल, बवासीर, अरुचि

और नेत्र, पांव, उदर, लिंग इन्होंमें सूजनहो और पेटमेंकृमि अतीसार, मल, कफ, रुधिर आदिसे मिलेहोयँ ये लक्षण मृत्तिकाखाने के पांडुरोगकेहैं ॥ केशरादि ॥ नागकेशर, मुलहठी, पिपली, निसोत इन्हों के काढ़ासे माटी खानेका पांडुरोग नाशहोवैहै ॥ घृत ॥ शुंठि, मिरच पिपल, बेल, हल्दी, दारुहल्दी, हड़, बहेड़ा, आमला, दोनोंसांठी, नागरमोथा, लोहभस्म, पाढ़ा, वायबिडंग, देवदारु, मेढ़ासिंगी, भारंगी इन्हों का कल्क दूधमें घृतको सिद्धकरि खानेसे माटी के खाने से उपजा पांडु रोगका नाश होवै ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांपांडुप्रकरणम् ॥

कामलाकर्मविपाक ॥ मनुष्यचावलों की चोरीकरै वहकामलारोगी हो ॥ प्रायश्चित्त ॥ वहमनुष्य गरुड़ की मूर्त्ति अपनी शक्ति माफिक्क सोनाकी बनवाइ और दोनोंपंखोंपर मोती जड़ाइ और मूर्त्तिके नाक में बज्ररत्न जड़ाइ चांदीकेघोटोंके बस्त्रउढ़ाइ ऐसीमूर्त्तिको घृतद्रोणपै रक्खै पीछे सफेद कपड़ासे वेष्टनकरि सफेदमाला पहनाइ पूजा करावै पीछेवेदज्ञ, धर्म शास्त्रज्ञ व बैष्णव व धर्मज्ञ ऐसे पण्डित को षोड़शोपचार से पूजि पूर्वोक्त मूर्त्ति दान करिदेवै ॥ औरप्रतिमादान॥ पीलिया व कामलावालेको आतंकदेवीकी मूर्त्तिबनायऔरकपाल व मूसल उस मूर्त्तिके हाथोंमें देइ ऐसी मूर्त्तिकी पूजाकरि ब्राह्मणोंको दानदेवै ॥ कामलानिदान ॥ जो पांडुरोगी अत्यंत पित्तकारी पदार्थों को सेवनकरै वह भोजन उस मनुष्यका पित्तको व लोहूको व मांस को दग्धकरि कामलारोगको पैदाकरै है ॥ लक्षण ॥ जिसके नेत्र खाल, नख, मुख ये अंग हलदीके समान पीले होजायँ और रक्त मिश्रित पीले रंगका मल व मूत्र उतरै और इंद्रियोंका बल जातारहे दाहहो अन्न पकेनहीं दुर्बलता और अरुचिहोइ ये लक्षण कामला रागके हैं और यह रोग पित्ताधिकसे कोठा व रक्तादिधातुओंके आश्रय हो ॥ कामलाचिकित्साक्रम ॥ इस रोगमें वैद्य पाहिले दूध, घृत

देइ स्निग्ध करि रेचन देवै पीछे रोगनाशक चिकित्सा करै ॥ नस्य व अंजन॥ हिंगको पीसि नेत्रमें आंजेसे कामलारोग नाशहोइ अथवा एरंडके रसमें पिपलीका चूर्ण मिलाय नस्य लेने से कामला जावै अथवा जालिनीफलके नस्य लेने से चावल धोवन के संग अथवा इसी फलकी गिरी सफ़ेद निसोत सिरसम इन्होंका नस्य लेने से कामला नाश होवै ॥ कुमारीकंदनस्य ॥ कुवारपट्ठा के रस में घृत मिलाय नस्यलेनेसे कामलारोग नाशहो। और यव, गेहूं, चावल, जांगलदेशके पशुका मांस, मूंग, मसूर, तूरि ये सब पांडु में व कामलामें भोजनहित हैं ॥ काढा ॥ हड़, बहेड़ा, आंवला इन्होंका काढ़ा किंवा गिलोयकाकाढ़ा किंवा दारुहल्दीका काढ़ा किंबा निम्बका काढ़ा ये सबकाढे शहदसंयुतकरै प्रभातमें पीनेसे कामलाको नाशै हैं॥पुनर्नवादिकाढा॥ सांठी, निंब, परवल, चिरायता, शुंठि, हड़, दारुहल्दी, गिलोय इन्होंकाकाढ़ा पांडुरोगको व कामलाको व श्वासको व कासको व पेटरोगकोवशूलकोवसूजनकोनाशै ॥ त्रिफलादि ॥ त्रिफला निम्ब चिरायता कटुकी बासा गिलोय इन्हों काकाढ़ाशहदसंयुतपीनेसे कामलाको व पाण्डुकोनाशै है ॥ गोदूधपान ॥ गौकेदूधमें शुंठिमिलायपीनेसे कामलारोग नाशहोवै ॥ हरीतक्यादिअंजन ॥ हड़, बच आंवला, सोनागेरु इन्होंका अंजन नेत्रमें आंजेसे कामला जावै ॥ खरविट्स्वरस ॥ गधाकी लीदको पीसिदहीमें मिलाय पीनेसे पित्तके रोगको व कामलाको नाशै ॥ गुडूचीकल्क ॥ गिलोयके पत्तोंका कल्क बनाय पीनेसे कामलाजावै ॥ धात्र्यादिचूर्ण ॥ आंवला, लोहकी भस्म शुंठि, मिरच, पिपली, हल्दी, शहद, खांड़ ये सब मिलाय खानेसे उग्रकामलाको भी नाशैहै ॥ अयोरजादिचूर्ण ॥ लोहकीभस्म, शुंठि मिरच, पिपली, बायबिड़ंग, हल्दी, हड़, बहेड़ा, आंवला इन्हों के चूर्णको खानेसे किम्बा निसोत खांड मिलाय खानेसे किंबा वृन्दावनदवाइका मगज़ शुंठि, गुड़ इन्होंको मिलाय खानेसे कामला रोग का नाशहोवै है ॥ व्योषादिचूर्ण ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, चीता, मिरच हड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोथा ये समान भाग लेइ और इन सबोंके समान लोहभस्म मिलाय तक्र, शहद, घृत मिलाय गरम

पानीके संग खानेसे कामलाको व पाण्डुरोगको व हृद्रोगको व कुष्ठ को व बवासीरको व प्रमेहको हरेहै ॥ अथोरजादियोग ॥ लोहभस्म हड़, हल्दी इन्होंको समान भागले शहदमें मिलाय खानेसे अथवा हड़के चूर्णका गुड़ शहदमें मिलाय खानेसे कामला जावे अथवा सफ़ेद गोकर्णीकेरसको अंजनकरनेसे अथवा दारुहल्दी, सोनागेरु आंवला इन्होंके चूर्णको खानेसे कामलाजावै अथवा देवडांगरीके फलके स्वच्छरसकी नस्यलेनेसे कामला जावे ॥लोहादिचूर्ण॥ लोह-भस्म, हल्दी, दारुहल्दी, हड़, बहेड़ा, आमला, कटुकी इन्होंके चूर्ण में घृत शहद मिलाय खानेसे कामलाजावे ॥ एलादिचूर्ण ॥ इलायची जीरा, भूमिआंवला, खांड़, दूधमें मिलाय प्रभातमें पीनेसे कामला को नाशैहै ॥हरिद्राचूर्ण ॥ हल्दीचूर्ण १ तोला दही ४ तोला मिलाय प्रभात में सेवन करनेसे कामला को नाशै है ॥ दार्व्यादिचूर्ण ॥ दारु-हल्दी, हड़, बहेड़ा, आंवला, शुंठि,मिरच, पीपल, वायबिड़ंग, लोह-भस्म ये समानभागले पीछे शहद घृत संयुतकरि खाने से काम-लाको व पाण्डुकोनाशैहै अथवा हलदी, हड़, बहेड़ा, आमला, निम्ब चिकनीमुलहठी इन्होंकाकल्क व भैंसकादूध व भैंसकेघृतको मिलाय घृतको सिद्धकरै पीछे इसको खानेसे कामलाकोहरै इसमें संशय नहीं है ॥ एरंडस्वरस ॥ एरंडकीजड़कारस ६ माशे दूधमेंमिलाय रोज़ पीने से ३ दिनतक कामलाको नाशैहै ॥ पथ्य ॥ दूध, चावल, घृतहै और नोनको खावेनहीं, दृष्टांत जैसे वायु बद्दलों को तैसे ॥ कटुकीयोग ॥ कटुकीके चूर्णको खांड़में मिलाय १ तोला भर खानेसे अथवा हड़ के चूर्णको शहदमें मिलाय खानेसे कामलाको नाशैहै ॥ कुंभकामला निदान ॥ बहुत दिनसे कामलारोग वालेको कोप होइ कुंभकामला पैदाहोवे है यह कष्ट साध्य है ॥ असाध्य लक्षण ॥ जिसका मल कृष्ण वर्णहो और मूत्र पीलावर्णहो और शरीरमें सूजनहो तो असाध्य कामलावालाहो अथवा जिसकामलावालेकाविष्ठा, मूत्र, नेत्र, मुख ये लालवर्ण हों और छर्दि आवै और शरीर माड़ाहो वहभी असाध्य है ॥ दूसराप्रकार ॥ जिस कामला रोग वालेके दाह, अरुचि, तृषा अफारा, पेटमें तंद्रा, मोह, नष्टअग्नि ये उपद्रवहों वह निश्चय

मरे ॥ कुंभकामलाका असाध्यलक्षण ॥ अर्दिहो, अरुचिहो, हल्लास हो ज्वरहो, ग्लानिहो, श्वासहो कासहो, अतीसारहो इनउपद्रवों सहित कुंभकामलावाला भी निश्चयमरै। कुंभकामलामें भी कामलानाशक औषधकरे ॥ शिलाजीतयोग ॥ शिलाजीतको गोमूत्रमें मिलाय पीने से कुंभकामला जावे ॥ मंडूर ॥ बहेड़ाके काठमें लोहके कीटको जलाय पीछे गोमूत्रमें पकाइ आठबार पीछे महीन पीसि शहदमें मिलाय खानेसे कुंभकामलाको व पांडुरोगको नाशकरै ॥ नस्यादियोग ॥ आककीजड़को महीन पीसि चावल धोवनके संग इसका नस्यलेने से कामलाको हरै अथवा एरंडकी जड़को शहदके संग खाने से कामला जावै अथवा ऊंगाकीजड़को तक्रके संग पीनेसे कामलाको हरैहै अथवा बिष्णुक्रांताकीजड़को तक्रकेसंग पीनेसे कामला जावै अथवा कलिहारी के पत्तोंके चूर्णको तक्रके संग पीने से कामला जावै अथवा त्रिफला, अदरख, गुड़ इन्होंको मिलाय खानेसे कामलाजावै ॥ हलीमकनिदान ॥ जिस पांडुरोगीके बात पित्तबढ़ै और त्वचा हरी पीली काली होजाइ और बल, उत्साह जातारहै और तंद्रा, मंदाग्नि, सूक्ष्मज्वर, दाह, तृषा, चित्तभ्रम येसबहोयँ और स्त्री का संग प्यारा न लगै और अंगमें पीड़ाहोय येलक्षण हलीमकके हैं यह बात पित्तसे उपजै है ॥ पानकलिक्षण ॥ शरीरमें दाहहो और अतीसार हो और शरीर पीलावर्णहो और नेत्रोंमें रोगहो येलक्षण पानकी के हैं ॥ हलीमकपरिभाषा ॥ जो पांडुरोगमें व कामलामें चिकित्सा कही है वही हलीमक में भी करनी उचितहै ॥ अथवा अयो भस्म योग ॥ लोहेकी भस्म, नागरमोथा इन्होंके चूर्णको खैरकेकाढ़ा के संग पीनेसे हलीमक को नाशै है ॥ सितादिलेह ॥ मिश्री, कटुकी चिकनी, मुलहठी, त्रिफला, हल्दी, दारुहल्दी इन्होंको शहद व घृत के संग खानेसे हलीमकको नाशै है ॥ अमृतादिघृत ॥ गिलोय रस अथवा कल्क इसमें भैंसकादूध चौगुणा मिलाय पीछे इन्हों में भैंसके घृतको सिद्धकरि खानेसे हलीमकको नाशैहै ॥ गुडूचीस्वरस ॥ गिलोयकारस चौगुणा भैंसके दूधमें भैंसके घृत को पकाय खाने से हलीमक को हरैहै ॥ पांडुकामला कुंभकामला हलीमकमें

पथ्य ॥ छर्दि, विरेचन, जीर्णयव, जीर्ण गेहूं, जीर्ण चावल, मूंग अरहर, तथा मसूर का रस व यूष, जंगलमें उत्पन्न रस, परवर पुराना कोइला, नवीन केलाके फल, जीवंतीशाक, तालमखाना मत्स्याक्षी, गिलोय, चौराई, सांठी, गोमा, बैंगन दोनों प्रकार के लहसुन, पका आम, हड़, कंदूरी का फल, सींगमछली, गोमूत्र आमला, मट्ठा, घृत, तेल, कांजी तथा जोकीकांजी मक्खन, चंदन हलदी, नागकेशर, जवाखार, लोहेकी भस्म, कसायलेरस, केशर और चरणोंकी संधिमें तथा नाभिके दोअंगुलनीचे और मस्तकमें तथा हाथों की कलाई में और स्तन तथा कांखके बीचमें दागना ये वस्तु दोषके अनुसार पाण्डुरोगके आदिमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ रक्तनिकालना,धुआंपीना, बमन, बेगोंकारोकना,स्वेदन, स्त्रीसंग, फली, पत्र, शाक, हिंग, उड़द, जलपीना, तिलकीखल, पान, सरसों मदिरा, मट्टीखाना, दिनमें सोना, तीक्ष्ण तथा नमकीनबस्तु, सह्याचल और विंध्याचल की नदियोंकाजल और सबभांतिकी खटाई बुराजल, विरुद्ध तथा अधिक भोजन, भारीअन्न, दाहकरनेवाली बस्तु ये सब पांडुरोगवालोंको विषके समानहैं ॥ कामलारोगमेंदम्भ ॥ कामलामें हाथके पृष्ठभागमें और कूर्पर भागमें तांबेकी शलाईको गरम करि दागना १५५० ॥

इतिबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांकामलाहलीमकप्रकरणम् ॥

रक्तपित्तीकर्मविपाक ॥ मदिराको सेवन करनेवाला रक्तपित्तीहोवेहै ॥ प्रायश्चित्त ॥ घटमें घृतभरि सोनाघालि दान करै अथवा छोटे घटमें शहदभरि सोनाघालि दान करै इससे रोगका नाश होवै ॥ज्योतिःशास्त्राभिप्राय ॥ जिसके जन्मकुण्डलीमें चन्द्रमाके क्षेत्र में मंगलग्रहहो वह रक्तपित्त वाला अथवा बवासीर युतहो ॥ दूसरा प्रकार ॥ लग्न और चन्द्रमा के बीच में मंगल हो तोरक्तपित्तज्वर दाह,पित्त,वायुरोग ये उपजें ॥ उपाय ॥ मंगलका जप करावै और खैरकी लकड़ियों मेंअग्नि जलाइ घृत तिलों को होमकरै औरलाल बैलका दानकरवावै अथवा बेलफल, चन्दन, चिकणा, शण, सिंगरफ, कालागूलर, बकुल इन्होंको कूटि जलमें उबालि स्नान करवानेसे मंगलका दोष निवारणहोवै ॥ रक्तपित्तनिदान ॥ बहुत धूपमें रहने से घणा मैथुनकरने से घणा शोच करने से गरम तीखी खारी वस्तु, खटाई कडुवी वस्तुको खाने से पित्तदाह होइ शरीरके लोहूको दग्धकरैहै तब उसका लोहू दोतरहसे प्रवृत्त होइहै एक ऊपर एक नीचे ऊपर तो नासिकामें,नेत्रों में,कानों में,मुखमेंप्रवृत्ति होवेहै। और लिंगमें गुदा में योनि में इनके द्वारा नीचे प्रवृत्त होवेहै और घणा लोहू कुपित हो तो बालों में प्रवृत्तहो है ॥ रक्तपित्तकापूर्वरूप ॥ अंगों में पीड़ाहोइ और ठंढा सुहावे मुँह में धुआं निकले बमनहोइ और लोहूकी बास मुखमें आवै तो जानिये रक्तपित्त होगा ॥ असाध्यलक्षण ॥ जिस रक्त पित्त वर्ण मांस धोवन सरीखा हो किंवा गाढ़ाहो किंवा कीचड़ सरीखा हो किंवा मेदसरीखा हो किंवा राधसरीखा हो किंवा लोहू सरीखा हो किंवा यकृत सरीखाहो किंवा पकाहुआ जामनकेफलसरीखाहो किंवा कालानीलाहो किंवा प्रेतसरीखी दुर्गंधि हो अथवा इन्द्रका धनुष आकाशमें निकलताहै तिससरीखा हो ऐसेवर्णका रक्तपित्तवालारोगी असाध्यहोवेहै इसमेंसंदेहनहीं है॥ वातिकरक्तपित्तनिदान ॥ काला झागों समेत महीन धारको लिये सूखोलोहूहोय तो वायुका रक्तपित्त जानिये॥ भोजन ॥ चावलसांठी चावल नाचणी, चणा, मूंग, मसूर, सांवा ये अन्न रक्तपित्त में हित हैं ॥ रक्तपित्तशास्त्रार्थ ॥ जिसके बातादिदोष बढ़ेहुयेहों पहिले लोहू

व पित्त शरीर में ज्यादहहोय और बल, मांसक्षय नहीं हो उसका उपचार करनाहित है। और ऊपर के छिद्रों में लोहू निकसा हो तो रेचनदेवै। और नीचे के छिद्रों में लोहू निकसताहो तो बमन करवावै। और रक्तपित्त में बलवान् मनुष्यको आदि में चिकित्सा न करे तो इतनेरोग उपजते हैं हृदयरोग, पांडु, संग्रहणी, प्लीहा, गुल्म पेटकेरोग ऐसेजानो और इसरोग सें बालकको व बलमांस रहित को व बूढ़ाको व शोषवालेको न बमनदेवै और न रेचनदेवै तिसको शमनीय औषधों से शांतकरै रोगको। और नीचरले छिद्रों में प्राप्त रक्तपित्तहो तो शालिपर्णी दवाई में सिद्ध यूषदेवै और रक्तातीसार नाशक औषध करै और रक्तपित्त में शीतलजल, जांगलदेशके मांस कारस, सांठीचांवलका मांड़ और पित्तनाश करनेवाले पदार्थ येसब हितहैं। और मसूर, मुंग, चना, मटर, तूरीअन्न इन्होंकी दालबनाय खाना व मांड़बनाय पीना रक्तपित्तमें हितहै। और रक्त पित्तवाला खट्टे फलोंको इच्छाकरै तो अनार, आमला, बेलफल ये देने हित हैं रक्तपित्त वाला तर्कारीके खानेकी इच्छाकरे तो परवल, निंब, बेतपान पिलषण, जलवेतस इन्होंके शाककी भाजी देनीहितहै॥ कामदेवघृत॥ असगन्धएकतोलाभर गोखुरूआधातोलाभर चिकनामूल४० तोला गिलोय ४० तोला शालिपर्णी ४० तोला बिदारीकन्द ४० तोला शतावरि ४० तोला सांठी ४० तोला पिपलामूल ४० तोला शुंठि ४० तोला काश्मरी ४० तोला कमलबीज ४० तोला उड़द ४० तोला इन्होंको कूटि चार ४ द्रोणभर पानी में काढ़ा चतुर्थांशरक्खै पीछे मुलहठी, बिदारीकंद, असगंध, हरणबेल, रानमुंगी, रानउड़द कूट, पद्माख, रक्तचंदन, तमालपत्र, पिपली, दाख, कवांचबीज, नीले कमल, नागकेशर, दोनोंसारिवा, चक्रभेड़, नागवला ये सब एक एक कर्ष प्रमाणलेइ खांड़ ८ तोला सफेद ईखकारस १०२४ तोला घृत १०२४ तोला ये काढ़ामें मिलाय कोमल २ अग्निसे पकाय घृतको सिद्धकरै इसघृतको खानेसे रक्तपित्तको व उरक्षत रोगको व हलीमकको व स्वरक्षयको व बातरक्तको व मूत्रकृच्छ्रको व मगरशूलको व कामलाको व धातुक्षय को व छातीकी दाहको व कृशपणाको व

वलक्षयको नाशकरै और वन्ध्यास्त्रीको गर्भदेवै और पुरुषके वीर्य्य को बढ़ावै यह कामदेव घृत बलको बढ़ावै है और रसायन है॥

दूर्वादिघृत॥ दूब १ तोला कमलकेशर १ तोला मजीठ १ तोला एलवालु १ तोला हड़ १ तोला लोध १ तोला कालावाला १ तोला नागरमोथा १ तोला चन्दन १ तोला पद्माख १ तोला घृत ६४ तोला चावल का धोवन २५६ तोला बकरी का दूध २५६ तोला मिलाय मन्द २ अग्निसे पकाय सिद्धकरै इस घृतके खानेसे लोहछर्दि जावै और इसकी नस्यलेने से नकसीर जावै और इस घृत को कानोंमे पूरनेसे कानोंमें निकसता रक्त बन्दहोय और नेत्रों से लोहू भिरताहोतो इस घृत को नेत्रों में आंजने से आरामहो। और लिङ्ग व गुदाद्वारा लोहू निकसताहो तो वस्तिकर्म करवावै इसीघृतसे और रोमचालों में लोहू झिलके तो इसी घृतकी मालिश करनेसे आराम होवै सबप्रकार के पित्तमें यह घृत श्रेष्ठहै॥

शतावर्यादिपेय॥ शतावरि, वाला, रास्ना, सिवनी, फालसा इन्होंका काढ़ाकरि पीनेसे रक्त पित्तको व शूलको जल्दी नाश करै॥ पित्तका रक्त पित्तका निदान॥ खैरकेकांटेसमान और काला व गोमूत्रसरीखा और स्याहीके समान चिकना होय तो पित्तका रक्तपित्तजानिये॥

त्रिफलादि॥ त्रिफला, अमलतास इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद मिलाय पीने से अनेक प्रकारके रक्तपित्त को व दाहको व पित्तशूल को नाशै॥ अगस्त्यादिकाढ़ा॥ अतीसके फूल, मजीठ, बड़कारोह रोहिष तृण इन्होंका काढ़ा रक्तपित्तकोहरै और इसको चावल मूँग के यूषके सङ्ग खावै॥ वासादिलेह॥ हड़को बासाके रसमें ७ भावना देइ खानेसे अथवा पिपली चूर्ण शहदमें मिलाइ खानेसे रक्तपित्त कोहरै॥ कूष्मांडावलेह॥ साफकिया छीलाहुआ कोहलाकेटुकड़े ४०० तोला और २ तोलाभर पानीमें सिजाइ आधा जल रक्खै पीछे उनको हलाके टुकड़ोंको दृढ़ कपड़ामें घालि निचोड़िलेवै पीछे धूप में सुखाइ शूलोंसे टुकड़ोंमें बहुत छेककरै पीछे उन टुकड़ोंको तांबा की कड़ाहीमें चढ़ाय घृत ३२ तोला मिलावै उस घृतमें कछुकभूनि करि पीछे पूर्वोक्तजलमिलावे पीछे अच्छीतरहपकाय पिपली ८तोला

शुंठि ८ तोला जीरा ८ तोला धनियां २ तोला तमालपत्र २ तोला इला-यची २ तोला मरिच २ तोला दालचीनी २ तोला इन्होंका चूर्णकरि मि-लावै पीछे शहद १६ तोला मिलाय अग्निबलाबलदेखि खानेसे रक्त-पित्त व क्षयको व ज्वरको व तृषाको व शोषको व अँधेरीको व छर्दिको व कासको व श्वासको व उदरक्षतको नाशकरै यह कूष्मांडावलेह बालक व बूढ़ेको भी हितहै और यह स्त्रीसङ्गकी इच्छा उपजावैहै और बलकरैहै ॥ कफयुक्तरक्तपित्त निदान ॥ गीला पीला चिकना मोरकेचंदा कैसा काला लोहू होय तो कफका रक्तपित्त जानिये ॥ अभयाभक्षण ॥ हड़के चूर्णमें शहदमिलाय खानेसे दीपन व पाचनकरै है और कफ से युक्त रक्तपित्त उपरले अङ्गोंमें भिलकेहै और वायुयुक्त रक्तपित्त नीचरले अङ्गोंपर भिलकेहै ॥ आज्यपान ॥ वकरीकेदूधमें घृतको व केशरको मिलाय पकाय पीनेसे उपरले अङ्गोंकी रक्तपित्तजावै और इसपै भोजन इसी दूध में मिलाय करै ॥ ह्रीवेरादि ॥ वाला, चन्दन कालावाला, नागरमोथा, पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा अथवा केवल जल देनेसे रक्त पित्तमें तृषा दूर होवै ॥ मृद्विकादिगुटी ॥ रक्तपित्त में लोह गन्ध सरीखा श्वास आवै और रक्त गन्धवाली डकार आवै तो मुनक्का दाख मिरच इन्होंके चूर्णमें दूनीखांड़ मिलाय खाने से आराम होवैहै ॥ पारावतादियूष ॥ पारावत, कवड़ा, लावा, कबूतर, व-तक, शशा, कपिञ्जल, मृग, हरिण इन पशुओंके मांसकारस पीने से रक्तपित्तको हरैहे ॥ घृतसैंधवयोग ॥ कफजरक्तपित्तमें कडुक खट्टे घृतमें भुना हुआ सेंधानोन संयुक्त पदार्थ देवै और बायुके रक्तपित्त में यूष शाक भाजी मांस रस ये पदार्थ देवै औ रस तीन अन्नका यूष व धानकी खीलोंको सत्तूमें मिश्री मिलायदेवै अथवा खजूर मुनक्का मुलहठी, फालसा इन्होंका जल ये रक्तपित्तमें हितहैं ॥ द्वंद्वजसन्निपात रक्तपित्तलक्षण ॥ जिसमें दोदोषोंकेलक्षणमिलैं वह दोदोषका रक्तपित्त जानिये और जिसमें तीनोंदोषोंके लक्षण मिलैं वह सन्निपात का रक्तपित्त जानिये ॥ असाध्यरक्तपित्तकालक्षण ॥ कफ व बात संयुक्त रक्त पित्त ऊपरले व नीचरले रस्तोंसे निकसैहै और ऊपरगत रक्तपित्त साध्यहोवै है और नीचे अङ्गों में गत रक्तपित्त याप्यहोवै है और

दोनों रस्तोंसे निकसता याने उपरले व निचर लेनेसे वह रक्तपित्त असाध्य होवैहै और एक रस्तेसे प्रवृत्तहो और उसमें मन्दपीड़ाहो और नया उत्तंभितहो और उपद्रवरहितहो ऐसा रक्त पित्त सुसाध्य होवैहै और एकदोषका रक्तपित्त साध्य होवैहै और दोदोषों का रक्तपित्त जाप्य होवैहै और तीनदोषों का रक्त पित्त असाध्य होवै है और मन्दाग्नि वाले के मन्द वेग रक्त पित्त हो तोभी असाध्य जानो और जिसका शरीर अन्य रोगोंसे क्षीणहो उसके रक्त पित्त उपजा असाध्य होवै है और वृद्ध मनुष्य के उपजा रक्त पित्त असाध्य होवै है और उपवास करने वालेके उपजा रक्त पित्त असाध्य होवै है॥ रक्तपित्तकेउपद्रव॥ दुर्बलपना, श्वास, कास, ज्वर, छर्हि, उन्माद, पाण्डुरोग, दाह, मूर्च्छा, भोजन किया पीछे ज्यादह दाह, अधीरपना, सुखकारक पीड़ा, तृषा, अतीसार, शिरमें गरमी थूकमें दुर्गन्धि, अरुचि अजीर्ण, ये रक्तपित्तके उपद्रव हैं॥ असाध्य लक्षण॥ जिस रक्तपित्त वालेको आकाशभी लालदीखे सो असाध्य और लालजाके नेत्रहोइँ और लोहू जिसकी डकारमें आवै और सर्वत्र लोहू दीखै सो अवश्य मरै॥ वृषादिस्वरस॥ बासाके पत्तोंके रसमें शहद, खांड मिलाय पीनेसे दारुण रक्तपित्त भी नाशहोवै॥ मातुलिंगादि पेय॥ बिजौराके फूल व जड़को चावल के धोवन के सङ्ग पीनेसे अथवा इसीके रसमें दूध व खांडको मिलाय नास लेनेसे नकसीर बन्दहोवै॥ उदुम्बरादियोग॥ गूलरके पकेहुये फलों को गुड़केसङ्ग अथवा शहदकेसङ्ग खानेसे नकसीर बंदहोइ॥ अश्वत्थपत्र योग॥ पीपलका पानका अभागका रस १ भाग, बेल ६ भाग, दुगुने शहदमें मिलाय खानेसे रक्तके प्रवाहको व हृदयके रक्तपित्त को हरै। दृष्टान्त जैसे बादलोंको पवन तैसे॥ चित्रकचूर्णयोग॥ चीता को शहदमें मिलाय खानेसे नकसीर बन्दहोइ॥ गन्धकादिप्राशन॥ गन्धक, पारा, सोनामाखीकी भस्म, इन्होंको लोहाके पात्र में त्रिफला के रसमें खरलकरि गौके दूधके सङ्ग राति में प्यावै यह रक्तपित्त को हरैहै॥ दुग्धादियोग॥ गौके दूध में अथवा बकरी के दूध में मुलहठी, महुआ, अर्जुनछाल मिलाय गरमकरि शीतल होने पर

मिश्रीमिलाय पीनेसे अथवा मुनक्का दाखको दूधमें मिलाय पीने से अथवा गोखुरूको दूधमें पकाइ पीनेसे अथवा खरैटी, शुंठि इन्हों को दूधमें मिलाय पकाय पीने से अथवा गोखुरू शतावरि इन्होंको दूध में पकाय पीने से रक्तपित्त नाशहोइ ॥ वासास्वरस ॥ बासाकारस पीनेसे रक्तपित्तको व क्षयी को व कासको नाशै ॥ लाक्षादियोग ॥ गौके दूधमें लाखका चूर्ण व शहद मिलाय पीवै पीछे जीर्ण होनेपर दूधमें मदिरा मिलाय पीवै यह क्षतोत्थ लोहूविकार को जल्दी नाशै अथवा लोहकान्तका भस्म, अर्जुनवृक्ष की छाल इन्होंका चूर्णकरि खाने से रक्त पित्त जावै ॥ मध्वादिपेय ॥ बासा के रसमें शहद मिलाय प्रभातमें हमेशह पीनेसे रक्तपित्तको नाशै, दृष्टान्त, जैसे अग्निको जल नाशकरै तैसे ॥ मधुकादिकल्क ॥ मधुका, हड़, बहेड़ा, आंवला, अर्जुनकीछाल इन्होंको घृतमें रातिमें लोहाके पात्रमें अवलेहकरि धारै पीछे प्रभातमें खानेसे रक्तपित्त को नाशै अथवा बकरीके दूधमें खांड़ मिलाय गरमकरि शीतल होने पर पीनेसे रक्तपित्त जावै ॥ ह्रीवेरादिकाढ़ा ॥ बाला, कमल, लोध, धनियां, लालचन्दन, मुलहठी, गिलोय, कालाबाला, बासा इन्हों का काढ़ा करि शहद खांड़ मिलाय पीनेसे उग्र रक्तपित्तको व तृषाको व दाह को व ज्वर को नाशकरै ॥ पद्मोत्पलादिकाढ़ा ॥ पद्मकेशर, कमलकेश, पृष्ठिपर्णी, राल, बासाके रसमें मिलाय शहद खांड युतकरि पीने से दारुण रक्तपित्त नाशहोवे अथवा जहां बासा रस न मिले वहां काढ़ासे कामलेवे ॥ इक्ष्वादिकाढ़ा ॥ ईषके गांड़ाका मध्य भागका टुकड़ा कन्दसहित नीलाकमल, सफेद कमलकेशर, मोचरस, मुलहठी, पद्माख, बड़का प्ररोह, शुंग, दाख, खजूर ये समानभागले काढ़ाकरि शहद खांड़ मिलाय पीने से रक्तपित्तको नाशै और प्रमेहकोभीनाशै चन्दनादिकाढ़ा॥ रक्तचन्दन, इन्द्रयव, पाढ़ा, कटुकी, धमासा, गिलोय बाला, लोध, पिपली, इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीने से कफको व रक्तपित्तको व तृषा को व कासको व ज्वर को नाशै ॥ उशीरादिकाढ़ा ॥ कालाबाला, चन्दन, पाढ़ा, दाख, मुलहठी, पिपली इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त बिकार जावै ॥ अमृतादि-

काढ़ा॥ गिलोय,मुलहठी,खजूर,गजपिपली,इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त बिकार नाश होइ॥ ह्रीवेरादिकाढ़ा॥ नेत्रबाला,धनियां,शुंठि,रक्तचन्दन,मुलहठी, बासा, कालाबाला इन्हों के काढ़ा में खांड़ शहद मिलाय पीनेसे रक्तपित्त को व तृषा को व दाह को व ज्वरको हरे॥ मुद्गादिकाढ़ा॥ मूंग,धानकी खील, यवसत्तू, पिपली,बाला,नागरमोथा, चन्दन,खरैटी इन्हों को राति में जल में भिगोइ दूसरे दिन काढ़ाकरि पीने से रक्तपित्तको नाश करे॥ यष्ट्यादि काढ़ा॥ मुलहठीको दूधमें मिलाय काढ़ाकरि शीतल होने पर खांड़ शहद मिलाय पीने से रक्त पित्त को हरे॥ पलाश काढ़ा॥ पलाश के काढ़ा में शहद खांड़ मिलाय पीने से रक्त पित्त जावै अथवा शहद घृत मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै अथवा गौ के गोबर के रस में शहद घृत मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै अथवा घोड़ा की लीद के रसमें शहद घृत मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै॥ आटरूषादि काढ़ा॥ बासाकारस,सांबा,तुरटीमाटी,रसोत,लोध, इन्होंके काढ़ा में शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त जावै॥ बासादिकाढ़ा॥ बासा, कमल तुरटीमाटी, लोध, रसोत, कमलकेशर, इन्होंके काढ़ा में शहद खांड़ मिलाय पीनेसे रक्तपित्त को हरे॥ उशीरादिचूर्ण॥ बाला, दारुहल्दी लोध, पद्माख, राल,कायफल,शंख, गेरू, ये समान भागले और इन सबोंके बराबर चन्दनले खांड़मिलायचूर्णकरि चांवलके धोवनके सङ्ग खानेसे रक्तपित्तको व तमकको व तृषाको व दाहको नाशकरे॥ मृद्वीकादिचूर्ण॥ मुनक्कादाख, चन्दन, लोध, कटुकी इन्होंके चूर्णको शहद व बासाके रसमें मिलाय खानेसे नाकके लोहूको व मुखके लोहूको व गुदाके लोहूको व लिङ्गके लोहूको व हथियार से कटे हुये अङ्ग में लोहू निकसताको नाशै और जो लिङ्गमें ज्यादह रक्तपित्तहो तो उत्तर वस्ति करवावै॥ चन्दनादिचूर्ण॥ चन्दन,जटामांसी,लोध,बाला,कमलकेशर, नागकेशर,बेलफल,भद्रमोथा,खांड़,काला,बाला,पाठा,कूड़ा छाल,कमल,शुंठि,अतीश,धौंकेफूल,रसोत आंबकीगुठली जामनकी गुठली,पाचरस,नीलाकमल,मजीठ,एलाची, अनारकी छाल ये सब समान भागलेइ चूर्ण करि शहद मिलाय चांवलके धोवन के संग

खाने से संपूर्ण अतीसारोंको व छर्दिको व स्त्रियों के रजोग्रह को हरे और पड़ताहुआ गर्भ को स्थापन करै यह रक्त पित्तको नाश करने वाला चूर्ण अश्विनीकुमारोंने कहाहै ॥ पत्रकादिचूर्ण ॥ तमालपत्र १ भाग दालचीनी ४ भाग एलाची ६ भाग तगर ८ भाग चन्दन १० भाग श्यामक १२ भाग शुंठि १४ भाग मुलहठी १६ भाग कमल १८ भाग आंवला २० भाग बासा २२ भाग ये सब औषध ले चूर्णकरि मिश्री शहद मिलाय खानेसे ज्वरको व रक्तपित्तको व कास को व क्षयीको व रक्तको व मूत्रकृच्छ्रको व रक्तकी छर्दिको व अङ्ग पीड़ा को व दाहको व स्मृति विभ्रम को व ऊर्ध्ववात को व श्वास को व हृद्रोगको व मनके सन्तापको व योनिरोगको व प्रदररोगको व हुचकीको व मुख, गुदा, नाक, लिङ्ग इन्होंसे पड़ते लोहूकोनाशै कर्पूरादिचूर्ण ॥ कर्पूर १ भाग कंकोल २ भाग जायफल ३ भाग जावित्री ४ भाग लवंग ५ भाग मिरच ६ भाग पिपली ७ भाग शुंठि ८ भाग इन्होंका चूर्णकरि सबोंके बराबर खांड़ मिलाय खावै यह चूर्ण दीपन है और अग्निको बढ़ावै है और रक्तपित्त को व प्रतिश्यायको व दमाको व कासको व अरुचिको व हृद्रोगको जल्दीहरै दृष्टांत जैसेबज्रशत्रुओंकोनाशै तैसे ॥ बासापुटपाक ॥ बासाकेपत्तोंको पीसि पुटपाक करि रसनिचोड़ि शहद मिलाय पीनेसे रक्तपित्त को व कासको व ज्वरको व क्षयीको नाशकरै ॥ एलादिगुटी ॥ एलाची २ तोला तमालपत्र २ तोला दालचीनी २ तोला दाख २ तोला पिपली २ तोला शिलाजीत ४ तोला मुलहठी ४ तोला खजूर ४ तोला मुनक्कादाख ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि शहद मिलाय गोली बांधै १ तोलाभरकी १ गोली रोज खानेसे कासको व श्वासको व ज्वरको व हुचकीको व छर्दिको व मूर्च्छाको व मदको व भ्रमको व रक्तकी छर्दिको व तृषाको व पसुली शूलको व अरोचकको नाश व शोष को व मूढ़वात को व प्लीहाको व स्वरभेदको व क्षतक्षय को व रक्तपित्त को नाशकरै और ये गोली तृप्तिकर हैं और बल वीर्य्यको बढ़ावैहैं ॥ हरीतक्यादिनस्य ॥ हड़, अनारकेफूल, दूब, लाखकारस इन्हों कानस्यलेनेसेजल्दी नकसीर बंदहोवै ॥ मस्तकलेप ॥ आंवलाको बा-

रीक पीसि घृत में भूनि मस्तकमें लेपकरनेसे नकसीर बन्दहोइ ॥ कल्कवघृत ॥ शीतल जलसे आंवलाका कल्ककरि १०० बार पानीसे धोया हुआ घृतमें मिलाय रक्खे पीछे शिरके बालोंको मुंड़वाय पूर्वोक्त बारम्बार लेपकरै यह नकसीर को जल्दी बंदकरै ॥ नस्य ॥ अनार के फूलोंके रसकी नासलेने से अथवा दूबके रसकी नास लेनेसे अथवा आंबकी गुठली के रसकी नास लेनेसे अथवा प्याजके रसकी नासलेने से अथवा पानी के नासलेने से नकसीर बन्दहोवै इसमें संशय नहींहै यह धन्वन्तरिका मतहै ऐसे जानो ॥ दूसराप्रकार ॥ कुँभारीके घरकी माटीको स्त्री के दूध में पीसि नास लेनेसे रक्त नाकसे पड़ता बन्दहोय अथवा लोहके भस्मको खैरसारमें मिलाय खानेसे नकसीर बन्दहोवै ॥ आर्द्रकादिनस्य ॥ अदरख गेरू धौकेफूल मुलहठी इन्होंका चूर्ण करि स्त्रियोंका दूध मिलाय नस्य लेनेसे नकसीर बन्द होवै ॥ हरीतक्यादिनस्य ॥ हड़ अनारके फूल कलहारी इन्होंको पानीमेंपीसि नासलेनेसे नकसीर बन्दहोवै अथवातीनदिनतक गेहूंकेचूनमेंखांड़दूधमिलायनासलेनेसे नकसीर बन्दहोवै ॥ कूष्माण्डावलेह ॥ खांड़ १२८ तोला आंवलाकारस १२८ तोला कोहलाके टुकड़ोंको अग्निमें तपाय शुद्धरस निचोड़ि वहरस २०० तोला घृत६४तोला छिलेहुयेकोहलाकेटुकड़े ४०० तोला बासाकारस२५६ तोला इन्होंको मिलायपकाय पीछेहड़१ तोला आंवला १ तोला भारंगी १ तोला तज १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची१तोला तालीसपत्र४तोला शुंठि४ तोला धनियां४तोला मिरच ४तोला पिपली १६ तोला शहद ३२ तोले मिलाय खानेसे कासको व श्वासको व ज्वरको व हुचकी को व रक्तपित्त को व हलीमक को व हृद्रोगको व आम्लपित्तको व पीनसकोनाशै ॥ दूसराप्रकार ॥ पुराना कोहला लेय छील उसके बीज काढ़ि टुकड़े करि वह टुकड़े ८०० तोला पानी २ द्रोण भरमें मिलाय काढ़ाकरि आधा पानी रक्खै पीछे शीतल होनेपर कोहला के टुकड़ों को नवीन कपड़ामें घालि रस निचोड़ि लेवै पीछे टुकड़ों को धूपमें सुखाय तांबाके पात्रमें ६४ तोला घृत घालि टुकड़ों को पकावै पीछे जब टुकड़े लाल रंग हो-

जायँ तब पूर्वोक्तजल मिलावैपीछे मिश्री १ तोलाभरि मिलायअव-लेहसा पकावै पीछे पिपली ८ तोला शुंठि ८ तोला जीरा ८ तोला धनियां२तोला तमालपत्र२तोला इलायची २ तोला मिरच२ तोला दालचीनी २ तोला शहद ३२ तोला किसी मुनिके मतमें खांड़ शहद से अधिक भाग मिलावे और किसी मुनिके मत में शहद से आधी मिलावै दाख १ तोला लवंग १ तोला कपूर १ तोला मिलाय घीके चिकने बासनमें घालि धरै पीछे जठराग्निका बला-बल देखि खानेसे यह कूष्माण्डावलेह रक्तपित्तको व क्षतक्षय को व कासको व श्वासको व छर्दि को व तृषा को व ज्वर को नाश करै और वीर्य को बढ़ावै और बूढ़ाको जवान करै और बलवर्ण को बढ़ावै और उरक्षतको संधानकरै पुष्टिकरै और स्वरको वधावै यह अश्विनी कुमारोंने कहाहै ॥ तीसराप्रकार ॥ पुराना मोटा कोहला लेय छील बीज काढ़ि शुद्धकरि टुकड़े महीन करि ४०० तोलालेवै दूध ८०० तोलामें मन्दाग्नि पर पकावै पीछे खांड़ २०० तोला गौका घृत ६४ तोला शहद ३२ तोला गोला मेवा १६ तोला चिरौंजी ८ तोला गोखुरू ४ तोला सौंफ१ तोला जीरा २ तोला अजमान२ तो-ला गोखुरू२ तोला तालमखाना २ तोला हड़२ तोला कोचकाफल २तोलादालचीनी२तोलाधनियां४तोलापिपली ४ तोलानागरमोथा ४ तोला आसगन्ध४ तोला शतावरि ४ तोला तालमूली ४ तोला नागबला४तोला बाला४तोला पत्रज४तोला कचूर४तोला जायफल ४तोला लवंग४तोला छोटीइलायची४ तोला बड़ीइलायची४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला चंदन ८ तोला शुंठि ५ तोला आंवला५तोला नागकेशर५तोलानेत्रबाला८तोलामिरच८तोला मिलायकूष्मांडाव-लेह ४ तोला रोज़ खानेसे अथवा जठराग्नि बलदेखि करि खानेसे रक्तपित्तको व शीतपित्तको व अम्लपित्तको व अरुचिको व अग्नि-मांद्यको व दाहको व तृषाको व प्रदरको रक्तार्शको व पित्तज छर्दिको व पाण्डुरोगको व कामलाको व उपदंशको व बिसर्पको व अजीर्ण को व जीर्णके ज्वरको व बिषमज्वरको नाशकरै और यह बृंहण है व बलको बढ़ावैहै इसको विशेषकरि माटीकेपात्रमेंधरै ॥ चौथाप्रकार॥

कोहलाका रस ४०० तोला गौका दूध ४०० तोला आंवला का चूर्ण ३२ तोला इन्होंको मिलाय मन्दाग्नि पर पकावै घन रूपहो जबतक पीछे मिश्री ३२ तोला मिलाय पीछे २ तोला रोजखानेसे यह कूष्माण्डावलेह रक्तपित्त को व आम्लपित्त को व दाह को व तृषाको व कामलाको हरैहै ॥ बासाखण्ड ॥ बासाकेपत्ते ४०० तोला पानी ३२०० तोलेमें मिलाय काढ़ाकरि चतुर्थांशरक्खे पीछेहड़ोंका चूर्ण १०२४ तोला मिश्री ४०० तोला मिलाय पकावै पीछे शीतल होनेपर शहद ३२ तोला वंशलोचन १६ तोला पिपली ८ तोला नागकेशर तमालपत्र इलायची दालचीनी इन्होंका चूर्ण ४ तोला इन्होंको पूर्वोक्तमें मिलाय खाने से रक्तपित्तको व कासको व श्वास को व क्षतक्षयको व विद्रधिको व पेटके रोगोंको व गुल्मको व तृषा को व हृद्रोगको व पीनस को हरै इसकी खानेकी मात्रा २ तोला है और इसपरभोजन यथेच्छकरना चाहिये ॥उसीरासव॥ बाला४तोला नेत्रबाला ४ तोला लालकमल ४ तोला सिवनी ४ तोला नीला-कमल ४ तोला धवकेफूल ४ तोला राल ४ तोला पद्माख ४ तोला लोध ४ तोला मंजीठ ४ तोला धमासा ४ तोला पाढ़ा ४ तोला चिरायता ४ तोला कटुकी४तोला बड़कीछाल४ तोला गूलर४तोला कचूर ४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला सफ़ेदकमल ४ तोला परवल ४ तोला कांचन वृक्षकी छाल ४ तोला जामन की छाल ४ तोला मोचरस ४ तोला दाख ८० तोला धवके फूल ६४ तोला इन्होंका चूर्णकरि २द्रोणभरि पानीमें मिलाय पीछे खांड़ ४०० तोला शहद ४०० तोला मिलाय पीछे बरतनके भीतर जटामांसी मरीच इन्हों केचूर्णसे धूपदेइ पीछे आसवको घालिधरै पीछेपीनेसे यहउसीरादि आसवरक्तपित्तको व पाण्डुको व बवासीरको व कृमिको व शोषको हरै है॥ वमन॥ नागरमोथा,इन्द्रयव,मुलहठी,मैनफल,दूध,शहद,शीतल गार इन्होंको मिलाय पानकरि वमन करनेसे रक्तपित्तको नाशकरैहै अथवा मुलहठीमें शहद मिलाय पीकरि वमन करनेसे रक्त पित्त जावै ॥ आरग्वधादिरेचन ॥ अमलतास, आंवला इन्होंके रेचनसे अथवा निसोत हड़ोंकेकाढ़ामें शहद खाँड़ मिलाय पीनेसे रेचनहोय

रक्तपित्तजावै अथवा मुलहठी, सिवनी इन्होंकीबराबरि खांड़मिलाय खानेसे दस्तहोय रक्तपित्त जावै अथवा बाला, खजूर, मुनक्का दाख मुलहठी, फालसा इन्होंके काढ़ा में खांड़ मिलाय पीने से रक्त पित्त जावै अथवा धानकी खीलोंका चूर्णकरि शहद घृत मिलाय खानेसे ऊर्ध्वगत रक्तपित्तको व तृषाको नाशै अथवा गांठवाला रक्त पित्त में परेवा की बीटमें शहद मिलाय खानेसे आरामहो और जिसके बहुत ज्यादह लोहू निकसे वह शहद में केशर को मिलाय खावै॥ खदिरादिलेह॥ खैर राल करेल सांवरी इन्होंके फूलोंकेचूर्ण में शहद मिलाय खानेसे रक्तपित्तजावै॥ उदुम्बरादिलेह॥ पक्केगूलरके फल काश्मरीहड़ खजूरकेफल मुनकादाखइन्होंकाचूर्णकरि शहदमिलायखाने से पृथक्पृथक् रक्तपित्तको हरैहै इसमें संशयनहीं ऐसे जाननायोग्य है॥ खंडकादिअवलेह॥ शतावरि ४ तोला मुंडी ४ तोला खरैठी ४ तोला गिलोय ४ तोला दालचीनी ३० तोला पुष्करमूल ३० तोला भारंगी ३० तोला बासा ३० तोला छोटी कटैली ३० तोला बड़ी कटैली ३० तोला खैरकीजड़ ३० तोला इन्होंकोकूटि १०२४ तोले पानीमें काढ़ाकरि अष्टमांश रक्खै पीछे सोनामाखी की भस्म ४८ तोला सोनाभस्म ४८ तोला लोहाभस्म ४८ तोला खांड़ ६४ तोला घृत६४ तोला इन्होंको मिलायलोहा के कराहमें पकावै गुड़के पाक सरीखा हो तब बंशलोचन ४तोला बायविडंग ४ तोला पिपली ४ तोला शुंठि ४ तोला जीरा ४ तोला स्याहजीरा ४ तोला ककड़ीके बीज ४ तोला हड़ ४ तोला बहेड़ा४तोला आंवला४तोला धनियां ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली४तोला नागकेशर ४ तोला मिलाइ चिकनेबर्त्तनमें घालिरक्खै पीछे १ तोला रोज़ दूधकेसंग प्रभात में खावै ऊपर भारी अन्नका भोजन करै यह खंडाद्यवलेह रक्तपित्तको व रक्तप्रवाहको व रक्तशूल को व रक्तातीसार को व रक्तप्रमेहको व भगंदरको व बवासीर को व सूजनको व अम्लपित्तको व क्षयको व कुष्ठको व गुल्मको व वातरक्तको व प्रमेहको व शीतपित्तको व छर्दि को व कृमिको व पांडुरोगको व प्लीहाको व पेटकेरोगोंको व अफराको व मूत्रकृच्छ्रको नाशकरै और यहनेत्रोंको हितहै औरबलको व वीर्य्य

को बढ़ावेहै और मंगल रूपहै प्रीतिको बढ़ावेहै बंध्याको पुत्रदेइ है कामदेवको व जठराग्निको बढ़ावेहै लक्ष्मीको बढ़ावेहै शरीर को हलका करैहै और इसपर बकरा, परेवा, तीतर, ककेरा, शशा, मृग कृष्णहरिण इनजीवोंका मांसखाना हितहै और गोला, दूध, कुरडू चाकवत, सूकामूल, जीवंती, परवल, बैंगन, आंब, खजूर, अनार ककारादि५जलजन्तुओंका मांस ये पदार्थ और अनूपदेशका मांस इन्होंको वर्जिदेवै ॥ रक्तपित्तकुठाररस ॥ पारा, गंधक, मूंगा, सोनामाखी, सीसाभस्म ये समान भागले पीछे चन्दनके रसमें ३ भावनादेइ पीछे कमल के रसमें ३ भावनादेइ पीछे मालती के रसमें ३ भावनादेइ पीछे बासाके रसमें ३ भावनादेइ पीछेधनियां के रसमें ३ भावनादेइ पीछेगजपिपलीकेरसमें ३ भावनादेइ पीछे शतावरीके रसमें ३ भावनादेइ पीछे शाल्मलिकेरसमें३ भावनादेइ पीछेबड़की जड़के रसमें ३ भावना देइ पीछे गिलोयके रसमें ३ भावनादेइ ऐसे रक्तपित्त कुठाररस सिद्धहोवेहै यह १ माशा बासाकेरसमें व शहद में मिलाइ खाने से रक्तपित्त को नाशकरै इसके समान भूतल में कोई औषध रक्तपित्तनाशक नहीं है ॥ बासासूत ॥ बासाके पत्तोंका रस ४ तोला, पाराकी भस्म ३ रत्ती मिलाइ १ तोला शहद मिलाय खानेसे रक्तपित्तजावै ॥ बोलपर्पटीरस ॥ पारा, गंधक, बोल ये बराबर भागले चूर्णकरि लोहके पात्रमें तपाइ गोबर ऊपर केलाका पत्ताधरि उसपर द्रव्य गेरि दूसरे केलाके पत्तेसेढकि पीड़न करै पीछे यहरस ८ रत्तीले शहद खांड़में मिलाइ खानेसे रक्तपित्तको व बवासीरको व रक्तस्रावको व योनिस्रावको नाशकरै ॥ सुधानिधिरस ॥ गन्धक, पारा, सोनामाखी, लोह ये सब समान भाग लेइ पीछे लोहाके पात्रमें त्रिफलाके रसके संग इन्होंको खरलकरै पीछे गोलीबांधि रात्रिमें खावै यह रक्त पित्तको नाशकरै ॥ आटरूषाद्यक ॥ वासाके अर्कमें दाख, हड़, खांड़मिलाइ पीनेसे अथवा बासा के रसमें शहद मिलाइ पीनेसे अथवा बासा के रसमें लोध, राल मुनक्कादाख, चन्दन मिलाइ पीनेसे अथवा अनारके फूलोंके रस को पीनेसे अथवा मुनक्का दाखके रसको पीनेसे अथवा आम

कीगुठली के रसको पीनेसे रक्तपित्त सब तरहका जावै ॥ शतावरि घृत ॥ शतावरि, अनारफल, अमली, कंकोल, मुलहठी, भूमि कोहला, बिजौराका पंचांग इन्होंका कल्ककरि चौगुना दूध मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे कासको व ज्वरको व उन्मादको व मलबद्धताको व शूलको व रक्तपित्त को नाशकरै ॥ दूर्वादितैल ॥ दूब नींबफल, मजीठ, दाख, ईखकारस, चन्दन, सफेदसारिवा, नागरमोथा, हलदी ये समान भागले तेल ६४ तोला, दूध २५६ तोले मिलाइ तेलको सिद्धकरि मालिश करने से रक्त पित्तको हरै और बलबढ़ावै, बातकोहरै और यहदूर्वातैल शरीरको सोनासमान कांतिवालाकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ दूब, निंबोली, उड़द, कुलथी, बंशलोचन मोचा, अघाड़ा, खरमंजरी, सहदेईकी जड़ इन्होंको कूटि अठगुना पानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांश तेल मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे अफारा को नाशकरै ॥ रक्तपित्तमेंपथ्य ॥ जो नीचेते होयके जायतो वमन करावै और जो ऊपर अर्थात् मुख आदि में होकरि निकले तो विरेचन अर्थात् दस्त कराना योग्य है और जो दोनों मार्गों से निकले तो लंघन कराना उचितहै पुराने साठीधान, कोदो कंगुनी, समा, यव, तृणधान्य, मूंग, मसूर, चना, अरहर, बनमूंग ये सब पुराने पथ्यहैं चिंकुट और वर्म्मीनाम मछली, शशा, पिंडकी हरिण, एण, लवा, बगला, कबूतर, बटेर, मुरगा, कालपुच्छ, श्वेत तीतर इन्होंकामांस और कसायली बस्तु, गौ और बकरीका दूध तथा घृत, भैंसका घृत, कटहर, चिरौंजी, केलेकेफल, जल चौराई तथा चौलाई, परवर, बेतकीकोंपल, अदरख, पुराने कुम्हड़ेका फल पकाताड़काफल, ताड़फल के बीजकाजल, बासा, स्वादु तथा तीखे रस, अनार, छुहारा, आमला, सौंफ, नारियल, कसेरू, सिंघाड़ा पुष्करमूल, कैथ, कमलकीजड़, फालसा, चिरायताशाक, नींबकी पत्ती, तूंबी, इन्द्रयव, धानकी खीलोंकासत्तू, दाख, मिश्री, शहद ईखके रसकी बस्तु, शीतलजल झरणा आदिकाजल, जलका छिड़कना, न्हाना, सौबारका धोयाघृत, तैललगाना, शीतललेप शीतलपवन, चन्दन, चन्द्रमाकी किरण, मनको सुहावनी अच्छी

कथा, फूहारोंकोघर, अच्छीशीतल भूमिमेंघर, वैडूर्य्य मोतीआदि मणियोंको पहिरना, केला, नीलकमल और कमलके पत्तोंकीसेज, रेशमी कपड़ा, अच्छा शीतलबाग, प्रियंगु, चन्दनचर्चित अंगवाली सुंदर स्त्रियोंका आलिंगन, तलाव, नदी, कुंड, चन्द्रोदय, तुषार के कण और अच्छे शीतल पहाड़ी झरनों का कानों में सुखदेनेवाला कीर्त्तन, नदीके तटकाजल, कपूर येसब पदार्थ रक्तपित्तमें पथ्य हैं॥

अथअपथ्य॥ दण्डकरना, मार्गचलना, सूर्य के किरण, तीक्ष्णकाम क्षोभ, वेगकारोकना, चंचलपन, हाथी घोड़ेका चढ़ना, स्वेदन, रुधिर निकालना, धुवांपीना, मैथुन, क्रोध, कुलथी, गुड़, बैंगन, तिल, उड़द सरसों, दही, खार, कुएंकापानी, पान, खस, मदिरा, लहसनसेंभी विरुद्ध भोजन, कड़ुये, खट्टे, खारी और विदाही पदार्थ ये सब रक्तपित्त में अपथ्य हैं॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघंटरत्नाकर
भाषायांरक्तपित्तप्रकरणंसमाप्तमगात्॥

क्षयोमें कर्मविपाक॥ ब्रह्महत्या करनेवाला व खेत, बाग, स्त्री इन्हों का नाश करनेवाला क्षयरोगी होवै॥ प्रायश्चित्त॥ कदली दान। रोगी अपने वित्तके अनुसार सोनाको केलाके वृक्ष पत्तों व फलों सहित बनवाइ पीछे कपड़ा व सूत्रसे लपेटि तैयार करै अथवा ४ तोले सोनेका केलाका वृक्ष बनावै पीछे नानाप्रकार के पक्वान्नों से ब्राह्मणों को भोजन करवाइ पीछे दरिद्री ब्राह्मण जो ब्रह्मज्ञान में भी निष्ठहो व धर्मका जाननेवाला व शांतरूप ऐसे शुद्ध ब्राह्मणकोपूजाकरिपीछे। हिरण्यगर्भपुरुष परात्परजगन्मय। रंभादानेनदेवेश क्षयंक्षपयमेप्रभो॥ इस मंत्रको पाठकरि सोनेके केला को दान देवै पीछे पुण्याहवाचन करावै पीछे मित्र व बंधुजनों के संग आप भोजनकरै॥ ब्रह्मचर्यादियोग॥ जो धर्मशास्त्र को जाने बिना लोभसे किसी का प्रायश्चित्त करावै उसके राजयक्ष्मा रोग होवै॥ प्रायश्चित्त॥ रोगी अपने शरीर के समान सोनाकी मूर्त्ति राजय-

क्ष्माकी बनाइ शरीर कृशहो और तर्जनीमें उस मूर्त्तिके शंखधारण करावै और ३ नेत्र व २ जाड़करावै पीछे उस मूर्त्तिकोब्राह्मण को दानदेवै ॥ ज्योतिःशास्त्रभिप्राय ॥ ब्रह्मचर्य्य को रखनेसे व दानकरनेसे व तपकरनेसे व देवताका पूजन करने से व सत्य बोलने से व आचार करनेसे व सूर्य्यकी पूजादि करने से व वैद्य व ब्राह्मणों की पूजन से राजरोग जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ जिसके जन्मपत्र में सूर्य्य क्षेत्रमें बुधहो अथवा सूर्य्य के संगहो उसको कुष्ठ, क्षयी कंडू, भगंदर ये रोगहों और हाथीआदि से भयहो देवपूजादि योग से सुखहोइ अथवा जिसकी जन्मपत्रीमें चंद्रमाके क्षेत्रमें बुधहो उसको क्षयीरोग कुष्ठ पांडु ये उपजें ॥ शास्त्रार्थ ॥ इसरोगवाला देवताकी पूजा हमेशह करि वैद्य गुरुओं में भक्ति रक्खे औरबकरी के मांस व दूधको हमेशह खानेसे बहुत कालतक धीरजवान् जीवै। और जो वैद्य उपद्रवको देखि शास्त्रके अनुसार इलाजकरै वहइस रोगमें श्रेष्ठ है और कुत्सित वैद्यकी औषध लेवे नहीं औ विरुद्ध औषध भी रोगीलेवे नहीं ॥ गीतादिउपाय ॥ गीत बाजा इष्ट पदार्थ प्रियस्तुति आनंददायक पदार्थ आश्वासन वचनगुरुसेवा येसब राजरोग को हरैहैं ॥ राजयक्ष्मानिदान ॥ मल मूत्र अधोवायु को रोकनेसे और वीर्य्यके क्षीणपनेसे और घना साहसके करनेसे और बिना समय घना भोजन करनेसे यह उपजै है सो इस रोगमें कफ प्रधानहोवैहे सो वह कफ बहुत स्त्रीसंगकरने से यह त्रिदोष राजरोग पैदा होय है यह बहने वाली नाड़ियोंको रोकि वीर्य को नाश करिधातुओं को नाशैहै तब वहमनुष्य दिनदिन सूखता जावै ऐसे राजरोगकी उत्पत्तिहै और यहरोग पहिले चन्द्रमा के हुआथा इस वास्ते इसको राजयक्ष्मा कहते हैं ॥ पूर्वरूप ॥ खांसी श्वास अंगमें पीड़ा कफकाथूकना नासिका व तालुवाका शोष बमन अग्निकी मन्दता पीनस येहों और नींद बहुत आवे और नेत्रसफ़ेद रंगहोजावैं और मांसखाने की इच्छाहो और स्त्रीसंग करनेकीइच्छा बनी रहै और स्वप्नमें काक तोता शाल शिदरी मयूर गीध बानर कीरल काठ इन्होंपै आपाको चढ़ा मालूमकरै और सूखीनदी स्वप्नमें दीखैं

और स्वप्न में सूखे वृक्षोंको दावाग्नि से जलते हुये देखै ये लक्षण राजयक्ष्माके पूर्वरूपके हैं ॥ राजयक्ष्माकालक्षण ॥ कंधा व पसवाड़ा में संतापहो और हाथपैर जलैं और सर्वांगमें ज्वररहै तो जानिये राजरोग है ॥ बायुकेराजरोगकालक्षण ॥ स्वरभेदहो और पसवाड़ा व कांधा में संकोचहो तो राजरोग बायु का जानिये ॥ पित्तकेराजरोगकालक्षण ॥ ज्वरहो, दाहहो, अतीसार हो और मुखमें लोहूआवे तो राजरोग पित्तकाजानिये ॥ कफकेराजरोगकालक्षण ॥ माथाभारीरहै और भोजनमें अरुचिहो खांसीहोय और कंठसे बोलाजावे नहीं तो राजरोग कफकाजानिये। और ये एकादश उपद्रवोंसहित राजरोगहो अथवा कास अतीसार पसुली शूल अरुचि ज्वर इनछः उपद्रवों सहित राजरोग हो अथवा कासज्वर, लोहूविकार इनउपद्रवों सहित राजरोगहो ऐसे रोगी का इलाज वैद्य यश चाहनेवाला करे नहीं ॥ पुनःअसाध्यलक्षण ॥ जो एकादश उपद्रवों सहित वा ६ उपद्रवों सहित वा ३ उपद्रवों सहित राजरोगमें मांस बलनाशहो ऐसे को असाध्य जानो अथवा जो राजरोगी भोजन खावे और दिन २ सूखताजाय और अतीसारयुतहो और पेट में और अंडकोशमें सूजनहो ऐसा राजरोगी महाअसाध्य होवे है ॥ साध्यलक्षण ॥ जो राजरोगी के ज्वर नहींहो और बलवान्हो और चिकित्साको सहनकरै व विचारवान्हो और जठराग्नि जिसकी दीपनहो वह साध्य जानिये ॥ असाध्यलक्षण ॥ नेत्र सफेदहों और अन्न में अरुचिहो और श्वासरोग बढ़ाहुआहो। और कष्टकरि बहुत मूत्रकरै ऐसा राजरोग वाला निश्चयमरै। इसमें संशयनहीं है यह धन्वंतरिजी महाराजजी को मतहै ऐसेजानो ॥ क्षयहारकपदार्थ ॥ बैंगन करेला तेल बेलफल राई स्त्रीसंग दिनमेंशयन कोप ये सब क्षयवाला त्यागदेवै। और चावल यवका सत्तू गेहूं मूंग और चार पैरोंवाले जानवरों में स्त्रीजाति और पक्षियोंमें पुरुषजाति पक्षी इन्होंका मांस ये सब क्षयवालेको हित हैं और बकरीका मांस व बकरीका दूध व बकरीका घृत खांड़ सहित व बकरीकी सेवा व बकरियों के मध्यमें रहना ये सब राजयक्ष्मा को नाश करते हैं। और रागके गावनो से व बाजा बजाने व सुनेसे

व अच्छे शब्दको सुननेसे व अपनी स्तुति सुनने से व प्रियवचन सुनने से व हर्ष देनेवाले बचनोंको सुनने व आश्वासनसे व गुरुकी पूजाकरने से राजरोग जावे है॥ षडंगयूष ॥ औषध से छगुणा मांस पानी आठगुणा पकाया घृत चतुर्थांश ये मिलाय यूषकरि पीने से राजरोग जावे ॥ ज्वरदाहीक्रिया॥ जो ज्वरनाशक क्रिया पीछे कही हैं वही क्रिया राजरोगमें ज्वर व दाहहो तो करै॥ वर्कभक्षण ॥ सोना के वर्क १ नोनीघृत मिश्री शहद इन्होंको मिलाय खानेसे क्षयीरोग नाशहो इस प्रयोगके समान और कोई प्रयोग नहीं है और ग्रन्थकार शिवजीकी सौगन्दखाइ कहताहै कि यह प्रयोग कभी भी निष्फल होवे नहीं॥ च्यवनप्राश्यावलेह ॥ पाटला ४ तोला अरणी ४ तोला सिवनी ४तोला बेलमूल ४ तोला सहोंजना ४ तोला गोखुरू ४ तोला शालपर्णी ४ तोला पृष्ठिपर्णी ४ तोला छोटीकटैली ४ तोला बड़ीकटैली ४ तोला पिपली ४ तोला काकड़ासिंगी ४ तोला मुनक्का दाख ४ तोला गिलोय ४ तोला हड़ ४तोला चिकणामूल ४तोला भूमि आंवला ४ तोला वासा ४ तोला ऋद्धि ४ तोला वृद्धि ४ तोला जीवक ४ तोला ऋषभ ४ तोला हरणबेल ४ तोला नागरमोथा ४ तोला पोहकरमूल ४ तोला काबलीमूल ४ तोला रानमूंगी ४ तोला रानउड़द ४ तोला सांठी ४ तोला काकोली ४ तोला क्षीरकाकोली ४ तोला कमल ४तोला मेदा ४तोला महामेदा ४ तो० इलायची ४तोला कालाअगर ४तोला ये सबलेइ मोटाचूर्णकरिपीछे बड़े पात्रमें घालि और ५०० आमले मिलाय १ द्रोणभरि पानी मिलाय पकाय अष्टमांश रक्खे पीछे आंवलों को छीलि साफकरि नवीन कपड़ामें घालि मर्दनकरै पीछे घृत २८ तोलामें आंवलों को भूनि पिछलाकाढ़ामिलावे पीछे २०० तोला खांड़ मिलावे पीछे अवलेह सरीखा पाकबनाय पिपली ८ तोला बंशलोचन १६ तोलादालचीनी १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र १ तोला केशर १ तोला ये मिलाय शहद २४ तोला मिलावे ऐसे च्यवनप्राश्यअवलेह बनैहै यह च्यवनमुनिने कहाहै इस अवलेहको जठराग्निका बल देखि खावै यह रसायनहै और यहबालकको व वृद्धको व क्षतक्षीणको व

नारीक्षीणको व शोषीको व हृद्रोगीको व स्वरक्षीण को हितहै और कासको व श्वासको व पिपासाको व बातरक्त को व उरोग्रह को व बातपित्तको व धातुविकारको व मूत्रदोषकोहरै और बुद्धि व स्मृतिको बढ़ावै और स्त्रीसङ्गकी इच्छाउपजावै और कांति प्रसन्नताको बढ़ावै और इसके सेवनमें अजीर्ण होनेदेनहीं ॥ एलादिचूर्ण ॥ एलाची तमालपत्र नागकेशर लवंग ये सब १ भाग खजूर २ भाग मुनक्का दाख मुलहठी खांड़ पिपली ये सब ४ भाग इन्होंका चूर्ण करि शहद में मिलाय खानेसे क्षयीको नाशकरै॥ अश्वगन्धादिचूर्ण ॥ असगन्ध ४० तोला शुंठि २० तोला पिपली १० तोला मिरच ५ तोला चातुर्जात १ तोला दालचीनी १ तोला भारंगीकी जड़ १ तोला तालीसपत्र १ तोला कचूर १ तोला जीरा १ तोला अजमान १ तोला कायफल १ तोला जटामासी १ तोला कङ्कोल १ तोला नागरमोथा १ तोला रास्ना १ तोला कटुकी १ तोला जीवंती १ तोला कूट १ तोला इन्होंका चूर्णकरि और इनसबोंकी बराबर खांड़मिलाय इसचूर्ण को प्रभातमें गरम जलकेसङ्ग खावै बातक्षयको व पित्तक्षयको नाशकर नेवास्ते इसचूर्णमें बकरी व गौका घृत मिलायखावै और शहदयुत चूर्णको खानेसे कफक्षय जावै और नोनीघृत युत चूर्ण को खानेसे प्रमेह जावै और शिरके भ्रमणमें व पित्तके रोगमें गोखुरू मिलाय चूर्णको खानेसे सुखहोवै और यह चूर्ण विशेषकरि क्षतक्षीणको व क्षीणदेहको बलदेयहै और मेदरोगको व पेटके रोगोंको व मन्दाग्निको व कुक्षि शूलको व पेट शूलको नाशै और यह चूर्ण यथोक्त अनुपानोंकेसङ्गखानेसे सब रोगोंकोहरै ॥ द्राक्षादिचूर्ण ॥ मुनक्का दाख, धानकीखील, मिश्री, मुलहठी, खजूर, सारिवा, बंशलोचन, बाला, आंवला नागरमोथा, चंदन, तगर, कङ्कोल, जायफल, दालचीनी, तमालपत्र एलाची, नागकेशर, पिपली, धनियां ये सबबराबरलेइ और इनसबों के बराबर खांड़ मिलाय चूर्णकरि प्रभात कालमें खानेसे पित्तको व पित्तदाहको व मूर्च्छाको व छर्दिको व अरुचिकोहरै और शरीरकी कांतिको बढ़ावै और पांडुको व कामला को व रक्त पित्तको व उदर रोगको व दाहको व अरुचिको व राजयक्ष्मा को व रक्तप्रमेहको व

योनिदोषको व रक्तकी बवासीरको व अन्तवृद्धिको व विद्रधिकोहरै और यह द्राक्षादिचूर्ण सबचूर्णोंमें उत्तमहै॥ यवादिचूर्ण॥ यवगेहूंइन्हों के चूर्णको दूधमें पकाइ पीछे घृत खांड़ शहद मिलाय खानेसे क्षयी रोगजावै॥ कर्पूरादिचूर्ण॥ कर्पूर दालचीनी कङ्कोल जायफल जावित्री ये सम भाग लेइ पीछे लवंग १ भाग जटामांसी २ भाग मिरच ३ भाग पिपली ४ भाग शुंठि ५ भाग लेइ चूर्णकरि पीछे सबों के बराबरकी खांड़ मिलाय खानेसे दाहको व क्षयीको व कास को व बिबर्णताको व पीनस को व श्वासको व छर्दि को व कण्ठरोग को नाशै यह अनुपानोंके सङ्ग औषधको नहीं खानेवाला रोगीको हित है॥ त्रिकट्वादिचूर्ण॥ शुंठि मिरच पिप्पल त्रिफला एलाची जायफल लवंग इन्होंके चूर्णके बराबर पोलादकी भस्म लेइ पीछे शहद में मिलाय हमेशह खानेसे कासको व श्वासको व क्षयीको व प्रमेहको व पांडुरोगको व भगंदरको व ज्वरको व मन्दाग्निको व सूजन को व मोहको व संग्रहणीको नाशकरै॥ शंखपोटलीरस॥ पारा १ भाग गन्धक १ भाग शंखकीभस्म ४ भाग कौड़ीकी भस्म ६ भाग मिरच १२ भागसुहागाखारचौथाईभागइन्होंकामहीनचूर्णकरि १॥ माशाघृतके संग खानेसे क्षयीको नाशकरै॥ शिलाजंतयोग ॥ ॥ त्रिफला के काढ़ामें शिलाजीत को सिद्धकरि पीछे गिलोयके रसमेंसिद्धकरि पीछे दश-मूलकेकाढ़ामें सिद्धकरि पीछे स्थिरादि काढ़ामें सिद्धकरि पीछे काको-ल्यादिकाढ़ामें सिद्ध करि ऐसे शिलाजीतकेखानेसे क्षयीको नाशकरै है॥ पिप्पल्यासव ॥ पिपली ४ तोला मिरच ४ तोला चबक ४ तोला हल्दी ४तोला चीता४तोला नागरमोथा४तोला वायविड़ंग४तोला सुपारी ४ तोला लोध ४ तोला पाढ़ा ४ तोला आंवला ४ तोला राल ४ तोला वालुक ४ तोला नेत्रबाला ४ तोला सपेद चन्दन ४ तोला कूट ४ तोला लवंग ४ तोला तगर ४ तोला जटामांसी ४ तोला दालचीनी ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला धौकेफूल अथवा राल ४ तोला नागकेशर ४ तोला इन्होंका चूर्ण करि २ द्रोणभर पानीमें पकाय पीछे ३ तोलाभर गुड़ मिलावै पीछे धौकेफूल ४० तोला दाख २४० तोला मिलायपीछे माटीके बासन

में घालिरक्खै कईदिन पीछे जठराग्निका बलदेखिके पीनेसे क्षयी को व गुल्मको व उदररोगको व शरीरकी कृशताको व संग्रहणी को व पांडुरोगको व बवासीरको यह पिप्पल्यादि आसव इन्होंको नाशकरै है ॥ कृष्णाद्यवलेह ॥ पिपली, मुनक्का,दाख, मिश्री, शहद तेल इन्हों को मिलाय खाने से क्षयी रोग नाश होय है अथवा असगन्ध, पिपली, खांड़, शहद इन्होंका लेह करि खानेसे क्षयी रोग जावै ॥ रास्नादि चूर्ण ॥ रास्ना, कपूर, तालीसपत्र, मंजीठ, शिलाजीत, शुंठि, मिरच, पिपली, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग चीता ये समभागले और लोहभस्म १४ भागले चूर्णकरि घृत शहदमें मिलाय खानेसे खांसी को व ज्वर को व श्वासको व राजयक्ष्माकोनाशै। और बल वर्ण अग्नि इन्होंकोबढ़ावै और दोषोंको नाश करै॥ अगस्त्यहरीतकी ॥ बड़ीहड़ १००लेवै और यव १ आढ़कभरले पानीमें काढ़ाकरै पीछे दशमूल ८०तोला चीता ८ तोला पिपलामूल ८ तोला ऊंगा ८ तोला कचूर ८ तोला कोचकेबीज ८ तोला शंखपुष्पी ८ तोला भारंगी ८ तोला गजपिपली ८ तोला खरैटी ८ तोला पुष्करमूल ८ तोला इन बीस औषधोंको कूटि और ५ आढ़क पानी में काढ़ाकरि चतुर्थांश रक्खै पीछे इसकाढ़ाको पूर्वोक्तकाढ़ा में मिलाय पीछे १०० हड़ोंको काढ़ामें पकाय पीछे तेल ३२ तोला घृत ३२ तोला गुड़ ४०० तोला मिलाय पाकबनाय पिपली १६ तोला शहद १६ तोला मिलावै पीछे २ हड़ इसपाक के संग खाने से क्षयीको व कासको व ज्वरको व श्वासको व हुचकी को व बवासीर को व अरुचिको व पीनसको व संग्रहणीको व बलीपलितको नाशै और बलवर्णको बढ़ावैहै यह अगस्त्यमुनिने सब रोगोंके नाशवास्ते कहीहै ॥ आटरूषादिकषाय ॥ बासा, असगंध, शिरसकीजड़, सांठी इन्होंके काढ़ामें दूधको सिद्धकरि पीनेसे क्षयीरोग जावै ॥ अश्वत्थ वल्कलादिलोह ॥ पीपलकीछाल, शुंठि, मिरच, पिपली, मंडूर इन्हों के चूर्णमें गुड़मिलाय खानेसे क्षयीरोग नाशहोवै ॥ अश्वगंधादिचूर्ण॥ असगन्ध, गिलोय,शतावरी, दशमूल, बाला, गंगेरन, पुष्करमूल इन्होंका चूर्ण दूधके संग खाने से क्षयीको हरै है ॥ ककुभादि

चूर्ण ॥ ककुभ की छाल, शुंठि, खरेटी, आंवला, एरंडबीज इन्हों के चूर्णमें शहद घृत मिलाय खानेसे क्षयीको हरैहै ॥ तालीसादिचूर्ण ॥ तालीसपत्र १ भाग मिरच २ भाग शुंठि ३ भाग पिपली ४ भाग दालचीनी आधा भाग इलायची आधा भाग पिपली ८ भाग इन सबों के समान मिश्री मिलाय चूर्णकरि खानेसे खांसीको व श्वास को व अरुचिको व पांडुको व हृद्रोगको व संग्रहणीको व प्लीहाको व शोषको वज्वरको हरै और अग्निको दीपन करै ॥ नवनीतयोग ॥ खांड, शहद, नोनीघृत इन्हों को मिलाय खानेसे अथवा दूध शहद, घृत इन्होंको मिलाय खानेसे क्षयीजावै ॥ सितोपलादिचूर्ण ॥ मिश्री १६ तोला बंशलोचन ८ तोला पिपली ४ तोला इलायची २ तोला दालचीनी १ तोला इन्होंका चूर्णकरि शहद घृत मिलाय खानेसे यह सितोपलादि चूर्ण कासको व श्वासको व क्षयी को व हाथ,पैर, अङ्ग इन्होंके दाहको व मन्दाग्निको व स्पर्शज्ञान को व पसली शूलको व अरोचक को व ज्वरको व ऊर्ध्वगत रक्त विकार को व पित्तको हरै है ॥ तवराजादिचूर्ण ॥ मिश्री, पिपली, दाख, खजूर, मुलहठी, छोटी इलायची, लवंग, तमालपत्र, नागकेशर इन्हों के चूर्ण में शहद मिलाय खानेसे भ्रमको व दाहको व मस्तक की पीड़ाको व क्षयी रोगको नाशकरै इसमें संशय नहींहै ॥ बासायोग ॥ जो मनुष्यों की उमर बाकीहोय तो बासा अकेला शहदमें मिलाय खानेसे रक्त पित्तको व श्वास को व क्षयी को नाश करैहै ॥ द्राक्षादिचूर्ण ॥ दाख, खजूर, पिपली इन्होंके चूर्णमें घृत, शहद मिलाय खानेसे ज्वरको व कासको व सूजनको हरैहै ॥ स्वर्णमाक्षिकादिचूर्ण ॥ सोनामाखी, बायबिडङ्ग, शिलाजीत, लोह इन्होंके चूर्णमें घृतशहद मिलाय खानेसे उग्र क्षयीको नाशकरै इसपै पथ्यसे रहै ॥ शिलाजीतादिचूर्ण ॥ शिलाजीत, शुंठि, मिरच, पिपली, सोनामाखी, लोह भस्म इन्होंके चूर्ण में शहद, खांड, दूधके सङ्ग खानेसे क्षयी रोग श्वास जावै ॥ लाक्षाकूष्माण्डरस ॥ कोहलाकी गिरीके रसमें लाख २ तोले पीसि पीने से रक्तक्षय का नाशहो ॥ मार्कवादिचूर्ण ॥ भृंगराज ८ तोला आंवला ८ तोला सोनामाखी ८ तोला सांठी ८ तोला

बंशलोचन ८ तोला लज्जावन्ती ८ तोला शालिपर्णी ८ तोला बासा ८ तोला धमासा ८ तोला इन्हों से आधा भाग दालचीनी तमालपत्र, इलायची, मिरच, तालीसपत्र, पिपली इन्हों का चूर्ण ले और इससे आधाभाग शिलाजीत लेइ और इससे आधाभाग पाषाणभेद लेइ मिलाय चूर्णकरै पीछे सब चूर्णके बराबर तिलका चूनले पीछे सारोंके बराबर खांड मिलाय खावै ऊपर दूधमें घृत मिलाय पीवै यह क्षयीको व राजयक्ष्माको व कामलाको व बवासीर को व पथरीको व मूत्रकृच्छ्रको व महारोगोंको हरै और बलवीर्यको बढ़ावै॥ बलादिचूर्ण॥ खरैटीजड़, बिदारीकन्द, लघुपञ्चमूल, बड़कीछाल पीपलकीछाल, गूलरकीछाल, पापरीछाल, नांदरूखीछाल, सांठी, नागरमोथा, बंशलोचन, भृङ्गराज, जीवनीयगण मुलहठी येसब समान भागलेइ औरपिपली १०० तक्रमेंपीसिमिलावैपीछेसबचूर्णसेपांचवां हिस्सा गेहूंका चून व यवकाचून मिलावै और बंशलोचनके समान सफ़ेद चावलोंका चूनमिलावै औरइतनाही सिंघाड़ाका चूनमिलावै पीछे इस चूर्णको खरैटीसे आदि मुलहठी पर्य्यंत औषधों के काढ़ा में भावनादेवै पीछे आंवलाके रसमें ३ भावना देवै पीछे गौके दूध में ३ भावनादेवै पीछे सबचूर्णकेसमान खांडमिलाय घृतमें सिगोय पीछे चूर्ण २ तोला शहदके संगखानेसे राजरोग को नाशै और यह चूर्ण जब जीर्ण होवै तब भोजनकरै और कडुआ खट्टा पदार्थ को त्यागै और दूध, घृत, खांड, गेहूं, यव, चावल, मदिरा येपदार्थखावै॥ जातीफलादिचूर्ण॥ जायफल १ तोला बायबिड़ंग १ तोला चीताकी जड़ १ तोला तगर १ तोला तिल १ तोला तालीसपत्र १ तोला चन्दन १ तोला शुंठि १ तोला लवंग १ तोला इलायची १ तोला कपूर १ तोला हड़ १ तोला आंवला १ तोला मिरच १ तोला पिपली १ तोला बंशलोचन १ तोला दालचीनी १ तोला नागकेशर १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र १ तोला भांग २८ तोला सबोंकेसमान खांडमिलायखानेसे राजरोगको व श्वासको व कासको व संग्रहणीको व अरुचिकोवपीनसको व अग्निमन्दकोनाशकरै दृष्टान्तजैसेवृक्षोंको इन्द्रकावज्रकाटैतैसे रोगोंको यह चूर्णकाटैहै॥ शिवगुटी॥ शुद्ध शिला-

जीतको पहिले त्रिफलाके काढ़ामें ३ भावना देवै पीछे दशमूल, गि-
लोय, नेत्रबाला, परवल, मुलहठी, गोमूत्र, गौका दूध, दाख, शतावरी
बिदारीकन्द, पृष्ठिपर्णी, शालिपर्णी, स्थिरा, पुष्करमूल, पाढ़ा, कुड़ा
कीछाल, काकड़ी, कटुकी, रास्ना, नागरमोथा, बाला, जमालगोटेकी
जड़, चवक, गजपिपली, भूमिआंवला, जीवक, ऋषभ, मेदा, महा-
मेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली, क्षीरकाकोली ये सब प्रत्येक चारचारतोले
लेइ इन्होंका अलग अलग रसमें शिलाजीतकी तीनतीन भावना
देइ पीछे आंवला ८ तोला मेढ़ासिङ्गी ८ तोला शुंठि ८ तोला मिरच ८
तोला पिपली ८ तोला भूमिकोहलाका चूर्ण ४ तोला तालीसपत्र
१६ तोला घृत १६ तोला तेल २ तोला शहद ३२ तोला खांड़
६४ तोला वंशलोचन ४ तोला तमालपत्र ४ तोला नागकेशर ४
तोला दालचीनी ४ तोला छोटी इलायची ४ तोला ये सब शिला-
जीतमें मिलाय पीसि १ तोला की गोली बनावै पीछे १ गोली रोज
प्रभातकालमें व दिनको भोजनसे पहिले खावै ऊपर पथ्य मूंगकी
दाल मूंगका यूष जांगलमांसका रस शीतल जल गरमजल शहद
मदिरा भारीअन्न गौकादूध इन्होंको खावै यह कामदेवको जगावै औ
सूजनको व ग्रंथिको व बिडबंधको व कफको व छर्दिको व पांडुको व
श्लीपदको व प्लीहाको व बवासीरको व प्रदरको व प्रमेहपिटिकाको व
प्रमेहको व मूत्राश्मरीको व हृद्रोगको व अर्बुदको व अण्डवृद्धिको व
बिद्रधिको व यकृत्को व योनिरोगको व बातरोगको व उरुस्तंभको
व भगंदरको व ज्वरको व तूणीवायुको व प्रतूणीवायु को व वातरक्त
को व उदर रोगको व कुष्ठको व किलासकुष्ठको व कृमिको व कास
को व श्वासको व उरक्षतको व क्षयीको व रक्तपित्तको व उन्मादको
व मदको व अपस्मार को व अति स्थूलताको व अति कृशताको व
आलस्यको व हलीमकको व मूत्रकृच्छ्रको व बलीपलितकोनाशैहै॥
लघुशिवगुटी॥ शुद्धशिलाजीत ३२ तोलालेइ पीछे कुड़ाछाल त्रिफला
निम्ब कडुपरवल नागरमोथा शुंठि इन्होंके काढ़ामें १ महीना तक
खरलकरि खांड़ ३२ तोला बंशलोचन ४ तोला पीपल ४ तोला आम-
ला ४ तोला काकड़ीबीज ४ तोला कटेलीका पंचांग ४ तोला दाल-

चीनी ४ तोला तमालपत्र ४ तोला इलायची ४ तोला शहद १२ तोला मिलाय गोली १ तोला तोलाभरकी बनावै और १ गोली रोज खावै ऊपर अनार दूध घृत यूष मदिरा आसव ये पीवै यह पांडुरोगको व कुष्ठको व ज्वरको व प्लीहाको व तमकको व बवासीरको व भगंदरको व मूत्ररोगको व मूत्रबंधी बिकारोंको हरै और कोइक वैद्यों के मतमें इस नुस्खामें लोहभस्म ४ तोला अभ्रकभस्म ४ तोला मिलाय गोली बनाय खानेसे उग्रपांडु को व प्रमेहको व राजरोग को हरै है ॥ सूर्यप्रभागुटी ॥ दारुहल्दी १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पिपली १ तोला बायविडंग १ तोला चीता १ तोला बच १ तोला करंज १ तोला गिलोय १ तोला देवदारु १ तोला अतीस १ तोला निसोत १ तोला कटुकी १ तोला कोथिम्बर १ तोला अजमान १ तोला जवाखार १ तोला सुहागाखार १ तोला सेंधानोन १ तोला बिड़नोन १ तोला कालानोन १ तोला गजपिपली १ तोला चबक १ तोला भिलावा १ तोला तालीसपत्र १ तोला पिपलामूल १ तोला पुष्करमूल १ तोला चिरायता १ तोला भारंगी १ तोला पद्माख १ तोला जीरा १ तोला जायफल १ तोला कुड़ाकी छाल १ तोला जमालगोटाकी जड़ की छाल १ तोला नागरमोथा १ तोला त्रिफला २० तोला शिलाजीत २० तोला गुग्गुल ८ तोला दालचीनी ४ तोला तमालपत्र ४ तोला इलायची ४ तोला लोहभस्म ८ तोला तांबाभस्म ८ तोला इन्हों के चूर्णमें शहद घृत मिलाय १६ माशाकी गोलीबनाइ खानेसे शोष को व कासको व उरक्षतको व तमकको व पांडुको व कामलाको व गुल्मको विद्रधिको व पसलीशूलको व उदर रोगको व स्त्री क्षयको व कृमिको व कुष्ठको व बवासीरको व बिषमज्वरको व संग्रहणीको व मूत्रग्रहको नाशै और इन गोलियोंके ऊपर यथेच्छ भोजन करै इसके समान त्रिभुवनमें औषधनहीं है यह सूर्यप्रभागुटी ब्रह्माजी ने कही है ॥ गुडूच्यादिमोदक ॥ गिलोय के बारीक टुकड़े करि कुटवावे पीछे कपड़ामें घालि रस निचोड़े शनैःशनैः पीछे सुखाय शुद्ध शंख सरीखा चूर्णकरि बाला पीतवाला तमालपत्र कूट आंवला मुसली इलायची पित्तपापड़ा दाख केशर नागकेशर कमलकन्द

कपूर चन्दन रक्तचन्दन शुंठि मिरच पिपली मुलहठी धानकीखील असगन्ध शतावरी गोखुरू कोंचकेबीज जायफल कंकोल खुरासानी अजमान घृत पारा बंग लोह ये सम्पूर्ण समभाग लेइ दुगुनीखांड मिलाय प्रभातमें शहद रावके संग खानेसे क्षयीको व रक्तपित्तको व पाददाहको व रक्त प्रदरको व मूत्राघातको व मूत्रकृच्छ्रको व वात-कुंडली को व प्रमेहको व सोमरोगको नाशकरै और यह रसायन है व अमृत समानहै॥ इक्ष्वादिमोदक॥ लालईखका रस ६४ तोला शहद ६४ तोला बंशलोचन ६४ तोला खांड़ २०० तोला कुहिली १६ तोला मरीच १६ तोला दालचीनी १६ तोला तमालपत्र १६ तोला इलायची १६ तोला ये सब मिलाइ मंथानसे बिलोडनकरै पीछे चारमोदक चारचार तोलाके बनाय सुन्दर बरतनमें घालिधरै लड्डू दोनों बेले में अथवा एक मोदक हमेशा खानेसे हृद्रोग को व प्लीहाको व संग्रहणी को व मूत्रकृच्छ्रको व अपतंत्रको व अपस्मार व विषके उन्मादको नाशै और इसमें ब्रह्मचर्य्यसेरहै और राजयक्ष्मा को अवश्य हरैहै और बल पुष्टिको बढ़ावै और कृशशरीरवालों को बाजीकरणहै रसायन है॥ द्राक्षासव॥ मुनक्का दाख २०० तोला लेइ पानी ४०९६ तोलेमें पकाय चतुर्थांश काढ़ारक्खै पीछे शीतल होनेपर गुड़ ८०० तोला धव के फूल ८०० तोला वायविड़ंग ४ तोला त्रायमाण ४ तोला पिपली ४ तोला दालचीनी ४ तोला इला-यची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला नागकेशर ४ तोला मिरच४तोला ये मिलाय घृतकेचिकने बरतनमें घालि अग्नि बलदेखि पीनेसेका-सको व श्वासको व कंठरोगको व राजरोगको हरै और छातीफटीहुई कोजोड़ै और कोइक वैद्यके मतमें मुनक्का दाखसे चतुर्थांश धवके फूल मिलावै जब बीर्य बधै है॥ खजूरासव॥ खजूर ३२० तोला पानी २०४८ तोला लेइ काढ़ा चतुर्थांशकरै पीछे बरतनमें धूप देइ रसकोघालै पीछे थोर शेरणी धवकेफूल इन्होंका काढ़ाकरि मिलावै पीछे बरतनका मुखबंदकरि घड़ाको धरतीमें गाड़देवै १४ दिनपीछे काढ़ि रसकोपीनेसे राजरोगको व सूजनको व प्रमेह को व पांडुको व कामला को व संग्रहणीको व पांचप्रकार के गुल्मको व बवा-

सीर को नाशकरै ॥ दशमूलासव ॥ दशमूल २०० तोला पुष्कर-मूल १०० तोला हड़ ८० तोला आंवला १२८ तोला चीता १०० तोला धमासा ५० तोला गुडूच्यादि ४०० तोला बिशाला २० तोला खैरसार ३२ तोला बिजौरा १६ तोला मजीठ ४ तोला मुलहठी ४ तोला कूट४तोला कैथ४तोला देवदारु ४ तोला बायबिड़ंग४तोला चवक ४ तोला लोध ४ तोला जीवक ४ तोला ऋषभक ४ तोला मेदा ४ तोला महामेदा ४ तोला ऋद्धि ४ तोला वृद्धि ४ तोला काकोली ४ तोला क्षीरकाकोली ४ तोला पिपली ४ तोला जीरा ४ तोला गजपिपली ४ तोला चिकनी सुपारी ४ तोला पद्माख ४ तोला कचूर ४ तोला राल ४ तोला कावली ४ तोला जटामासी ४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला नागकेशर ४ तोला निसोत ४ तोला हल्दी ४ तोला रास्ना ४ तोला मेढ़ासिंगी ४ तोला सांठी ४ तोला शतावरी ४ तोला इंद्रयव ४ तोला नागरमोथा ४ तोला और इन सबोंसे चौगुने पानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांश बाकी रक्खै पीछे दाख २४० तोला धवके फूल १२० तोला गुड़ १६ तोला शहद १२८ तोला मिलाय घीके चिकने बरतनमें घालि पहिले बरतनमें जटा-मांसी मरीचके चूर्ण की धूप देवै पीछे पिपली ८ तोला चन्दन ८ तोला बाला ८ तोला जायफल ८ तोला लवंग ८ तोला दालचीनी ८ तोला इलायची ८ तोला तमालपत्र ८ तोला नागकेशर ८ तोला कस्तूरी १ तोला धतूराबीज ४ तोला ये सब मिलाय बरतन को धरती में गाड़ै पीछे १५ दिन पीछे काढ़ि अग्नि बलदेखि रोजपीने से धातुक्षयको व पांचप्रकारके कासको व छःप्रकारके बवासीर को व आठप्रकारके पेटरोगको व प्रमेहको व महाब्याधिको व अरुचि को व पांडुरोगको व सम्पूर्णबातके रोगोंको व शूलको व श्वासको व छर्दि को व रक्तप्रदर को व अठारहप्रकार के कुष्ठको व मूत्रशर्करा को व मूत्रकृच्छ्रको व अश्मरीकोनाशकरै और कृशमनुष्यको पुष्टकरै और पुष्टको बलवान्करै और तेज बल कांति इन्होंको बढ़ावै और बंध्याकोपुत्रदेइ ॥ कुमारीपाक ॥ कुमारीकन्द ८० तोला गौकादूध ३२० तोलालेइ जबतकजीर्णहो तबतकपकावे पीछेछायामेंसुखाइ चूर्णकरि

पिपली १२तोला मरीच १२तोला शुंठि १२ तोला जायफल ४ तोला जावित्री ४तोला लवंग ४तोला गुखुरू ४ तोला काकड़ीबीज ४तोला दालचीनी ४तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोलानागकेशर ४ तोला चीता ४ तोला इनसबोंकाचूर्णकरि मिश्री ८० तोला घृत ४० तोला भैंसकादूध ४० तोला शहद ४० तोला येसबलेइ लोहाके बरतनमें मन्दमन्द अग्निसे अच्छीतरहपकाय पीछेलोहभस्म १तोला सोनाभस्म १ तोला रससिंदूर १ तोला मिलाय गोली तोलेतोले भरकी बनावे पीछे खानेसे जीर्णज्वरको व राजरोगको व कासको व श्वासको व संतापको व शूलको व अजीर्णको व आमवातको वप्रदरको नाशकरै और बंध्यास्त्रीखावे तो पुत्रहोवै और अंडवृद्धिकोनाशै और इसकाखानेवाला १०० स्त्रियोंकोभोगकरै यहगुप्तकरनेकेयोग्यहै यह अश्विनीकुमारोंका रचा परमोत्तम है॥ धात्रीपाक॥ आंवला के फलों को सुईसेती बेधनकरि पीछे अदरखके संग पानीमें सिजाइ पीछे गौके दूधमें सिजावै पीछे केवल पानीमें सिजावै पीछे उनफलोंको शहदभरे बरतनमें डारै २० दिनतक राखै पीछे वहशहद दूरकरि दूसरा शहद मिलावै पीछे मिश्री गजपिपली इलायची बंशलोचन लोहभस्म बंग इन्होंके चूर्णमेंमिलाय आंवला १ तोला प्रभातमेंखाने से बलक्षय को व राजरोग को नाशकरनेवास्तेदेवै तो मधुर पथ्य खवावै और यह पाकप्रमेहको व मूत्रकृच्छ्र को व कुष्ठको व पित्त-प्रकोपको व पित्तजन्य सर्वरोगको व रक्तविकारको नाशकरै और बल बीर्यको बढ़ावै यह बाजीकरण उत्तम है(श्लोक २०००) शेवंतीपाक॥ सफ़ेद शेवतीकेफूल १००० एकहजारलेइ इन्होंका घृत ६४ तोले में पकाय पीछे मिश्री २५६ तोला दालचीनी ४ तोला नागकेशर ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला मुनक्कादाख २४ तोला शहद३२ तोला गिलोयकासत२ तोला बंशलोचन २ तोला सफ़ेद जीरा२तोला सीसाकी भस्म२तोला बंग२तोला कपूर ३ रत्ती येसब मिलाय सुन्दरबरतनमें घालिधरे पीछे प्रभातमें ६ माशाखावै और पथ्यसेरहै यहपाक जीर्णज्वरको व क्षयीको व कासको व अग्निकी मंदताको व प्रमेहको व दिनज्वरको व रात्रिज्वरको व मस्तकरोगको

व रक्तप्रदरको व रक्तकेरोगको व कुष्ठको व बवासीरको व नेत्रकेरोग को व मुखकेरोगको नाशकरै इसको १५ दिनतक सेवनकरै ॥ महाकनकसुन्दररस ॥ पारा, गन्धक, सीसाभस्म, खपरिया, सोनामाखी भस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, विद्रुमभस्म, मोतीभस्म, बंगभस्म हरतालभस्म ये सब प्रत्येक२ एक तोला और इनसबों के समान भाग सोनाकीभस्मले पीछे इनसबों को ३ दिनतक हंसपदीके रस में खरल करै पीछे गोलाबनाय कांचकी शीशी में घालि शीशी को ७ कपड़ों में वेष्टितकरि वालुकायंत्र में पकाइ पीछे शीतलहोनेपर हंसपदीके रसमें खरल करै पीछे करंडमें भरिरक्खै यह महाकनकसुन्दररस खानेसे राजरोगको व पांडुको व श्वास को व कासको व कामलाको व संग्रहणीको व कृमिरोगको व सूजनको व पेटके रोग को व उदावर्त्तको व गुल्मको व प्रमेहको व बवासीर को व अग्निमंदताको व छर्दिको अरुचिको व आमशूलको व हलीमकको व सर्वज्वरको व द्वंद्वजज्वरको व १३ प्रकारके सन्निपातोंको व पित्तरोग को व मृगीरोगको व वातरोगको व रक्तपित्तको व प्रमेहको व रक्तप्रदरको व २० प्रकारके कफरोगोंको व मूत्ररोगको नाशकरै और शरीरको तपायाहुआ सोना के रंगके समानकरै और बल वीर्य्यको बढ़ावै यह महाकनकरस काश्यपमुनि ने कहा है ॥ क्षयकेशरीरस ॥ मिरच २ भाग फटकड़ी २ भाग बचनागविष १ भाग नसदर १ भाग इन्होंकाचूर्णकरि मिश्री मिलाय आधीरत्ती खानेसे यह क्षयकेशरीरस जल्दी क्षयीको नाशेहै ॥ शंखेश्वररस ॥ शंखकाटुकड़ा आधा तोला कौड़ी ४ तोला नीलातूतिया आधातोला इन सबोंके समान गंधक और गंधकके बराबर सीसाकी भस्म और इतनीही पाराकी भस्म और इतनीही सुहागाकी भस्म इन सबोंको मिलाय गजपुट में फूंकदेवै शीतलहोनेपर ६ रत्ती पिपलीचूर्ण व शहदके संग रस को खावै अथवा मिरच घृतके संगखावै यह शंखेश्वररस राजरोग को नाशै ॥ हररुद्ररस ॥ पोलादभस्म १ भाग तांबा भस्म २ भाग सीसाभस्म ३ भाग चांदीभस्म ४ भाग सोना भस्म ५ भाग पारा भस्म ६ भाग इन्होंको चूकके रसमें १ दिन तक खरल करि पीछे

गोलाबनाइ बालुका यंत्रमें पकाइ पीछे शीतल होनेपर चूर्णकरि खानेसे यह हररुद्ररस क्षयीको नाशैहै इसकी खानेकी मात्रा मृगांक रसके समान है ॥ नीलकंठरस ॥ बचनागविष कटैली नेत्रबाला हल्दी कूड़ाकीछाल इन्हों का चूर्ण करि १ माशा रोज शहददूधके संग खानेसे यह नीलकंठरस राजयक्ष्माको हरैहै ॥ शंखगर्भपोटली रस ॥ शंखकी नाभि ८ तोले लेइ गौकेदूधमें खरलकरि इसका मूषा सरीखा बनाइ तिसके मध्यमें पाराकी भस्म घालि और गंधक १॥ तोला भर घाले पीछे मूषाका मुखबन्दकरि कपड़माटीमें लिप्तकरि सुखाइ गजपुटमें फूंकदेइ यहशंखगर्भपोटलीरस १ रत्तीखानेसेराजरोगको व बातपित्तको नाशकरैहै और इसऊपरपथ्य मृगांकके समान है ॥ हेमगर्भरस ॥ पाराकी भस्म १ तोला सोनाकी भस्म ६ माशा शुद्धगंधक १ तोला इन्होंको चीताके रसमें २ पहरतकखरलकरावे पीछे सुखाइ द्रव्यको कवड़ीमें घालि पीछे सुहागाको गौके दूधमें पीसि इससे कवड़ीके मुखको बंदकरै पीछे कवड़ीको माटीके बरतनमें घालि गजपुटमें फूंकदेवै पीछे शीतल होनेपरचूर्णकरि यह हेमगर्भरस ४ रत्ती खानेसे राजरोगको हरैहै और इसपै पथ्य मृगांक के समान है ॥ नागेश्वररस ॥ पाराभस्म १॥ तोला सीसाभस्म १॥ तोला गंधकभस्म १॥ तोला तूतिया १॥ तोला सुहागा १॥ तोला ये सब डेढ़ डेढ़ तोला लेइ और तांबाकीभस्म १ तोला शंखचूर्ण १ तोला कवड़ी ४॥ तोला लेइ पीछे पूर्वोक्त चूर्णको कवड़ियोंमें भरि लोकनाथ रसके समान पुटद्यावै पीछे आकके दल के रसमें खरल करि बरतनमें घालि गजपुटमें फूंकदेवै पीछे महीन पीसि बराबरकी मिरचमिलावै पीछे चूर्णसे चौगुना गंधकमिलाय चूर्णकरै पीछेयह ५ माशे घृतके संगखावै यह असाध्य राजरोगकोभी हरै और सूजन को व पेटके रोगको व बवासीरको व संग्रहणीको व ज्वरको व गुल्म को नाशै है ॥ कालांतकरस ॥ लोहाकी १२ अंगुल ऊंची मूषिका कहे बरतन बनवावै पीछे धतूराको बाराहीकंद में २ पहरतक घोटै पीछे घीकुवारके पट्ठाके रसमें घोटि पीछे लहसुन के रस में एक पहरतक घोटि गोलाकरि पूर्वोक्त मूषामें भरि और धतूरासे चौथाई

पारा गंधक इन्होंको निर्गुण्डीके रसमें खरलकरि मूषामें भरै पीछे लोहकेचक्रसे मूषाकेमुखकोबन्दकरि रुद्रयंत्रमेंपकाय ऐसे आठपुटदे जलाय पीछेचूर्णकरि ५ रत्ती रोजखानेसे यहकालांतकरस राजरोग को हरैहै इसमें पथ्य मृगांक के समान है॥ चंद्रायतनरस॥ शुद्धपारा शुद्धगंधक,सेंधानोन येसमान भागलेय इन्होंकोसपेदजांठीके पत्तोंके रसमें खरलकरि गोलाबनावै पीछेनागरपान, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंके संगडमरुयंत्रमें पकाय १ दिनतक जबश्यामहो तबऊपरला बरतनमें उड़करि लगाहुआको खुरचि ३ रत्ती पानके टुकड़ाके संग १ महीनातक खानेसे राजरोगको हरै यह चन्द्रायतन रसहै इसमें अनोपान मृगांक के समान है॥ प्राणनाथरस॥ लोहभस्म ४ तोले को भृंगराज के रसमें खरलकरि पीछे गिलोयरस ४ तोला भारंगी रस ४ तोला त्रिफलाकाकाढ़ा ४ तोला इन्होंको मिलायरक्खे पीछे पूर्वोक्त द्रव्य को खोपरी में पकाय शुद्ध सोनामाखी ४ तोला लेय पूर्वोदित रसोंमें खरलकरि ३ पुटदेय बारबार पकावै पीछे पाराभस्म ६ माशे बंगभस्म ६ माशे शुद्धगन्धक १ तोला कवड़ी २ तोला लेय पूर्वोक्तमें मिलाय गजपुटमेंपकाय पीछे पूर्वोक्तरसोंमें खरलकरि फेर पकायपीछे मिरचचूर्ण ३ तोला तूतिया ५ तोला सुहागा ५ तोला मिलाय ६ रत्तीभरखावै यहप्राणनाथरस असाध्य राजरोगको नाशकरै है और सूजनको व पेटरोगको व बवासीरको व संग्रहणीको व ज्वरको व गुल्म को नाशैहै॥ सुवर्णपर्पटीरस॥ सोनाकेवरक १ भाग शुद्धपारा ८ भाग लोह ८ भागलेय पीछे लोहाके पात्रमें गंधकको गरमकरि सिंगरफ १ तोला चीता १ तोला पूर्वोक्त औषधोंमें मिलाय लोहाके पात्रमेंघालि लोहाकी सलाईसेचलाय पीछे गौकागोबर ऊपरकेला केपत्ताधरि तिसपर द्रव्यको धरि ऊपर केलाकेपत्ता से ढकि गोबर धरि, पीड़न करै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि बरतै यह सुवर्णपर्पटी रस है इसको मिश्री बंशलोचन के संगखाने से पित्ताधिक व्याधि नाशहोवै और बातकफाधिक व्याधिमें बंशलोचन,शहद,पिपलीचूर्ण इन्होंमें मिलाय खावै और क्षीणको व दस्तको व शोषको व मंदाग्नि को व पांडुरोगको व प्रमेहको व पुरानेज्वरको व संग्रहणी को नाश

करै और यह वृद्धको व बालकको व सुखी राजाको हितहै ॥ प्राणदापर्पटी ॥ पारा, अभ्रक, लोह, बंग, मिरच, बचनागविष ये बराबर भागलेय और सबोंके बराबर गंधकलेय पीछे इन सबोंको लोहाके पात्रमें घालि बड़बेरीकी लकड़ियों से पकाय गौके गोबर के ऊपर केलाके पत्ताकोरखि तिसपर द्रव्य को धरि ऊपर केलाके पत्ता से ढकि गोबरदेय पीड़नकरै पीछे शीतलहोनेपरखावै यह प्राणदापर्पटीरस पांडुको व दस्तको व संग्रहणीको व ज्वर को व खांसी को व राजरोगको व प्रमेहको व अग्निमन्दताकोहरै है यहरसमहादेवजीका कहाहै और यह यथोक्त अनुपानोंकेसंग रोगमात्रको हरैहै ॥ कुमुदेश्वररस॥ शोधापारा, शोधागंधक, शोधाअभ्रक इन्होंको बराबर भागलेइ और सिंगरफआधाभागले और मनशिलचौथाई भागले औरसबोंसे आधा लोहाभस्मले इन्हों को महीनपीसि शतावरि के रसमें १४ भावनादेनेसे कुमुदेश्वर रस सिद्ध होयहै इसको २ रत्ती अथवा ३ रत्ती मिरचचूर्ण व मिश्रीकेसंग खावै और प्रभात में इष्टदेवताको पूजिकर सेवन करने से यह राजरोगको व बातको व पित्तको व कफको व ज्वरको व रोगमात्रको हरै दृष्टांत जैसे दैत्योंको भगवान्‌नाशैं तैसे और इसको निरंतर सेवन करनेसे बुढ़ापा को नाशकरै ॥ पंचामृताख्यरस॥ सोनाकी भस्म १ भाग रूपा की भस्म २ भाग तांबाकी भस्म ३ भाग पाराका सत ४ भाग अभ्रक का सत ५ भाग बायबिड़ंग ३ भाग नागरमोथा ३ भाग कायफल ३ भाग इन्होंको मिलाइ पीछे निर्गुण्डी के रसमें भावना देइ पीछे दशमूलके रसमें भावनादेइ पीछे चीताके रसमें भावनादेइ पीछे हल्दीके रसमें भावनादेइ पीछे शुंठि मिरच पीपल इन्हों के रसमें भावनादेइ पीछे अदरखके रसमें भावनादेइ गोलाबनाइरक्खै और इस रसके समान तीनलोकों में कोई रस नहीं है यह पंचामृत रस खानेसे सबरोगोंको हरैहै दृष्टांत जैसे रुद्रज्वरको वैष्णवज्वर हरै तैसे और यह पंचामृतरस मनुष्योंको अमृत समानहै ॥ स्वयमग्नि रस॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भागलेइ कजलीकरै पीछे पोलाद का चूर्ण ३ भागलेइ सबोंका गुवारपट्ठाके रसमें २ पहरतक खरल

करि पीछे गोला बनाइ तांबेके पात्रमें घालि एरंडके पत्तोंसे ढकि ४ घड़ीतक रक्खै पीछे अन्नका कूढ़ामें दाबै ८ पहरतक राखि पीछे काढ़े पीछे महीनपीसि कपड़ामें घालि छानि तैयारकरै पीछे इसको गुवारपट्ठाके रसमें ७ भावनादेइ पीछे भंगराके रसमें ७ भावनादेइ पीछे काकमाची के रसमें ७ पुटदेइ पीछे कुरंड के रसमें ७ पुटदेइ पीछे कांगनी के रसमें ७ पुटदेइ पीछे मुंडीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे सांटीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे सहदेवीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे गिलोयके रसमें ७ पुटदेइ पीछे नीलीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे निर्गुण्डीके रसमें ७ पुटदेइ पीछे चीताके रसमें ७ पुटदेइ और धूपमें सुखाता जावै यह सिद्धयोग सिद्धोंके मुखसे निकला सब रोगोंको हरैहै और इस रसको त्रिफला शहदके संगखावै अथवा शुंठि, मिरच, पिपली, हड़, बहेड़ा, आमला, इलायची, जायफल, लवंग येसब बराबरलेइ और सबोंकी बराबर स्वयमग्निरस लेइ १ तोला भर शहद में मिलाइ खाने से राजरोग को व खांसी को हरै है ॥ राजमृगांक ॥ पाराका भस्म ३ भाग सोनाका भस्म १ भाग तांबा का भस्म १ भाग मैनशिल २ भाग गन्धक २ भाग हरताल २ भाग इन्होंको महीनपीसि कौड़ियों में भरै पीछे सुहागा को बकरी के दूधमें पीसि इससे कौड़ियोंके मुखको बन्दकरि माटी के बरतन में कौड़ियों को घालि बन्द मुखको करि सुखाइ गजपुटमें पकावै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि महीन पीसि ४ रत्ती खानेसे राजरोगको हरै और इसीको ३० मिरच चूर्ण घृतके संगखावै अथवा १० पिपलीके चूर्णके संग खावै यह राजमृगांकरस राजरोग को व खांसी को व ज्वरको व पाण्डुको व संग्रहणीको व अतीसारको हरैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ पारा १ भाग सोना १ भाग नये मोती २ भाग गन्धक १ भाग सुहागा ३ भाग इन्होंको चावलोंके तुषके कषायमें खरलकरि कपड़ा में मलि गोला बनाय पीछे नोनसे पूर्ण माटीके बरतन में घालिगजपुटसे १ दिनतक पकाय पीछे इस राजमृगांक को खाने से दारुण राजरोगको व मन्दाग्निको व संग्रहणी को नाशै है और इस रसको घृत, मिरच, शहद, पिपली इन्हों के संग खावै रत्ती ३

ऊपर पथ्य शीतलखावै और सबगर्मपदार्थोंकोत्यागै॥ लोकेश्वररस॥ कौड़ीकीभस्म ४ तोला पारा ४ तोला गन्धक ४ तोला सुहागा १ माशा इन्होंको जँभीरी नींबूके रसमें खरल करि गजपुट में पकाय खावै यह लोकनाथ रस सब रोगों को हरै है और पुष्टि वीर्य्य बलकान्ति सुन्दरपना इन्हों को पैदा करै और इसको रक्त पित्तमें वर्तैनहीं और इस रसके समान दूसरा रस नहीं है॥ नवरत्नराज-मृगांक॥ पारा, गन्धक, सोने की भस्म, खपरिया, वैक्रांत भस्म कांतलोहाकाभस्म, बंगभस्म, शीशाकाभस्म, पन्नाकाभस्म, मूंगा का भस्म, हीराकाभस्म, सोनामाखीकाभस्म, मोतीकाभस्म, पुख-राजकाभस्म, बिमलमणीकाभस्म, माणिक्का भस्म, शंखका भस्म वैडूर्य्यकाभस्म, तांबाकाभस्म, सीपीकाभस्म, हरतालका भस्म, अभ्र-ककाभस्म, सिंगरफकाभस्म, मैनशिल गोमा गोमेदभस्म नीलमणि काभस्म येसबबराबरभागलेय पीछेइन्होंको गोखुरू नागवेल वासा गोरखमुण्डी पिपली चीता ईखरस गिलोय धतूरा भांग मुनक्का दाख शतावरि कंकोल कस्तूरी नागकेशर इन्हों के रसमें अलग २ सात भावना देय पीछे गोलाबनाय सेंधानोन से पूर्ण माटीके बरतन में घालि मृगांक तुल्य कोमल अग्निसे व मध्यम अग्निसे व तेजअग्नि से १ दिनतक पकाय पीछे गोखुरू आदि अर्कोंमें फेरभावनादेयफेर पूर्वोक्तरीतिसे पकावै पीछे कपूर कस्तूरीबराबर भागलेय भावनादेवै यह गोप्य करने लायक रस है श्रीमहादेवजी ने कहा है और यह रस १ रत्तीभर सेंधानोनके संग खानेसे सूजनको हरै और पिपली शहदके संग खाने से पाण्डुको व उपद्रवसहित बायुके रोगको व २० प्रकारके प्रमेहोंको हरै और गुड़ हड़केसंग इस रसको खानेसे बातरक्तको हरै और इसको गिलोयसत पिपली शहद इन्होंके संग खानेसे आध्मानको व अरुचिको व शूलको व मन्दाग्निको व खांसी को व मृगीरोगको व बातोदरको व श्वासको व संग्रहणीको व हलीमक को व ज्वरको व क्षयको व राजरोगको हरै और धातुको पुष्टकरै जवान अवस्थाकोप्राप्तकरै यहराजमृगांक रोगोक्त अनुपानोंकेसंगखाने से रोगमात्रकोहरै॥ मृगांकरस॥ पारा गन्धक सोना ये बराबर भाग मोती

२ भाग जवाखार १ भाग इन्होंको चावलोंके तुषके पानीमें १ दिन तक खरलकरि गोलाबनाय खारीनोनसे पूर्णमाटीकेबर्तन में घालि कपड़ा से लपेटि ऊपर गारालेपि १ दिनतक चूल्हे ऊपर पकाय पीछे यह मृगांकरस खानेसे मन्दाग्निको व संग्रहणीको हरै इसको ३ रत्ती खावै और इसको शहद पिपली के संगखावै और इस में गरमबस्तु बर्जिदेवै और पथ्यलोकनाथरसकेसमानहै ॥कनकसिंदूर॥ पारा सोना सोनामाखी हरताल मैनशिलखपरिया गन्धकतूतिया ये बराबर भागलेय पीछे पारा गन्धककी कजलीकरि सबऔषधों को आककेदूधमें १ दिनतक खरल करि पीछे अरणी हातगा बहेड़ा चीता भँगरा वासा इन्होंके रसमें अलग २ दिन एकएक खरलकरि गोलाबनाय भूधर यंत्रमें मृगांक समानपकाइ पीछे अदरखकेरसमें ७ भावनादेइ पीछे त्रिकुटाके रसमें ७ भावनादेय यह कनकसिंदूर रसराजरोग को हरै है और इसको अदरख के रसके संग खाने से सन्निपात को हरै है और शुंठि घृतके संग खानेसे बायु रोगको हरै और गुल्म में व शूल में भी शुंठि घृत के संगदेवै। और इसमेंपथ्य मृगांकके समान है और इसको ज्यादह भक्षण करे नहीं॥ हेमाभ्रक रससिंदूर ॥ अभ्रकभस्म, रससिंदूर, सोनाकाभस्म ये सब बराबर भागलेय अदरख के रसमें खरलकरि २ रत्ती खानेसे राजरोगको व क्षयको व पाण्डुको व क्षयीकी खांसी को व कुंभकामला को हरै इसको पूर्वकर्मविपाक का जाननेवाला १५ दिनतक सेवनकरै॥ सुवर्णभूपति ॥ पारा १ भाग गन्धक १ भाग तांबाका भस्म २ भाग अभ्रकभस्म १ भाग लोहभस्म १ भाग कांतलोहभस्म १ भाग चांदीभस्म १ भाग सोनाभस्म १ भाग बचनागविष १ भागलेय इन्होंको हंसपदीकेरसमें १ दिनतक खरलकरि पीछे गोला बनाय कांचकी शीशीमें घालि मुख बन्दकरि कपड़ा माटी लगाय सुखाय बालुकायंत्र में कोमल अग्निसे पकाय पीछे ४ रत्ती रसको पिपली का चूर्ण व अदरखके रसमें मिलाय खानेसे त्रिदोष के राजरोगको व १३ प्रकारके सन्निपातों को व आमबात को व धनुर्वात को व शृङ्खलावातको व आढ्यबातको व पंगुबालको व कफको व मंदाग्नि

को व कटिबात को व सबप्रकार के शूलको व गुल्मको व उदावर्त को व संग्रहणी को व प्रमेहको व पेट के रोगको व सब प्रकारकी पथरी को व मूत्रग्रह को व विड्बंधको व भगंदर को व कुष्ठ को व विद्रधिको व श्वास को व खांसी को व अजीर्ण को व आठप्रकारके ज्वरको व कामला को व पांडु को व शिर के रोगको नाशकरै और रोगोक्त अनुपानोंकेसंग खानेसे रोगमात्रको हरै दृष्टान्त जैसे सूर्य्य का उदय अंधेराकोनाशै तैसे यह स्वर्ण भूपति रोगमात्रोंको नाशैहै॥ लक्ष्मीविलासरस॥ सोना, चांदी, अभ्रक, तांबा, वंग, लोहा, शीशा बचनागविष, मोती ये सब बराबर भाग लेय और सबोंके बराबर भाग पाराकीभस्म लेय पीछे कजलीकरि पूर्वोक्त औषधों में मिलाय शहदमें खरलकरि पीछे २ वा ३ दिनतक धूपमें सुखाय कल्क को-बर्त्तनमें घालि तार्क्ष्यपुटमें पकाय पीछे चीताके रसमें ८ पहरतक खरल करनेसे लक्ष्मी विलासरस सिद्धहोय है इसको खानेसे त्रि-दोषके राजरोगको व पांडुको व कामलाको व सब वायुके रोगोंको व सूजनको व पीनसको व नष्टवीर्यको व बवासीरको व शूलको व कुष्ठको व मन्दाग्निको व सन्निपातको व श्वासको व खांसीकोहरैहै और यह जवान अवस्थाको व लक्ष्मी को बढ़ावे है॥ शिलाजत्वा दियोग॥ लोहभस्म ३ रत्ती शिलाजीत ३ रत्ती मिलाय खाने से राजयक्ष्माको हरैहै और इसमें पथ्यको सेवै॥ पंचामृतरस॥ पारा अभ्रक, लोह इन्होंकी भस्म, शिलाजीत, बचनागविष ये बराबर भागलेय इन्होंको त्रिफला, गिलोय इन्हों के काढ़ामें पकाय गुग्गुल मिलाय पीछे तांबाकाभस्म, पाराभस्म बराबरभाग मिलाय २ रत्ती खानेसे राजरोगको हरै इस पंचामृत रसमें अनुपान। पूर्वकीसमान है॥ अमृतेश्वररस॥ पराभस्म, गिलोयसत, लोहाभस्म बराबरभाग मिलाय पीछे शहद घृतमिलाय ६ रत्तीभर खानेसे यह अमृतेश्वर रस राजरोगको हरैहै॥ चिंतामणिरस॥ पारा, वैक्रांतभस्म, चांदीभस्म तांबाभस्म, लोहाभस्म, मोतीभस्म, गंधक, सोनाभस्म ये बराबर भागलेय इन्होंको अदरखके अर्कमें ३ भावनादेय पीछे भँगराकेरस में ३ भावना देय पीछे चीताके रसमें ३ भावना देय पीछे बकरीके

दूधमें ३ भावनादेय पीछे गौके दूधमें ३ भावनादेय पीछे १रत्तीभर शहद पिपलीके संगखानेसे बवासीरको व राजरोगको व खांसीको व अरुचिको व जीर्णज्वर को व पाण्डुको व प्रमेहको व बिषमज्वर को व बायुको हरै यह चिंतामणिरस पार्वतीजीने कहा है ॥ त्रैलोक्य चिंतामणि ॥ पारा,अभ्रक,सोना,चांदी,माणिक,हीरा,मैनशिल ,सोना माखी,गंधक,मूंगा, लोहा,मोती,शंख,हरताल इन्होंको बराबर भाग ले भस्मकरै पीछे पारा,गंधककी कजली करै मिलाय इन्होंको चीता के काढ़ामें ७ भावनादेय पीछे निर्गुंडीके रसमें ३ भावनादेय पीछे ज़मींक़न्द के रसमें ३ पुट देय पीछे थोहर के दूधमें ३ पुट देय पीछे आकके दूधमें ३ भावनादेय कल्ककरि कौड़ियोंमें भरि मुखको सुहागा के आकके दूध से पीसि बन्दकरि माटी के बर्त्तनमें घालि कौड़ियों को पीछे बर्त्तनके मुखको बन्दकरि कपड़ा माटी लपेटि गजपुट में पकाय पीछे महीन पीसि बराबर भाग पाराकीभस्म मिलाय पीछे बैक्रांतकीभस्म पारासे चौथाई मिलावै पीछे द्रब्यसे ७ भाग सहों- जनाकीजड़का चूर्ण मिलावै पीछे दालचीनी ५ भाग बोल ५ भाग मिरच ५ भाग चीता ५ भाग सुहागा ५ भाग हड़ द्रब्य से चौथाई भाग जायफल चौथाई भाग लवंग चौथाई भाग पिपली चौथाई भाग शुंठि चौथाई भाग बचनागबिष चौथाई भागलेय मिलायपीछे इन्होंको बिजौराके रसमें १ दिन तक खरल करि तय्यार करै यह त्रैलोक्यचिंतामणिरस ४॥ रत्तीखानेसे संपूर्णरोगोंकोहरै है। रोगोक्त अनुपानों के संग। और यह बिशेषकरि बातब्याधिको व आमबात को व ज्वरको व उदरशूल को व कृमि को व श्वासको व शूलको व रक्त बातको व रक्तपित्तको व क्षीणताको व खांसी को व राजरोगको व कफरोगको व उरःक्षतको व अजीर्णको व प्रमेहको व कुष्ठको व अतीसार को व पांडु को व संग्रहणी को व तमकश्वासको व ब्रणको व बवासीर को व पंगुबातको व आढयबात को व कानरोगको व यो- निरोगको हरै है ॥ वसंतकुसुमाकर ॥ मूंगा ४ तोला पारा ४ तोला मोती ४ तोला अभ्रक ४ तोला चांदीभस्म २ तोला सोना भस्म २ तोला लोहभस्म ३ तोला शीशाभस्म ३ तोला रांगभस्म ३ तोलाले

इन्होंको मिलाय बासाके रसमें ७ भावनादेय पीछे हल्दी के काढ़ा में ७ भावनादेय पीछे ईखके रसमें ७ भावनादेय पीछे कमलके रस में ७ भावनादेय पीछे मालतीके रसमें ७ भावनादेय पीछे केलाके रसमें ७ भावनादेय पीछे कालाअगरके काढ़ामें ७ भावनादेय पीछे सफेदचंदनके काढ़ामें ७ भावनादेय तय्यारकरै इस बसंत कुसुमाकर रसको रोगोक्त अनुपानों के संग ६ रत्ती खाने से सब रोगों को हरैहै और इस रसको शहद मिर्चके संगखाने से क्षयीरोग नाश होवै और इस रसको हल्दीका चूर्ण शहद खांड़के संगखानेसे प्रमेह को नाशकरै है और चंदन का काढ़ा मिश्री के संगइसको खाने से रक्तपित्त जावै और बासाका रस शहद मिश्री इन्होंके संग अथवा दालचीनी,तमालपत्र,इलायची इन्होंको चूर्णकेसङ्ग इसको खानेसे तुष्टि पुष्टि होवै। और कामदेव को उत्पन्न करै और इस को शंख पुष्पीकी रसके संग खाने से छर्दि नाशहोवै। और इसको शतावरि रस,शहद,खांड़केसंग खानेसे अम्लपित्त जावै॥ लोकेश्वरपोटली॥ पाराभस्म ४ भाग सोनाभस्म १ भाग गंधक ८ भाग इन्होंको चीता के रस में खरलकरि द्रब्य को कौड़ियों में भरि कौड़ियों के मुखको सुहागाको पीसि बंदकरै पीछे चूनासे लिपा माटी के बर्त्तन में कौड़ियोंको धरि बर्त्तनके मुख को बंदकरि सुखाइ रत्नीमात्रगर्त्त में पकायतीसरे पहरतकपीछेशीतलहोनेपरकाढ़ि चूर्णकरिबरतै यहलोकेश्वररसवीर्यपुष्टिकोबढ़ावैइसरसको४रत्तीखावै पिपलीशहदकेसङ्ग। यहरस सुखदहै और इसको शरीरका माड़ापनमें व मन्दाग्निमें व खांसीमें व पित्तमें घृत मिर्च चूर्णकेसङ्ग ३ दिन तक खावै सुखहोय और इस पर नोन खावै नहीं और दही घृतखावै अथवा इसपर २१ दिनतक मिरच घृतकोपीवै और इसपर पथ्य मृगाङ्ककेसमान है और उत्तानपादकरिकै सोयाकरै और यह विषमभोजनसे उपजे रोगको व शोषको व राजरोगको व कुष्ठको व पाण्डुको व कुत्सित वैद्यके हाथसे बिगड़ी बीमारी को और अनेकप्रकार के ज्वरों को व दाह व उन्मादको व भ्रमको हरै॥ लोहरसायन॥ शोधापारा १ भाग शोधा गन्धक २ भाग इन्हों की कजली करि पीछे लोहा का

भस्म ३ भाग मिलाय १ पहरतक खरलकरि पीछे कोरफड़ीके रसमें ३ दिनतक खरलकरि जब धुवां गरमगरम निकसे तब गोलाबनाय तांबेके पात्र में घालि सांठी चावलों की राशि में बर्त्तनको दाबै ३ दिनतक पीछे चौथेदिन काढ़ि खरलमें पीसि धूपमेंधरि रानतुलसी के रसमें ३ भावनादेय पीछे शुंठि, मिरच, पीपल इन्हों के काढ़ा में अलग अलग ३ भावनादेय पीछे द्रव्यको लोहेके पात्र में घालि त्रिफलाके पानी में ३ भावना देय पीछे निर्गुण्डी, अनारकीछाल कमल, भँगरा, कुरण्टक,पलाश,केला,बिजौरा,निली, मुण्डी, कींकर कीफली इन्होंके रस में अथवा काढ़ा में तीन तीन भावना अलग अलगदेय तय्यार करै पीछे ८ माशा औषध शहद घृतके सङ्गखावै ऊपर त्रिफला का काढ़ा ४ तोले पीवै इसको ३ महीने तक सेवन करने से बुढ़ापाको हरै और मन्दाग्निको व श्वासको व खांसीको व पाण्डु को व कफ को व बातको हरै पिपली शहदके संग खाने से और यहरस गिलोयसत शहदके संगखावै तो बातरक्त को व मूत्र दोषको व संग्रहणीको व जलके रोगको व अण्डवृद्धि को हरै और यह बलवीर्यको बढ़ावै और आयुको बढ़ावै औ इसपै कोहला, मीठातेल, उड़द, राई, मदिरा, खट्टारस इन पदार्थों को लोहका खाने वाला त्यागै ॥ रत्नगर्भपोटली ॥ पारा, बज्र, सोना, चांदी,शीशा, लोहा, अभ्रक, मोती, सोनामाखी, विद्रुम, राजावर्त्त, वैक्रान्त, गोमेद पुखराज, शंख इन्होंकी भस्मको बराबर भागलेय पीछे चीताकेरस में ७ दिनतक खरल करै पीछे द्रव्य को कौड़ियों में भरि कौड़ियों के मुखको सुहागा को आकके दूधमें पीसि बन्द करै पीछे कौड़ियों को माटीके वर्त्तनमें घालि कपड़ा माटी लेपि गजपुटमें पकाय पीछे चूर्णकरि निर्गुण्डी के रसमें ७ भावना देवै पीछे अदरख के रसमें ७ भावनादेय पीछे चीताके रस में २१ भावनादेय पीछेसुखाय ४ रत्तीभर खानेसे राजरोगको हरै दृष्टान्त जैसे शिव जी अंधदैत्यको तैसे और इसरत्न पोटली रसको शहद पिपलीके संग खानेसे अथवा घृत मिरच के संग खाने से रोग मात्र नाश होवै ॥ हेमगर्भ पोटलीरस ॥ शोधापारा १ भाग इससे चौथाई महीन पीसा सुना

काचूरा गन्धक ३ भाग पीछे इन्होंको धतूरा के रसमें खरल करि गोला बनाय माटी के सकोरा में घालि दूसरे सकोरे से संपुटित करि पीछे कपड़ा गारा लपेटि भूधर यंत्रमें ३ दिनतक पकाय पीछे काढ़ि बराबरका गन्धक मिलावे पीछे अदरखके रसमें खरल करि पीछे चीताके रसमें खरलकरि पीछे मोटी पीली कौड़ियों में भरि पीछे इसद्रव्यसे अष्टमांश सुहागालेय और सुहागासे आधा बच-नागबिष लेय इन्हों को थूहर के दूधमें पीसि इससे कौड़ियोंके मुखको बन्दकरि पीछे कौड़ियोंको चूनासे लिपा माटीके बर्तन में घालि ऊपर सराई देय गारा से बन्दकरे पीछे १ हाथ गढ़ाखोदि गजपुट में धरि पकावे पीछे शीतल होनेपर लोकनाथ के समान बरते और इसपर पथ्य मृगांक के समान है और ३ दिन तक नोन को खावे नहीं और रस खाये बादि छर्दि आवे तो गिलोय के काढ़ा में शहद मिलाय पीवे आराम हो और जो कफ को कोप हो तो गुड़ अदरख मिलाय खावे और दस्त आने लगें तो भूनी भांग में दही मिलाय खावे यह रस खांसीको व राजरोगको व श्वासको व संग्रहणीको व अरुचिकोहरे और जठराग्निको दीपन करे और कफ बात को हरे इसका नाम हेम गर्भ पोटली रसहै ॥ दूसराप्रकार ॥ पारा ४ भाग सोना ४ भाग इन्होंको महीनपीसि जब तकपीठिबने तबतक खरलकरे पीछे गन्धक १२ भाग मिलाय कज्जली करे पीछे मोती १६ भाग शंखके टुकड़े २४ भाग सुहागा१ भाग इन्होंको एकत्रकरि पकेहुये नींबूके रसमें खरलकरे पीछेगोला बनाय मूषापुट में धरि मुखको बन्दकरि १ हाथ मात्र गर्त्तमें गौका गोबरके गोसोंसे गजपुटमें पकावे पीछे शीतल होनेपर काढ़ि महीन पीसि ४ रत्ती खावे गौके घृतमें स्याहमिरच २९ का चूर्ण मिलाय चांदीके पात्रमें अथवा माटीकेपात्रमें अथवा कांचकेपात्रमें मिलाय खानेसे श्वासको व राजरोग को व बायुके विकारको व कफको व संग्रहणीको व अतीसार को हरैहै इसमें पथ्य लोकनाथ के समान है और मनुष्य पवित्रहोकरिखावे ॥ लोकनाथरस ॥ शोधा व खाने-वाला ऐसा पारा २ भाग शोधागंधक २ भागलेय कज्जलीकरे पीछे

पारासे चौगुनी कौड़ियोंमें कजलीको भरि मुखको बन्दकरै सुहागा को गौके दूधमेंपीसि इससे कौड़ियोंका पीछे शंखके टुकड़े ८ भाग लेय पीछे चूनासे लिप्त सिकोरामें आधे टुकड़े घालि तिसपर कौ-ड़ियाँ धरि ऊपर आधे शङ्खके टुकड़े धरि दूसरे सिकोरासे सम्पुट करै पीछे कपड़ा लपेटि गारासे लेपि धूपमें सुखाय पीछे १ हाथका गड़हा खोदि गौके गोबरके गोसों से बीचमें सकोरा को धरि ऊ-पर गोसोंलगाय गजपुट में फूंके पीछे शीतल होनेपर काढ़ि महीन पीसि ६ रत्तीभर खावै २९ मिरच के चूर्ण के सङ्ग और इस लो-कनाथ रसको वायुके रोग में गौके घृतमें मिलाय खावै और पित्त के रोगमें नोनी घृतके सङ्ग खावै और कफरोग में शहद के संग खावै और यह लोकनाथरस अतीसारको व राजरोगको व अरुचि को व संग्रहणीको व कृशताको व मंदाग्निको व खांसीको व श्वास को व गुल्मको हरै और इस रसको खायके घृतयुत अन्नके ३ ग्रास लेवै पीछे २ घड़ीतक बिनाकपड़ा बिछाये पलँगमें सोवै सीधाहोके और खटाई वर्जित अन्नको घृतयुतकरि भोजनकरै और मीठादही खावै और जांगल देशके जीवके मांसको घृतमें पकाय खावै और संध्या कालमें भूंखलगे तो दूध चावलको मिलाय खावै और मूँग के बरेबनाय घृतमें पकाय खावै और तिल आवँला इन्होंका कल्क करि पानी में मिलाय स्नान करै अथवा घृतसे मालिश करि गरम जलसे स्नान करावै और कडुआ तेल बेलफल करेला बैंगन छोटी मछली, इमली, दण्ड, कुश्ती, मैथुन, मदिरा संधान हींग शुंठि उड़द मसूर, कोहला, राई, कांजी इन्होंको खावै नहीं और दिनमें सोवैनहीं और कांसीके पात्रमें भोजनकरैनहीं और ककार जिसके आदिमेंहो ऐसेशाकफल इन्होंको खावैनहीं और इसरसको शुभनक्षत्र व शुभ वारमें व पूर्ण तिथिमें व शुक्ल पक्षके व चन्द्रमाके बलमें ऐसे मुहूर्त्तमें लोकनाथको पूजि पीछे कुमारीकन्या को पूजनकरि पीछे सोनाका दानब्राह्मणों को देय २ घड़ीके बीचमें रसकोखावै और जो रसखाने से गरमी उपजे तो गिलोयका सत खांड़ बंशलोचन मिलाय खावै और खजूर अनार मुनक्कादाख ईख येभीखवावैऔरअरुचिमें धनि-

यां को कूटि घृत में भूनि खांड़ मिलाय खावै और ज्वरमें धनियां को गिलोयके काढ़ामें मिलाय पीवै और नेत्रबाला बासा इन्होंके काढ़ा में खांड़ मिलाय इसके संग रसको खानेसे रक्त पित्त कफ खांसी श्वास स्वरनाश ये सब नाशहों और भूनी भांगके चूर्ण को शहद में मिलाय इसके संग रसको खानेसे निद्रानाश अतीसार संग्रहणी ये जावैं और मंदाग्नि में कालानोन हड़ पिपली गरम जल इन्हों के संग रसको खावै और शूलरोग में भी इसी तरह खावै और जीर्ण ज्वरमें पिपली शहदके संग रसको खावै और इसरसको अनार के पुष्पों के रसके संग खानेसे प्लीहा उदर रोग बातरक्त छर्दि गुदांकुर कहे बवासीर नकसीर इन रोगोंको नाशै और दूबके रस में खांड़ मिलाय रसकोखानेसे नकसीर बन्दहोवै और बेरकी मज्जा पिपली मोरकीपांखकाभस्म खांड़ इन्होंको शहद में मिलाय खानेसे छर्दि हुचकी जावै और यही बिधि पोटली रसमें व मृगांकमें व हेमगर्भ में व मौक्तिक रसमें भी करनी योग्यहै यह लोकनाथ रस सब रोगों को हरैहै ॥ लघुलोकनाथरस॥ कौड़ियों की भस्म १ भाग मंडूरभस्म १ भाग मिरच २ भाग लेय घृतमें पकाय पीछे नागरपान की बेल के रसमें भावना देय सुखाय पीछे चूर्णकरि शहदमें मिलाय अथवा नोनी घृतमें मिलाय १ माशाभर खाने से राजरोग को नाशै और इस लघु लोकनाथको एक एक पहरमें खाता जावै और १५ दिन तक सेवै ॥ मृगांकपोटलीरस॥ सोनाके पत्रे यानेमहीन वर्क १ भाग पारा १ भाग इन्होंको धतूराके रसमें खरल करि अथवा ज्वालामुखीके रसमें खरलकरै जबतक मिले तबतक अथवा कलहारी के रसमें खरल करै पीछे सोनाके वर्कोंसे चौथाई सुहागा मिलावै पीछे सोना से दुगुना मोती का चूर्ण मिलावै पीछे सब चूर्ण के समान गन्धक मिलाय खरल करि गोलाबनाइ ऊपर कपड़ा लपेटि गारा से लीपि सुखाय सकोरा में घालि दूसरे सकोरा से संपुटित करि कपड़ा माटी लपेटि पीछे नोनसे पूर्ण माटीके बर्तन में संपुट को घालि सराईसे मुख बन्दकरि कपड़ा माटी लगाय सुखाय बहुत से गोसोंके बीचमें धरि फूंकिदेवै पीछे शीतल होने पर काढ़ि पारा के

बराबर गन्धक मिलाय खरल में पीसि गजपुट में पकाय शीतल होनेपर २ रत्तीभर सोंठ मिरच के चूर्ण के संग खावे अथवा तीन पिपलीके चूर्णके संग खावे और दोषका बलाबलदेखि १ रत्ती देवै अथवा दोषोंको देखि घृत शहदके संगदेवै और इसमें पथ्य लोकनाथ रसके सरीखे है और इस रसको स्वस्थमन होकरि खावे यह रस कफ रोगको व संग्रहणीको व खांसीको व श्वासको व राजरोग को व अरुचिको व माड़ापनाको व बलहानिकोहरै ॥ गोक्षुरादिघृत ॥ गोखुरू ४ तोला धमासा ४ तोला चारोंपर्णी ४ तोला बलिया ४ तोला पित्तपापरा ४ तोला इन्होंको द्रव्यसे दशगुने पानीमें पकाय दशमांश रक्खै पीछे कचूर पुष्करमूल पिपली बनपसा हड़ चिरायता तेजबल कटुकी सफेद सारिवा येसब एकएक तोला अलग २ लेय कल्क करि मिलावे पीछे घृत ६४ तोला दूध १२८ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे ज्वरको व दाहको व तमक श्वास को व खांसी को व पसली शूलको व शिरके शूलको व तृषाको व छर्दिको व अतीसार को नाशकरै इसमें सन्देह नहींहै ऐसे जानो ॥ जीवन्त्यादिघृत ॥ गिलोय, कुड़ाकी छाल, मुलहठी, पुष्करमूल, गोखुरू, खरेटीलाल, सफेदखरेटी, नीलाकमल, भूमिआंवला, धमासा बनपसा, पिपली, कूट, मुनक्का इन्होंका रस ६४ तोला बकरीका दूध १२८ तोला दही ६४ तोला घृत ६४ तोला इन्होंको मन्दाग्निसे पकाय घृतको सिद्धकरि पानकर्म में व नस्यमें व वस्तिकर्ममें बरते यहघृतपीनेसे राजरोगको व हलीमकको व कामलाको व पांडुकोहरै और इस घृतको पिचकारीमें चटानेसे गुदाके रोगोंको हरै और इस घृतको मालिश करनेसे विसर्प, विस्फोटक और यह घृत सबरोगों को हरैहै ॥ बलादिघृत ॥ बलिया, गोखुरू, पृष्ठिपर्णी, दोनों कटेली शालिपर्णी, निम्ब, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, बनपसा, धमासा, हड़ कचूर, दाख, पुष्करमूल, मेदा, आंवला इन्होंका काढ़ा दूध, घृत मिलायघृतको सिद्धकरिखानेसे राजरोगको व खांसीको व शिरशूल को व पसली शूलकोहरै ॥ कोलादिघृत ॥ बेरीफल, लाख इन्होंके काढ़ामें अष्टमांश दूधमिलाय और गोखुरू, दारुहलदी, दालचीनी

मुनक्का, दाख, खरोट, घृत, खजूर, दाख, फालसा, पिपली इन्होंका कल्क मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से खांसी, श्वास जावै ॥ कणादिघृत ॥ पिपली २० तोला गुड़का शर्बत २० तोला घृत २० तोला मिलाय पकाय पीनेसे अथवा भोजनके संग खानेसे क्षयको व राजरोगको हरै ॥ पाराशरघृत ॥ मुलहठी, बलीया, गिलोय, पंचमूल इन्होंको बराबरले काढ़ाकरै पीछे काढ़ाकेबराबर आँवलारस इतनाही ईखकारस भूमिकोहलाका रस घृत, दूध, दही, नोनीघृत दाख, तालीसपत्र, हड़ ये बराबर भागलेय घृतको सिद्धकरि पीनेमें व नस्यमें व बस्तिकर्म में बर्त्तने में राजरोगको व पांडुको व हलीमकको व बवासीरको व रक्तपित्तको हरै और इसकी मालिश करने से बिसर्परोग दग्धघाव ये अच्छेहोवैं ॥ जलादिघृत ॥ एकद्रोणभर पानी में पिपली २ तोला चन्दन २ तोला लोध्र २ तोला बाला २ तोला कालाबाला २ तोला पित्तपापड़ा २ तोला पाढ़ा २ तोला चिरायता २ तोला मुलहठी २ तोला मेहँदी २ तोला नीलाकमल २ तोला नागरमोथा २ तोला इन्द्रयव २ तोला शुंठि २ तोला कटुकी २ तोला धमासा २ तोला दालचीनी २ तोला बांसाकीजड़ २तोला बकरीका गरमदूध घृत ६४ तोला मिलाय पकायखानेसे राजरोगको व रक्तपित्तको व त्रिदोषकाको व श्वासको व खांसीको व क्षीणता को व दाहको व शोकको हरै है ॥ बासादिघृत ॥ बासा गिलोय निंब कटेली असगन्ध गंगेरन अर्ज्जुनवृक्ष इन्होंके काढ़ामें घृत शुंठि मिरच पीपल चबक पिपलामूल पुष्करमूल इन्होंकाकल्क मिलाय और बकरी का दूध मिलाय घृतको पकाय खानेसे राजरोग नाशहोवै ॥ खर्जूरादिघृत ॥ खजूर दाख मुलहठी फालसा पिपली इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे स्वरभंगको व खांसी को व श्वास को व ज्वरको हरै ॥ पिप्पल्यादिघृत ॥ पिपली गुड़ बकराका मांस इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खाने से कासको व राजरोगको हरै और अग्निको बढ़ावै ॥ दूसराप्रकार ॥ पिपली पिपलामूल चवक चीता शुंठि जवाखार इन्हों में घृतको सिद्धकरि खावै अथवा इन्होंके कल्कको चौगुना दूधमें मिलाय चतुर्थांशरहै तबघृतको खानेसेराज-

रोग जावे ॥ दशमूलादिघृत ॥ दशमूल का काढ़ा दूध नोनीघृत शहद पिपली इन्होंको मिलायखाने से स्वरभंग को व शिरके शूलको व पसली के शूल व खांसी को व श्वासको व ज्वर को हरैहैं। तिलातिलका तेल १२८ तोला गौकादूध ५१२ तोला मुलहठी४तोला इन्होंको मिलाय। तेलको सिद्धकरि पीनेसे व नस्य लेनेसे राजरोग को व पांडुको व ऊर्ध्वजत्रु रोगको व विषको वउन्मादको व रक्तपित्तको हरै और विसर्पकोभी हरै॥ चन्दनादि तेल ॥ चंदन, नेत्रबाला नख, सफेदचंदन, शिलाजीत, पद्माख, मंजीठ, सरलवृक्ष, देवदारु, कालाबाला, नागकेशर, केसर, हल्दी, सारिवा, कटुकी, लवंग, अगर, दालचीनी, रेणुकबीज, नीली येसमान भागलेइ और तिलका तेल द्रव्यसे चौगुना और दहीकामस्तु चौगुना और सबोंकेबराबर लाख का रस मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे ग्रह दोषको हरै और बलको बढ़ावै और मृगीरोगको व ज्वरको व उन्माद को व कृत्याको व अलक्ष्मीको नाशकरै और आयुको बढ़ावै और शरीर को पुष्टकरै और वशीकरण है। और विशेषकरि राजयक्ष्मा रोगको व रक्तपित्तकोहरै॥ लक्ष्मीविलासतेल ॥ इलायची, चंदन, रासना, लाख नख, कपूर, कंकोल, नागरमोथा, बलिया, दालचीनी, दारुहल्दी पिपली, अगर, तगर, जटामांसी, कूट ये समान भागलेइ और इन सबोंसे तिगुना राललेइ पीछे इन सबोंको डमरूयंत्रमें घालि तेल कढ़ावै पीछे तेलको गंध व फूलोंसे सुबासितकरै इसको गंधतेल व लक्ष्मीविलास तेल कहते हैं यह तेल मालिश करनेसे राजोंसे मुलाक़ात करावै और युक्तिपूर्वक मालिश करनेसे संपूर्णरोगोंको हरै है और इस तेलको नागरपानकी बेलका ५। रसमें मिलाय पीनेसे जठराग्निको दीपन करैहै और अंगोंके मालिश करनेसे बवासीर को व क्षयीको हरैहै व्यवायशोष, शोकशोष, बुढ़ापाशोष, कसरत शोष, अध्वशोष, घावशोष छातिक्षत शोष इन्होंके संयुक्त मनुष्यों के लक्षण सुनि। व्यवायजन्य शोषकहै बहुत मैथुन करनेसे उपजै शोष ताकालक्षण। लिंगमें व फोतोंमें पीड़ाहो और मैथुन करनेकी शक्ति नहींहो और थोरा लोहू व बीर्य्यभरै चिरकालमें मैथुन वे

बखत । और पांडु शरीरहो और सब धातु क्षीणहों ये लक्षण हैं ॥ चिकित्सा ॥ इस रोगवालेको दूध, मांस, घृत इन्होंसे संयुक्त भोजन खवावै और मीठा प्रिय उमरको बढ़ानेवाले ऐसे उपचार करावै ॥ शोकशोषीकेलक्षण ॥ इसकेवही लक्षणहैं परंतु इसमें वीर्य्यक्षीणनहींहो और अंग सब गीले व ढीले रहैं ॥ चिकित्सा ॥ हर्ष करनेवाले व आश्वासन करनेवाले ऐसे औषध, दूध, चिकना, मीठा, शीतल, दीपन, हलका, अन्नपान ये सब शोकशोषीको हितहैं ॥ बुढ़ापाशोष लक्षण ॥ इसमें शरीर माड़ाहोजाइ और बल वीर्य बुद्धि जातेरहैं और शरीर कांपै, भोजनमें अरुचिहो घोंघों बोलै और कफ बहुत थूकै शरीर भारीरहै पीनसहोइ और रूखा शरीरहोजाइ और नेत्र नाक, मुख ये बहतेरहैं और मल सूखा व रूखा उतरै ये लक्षण बुढ़ापाके शोषीके हैं ॥ मार्गशोषीकालक्षण ॥ बुढ़ापा शोषीके लक्षणों से मिलतेहैं परंतु उसके हियेमें पीड़ा नहींहो और अंग ढीले रहैं और शरीरका वर्ण खरधराहो और सब अंग सोतेरहैं और तृषा का स्थान व कंठ व मुख ये सूखे रहैं ॥ चिकित्सा ॥ वसनाका सुख से दिनके सोनेसे शीतल, मीठा पौष्टिक ऐसे अन्न व मांसोंके सेवन से मार्गशोषीसो आरामहोवै ॥ कसरतशोषलक्षण ॥ इस शोषमें भी मार्गशोषीके लक्षण मिलतेहैं परंतु हियमें पीड़ा नहींहो ॥ चिकित्सा ॥ इसमें सचिक्कण पदार्थ और क्षतक्षयमें हितकरनेवाले और जीव-नीय गणोक्त और कफपैदाकरनेवाले ये सबहितहैं ॥ व्रणशोषलक्षण ॥ लोहूके क्षयसे व घावोंकी पीड़ासे व भोजनके बंदहोनेसे व्रणशोष होयहै यह महाअसाध्य होयहै ॥ चिकित्सा ॥ व्रणशोषको सचिक्कण दीपन स्वाद, शीतल कटुक खट्टा, मीठा, मांसके रसका यूष इन्हों से शांतकरै ॥ रसवर्धन ॥ गिलोय, अदरख, यव इन्होंकाकाढ़ा अथवा मिरचके चूर्णको दूधमेंघालि पकाय रात्रिमें पीनेसे रसकी वृद्धिहोय और क्षय नाशहो ॥ रक्तवर्द्धन ॥ गेहूं, यव, सांठीचावल, जांगलदेश के जीवोंका मांस, घृत, खांड दूध शहद मिरिच पिपली इन्होंकाखाना व पीना लोहूकोबढ़ावैहै ॥ मांसबर्द्धन ॥ अनूपदेशके मांस अनूप देश के अन्न लसूण हरण दोड़ीघृत दूध मीठापदार्थ इन्हों के सेवन से

मांस वृद्धिहोवै ॥ मेदबर्द्धन ॥ तालीसादिचूर्ण मीठारस जांगलदेशके मांसकारस इन्होंको सेवन करनेसे मेदबढ़ै ॥ दूसराप्रकार ॥ सितोपलादि चूर्ण बकरीका दूध जांगलदेश के बकराका मांस इन्हों के सेवनसे मेदबढ़ै ॥ हाड़बर्द्धन ॥ घृतमें पकेहुये पदार्थ नानाप्रकार के दूध चन्दनादि दाषादि चूर्ण जांगलदेश मांसकारस मीठे अन्न व पान इन्होंके सेवनसे हाड़ वृद्धिहोवै ॥ शुक्रवृद्धि ॥ खट्टे रसमें सिद्ध किये पदार्थ दस्तावर रस नोनीघृत दूध मीठारस इन्हों के सेवन से वीर्य बढ़ै ॥ दूसराप्रकार ॥ काकड़ीकी जड़ दूध बिदारीकंद सांवरीका कंद इन्होंमें खांड़ शहद मिलाइ पीनेसे वीर्य्य बढ़ै ये सब नुसखे क्षयीमेंउपजे उपद्रवोंको हितहैं और क्षयीमें छर्दि उपजे तो गिलोयके रसमें शहद मिलाइ पीवे अथवा विजौराकी जड़ धान की खील, सेधानोन, पिपली शहद इन्होंको मिलाय खानेसे छर्दि जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ हलदी, सुपारी, खांड़ इन्होंका १ तोला चूर्ण खाने से छर्दि जावै अथवा सुहागा ६ माशा लेय काकमाची के रस में खरलकरि पीने से छर्दि मिटै ॥ अथवा सुगन्ध पदार्थ के खानेसे छर्दिमिटै॥ रक्तछर्दिपर ॥ लाखके रसमें शहद मिलाइ पीने से अथवा कावली की जड़को पुष्यार्क योग में लाइ पीछे गौ के दूधमें पीसि पीने से रक्तकी छर्दि मिटै और १ तोला बुंठी दूध में पीवे ॥ उसीरादिचूर्ण ॥ बाला, तगर, शुंठि, कंकोल, चन्दन, लाल चन्दन, लवंग, पिपलामूल, पिपली, इलायची, नागकेसर, नागरमोथा, आँवला, कपूर, वंशलोचन, तमालपत्र, कालाअगर ये सब बराबर भागलेय खांडइससे अष्टमांशलेय इसको खानेसे हृदयके तापको व लोहूकी छर्दिको हरे और जो क्षयीमें कफका कोपहो तो केलाकीघड़को भूनि शहद मिरचमें मिलायखावै सुखहोवै और जो क्षयीमें अरुचिहो तो धनियां इलायची मिरच इन्होंके चूर्ण में खांड़ घृत मिलाय खाने से रुचि उपजै ॥ दूसरा ॥ अदरख के रसमें शहद मिलाय खाने से अरुचि मिटै ॥ दाहपर ॥ कचनारकीछाल के रसमें जीराका चूर्ण कपूर मिलाय पीनेसे क्षयीमें उपजा दाहमिटै ॥ शोषपर ॥ कोलिकिलाक्षके बीजोंको जीरा जायफल गुड़मेंमिलाय खानेसे

अथवा मत्स्याक्षी पाडला तांडुलजा जड़ इन्होंको खानेसे शोषमिटे
उरःक्षतक्षयनिदान ॥ बहुत तीरंदाजी करनेसे और ज्यादाभार उठाने
से और ज्यादा बलवान् के संग कुश्ती करनेसे और बिषम स्थान
से व ऊंचेस्थानसे पड़नेसे और बैलके व घोड़ाके संगभाजनेसे और
भैंसा आदि को बशमें करनेसे और भारीपाथर भारीलाकड़ इन्हों
को उठाय दूर गेरनेसे और दूसरोंको मारनेसे और ऊंचे स्वरसेपाठ
करनेसे और ज्यादे मार्गमें गमनकरनेसे और चौड़ी लम्बीनदीको
तरनेसे और बैल घोड़ा भाजताहुआ को पकड़डाटनेसे और ज्यादे
कूदनेसे और ज्यादे नाचनेसे और अनेकतरहके कर्म्म करनेसे और
चोट लगनेसे बहुत मैथुनकरनेसे और रूखाखानेसे औरकमभोजन
करनेसेछातीमें रोगहोयहै तबहियादूखे और दोनोंपसलियों में दरद
होवे और अंग सूखेरहैं और शरीरकांपै और वीर्य्य, बल, अग्नि,
वर्ण रुचि ये घटजांय और लोहू थूके लोहूजाड़े लोहूमूते पसवाड़ा
कटिमें दरदहोय और ज्वरहो और गरीबसा होजाय और अतीसार
खांसी होय अग्निका नाशहोय और खाँसते हुये काला पीला गां-
ठिल ऐसा कफथूके और कफभैर और बल वीर्य्यकाक्षय होनेसेऐसा
रोगी दिन दिन क्षयहोय॥ उरःक्षतकापूर्वरूप ॥ जब ये सब अव्यक्त हों
वह पूर्वरूप होयहै ॥ असाध्यलक्षण ॥ जिसकी छातीमें शूल हो और
लोहूकीछर्दिहोय और खांसीज्यादाहोय और मूत्रलोहूके समानहो
और पसली मगर कटि इन्होंमेंदुःखहो ऐसाहो तो असाध्य जानिये
असाध्यलक्षण ॥ और यह रोग थोरे लक्षणों युतहो और अग्नि दी-
पन हो और बलवंत मनुष्य के उपजे और नयारोगहो तो साध्य
जानो और यही रोग १ बर्षसे उपरान्त जाप्य होयहै और जो अ-
च्छा बैद्य इलाजकरै और रोगी की जवान अवस्थाहो तोभी एक
हजार १००० दिनतक जीवै ॥ चिकित्सा॥ तृप्तिकरने वालेशीतल बि-
दाही नहो हलका ऐसेअन्न पान सेवनसे क्षीणमें सुखहोय॥ चिकित्सा॥
इसरोगवाला शोक स्त्रीसंग क्रोध असूया कहेदूसरेके गुणोंमें दोषों
का आरोपण करना इन्होंकोत्यागे और कथापुराण इत्यादि बिषयों
को सेवन करावै और देवता, ब्राह्मण, गुरू इन्होंकी सेवा करावे

और ब्राह्मणोंके मुख सुपुण्याहवाचन को सुनै॥ दशमूलादिकाढ़ा॥ दशमूल, बलियार, रास्ना, पुष्करमूल, देवदारु, नागरमोथा इन्हों का काढ़ा करि पीनेसे पसलीशूल, उरक्षत, क्षय, कास, श्वास, मस्तकशूल, कांधाकाशूल ये सब जावै॥ बलादिकाढ़ा॥ बलिया, बिदारीकंद, श्रीपर्णी, बहुपत्री, सांठी इन्होंको दूधमें पीसि काढ़ाकरि शहद मिलाइ पीनेसे क्षयीरोग नाशहोइ॥ एलादिगुटिका॥ इलायची, तमालपत्र, दालचीनी, दाख, पिपली ये प्रत्येक २ तोलेलेइ मिश्री ४ तोला खजूर ४ तोला फालसा ४ तोला मुनक्का दाख ४ तोला इन्होंको महीन पीसि शहदमें गोली बनाइ १ तोला भर की शुभदिन देखिखावै रोज खानेसे क्षतक्षयको व ज्वरको व खांसी को व श्वास को व हुचकी को व छर्दि को व भ्रमको व मूर्च्छा को व मद को व तृषाको व शोषको व पसली को व शूलको व अरुचिको व प्लीहाको व आढ्यबातको व रक्तपित्तको व आढ्य राजरोगको हरै और एलादिगोली यहबीर्य्यको बढ़ाइतृप्ति करै॥ द्राक्षादिघृत॥ दाख ६४ तोला मुलहठी ३२ तोला पानी २५६ तोला लेइ मिलायकाढ़ा करि चतुर्थांश रक्खै पीछे मुलहठी चूर्ण ४ तोला दाख ४ तोला पिपली ८ तोला घृत ६४ तोलालेइ पीछे इनसबोंके चौगुना दूध मिलाय पकाय पीछे शीतल होने पर खांड़ ३२ तोले मिलावै यह द्राक्षादिघृतखाने से क्षतक्षीणको व बातपित्तको व ज्वरको व श्वास को व बिस्फोटक को व हलीमकको व प्रदरको व रक्तपित्तको हरै और मांस बलको बढ़ावै॥ बालादिघृत॥ बलिया, मोटीबलिया, अर्जुनवृक्ष इन्होंके काढ़ामें मुलहठी का कल्क मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से हृदयके रोगको व शूलको व उरःक्षतको व रक्तपित्त को व खांसी को व बवासीरको व बायुरोगकोहरै॥ पथ्यादिघृत॥ हड़, मोटीबलिया इन्होंके काढ़ामें बराबरका दूध मिलाय और पिपली बासा इन्हों का कल्क मिलाय घृतको सिद्ध करने से और खाने से उरःक्षतक्षय को हरै॥ गोक्षुरादिघृत॥ गोखुरू ४ तोला बाला ४ तोला मजीठ ४ तोला बलियार ४ तोला काश्मरी ४ तोला डाभकी जड़ ४ तोला पृष्ठिपर्णी ४ तोला गंगेरन ४ तोला शिरस ४ तोला शालिपर्णी ४

तोला इन्होंको चौगुना ईखके रसमें काढ़ा करि पीछे सफेद लज्जावंती, ऋषभ, मेदा, जीवंती, जीवक, शतावरी, दाख, खांड़, मुंडी, बासा इन्होंका कल्क मिलाय पीछे घृत ६४ तोला मिलाय पकाय खाने से बातको व पित्तको व हृद्रोगको व गुल्मको व मूत्रकृच्छ्रको व प्रमेह को व बवासीर को व खांसीको व शोषको व क्षयीको हरै और धनुष स्त्रीसङ्ग, भार, मार्गगमन इन्होंसे खिन्न मनुष्योंको बल, मांस बढ़ावै॥ अमृतप्राश्यावलेह ॥ दूध, आंवलाकारस, बिदारीकंदकारस, ईखका रस, क्षीरवृक्षोंकारस इन्हों में घृत ६४तोला मिलायपकाय पीछे मुलहठी, ईख, दाख, चंदन, लालचंदन, बाला, खांड़, कूठ, पद्माख, महुआ के फूल, धमासा, कट्तृणइन्होंका चूर्ण मिलायलेहबनायशहद२ २ तोला खांड़ ४०० तोला दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला नागकेशर २ तोला मिलाय रक्खै पीछे अग्निके बलकोदेखि खावै यह अमृतप्राश्यावलेहरक्तपित्तको व क्षतक्षयको व तृषाको व अरुचिको व श्वासको व कासको व छर्दिको व हुचकीको व मूत्रकृच्छ्रको व ज्वर को हरै और बल को बढ़ावै और स्त्रीसंग की इच्छा बढ़ै और यह महादेवजीने कहाहै ॥ रसराज ॥ मोतीकीभस्म, मूँगाकीभस्म, पाराकीभस्म, सोनाकीभस्म, कालाअभ्रक, कांतलोहाकी भस्म, रांगकी भस्म ये सब बराबर भाग लेइ पीछे इन्हों को गिलोय के रसमें ७ भावनादेय पीछे शतावरिके रसमें ७ भावनादेइ पीछे १माशा रसको शहद मिरचोंके चूर्णके सङ्ग खानेसे यह रसराज उरःक्षतक्षयको व कामलाको हरै। और इसरोगमें धानकी खील, दूध, शहद इन्होंको मिलाय खावै और यह जीर्ण होनेपर खांड़ दूधमें मिलाय पीवै और मदिराके सङ्ग धानकी खीलोंको खानेसे पसली शूल, वस्तिशूल, मंदाग्नि, पित्त इन्होंकोहरै। और धानकी खीलोंका चूर्णकरि घृत, शहद, दूध इन्होंमें मिलाय खानेसे बमन होइ शोषकोहरै॥ क्षयीरोगमेंपथ्य ॥ रोगी बलवान् हो और दोष अधिक हो तो पहिले जुल्लाबदेकरि शुद्धकरना योग्यहै गेहूँ, मूँग, चना, लालरङ्ग के चावल बकरीका मांस, मक्खन, दूध तथा घी, कच्चेमांसखानेवाले जीवोंका मांस, जङ्गली जीवों के मांसकारस। सूर्यकी तेज किरणों से सुखाये

हुये महीन पीसेहुये बेरोंका चाटना, रागोंका सुनना, कांबलिकखांड़ व चूर्णके मसाले, चंद्रमाकेकिरण, मीठारस, केला, कटहर, आम इन्होंके पकेहुये फल, आमला, छुहारा, पुष्करमूल, फालसा, गोलासहोंजना, मौलसिरी, नवीनताड़काफल, दाख, सौंफ, मणिमंथ, बासाके पत्ते, बकरी, गौ, भैंस इन्होंकाघृत, बकरेकीलेंडी और मूलका लेप मत्स्यंडी, शिखरणि, मदिरा, रसाला, कपूर, कस्तूरी, सफ़ेदचन्दन, तेल इन्होंकालगाना, सुगंधितलेप, न्हाना, वेषबनाना, गोतामारकेन्हाना महल, माला, कामकीकथा, मंदपवन, गाना, नाचना, चंद्रमाकीकांति वीनकाबाजा, मृगनयनी स्त्रियोंकादर्शन, सोनेकाचूर्ण, मोती बहुत सी मणियोंसे जड़ेहुये गहनोंका पहिरना, होम, दान, देवपूजा, ब्राह्मणपूजा, हृदयकाहित अन्न तथा पान येसब क्षयरोगमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ विरेचन, वेगकारोकना, श्रम, स्त्रीसङ्ग, स्वेदन, अंजन, बहुत जागना, साहसकर्म्म, रूखाअन्न, पान, बिषमभोजन, तांबूल, कोहला कुलथी, उड़द, लहसन, बांसकेअंकुर, हिंग, खट्टाचर्परा कसायलारस सबप्रकारकी कड़वीबस्तु, पत्तों का साग, खार, विरुद्ध भोजन, सेमि ककड़ी, सबविदाहीपदार्थ, कालाकरेला येसब क्षयरोगमें त्यागदेवे ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांक्षयीरोगप्रकरणम् ॥

कासीकर्म विपाक॥ जो दुर्बल मनुष्यों के धन को नवीन वेष धारणकरि चोरै वह कासरोगी होवै॥ प्रायश्चित्त॥ कृच्छ्र चान्द्रायण व्रत करनेसे कास मिटै॥ दूसराप्रकार॥ शंगकी चोरीकरनेवालाकफ रोगी होयहै॥ प्रायश्चित्त॥ १ दिन व्रतकरि पीछेरांग ४०० तोलाभर दानदेवै॥ तीसराप्रकार॥ जो नित्यकर्म्मकहे संध्याआदि न करे वह कफ रोगीहो अथवा वैरियोंसे पीड़ा पावै॥ प्रायश्चित्त॥ १ महीना तक यवका भोजनकरै और सहस्र नाम का पाठसुनै और अग्नि में चरु घृत की १०८ आहुति देवै॥ ज्योतिःशास्त्राभिप्राय॥ जिसके जन्मपत्रमें कर्क राशिमें सूर्य्यहो और बुध की दृष्टिहो वह अंधाहो और कफ वात रोगीहो किंवा चोरीकरै और चंचलकर्म्मवालाहो॥ कारणसंप्राप्ति॥ मुँहमें धूमाजानेसों और मुँहसेंधूलिकेजानेसों कसरत सों और रूखे अन्नके खानेसों भोजनकेकुपथ्यसों और मलमूत्र छींक इन्होंके वेगके रोकने सों कास पैदाहोयहै पीछे वह हियाका प्राण पवनसों मिलै और वह प्राण पवन कण्ठ के उदान पवनसों मिलि उन दोनों पवनों को पुष्टकरि कांसीका फूटा बरतन सरीखा शब्द करै मुँहमेंसे बारबार निकसै दोषों सहित तिसे वैद्यजनकास कहे हैं॥ संख्यारूपसंप्राप्ति॥ कासरोग ५ प्रकारकाहै वायुका १ पित्त का २ कफका ३ चोटलगनेका ४ क्षयीरोगका ५ ये उत्तरोत्तर क्रम सेबलवान्‌हैं॥ पूर्व्वरूप॥ कंठमेंकांटासा पड़िजाइ और कण्ठमेंखाज चलै भोजनकराजावैनहीं तब जानिये खांसी होगी॥ वायुकेकासका लक्षण॥ हियामें माथामें कनपटीमें उदरमें पसवाड़ा शूलचलै और मुँह उतरजाइ और बल पराक्रम स्वर ये क्षीण पड़िजाइँ और सूखा खांसै ये लक्षणवायुकीखांसीके हैं॥ चिकित्सा॥ रूखाकासवालारोगी को आदिमें स्नेहपानादिकरावे पीछेघृत, बस्ति, पेया, दूध, यूषरस ग्राम्य व अनूपउदक, साठीचावल, यव, गेहूँ, मांसरस इन्होंका भोजन देवै॥ रुद्रपर्पटी॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग लेय पीछे एरण्डकीजड़ काकड़ासिंगी कावली अरणी इन्होंके अर्कमें १ दिनतक खरलकरै अग्निसे पकाय पीछे दोनुओंका चतुर्थांशतांवा की भस्म मिलाय कोमलअग्निसे पकाय जब लालरङ्गहो तब ताईं

पीछे गौ गोबर ऊपर केला के पत्ता को धरि तिस पर द्रव्य धरि दूसरे पत्तासे ढकि ऊपर गोबर धरि पीड़न करै पीछे शीतल होनेपर द्रव्यको काढ़ि महीनपीसि चौथाहिस्सा बचनागबिष मिलाय तैयार करै पीछे २ रत्ती खाय ऊपर निर्गुण्डीके रसकोपीवै २ तोले अथवा भँगराका रस व शहदके सङ्गखावै यह रुद्रपर्पटीरस बातकी खांसी कोहरै ॥ भूतांकुश ॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग तांबाभस्म ३ भाग मिरच १० भाग अभ्रक भस्म ४ भाग बचनागबिष १ भाग नाकछिकनी १ भाग इन्होंको निंबूके रसमें खरलकरि १ माशाभर खानेसे यह भूतांकुश रस बायुकी खांसीको हरैहै इसपर अनूपान बहेड़ाकीछालके काढ़ामें शहदमिलाय पीनाहै ॥ सठनादिलेह ॥ कचूर काकड़ासिंगी, पिपली, भारंगी, गिलोय, नागरमोथा, धमासा इन्हों के चूर्णमें तेल मिलाय खानेसे बायुकी खांसीजावै ॥ भारंग्यादिलेह ॥ भारंगी, दाख, कचूर, काकड़ासिङ्गी, पिपली, शुंठिइन्होंके चूर्णमें गुड़ तेलमिलाय चटनीकरि चाटनेसे बायुकी खांसीजावै ॥ बिश्वादिलेह ॥ शुंठि, भारंगी, पिपली, कायफल, दाख, कचूर इन्होंके चूर्ण में तेल मिलाय चाटनेसे बायुकी खांसीजावै ॥ दशमूलघृत ॥ दशमूलकेकाढ़ा में भारंगीका कल्क मिलाय और तीतरका मांस व घृत मिलाय पकाय खानेसे बायुकी खांसीजावै ॥ कटूफलादिपेय ॥ कायफल, रोहिषतृण, भारंगी, नागरमोथा, बच, धनियां, शुंठि, पित्तपापड़ा, काकड़ासिंगी, देवदारु इन्होंकेकाढ़ामें शहद हींगमिलाय पीनेसेबातकीखांसीको व कफकीखांसीको व कंठरोगको व मुखरोगको व शूलरोगको व हुचकीको व श्वासको व ज्वरकोहरै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि, धमासा, एरण्ड की जड़, काकड़ासिंगी, चचुंदर, देवदारु येसब बराबर भागलेय चूर्ण करि गरम पानीकेसङ्ग अथवा तेलकेसङ्ग खानेसे बातकी खांसीको व पित्तकी खांसीको हरैहै ॥ चित्रकादिलेह ॥ चीता, पिपलामूल, शुंठि मिरच, पिपली, नागरमोथा, धमासा, कचूर, पुष्करमूल, हड़, तुलसी बच, भारंगी इन्होंकीराख ८० तोला और ८०० काढ़ामें ४० तोला खांड़, घृत १६ तोला मिलाय पकावै पीछेशहद १६ तोला पिपली १६ तोला बंशलोचन १६ तोला मिलाय चाटनेसे खांसीको व श्वास

को व गुल्म को हरै और हृद्रोगको भी हरैहै ॥ शृंग्यादिलेह ॥ शुंठि धमासा, काकड़ासिंगी, मुनक्का, कचूर, मिश्री इन्होंको पीसि तेल में मिलाय चाटनेसे दारुण बातकी खांसीको हरै ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल, शुंठि इन्होंका काढ़ाकरि पीनेसे हुचकीको व खांसीको हरैहै और इनोंहीकी यवागू दीपनी है और कामदेवको पैदा करैहै और बायुकेरोगोंकोहरैहै ॥ पंचमूलकाढ़ा ॥ शालिपर्णी, पृष्ठिपर्णी, दोनोंकटैली, गोखुरूइन्होंकेकाढ़ामें पिपलीकाचूर्णमिलायपीनेसे बायुकीखांसी जावै और इसपररससंयुक्त भोजनकरावै॥ कर्कटकरस॥काकड़ासिंगी के रसको घृतमेंभूनि शुंठि संयुक्तकरि खानेसे बातकी खांसीजावै अथवा शिंगीमछलीको घृतमेंभूनि शुंठिमिलाय खानेसे बायुकीखांसी जावै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण॥ शुंठि, धमासा, दाख, कचूर, जवासा इन्होंकेचूर्णमें तेलमिलाय चाटनेसे बायुकीखांसीजावै॥ पित्तकेकासकालक्षण ॥ हिया में दाहको ज्वरहो और मुखमें शोषहो ज्यादहप्यासलगै और कडुआ मुखरहै और पीला व कडुआ वमनकरै और पीला शरीरहो जाय और सब अङ्गोंमें आगसीलगीरहै येलक्षण पित्तकीखांसीकेहैं॥ सिंहास्यादिकाढ़ा ॥ बासा, गिलोय, कटैली इन्होंकेकाढ़ामें शहदमिलाय पीनेसे पित्तकी खांसीको व कफकी खांसीको व श्वासको व ज्वरको हरै॥ बलादिकाढ़ा ॥ बलिया, दोनों कटैली, दाख, बासा इन्होंकेकाढ़ा में खांड़ शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी खांसीजावै॥ शठ्यादिकाढ़ा॥ कचूर, बाला, कटैली, शुंठि इन्होंके काढ़ामें घृत मिलाय पीनेसे पित्तकी खांसी जावै ॥ शरादिकाढ़ा ॥ शर, ईख, डाभ, कसइ, साठीचावल, पिपली, दाख इन्होंको दूधमें काढ़ाकरि पीनेसे पित्तकीखांसी जावै और इस काढ़ामें शहद खांड़भी मिलावै ॥ त्वक्क्षीरलेह ॥ तवाखीर, पिपली, धानकीखील, दाख, नागरमोथा, खांड़, घृत, शहद इन्होंको मिलाय चटनीकरि चाटनेसे पित्तकी खांसीजावै ॥ कंटकार्यादिकाढ़ा ॥ दोनों कटैली, दाख, बासा, कचूर, बाला, शुंठि, पिपली इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद मिलाय पीने से पित्तकी खांसी जावै॥ पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ पिपली, तवराज, बंशलोचन ये सब बराबर भाग लेइ शहद घृत मिलाय चाटने से पित्तकी खांसी जावै ॥ मधुकादि

चूर्ण ॥ मुलहठी,पिपलामूल,दूब,दाख, पिपली ये समान भाग लेइ घृत शहद मिलाय चाटनेसे पित्तकी खांसी जावे॥ अर्धावर्तितकाढा॥ सेरका आधासेररहा पानीमें धानकीखील,पिपली, शहद,घृतमिलाय पीनेसे पित्तकी खांसी जावे ॥ मातुलिंगादिलेह ॥ बिजौराकारस,हिंग त्रिफला इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद घृत मिलाय पीने से पित्तकी खांसीको हरै ॥ खर्जूरादिलेह ॥ खजूर,पिपली,दाख, मिश्री, धान की खील इन्होंको बराबर भागलेइ शहद घृत मिलाय चाटने से पित्त की खांसीको हरै ॥ द्राक्षामलादिलेह ॥ दाख,आंवला,खजूर, पिपली मिरच इन्होंके चूर्णमें घृत,शहद मिलाय खाने से पित्त की खांसी जावै ॥ क्षीरामलकघृत ॥ भैंसकादूध,बकरी का दूध, भेड़का दूध, गौ कादूध,आंवलाकारस येसब बराबर भागलेइ घृत ६४ तोले मिलाय अच्छी युक्तिसे घृतको पकाय खानेसे पित्तकी खांसीजावै॥ रसराज॥ तांबाकीभस्म, अभ्रक भस्म,कांत भस्म इन्हों को बराबर भाग लेइ पीछे कासिवदारसमें खरलकरि पीछे शतावरिके रसमें खरल करि पीछे हातगाबुंटीके रसमें खरलकरि पीछे अम्लबेतसके रसमें खर-लकरि पीछे मदिरा में खरलकरि इसको २ माशे खाने से पित्त की खांसीजावै। इसमें संशय नहींहै ॥ लोकेश्वररस ॥ लोकेश्वर रस,पि-पली,शहद इन्होंको खानेसे दारुणभी पित्तकी खांसी नाशको प्राप्त हो इसमें संशय नहीं है यह धन्वंतरिका मत है ॥ कफके कासका लक्षण ॥ कफसे मुख लिपटा रहै और मथवायहो और भोजन में अ-रुचिहो शरीर भारी कंठमें खुजली और कफकी गांठे थूकै ये लक्षण कफकी खांसीके हैं॥ चिकित्सा ॥ कफकी खांसीमें प्रथम बमन करावे पीछे लंघन कराय पीछे औषधोंसे बात रहित प्रकृतिको करै और कडुआ,तिक्त ऐसा यूषदेवै ॥ नवांगयूष ॥मूंग, आमला, यव, अनार बेर,सूकामूला,शुंठि,पिपली,कुलथी इन्होंका यूषबनाय खाने से कफ की खांसीजावे ॥ पिप्पल्यादिकाढा ॥ पिपली, कायफल,शुंठि,काकड़ा-सिंगी,भारंगी,मिरच,अजमान, कटैली, निर्गुण्डी, अजमोद, चीता बासा इन्होंके काढ़ा में पिपली के चूर्णको मिलाय पीने से कफकी खांसीजावै॥ पित्तकफकासपर ॥ बासा के रसमें शहद मिलाय पीने

से कफकी खांसी जावै अथवा तालीसादि चूर्ण के खाने से कफ की खांसी जावै अथवा कचूर, अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी कांकड़ाकेझाड़,हड़, अदरख, शुंठि ये समान भाग लेइ पीछे हींग सेंधानोन, तक्रमें मिलाय चूर्ण युतकरि बारम्बार पीने से कफकी खांसी जावै ॥ बिभीतकधारण ॥ बहेड़ाके दलके चूर्णको घृतमें मलि ऊपर पत्ते बांधि गौका गोबर लपेटि अग्नि में पकाय पीछे मुखमें लेनेसे कफकी खांसी जावै ॥ भद्रमुस्तादिचूर्ण ॥ नागरमोथा, पिपली ये समान भाग ले चूर्ण करि शहद में मिलाय खानेसे जल्दी कफकी खांसी जावै ॥ पथ्यादिचूर्ण ॥ हड़, शुंठि, पिपली,नागरमोथा, देवदारु इन्होंको बराबर भाग लेय शहद में मिलाय खाने से कफकी खांसी जावै ॥ चित्रकादिचूर्ण ॥चीता, पिपलामूल,पिपली, गजपिपली इन्हों को बराबर भागलेय चूर्णकरि शहदमें मिलाय खानेसेकफकीखांसी जावै ॥ शिलादिलेह ॥ मनशिल,शुंठि, मिरच,पिपली,हड़, हिंग,वाय-बिड़ंग, सेंधानोन ये सब बराबर भागलेय शहद घृतमें चटनीबनाय चाटनेसे श्वासकोव हुचकीकोवखांसीकोहरै॥व्योषादिघृत॥शुंठि,मिरच पिपली,अजमोद,चीता,जीरा,वच,चाब इन्होंके कल्कमें घृतको सिद्ध करिबासाकारसशहदमेंमिलाय खानेसेकफकीखांसीकोवश्वासकोहरै कटुत्रयादिचूर्ण ॥ शुंठि,मिरच, पिपली, चीता, चव्यक, देवदारु,रासना बायबिड़ंग,हड़,बहेड़ा, आंवला इन्होंके चूर्णमें खांड़ामिलाय खानेंसे कफकीखांसीकोहरैदृष्टान्त जैसेविष्णुकीगदादैत्योंकोनाशैतैसे॥ बोल बद्धरस ॥पाराभस्म,बचनाग ये बराबरभागलेय और बोल,हरताल पाढ़ा,काकड़ाकेझाड़,सोनामाखी,हल्दी, कटैली, जवाखार,कलहारी जीरा,सेंधानोन,मुलहठी इन्होंके चूर्णको अदरखके रसमें७दिनतक खरलकराय छायामेंसुखाय पीछे चीताकेरसमें७दिनतकभावनादेइ गोली बेर समानकराय खावै यह बोलबद्धरस कफकी खांसीको व श्वासको व पाण्डुकोहरै॥ दन्तीधूम॥ जमालगोटाकी जड़के धुवांसे किंबा निर्गुण्डीकेधुवांकेपीने से कफकीखांसीकोहरै इसमेंसंशयनहीं उरःक्षतकासनिदान ॥ बहुतस्त्रीसंगकरनेसों मार्गमें चलनेसों ज्यादह भारउठानेसों युद्धकरनेसों घोड़ाहाथीकेनिग्रहकरनेसों रूखाखानेसों

वायु हियेमेंजाय खांसना प्रकटकरै प्रथम सूखाखांसै पीछे लोहूथूकै कंठघणादूखै शूलचलै सन्धिसन्धिमें पीड़ाचलै ज्वरहोय श्वासप्यास होय स्वरघोंघोंबोलै और कबूतरकीभांति बोलवाकरै येक्षतकीखांसी के लक्षणहैं ॥ क्षयकासनिदान ॥ कुपथ्य और बिषम भोजनकरै बहुत मैथुनकरै और मलमूत्र रोकै बहुतसोवै तबमनुष्यके मन्दाग्निहोय बात पित्त कफ तीनोंको कोपै तब क्षयीरोग की खांसीको पैदा करै तब वह खांसी शरीरको क्षीणकरै और ज्वर दाह मेह इन्होंको करै तब वह प्राणों को नाश करै सूखा खांसै दुबला होताजाय और रुधिर मांस शरीरका सूखजाय लोहू राद थूकै तब असाध्य जानिये यह खांसी सम्पूर्ण लिंगों सहित असाध्य होयहै और यह क्षयीकी खांसी नवीन हो और बलवान् के शरीर में उपजै तो जाप्य है व साध्य है और पुरानी असाध्य है और नवोत्पन्न क्षय कास रोगी को अच्छा वैद्य अच्छा टहलुआ द्रव्य मिलै तबभी कोइक साध्य जानो और बूढ़े मनुष्यों की खांसी सब जाप्य होय है और बात पित्त कफ की खांसी साध्य होय है और जाप्य खांसी को पथ्यों से जीतै ॥ चिकित्साप्रक्रिया ॥ क्षत की खांसी को पाचन, पौष्टिक, पित्त कासको हरनेवाले व मीठे औषधोंसे जीतै अथवा क्षत खांसीवाला ईख, कसईबीज़, कमल, चन्दन इन्होंकी यवागूबनाय शहद मिलाय पीनेसे क्षतसन्धानहोय ॥ इक्षुआदिलेह ॥ ईखकारस, छोटीकसई, कमल बिस, कमल, सफ़ेदचन्दन, मुलहठी, पिपली, दाख, लाख, काकड़ाशिंगी, शतावरि ये समान भाग लेय और बंशलोचन २ भागलेय और सबोंसे चौगुनी मिश्री मिलाय शहद घृतमें चटनीकरि चाटने से क्षतकी खांसी जावै ॥ मंजिष्ठादिचूर्ण ॥ मजीठ, मूर्बा, तगर, चीता पाढ़ा, पिपली, हल्दी इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय चाटनेसे अथवा ईखकेरसमें घृतमिलाय पकायपीनेसे क्षतकी खांसीजावै ॥क्षुद्रावलेह॥ कटेलीकापंचांग, पिपली, पिपलामूल, ऊंगाके बीज, जीरा, सेंधानोन इन्होंको पीसि शहदमें चटनीकरि चाटनेसे सबतरहकी खांसी को व श्वासको व छातीके क्षतसे उपजी खांसीको व कफकी छर्दिको व लोहूकी छर्दिकोहरै ॥ तारकेश्वररस ॥ पारा १ भाग चांदीका भस्म

पारा के चौथाई भाग मैनशिल व सोनामाखी ये पारासे चौगुनेलेय पीछे बासा व ईख इन्होंके रसमें २ पहरतक खरलकरि बालुकायंत्र में २ पहरतक पकाय पीछे चूर्णकरि २ रत्तीभरखानेसे क्षतकी खांसी को निश्चयहरै इसपर अनुपान अनार, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली इन्होंके बराबर गुड़मिलाय १ तोलाभर खावै यह तारकेश्वररसहै॥ सूर्य्यरस ॥ पारा १ भाग गन्धक १ भाग सोनामाखी ३ भाग हरताल ५ भाग अभ्रकभस्म १ भाग वच १ तोला कूट १ तोला हल्दी १ तोला चीता १ तोला सुहागा १ तोला सेंधानोन १ तोला वचनागबिष १ तोला पाढ़ा १ तोला कलहारी १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला इन्होंको भंगरा के रस में १ दिन खरल करि पीछे १ माशाभर इस सूर्य्य रसके खानेसे हुचकी को व स्वरभंगको व खांसी को हरै अथवा ८ रत्ती रस पर्पटी को खावै ऊपर रात्रिमें गोखुरू, शुंठि, बकरीके दूधमें पानीमिलाय दूधमात्र गरम करनेमें रहै तब पिपली के चूर्णको मिलाय पीवै ॥ पिप्पल्यादि लेह ॥ पिपली, पद्माख, लाख, पकीहुई बड़ी कटैलीके फल इन्होंको पीसि घृत शहदमें चटनी बनाय चाटनेसे क्षयकीखांसीकोहरै ॥ कुलथीगुड़ ॥ कुलथी ४०० तोला दशमूल ४०० तोला भारंगी ४०० तोला लेय १६०० तोला पानीमें काढ़ा करि चौथाई भाग रक्खै पीछे गुड़ २०० तोला मिलाय पाकबनाय शीतल होनेपर वंशलोचन २४ तोला पिपली ८ तोला मिलाय शहद १६ तोलामिलाय बरतन में घालिधरै पीछे अग्निके बलकोदेखि खानेसे जल्दी रोगोंकोहरै और विशेषकरि राजयक्ष्माको व पित्तकी खांसीको व श्वासको व अजीर्णको व जीर्णज्वरको व पाण्डुको व हृदयरोगको व कफको व वायुको हरै और उपद्रवोंकोहरै यह कुलथीगुड़है ॥ बासाकूष्मांडावलेह ॥ कोहला के टुकड़े २०० तोला अग्निसे सिझाये हुये लेय घृत ६४ तोला मिलाय पकाय पीछे बासाके काढ़ा २५६ तोले भरमें कोहला के टुकड़ोंको मिलाय पकाय पीछे बंशलोचन १ तोला आंवला १ तोला नागरमोथा १ तोला भारंगी १ तोला तज १ तोला तमालपत्र १ तोला छोटी इलायची १ तोला बड़ी इलायची ४ तोला अतीस ४

तोला धनियां ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली १६ तोला शहद ३२ तोला मिलाय खानेसे खांसीको व श्वासको व क्षयीको व हुचकीको व रक्तपित्तको व हलीमकको व हृदयरोगको व अम्लपित्तको व पीनसको हरै ॥ ककुभलेह ॥ अर्जुनवृक्षकी छालको महीन पीसि पीछे वासाके रसमें घनीसे घनी भावनादेय पीछे घृत,शहद,मिश्री इन्हों को मिलाय चटनी करि चाटनेसे क्षयीकी खांसीको व पित्तको हरै ॥ पिप्पल्यादिघृत ॥ पिपली, गुड़, बकरीका दूध इन्होंमें घृतको सिद्ध करि खानेसे क्षयीकी खांसीवालेकी जठराग्निको दीपनकरै ॥ पिप्पल्यादिलेह ॥ पिपली, मुलहठी इन्होंके काढ़ामें मिश्री मिलाय गौका दूध ६४ तोला घृत ६४ तोला यवकी पीठी ८ तोला गेहूंकी पीठी ८ तोला मुनक्का दाखका चूर्ण ८ तोला आमलाकारस ८ तोला सिरसमका तेल ८ तोला इन्होंको कोमल अग्निसेपकाय घृत शहद में मिलाय चाटनेसे श्वासको व खांसीको व क्षयीको व हृद्रोगको हरै और वृद्ध अल्पवीर्य्यवालों को हितकारक है इसमें संशय नहीं ॥ स्वयमग्निरस ॥ शोधा पारा १ भाग गंधक २ भाग इन्हों को खरलमें कजली करै पीछे दोनों के समान पोलाद का चूर्ण मिलाय कुवारपट्ठा के रसमें २ पहरतक खरलकरि पीछे गोला बनाय तांवाके पात्रमें घालि अरण्डके पत्तों से लपेटि ४ घड़ीतक राखै संपुटमें पीछे गरम होनेपर चावल अन्नके कोठा में गाड़ि २ दिनतक राखैपीछे महीनपीसि कपड़ा माहँकेछानै पीछे शुंठि, मिरच, पीपल त्रिफला, इलायची, जायफल, लवंग इन्होंका चूर्ण द्रव्यसे आठगुना मिलाय और शहदमें मिलाय ८ माशेभर रोज़ खानेसे यह स्वयमग्नि रस क्षयीकी खांसीको हरैहै अथवा गडूंभाकी जड़, भांग पिपली, तिल इन्होंके चूर्णको ४ माशे भर खाने से क्षय की खांसी जावै ॥ सन्निपातकास ॥ जो सन्निपातकी दारुण खांसी होतो सन्निपातमें हितकारक उपचार करै ॥ अमृतादिकाढ़ा ॥ गिलोय, शुंठि फंजी, कटैली, शालिपर्णी इन्होंके काढ़ामें पिपली के चूर्णको मिलाय पीनेसे कास को व श्वास को हरै ॥ भारंग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी, शुंठि कटैली, कुलथी, मूला इन्होंके काढ़ामें पिपली का चूर्ण मिलायपीने

से कासको व श्वासकोहरै ॥ स्वरसादियोग ॥ अदरखके रसमें शहद मिलाय पीनेसे खांसीको, श्वासको, कफको, खेहरको, पीनसको हरै ॥ मरिच्यादिचूर्ण ॥ मिरचके चूर्णको खांड़ शहद में मिलाय खाने से श्वास खांसीजावै ॥ कुलित्थादिकाढा ॥ कुलथी, कटेली, भारंगी, शुंठि रास्न इन्होंका काढा पीनेसे खांसीको, श्वासको, ज्वरको हरै ॥ पुष्करादि काढ़ा ॥ पुष्करमूल, कायफल, भारंगी, शुंठि, पिपली इन्हों का काढ़ा कफाधिक श्वासको, खांसीको, हृद्रोगको हरै ॥ कुनट्यादिलेह ॥ मैनशिल, सेंधानोन, शुंठि, मिरच, पिपली, बायबिड़ंग, अमरु, हिंग इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाय चाटनेसे खांसीको, श्वासको, हुचकीको नाशै ॥ बर्हियादादिलेह ॥ पीलेसहोंजना के चूर्णको शहद घृतमें मिलाय चाटनेसे अथवा मरीचके चूर्णको घृत शहद में मिलाय चाटनेसे श्वासको खांसीको हरै ॥ भारंग्यादि चूर्ण ॥ भारंगी शुंठि, पिपली इन्होंके चूर्णको गुड़में मिलाय खानेसे अथवा शुंठि मिरच, पीपल इन्होंके चूर्णको शहद घृतमें मिलाय चाटनेसे श्वास खांसीजावै ॥ घनादिगुटी ॥ नागरमोथा, शुंठि, हड़ इन्होंका चूर्णकरि गुड़में मिलाय गोलीबांधै पीछे ३ दिनतक मुखमें रखने से श्वास को खांसीको हरै दृष्टांत जैसे स्त्री संगमें सोने से जाड़ाको हरै तैसे निर्गुंड्यादिघृत ॥ निर्गुण्डीकारस १ भाग रससे चौगुना घृतमिलाय पकाय घृतको बाकी रक्खै पीछे चवक, चीता, बायबिड़ंग, दालचीनी इलायची, तमालपत्र, नागकेशर, कटुकी, कूट इन्होंकाचूर्ण अष्टमांश मिलाय पकावै पीछे काले शामकीये चावल इन्होंके यवागू के संग घृतको खानेसे खांसीको श्वासको हरै ॥ धूमपान ॥ ऊंगा के पंचांग को नालिकाके रसमें पीसि मैनशिल हरताल मिलाय घोटि कपड़ा पर लेपकरै पीछे सुखाय चिलममेंधरि अग्निके संग धुवांको पीनेसे ७ दिनतक खांसीको श्वासको हरै ॥ बारुणीपत्रधूम ॥ गंडूभा के पत्ते सांठीचावल, हरताल इन्होंको पीसि बेरके प्रमाण गोली बनाय पीछे चावलोंके चूनकी चिलम बनाय ऊपर आगधरि नीचे गोली धरि अरंडीकी नलीसे धुवांकोपीवै भोजनकरै पीछे और बादमें तांबूल खाइ और दूध चावलका पथ्यकरै यह सिद्धयोग जल्दीखांसी

को हरै ॥ हेमगर्भपोटली ॥ पारा ४ भाग सोनाकाचूरा ४ भाग लेइ दोनों को एकजगह पीसै जबतक मिलै तबतक पीछे गंधक १२ भाग मिलाय पीसि पीछे मोती १६ भाग मिलाय पीसै पीछे शंख २४ भाग सुहागा १ भाग इन्होंको पके हुये नींबू के रस में खरल करि गोला बनाय मूषा संपुटमें घालि कपड़ माटी करि १ हाथ मात्र काढ़ामें गौके गोबरके उपलोंमें गजपुटमें पकाय शीतल होने पर काढ़ि महीन पीसि ४ रत्ती रसको गौके घृत में मिलाय और २९ मिरचोंके चूर्णसहित चांदीके पात्रमें किंवा चीनीके पात्रमें किंवा कांचके पात्रमें घालि मिलाय चाटने से खांसी को व श्वास को व क्षयीको व बातविकारको व कफको व संग्रहणीको व अतीसारको यह हेमगर्भ पोटली हरै और इसपर पथ्य लोकनाथ के समान है॥ कासविधूननरस॥ पारा १ भाग गंधक २ भाग जवाखार ३ भाग कालानोन ४ भाग मिरच ५ भाग इन्होंको अदरख के रसमें खरल करि खानेसे ५ प्रकारकी खांसी को व ५ प्रकारके श्वासको हरै॥ ताम्रपर्पटी ॥ तांबाकी भस्म ३ भाग पारा ३ भाग गंधक ३ भाग वचनागविष १ भाग इन्होंकी कज्जली करिगौके घृतमें कल्ककरि लोहाके पात्रमें पकाय आक के पत्तोंपर उतारि रक्खै पीछे २ रत्ती वा ३ रत्ती पिपली शहदकेसंग २१ दिनतक खानेसे राजरोग कोहरै और इसको अदरखके अर्कके संग खानेसे सन्निपात को हरै। और त्रिफला खांड़के संग इसको खानेसे पांडुको हरै और अरंडके तेल के संग इसको खानेसे सबतरहके शूलजावैं। और इसको कुवारप-ट्ठाके रसके संग खानेसे बातपित्त रोग जावैं। और इसको बावची के रसके संग खानेसे सबदाद रोग जावैं। और इसको त्रिफला शहदके संग खानेसे सबप्रमेह जावैं। और इसको खैर के काढ़ाके संग खानेसे १८ प्रकारके कुष्ठको नाशै यह मंथान भैरवने संसार के कल्याण के वास्ते कहा है॥ कंटकार्यादिचूर्ण॥ कटैली, पिपली इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय खानेसे खांसीजावै ॥ लवंगादिचूर्ण॥ लवंग जायफल पिपली ये १तोला बहेड़ा ३तोला मिरच २तोला शुंठि १६ तोला इन सबोंके समान खांड़ मिलाय खानेसे खांसीको

व श्वास को व ज्वरको व गुल्मको व अग्निमंद को व संग्रहणी को हरै॥ बिभीतकादिचूर्ण॥ बहेड़ा २ भाग पिपली १ भाग इन्होंका चूर्ण करि शहद में मिलाय खानेसे खांसी को हरै॥ पंचकोलादिचूर्ण॥ पिपली, पिपलामूल, शुंठि, बहेड़ा इन्होंको शहदमें मिलाय खानेसे सन्निपात की खांसी को हरैहै॥ बदरी कल्क॥ बड़बेरी के पत्तों के कल्कको घृत में भूनि सेंधानोन मिलाय खाने से स्वरभंग को व श्वासको व खांसीकोहरै॥ कर्पूरादिचूर्ण॥ कपूर, बाला, कंकोल, जायफल, जावित्री इन्होंको समान भागलेय लवंग १ भाग नागकेशर २ भाग मरिच्च ३ भाग पिपली ४ भाग शुंठि ५ भाग लेय चूर्णकरि मिश्री में मिलाय खानेसे रुचिको उपजावे औरक्षयीको व स्वरभंग को व श्वास को व खांसी को व छर्दिको व तृषा को हरै है॥ त्रिकटुकादिचूर्ण॥ शुंठि, मिरच, पीपल, गिलोय, चीता, हड़, बहेड़ा आंवला, मरिच, रास्ना इन्होंके चूर्णमें खांड़ मिलाय खानेसे खांसी कोहरै दृष्टांत जैसे अग्नि बनकोनाशै तैसे॥ देवदार्वादिचूर्ण॥ देवदारु बलिया, रासना, हड़, बहेड़ा, आंवला, शुंठि, मरिच, पिपली, पद्माख बायबिडंग, इन्होंके चूर्णमें खांड़ मिलाय खानेसे सबतरहकी खांसी जावै॥ द्विक्षारादि॥ जवाखार, सज्जीखार, पंचमूल, कालानोन, सांभरनोन, खारीनोन, मणयारीनोन, सेंधानोन, कचूर, शुंठि, कालाबाला इन्होंको महीन पीसि कपड़ामें छानि घृतमें मिलाय खानेसे सब प्रकार की खांसीको हरै॥ ग्रंथिकादि॥ पिपलामूल, पिपली, बहेड़ा शुंठि इन्हों के चूर्णमें शहद मिलाय खानेसे अनेकप्रकारकी खांसी को हरैहै॥ कटुत्रिकादि॥ शुंठि, मिरच, पिपली इन्हों के चूर्णमें गुड़ घृत मिलाय खाने से खांसी को हरैहै॥ हरीतक्यादिगुटी॥ हड़, पीपल, शुंठि, मरिच्च इन्हों के चूर्ण में गुड़ मिलाय गोली बांधि खाने से कास रोग जावै और अग्निदीपन होय॥ त्रिजातादि॥ दालचीनी तमालपत्र, इलायची ये आधा तोला पिपली २ तोला मिश्री ४ तोला दाख ४ तोला मुलहठी ४ तोला खजूर ४ तोला इन्हों को पीसि शहदमें गोली बनाय खानेसे पुष्टिकरै और रक्तपित्तको व खांसीको व श्वासको व अरुचिको व छर्दिको व मूर्च्छाको व हुचकीको व मद

को व श्रमको व क्षतक्षयको व स्वरभ्रंशको व प्लीहाको व शोष को व आढय बातको व रक्तकी छर्दिको व हृद्रोग को व पसलीके शूल को हरै ॥ मरिच्यादिगुटी ॥ मिरच १ तोला पिपली १ तोला यवाखार आधा तोला अनारकीछाल २ तोला इन्होंको महीन पीसि गुड़ ८ तोलामिलाय ४ माशाकी गोली बनाय मुखमें रखनेसे सबप्रकार की खांसी जावै ॥ लवंगादिगुटी ॥ लवंग, मिरच, बहेड़ाकी छाल ये समान भागलेय और इन सबों के समान खैरसार मिलाय पीछे बबूलके काढ़ामें खरलकरि मुखमें रक्खै ८ घड़ीके बीचमें खांसीको हरै ॥ खदिरादिगुटी ॥ खैर २ तोला पुष्करमूल २ तोला काकड़ाशिंगी २ तोला कायफल २ तोला भारंगी २ तोला हड़ २ तोला लवंग २ तोला शुंठि२ तोला मिरच २ तोला पिपली २ तोला अतीस २ तोला अजमान २ तोला धमासा २ तोला गिलोय २ तोला छोटीकटैली २ तोला बड़ी कटैली २ तोला बहेड़ा की छाल २ तोला इन्होंको महीनपीसि पीछे सबोंके समान खैरसार मिलाय पीछे इसको अनारकीछालके रसमें खरल करै पीछे कटैलीके रसमें भावना देइ पीछे खैरकी छालके रसमें भावना देय पीछे अदरखके अर्कमें भावनादेय पीछे बबूलकीछालके काढ़ामें भावनादेइ पीछे बासाकेरसमें ७ भावना देय गोलीबनाय खानेसे चिरकालके खांसी व श्वास को हरै ॥ धनंजय बटी ॥ अर्जुनवृक्ष,दालचीनी,तमालपत्र,इलायची, पिपलामूल,शुंठि मिरच, पीपल इन्हों के चूर्ण को अदरखके रस में भिगोय खाने से खांसी जावै॥ व्योषादिगुटी ॥शुंठि१तोला मिरच १तोला पीपल १ तोला अम्लवेतस १ तोला चवक १तोला तालीसपत्र १ तोला चीता १ तोलाजीरा १तोलाअमली १ तोला तज ४ माशातमालपत्र ४ माशा इलायची४माशा गुड़ २० तोलामिलाय गोलीएकतोलेकीबनायखाने से प्रभातमें यहसबप्रकारकेकासोंको व पीनसको व श्वासको व अरुचिको व स्वरभेदको हरै॥ पिप्पल्यादिगुटी ॥ पिपली, पुष्करमूल, हड़ शुंठि,कचूर,नागरमोथा इन्होंको बारीकपीसि गुड़मेंमिलाय गोली बनाय खानेसे श्वासको व खांसी को हरै और छींक आनेमें व गन्धके नाश में धुवां पीवै॥ अर्कमूलादिधूम॥ आककीजड़, मैनशिल येबराबर

भागले शुंठि, मिरच, पिपली ये आधाभाग लेय इन्हों का चूर्णकरि अग्निमें डालि धुवांकोपीवै ऊपर पानखावै अथवा दूधकोपीवै इस से ५ प्रकार की खांसी जावै ॥ मनःशिलादिधूम ॥ मैनशिल, मिरच जटामांसी, नागरमोथा, नींबपत्ती इन्होंके धुवांकोपीवै ऊपर गुड़का गरम शरबतपीवै यह ५ प्रकारकी खांसीकोहरै इसके समान और औषधनहींहै ॥ दूसराप्रकार ॥ बड़बेरीकीछालको मैनशिलकेकल्कमें लेपि धूपमें सुखाय चिलममें धरि धुवांको पीवै ऊपर दूधपीवै यह महाकासको हरै ॥ धत्तूरादिधूम ॥ धतूराकीजड़, शुंठि, मिरच, पीपल मैनशिल इन्होंको पीसि कपड़ापै लेपि वत्तीबनाय अग्निसे जलाय धुवांको पीने से ३ दिनतक खांसी जावै ॥ जातिपत्रादिधूम ॥ जावित्री मैनशिल, राल, गुग्गुल ये समान भागलेय पीछे इन्होंको बकरीके मूत्रमें पीसि चिलममें धरि धुवांको पीनेसे खांसी जावै ॥ जातिमूलादिधूम ॥ जाइजड़, जावित्री, मसूर, मैनशिल, गुग्गुल इन्होंकोपीसि बड़बेरीकीजड़को लेपकरि वत्तीबनाय अग्निमें जलाय धुवांकोपीने से खांसीको हरै ॥ हरिद्राधूम ॥ हल्दी, दारुहल्दी, मैनशिल इन्होंके धुवांकोपीनेसे अथवा रात्रिके अन्तमें पानीको पीनेसे खांसीजावै॥ विभीतकावलेह ॥ बकरीका मूत ४०० तोला बहेड़ाकीछाल ४०० तोला इन्होंको अग्निपर पकाय अवलेहकरि शहदमिलाय खानेसे खांसीको व श्वासकोहरै ॥ कंटकार्यवलेह ॥ कटैली ४०० तोला पानी २०४८ तोला इन्होंको पकाय चतुर्थांश काढा रक्खै पीछे धमासा ४ तोला गिलोय ४ तोला चबक ४ तोला चीता ४ तोला नागरमोथा ४ तोला काकड़ाशिंगी ४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४ तोला भारंगी ४ तोला रासना ४ तोला कचूर ४ तोला खांड ८० तोला घृत ३२ तोला लोह ३२ । तोला मिलाय पकाय शीतल होनेपर शहद ३२ तोला मिलाय बंशलोचन १६ तोला पिपली १६ तोला मिलाय अवलेह करि सुन्दर माटी के बरतन में घालि रक्खै पीछे इसको खाने से खांसी व हुचकी व अनेक प्रकारके श्वास रोगों को नाशकरै इसमें संशय नहींहै ऐसेजानो॥ अगस्त्यहरितक्यवलेह ॥ दशमूल ८ तोला कपास के बिनौलकीगिरी

८ तोला शंखाहोली ८ तोला कचूर ८ तोला बलिया ८ तोला गजपिपली ८ तोला ऊंगा ८ तोला पिपलामूल ८ तोला चीता ८ तोला भारंगी ८ तोला पुष्करमूल ८ तोला यव १०२४ तोला हड़ ४०० तोला पानी ५१२० तोला मिलाय पकावै पीछे हड़ बड़ी १०० मिलावै और गुड़ ४०० तोला घृत १६ तोला तेल १६ तोला पिपलीका चूर्ण १६ तोला मिलाय पकावै पीछे शीतलहोनेपर शहद १६ तोला मिलाय रक्खै पीछे २ हड़ रोज़ खाने से बलीपलित को व पांचप्रकारकी खांसी को व क्षयको व श्वासको व हुचकी को व विषमज्वरको व संग्रहणी को व बवासीरको व अरुचि को व खेहर को नाशकरै और बल, वर्ण, उमरकोबढ़ावै॥ व्याघ्रिआदिघृत॥ कटैली के रसमें रासना, कायफल, गोखुरू, शुंठि, मिरच, पीपल, घृत इन्होंको मिलाय सिद्धकरने से स्वरभंगको व पांचप्रकारकी खांसीको हरै॥ गुडूच्यादिघृत॥ गिलोय, बासा, कटैली इन्हों के कल्क में घृत को सिद्धकरि खानेसे पुराने ज्वरको व खांसीको व शूल को व प्लीहाको व मंदाग्निको व संग्रहणी को हरै॥ त्र्यूषणादि घृत॥ शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आंवला १ तोला दाख १ तोला काश्मरी १ तोला बासा १ तोला पाढ़ा १ तोला पाडला १ तोला देवदारु १ तोला नागरमोथा १ तोला बिनोलागीरी १ तोला चीता १ तोला कचूर १ तोला कटैली १ तोला भूमि आंवला १ तोला मेदा १ तोला कावली १ तोला शतावरि १ तोला गोखुरू १ तोला बिदारीकंद १ तोला घृत ६४ तोला दूध २५६ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से खांसीको व ज्वरको व गुल्म को व अरुचिको व प्लीहाको व मस्तकशूल व हृदयशूलको व पसली शूलको व कामलाको व बवासीरको व बाताष्ठीला को व क्षतक्षयको व क्षयीको हरै यह त्र्यूषण घृतहै और बहुत उत्तमहै॥ कंटकारि घृत॥ कटैलीके पंचांगकारस १०२४ तोला घृत ६४ तोला और बलिया शुंठि, मिरच, पीपल, बायविड़ंग, कचूर, अनार, कालानोन, जवाखार, शुंठि, आंवला, पुष्करमूल, लालसांठी, कटैली, हड़, अजमान चीता, दाख, चबक, सफ़ेदसांठी, धमासा, अमलबेतस, काकड़ासिंगी

भूमिआंवला, भारंगी, रासना, गोखुरू इन्हों का कल्क मिलाय घृत को सिद्धकरि खानेसे पांच प्रकारकी खांसीको व श्वासको व हुचकी को हरै॥ दूसरा प्रकार॥ कटैली ४०० तोले कूटि पानी २०४८ तोले मिलाय पकाय आधा बाक़ी रक्खै पीछे घृत ६४ तोला रासना १ तोला धमासा १ तोला पिपलामूल १ तोला पिपली १ तोला गजपिपली १ तोला चीता १ तोला कालानोन १ तोला जवाखार १ तोला पिपलामूल १ तोला इन्होंका कल्क मिलाइ घृतको सिद्धकरि खानेसे खांसीको व श्वासको व कफकीछर्दि को व हुचकीको व अरुचिको व खेहरको व पीनसकोहरै॥ भागोत्तरबटी॥ पारा १ भागगन्धक २ भाग पिपली ३ भाग हड़ ४ भागबहेड़ा ५ भाग बासा ५ भाग भारंगी ६ भाग इन्होंको जंबीरी नींबूके रसमें खरलकरै पीछे शहद मिलाय एक एक तोला की २८ गोली बनाइ १ गोली प्रभात में खाने से ऊपर कटैलीका काढ़ा पीवे पिपली १० काचूर्ण मिला यह खांसी को व श्वासकोहरै इसको ३ महीनेतक सेवै॥ पर्पटी॥ पारा १२ भाग लोहा १२ भागलेय इन्होंको कोमल अग्निपरपकाय पीछे गौकेगोबर के ऊपर केलाका पत्तारखि तिसपर द्रव्यको उतार घालि ऊपर केला पातदेय गोबरधरि पीड़नकरै पीछे इसको भारंगीके रसमें ७ भावना देइ पीछे शुंठिके काढ़ा में ७ भावनादेइ पीछे पुंडरीक वृक्षके रसमें ७ भावनादेइ पीछे अरणीके रसमें ७ भावनादेइ पीछे निर्गुंडीके रसमें ७ भावनादेइ पीछे शुंठि मिरच पीपल इन्होंके काढ़ामें ७ भावनादेइ पीछे वासाके रसमें ७ भावनादेइ पीछे कुवारपट्ठाके रसमें ७ भावना देइ पीछे अदरख के रसमें ७ भावनादेइ लघुपुटमें पकाइ वरतै यह अगन्ध खर्परसखाने से सब रोगोंको हरै और इस रसको २ माशे पानके संग खानेसे खांसीको व श्वासको हरै इसपर अनुपान तुलसी के रसमें पिपलीका चूर्ण मिलाइ पीवै अथवा गोमूत्रपीवै॥ कास श्वास विधूननरस॥ पारा १ भाग गन्धक २ भाग जवाखार ३ भाग कालानोन ४ भाग मरीच ५ भाग इन्होंको पारामें खरलकरि खाने से पांचप्रकारकी खांसीको व श्वासकोहरै॥ गुरुपंचमूलीकाढ़ा॥ पंचमूलकेकाढामें पिपलीका चूर्णमिलाइ पीनेसे खांसीको व श्वासकोहरै॥

वासादिकाढ़ा॥ वासा, हलदी, धनियां, गिलोय, भारंगी, पिपली, पुष्करमूल, कटैली इन्होंके काढ़ामें मिरचका चूर्ण मिलाय पीनेसे खांसी जावै॥ सिंहकीकषाय॥ कटैलीके काढ़ामें पिपलीका चूर्णमिलाय पीनेसे खांसीजावै॥ वृषादिकाढ़ा॥ वासाके काढ़ाको पीनेसे खांसी जावै दृष्टान्त जैसे पवन सर्प तैसे॥ आर्द्रकावलेह॥ अदरख २०० तोला गुड़ २०० तोला धनियां २ तोला अजमान २ तोला लोह २ तोला जीरा २ तोला दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला इलायची २ तोला कटुकी २ तोला इन्हों को पकाइ लेहकरि खानेसे खांसी को व बवासीरको व ज्वरको व पीनसको व सोजाको व गुल्म को व क्षयको हरै॥ व्याघ्रीहरीतक्यवलेह॥ कटैलीका पंचांग ४०० तोला हड़ ४०० तोला इन्होंका पानी २०४८ तोले में काढ़ाकरि चतुर्थांश रक्खै पीछे गुड़ ४०० तोला मिलाइ पकाइ अवलेहकरै पीछे शीतल होनेपर शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४तोला शहद २४ तोला दालचीनी १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची १ तोला नागकेशर १ तोला मिलाय खाने से बातको व पित्तको व कफको व द्विदोषको व सन्निपातको व क्षतकी खांसीको व क्षयी की खांसीको व उरःक्षतकहे छाती फटजानेको व पीनस को व एकादशरूप क्षयीकोहरै॥ कासदण्डनावलेह॥ बकरीका मूत ४०० तोला लेइ मन्दअग्निपर पकाइ गुड़कीपाल सरीखाकरि बहेड़ा का चूर्ण ८ तोला पिपली ४ तोला लोहभस्म ४ तोला कटैली के फलों का चूर्ण ८ तोला मिलावै इसकासकंडन अवलेह को खानेसे २ माशा किम्वा ४ माशा किम्वा १ तोला खावै अथवा शहद व केला के पानीके संगखावे यह असाध्य खांसीको हरै इसके समान पुरानी खांसीको व महाअसाध्य खांसी को हरनेवाला औषध नहीं है यह आत्रेय मुनिने कहाहै॥ हेमगर्भपोटली॥ शोधापारा ३ भाग लोह भस्म ३ भाग गन्धक १ भाग सोना आधाभाग मिलाइ ७ दिनतक निर्गुण्डी के रसमें खरलकरै पीछे धतूरा के रसमें खरलकरि गोला बनाइ कपड़ा में घालि पोटली बांधै पीछे माटी के बरतन में गन्धक को घालि तिसमें पोटलीधरि मुखबन्दकरि १ बिलस्तभरि

गढ़ाखोदि तिसमें पोटली सहित बरतनकोधरि १ अंगुलमाटीदेइ अंगुली मुद्रिका से अग्निको जलाइ १ पहरतक पीछे इस हेमगर्भ पोटली को अनुपानों के संग सब रोगोंमें देवै ॥ हेमगर्भ ॥ पारा ४ भाग सोना २ भाग तांबा की भस्म १ भाग मोती ११ भाग गन्धक १ भाग विद्रुम १ भाग इन्होंको खरल में पीसि गोलाबनाइ भूधर यंत्रमें कोमल अग्नि से पकाइ शीतल होनेपर काढ़ि गन्धक के संग खरल करावै ऐसे ६ बार गन्धक में खरलपुटदेइ षड्गुण गन्धक जारणकरै यह हेमगर्भरस त्रिलोकी में विख्यात है इसको खानेसे खांसीको व श्वासको व शूलको हरै और रोगोक्त अनुपानों के संग सबरोगोंको हरै ॥ दूसराप्रकार ॥ शोधापारा ४ तोला शोधा सोना १ तोला शोधागन्धक १ माशा इन्हों को मिलाइ चूर्णकरि कपड़ा में बांधि पोटलीकरै और पारा गन्धक पीसि दूसरी पोटली बांधै ये दोनों पोटली सकोरामें धरि दूसरे सकोरासे संपुटदेइ कपड़माटीदेइ भूधर यंत्रमें गजपुट में पकाइ शीतलहोनेपर काढ़िगन्धक के संग पीसि पुटदेइ ऐसे ७ बार पुटदेइ यह हेमगर्भरस खांसीको व श्वासको व शूलको हरै और रोगोक्त अनुपानों के संग सब रोगों कोहरै ॥ कासकेशरी ॥ सिंगरफ, मिरच, नागरमोथा, सुहागा, अतीस ये समान भागलेइ जंबीरी निंबूके रसमें खरलकरि मूंग के समान गोली बनाइ अदरख के रसके संग खाने से खांसी को व श्वासको हरै ॥ रसेंद्रबटी ॥ शोधापारा १ तोला गन्धक १ तोला अभ्रक १ तोला तांबा १ तोला हरताल १ तोला लोह १ तोला वचनागविष १ तोला मिरच १ तोला इन्होंका चूर्णकरिनिर्गुण्डी, भंगरा, कावली नीला भंगरा इन्होंके रसमें अलग अलग भावनादेइ मटर समान गोली बनाइ पीछे शिवजीको पूजनकरि और ब्राह्मणों को दानदेइ गोलीको खावै और अन्नजीर्ण होनेपर मांस रस दूध को पीवै यह महा असाध्य अम्लपित्त को व पांचप्रकार की खांसी को व दुर्जय श्वासको हरै ॥ नीलकंठरस ॥ पारा, गन्धक, लोह, वचनागविष चीता, तमालपत्र, दालचीनी, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, पिपलामूल नागकेशर, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पिपली, तांबा ये समानभाग लेइ

इन्होंसे दुगुणा गुड़ लेइ मिलाइ चनाके समान गोलीबनाइ खाने से खांसीको व श्वासको व गुल्मको व प्रमेहको व बिषमज्वरको व मूत्रकृच्छ्रको व मूढ़गर्भको व बातरोगको हरै यह नीलकंठरस महादेवनेकहाहै ॥ लोकनाथपोटली ॥ गन्धक, पारा इन्होंकी कजली करि जंबीरी नींबूके रसमें खरलकरि पीछे इसको तांबेके बरतन में नोन घालि तिसपर कज्जलिधरि मुखबन्दकरि कपड़ा माटी लगाइ अग्नि में शनैः २ पकाइ ८ पहरतक पीछे शीतल होनेपर काढ़ि कवड़ी की भस्म मिलाइ चीता के रसमें भावनादेइ पकाय काढ़ि वचनाग मिरच मिलाइ पीसि खानेसे लोकनाथ के समान यह दुर्बलताको व कृशताको व सूजन को व आमबातको व गुल्मको व शूलको व खांसीको व श्वासको व संग्रहणीको व बवासीरको व क्षयीको व पांडु रोगको व संतापको व मन्दाग्निको व अरुचिको हरैहै संशयनहींहै ॥ अमृतार्णवरस ॥ पारा, गंधक, लोहभस्म, सुहागा, रासना, बायबिड़ंग त्रिफला, देवदारु, शुंठि, मिरच, पीपल, गिलोय, पत्राख, शहद, बचनागविष ये समान भाग लेइ चूर्णकरि ३ रत्तीभर खानेसे सब प्रकार की खांसीको हरै ॥ अग्निरस ॥ पारा, गंधक, पिपली, हड़, बहेड़ा, बासा मुलहठी, गुड़इन्होंको बराबर भागलेइ बबूलके काढ़ा में २१ भावना देइ चूर्णकरि शहदमें मिलाय खानेसे यह अग्निरस खांसी को हरै ॥ कासकर्तरी ॥ लवंग १ भाग पिपली २ भाग हड़ ३ भाग बहेड़ा ४ भाग बासा ५ भाग भारंगी ६ भाग इन सबोंके समान खैरसारलेइ मिलाय बबूलके काढ़ामें २१ भावनादेइ पीछे शहदके संगखाने से यह कासकर्तरी रस खांसीको व श्वासको व क्षयको व हुचकीको हरै इसमें संशय नहींहै ॥ कफाग्निबटी ॥ कपूर आधातोला कस्तूरी ६ माशा लवंग २ तोला मिरच आधातोला पिपली ६ माशा बहेड़ा ६ माशा कोलिंजन ६ माशा अनारकीछाल ४ तोला खैरसार ४ तोला इन्होंको पीसि मूंगके समान गोली बनाय मुखमें रखने से कफको हरै ॥ कासमेंपथ्य ॥ चावल, साठीचावल, गेहूं, उड़द, मूंग, कुलथी, बकरीकादूध व घृत, बथुआ, बैंगन, कोमलमूली, कटैली, जीवंती, बिजौरा, मुनक्कादाख, लसून, धानकीखील, शुंठि, मिरच, पीपल, गरमजल

शहद ये सब खांसीमें पथ्यहैं॥ अपथ्यम्॥ मैथुन, चिकना मीठा पदार्थ दिनमें शयन, दूध, दही, पिठी, दूधकी व चावलकी खीर, धूमा ये कासरोगमें अपथ्य हैं॥

इतिबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांकासप्रकरणम्॥

हुचकी कर्मविपाक॥ जोब्राह्मण स्नान, होम, जप इन्हों के बिना करे भोजनकरै उसके हुचकीरोग होवे॥ प्रायश्चित्त॥ वह ३ कृच्छ्र चान्द्रायणकरि रोग को नाशै॥ हिक्का निदान॥ गरम व भारी रूखी सलोनी व अभिष्यंदी पदार्थोंके खानेसे और शीतलवस्तुके पीनेसे व शीतल जलसे न्हानेसे व मुखमें रजको जानेसे व बैठक करने से व बोझा के उठाने से व मार्गके चलने से व मलमूत्रके वेगको रोकनेसे व भूखके रहनेसे हुचकी, खांसी, श्वास पैदाहोयहैं॥ संप्राप्ति॥ वायुहै सोदोनोंपसवाड़ा और आंतोंको दुःखदेइ मुखमें होकरि बड़े शब्दको लिये प्राणको नाशकरनेवाला मुँहमें सूं भयंकर शब्द को काढ़ैहै तिसे हुचकीकहतेहैं॥ हुचकीकेभेद॥ अन्नजा १ यमला २ क्षुद्रा ३ गंभीरा ४ महती ५ ऐसे पांचप्रकारकीहै॥ पूर्वरूप॥ कंठ व हिया भारीहोय और मुंह कसायला होइ कूष में अफारा होइ तब जानिये इसके हुचकी होगी॥ सामान्यचिकित्सा॥ जो कफवात को हरनेवाला व गरम व वायुका अनुलोमन करनेवाला ऐसा औषध व अन्नपान हुचकीमें व श्वासमें हितहै और हुचकी व श्वासवाले के शरीरमें तेलमलि स्वेदनकर्मकरै और यही रोगी बलवानहो तो बमन व रेचन करावे और दुर्बलको हितकारक द्रव्यदेइ शांतकरै और प्राणोंके रोकने से व डरावनेसे व आश्चर्यकी वस्तु दिखावने से व शीतलपानी के सेकसे व नानाप्रकारकी कथाको सुनने से व मनको दुःखदेनेवाली बातोंको सुनाने से हुचकीबंदहोवै॥ त्याज्यहिक्का॥ वायुसे पांचप्रकार हुचकीहोय हैं उन्होंमें जो असाध्य हों वह कहतेहैं गंभीरा महती ऐसे जानो। और कास प्रकरण में कहे सब

औषध हुचकी में भी बरतै अथवा क्षयी रोग में व बातकास में कहीं औषध हुचकी व श्वास में बरतै ॥ अन्नजाहिक्कानिदान ॥ अन्न घनोंखाय और पानी बहुत पीवै सो बायुकोपै तब वह ऊर्ध्वगामी होइ मनुष्यके अन्नजा हुचकीको पैदाकरै ॥ यूष ॥ कटेलीके पत्तों का किंवा सहोंजनकी जड़का किंवा सूखीमूली का मण्ड देने से हुचकी व श्वासजावै और बैंगनके मांड़में दही, शुंठि, मिरच, पिपली, घृत मिलाय पीनेसे हुचकीजावै ॥ कुलित्थादिकाढ़ा ॥ कुलथी, शुंठि, कटेली बासा इन्होंके काढ़ामें पुष्करमूल का चूर्ण मिलाय पीने से हुचकी श्वासजावै ॥ हरिद्रादिलेह ॥ हल्दी, मिरच, दाख, गुड़, रासना, पिपली कचूर इन्होंको तेलमें मिलाय चाटनेसे श्वासको व हुचकीकोहरै ॥ अभयादिकल्क ॥ हड़, शुंठि इन्होंकाकल्क किंवा यवोंकाकूस, मरीच इन्हों का कल्क इन्होंको गरम पानी के संग पीने से हुचकी को व श्वासको हरै ॥ चंद्रसूरकाढ़ा ॥ नागरमोथा के बीजको अष्टगुनापानी में भिगोइ वस्त्रमें घालि छानै इस पानीको ४ तोलेभर पीनेसे बार-म्वार हुचकी जावै और कटुकीके चूर्ण को शहदमें मिलाय खाने से हुचकी जावै ॥ यमलाहिक्कानिदान ॥ देरदेर में हिचकीचलै और देर देर में शिर कांधाकम्पै तिसको यमला हिचकी कहै हैं ॥ दशमूली यवागू ॥ दशमूल, कचूर, रास्ना, पिपली, शुंठि, पुष्करमूल, काकड़ासिं-गी, भूमिआमला, भारंगी, गिलोय, नागरमोथा इन्हों में सिद्धकरि यवागूको पीने से खांसी, हुचकी, श्वास पसलीशूल, हृद्ग्रहकोहरै अथवाहिंग, कालानोन, जीरा, बिड़नोन, पुष्करमूल, चीता, काकड़ा-सिंगी इन्होंकी यवागूबनाय पीनेसे हिचकी श्वासजावै ॥ क्षुद्राहिकाल-क्षण ॥ और कंठ हियाकी संधिसूं हिचकी देरदेरमें मंदमंदचलै तिसे क्षुद्रा कहतेहैं ॥ दशमूलीकाढ़ा ॥ दशमूलीके काढ़ाको पीने से हिचकी श्वास खांसीजावै ॥ धात्र्यादिकाढ़ा ॥ आंवला, पिपली, शुंठि इन्हों के काढ़ामें मिश्री मिलाय पीनेसे प्राणों की नाश करने वाली औषध जावै ॥ गंभीराहिक्कानिदान ॥ नाभि से भयंकर उठै और कंठ मुख सूखरहैं और जीभ भी सूखीर है और खांसी श्वास को पैदा करै और जिसमें बहुत पीड़ा हो और अनेक उपद्रवोंको करै तिसे गं-

भीरा हिचकी कहते हैं ॥ पाटल्यादियोग ॥ सोना के भस्मको पाटली के रसमें व शहदमें मिलाय पीने से पांचप्रकारकी हिचकी जावै ॥ दशमूलीकाढा ॥ दशमूलके काढामें शहद लोहाका भस्ममिलाय पीनेसे पांचप्रकारकी हिचकीजावै॥ छागदुग्धयोग ॥ बकरीकेदूधमें शुंठि मिलाय पीनेसे अथवा अम्लवेतस के काढामें खट्टेरसको मिलाय पीनेसे अथवा धानकी खीलोंके चूर्णमें सेंधानोन मिलाय खाने से हिचकी रोगजावै॥ मधुसौबर्चलयोग॥ बिजौराके रस में शहद कालानोन मिलाय पीनेसे अथवा शुंठि, पिपली, आंवला, शहद मिलाय पीनेसे हिचकी जावै ॥ शिखिलेह ॥ मोर की पांख की राख, पिपली चूर्ण इन्होंको शहदमें मिलाय चाटनेसे हिचकी, श्वास, छर्दि जावै॥ पिप्पल्यादिलेह ॥ पिपलामूल, मुलहठी, गुड़,गौका गोबर, घोड़ाकी लीद इन्होंका काढाकरि शहद घृत मिलाय पीने से हिचकी, अंगफूरणा, कास ये जावै और कैथ के रसमें पिपली घृत मिलाय पीने से अथवा आमला के रस में पिपली शहद मिलाय पीने से हिचकी, श्वास जावै। और खजूर, पिपली, दाख, खांड़ ये समान भाग लेइ शहद घृत मिलाय पीनेसे हिचकी, श्वासजावै ॥ कटुकादिभस्म ॥ कटुकी, सोनागेरू, मोती भस्म, तांबा, शहद इन्हों को बिजौरा के रसमें मिलाय पीने से हिचकी जावै ॥ कोलमज्जालेह ॥ बेर की गुठली, सुरमा,धानकी खील इन्होंके लेहसे अथवा कटुकी नागकेशर सोनाका भस्म इन्होंके लेहसे अथवा पिपली आंवला मिश्री शुंठि इन्हों के लेह से अथवा हीराकसीस कैथ इन्होंके लेह से अथवा पाटलीकाफूल फलकेलेहसे अथवा पिपली खजूर नागरमोथा इन्हों के लेहसे हिचकीजावै परंतु इन्होंका चतुर्थांशरूप काढाकरि शहद मिलायपीवै॥हेममात्रा॥ सोनाभस्म मोती भस्म तांबाभस्म कांतलोह भस्म ये २ रत्तीभर लेय शहद कालानोन मिलाय बिजौराके रसमें मिलाय पीनेसे सबप्रकारकी हिचकीको नाशकरै ॥ पिप्पल्यादिलेह ॥ पिपली, आंवला, दाख, बेरकीगुठली, शहद, खांड़, बायबिड़ंग पुष्करमूल, लोहका भस्म इन्हों को मिलाय खाने से छर्दिको व हिचकीको व तृषाको हरै ३ रात्रिमें इसमें संशय नहीं है ॥ शंखचूल

रस ॥ पारा भस्म, अभ्रक भस्म, सोना भस्म ये बराबर भाग लेय पीछे सबोंसे पांचगुनी शंख की भस्म लेय पीछे इन्हों को सुखाय पीसै पीछे ४ चारमाशे रसको शहदके संग व यथोक्त अनुपानों के संग खाने से मरनेवालाकी भी पांचप्रकार की हिचकी जावै ॥ मेघडम्बररस ॥ पारा गन्धक इन्हों को बराबर लेय चांवलों के रस में खरल करि पीछे बज्रमूषा यन्त्रमें रखि भूधर में भस्मकरै पीछे दशमूल के रसमें २ पहर तक भिगोय पीछे २ रत्ती भर खाने से हिचकीको व श्वासको व ज्वरको हरै और इस मेघडम्बर रस को अनुपानके सङ्गखावै ॥महाहिक्कालक्षण॥ सबमर्मस्थानमें पीडाकरती हुई और सबगात्रको कँपातीचलै और निरन्तरचलै इसको महती हिचकीकहतेहैं ॥ कटुत्रिकलेह ॥ शुंठि, मिरच, पिपली, धमासा, कायफल, अजमान, पुष्करमूल, काकड़ाशिंगी इन्होंमें शहदमिलायलेह करि चाटनेसे हिचकीको व खांसीको व कफको व श्वासको हरै है अथवा सेंधानोनको पानीमेंमिलाय नस्यलेनेसे सबप्रकारकीहुचकी जावै ॥ असाध्यहिक्कानिदानलक्षण ॥ जिसकादेह हिचकीलेते तनजावै और जिसकी दृष्टि ऊर्ध्वगत होय संकुचित होवै और क्षीण होय और भोजनमें अरुचिहोय और ज्यादह छींकआवैं ऐसेलक्षणवाली हिचकी और गँभीरा महती ये ३ हिचकी असाध्यहैं और ज्यादह दोषकोपयुतको व बहुत दिनों से अरुचियुत कृश शरीरवाले को और व्याधिसे क्षीणको व बूढ़ाको व ज्यादह स्त्रीके संग करनेवाले को और आयाससेउपजी हिचकीवालेको हिचकीनिश्चयनाशै और यमिका हिचकी प्रलाप, पीड़ा, मोह, तृषा इन्होंसे युतहो तोभी असाध्य है ॥ असाध्यलक्षण ॥ जो क्षीण न हो व ग्लानि युत न हो व जिसकी इन्द्रियां स्थिरहों ऐसे की यामिका हिचकी साध्य है और बाकियोंकीअसाध्यहै ॥ यष्ट्यादिचूर्ण ॥ मुलहठी शहद अथवा पिपली खांड़ अथवा गरमघृत अथवागरमदूध अथवा ईखकारसयेपांचोंपीनेसे हिचकीको नाशकरै है ॥विश्वादिचूर्ण॥ शुंठि,हड,पिपली इन्होंके चूर्णमें शहद खांड़मिलायपीनेसे अथवा गिलोयकेरसमें शुंठिमिलाय नस्यलेनेसे हिचकीजावै ॥ रक्तचन्दनयोग ॥ स्त्रीके दूधमें लालचन्दन

को पीसि कल्क गरमकरि और सेंधानोन मिलाय नस्यलेनेसे अथवा पानीमिलाय नस्यलेनेसे हिचकीजावै ॥ कृष्णाचूर्ण ॥ पिपली शुंठि इन्होंके चूर्णमें शहद खांड़मिलाय चाटनेसे हिचकी व श्वासको नाशकरै ॥ शृंग्यादिचूर्ण ॥ काकड़ाशिंगी, शुंठि, मिरच, पिपली, हड़ बहेड़ा, आमला, कटैली, भारंगी, पुष्करमूल, सेंधानोन इन्होंके चूर्ण को गरमपानीकेसङ्ग खानेसे हिचकीको व श्वासको व ऊर्ध्ववातको व खांसीको व अरुचिको व पीनसकोहरै ॥ भारंग्यादिचूर्ण ॥ भारंगी शुंठि इन्होंके चूर्णको गरमपानीकेसङ्ग खानेसे अथवा भारंगी शुंठि मिश्री कालानोन इन्होंके चूर्णको खानेसे हिचकीजावै ॥ हिक्कानस्य ॥ निर्गुंडीकाकाढ़ा अथवा पिपलीके काढ़ामें हिंग मिलाइ पीनेसे अथवा आलका नस्यलेनेसे अथवा स्त्रीके दूधमें शहद मिलाइ नस्य लेनेसे पांचप्रकारकी हिचकीजावै ॥ मधुकनस्य ॥ मुलहठीके रसमें शहद मिलाय नस्यलेनेसे अथवा पिपली खांड़ मिलाइ नस्यलेने से अथवा शुंठि गुड़ मिलाइ नस्यलेनेसे हिचकीरोग जावै ॥ नस्य ॥ माखीकी बीठको स्त्रीके दूधमें मिलाइ नस्यलेनेसे अथवा आलके रसकी नस्यलेनेसे अथवा स्त्रीके दूधमें चन्दन मिलाय नस्यलेनेसे हिचकीजावै ॥ शिलाजीतधूम ॥ शिलाजीत, मूलाके पान अथवा कस्तूरी, बब्बूल अथवा कूट, राल अथवागुड़ गड़ोंकाधूमा अथवा डाभ की जड़, घृत इन्होंका नस्यलेनेसे हिचकीमिटै ॥ श्वासावरोधयोग ॥ श्वासके वेगको रोकनेसे हिचकीमिटै अथवा चुल्लूभरिवारम्वारपानी को पीवै पीछे श्वासको रोकनेसे हिचकी मिटै ॥ माषादिधूम ॥ उड़द हल्दी, शणकीछाल इन्होंके धुवांको पीनेसे श्वास हिचकी ऊर्ध्ववात खांसी गलरोग सबप्रकार की हिचकी जावै ॥ हिंग्वादिधूम ॥ हिंग उड़द इन्होंके चूर्णको निर्धूम अंगारके ऊपर बुरकाइधुवांको पीनेसे पांचप्रकारकी हिचकीमिटै ॥ हिचकीमेंपथ्य ॥ स्वेदन वमन नासलेना धूमापीना विरेचन सोना चिकने और हलके अन्न सब प्रकार के नोन कुलथी गेहूँ धान सांठी ये सब पुराने और एण तीतर लवा आदि मृग तथा पक्षी पक्काकैथा लहसन परवर कोमलमूली पुष्करमूल श्यामा तुलसी मदिरा खस गरमपानी बिजौरा शहद गोमूत्र

और वातकफके नाशक अन्नपान शीतल जलका छिड़कना एका-एकी भय अचंभेमें होना क्रोध हर्ष पियारी बस्तुसे घबड़ाना प्राणायाम आगमें जलजाकर पानीसे छिड़कीहुई मिट्टीका सूँघनेवालों से जलकीधार छोड़ना नाभिके ऊपर दबाना और गुदाके ऊपर व नाभिसे २ अंगुल ऊपर दीपकसे जलाईहुई हल्दीसे दागना ये सब हिचकीमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ पवन मूत्र डकार विष्ठा इन सबोंके वेगका रोकना धूलि पवन घाम शीत विरुद्धभोजन पिसाअन्न उड़द तिलकी खली अनूपदेशका मांस भेड़का दूध दंतून वस्तिकर्म मछली सरसों खटाई नींबूका फल तेलकी भूनी पोइका शाक भारी तथा शीतल अन्न व पान इन सबोंको हिचकीवाला त्यागकरै ॥

इतिबेरीनिवासिरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांहिचकीप्रकरणम् ॥

श्वासकर्मविपाक ॥ जो कृतघ्नी मनुष्यहो वहखांसीको व श्वासको व कफको व गरमीके ज्वरको व पित्तरोगको प्राप्तहोवै ॥ प्रायश्चित्त॥ व ३ चांद्रायणव्रतकरि ५० ब्राह्मणोंको भोजन जिमावै और सहस्र नामके पाठ कराइ ब्राह्मणोंकी भक्तिसे पूजाकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ जो कुरुक्षेत्र देशमें सूर्य्यग्रहण आदि पर्वकालमें महादानोंको अंगीकार करै व निषिद्धदानोंकोलेवै वा अपात्ररूप कै दानकोलेइ उसकेपास रोग श्वास खांसी कूषमें कृमिरोग खाज ये रोग उपजकरदुःखपावै॥ प्रायश्चित्त ॥ वह मनुष्य रोगोंकी शांति वास्ते भैंसको दानकरै धर्मराजकेनामसे और काम्यकर्म्म करावै और अनेक तरहके सुखदेने वाले दानकरै और विष्णुसहस्रनामके पाठकरावै और सोना लाल कपड़ा इन्होंका दानकरि पञ्चाश ५० ब्राह्मणोंको अच्छे भोजनोंसे तृप्तकरै और सहस्रधारा के कलशसे स्नान करै ऐसे रोग जावैं ॥ तीसराप्रकार ॥ निन्दक मनुष्य नरकमेंजाइ पीछे श्वासी व कासीहो है॥ प्रायश्चित्त॥ वह घृत४००तोलभर दानकरनेसे आरामपावै ॥ श्वासनिदान ॥ जिनवस्तुओंके खानेसे हिचकीहोहै उनहीं पदार्थोंके खानेसे श्वासपैदाहोहै वहश्वास ५ प्रकारकाहै महाश्वास १ ऊर्द्ध-

श्वास २ छिन्नश्वास ३ तमकश्वास ४ क्षुद्रश्वास ५ ऐसे जानो ॥ पूर्व रूप ॥ हियादूखै शूलहोइ अफाराहोइ मलमूत्र उतरैनहीं और मुख में रसको स्वादआवैनहीं कनपटीदूखै तबजानिये श्वासरोगहोगा ॥ संप्राप्ति ॥ सब शरीरमें जो बायुसे कफसेमिल सबनसोंको रोकै तब वह बायु फिरनेसे रहै श्वासको प्रकटकरै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ जो द्रव्य कफ बातकोहरै और बातको अनुलोमनकरै वह औषध व अन्न व पान हिचकी व श्वासमेंहितहै और इनरोगवालोंको पहिले तेलसे मालिशकरि पीछे स्वेदनकर्म करै और बलवन्तको बमन व रेचनकरावै और निर्बलको शमनरूप औषध देवै ॥ दूसराप्रकार ॥ कोइक वैद्य स्नेहवास्तिको बर्जिकर बमन व रेचनदेयहैं व कोमल स्वेदकरैहै और सबतरहके श्वास रोगियोंको आदिमें कोमलपहसीनादेइ बातकफ नाशक औषधदेवै ॥ महाश्वासलक्षण ॥ जबमनुष्य श्वाससे दुःखीहो तब ऊंचेप्रकार मस्त बैलकी नाईं श्वासनिरंतर लेइ और नष्टहुई है संज्ञाजिसकी और नष्टहुआ है ज्ञान जिसका और जाके नेत्रतरतराट करैं और श्वासलेते मुँहकटजाय व फट जाय और बोलाजावे नहीं गरीबसा होजाय और जिसका स्वर बहुतदूर सुनाईदेइ ये लक्षणहोयँ तबमहाश्वास जानिये यहश्वास वाला तुरंत मरजावै ॥ शृंग्यादिचूर्ण ॥ काकड़ाशिंगी, शुंठि, मिरच पीपल, हड़, बहेड़ा, आँवला, कटैली, भारंगी, पुष्करमूल, पांचोनोन इन्होंकाचूर्णकरि गरमपानीके संगखानेसे हिचकीको व श्वासको व ऊर्द्धबातको व खांसीको व अरुचिकोनाशकरै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि ६ भाग पिपली ५ भाग मिरच ४ भाग नागरपान ३ भाग दालचीनी २ भाग इलायची १ भाग इन्होंका चूर्णकरि खांड़मिलाय खाने से बवासीरको व खांसीको व मंदाग्निको व अरुचिको व कंठरोगको व हृद्रोगकोहरै ॥ मर्कटीचूर्ण ॥ कोंचके बीजोंको पीसि शहद घृत में चटनी बनाय चाटनेसे प्रभातमें श्वासरोगजावै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ कचूर, भारंगी, बच, शुंठि, मिरच, पीपल, छोटीहड़, कालानोन, कायफल तेजबल, पुष्करमूल, काकड़ाशिंगी इन्होंकोपीसि शहद मिलायचाटनेसे श्वास व खांसीको हरै ॥ गुड़ादिलेह ॥ गुड़ मिरच हल्दी रास-

ना मुनक्का पिपली ये समभागलेय पीसि तेलमें मिलाय चाटने से तीव्रश्वासकोनाशकरै ॥ भारंग्यादिचूर्ण ॥ भारंगी, नागरशुंठि इन्होंको पीसि अदरखकेरसमें मिलाय चाटनेसे श्वासकोहरै दृष्टांतजैसेसिंह हाथियोंको तैसे ॥ ऊर्ध्वश्वासकालक्षण ॥ ऊँचीश्वासले नीचेश्रावैनहीं कफसे मुँहभरिजाय ऊँचीदृष्टिहोजाय नेत्रतरतरहोइ इस श्वास में दुःखीहो तब भ्रमता होइ मोहहोय ग्लानिहोय और मुखसूखा हो वे ऊर्ध्वश्वासकेलक्षणहैं यहअवश्यमरै ॥ श्वासवालीनहिंकारण ॥ ऊर्ध्वश्वासकोप को प्राप्तहुये नीचाश्वास रुके है और मोह व ग्लानि प्राप्तिकरि मनुष्यकोमारैहै ॥ दुल्हरीचूर्ण ॥ दुल्हरी, सेंधानोन, जटामासी कालानोन, शुंठि, मिरच, पिपली, ब्रह्मदण्डी, त्रिफला, अरंडकीजड़ इन्होंकेचूर्णको गरमपानीके सङ्गखानेसे अथवा पांचौंनोन लेयचूर्ण करि गरमपानीके संगखाने से ऊर्ध्वश्वासकोहरै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि देवदारु पिपली इन्होंकेचूर्णको अथवा शुंठि पिपली इन्होंके चूर्णको गरमपानीके संगखानेसे ऊर्ध्वश्वासकोहरै ॥ शिलाद्यवलेह ॥ शिलाजीत हिंग बायबिड़ंग मिरच कूट सेंधानोन इन्होंकाचूर्ण १ तोला भरशहद घृतमेंमिलाय चाटनेसे श्वासको व खांसीको हरै ॥ बिडंगादिचूर्ण ॥ बायबिड़ंग १ तोला पिपली १ तोला इलायची १ तोला दालचीनी १ तोला मिरच २ तोला शुंठि १६ तोला इन सबों के समान खांड मिलाय १ तोला भर नित्यखाने से श्वास को व खांसी को व हृद्रोग को हरै ॥ दाडिमादिचूर्ण ॥ अनार हिंग शुंठि पिपली नोन आम्लबेतस ये समान भागलेय चूर्णकरि खाने से श्वासको व हृद्रोगको हरै ॥ विड़ंगादिचूर्ण ॥ बायबिड़ंग, पिपली, हींग अजमान, सेंधानोन, शुंठि, रास्ना ये समान भागलेय घृतमें मिलाय १तोलाभरखानेसे कफको व श्वासकोहरै यहबिड़ंगादिचूर्ण है ॥ आर्द्रकस्वरस ॥ अदरखके रसमें शहद मिलाय चाटनेसे खांसी व श्वास जावे ॥ अक्षकवल ॥ बहेड़ाकोमुखमें धारणकरनेसे श्वास व कासजावै ॥ आठरुषरस ॥ बांसाका रस, गौका नौणीघृतको मिलायपकाय पीछे त्रिफलाका चूर्ण मिलाय खाने से श्वास को हरै ॥ छिन्नश्वासलक्षण ॥ सर्व शरीरके पांचों पवनों से पीड़ित मनुष्य टूटित श्वासलेवे अथवा

दुःखितहोके श्वास नहीं ले जिसके मर्मस्थान टूटिजावैं तब अफारा होय, आवे प्रस्वेद होय नेत्र फटजायँ श्वासलेता लालनेत्रहोयँ चैन जातीरहै शरीरकावर्ण औरहोजाय वहप्राणी जल्दीमरै॥ तमकश्वास लक्षण॥ शरीरकी पवन उलटी फिरनेसे रोकदे तबकांधा और शिर को पकड़ कफको प्रकटकरै तब वह कफ कण्ठमें जाय घुर २ शब्द करै प्राणके हरनेवाले श्वासको प्रकट करै तब मनुष्य श्वासके वेग कर ग्लानि प्राप्तहोय और उसकी अग्निरुकजाय तबवह खांसते मोहको प्राप्त हो और कफछूटै तब दुःखीहोय और मुखमाहींसे कफ निकल जाय तबवह घड़ी दो एकदुःखपावे तबवासे बोलाजाय और वह सोवे तब श्वास होयआवे नींद आवेनहीं बैठेही चैनपड़ै और गरमी सुहावै और आंखोंपर सोजन होय ललाटमें पसीना आवे मुंहसूखे और धवकनीकी भांति श्वासले मेहके पवनसे शीतलवस्तु सों वहबढै और मधुरबस्तुसेबढै ये लक्षण तमकश्वासके हैं और यह श्वास जाप्यहै और नयाउपजाश्वास साध्यहै॥ प्रतमकनिदान॥ ज्वर मूर्च्छा इन्होंके संबंधसे प्रतमक उपजै और उदावर्त्त, धूलि, बिदग्धा जीर्ण मूत्र पुरीषादि वेगादि रोकना इन्होंसे प्रतमकउपजै यहताम-सिक गुण मनमें उपाजि बधै और शीतल पदार्थोंसे शांतहोवे इसमें अंधेरासा आय प्राप्तहोवे॥ शुंठ्यादिचूर्ण॥ कचूर, कमलकंद, गिलोय दालचीनी, नागरमोथा, पुष्करमूल, तुलसी, भूमिआमला, इलायची पिपली, कालागर, शुंठि, भीमसेनी कपूर ये सबसमान भागलेय चूर्ण करि दुगुनी खांड़ मिलाय खानेसे हिचकी व श्वासको हरै॥ व्याघ्री जीरकादिगुटिका॥ कटैली, जीरा, आंवला इनतीनोंऔषधोंकाचूर्णकरि शहदमिलाय चाटनेसे ऊर्ध्व बातको व महाश्वासको व तमश्वासको नाशकरै॥ क्षुद्रावलेह॥ कटैली १००तोला हड़ १००तोला इन्होंकोएक द्रोणभर पानीमें मिलाय काढ़ाकरावे पीछेगुड़ ४०० तोला मिलाय फिर पकाय हड़ोंसमेत पीछेशीतलहोनेपर शहद २४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला दालचीनी १ तोला तमाल-पत्र १ तोला इलायची १ तोला नागकेशर १ तोला मिलाय लेह करि खावे यह बिदेहको पहिले प्राप्तभया है यह क्षुद्रावलेह कफके

रोगोंको व श्वासको व शोषको व खांसीको व हिचकी को व छाती के रोगको व मृगीरोग को हरै। ॥ कंठकार्यावलेह ॥ कटैली ४०० तोला पानी एकद्रोणभरमें काढ़ाकरि चौथा हिस्साराखै पीछे गिलोय ४ तोला चवक ४ तोला चीता ४ तोला नागरमोथा ४ तोला काकड़ाशिंगी ४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच्च ४ तोला पिपली ४ तोला धनियां ४ तोला धमासा ४ तोला भारंगी ४ तोला रासना ४तोला कचूर ४ तोला खांड़ ८० तोला घृत ३२ तोला तेल३२तोला मिलायपकाय शीतलहोनेपर शहद ३२ तोला वंशलोचन १६ तोला पिपली १६ तोलामिलाय सुन्दरमाटीके बरतनमें घालिरक्खे पीछे खानेसे हिचकीको व श्वासको व खांसीकोनाशकरै इसमें संशयनहीं है॥ क्षुद्रश्वासनिदान ॥ सूखीबस्तु खानेसों खेदकरनेसों कोठामें पवन क्षुद्रश्वासको प्रकटकरै तब वह मनुष्यों को बहुत दुःख देवै नहीं और मनुष्योंकी खान पानकी गति को रोके नहीं और इन्द्रियोंको पीड़ाकरै नहीं ये लक्षण क्षुद्रश्वासके हैं यह साध्यहै और सबश्वासों में क्षुद्रश्वास सुसाध्यहै महोर्ध्वादि ३ श्वास असाध्य हैं दुर्बल को तमकश्वास मारदेयहै और सन्निपातादिक रोगजैसे तुरंतप्राणों को हरैं नहीं तैसे हिचकी व श्वास जल्दी मारे है॥ सामान्यउपचार॥ श्वास व हिचकी वालेको सचिक्कण पहसीना दिवावै और तेल व नोनमिलाय पहसीना देवै इससे कफरोग व श्वासजावै और बायुरोगशांतहोयहै और इसको स्निग्धकरि रसओदन खवावै॥ शृंगबेररस॥ चोखी अदरखके रसमें शहद मिलाय चाटनेसे खांसीको व श्वासको व पीनस को व कफको हरै॥ विभीतकावलेह॥ बहेड़ा की छाल १ सेर लेइ बकरीके मूत्रमें सिद्धकरि पीछे शहद मिलायचाटनेसे खांसी व श्वासकोहरै॥ द्राक्षादिलेह॥ दाख मुनक्का,हड़,नागरमोथा,काकड़ाशिंगी,धमासा इन्होंकेचूर्णमें शहद घृतमिलाय पीने सेश्वासकोहरै॥ दशमूलायवागू॥ दशमूल,कचूर,रासना,पिपली,शुंठि पुष्करमूल,काकड़ाशिंगी, भूमिआंवला,भारंगी,गिलोय,शुंठि,चीता इनऔषधोंमें सिद्धकरि यवागूको व काढ़ाकोपीनेसे श्वासको व हृद्रोगको व पसलीशूलको व हिचकीको व खांसीकोहरै॥दशमूलकाढ़ा॥

दशमूलके काढ़ामें पुष्करमूल का चूर्णमिलाय पीनेसे खांसीको व श्वासको व पसलीके शूलकोहरै ॥ रंभादिकुसुमपान ॥ केलाके फूल कुड़ाकेफूल, सिरसकेफूल, पिपली इन्हांको चावल के पानी से पीसि पीनेसे श्वासकोहरै कडुआतेलमें गुड़कोमिलाय पीनेसे श्वासजावै और इसपर यवकोखावे ॥ शृंग्यादिचूर्ण ॥ काकड़ाशिंगी, शुंठि, पिपली नागरमोथा, अरंडकीजड़, कचूर, मिरच इन्होंकाचूर्णकरै और गिलोय बासा, पंचमूलइन्होंकाकाढ़ाकरि पिछलेचूर्ण व खांडकोमिलाइपीने सेदारुणश्वासको३ दिनमेंनाशै ॥ शृंग्यादिकाढ़ा ॥ भारंगी, शुंठि इन्होंका काढ़ाबनाइ पीनेसे श्वासजावै ॥ पंचमूलीयोग ॥ लघुपंचमूलकाकाढ़ा पित्ताधिकरोगमें बरतै और बाताधिकमें व कफाधिकमेंबृहत्पंचमूल को बरतै ॥ कूष्मांडशिफाचूर्ण ॥ कोलहाकी जड़के चूर्णको गरमपानीके संग खानेसे खांसीको व श्वासको जल्दीनाशकरै ॥ हरिद्राद्यवलेह ॥ हलदी, मिरच, दाख, पिपली, रासना, शुंठि, गुड़ इन्होंको कडुआ तेलमें मिलाइ चाटनेसे प्राणहारी श्वासको भी हरै ॥ भारंगीगुड़ ॥ भारंगी १०० तोला दशमूल १०० तोला हड़बड़ी १०० तोला लेइपानी १२०० तोलाभरमें पकाइ चतुर्थांशरक्खे पीछे कपड़ामाहिं रसको छानि गुड़ ४०० तोला मिलाइ फेर पकाइ तय्यार करै पीछे शीतल होनेपर शहद २४ तोला मिलाइ शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला दालचीनी ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला जवाखार २ तोला इन्होंका चूर्णकरि १ हड़ और अवलेह २ तोलाभर खावै यह श्वासको व पांचप्रकारकी खांसीको व बवासीर को व अरुचिको व गुल्मको व अतिसार को व क्षयीकोहरै और स्वर वर्ण अग्नि इन्होंकोबढ़ावै यह भारंगीगुड़संसारमें विख्यातहै॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ दाख, गिलोय, शुंठि इन्होंके काढ़ामें पिपलीकाचूर्ण मिलाय पीनेसे श्वासको व शूलको व खांसीको व मंदाग्नि को व जीर्णज्वरको व तृषाको नाशकरै ॥ कुलित्थादिकाढ़ा ॥ कुलथी, शुंठि कटैली, बासा इन्होंके काढ़ामें पुष्करमूलका चूर्ण बुरकाइ पीनेसेखांसीको वश्वासकोहरै ॥ देवदार्व्यादिकाढ़ा ॥ देवदारु, बच, कटैली, शुंठि कायफल, पुष्करमूल इन्होंका काढ़ाबनाइ पीनेसे श्वासको व खांसी

को हरै ॥ सिंह्यादिकाढ़ा ॥ कटैली, हल्दी, बासा, गिलोय, शुंठि, पिपली भारंगी, नागरमोथा इन्होंके काढ़ामें पिपली मिरच चूर्ण मिलाय पीनेसे श्वासको हरै ॥ वासादिकाढ़ा ॥ वासा, हल्दी, पिपली, गिलोय भारंगी, नागरमोथा, शुंठि, कटैली इन्होंके काढ़ामें पिपली मिरचोंका चूर्ण मिलाइ पीनेसे श्वास जल्दीजावै ॥ भारंग्यादिलेह ॥ भारंगी, मुलहठी, हड़, पिपली, कटुकी, शुंठि, मिरच, पीपल इन्होंके चूर्णमें घृत शहद मिलाय पीनेसे श्वासकोहरै ॥ गुड़ाद्यवलेह ॥ गुड़, अनार, दाख पिपली, शुंठि इन्होंके चूर्णको बिजौराके रसके व शहदसङ्ग खानेसे श्वासको नाशकरै ॥ वासादिलेह ॥ वासा ४०० तोला पानी ३२०० तोला मिलाय पकाय चतुर्थांश रक्खे पीछे हड़का चूर्ण २५६ तोला मिलाय फेर पकाय पीछे खांड़ ३८५६ तोला मिलाय पाक बनाइ शीतल होनेपर शहद ३२ तोला वंशलोचन ८ तोला पिपली २ तोला नागकेशर १ तोला तमालपत्र १ तोला दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला मिलाइ रोज़ २ तोलाभर खाने से श्वासको व खांसीको व क्षयीको व रक्तपित्तको व कफको व पीनसको व हृद्रोगको व कृशताको व विद्रधिको व छाती फटजाने को व रक्तकी छर्दि को हरैहै ॥ सितादिचूर्ण ॥ मिश्री, दाख, पिपली ये समभागलेइ तेल में पकाइ खाने से श्वास जावै ॥ शिलादिअवलेह ॥ मैनशिल, शुंठि मिरच, पिपली, हड़, हिंग, सेंधानोन, बायबिड़ंग इन्होंके चूर्णमें शहद घृत मिलाइ खानेसे हिचकी व श्वास जावै ॥ राजिकादिगुटी ॥ राई पांडरा, भूमिकोहला, पिपली, लहसन, मिरच, अतीस, लवङ्ग इन्हों का चूर्णकरि भँगराके रसकी भावनादेइ पीछे आकके दूधकीभावना देइ पीछे गुकुवारपट्ठाके रसकी भावनादेइपीछे निर्गुण्डी के रसकी भावना देइ पीछे मुंडीकेरसकी भावनादेइ पीछे चीताकेरसकीभावनादेइ खानेसे श्वासको व खांसीकोहरै ॥ सूर्यावर्तरस ॥ पारा १ भाग गन्धकआधाभागइन्होंको एकपहरतकघोटि बराबरकातांबामिलाइ नागरमोथाके कल्कसे लेपनकरि घटीयंत्रसे १ दिनतक पकाइकाढ़ि १ वालभर गन्धक व मिरच चूर्णकेसङ्गखानेसे कफको व श्वासको हरै ॥ अमृतार्णवरस ॥ पारा, गन्धक, लोहभस्म, सुहागा, रासना, बाय-

बिड़ंग, हड़, बहेड़ा, आमला, देवदारु, शुंठि, मिरच, पीपल, गिलोय वचनाग, पद्माख, शहद ये बराबर लेइ ३ रत्ती खानेसे खांसीको व श्वासको हरैहै इसकानाम अमृतार्णव रसहै ॥ श्वासहेमाद्रिरस ॥ मैन-शिलको दूना तांबेके गोलामेंभरि बालुका यन्त्रमें पकायगोलासमेत चूर्णकरि पारा गन्धककी कज्जलीकरि मिलाय फेर पकाय दुपहर तक यह श्वासहेमाद्रि रस महाश्वासको हरै और वर्णको बढ़ावै ॥ उदयभास्कररस ॥ धान्याकअभ्रक, पारा, गन्धक इन्होंको सफेदऊंगा केरसमें खरलकरै लोहाके पात्रमें पीछे डमरुयन्त्र में घालिपकाय ऊपरके बरतनमें लगाहुआ द्रव्यको खुरचि पीछे यह उदयभास्कर रस २ रत्ती खानेसे पांचतरहके श्वासको हरै इसपै अनुपान कटुकी के चूर्णमेंशहदमिलाय खावै ॥ श्वासकालेश्वर ॥ लोहभस्म, तांबाभ-स्म, अभ्रकभस्म, पारा, गन्धक, धतूराकेबीज, जैपाल, हल्दी, कचूर ये समानभागलेइ और मरिचका चूर्ण३ भागलेइ इन्होंको खरलमें घालि लोहाके दण्डासे पीसै जब तक पारादीखेनहीं पीछे इन्द्रयव काढ़ामें २१ भावनादेइ पीछे २ रत्ती किम्बा १ रत्तीरसमें अदरख का रस मिलायखावै जवानको २रत्ती और बालवृद्धको १रत्ती देवै पथ्यसेरहै यह ५ प्रकारके श्वासको व क्षयीरोगको व खांसीको व राजयक्ष्माकोहरै यहरस देवताओंको भी दुर्लभहै ॥ पारदादिगुटी ॥ पारा, गन्धक, शीशा, तांबा, शुंठि, मिरच, पीपल, चीता, राल ये समानभागलेइ चूर्णकरि पानकीबेलके रसमें १० भावनादेइ पीछे अदरख के रसमें १० भावनादेइ मरीचके तुल्यगोली बनाय खाने से मंदाग्नि को व कफरोगको व श्वासको व खांसीको व पेटके अ-फारा को हरै ॥ लवंगादिगुटी ॥ लवंग, मिरच, त्रिफला इन्होंको स-मान भाग लेइ पीछे बबूलके रसमें गोली बनाय खानेसे श्वासको व कफको हरै है ॥ दूसराप्रकार ॥ लंवग, शुंठि, मिरच, पिपली, ब-चनाग, भंगरा, कटैली, बहेड़ा ये समान भागलेइ पीछे इन्हों को कुवारपट्ठा के रसमें खरलकरि गोली बनाय खानेसे श्वासकोनाश करै संशय नहीं ॥ त्रिकटुवटी ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, सुहागा इन्हों को नागरपान के रसमें पीसि मरीच के समान गोली बनाय खाने

से कफ को हरै यह त्रिपुरभैरवी है ॥ फलत्रयगुटी ॥ हड़, बहेड़ा आमला, शुंठि, देवदारु, पिपली, बचनाग, बाला, मिरच इन्हों को धतूराके रस में व भङ्गरा के रस में ३ दिन तक भिगोय पीसि गोली बनाय खानेसे श्वासको व कफको नाशकरै ॥ स्नुहीदुग्धयोग ॥ थोहरके दूधमें गुड़मिलाय ६ रत्तीभर खाने से खांसीको व श्वास को व हृद्रोगको व क्षयरोग को हरै ॥ श्वासकुठार ॥ पारा १ तोला गन्धक १ तोला मीठा तेलिया १ तोला सुहागा १ तोला मैन-शिल १ तोला मरीच ८ तोला पीपल शुंठि मिरच मिल करि २ तोला इन्होंको मिलायखानेसे यह श्वासकुठाररस सबप्रकारके श्वासरोगोंको हरैहै ॥ दूसराप्रकार ॥ पारा १ तोला गंधक १ तोला मीठातेलिया १ तोला सुहागा १ तोला मिरच ८ तोला शुंठि २तोला मिरच २ तोला पीपल २ तोला इन्होंको बारीक पीसि कपड़छान करि कांचकी शीशीमें भरि पीछे १ रत्तीभररोजखानेसे श्वासको व खांसीको व मंदाग्निको व बातकफ संबंधी रोगको नाशकरनेवास्ते पानके टुकड़ाके संगदेवै और सन्निपात में व मूर्च्छामें व मृगीरोग व ज्यादह मोहवाले रागमें इसरसकी नस्यदेनेसे आराम होवै यह श्वासकुठार रस सब प्रकारके श्वासरोगोंको हरै ॥ मरिच्यादिगुटी ॥ मिरच १ तोला पिपली १ तोला जवाखार ८ माशा अनारकीछाल २ तोला इन्होंका चूर्णकरि गुड़ ८ तोलाभर मिलाय ४ माशेकीगोलीबनायखानेसे सब प्रकारकी खांसीजावै ॥ श्वासमेंपथ्य ॥ बिरेचन स्वेदन, धुआंपीना, बमन, दिनमेंसोना, साठीचावल, लालधान, कुलथी, गेहूं, यव येसब पुरानेपथ्यहैं शशा, मोर, तीतर, लवा, मुरगा तोताआदि मरुदेशके मृगतथापक्षी, पुरानाघृत, बकरीकादूध तथा घृत, मदिरा, शहद, कटेली, बथुआ, चौराई, जीवंती शाक, मूल, पोतिकाशाक, सौंफ, परवर, बैंगन, लहसन, हड़, जंबीरीनींबू, कंदूरी फल, बिजौरा, दाख, छोटीइलायची, पुष्करमूल, गरमपानी, शुंठि मिरच, पीपल, गोमूत्र, कफबात के नाशक अन्नपान तथा औषध छातीके दोनोंओर और हाथोंकी दोनों बीचकी अंगुलियों तथाकंठ में गरमलोहेसे दागना येसब श्वासकेरोगमें पथ्य हैं ॥ अथअपथ्य ॥

मूत्र, डकार, बमन, प्यास, काम इन्हों के बेगको रोकना नासलेना वस्तिकर्म, दतून, श्रम, रस्तामें चलना, बोझाउठाना, धूलि, सूर्य्यके किरण, बिष्टंभीबस्तु, स्त्रीसंग, बिदाहिवस्तु, अनूपदेशकामांस, तेल में भुनी वस्तु, दलिया, कफके बढ़ानेवाली वस्तु, उड़द, रुधिर निकालना, पूर्बदिशाकापवन, जलका पीना, भेड़कादूध और घृत बुरापानी, मछली, कन्द, सरसों, रूखाभारी तथा शीतल अन्नपान ये सब श्वासरोगमें अपथ्यहैं॥

इतिवेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांश्वासप्रकरणम्॥

अथस्वरभेदनिदान॥मनुष्यके बहुतबोलनेसे और बिषआदिकेखानेसे उच्चस्वरके बढ़नेसे कंठमें किसीतरहकी चोटलगनेसे कोप को प्राप्तभया जोबायु पित्तकफसो कंठकेस्वरमें बहनेवाली जो नसें तिन पित्तमेंरहे स्वरभंगकरेहैं सो वह स्वरभेद ६ प्रकारकाहै बायुका १ पित्त का २ कफका ३ सन्निपातका ४ शरीरके भंगपनाका ५ क्षयीरोगका ६॥ चिकित्साप्रक्रिया॥ वायुके स्वरभेदमें तेलमें नोनमिलाय पीवै और पित्तके स्वरभेदमें घृतमें शहदमिलाय पीवै और कफकेस्वर भेदमें खार, कटूआ, शहद इन्होंकोपीवै और कंठ, तालु, जीभ, दंत मूल इन्होंमें औषधदेनेसे कफनिकसै और स्वरस्वच्छहोवै॥ स्वर भेदसामान्यचिकित्सा॥ जो बातादि जनित श्वास व खांसीको हरने वाले योगहैं तिन्होंके सेवनेसे स्वरभेदजावै। और मेदसेउपजे स्वर भेदमें कफके औषधकरै और त्रिदोषके स्वरभेदको असाध्यजाने और क्षयीके व त्रिदोष के स्वरभेदमें योग्य क्रियाकरै॥ वातिकस्वर भेदनिदान॥ जिसका नेत्र मलमूत्र कालाहोइ टूटाशब्द बोलै गधे कैसा शब्दहोय तो बायुका स्वरभेद जानिये॥ मरिचघृतपान॥ बायु के स्वरभेद में भोजनकरि ऊपरघृतमें मरीचका चूर्ण मिलायपीवै॥ घृतगुड़ोदन॥ पहिले मीठे चावलखाय ऊपर गरमपानीको पीवै पीछे भंगराके रसमें घृतको सिद्धकरि खानेसे स्वरभेद जावै॥ कासमर्दादि घृत॥ कासावेंदीकारस, भारंगीकी जड़का कल्क इन्होंमें हलवे २

घृतको सिद्धकरि खानेसे व बायुके स्वरभेदको हरै ॥ व्याघ्नीघृत ॥ कटेलीके रस में रास्ना, बलिया, गोखुरू इन्हों का कल्क मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे व स्वरभेदको पांचप्रकारकीखांसीकोहरै॥ पैत्तिक स्वरभेद निदान ॥ जिसके नेत्र मुख मलमूत्र पीले रङ्ग हों और बोलने के समय में गले में दाह होय तो पित्तका स्वरभेद जानिये ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ पित्तके स्वर भेद में रेचन देवै और मीठामिलायगरम दूधको पीवै अथवा मीठे पदार्थोंके चूर्णमें शहद मिलाय पीने से सुख होवै ॥ ज्येष्ठीमधुकाढ़ा ॥ मुलहठीके काढ़ा में घृतको मिलायपीने से पित्तकास्वरभेदजावै ॥ पयःपान ॥खांड़ शहद मिलाय दूधकेपीने से ऊँचे प्रकारके पढ़ने से उपजा स्वरभेदजावै॥ शतावरी चूर्ण ॥ शतावरी, बलिया इन्हों का चूर्ण अथवा धान की खीलके चूर्ण में शहद खांड़ मिलाय खानेसे पित्त स्वर भेद स्वच्छ होवै ॥ शुंठीघृत ॥ शुंठि, दालचीनी इन्होंके चूर्णको बड़आदि वृक्षके दूधमें सिझाय घृतको पीनेसे अथवा मुलहठी के चूर्ण को खांड़ घृतकेसंग खानेसे पित्तका स्वरभेदजावै ॥ पित्तस्वरभेद ॥ कासबिंदी बैंगन, भंगरा इन्हों के रसमें घृतदूध मिलाय पीने से पित्तका स्वर भेद जावै ॥ कफ स्वरभेदनिदान ॥ सदाही कण्ठ कफसे रुको रहै और मन्द २ दुहरो बोलाजाइ रातिमें बढ़िजाइ तब कफका स्वर भंगजानिये ॥ पिप्पलीयोग ॥ पिपली, पिपलामूल, मिरच, शुंठि इन्होंके चूर्ण को गोमूत्रमें मिलाय पीने से कफका स्वरभेद जावै ॥ अम्लवेतसादि चूर्ण ॥ चाब, अम्लवेतस, शुंठि, मिरच, पीपल अमली, तालीसपत्र, जीरा, वंशलोचन, चीता,दालचीनी, तमाल-पत्र,इलायची इन्होंके चूर्ण में गुड़मिलाय खाने से स्वरभेद को व पीनस को व कफको व अरुचिको नाशै ॥ गंडूष ॥ अदरख के रसमें सेंधानोन,शुंठि, मिरच,पीपल, विजौरा रस इन्होंको मिलाय कुरुला करनेसे कफकोहरै जैसे सिंहहाथीको तैसे ॥ कटुकादिकाढ़ा ॥ कटुकी अतीस, पाढ़ा, देवदारु, नागरमोथा, इन्द्रयव इन्होंका गोमूत्र में काढ़ाबनाय पीने से कंठरोग नाशहोवै ॥ सन्निपात स्वरभेदनिदान ॥ जिसमें वायु, पित्त, कफ तीनों के लक्षणहों वह सन्निपातका है परन्तु

यह असाध्य है ॥ अजमोदादिचूर्ण ॥ अजमोद, हलदी, आंवला जवाखार, चीता इन्हों के चूर्ण में शहद घृत मिलायखाने से सन्निपातका स्वरभेदजावै ॥ फलत्रिकचूर्ण ॥ हड़, बहेड़ा, आमला, शुंठि मिरच, पीपल, जवाखार इन्होंकाचूर्ण, अथवा कुलथीका चूर्ण अथवा पुष्करमूल के चूर्ण को मुंहमें रखने से स्वरभेद जावै ॥ निदग्धिकावलेह ॥ कटैली ४०० तोला पिपलामूल २०० तोला चीता १०० तोला दशमूल १०० तोला इन्होंको २०४८ तोले पानीमें काढ़ा बनाय २५६ तोलेभर बाक़ी रक्खे तब १२८ तोला पुरानागुड़ मिलाय फेर मन्दअग्निसे पकाय अवलेह सरीखा बनावै पीछे पिपली ३२ तोला दालचीनी इलायची तमालपत्र तीनोंमिलके ४ तोला मिरच ४ तोला कूटिकर मिलावै पीछे शहद १६ तोलेभर मिलाय अग्नि बलबिचार खावै यह निदग्धिकावलेह वैद्योंने मानाहै यह स्वरभेद को व खेहरको व खांसीको व श्वास को व मन्दाग्नि को व गुल्मको व प्रमेहको व कंठरोग को व अफारा को व मूत्रकृच्छ्र को व ग्रन्थि को व अर्बुद रोग को हरै ॥ क्षयकृत स्वरभेद निदान ॥ बोलने में मुंहमें से धूमा निकले सो क्षयी रोग का स्वरभेद जानिये ॥ शरीर के मोटापनसे उपजा जो स्वरभेद ताको लक्षण ॥ गले के भीतरही बोले मोटा शब्द बोलै और देरसों बोलै गला जलै प्यास बहुत लगै ये लक्षण शरीर के मोटापन के स्वर भेद के हैं यह भी असाध्य है ॥ असाध्य लक्षण ॥ क्षीण के व बूढ़ा के व माड़ा के उपजा स्वर भेद व बहुत दिनों का व जन्मकाल का व मोटापन से उपजा व सन्निपात का ये स्वर भेद असाध्य हैं ॥ चिकित्सा ॥ क्षयी के स्वर भेद में क्षयीरोगमें कहे औषध देवै और मोटेपन के स्वरभंगमें कडुआ, कसैला, तिखट इस भांतिके रस देवै ॥ जातिफलावलेह ॥ जायफल, इलायची बिजौरा, तमालपत्र, धानकी खील, पिपली इन्हों के चूर्ण में शहद मिलाय चाटनेसे किन्नर सरीखी कंठ में ध्वनि उपजै ॥ काकजंघादिधार्य ॥ छोटीकाबली, बच, कूट, पिपली इन्होंके चूर्णको शहदमें मिलाय गोली मुखमें रखने से ७ दिनतक वह मनुष्य किन्नरोंके संग गावै ॥ जातिफलादिलेह ॥ जावित्री, इलायची, पिपली, गांडरजड़, बि-

जीरा, तमालपत्र इन्होंका चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे निरन्तर किन्नरके समान स्वर प्राप्तहोवै ॥ गुडूच्यादिलेह ॥ गिलोय, अपामार्ग बायबिडंग, जवतिक्ता, बच, शुंठि, शतावरि इन्होंकेचूर्णमेंघृतमिलाय३ दिनतक खानेसे एकहजार१००० श्लोकोंको कंठ करै ॥ बदरीकल्क॥ बडबेरी के पत्तोंका कल्क सेंधानोन इन्हों को घृत में भूनि खाने से स्वरभंगको व खांसीको हरै ॥ आरनाल चूर्ण ॥ बहेडा, पिपली, सेंधानोन इन्हों का बारीक चूर्णकरि कांजी के संग खाने से स्वरभेद हरै। गौके दूधमें आमलाका चूर्णमिलाय पीनेसे स्वर भेद जल्दी जावै ॥ खदिरचार्य ॥ खैर के चूर्णको तेलमें मिलाय मुँहमें रखने से अथवा हड पिपली इन्होंका चूर्ण मिलाय खानेसे अथवा शुंठि मिलाय खानेसे स्वरभेद जावै ॥ गोरक्षबटी ॥ पाराभस्म, तांबाभस्म लोहभस्म इन्होंको कटैलीके फलों के रस में २१ भावना देइ मूंग सरीखी गोली बनाय मुँहमें रखनेसे स्वरभंग को हरै इसमें संशय नहींहैयेगोलीगोरखनाथनेस्वरभंगवालेमनुष्योंपरदयाकरिकेकही है ब्राह्मयादिचूर्ण ॥ ब्राह्मी, मुंडी, बच, शुंठि, पिपली इन्होंकेचूर्ण में शहद मिलाय चाटनेसे किन्नरोंके संग गानकरै ॥ दुग्धामलकपान ॥ आंवलाके चूर्णको दूधमें मिलाय पीने से स्वर भेद जावै दृष्टांत जैसे मृगाक्षी स्त्री कामदेव को तैसे ॥ स्वरभेदमें पथ्य ॥ स्वेदन, बस्तिकर्म धूम्राकापीना, विरेचन, औषधियोंका कवल मुँहमें रखना, नासलेना माथेकी फस्तको खुलाना, यव, लालधान, हंस, बनमुरगा तथा मोर के मांसका रस, मदिरा, गोखुरू, केवैया, जीवंतीशाक, कोमलमूली दाख, हड, बिजौरा, लहसन, नोन, अदरख, पान, मिरच, घृत ये स्वरभेदके रोगमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ कच्चाकैथा, मौलसिरी, कमलकीजड जामुनकेफल, तेंदूकेफल, कसायलीवस्तु, बमन, सोना, बकना, विरुद्ध अन्नपान ये सब स्वरभेद रोगमें अपथ्य हैं ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर भाषायांस्वरभेदप्रकरणम् ॥

अरुचिकर्मविपाक ॥ जो द्रव्यपात्र होइ श्रद्धाहीन व दान करे नहीं और करे तो तमोगुण से युतहोइ दानकरै वह मनुष्य अरुचिको वा शूलको प्राप्तहो ॥ प्रायश्चित्त ॥ इसरोगकी शांतिवास्ते कृच्छ्रचान्द्रायणव्रतकरि अथवा कृच्छ्रचान्द्रायणव्रतको करै। और व्रतकरनेकी सामर्थ्य नहो तो धनाढ्य पुरुष ५० ब्राह्मणों को मीठे पदार्थोंसे रोज़ भोजन करवावे जबतक रोगकी शांतिनहो और इसकीभी करनेकी सामर्थ्यन होतो जप,होम,तीर्थमें स्नानकरै और तीव्ररोगमेंतो ब्रह्मभोज्यहिदेवै ॥ ज्योतिषशास्त्रका अभिप्राय ॥ जिसका जन्मकाल में सहज स्थान कहे तीसरे भवन में क्रूरग्रहहो अथवा तीसरे भवन में वृहस्पति के संगक्रूरग्रहहो तो भी मंदाग्नि व पाप करनेवाला और बैरियों से हारै और चित्तमें संकट रहै ॥ प्रायश्चित्त ॥जप, होम तीर्थके स्नानसे शांतिहोवे ॥ अरोचकनिदान ॥ सुन्दर प्रकारसे परीक्षा करि अन्नको बारंबार मुंहमें घालै और स्वाद लगे नहीं इसको अरोचक कहेहैं। और अन्नको सुनि और स्मरण करि व देखि व स्पर्शकरि भोजन करने की इच्छा न उपजे इसको भक्त द्वेष कहे हैं और जिसकी अन्नमें बिलकुल बासना होवे नहीं इसको भक्तच्छंद कहेहैं यहरोग कोपवालेके व भयवालेके व ज्वरवालेके असाध्यहोय है ॥ अरोचककारण ॥ वायुका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ शोकका ५ भयका ६ अतिलोभका ७ क्रोधका ८ ऐसे अरोचक८ प्रकारके होयहैं ॥ बायुकाअरोचक लक्षण ॥ कडुआ खट्टा मुंह होय हियामें शूल चलै भोजनमें अरुचिहो और दांत आंवलजाइँ येलक्षण बायुकी अरुचिके हैं ॥सामान्यशास्त्रार्थ॥बायुकी अरुचिमें बस्तिकर्मकरै और पित्तकी अरुचिमें रेचनदेवैऔर कफकी अरुचिमेंबमन करावै और सन्निपातकी अरुचिमें त्रिदोष का नाश करने वाली व मनको हर्षकरनेवाली औषधीदेवै और अरुचिमें औषधोंकागोला बनाय मुंहमेंधरै और धूमाको पीवे और औषधों के पानी से मुंहमें कुरलेकरै और सुंदर स्वच्छ अन्नको खावै और उत्तम पानीको पीवै और आनन्द देनेवाले व आश्वासन देनेवाले इलाजकरै। और अरुचिमें अपनी प्रकृतिको श्रेष्ठहो वह भोजन करै और अपने देशके

बनेहुये नानाप्रकारके भक्ष्य पदार्थ लड्डूआदि खावै और आंवटी सांभरी, भाजी, कोसंबरी, चटनी इत्यादिक पानकरै और पंचामृत गुलाबअर्कफल, श्रीखंड, राव, पन्नाइत्यादि रसोंको सेवै और रूखे हलके पदार्थको खावै और अन्तःकरणको सुखदेनेवाले पदार्थोंको सेवै ॥ बचादिस्नेहपान ॥ बायुकी अरुचिमें बचका काढ़ादेइ छर्दीदेवै पीछे स्नेहके संग अथवा खट्टे रसके संग अथवा मदिरा के संग पिपली, बायबिड़ंग, जवाखार, रेणुक, भारंगी, रासना, इलायची हिंग,सेंधानोन,शुंठि इन्होंके चूर्णकोखावै और पित्तकीअरुचिमें गुड़ मुलहठी पानी इन्होंको मिलाय पीने से छर्दि करै पीछे सेंधा नोन खांड़ शहद घृत इन्हों की चटनी खवावै। और कफकी अरुचिमें निंबके रसको पिवाय बमनदेइ पीछे अमलतास के काढ़ा में शहद अजमान बुरकाइ पीवै अथवा वायुकी अरुचिमें कहे चूर्णको खावै और सबदोषों की अरुचि में सब औषधदेवै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ इच्छा की नाश से उपजी अरुचि में और भय से उपजी अरुचि में सुख देनेवाले पदार्थ व मनोवाञ्छित पदार्थ देवै। और द्रव्य के नाश से उपजी अरुचिमें पुराणों के वाक्यों से व वेदके वाक्योंसे ज्ञान उत्पन्न करावै ॥ पित्तकीअरुचिकालक्षण ॥ कडुआ खट्टा गरमबिरस सलोना जिसका मुंहहोय और शरीरमें दाहहो मुखशोषहो तो पित्तकी अरुचि जानिये ॥ कफकी अरुचिका लक्षण ॥ मुख मीठा हो और चिकना भारी शीतलहो और मुंहमें बुलबुला होइ ये लक्षण कफकी अरुचिके हैं। और इसमें आंत कफोंसे लिप्तहोयहै। शोक भय, अतिलोभ, क्रोध, भय,असंगल, गंध इन्होंके सम्बन्धसे अरोचकहोयहै तिन्होंके स्वाभाविक लक्षणकहेहैं और त्रिदोषकी अरुचि में अनेकभांतिके रसोंसेयुत मुखहोयहै और बायुकी अरुचिमें हृदय में शूल चलै और पित्तकी अरुचिमें तृषा, दाह, शोष येउपजैं और कफकी अरुचिमें मुंहसेकफपड़ै और सन्निपातकी अरुचिमें अनेक तरहकीपीड़ा, मोह, जड़पना,मनमें ग्लानि येउपद्रव होयहैं ॥ गंडूष ॥ थोड़ासा नोन मिलाय कांजीको गरमकरि कुरलेकर वा सूं मुंहका बिरसपना जावै ॥ कवलग्रह ॥ मिश्री,शुंठि,मिरच,पीपल,कैथ इन्होंके

चूर्णमें शहद मिलाय गोली बनाय खानेसे सब प्रकारके अरोचक जावें॥ बिड़ंगचूर्ण॥ बायबिडंगका चूर्ण १ तोला शहद ४ तोला इन्हों कीगोली बनाय मुखमें रखनेसे असाध्यभी अरुचिजावै॥ अम्लिका कवल॥ अमलीके शरबतमें गुड़,दालचीनी,इलायची,मिरच मिलाय पीनेसे अन्न खानेकी रुचि उपजे॥ कुष्ठादि कवल॥ कूट,कालानोन जीरा,खांड़,मिरच,मणयारीनोन इन्होंका चूर्ण अथवा धनियां,इलायची,पद्माख,बाला, पिपली,चन्दन, कमल, लोध, मालकांगणी, हड़ शुंठि, मिरच,पीपल,जवाखार इन्होंका चूर्ण अथवा अदरख, अनार का रस,जीरा,खांड़ इन्होंका चूर्ण ये चार योग तेल व शहदके सङ्ग खाने से ४ प्रकारके अरोचक रोगों को हरे॥ नींबूकापना॥ नींबूकारस १ भाग खांड़का शरबत ६ भाग और लौंग मिरच इन्हों का चूर्ण मिलाय पीवै यह सब पानोंमें उत्तम पानहै और यह नींबूका रस ज्यादे खट्टाहै और बायुको हरैहै और जठराग्नीको दीपनकरैहै और रुचि को उपजावे है और सबप्रकार के भोजनोंको पकावेहै॥ मुखधावन॥ जीरा,मिरच,कूट,खारीनोन,कालानोन,मुलहठी,खांड़, सिरसकातेल इन्होंसे मुंहमें कुरले करने से अरोचक जावै॥ दूसराप्रकार॥ करंजवाकी दतून करनेसे पीछे कछुक नोन मिलाय कांजी में पकाय कुरले करनेसे मुंहका बिरसपना जावै और रुचि उपजे॥ तीसरा प्रकार॥ दालचीनी,इलायची,तमालपत्र,शुंठि,मिरच,पीपल,हड़,बहेड़ा,आमला, हल्दी, दारुहल्दी, यवकासत्तू, शहद इन्होंका जल मुंहमें रख कुरले करनेसे और तिक्त व कड़ुवी औषधों के खाने से अरुचि का नाश होवै॥ शर्करादिभक्षण॥ खांड़, अनारकीछाल, मुनक्का, खजूर बिजौराकी केशर इन्होंको सेंधामें अथवा शहदमें मिलाय १ तोला भर खानेसे मुंहका बिरसपना जावै और रुचि उपजे। और पकी हुई अमलीको कूटि शीतलपानी मिलाय कपड़ा से छानि इलायची लौंग, कपूर, मिरच इन्होंका चूर्ण बुरकाय पना बनाय मुखमें धारण करि कुरला करनेसे अरुचिको हरे और पित्तको शांतकरै॥ तालीसादिचूर्ण॥ तालीसपत्र १ तोला मिरच २ तोला शुंठि ३ तोला पिपली ४ तोला वंशलोचन ५ तोला इलायची ६ माशा दालचीनी ६

माशा रांगकी भस्म ८ हिस्सा तांबाकी भस्म ८ हिस्सा खांड़ ३२ तोला मिलाय चूर्णकरै यह तालीसादि चूर्ण रुचिको उपजावै पाचकहै और कास, श्वास, ज्वर, अतीसार, छर्दि, शोष, अफारा, पांडु संग्रहणी, तिल्ली रोगों को हरे ॥ यवानी खांड़ व चूर्ण ॥ अजमोद १६ माशा अनारकी छाल १६ माशा शुंठि १६ माशा अमलीकी छाल १६ माशा अम्लबेतस १६ माशा खट्टाबेर १६ माशा मिरच १० माशा पिपली ४० माशा दालचीनी ८ माशा कालानोन ८ माशा धनियां ८ माशा जीरा ८ माशा खांड़ २५६ तोला इन सबों को मिलाय चूर्णकरै यह यवानी खांड़ व चूर्ण खानेसे पांडुको व हृद्रोग को व संग्रहणीको व ज्वरको व छर्दिको व शोषको व अतीसारको व तिल्लीको व पेटके अफाराको व अरुचिको व शूलको व मंदाग्नि को व बवासीरको व जीभके रोगको व कंठके रोगको हरै ॥ कारव्यादिगुटका॥ सौंफ, अजमान, जीरा, मिरच, दाख, अमली, अनार, कालानोन, गुड़, शहद इन्होंको पीसि बेरकी गुठली सरीखी गोली बनाय खानेसे अरोचकको हरे ॥ खंडार्द्रकयोग ॥ अदरख, ६४ तोला मिश्री ६४तोला मिरच ४ तोला पिपली३ तोला पिपलामूल ३ तोला शुंठि १॥ तोला जायफल १॥ तोला इलायची १॥ तोला चीता १॥ तोला वंशलोचन १॥ तोला इन्होंको सुखाय अलगअलग चूर्णकरि अदरखके टुकड़े बनाय गौ के घृत ३२ तोले में पकाय सबोंके बराबर खांड़ मिलाय १५ दिनतक खानेसे महापित्तको व अम्लपित्त को व सब पित्त बिकारोंको व सब अरुचिको व बातरोगको व मंदाग्नि को हरे ॥ राजिकादिशिखरिणी ॥ राई जीरा कूट भुनाहिंग शुंठि सेंधानोन गौकादही इन्होंको मिलाय कपड़ा मांहकेछानि रुचि माफिक पीनेसे रुचिको उपजावै और अग्नि को दीपनकरै ॥ आर्द्रक योग॥ अदरखको पानीसे धोइ टुकड़ेकरि पीछे घृतको गरमकरि टुकड़ोंको भूनि सेंधानोन मिरच जीरा स्याहजीरा इन्हों का चूर्ण मिलाय कल्क पकाय पीछे भुनेहुये यवोंका सत्तू घृत हिंग मिलाय पकाय ऐसे अदरखको शुद्धकरि स्वादुबनाय खानेसे अरुचिदोषमिटै ॥ ताम्रशिखरिणी ॥ गौकादूध भैंसकादही इन्हों को मिलाय कपड़ा में

घालि और सफ़ेद खांड़युत करि छानि इलायची लौंग कपूर मिरच इन्होंके चूर्णकी प्रतिवासदेइ पीनेसे रुचीको उपजावै यहतासाशिखरिणीहै॥ आमलकादिचूर्ण॥ आंवला चीता छोटीहड़ पिपली सेंधानोन इन्होंका चूर्ण भेदी है और सब ज्वरोंको व कफको नाशै और दीपन पाचनहै॥ खांड़ व चूर्ण॥ तालीसपत्र १ भाग चाव १ भाग मिरच १ भाग सेंधा १ भाग नागकेशर २ भाग पिपली २ भाग पिपलामूल २ भाग जीरा २ भाग अमली २ भाग चीता २ भाग दालचीनी ३ भाग नागरमोथा ३ भाग बेर ३ भाग धनियां ३ भाग अजमोद ३ भाग अम्लबेतस ३ भाग खांड़ १६ भाग अनारकी छाल ६॥ भाग इन्होंका चूर्णकरि खानेसे अतीसारको व कृमिको व छर्दिको व अरुचिको व अजीर्णको व गुल्मको व पेटके अफाराको व मंदाग्निको व मुखरोगको व पेटरोगको व गलरोगको व ववासीरको व हृद्रोगको व माटीसे उपजे रोगको व श्वासको व खांसीको हरै॥ कर्पूरादिचूर्ण॥ कपूर १ तोला दालचीनी १ तोला कंकोल १ तोला जायफल १ तोला तमालपत्र १ तोला लौंग २ तोला नागकेशर ३ तोला मिरच ४ तोला पिपली ५ तोला शुंठि ६ तोला मिश्री सबोंके बराबर मिलाय खानेसे रुचिको उपजावै और क्षयी की खांसीको व स्वरभेदको व श्वासको व गुल्मको व ववासीरको व छर्दिको व गलके रोगको हरै इसपै अन्नपान पथ्यसे रहै॥ चव्यादिचूर्ण॥ चाव अम्लबेतस शुंठि मिरच पीपल अमली तालीसपत्र जीरा बंशलोचन चीता दालचीनी तमालपत्र इलायची इन्होंके चूर्णमें गुड़ मिलाय खानेसे स्वरभेदको व पीनसको व कफको व अरुचिको हरैहै॥ आर्द्रकमातुलिंगादिलेह॥ अदरख ६४ तोला गुड़ ३२ तोला बिजौराकारस १६ तोला इन्होंको मंदाग्नीसे पकाय पीछे दालचीनी १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची १ तोला शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आमला १ तोला धमासा १ तोला चीता १ तोला पिपलामूल १ तोला धनियां १ तोला जीरा १ तोला स्याहजीरा १ तोला इन्होंके चूर्णमें मिलाय खानेसे अरुचि को व क्षयी को व मंदाग्नि को व कामला को व पांडु को व सोजा को व

खांसीको व श्वासको व अध्मान को व पेटके रोगको व गुल्मको व प्लीहा को व शूलको हरै ॥ जीरकादिघृत ॥ जीरा धनियां इन्हों के कल्कको ६४तोले घृतमें पकायखानेसे कफको व पित्तको व अरुचि को व मन्दाग्निको व छर्दि को हरै है ॥ सूतादिबटी ॥ पारा, गंधक अभ्रक भस्म, पिपली, अमली, पीपल, सेंधानोन इन्होंकी गोली बनायखानेसे अरुचिकोहरै और जीभ व मुखकी शुद्धिकोकरै है ॥ लघुचक्रसंधान ॥ गुड़ १ भाग शहद २भाग कांजी४भाग इन्होंको माटी के बरतनमेंघालि अन्नके कोठामेंगाड़े ३ दिनबाद काढ़ि बरते यह अरुचिको नाशै ॥ केसरादिलेह ॥ बिजौराकी केशर को सेंधानोनमें शहदमें मिलाय १तोलाभर चाटनेसे मुंहका बिरसपनाजावै । बिजौराकी केशर, सेंधा, घृत इन्होंको मिलायखाने से अथवा अनारदानाको खानेसे अरुचि नाशहोवै यह चरकका मतहै ॥ आर्द्रकदाड़िमयोग ॥ पहिले जीभ व कंठको शुद्धकरि पीछे अदरख सेंधानोन को खावै अथवा अनार के रसमें शहद मिलाय चाटै यह अग्नि को दीपनकरै और अजीर्णको व अरुचिको नाशै ॥ दाड़िमचूर्ण ॥ अनार ८तोला खांड़ ३२तोला शुंठि ४तोला मिरच ४ तोला पीपल ४तोला दालचीनी तमालपत्र इलायची मिलके ४ तोला इन्हों का चूर्णकरिखावै यहचूर्ण दीपनहै और रुचिकोपैदाकरैहै और पीनस को व श्वासको व खांसीको हरैहै ॥ पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ पिपली १तोला पिपलामूल १तोला चाव१तोला चीता१तोला शुंठि १तोला मिरच १तोला अजमान १तोला अमली १ तोला अम्लवेतस १ तोला इलायची १तोला जायफल १ तोला कैथ१ तोला मिश्री १६तोला इन्होंका चूर्णकरिखावै यहअग्निकोदीपनकरै और रुचिकोउपजावै । और प्लीहाको व माड़ापनाको व बवासीरको व श्वासको व शूल को व ज्वरको नाशै और वायुको अनुलोमनकरै और आनन्दको बधाइ कंठ जीभकोशुद्धकरै ॥ छत्रादिचूर्ण ॥ आमला, अमली, दाख अनार, जीरा, कालानोन, गुड़, शहद इन्होंको मिलायखानेसे सब प्रकारके अरोचकरोग जावैं ॥ अम्लिकादिपेय ॥ अमली, कालानोन गुड़, शहद इन्हों को मिलाय पीनेसे अरुचि जावै ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥

छोटी इलायची, दालचीनी, नागकेशर, लौंग, मिरच, पिपली, शुंठि येसब एकोत्तरवृद्धिसेलेइ सबकेबराबर खांड़ मिलाय गोली बनाय खानेसे श्वासको व खांसीको व मुंहसे पानी पड़ने को व हृद्रोगको व पसलीरोगको व अरुचिको व कंठरोगको व मुखपाककोहरै ॥ त्र्यूषणादिबटी ॥ शुंठि, मिरच, पीपल, कैथ, खांड़, कालानोन इन्होंकी गोली बनाय खानेसे रुचि उपजि भीमसेनके समान भोजनकरै ॥ अमृतप्रभावटी ॥ मिरच ४तोला पिपलामूल४तोला लौंग४तोला हड़ ४ तोला अजमाइन४ तोला अमली४तोला अनारदाना ४ तोला खारीनोन ४ तोला कालानोन ४ तोला सांभर नोन ४ तोला पिपली ८ तोलाजवाखार ८ तोला चीता ८तोला जीरा ८ तोला शुंठि ८ तोला धनियां ८ तोला इलायची ८ तोला आमला ८ तोला इन्होंका चूर्ण करि बिजौराके रसमें ३ भावनादेइ गोली बनाय छाया में सुखाय खानेसे अजीर्णको हरै और जठराग्नीको बढ़ावै इसका नाम अमृतप्रभागोली है॥ आकल्लकादिचूर्ण ॥ अकरकरा, सेंधानोन, चीता, शुंठि आमला, मिरच, पिपली, अजमाइन, हड़ ये सब बराबरभाग लेइ बिजौराके रसमें गोली बनाय खानेसे खांसी को व कंठरोग को व श्वासको व पीनसको व खेहरको व मृगीरोग को व उन्माद को व सन्निपातको नाशकरै ॥ लवणार्द्रकयोग ॥ भोजन की आदि में नोन अदरख का खानारुचि को उपजावै है और जठराग्नी को दीपन करै है और जीभको व कंठ को शुद्धकरै है ॥ शृङ्गबेरादिलेह ॥ अदरखके रसमें शहद मिलाय खानेसे अरुचिको व श्वासको व खांसी को व खेहरको व कफकोहरै ॥ त्वङ्मुस्तादिचूर्ण ॥ दालचीनी, नागरमोथा, इलायची, धनियां अथवा नागरमोथा, आमला, दालचीनी दारुहल्दी, अजवाइन अथवा पिपली गजपिपली अथवा अजमान अमली येपांचोंचूर्ण अलग२सबतरहकीअरुचिकोहरैं॥ दाडिमरस॥ अनारके रसमें बायबिडंगकाचूर्ण मिलाय खानेसे असाध्य अरुचिकोहरै॥ जीरकादिचूर्ण ॥ जीरा६माशा खांड़१ तोला शहद४ तोला मिलाय मुंहमें रखनेसे रुचिको पैदाकरै॥ कपित्थादिचूर्ण ॥कैथ की गिरी, शुंठि, मिरच, पीपल इन्होंकेचूर्णमें शहद खांड़मिलायखाने

से मुहमें सवतरहके अरोचक जावें ॥ शुंठ्यादिगुटी ॥ शुंठि १ भाग पिपली २ भाग निशोत ३ भाग हड़ ४ भाग आंवला १॥ भाग मिरच ४ भाग सेंधानोन ४ भाग इन्होंको नींबू के रसमें खरलकरि ४ माशेकी गोलीबनाय खाने से मंदाग्नि को हरे ॥ अरुचिमेंपथ्य ॥ वस्तिकर्म विरेचन बलके अनुसार बमन धूमा का सेवन कवलग्रह चरपरे वृक्षकी दतुन नानाप्रकारके अन्न पान गेहूं मूंग लालधान साठीचावल सुवर बकरा शशा हिरन इनकेमांस और चेंकुऋसांड़ मधुरालिका इल्लीश प्रोष्ठीखलेशकवयी रोहू इतने प्रकारकी मछली कोहलावेतकी कोंपल नवीनमूली बैंगन सहिंजना सेमल अनार गजपिपली परवर कालानोन घृत दूध कोमलताड़ लहसन ज़मींकन्द दाख आंब नींब कांजी मदिरा शिखरणी दही मट्ठा अदरख कंकोल छुहारा चिरौंजी तेंदू का फल पका कैथा बेर विकंकत ताल फलकी मींगी कपूर मिश्री हड़ अजमायन कालीमिरच हींग मीठी खट्टी चर्परी वस्तु देहका धोना ये सब अरुचि में पथ्य हैं ॥ अथ अपथ्य ॥ खांसी डकार नींद बमन इन्हों के बेगका रोकना अहित अन्न रुधिर निकालना क्रोध लोभ भय शोक दुर्गंध सूर्यकी सेवा ये अरुचिमें अपथ्य हैं ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघंटरत्नाकर
भाषायांअरुचिप्रकरणम् ॥

छर्दिकर्मविपाक ॥ जोमनुष्य ब्राह्मणोंको केश, कीड़ा, काक, कुत्ता इन्होंसे दूषित अन्न से भोजन करावे वह दूसरे जन्ममें छर्दिको प्राप्तहोवै ॥ ज्योतिषशास्त्राभिप्राय ॥ जिस के जन्मकाल में षष्ठ स्थान में चन्द्रमा व शुक्र हो अथवा छठास्थान पै इन्होंकी दृष्टि होवै वह छर्दिवाला अथवा तृषावाला हो अथवा छठे स्थानपै बुध हो और क्षीण चन्द्रमाकी दृष्टि हो तो छर्दि वा तृषा रोगी होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इन ग्रहों की शांतिके वास्ते पूर्वोक्त जपादिक करावै ॥ छर्दिनिदान ॥ बहुत चिकनी बस्तुके खानेसे भयसे और अजीर्ण से और आमके दोष से और प्यास लगनेसे दुर्गंधि देखे से सुगली वस्तु के खानेसे पेटमें कीड़े पड़नेसे खेदकरनेसे स्त्री के गर्भरहनेसे अतिशीघ्र भोजन करने से वायु पित्त कफ दुष्टहोय अंगों को पीड़ा करि मुख के द्वारा खाया पीयाको कढ़ायदे है इसको मनुष्य छर्दि कहतेहैं वह ५ प्रकारकीहै वातकी १ पित्तकी २ कफकी३ सन्निपात की ४ सुगली वस्तु आदि खाके दवाकी ५ ॥ पूर्वरूप ॥ हियासूखे और मुंहसे पानी पड़े और डकार नहीं आवे मुंह कड़ुवाहोय अन्न पान ऊपर रुचि जातीरहे तब जानिये वमनहोगी ॥ वायुकी छर्दि-कालक्षण ॥ हिया और पसवाड़ा में पीड़ाहो मुंहमें शोषहो मथ-वाय होय नाभि दूखे खांसी और स्वरभेद होय डकार का शब्द ऊंचा होय वमन में झाग आवै और वमन का रंगकालाहोय व कसायला हो बहुत वमन से वेगसे वमनथोड़ा होय दुःखबहुतपावे ये लक्षणवायुकी छर्दि के जानिये ॥ सैंधवयोग ॥ घृत में सेंधानोन को मिलाय पीने से बातकी छर्दिजावे ॥ लवणत्रययोग ॥ दूधपानी को मिलाय सेंधानोन, खारीनोन, कालानोन इन्होंको घालिपीने से अथवा सांभरनोन घालिपीनेसे बातकी छर्दि जावे ॥ धान्याकयूष ॥ धनियां, शुंठि, दशमूल इन्होंकाकाढ़ा अथवा रस अथवा यूष इसके पीनेसेबातकी अरुचिजावे अथवा शंखाहोलीके रसमें शहद व मिर-चोंके चूर्णको मिलाय पीनेसे वायुकी छर्दि जावे ॥ पित्तछर्दि लक्षण ॥ मूर्च्छाहो प्यासहो और मुखशोष होय माथो तातोरहे तालुवा और नेत्रगरमहो अंधेरीआवे भौरआवे और गरम हरालाल कड़ुवा धूम-

वर्ण और दाहसहित वमनकरै येलक्षण पित्तकीछर्दिकेहैं॥ तंडुलजल॥ पान दूबको चावलोंके पानीसे पीसि पीनेसे अथवा धानकी खीलों को आंवला के रसमें पीसि मिश्री मिलाय खानेसे पित्तकी छर्दि जावै॥ लाजादियूष॥ धानकीखील, मसूर, सत्तू, मूंग इन्होंकी यवागूमें शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी छर्दि जावै अथवा सुगन्धित पदार्थ और मीठा कड़ुवा रस इन्होंका यूष बनाय पीनेसे अथवा माटीका गोला बनाय अथवा लोहेका गोला बनाय अग्निमें तपाय पानीमें बुझाय उस पानीको पीनेसे पित्तकी छर्दि व तृषा जावै॥ परपटादि काढ़ा॥ पित्तपापड़ा के काढ़ाको ठंढाकर शहद मिलाय पीनेसे पित्त की छर्दि को व शिरके तापको व नेत्रोंकी दाह को हरै॥ मक्षिकाविड़वलेह॥ खांड़, चन्दन, शहद इन्हों में माखी की बीट को मिलाय पीनेसे उपद्रव सहित पित्तकी छर्दि जावै॥ गुडूच्यादिकाढ़ा॥ गिलोय त्रिफला, निंब, परवल इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी छर्दि को हरै॥ लाजशक्तुपान॥ धानकी खीलों को सत्तू में घृत खांड़ शहद मिलाय पीनेसे पित्तकी छर्दिको हरै॥ कफकी छर्दिका लक्षण॥ तंद्रा मुखमीठा होय कफपड़े नींदआवै भोजनमें अरुचिहो शरीर भारीरहे चिकनो मीठोजाड़ो कफजाड़े रोमांचहो और थोड़ीपीड़ाहो ये लक्षण कफकी छर्दिकेहैं॥ सामान्यचिकित्सा॥ कफकी छर्दिमें वमन करावै सिरस, सेंधानोन, मैनफल, निंब, पिपली इन्होंकेकाढ़ासे और चावल, गेहूं, मूंग, सत्तू, मटर, साठीचावल, परवल इन्होंका यूष व भोजन बनाय देवै॥ शालिभक्त॥ लाल साठी चावलोंको गौके दही अरु खांड़ में मिलाय भोजन करनेसे कफकी छर्दि जावै॥ विड़ंगादिचूर्ण॥ वायविड़ंग, त्रिफला, शुंठि, मिरच, पीपल इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय चाटनेसे उपद्रव सहित कफकी छर्दि जावै॥ जाम्बवादियोग॥ जामन, बेर, बिजौरा, नागरमोथा इन्होंके चूर्णको शहद में मिलाय चाटने से अथवा काकड़ासींगी धमासा इन्होंको शहद में मिलाय चाटनेसे कफकी छर्दिजाय॥ अथसन्निपातकीछर्दिका लक्षण॥ शूलहोय अन्न पचैनहीं अरुचिहोय दाहहोय प्यासहोय श्वासहोय मोह होय ऐसा रोग घना निरन्तर रहै सालोन खाटो नीलो जाड़ो

गरम लाल वमनकरै तो सन्निपात की छर्दि जानिये ॥ विल्वादिकाढ़ा ॥ बेलपत्रकी छालके काढ़ामें व गिलोयके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे सन्निपात की छर्दि जावै व पित्तपापड़ा का काढ़ा पीने से पित्तकी छर्दि जावै ॥ कोलाद्यवलेह ॥ बेरकी गुठलीकी गिरी आंवला की गिरी माखीकी बीट खांड़ शहद पीपली येसब चावलोंके धोवन के पानीमें मिलाके पीनेसे छर्दि को हरै ॥ सुरसापान ॥ तुलसीकेरस में इलायचीका चूर्ण मिलाय पीनेसे सन्निपातकी छर्दि जावै ॥ मनसिलादियोग ॥ मनसिल १ भाग पीपल १ भाग धानकीखील ३ भाग इन्होंको कैथकेरसमें मिलाय शहद घालि पीनेसे छर्दिजावै ॥ अश्वत्थवल्कलादियोग ॥ पीपलकी छालको सुखाय अग्निमें जलाय फिर राख को पानी में मिलाय पीनेसे भयंकर छर्दिभी जावै ॥ लाजादियोगत्रय ॥ धानकीखील, कैथ, शहद, पिपली, मिरच इन्होंकालेह व शहद, हड़, शुंठि, मिरच, पीपल, धनियां, जीरा इन्होंका लेह व हड़ गिलोय, मिरच, शहद, पिपली इन्होंका लेह सबप्रकार की छर्दिको व अरुचिकोहरै ॥ धात्रीफलपान ॥ आमला ४ तोला दाख ४ तोला खांड़४तोला शहद४तोला पानी६४तोला इन्होंको मिलाय कपड़ासे छानिपीनेसे सन्निपातकी छर्दिजावै ॥ मसूरसत्तू ॥ मसूर सत्तू, शहद इन्होंको अनार के रसमें मिलाइ पीनेसे सन्निपातकी छर्दि जावै ॥ एलादिचूर्ण ॥ इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरकीगुठली, धानकीखील कांगनी, नागरमोथा, चन्दन, पिपली इन्होंके चूर्ण मे मिश्री शहद मिलाइ पीनेसे सन्निपात की छर्दिजावै ॥ पद्मकादिघृत ॥ पद्माख कैथ, निंब, धनियां, चन्दन इन्हों का काढ़ा व कल्क में ६४ तोला घृतको पकाइ खानेसे छर्दिकोहरै ॥ चन्दनादिपान ॥ चन्दन, कमलकी डांडी, बाला, शुंठि, बासा, शहद इन्होंको चावलोंके धोवनमें पीनेसे छर्दिजावै ॥ उदीच्यजल ॥ बाला, गेरू इन्होंको चावलके धोवनसे पीसि शहद मिलाइ चाटनेसे व जावित्री के रसमें पिपली मिरच का चूर्ण व शहद खांड़को मिलाइ पीनेसे चिरकालकी छर्दिजावै ॥ चंदनपान ॥ चन्दन १ तोला आमलाका रस शहद मिलाइ पीनेसेछर्दि जावै ॥ मुग्दकाढ़ा ॥ भूनीमूंगों का चूर्ण, धानकी खीलों का चूर्ण

शहद, खांड़ इन्हों को मिलाइ पीनेसे छर्दि को व अतीसार को व दाहको व ज्वरकोहरै ॥ कीलमज्जा ॥ बेरकी मींगी, पिपली, मोर के पंखकीराख,खांड़,शहद इन्होंको मिलाइ चाटने से हिचकी को व छर्दिको हरै ॥ बीजपूरादिपुटपाक ॥बिजौराकेपत्ते, आंबकेपत्ते,जामनकेपत्ते और इन तीनोंकी जड़ इन्होंको पुटपाककी विधिसेपकाइ रस निचोड़ि शहद मिलाइ चाटने से सबप्रकार की छर्दि जावै ॥ हरीतकी चूर्ण ॥ हड़के चूर्णमें शहद मिलाइ चाटनेसे छर्दि जावै ॥ माटी के गोला को लोहासे मढ़ितपाइ पानी में बुझाइ पानी पीनेसे छर्दि जावै ॥ जंबाम्रपल्लवरस ॥ जामनके पत्ते, आंबके पत्ते, बाला बड़कापारंवा व पान इन्हीं के काढ़ाको ठंढाकरि शहद मिलाइ पीनेसे छर्दि को व अतीसारको व मूर्च्छाको व तृषाको हरै ॥ हिंग्वादि पान ॥ छोटिसारिवाकी जड़के काढ़ा में हिंगमिलाइ पीने से सब प्रकार की छर्दि जावै व जायफल को खाने से छर्दि व शोष व जागणा इन्होंको हरै ॥ उग्रगंधादियोग ॥ बचको कांजी के संग पीने से छर्दि जावै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ आमाशय में ग्लानिहोने से छर्दि उपजे है इसवास्ते लंघनकरावै वायुकीछर्दिको वर्जिकरि और रेचन देनेसे भी कफपित्तकी छर्दि को नाश होहै। और पहिले वायु की छर्दि में लंघन हितनहींहै परंतु वमनकराइ जुल्लाबदेवै॥ जातिपत्रचूर्ण ॥ जावित्रीके रसमें पिपली, मिरच, खांड़, शहद मिलाइ चाटने से बहुत दिनों की छर्दि जावै ॥ असाध्य छर्दिलक्षण ॥ मल पसीना, मूत्र, पानी इन्होंको प्राप्त करनेवाला वायु नाड़ीके स्रोतों को रोकि ऊर्ध्वगत होहै और उत्पन्न वातादिदोषों के संचयको मनुष्यके कोठासेउठाइ और विष्ठा मूत्रकेसमान गंधवाला और श्वास खांसीयुत ऐसा छर्दनकरै बहुत वेग से इस असाध्य छर्दि से संयुक्त जल्दी मरे ॥ आगंतुकछर्दिलक्षण ॥ बात पित्त कफकी छर्दि कहचुके हैं और भयादि से उपजी छर्दि को भी कहचुके परंतु कृमि से उपजी छर्दिमें शूलहो और मुंहसे लार बहुत पड़े और कृमिरोग और हृद्रोग युत होयहै। और क्षीण मनुष्यकी छर्दि ज्यादा वेगवाली और उपद्रवों सहित और लोहू राध से संयुक्त हो और व-

मन में चन्द्रिकासी मिली दीखे वह असाध्य होय है और जो छर्दि साध्यहो और उपद्रवों से रहित हो उसकी चिकित्सा करे॥ उपद्रव॥ खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, तृषा, चिंता, हृद्रोग, तमक ये छर्दि के उपद्रव हैं॥ सामान्यचिकित्सा॥ भय से उपजी छर्दि को भयनाशक पदार्थोंसे हरे और खोटी दुर्गंधसे उपजी छर्दिको सुगंध के पदार्थोंसे जीते व मनोबांछित पदार्थोंसे जीते। और अहितपदार्थ से उपजी छर्दिको लंघनसे व वमनसे व हितकारक भोजन से हरे और कीड़ोंसे उपजी छर्दिको कृमिरोग व हृद्रोग के औषधों से जीते। जैसा दोष देखे तैसी विधिकरे और बहुत दिनोंकी छर्दि में वायुको हरनेवाली क्रियाकरे॥ आम्रास्थिकाढ़ा॥ आंब की गुठली बेल इन्होंके काढ़ामें खांड़ शहद मिलाइ पीनेसे छर्दिको व अतीसार को हरे दृष्टांत जैसे अग्निआहुतीको॥ जम्बूपल्लवादिकाढ़ा॥ जामन के पत्ते, आंबकेपत्ते १०० लेइ ठंढेपानीमें मिलाइ शहद व धानकी खील मिलाइ पीनेसे छर्दिको व अतीसारको हरे॥ मयूरपक्ष भस्मावलेह॥ मोर के पंखकी राख में शहद मिलाइ चाटने से उपद्रव सहित छर्दिको हरे॥ गोमयादि भस्मयोग॥ पुरानी गोणीकी राख को पानीमें मिलाइ शहदयुत करिपीनेसे छर्दिकोहरे जैसे अग्नि तृणों को तैसे॥पटोलादिघृत॥ परवल, शुंठि इन्हों के कल्कमें ६४ तोला घृतको पकाइ खानेसे कफ पित्तकीछर्दिजावे॥ रंभाकंदयोग॥ केला का काढ़ा व रसमें शहद मिलाइ पीनेसे छर्दि जावे॥ दधित्थरसादिलेह॥ कैथा के रसमें शहद पिपली मिलाइ बारंबार पीने से छर्दि रोग जावे॥ करंजादिलेह॥ करंजके कोमल पत्तोंका, बिजौरा, सेंधा इन्हों का कल्क करि खट्टेरस के संगखाने से छर्दिजावे॥ करंजबीजादियोग॥ करंज के बीजों को कछुक भूनि टुकड़े करि बारम्बार खाने से छर्दिको हरे॥ शंखपुष्पीरसादिपान॥ शंखपुष्पी का रस ८ माशा मिरच शहद मिलाइ पीने से छर्दि जावे॥ जीरकादिधूम॥ रेशमी पीतांबरमें जीराआलि बत्ती बनाइ धूपदेइ आगके संयोग से यह सबप्रकार की छर्दिको हरे॥ वांति हृद्रस॥ लोहकाचूर्ण, शंख चूर्ण, गंधक, पारा ये समानभागलेइ खरलमें महीनपीसि घीकुवार-

पट्टाके रसमें खरलकरि पीछेधतूराके रसमें खरलकरि पीछे चूका के रसमें खरलकरि गोला बनाइ कपड़माटिदेइ गजपुटमें पकाइ पीछे रसको अजमोद वायविडंगके संग ६ रत्तीभर खानेसे कृमिरोगजावै और यह रस शहद पिपलीखार पानी के संग खाने से छर्दि जावै यह वांतिहार मुनिने कहाहै ॥ जातिरसपान ॥ जावित्रीकारस, कैथा कारस, पिपली, मिरच, शहद मिलाइ चाटने से बधीहुई छर्दि भी जावै ॥ यष्ट्यादिपान ॥ मुलहठी, चंदन इन्हों को दूधमें पीसि दूधमें मिलाइ पीनेसे लोहूकी छर्दिजावै ॥ गुडूच्यादिरस ॥ गिलोयको रातिमें भिगोइ प्रभात पानी में पीसि शहद मिलाइ पीने से सन्निपात की छर्दिजावै ॥ पारदादिचूर्ण ॥ पारा, गंधक, कपूर, बेरकीगिरी, लौंग नागरमोथा, कांगनी, धानकीखील, कालाअगर, पिपली, दालचीनी इलायची, तमालपत्र इन्होंके चूर्णको चंदनके काढ़ामें भिगोइ शहद मिरचभिलाइ १ माशाभर खानेसे प्रबलछर्दिभीजावै ॥ जीरकादिरस ॥ जीरा, धनियां, हड़, शुंठि, मिरच, पीपल, शहद इन्हों के संग पारा कीभस्म को मिलाइ खाने से जल्दी छर्दि जावै ॥ वमनामृतयोग ॥ गंधक, कमलाक्ष, मुलहठी, शिलाजीत रुद्राक्ष, सुहागा, हिरनका सींग, चंदन, वंशलोचन, गोरोचन इन्होंको समान भागलेइ बेलकी जड़के काढ़ामें १ पहरतक खरलकरि पीछे ३ रत्तीभर खानेसे नानाप्रकार के अनुपानों के संग सन्निपातकी छर्दि को हरै यह वमनामृत योग कमलाकर वैद्यराजने अपने मुखसे कहा है विरेचन वमन लंघन नहाना शुद्ध खीलों का मांड़ साठी चावल तथा धान मूंग मटर गेहूं ये सब पुराने पथ्य हैं शहद शशामोर तीतरलवा आदि जंगली मृग और पक्षी नानाप्रकारके मनोहर रूपरस, गंध खांड़काजूस, रागखंड कांवलिक, मदिरा, बेतकी कोपल धनियां नारियल, जंभीरीनींबू, आंवला, आम, बेर, दाख ये सब पकेहुये हड़, अनार, बिजौरा, जायफल, नेत्रबाला, नींब, अडूसा, मिश्री, सौंफ नागकेशर हित तथा मनके प्रसन्न करनेवाले भोजन भोजनकेपीछे मुखमें शीतल जलका डालना कस्तूरी चन्दन चन्द्रमा के किरण मनोहरगंध तथा लेप सुगन्धित फूल तथा पीनेकी वस्तु और लेप

मनके अनुकूल रूप गंध रस शब्द और स्पर्श नाभिसे तीनयवके प्रमाण ऊपर दागदेना ये सबबमनसे व्याकुलरोगी को पथ्यहैं॥ अथ अपथ्य नामलेना॥ बस्तिकर्म स्वेदन स्नेहपान फस्त खुलाना दतून पतला अन्न भयवाली बस्तुकी इच्छा भय उद्वेग गरम चिकने अयोग्य अहित और चिकने अन्न केला सेमि तोरि महुआ मजीठ इलायची सरसों देवदाली कसरत अहित तथा दुष्टजलकापीना इन सबोंको छर्दिरोगमें सावधानीसे त्यागकरे॥

इतिवेरीनिवासिरविदत्तविरचितनिघंटरत्नाकर
भाषायांछर्दिप्रकरणम्॥

तृषाकर्मबिपाक॥ जो मार्ग में गौ व ब्राह्मणों को पानी न प्यावै वह तृषारोगी होवै॥ प्रायश्चित्त॥ पकी खीर बनाय ब्राह्मणों को जेवांय पानी से भरे कलशों का दान देने से तृषा शान्ति होवै॥ तृष्णानिदान॥ भयसों खेदसों बलके नाशसों बँधो जो पित्त सो वायुसे मिल तालुवामें प्राप्तहोय तीसके रोगको उत्पन्नकरैहै॥ तृषास्वरूप॥ निरन्तर पानी पीतोजाय और तृप्ति होवैनहीं फेर पानी पीने की इच्छाहीबनीरहै और पानीमेंही मनरहै यह तीसका स्वरूपहै॥ तृषा संप्राप्ति॥ वातादि दोषोंसे जल के बहनेवाली नसें रुकी ७ प्रकार की तीसको पैदाकरैहैं वायुकी १ पित्तकी २ कफकी ३ शस्त्रादिक्षत की ४ क्षयकी ५ आमकी ६ भोजनकरवाकी ७ इन्होंके लक्षण क्रम से कहे हैं॥ वातजतृषालक्षण॥ मुंह उतरजाय कनपटी और शिर में पीड़ा हो आवै नसें रुकजावैं मुखमें से रसका स्वाद जाता रहै ठण्ढा पानीपीनेसे तीसबढ़ै तब जानिये वायुकी तीसहै॥ पूर्वरूप॥ तालु, ओठ, कण्ठ, इन्होंमें शूल व दाहहो और सन्ताप, मोह, भ्रम प्रलाप ये तृषाके पूर्वरूपहैं॥ वाततृषाचिकित्सा॥ वातनाशक और हलके अन्नपान और शीतल और जीवनीयगण में व दूधमें सिद्ध किया घृत ये हित हैं॥ दूसराप्रकार॥ सोना व चांदी के बुझा पानी को पीने से बातकी तृषा जावै॥ तेल॥ सुगन्धित तेल को शिर में

और सब अंगों में मालिश करने से तीसजावै॥ पानी ॥ बालूरेतको गरमकरि पानीमें बुझाय छानि कछुकगरम पीनेसे व पानीमें शहद खांड़मिलाय पीने से तीसजावै ॥ पित्तकी तृषालक्षण ॥ मूर्च्छा होय भोजन प्यारालगै नहीं दाहहो नेत्रलाल मुखमें घृणाशोषहोय ठंढा सुहावै मुंहकड़ुआहोय शरीरमें ताप रहै मल मूत्र नेत्र पीलाहोय ये लक्षण पित्तकी तीसके हैं ॥ चिकित्सा ॥ इसतीस में पकेगूलर के फलके रसमें मिश्री मिलायपीवै और स्वाद, कड़ुआ, पतला, ठंढा ये पित्त की तृषाकोहरै हैं पानी में धानकी खीलका चूनमिलाय धूप में धरि पीनेसे पित्तकी तीसजावै ॥ तंडुलोदकपान ॥ भोजन जीर्ण हुये बाद तीसलगे तो चावलों के धोवन में शहद मिलाय पीवै ॥ मधूकादिफांट ॥ मोहाकेफूल, गंभारी, चन्दन, बाला, धनियां, मुनक्का इन्होंके फांटबनाय ठंढाकरि खांड़मिलाय पीने से तृषाको व पित्त को व दाहको व मूर्च्छाको व भ्रमको हरै इसमें संशय नहीं ॥ कफ कीतृषाकालक्षण ॥ जठराग्नि कफरोकै तब अग्निकी गरमी जल के बहनेवाली नसोंको सुखाइ कफकी तीसको उपजावै है तब वह ती-सकरि मनुष्य पीड़ितहो शरीरमें भारीतपनि प्राप्तहोय है और उस का मुँह मीठारहे और शरीर सूखताजाय ये कफकी तीसके लक्षण हैं॥सामान्यचिकित्सा॥ कड़ुआ,पतला,कछुकगरम,ऐसेअन्न,पान,औ-षध कफकीतीसको नाशैहैं ॥विल्वादिकाढ़ा॥ वेलफल,तूरी, धवकेफूल शुंठि,मिरच,पीपल,चाव,चीता, डाभजड़,तिलकांड इन्होंकाकाढ़ादेइ वमन कराय व निंबका काढ़ादेइ वमनकरावै॥ कफतृषाप्रयोग ॥ कफ की छर्दिमेंकहे औषध कफकी तीसमेंबरतै और स्तंभ, अरुचि, अ-जीर्ण, आलस्य, छर्दि इन्होंसे मिली कफकी छर्दिहो तो शहद दही मिलाय पीछे पानी में नोनमिलाय पानकरि वमनलेवै पीछे अनार निंबु, कोकंब, बिजौरा इन्होंकाकाढ़ा व खट्टेपदार्थ देवै व दूधमें खांड़ शहद मिलाय पीवै ॥ क्षतजतृषालक्षण ॥ शस्त्रादिक के लागे सों श-रीरका लोहू निकलताहोय तासों पीड़ाहोय तीस बहुतलगै यह चौथी तृषा है ॥क्षतजतृषाचिकित्सा ॥ इसमें क्षतको दूर करनेवाले और तृषाको हरनेवाले औषधोंके रसको पिवाय लोहूको बंधकरै ॥

क्षयजतृषालक्षण ॥ रस के नाशहोने से दिनमें औ राति में पानी को पीवै औ सुखको प्राप्त न होवै और कोई कोई वैद्य ऐसी तीस को सन्निपात से उपजी कहेहैं। और हियादूखै कंपहोय मुखसूखै शरीर में शून्यताहो प्यास बहुतलागे पीवता धायेनहीं ये लक्षण क्षयकी तीसके हैं ॥ चिकित्सा ॥ क्षयकी तृषाको दूधपानी से व मांसके रससे व मुलहठी के काढ़ासे दूरकरै ॥ आमजतीसलक्षण ॥ तीनों दोषों के लक्षणहों और हृदयमें शूलहो वमनकरै और शरीर माड़ाहो ये लक्षण आमकी तीसके हैं। बेलफल बच इन्हों से युत दीपने काढ़ाको पिवाय आमकी तीसको जीतै व भारी अन्नखाने से उपजी तीसको लेखन कर्मसेजीतै और क्षतकी तीसमें लेखनकर्म नकरै ॥ अन्नजातृषालक्षण ॥ बहुत चीकनो खाटो सलोनो भारीअन्न खायेहोय तबजल्दी तीसलगै इसेअन्नकी तीसकहे हैं ॥ चिकित्सा ॥ सचिक्कण भोजन खानेसे तृषा उपजैतो गुड़के शरबतसे शांतकरै और दुर्बलमनुष्योंकी तीसको बालाका काढ़ादेइ शांतकरै ॥ उपद्रव व असाध्य लक्षण तृषा ॥ माड़ास्वरहो मोह हो माड़ा मुँह उतरा रहै हृदय कंठ तालुआ ये सूखेरहैं ये उपद्रवयुत तृषाहोतो कष्टरूपहै व ज्वर, मोह, क्षय, श्वास खांसी इन उपद्रवों युत तीसहो तो असाध्य जानो व शरीरमाड़ाहो और छर्दिहोवे घोर उपद्रवों युत तीसहोय तो अवश्य रोगी मरै ॥ जलपाननियम ॥ हितकारक अन्न पान औषध देइ तीसको नाशै और इसको शांतकरै बाद अन्यव्याधिभी चिकित्सा करने योग्य है तीसवाला मोहको प्राप्तहो और मोहवाला प्राणों को त्यागै इसवास्ते सब अवस्थाओं में पानीको बंधनकरै पीने से अन्न के बिनाभी मनुष्य बहुत दिन जीवैहै और पानी के बिना तत्काल मरजायहै ॥ गंडूष ॥ परवलजड़, अदरख, तुरी, मुलेठी, चिकनीसुपारी, तहानवेल काकंद, खैर इन्होंके काढ़ाको ठंढाकरि कुरलेकरनेसे दारुणगलशोष जावै गंडूष, चन्दन, पद्माख, नागरमोथा, धनियां, निंबकीछाल, कोहला खैरसार, दूब सफ़ेद धतूरा इन्होंका अष्टमांश काढ़ाकरि ठंढाकरिकुरले करनेसे कंठके शोषकोहरै ॥ लेप ॥ बाला, सफ़ेदचन्दन, कमलकेशर कालाबाला इन्होंकालेप माथेपर करनेसे तृषारोगजावै ॥ चूर्ण ॥ पि-

पली, जीरा, खांड़, नागकेशर, अनार इन्होंको शहद में मिलाइ खानेसे तीसरोग जावै ॥ कुष्ठादिचूर्ण ॥ कूटका, साबिंदीकीजड़, मुलेठी इन्होंकोपानीमेंपीसि खानेसे बहुतदिनों की तीसजावै ॥ चूर्ण ॥ डाभकी जड़, कूट, लाख, मुलेठी इन्होंके चूर्णको गरम पानी के संग खानेसे शोक संतापकी तीस मिटै ॥ बटादिलेह ॥ बड़का पान हड़, पिपली, मुलेठी इन्होंकेलेहमें शहदमिलाइ चाटनेसे तीसरोग जावै ॥ दूसराप्रकार ॥ बड़कापारंवा, खांड़, लोध अनार, मुलेठी शहद इन्होंको चावलोंके धोवनके संग खानेसे तीसजावै ॥अवलेह॥ सेरका आधसेर पानी रहै तब धानकी खील, शहद, बंशलोचन मिलाइ पीवै व दाख खांड़ मिलाइ खाने से तीस रोग मिटै ॥ ताम्रादिरस ॥ तांबा का भस्म, पारा, हरताल, तूतिया इन्हों को बड़के अंकुर के रसमें खरलकरि इसके लवमात्र खाने से तीसरोगजावें ॥ श्रीखंडयोग ॥ बासी चक्कादही २ सेर मिश्री १ सेर घृत ४ तोला शहद ४ तोला मिरच २ तोला शुंठि २ तोला इलायची २ तोला इन्होंको पात्रमें स्त्रीके हाथोंसे मर्दन करि बारीक़ कपड़ा माहिं छानि पीछे सुन्दर बरतनमें कपूरकी धूपदेइ तिसमें द्रव्यको घाले यह सुरसा शिखरिणी भीमसेन की बनाई और श्रीकृष्ण की खाईहै यह तृषा आदिरोगको हरै ॥ आमलक्यादिगुटिका ॥ आमला, कमल, कूट, धानकी खील, बड़काअंकुर, शहद इन्होंकीगोली बनाइ खानेसे तृषा को नाशै और मुखशोषको हरै ॥ गुटी ॥ खजूर ४ तोला मुनक्का ४ तोला मुलेठी ४ तोला मिश्री ४ तोला पिपरी २ तोला दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला इलायची २ तोला इन्होंकी शहदमें बांधि गोलीखानेसे तृषाको व मोहको व रक्तपित्त को हरै है ॥ काश्मर्यादिकाढ़ा ॥ लघुकाश्मरी, खांड़, चन्दन, बाला पद्माख, मुनक्का, मुलेठी इन्होंकाकाढ़ा पित्तकी तीसको हरै है ॥ जीरकादिचूर्ण ॥ जीरा, धनियां, अदरख, कालानोन इन्हों को कल्क भिगोइ मदिरा अच्छेरस सुगन्धित द्रव्य इन्होंको पीनेसे तृषा को हरै ॥ आम्रादिकाढ़ा ॥ आंबकीछाल, जामन की छाले इन्हों के काढ़ामें शहद मिलाइ पीनेसे सबतरहकी छर्दिको व तीसको हरै॥

द्राक्षादिनस्य ॥ मुनक्का, दाख, ईखकारस, दूध, मुलेठी, शहद, कमल इन्होंका नस्य लेनेसे तृषाको हरै ॥ जीरकादियोग ॥ जीरा, धनियां, मुनक्का, चंदन, कपूर, कमल इन्हों को ठंढे पानीके संग पीनेसे तृषा जावै ॥ कोष्ठादियोग ॥ कूट, धानकीखील, नागरमोथा बड़काअंकुर, मुलेठी, शहद इन्होंकोपीसि गोलीबनाइ मुँहमें रखनेसे तीसको हरै ॥ तप्तलोष्ठादियोग ॥ लोह बालूरेत, खोपरी इन्हों में एक को तपाइ पानीमें बुझाइ पीनेसे व दही गुड़ पीनेसे बमन मिली तीसभी बंधहो ॥ मंथादियोग ॥ मठामें खांड़, सत्तू, बेरकाचूर्ण इन्होंको मिलाइ पीनेसे व तिलकी मीठी कांजीमें मिलाइ सब अंगों पर मालिस करनेसे तृषा रोग जावै और रोगोंके संबन्ध से उपजी तृषा में पानी में धनियां शहद खांड़ मिलाय पीवै व बड़के अंकुर मुलेठी पिपली इन्होंकी शहद में गोली बनाइ खावै तो असाध्य तृषा रोग जावै ॥ रसादिगुटी ॥ पारा चांदी इन्होंको मिलाइ गोली बनाइ मुहँमें रखनेसे तृषाको हरै जैसे पापोंको गंगाकाजल ॥ रसादि चूर्ण ॥ पारा १ भाग गंधक २ भाग कपूर ३ भाग शिलाजीत ४ भाग बाला ५ भाग मिरच ६ भाग खांड़ सात भाग इन्हों का बारीक चूर्णकरि प्रभात में ३ रत्तीभर खानेसे तृषाको हरै इस पै अनुपान बासी जलका है यह अश्विनीकुमारों का कहा है ॥ लेप ॥ लालचंदन, चंदन, बाला, कालाबाला, कमल ये समानभाग लेइ पानीमें पीसि मस्तकपर लेपकरनेसे तृषारोग जावै संशयनहीं है ॥ गुटी ॥ नीलाकमल, नागरमोथा, शहद, धानकीखील, बड़का अंकुर इन्होंकी गोली बनाइ मुहँमें रखने से तृषाको हरै जैसे संन्यासी की परमार्थ चिंता मृत्युको निवारण करे तैसे ॥ उपसर्गतृषासामान्यविधि ॥ जो पेटमें मलहो और ज्यादह प्यासलगै तो पानी में पिपलीका चूर्ण मिलाइ पिलाइ बमन कराइ पीछे वायु का अनुलोमन कारक अनार, आंब, बिजोरा इन्हों को देवै ॥ मीठेसंजीवनीयगण ॥ शीतल पदार्थ, कटुकी इन्हों का काढ़ामें दूध शहद मिलाइ पीने से व ब्यंजन से व सेक से तृषा जावै और इस नुसखामें पीने के वक्त खांड़ शहद मिलाइ पीवै ॥ कसेवादिकाढा ॥ कचूर, सिंघाड़ा, कमलाक्ष

कमल का बीज इन्होंको इस के रसमें काढ़ाकर मिश्री मिलाइ पीने से चोटलगी की तीस व पित्त की तीसमिटै शहद व पानी दोनुओं को मिलाय कंठ पर्यंत पीवे पीछे आगलिमुखमदे के छर्दि करने से तीस रोग जावे॥ क्षुद्रादिगंडूष ॥ आंबकी जड़ जामनकी जड़ इन्हों के काढ़ा को शीतल कर शहद मिलाइ पीने से व पानी शहद मिलाइ पीने से कुरला करै तो तीसरोग मिटै और दूध इसका रस मुनक्का शहद सेंधानोन गुड़ अवलि इन्होंको मिलाइ कुरले करने से तालु का शोष व तृषारोग जावै॥ लेप॥ अनार, दही, कइथा लोध,बिदारीकंद,बिजोरा, कमलकेशर,आमला इन्होंको कांजीमेंपीसमस्तकपर लेप करने से तृषारोगमिटै॥ दूसराप्रकार॥ अनार, बेर लोध,कइथा,बिजोरा इन्होंको पीस मस्तकपर लेप करनेसे तृषा व दाह जावै पारातेज तृष्णा बकराके मांसकेरसमें घृत खांड़ शहदमिलाइ पीनेसे भयंकर दाह को व मूर्च्छाको व छर्दिको व मदात्ययरोगको नाशै शोधन बमन नींद न्हाना कवलका धारण दीपकमें जलाई हल्दीसे जीभके नीचेकी दो नसों का दागन पेपा अर्थात् सोथोंसमेत मांड़े बिलेपी खीलों के सत्तू भात का मांड़ मरुदेशके मांस का रस शक्कर रामा खांड़ व भूंजे हुये मूंग मसूर तथा चनों का बना हुआ जूस केले का फूल, तैल, कूर्च, पित्तपापड़े के पत्ते, कैथ, बेर, अमिली, कुम्हड़ा पोईशाक, छुहारा, अनार, आमला, ककड़ी, खस, जंभीरीनींबू, करौंदा, बिजोरा, गौ का दूध, महुआफल, हाऊबेर, चर्परा और मीठी बस्तु बालतालका यानी शतावरी नागकेशर इलायची जायफल हड़ धनियां चंदन कपूर घिसाहुआ चंदन चांदनी शीतल पवन चंदन से गीली प्रियाका आलिंगन रत्नोंसे जड़ेहुये गहनोंकापहरना पाले का लेप ये सब प्यास के रोग में पथ्य हैं॥ अपथ्यलेहभंजन॥ धुवांका पीना कसरत करना नासलेना आम दतून भारी अन्न खटाई नोन कसायला और कडुआरस स्त्रीसंग बुराजल तीक्ष्ण बस्तु जोअपना भला चाहै तो प्यास का रोकना इन सबों का कभी सेवन न करै

इतिबरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायां तृषारोगप्रकरणम्॥

मूर्च्छाभ्रमनिद्रासंन्यास ॥ क्षीण मनुष्यके बहुत कुपथ्य करनेवाले के मलमूत्रके रोकने से चोट के लगनेसे पुरुष की बाहर इंद्री जो नेत्र कान आदिले उनमें वायु पित्त कफ घुसकरि संज्ञा बहने वाली जो नसें तिन्हें वह वायुपित्त कफरोक अंधकार तत्काल प्राप्तहोइ मनुष्य को काष्ठकी भांति ऊपर डालिदे सो उसे सुखदुःखकाज्ञानरहे नहीं तिसको मोह मूर्च्छा कहे हैं वह मूर्च्छा ६ प्रकार की है वायु की १ पित्तकी २ कफकी३ लोहूकी४ मद्यकी५ विषकी६॥ संप्राप्ति॥ कुपथ्य को सेवा वालों और हीन है पराक्रम जिस का और क्षीण और मद्यादिक पीनेवाले के ऐसे पुरुष के अज्ञान होतजोतमोगुण पित्तसो बढ़िकर ज्ञानरूप जो सतोगुण और रजोगुणतिसे आच्छादनकरि दशों इंद्रियोंके स्थानविषे वायु पित्तकफहै सो इन्होंकोबहने वाली जो नसें तिन्हें आच्छादन करि वह सुखदुःख का नाश को हरवावाला अज्ञान सो हेतु जो तमोगुण से वढ़ वेगकर मनुष्य को पृथिवीपर काष्ठकीसी भांतिनाखदे है वाको वैद्य मूर्च्छा कहे हैं ॥ पूर्वरूप ॥ हियादूखै जँभाई आवे मनमें ग्लानिहोइ संज्ञा घटजाइ तब जानिये इसपुरुषके मूर्च्छाका रोगहोगा॥ वायुकीमूर्च्छालक्षण॥ काला व लाल जाको दीखे पाछे अन्धकारमें प्रवेशहोइकर ज्ञानहोइ पीछे शरीरकांपै अंगमें फूटनीहोइ हियोदूखै शरीरकृशहोजाय लालकाली छायादीखे ये लक्षण जिसकेहों तिसके वायुकीमूर्च्छा जानिये॥ पित्तकीमूर्च्छालक्षण ॥ आकाश जिसे लालपीला हरादीखे पाछे मूर्च्छाहोय पसीनाआवे तब ज्ञानहोइ तब प्यासलगे शरीरमें सन्तापहो और लाल पीले जाके नेत्रहों मुखमें से टूटा अक्षर निकलै शुद्ध निकले नहीं और पतला मलउतरे शरीरकी क्रांति पीलीहोजाइ तब पित्त की मूर्च्छाजानिये ॥ अथ कफकीमूर्च्छाका लक्षण ॥ मेघकी घटानेलिये आकाश जीने दीखे पाछे उसे मूर्च्छा आवे देर में ज्ञानहोय और जाड़े पसीनेसे व्याप्तहोय और लाल जिसमें बहुतपड़े तो वो कडुआ गरम थूके तो कफकी मूर्च्छा जानिये और सर्व लक्षणमिलें तो सन्निपातकी मूर्च्छा जानिये यह मूर्च्छा मृगी की तुल्य है सूंगली बस्तु देख्याही बिन आवे ॥ लोहूकी मूर्च्छाको लक्षण ॥ मनुष्यके लोहूकी

गंध आय पृथ्वी और आकाश अंधकाररूप दीखे और सर्वत्र लोहू की बास आवै निश्चल दृष्टि होय श्वास अच्छी तरह आवे नहीं पाछे मूर्च्छा होय तब लोहूकी मूर्च्छा जानिये इसी तरह चम्पा के फूलों आदि सूंघने से मूर्च्छा होय यह इसको स्वभाव है॥ मद्यकी मूर्च्छाकोलक्षण॥ बहुत मद्य पीवै मनुष्य बहुत बकै और सोजाय पाछे संज्ञा जाती रहै और पृथ्वी पर हाथ पटके तब तक शरीर में मद्यका अमल रहै शरीर कांपै बहुत सोवै प्यास घनी लागै यह लक्षण मद्यकी मूर्च्छा को जानिये॥ विषकी मूर्च्छाको लक्षण॥ विष खायो होय तिसका शरीर कांपै और नींद बहुत आवै संज्ञा जाती रहै मुख कालो पड़जाय अतीसारहोय भोजनमें रुचि जातीरहै ये लक्षण विषकी मूर्च्छाके जानिये तमोगुण और पित्त की अधिकता सों मूर्च्छाहोय॥ अथभ्रमको लक्षण॥ रजोगुण और बायु पित्त मिलै तब भ्रमहोयहै॥ तन्द्राके लक्षण तमोगुण और बायुकफ मिलै तन्द्रा नाम आधे नेत्र खुलेरहैं॥ निद्राकालक्षण॥ तमोगुण अरु कफमिलै तब मनुष्य को मन खेदको प्राप्त होय और दशों इन्द्री भी खेदको प्राप्त और वह अपने विषको ग्रहणकरै नहीं तब पुरुष सोवै॥ अथ संन्यासको लक्षण॥ हियो में रहता जो बायुपित्त कफ यह दोष तो वाणी देह मनको चेष्टा को ग्रहण करै। निर्मल पुरुष को काष्ठ की भांति मूर्च्छित करै है तिन्हैं संन्यास कहिये और संन्यास औषधों विना शान्त होवै नहीं ऐसे जानो॥ मूर्च्छाभेद॥मूर्च्छा १ मोह २ सहजा ३ और आगंतुक भेदसे विषकी १ मदिराकी २ लोहूकी ३ और सहजा मूर्च्छा में पित्त प्रधानहोयहै और बातादि दोष भेद से ३ प्रकार की और दो दोषोंसे द्वंद्वजा और सब दोषोंसे सन्निपातजा होयहै॥ चिकित्साक्रम॥ पानीकेछिड़के रत्नोंकाधारण मणियों के हार का पहिरना ठंढा लेप बीजनाकी पवन शीतल बरफ आदिका पीना और सुगंधि वस्तु ये सब मूर्च्छा को हरैहैं॥ दुरालभादिकाढ़ा॥ धमासा के काढ़ामें घृत को मिलाइ पीने से भ्रमकी शांतिहो जैसे गोविंदके चरणारविंदों के स्मरण से पाप॥ पंचमूलादि काढ़ा॥ पंच-मूलकाकाढ़ामें शहदमिश्री मिलाइ पीनेसे मूर्च्छा जावै व ज्वरना-

शक काढ़ा के पीने से भी मूर्च्छा जावै और दोषों को देखि पीवै ॥ क्षुद्रादिकाढा ॥ कटैली गिलोय पिपलामूल शुंठि वायवर्णा इन्हों का काढ़ा पीनेसे मूर्च्छा जावै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ दाख खांड़ अनार लज्जावंती लालकमल नीलाकमल इन्होंके काढ़ासे व पित्तज्वर में कहे काढ़ों से मूर्च्छा जावै ॥ शास्त्रार्थ ॥ लोहू की मूर्च्छा में ठंढी औषध हितहै और मदिराकी मूर्च्छामें बमनकरि सुखसेसोवै। और बिषकी मूर्च्छामें विषनाशक औषध देवै ॥ कोलादियोग ॥ बेरी की गीरी पिपली बाला नागकेसर इन्होंको ठंढापानी से पीसि खाने से व पिपली के चूर्णको शहद में मिलाइ चाटने से मूर्च्छाजावै ॥ त्रिफलादि योग ॥ त्रिफला के चूर्ण में शहद मिलाइ राति को चाटने से व अदरख गुड़ प्रभातमें खानेसे मदको व मूर्च्छाको खांसीको व मोह को व कामलाको हरै इस में सातदिन तक पथ्यसे रहै। और शुंठि गिलोय मुनक्का पोकरमूल पिपलामूल इन्होंका काढ़ामें पिपली का चूर्ण मिलाइ पीनेसे मूर्च्छाको व मद को हरै ॥ दुरालभादिकाढ़ा ॥ धमासा के काढ़ामें घृत मिलाइ पीनेसे व अंजन से व पीड़ा देने से धमासे व प्रधमन से मूर्च्छाजावै ॥ सामान्य ॥ पैरआदिमें सुई से छेदै व दाहदे व पीड़ादेइ नखोंमें व नोहको व बालोंकोतोड़ै व दंत सें काटै ये सब मूर्च्छा को हरै ॥ आत्मगुप्तादियोग ॥ कुहिली कहे कोंचकी फली शरीर में लगाने से मूर्च्छाजावै ॥ नारिकेलादियोग ॥ नारियल के पानी में सत्तू खांड़ मिलाय पीनेसे पित्त को व कफ को व तृषाको व भ्रमको हरै। और कोंचकी फली कोअंडकोशपै झाड़ने से व मिरचकानस्यदेनेसे मूर्च्छामिटै जागै ॥ मृणालाद्यवलेह ॥ ठंढेपानी में कमलकाविसा, पिपली, हड़ इन्होंको पीसि शहद मिलाइ चाटने से व नाककी व मुखकी पवनको बंद करनेसे व स्त्रियों की चूंचीका दूधको पीनसे मूर्च्छा बंदहोइ ॥ अंजन ॥ शिरसकाबीज, पिपली, मिरच, सेंधानोन इन्हों के अंजन से व लहसण मनशिल बच इन्होंका अंजन करनेसे मूर्च्छा जावै ॥ दूसरा प्रकार ॥ शहद सेंधा मनशिल शुंठि इन्होंका अंजनकरनेसे मुर्च्छाकोहरै ॥ सामान्यउपचार ॥ धूमा अंजन नस्य पीड़ा दाह नख लोम काटना दंत से काटना कों-

च की फली का लगाइना ये सब मूर्च्छाको हरैहै॥ स्विन्नामलकादिले-ह॥ स्विन्नआंवला को पीसि दाख शुंठि इन्होंको शहदमेंमिलायचाटनेसे मूर्च्छा खांसी श्वासको हरै॥ पथ्यादिघृत॥ हड़के काढ़ामें व आँवला के रसमें घृतको सिद्धकरि खानेसे व कल्याणघृतको खानेसे मदकी मूर्च्छा को हरै॥ रस॥ पिपली शहद पारा इन्होंको मिलाइ खाने से व ठंढापानीकी सेंक से मूर्च्छाजावै॥ ताम्रादिचूर्ण॥ लाल चंदन बाला नागकेसर इन्होंका चूर्ण को शीतल पानीके संग पीने से मूर्च्छा जावै जैसे वृक्षको इन्द्रका बज्र तैसे॥ शुंठ्यादिगुटी॥ शुंठि ४ तोला पिपली ४ तोला शतावरी ४ तोला हड़ ४ तोला गुड़ २४ तोला इन्होंकी गोली बनाय खानेसे भ्रमको हरै मूर्च्छापथ्य जलका छिड़कना न्हाना मणिहार शीतल लेप पंखेकापवन शीतल तथा सुगंधित पीने की वस्तु फुवारों का घर चन्द्रमा की किरण धुआं अंजन नासलेना रुधिर निकालना दागना सुई से छेदना रोमोंका तथा बालोंका नोचना नखों का दबाना जीभका काढ़ना नाक तथा मुखकी पवन रोकना बिरेचन बमन लंघन क्रोध भय दुखदायी सेज विचित्र मनोहर कथा छाया आकाशका जल सौबार का धोया घी कोमल तथा तेज वस्तु खीलों का माँड़ पुराने तथा लालधान पुराना घी मूंग तथा मटर का जूस मरु देशके मांसका रस राग खांड़ व गौका दूध मिश्री पुराना कोहला परवल सेवल हड़ अनार नारियल मुहुयेका फूल चौराई तुषोदक हलकेअन्ननदी आदिके तटका जल कपूर बहुत ऊंचा शब्द अद्भुत बस्तुकादेखना उत्कट गाना तथा बाजाभूलना शोचना अपना ज्ञान धीर्य्य ये सब मूर्च्छाके रोगीको पथ्य हैं पान पत्तों का साग दतूनकरना घाम विरुद्ध अन्न स्त्री संग स्वेदन कड़ुई बस्तु श्वास तथा नींदका रोकना महामूर्च्छा रोगमें इन सबको त्याग करै॥ मदात्ययरोगकी उत्पत्ती लक्षण॥ जो गुण विष भक्षण में है सोई गुण मद्य के पीनेमें है बुरी तरह घनी कुपथ्य के साथ जो पुरुष मद्य पीवे उसके मदात्ययने आदिले बहुत रोग होय है इस लिये मद्य कुपथ्य से पीना बुरा है अच्छी तरह पीवे तो अमृतका गुण करै है और बुरी तरह पीवे

तो रोगीने उपजाय विषकी तरह मार डारै है यहां दृष्टांत जैसे मनुष्य अच्छी तरह भोजन करै वाकूं ऊपर और प्रमाण पूर्वक तौ अन्न अमृतके तुल्यतुल्य गुण करैहै और शरीरको नीरोगराखै और वही अन्नभोजन पशुकीसी नाई खाय और थोड़े बहुत का ज्ञान न रखकेखाय तो वही भोजन बासीका आदिले अनेक रोगों को उपजावैहै और तत्काल मारैहै ऐसीही मद्य और विष ये दोनों प्राण के हरताहैं परंतु युक्तिपूर्वक करैतो ये दोनों अमृतके तुल्य गुण करै है और सर्वरोग मात्रको दूरकर सदैव पुरुषको तरुण रक्खै है ॥ अथविधिसेमद्यपीनेकालक्षण ॥ प्रात समय शौचादिक करके स्नान संध्यासे व्रत भोजन साथ २ टके भर पीवे। रीती से मथकर और मध्याह्न समय सचिक्कण भोजन साथ ४ टकेभर पीवे और सायंकाल को प्रहरभर रात्रिका भोजनके समय ८टकेभर मद्य पीवे यह मद्य अमृतकासा गुणकरके क्षुधाको अधिक करै है रोगको समीप नहीं आनेदेती और भोजनके साथ प्रसन्न चित्तहोकर पीवे तो जैसा मद्यका गुण कहा है वैसाही करै है सो वह लिखते हैं प्रथम ॥ मद लक्षण ॥काम बढ़ावै चित्त प्रसन्न रक्खे और तेज बुद्धि पराक्रम सुरत हर्ष सुख भोजन निद्रा इन सबको मद्य बढ़ावै है और अन्यथा पीवे तो मदात्ययको आदिले अनेक रोगों को उत्पन्न करैहै यह ८ तोला मद्य पीनेसे होताहै ॥ मध्यममद लक्षण ॥बकने लगै स्मरण जातारहै बाणी और शरीरकी चेष्टा विक्षिप्त कीसी करनेलगे आलस्य आवै नहीं अनकहनेकी बातकहै और काष्ठकी सदृश पड़ारहै यह १६ तोला मद्य पीनेसेहोहै ॥ तृतीयमद लक्षण ॥ अगम्यागमन करै बड़ोंको मानै नहीं अभक्ष्या भक्ष्य करै संज्ञा जातीरहैगुप्तबातको प्रकट करके और रोगोंको उपजाकर शरीर को निर्बलताकरैहै यह २४तोला पीनेसे होहै ॥ चतुर्थ मदलक्षण ॥ चौथा मदमें मनुष्यमूढ़हो टूटा काठकी समान पड़ारहै और ज्ञान करके शून्य औ कार्य्याकार्य बिभाग रहितहो और मरासरीखा दीखै ऐसामद को त्याग देवै उन्माद की नाईं दृष्टांत जैसे कांटोंवाले बनको बुद्धिमान त्यागै तैसे मद्य से अन्यविकार जो मनुष्य सब कालमें मदिरापीने जावै अरु

अन्नादिक को त्यागे उसके नानाप्रकारके विकारहोवे शरीरका भी विकार होजावे तो आश्चर्य नहीं। और जैसे पिये सो लिखते हैं भोजनकरे पीछे पीये बार बार पीयाहीकरे क्रोधकर पीये भयकर पीये तृषायुक्त होकर पीये खेदयुक्त होकर पीये मलमूत्रकाबेगयुक्त होकर पीवै बहुत खटाई के साथ पीये निर्बलता में पीये किसी प्रकारकी गरमीसे पीड़ित होकर पीवे तो उस पुरुषको मदात्यय का आदिले वहुतरोग होते हैं ॥ अथबातके मदात्यय का रोगलक्षण ॥ हिचकी और सांसहोय मस्तक कांपै पसुली में शूलहोय निद्राआवै बहुत बकै ये लक्षण होयँ तो बात का मदात्यय जानिये ॥ अथपित्त के मदात्ययका लक्षण ॥ तृषा बहुत लगे दाह और ज्वरहो पसीना मोह अतीसार हो घूमनीआवै शरीर का हरित वर्णहोय तो पित्तके मदात्ययका लक्षण जानिये ॥ अथ कफकेमदात्ययकालक्षण॥ वमन और अरुचि होय सलोना खट्टा अच्छालगै तंद्राहोय शरीर भारीरहै ये लक्षणहोयँ तो कफका मदात्यय जानिये और यह सबलक्षण मिले तो सन्निपात का मदात्यय जानिये ॥ अथपरममदकालक्षण ॥ पीनस मस्तक दर्द अंगमें पीड़ा शरीर भारी रहै मुखका स्वाद जाता रहै मलमूत्र रुकजाय तंद्रा अरुचि तृषा ये लक्षण हों तो परममद जानिये ॥ बातमदात्ययमें सौवर्चलादि ॥ मदिरा कालानोन शुंठि मिरच पीपल इन्हों में कछु पानी मिलाय पीने से बायु का मदात्यय रोग जावै ॥ सूक्ष्मशृंग्यादि ॥ कांजी कालानोन काकड़ाशिंगी शुंठि मिरच पीपल अदरख चीता इन्होंके चूर्णके संग मदिराको पीनेसे बायुका मदात्ययरोग जावै ॥ आम्लस्निग्धादि ॥ खट्टा चिकना गरम नोन जांगलदेश के मांसका रस पने मदिरा ये सब बायुके मदात्यय को नाशकरै ॥ पित्तमदात्यय पर ॥ बड़के अंकुरको ठंढेपानीमें पीसिखाइ ऊपर खांड पानी युत मदिरा को पीनेसे पित्तका मदात्यय जावै॥ क्षुद्रामलकादिपान॥ छोटा आँवला खजूर फालसा कपूर खांड इन्हों को मिलाय पीनेसे पानात्यय बिकार जावै ॥ सामान्य ॥ मदिरा में मीठी औषध मिलाय पीनेसे व मदिरा में ईषका रस मिलाय पीने से पित्तका मदात्यय जावै ॥ कफमदात्ययसामान्य ॥ मदिराको पी

वमन कराय पीछे लंघन व अग्नि दीपन औषध देवै ॥ अष्टांगलव-
ण ॥ कालानोन जीरा अमली अम्लबेतस दालचीनी इलायची
मिरच इन्होंसे दुगनी खांड़ मिलाय खाने से जठराग्नी को बढ़ावै
और कफकेमदात्यय को हरै और नाड़ियोंके स्रोतों को शुद्धकरै इस
का नाम लवण अष्टांगहै ॥ सुपारीआदि ॥ सुपारी के चूर्णकोखाने
व शंखकी रजको व नखके चूर्णको सूंघनेसे व ठंढीनदी के पानीको
पीनेसे व ठंढा बीजनाकी पवनसे सुपारीका मदजावै ॥ दूसराप्रकार ॥
धूमाको नाकमें चढ़ानेसे व मिश्री नोनको खानेसे व अकेली खांड़
को खानेसे सुपारी खानेके मद को हरै ॥ कोद्रव धतूर ॥ कोहला के
रसमें गुड़को मिलाय पीनेसे कोदूकामदजावै व दूधमें खांड़मिलाय
पीनेसे धतूराके मदका नाशहोवै ॥ जायफलकादिमदपर ॥ नोनीघृत
में खांड़ जावित्री मिलाय खानेसे व नोनीघृत चंदन खांड़कोमिलाय
खानेसे जायफलके मदको नाशै व केलाके पानीको पीनेसे मदिरा
के मदको नाशै व गौके घृतको खानेसे कुचला का मद जावै इन्हों
को जल्दी योजना करै ॥ दूसरा प्रकार ॥ हड़के चूर्ण को खाने से व
ठंढा जलमेंन्हानेसे व दही में खांड़ मिलाय पीनेसे जायफल के
मदको नाशै ॥ कज्जलीरस ॥ आँवला के रसमें पारा गंधक के काज-
लि और मिश्री को मिलाय पीनेसे मदात्यय को नाशै जैसे गरुड़
सर्प्पों को ॥ सामान्य ॥ ये सब दोषों को मदात्ययमें सबही कर्म करै
इनहीं कर्मों से मदात्यय शांत होहै ॥ पानाजीर्णलक्षण ॥ अत्यंत
अफारा वमन दाह अजीर्ण ये लक्षण होयँतो पानाजीर्ण जानिये ॥
अथ पान बिभ्रमका लक्षण ॥ हृदय दूषै अंगों में पीड़ा कफ थूकै
मुखसे धुआं निकले मूर्च्छा ज्वर बमन मस्तक में दर्द मिठाई
और मद्यमें अरुचि ये लक्षण होयँ तो पानबिभ्रम जानिये ॥ अथ
मदात्ययका असाध्य लक्षण ॥ नीचे का ओष्ठ लटका जाय शरीर ऊप-
रसे ठंढा लगै भीतर दाहहोय मुखमें तेलकी बास आवै जीभ ओष्ठ
दांत कालेहोयँ औरनेत्र नीले पीले लाल होजायँ हुचकी ज्वर बमन
पसुलीमें शूल खांसी घुमनी ये लक्षणहोयँ तो मदात्ययअसाध्य जा-
नियै॥ पानोपद्रव ॥हिचकी १ ज्वर २ कम्प ३ वमन ४ पसुलीशूल ५

खांसी ६ भ्रम ७ इन उपद्रवों सहित पानात्ययवाला निश्चयमरै॥ मथित तेल॥ गौके दहीमें तेलको मथि कपूर मिलाय पीने से पानात्ययको नाशै॥ मद्योपशम॥ मदिरो पीइ ऊपर खांड़ घृत को मिलाय खानेसे नशीली दारूकाभी मद नाशहोय॥ कृष्णादिपना॥ पिपली धनियां फालसा देवदारु इलायची जीरा नागकेशर मिरच खांड़ मुलेठी कैथकारस इन्होंका पना बनाये कपूरकी प्रतिवास देइपीने से मदात्ययों को हरै और रुचिको उपजाय जठराग्नीको दीपनकरै और हृदयमें आनन्दकरै॥ त्रिफलादिपान॥ त्रिफला को शहदमें मिलाय रातिको खाय प्रभात में गुड़ अदरख को खाने से मदको व मूर्च्छाको व कामलाको व उन्मादकोहरै॥ दुःस्पर्शादियोग॥ धमासा नागरमोथा इन्होंकाकाढ़ा व नागरमोथा पित्तपापड़ा इन्होंकाकाढ़ा व नागरमोथा का काढ़ा इनतीनों काढ़ोंको पीनेसे मदात्यय को व पिपासा ज्वरकोनाशै॥ चव्यादिचूर्ण॥ चाव कालानोन हिंग विजौरा शुंठि इन्होंके चूर्णको मदिरा के संग पीने से पानात्ययजावै॥ शतावरीपुनर्नवाघृत॥ शतावरी का काढ़ा दूध मुलेठी इन्हों में घृतको पकाय खानेसे व सांठी के रसमें दूधको पकाय पीनेसे मदात्यय रोगजावै॥ माषघृत॥ जायफल १ भाग नागरमोथा २ भाग गिलोय ३ भाग उड़द ४ भाग लेइ इन्होंमें घृत पकाइ खाने से मदिरा की गंधको दूरकरै॥ सामान्यशास्त्रार्थ॥ मनुष्यों के पानात्यय ७ दिन व ८ दिनतकहोयहै इससे उपरान्त पानाजीर्ण होजायहै उसके नाशके अर्थ कफ हरनेवाली विधि करावै॥ खर्जूरादिमंथ॥ खजूर दाख अमली जलवेतस अनार फालसा आँवला इन्होंका मंथ बनाय पीनेसे मदिरा के विकार को हरै॥ मदात्ययमें पथ्य॥ संशोधन संशमन सोना लंघन श्रम एकवर्ष के पुराने धान सांठी जौ मूंग उड़द गेहूं और मटर रागखांड़ व मृग तीतर लवा बकरा मुरगा मोर शशा इन सबोंका मांस मशाला विचित्र अन्न हृदय के हित मद्य दूध मिश्री चौराई परवर बिजौरा फालसा छुहारा अनार आमला नारियल दाख पुराना घी कपूर नलका तट शीतल पवन फुहारों का घर चन्द्रमा के किरण मणि मित्रका मिलन रेशमकपड़ा प्रिया का

आलिंगन उद्व्रत गानाबजाना शीतलजल चन्दन न्हाना मदात्यय रोग में ये सब सेवन करने योग्य हैं। श्वेत अंजन धूमपान नास लेना दतून करना पान खाना ये सब मदात्यय रोग में अपथ्य हैं॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तविरचितायांनिघण्टरत्नाकरभाषायां मूर्च्छा मदात्ययप्रकरणम्॥

दाहरोगकर्मविपाक॥ जो मनुष्य अग्निमें थूके तिसको कपिल-नामग्रहग्रहणकरै इससे ज्वरशूल सर्बांगदाह पीलेनेत्रहोवै॥ उपाय॥ रात्रि चौरहा पै जाय धानकी पीठी रुधिर तिल असगंध फूल इन्हों को मिलाय बलिदान करै इस मंत्र से॥ मंत्र॥ गृहीष्वचबलिंचे मंकपिलाख्यमहाग्रहा। आतुरस्यसुखंसिद्धिप्रयच्छत्वंमहाबल॥ इति॥ ज्योतिषशास्त्राभिप्राये॥ जिसके जन्मकालमें लग्नमें मंगलहो और अष्टमस्थानमें सूर्यहो वह दाहज्वर युक्तहो॥ दाहनिदान॥ मद्य पान सम्बन्धी ऊष्मा पित्त व लोहू इन्होंकी वृद्धि होय त्वचा में प्राप्त होय उग्रदाह को उत्पन्न करैहै इसमें पित्तज्वर सरीखे औषध करै॥ सामान्यचिकित्सा॥ ऊंची चूंचियांवाली और मृगाक्षी और बीणा बजाती हुई ऐसी सुकुमारी स्त्रियों का गायन सुनने से दाह मिटै जल्दी। यही रस औषध से उपजा दाहमें भी हितहै। व बड़बेरी पान आमला धान्याम्ल इन्होंसे व कांजीमें वस्त्रको भिगोय शरीर ऊपर ओढ़नेसे व रोहिष तृण चन्दन इन्होंके लेपसे व चन्दन पानी में मिलाय पंखापै छिड़कि ऐसा ताड़रुखका पंखाकी हवाको सेवन से दाह का नाश होवै ऐसे जानो॥ दूसराप्रकार॥ केलाके पत्तों की शय्यापै सोनेसे कमल के पत्तों की शय्या पै सोने से व अंगोंपर ठंढा पानी के सेंकसे व ठंढा पानी में गोतामारि न्हाने से व ठंढापानी के पीने से बीजना की पवनसे दाह व तृषा नाश होवै॥ रक्तजदाहल-क्षण॥ सब शरीरमें दाह लगिजाय व सब शरीर में धूमासा निकसै और शरीर की तांबाकीसी आकृतिहोइ और तांबासरीखानेत्रहोय मुखमें लोहूकीसीदुर्गंधि आवै और तृषितरहै और सबअंग अग्नि

की भांति जलैं ये लक्षण लोहूके दाहके हैं इसमें औषध पित्तज्वर के समान करै ॥ रसादिगुटी ॥ पारा गंधक कपूर चन्दन कालाबाला नागरमोथा इन्होंकी घृतमें गोली बनाय खानेसे त्रिदोषकी दाहको नाशकरै ॥ चन्द्रकलारस ॥ अभ्रकभस्म सिंगरफ पारा गंधक इन्हों को शहद में १ पहरतक खरलकरि २ बालभर खावै और यह अदरख के रसके संग ज्वरकी दाह को हरै व तातभातके संग खाने से दाहरोगको हरै ॥ तृष्णानिरोधजदाहलक्षण ॥ प्यासके रोकने से शरीर का जल धातुक्षीणहोय तब शरीर में गरमी बंधै तो शरीर को दग्धकरै तब उसका पित्त मंदहोय उसका गला तालुवा दूखै जीभ बाहिर काढ़ि कांपवालगै ॥ दाहपर ॥ खांड़ कपूर शिलाजीत इन्होंके चूर्णको ठंढा पानीके संगलेनेसे तिसरोधका दाहमिटै जैसे अग्निको जल तैसे ॥ यवादिमंथ॥ भूने यवोंका सत्तू घृत ठंढा पानी इन्हों का मंथ बनाय खाने से तृषाको व दाहको व पित्तको हरै ॥ मृतसंजीवनीगुटी ॥ मुलेठी लौंग शिलाजीत इलायची इन्हों के चूर्णको नये चावलोंके धोवनकी १००० भावना देइ एकपहरतक खरल करि बेर समान गोली बनाय कालीकपास के रसके संग खाने से तृषाको व दाहको व ज्वरको व मूर्च्छा को व उग्ररोग को व बातपित्तको हरै ये मृतसंजीवनी गोली है पूज्यपाद हकीम ने कहीहै ॥ रक्तपूर्णकोष्ठजदाह ॥ लोहूसे कोठा भर जाय और दाहलगिजायसो असाध्यहै ॥ चिकित्सा ॥ धनियां आमला दाख पित्तपापड़ा इन्होंका हिम रक्तपित्तको व ज्वरको व दाहको व तृषाको व शोषको नाशकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ बांसकी छालके काढ़ा को ठंढा करि शहद मिलाय पीनेसे रक्तकोष्ठकी दाहमिटै ॥ दशसारचूर्ण ॥ मुलेठी आंवला वासा दाख इलायची चन्दन बाला मौहा का फूल खजूर अनार ये समानभाग लेइ और सबोंके बराबर मिश्री मिलाय २ तोला रोज़खावै यह दशसारचूर्ण सब पित्तबिकारोंको हरै ॥ धातुक्षयजन्य॥ धातुक्षयके दाह से मूर्च्छा होइ तीसलागै मुखका स्वर बैठिजाय शरीरकी सामर्थ्यजातीरहै यहअसाध्यहै॥ खजूरादिचूर्ण ॥ खजूर आमला पिपली शिलाजीत इलायची मुलेठी पाषाणभेद चंदन ककड़ी

बीज धनियां खांड इन्होंके चूर्णमें मुलेठी के काढ़ा के संग खाने से अंगदाहको व लिंगदाह को व बवासीर को क्षीणवीर्य्यको व शर्करा-प्रमेहको व पथरीको व शूलकोनाशै औरपुष्टकरै और बलकोबढ़ाय मूत्ररोगको व शुक्ररोग को नाशै इसदाहको इष्ट प्राप्ति से व दूध मांसके रस इत्यादि बिधिकरि जीतै ॥ पित्तदाह ॥ पित्तकी दाहमें पित्तज्वर में कही सब बिधि बरतै। गिलोयके सतमें मिश्री मिलाय खानेसे पित्तकी दाह व ज्वरजावै ॥ क्षतजदाह ॥ शिरसे पेड़ने आदि ले मर्मस्थानमें चोटलागै वासों उपजा जो दाह असाध्यजानिये ॥ चन्दनादिचूर्ण ॥ चन्दन बाला कूट नागरमोथा आमला गठोणा कमल मुलेठी मौहा फूल दाख खजूर इन्होंके चूर्णमें खांड मिलाय प्रभातमें ठंढेपानीके संग खानेसे रक्तपित्तको व श्वासको व पित्त-गुल्मको व अंगदाह को व शिरके दाहको व शिरके भ्रमण को व कामलाको व प्रमेहको व पित्तज्वर को हरै यह चन्दनादिचूर्ण पूज्य-पाद वैद्यनेकहाहै ॥ रक्तजदाहावर ॥ हाथकीनसका व रोहिणी शिराको वेधनकरै इससे रक्तकी दाहमिटै॥ चंदनादिकाढ़ा ॥ चन्दन पित्तपापड़ा डाभकीजड़ काला नागरमोथा कमल बड़ीसौंफ धनियां पद्माख आम-ला इन्हों का काढ़ा आधाराखि मिश्री शहद मिलाय पीनेसे दारु-णदाहभीजावै ॥ योग ॥ रसऔषध इन्होंसेउपजेदाहमें पानी आमला दाख नारियल ईखरस खांड़ काकड़ी ये हितकारकहैं ॥ लाजादि काढ़ा॥ कालाबाला लालचन्दन बाला इन्हों के काढ़ा में खांड़ मिलाय ठंढा करि पीने से दाहको व पित्तज्वरको हरै ॥ ठंढापानी ॥ चन्दन सुगंध पदार्थ इन्हों के काढ़ा से भीजे कपड़े का शरीर पर रखने से दाह मिटै। व पानीमें मौहा के फूल चन्दन कपूर इन्हों को बड़ेमट्टी के बरतनमें घालि स्नान करनेसे दाहमिटै॥ कमलादिपान ॥ कमल का पानी व दूध पानी व खांड़ का शरबत व ईख का रस इन्हों के पीने से दाह शांत होवै ॥कोष्ठपूर्णरक्तदाह ॥ रोगी की नाभि के ऊपर तांबे का व कांसे के पात्र को रखि ऊपर से ठंढे पानी की धारा गिरै इस से कोष्ठ की दाह मिटै ॥ दाहरोगतैल ॥ कुशादिगण शालिपर्णी जीवक ऋषभक इन्होंमें तेलको व घृतको पकाय खानेसे बातपित्तको

हरै ॥ तिलतैल ॥ तिलकातेल६४तोला लेइ सोलहगुणे कांजीकेपानी में सिद्धकरि बरतने से दाह को व ज्वर को नाशै ॥ पुनर्नवादितैल ॥ सफेद सांठीकीजड़४००तोला कालीगौकेदूधमें व घृतमें २५६तोले में खरलकरि तिलकातेल ४०० तोला धूप १६ भाग मिरच८भाग राल ८ भाग कचूर ४ तोला बाला ४ तोला कालाबाला ४ तोला मजीठ ४ तोला कैथ ४ तोला चंदन ४ तोला लालचन्दन ४ तोला काला अगर ४ तोला रुद्राक्ष ४ तोला इन्होंको तेलमें घालि पकाय मेहारी काठकी कोमल अग्निसे पकाय तय्यारकरै इस तेलको अंग पै मालिश करनेसे रात्रिमें अंगशूलको व अंगदाह को व नेत्ररोग को व खेहरको व पांडुको व कामलाको व उष्णताको व सूतिकारोगको व सन्निपातको व हाथ पैरोंकी दाहको व तंद्राको व कटिकी बातको व क्षयको व कुष्ठको व खाजको व गजकर्ण को व मस्तकरोगको व भ्रमको व नेत्ररोगको व दृष्टिरोग को व जीर्णज्वरको व अस्थिज्वर को व मेहज्वरको हरै इसका मर्दनकरि मंगल स्नान करावै और यह तेल महादेवजीने कहाहै और अश्विनी कुमारों ने प्रगट किया है और पृथिवीमें दुर्लभहै और इसको गुरुमुखसे सिद्धकरै अन्यथा सिद्धहोवेनहीं ॥ तंडुलीयादिपान॥ चावलोंकीजड़ जीरा पानी धनियां तुलसीका रस इन्होंको मिलाय ४ माशे खानेसे दाहकोहरै। और हल्दी लोध कालाबाला बाला धतूराकेपत्ते धानकी खील नागरमोथा पीतचंदन इन्होंका लेप दाहको शांतकरै। और बाला कमल कालाबाला चन्दन इन्होंको पानीमें पीसि माटीके बड़े कलशमें पानी में मिलाय न्हानेसे दाहमिटै। बड़बेरीके पत्तोंका रस नींबके पत्तोंका रस सुरामंड दहीका पानी बिजौराकारस ये सब दाहको शांतकरै हैं। जिसमें कमलोंके फूल फूलेहों ऐसी बावड़ी के समीप बसना फुहारा चन्दन से लिप्त अंगवाली स्त्री का आलिंगन ये सब दाह को नाशैं। व रातिमें धनियांको पानीमें भिगोइ प्रभात में मथि मिश्री मिलाय पीने से अंतर्दाहकोहरै जैसे महादेव दुःख को हरै व हजार बेर घृतको पानीमें धोइ शरीरके ऊपर मालिश करने से दाह शांत हो जैसे अन्यस्त्रियों में आसक्तका मनोरथ अपनी स्त्रियोंमें शांतहोय

तैसे। निंबकेपत्ते बाला इन्होंके फेनके लेपनसे मोह दाह तीस ये शांतहों जैसे धनाढ्योंका धन वेश्या के सङ्गसे शांत हो तैसे। व ठंढे पानीके पीनेसों व शीतल औषधसों दाह मिटै। व कपूर चन्दन कस्तूरी इन्होंके लेपसे दाह मिटै व सफ़ेद कमल के लेप से दाह मिटै व फुहारावाले घर में बसने से दाहमिटै व अतिप्रिय उत्साहवाले बालकोंके बोलने व आलिंगनसे दाहमिटै। व बालकोंके मकानमें बसना व सोना व ताड़के पंखाकी पवन और साहित्य शास्त्रयुत बाणी व सुरसक त्रिजनोंकी बाणी ये तीनोंदाह को हरैहैं। व आमला दाखकारस व नारियलके पानीमें खांड़ मिलाय पीना व कुमारी स्त्रियोंका गायन ये दाहको व मूर्च्छाको नाशैहैं॥ दूसराचंद्रकलारस॥ पारा १ तोला तांबाभस्म १ तोला अभ्रक भस्म १ तोला गंधक २ तोले इन्होंकी कजली करै पीछे नागरमोथा अनार दूब केतकी बड़काअंकुर सहदेई कुमारपट्ठा पित्तपापड़ा शीतलचीनी शतावरि इन्होंके रसमें एक एक दिन अलग भावनादेइ पीछे कटुकी पित्तपापड़ा बाला मधुमालती चन्दन सारिवा इन्हों का समान भाग बारीक चूर्ण करि मिलाय पूर्वोक्त में पीछे द्राक्षादि काढ़ा में ७ भावना देइ पीछे बरतनमें घालि अन्नके कोठामें गाड़ि काढ़ि चना समान गोली बनाय खावै यह चन्द्रकला रस सब पित्तरोगों को व बातपित्तरोगों को व सबप्रकार की दाहको हरै और बिशेष करि ग्रीष्मऋतुमें और शरदऋतुमें बहुत गुणदेयहै और मंदाग्निको व महादाह ज्वर को व भ्रमको व मूर्च्छा को व स्त्री रक्त को व नकसीर को व अधोरक्तपित्त को व रक्तकी छर्दि को व मूत्रकृच्छ्रको हरै संशय नहीं है॥ मर्माभिघातजदाह॥ मर्मस्थान में चोट लगने से उपजा दाह भी असाध्य होयहै॥ असाध्य लक्षण॥ ठंढेशरीरवालेके सबप्रकारकी दाह असाध्य होयहै इसमें संशय नहीं है॥ दाहरोगमें पथ्य॥ धान सांठी मूंग मसूर चना जौ मरुदेशके मांसकारस खीलों का मांड़ सत्तू मिश्री सौबारका धोया घी दूध दूधसे निकला मक्खन कुम्हड़ा ककड़ी केला कटहर मीठा अनार परवर पित्तपापड़ा दाख आमला फालसा सेमि तुंबी दूधका पेड़ा छुआरा धनियां सौंफ

कामलताल चिरौंजी सिंघाड़ा कसेरू महुआका फूल हाऊबेर हड़ सब चर्फरी बस्तु शीतल लेप पृथ्वी में घर सींचना तेल लगाना गोतामारकेन्हाना कमल वा नील कमलकी तथा रेशम की सेज शीतलबन विचित्र कथा शीतल बस्तु मीठा बोलना खस तथाचंदन का लेप शीतलजल शीतलपवन फुवारोंका घर प्रियाका स्पर्श नदी का तट कपूर चन्द्रके किरण न्हाना घिसाचन्दन मीठा रस ये सब तथा और जो बस्तु पित्तकी नाशक कही हैं वे सब वैद्यों ने दाह में पथ्य कहीहैं दाहवाले मनुष्योंका यह पथ्य कहागयाहै विरुद्ध अन्न पान क्रोध वेगका रोकना हाथी घोड़े की सवारी मार्गमें चलना खारपित्त बढ़ानेवाली बस्तु कसरत करना घाम मट्ठापान शहद हींग स्त्री सङ्ग कडुआ चर्फरा तथा गर्म पदार्थ इन सबोंको दाहका रोगी त्यागकरै ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांदाहप्रकरणम् ॥

उन्मादरोगकर्म्मविपाक ॥ अन्योंको मोहको प्राप्तकरके और आप निंदित बस्तुको भोजन करे वह उन्मादरोगी व बातरोगी होय ॥ प्रायश्चित्त ॥ वहपुरुष कृच्छ्र चांद्रायण व्रतकर सरस्वतीमंत्रको जपै और ब्राह्मणों को भोजनकरावे उन्मादबातादि दोष अपने मार्गको छोड़ मनोवाहिनी धमनीमेंजाय तोचित्तमें भ्रमपैदाकरें इसको मनो-व्याधि व उन्मादकहै हैं ॥ उन्मादकीउत्पत्तिलक्षण ॥ बिरुद्ध भोजनसे अपवित्रभोजनसे दुष्टभोजनसे और देवता गुरु ब्राह्मण तपस्वीराजा इनकेतिरस्कारसे और किसीप्रकारकेभय और हर्षसेभी और धतूरा भांग आदिखानेसे मनुष्योंका चित्तबिगड़ै है फिर वह बिगड़ाहुआ चित्त बात पित्त कफ इनतीनोंसेमिलकर पुरुषको मदयुक्त करदेयहै अर्थात् मनुष्यकोदहलमेंकरदेते हैं उसकोलौकिकमें हौलदिलीकह-तेहैं वहहौलदिलीबात से १पित्तसे २ कफसे ३सन्निपातसे ४ मनके दुःखसे ५ बिषखानेसे ६प्रकारसे होतीहै ॥ अथउन्मादकास्वरूप ॥ क्षीण

पुरुषके विरुद्ध भोजन करनेकेपीछे बातपित्त कफदुष्ट होकर बुद्धिको नष्टकरैहैं फिरउसके हृदयमें पीड़ाकरके मनकेचलनेवाली नसोंको मोहितकरैहैं तब मनुष्यका चित्त डामाडोलहोकर थिरनहीं रहता इसकोहौलदिलीकहतेहैं॥ अथउन्मादकापूर्वरूप ॥ बुद्धि स्थिर रहै नहीं शरीरका पराक्रमजाता रहै चित्तचंचलहो दृष्टि व्याकुलहो धीरज पना जातारहै अवद्ध भाषणकरै हृदय शून्यरहै येलक्षणहोयँ तो जानिये कि पुरुषके उन्मादहोगा॥ अथबातकेउन्मादकालक्षण॥ रूखी और ठंढी अधिकबस्तुखाने और अधिक जुलाबलेने और धातुकी क्षीणतासेबात बढ़ै है फिरवह बातहृदय को बिगाड़कर बुद्धि और स्मरण को तत्कालनष्टकरैहै तब मनुष्य बिनाही कारणहँसागावा नाचा अथवाहाथमुखसे बन्दरकीसी चेष्टाकरने लग जाय और रोनेलगजाय शरीर कठोर काला लालपड़जाय और भोजन पचनेकेपीछे येरोगअधिक बढ़ैं येरोगहोयँ तो बातका उन्माद जानिये॥ अथपित्तके उन्मादकालक्षण॥अजीर्णमें भोजनकरनेसे और कड़ुवाखट्टागरमभोजनखानेसे पित्तबढ़के मनुष्यके हृदयको बिगाड़कर उन्मादको करैहै तब पुरुष किसीकी बातकोमानेनहीं और नङ्गाहोकर सबको मारनेलगजाय और शरीर गरमहोजाय और शीतलवस्तु खानेकी इच्छारहै और शरीर पीलाहोजाय ये लक्षणहोयँ तो पित्तका उन्मादजानिये॥ अथकफके उन्मादकालक्षण॥क्षुधामन्दहोजाय और बहुतखाय कामकरनेमें आलस्यआवै उसकापित्त कफसेमिलकर मर्मस्थानोंकोबन्धावैहै तब पुरुषकी बुद्धि और स्मरणकोनाशकरके उसकेचित्तको विगडउन्मत्त करैहै तब वह पुरुष कमबोलताहै और क्षुधा जातीरहै स्त्रियां प्यारीलगैं एकान्तस्थान प्यारालगै नींदघनीआवै छर्दिहोय बलजातारहै नखादिक श्वेतहोजायँ येलक्षणहोयँ तो कफका उन्माद जानिये और ये सब लक्षणहोयँ तो सन्निपातका उन्मादजानिये। अथमनकेदुःखके उन्मादकालक्षण॥ निशिचर के भयसों राजाके भयसों प्रबलशत्रुके भयसों कर्मकेभयसों डरो जो पुरुषतिसके अथवाधन के नाशसों वा पुत्रादिकके नाशसों इन सबवस्तुसों पुरुषके मनमें चोटलागै औघनो मैथुनकरै जीकै तब उसको मन बिगड़ पुरुषको

उन्मादकरदे तब वह मनमेंआवै सोवके और संज्ञाजातीरहै और गाने लगजाय हँसने लगजाय ये लक्षणहोयँ तो मनमेंदुःखकाउन्माद जानिये ॥ बिषखानेके उन्मादका लक्षण ॥ लालनेत्ररहैं शरीरका बल जातारहै सब इन्द्रियोंकी कांती जातीरहै गरीबहोजाय मुंहकाला पड़जाय ये लक्षणहोयँ तो बिषखानेका उन्माद जानिये इसउन्मादवाला मरजाय ॥ अथउन्माद मात्रको असाध्यलक्षण ॥ कैतोनीचोमुख राखै कैऊंचोही मुखराखै शरीर का बल मांस जातारहै नींदआवै नहीं जागबोही करै ये लक्षणहोयँ तो वह पुरुषमरजाय इसमें संशयनहीं ऐसे जानो ॥ उन्माद शास्त्रार्थ ॥ काम क्रोध शोक भय हर्ष ईर्षा लोभ इन्होंसे और दोदोओंसे उपजा उन्माद इन्होंकी शांति से शांतहोयहै ॥ सामान्यउपचार ॥ बायुके उन्मादमें स्नेहपान और पित्तके उन्मादमें विरेचन और कफके उन्माद में बमन करावै व वस्तिकर्म करावै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ जो अपस्मार रोग में औषध कहाहै वही दोषदूष्यको सामान्य होने से उन्माद में करै ॥ सामान्य उपचार ॥ स्नेहपानादि क्रमकरि व स्नेह कल्क से व स्नेह की वस्तिसे व निरूहण वस्तिसे व स्वेदनसे व अञ्जन से उन्माद शांत होवै ॥ शास्त्रार्थ ॥ उन्मादवाले को प्रियबचनों से आश्वासन करै और इष्टपदार्थ का नाशसुनावै और अद्भुतकर्म दिखावै और कोलड़ासे ताड़नकरै व उन्मादरोगीको एकांतस्थान में बांधि सर्प दिखाइ डरावै व कडुआतेलमें नहवाइ सीधाधूपमें सुवावै व उन्माद रोगीको कौंचकी फली व तपायेलोह से स्पर्श करावै और गरम पानी व तेलसेस्पर्शकरावै व मुंहमें तपायालोहा देनेका भयदिखावै व निरंतर कूपमेंनिवेशनकरै। व उन्मादवालेको गोमांसकीधूनि देइ काम शोक भय क्रोध हर्ष ईर्षा इन विकारोंको मनसे पैदाकरावै और इन्होंसे प्रसन्नकरै और पानीसे व अग्निसे व वृक्षसे व पर्वत से व बिषमजगाहों से उन्मादवाले की रक्षाकरै नहीं तो प्राणनाश होजायँ तो कछु आश्चर्य नहीं॥ लशुनादिघृत॥ सुन्दर लहसन२०० तोला दशमूल १०० तोला इन्होंको १०२४तोला पानी में चतुर्थांश काढ़ा रखि घृत ६४ तोला लहसनरस ६४ तोला बड़बेररस ३२

तोला आमलारस ३२ तोला अमलीरस ३२ तोला बिजौरारस ३२ तोला अदरखअर्क ३२तोला अनाररस ३२तोला मदिरा ३२तोला मस्तु ३२ तोला कांजी ३२ तोला त्रिफला २ तोला देवदारु २ तोला नोन २तोला शुंठि मिरच पीपल २तोला अजमोद २तोला अजमान २ तोला चाव २तोला हींग २तोला अम्लवेतस २ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरिखानेसे=शूलको व गुल्मको व बवासीरको व उदररोगको व घावको व पांडुको व प्लीहाको व योनिदोषको व कृमिको व ज्वरको व बातकफरोगको व उन्मादको हरै॥ चन्दनादितेल॥ चन्दन वाला नख जवाखार मुलेठी शिलाजीत पद्माख मजीठ सरल देवदारु षदुवला जवाद नागकेशर तमालपत्र लोध सुरा जटामांसी कंकोल गहुला नागरमोथा दाहललेदि हल्दी सारिवा कटुकी लौंग अगर केशरदालचीनी पित्तपापड़ा नलिका तेल और चौगुनादहीका पानी लाखका रस इन्होंकोमिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे ग्रहको अपस्मारको उन्मादको कृत्याको दरिद्रताको नाशै और उमर पुष्टि को बढ़ावै व बशीकरणहै॥ अंजन॥ शुंठि मिरच पीपल हींग नोन बच कटुकी सिरस करंजबीज सफ़ेद सिरसम इन्होंको गोमूत्रमें खरल करिबत्तीबनाय नेत्रमें व नाकमें देनेसे चातुर्थिकज्वरको व अपस्मार को व उन्मादकोहरै॥शिरीषादिनस्य॥ सिरसलसूण हींग शुंठि मुलेठी बच कूट इन्होंको बकराके मूतमेंपीसि नस्य व अंजन करने से उन्मादजावै॥ व्योषाद्यंजन॥ शुंठि मिरच पीपल हल्दी दारुहल्दी मजीठ सफेदसिरसके व कालेसिरसके बीज सफेद सिरसम इन्हों का अंजन व नस्य ग्रहको व अपस्मार को व उन्मादको हरै॥ धूप॥ बिंदोलागीर मोरपांख कटैली गंगाजल मैनफल दालचीनी जटामांसी बिलायकी बिष्ठा तुसबच मनुष्यकेबाल सांपकी कांचली हाथीदांत सावरसिंगहींग मिरच ये समानभागलेय धूपकरिखानेसेस्कंदोन्माद अपस्मार उन्माद पिशाच राक्षस देवसंचार ज्वरजावैं॥ पर्पटीरस॥पिपली धतूराकेबीज घृत इन्होंमें पर्पटीरसको देनेसे उन्मादजावै शिरीषाद्यंजन॥ सफ़ेद सिरसम बच हींग करंजवाकीछाल देवदारु मजीठ हड़ बहेड़ा आमला तुरटी कांगनी दालचीनी शुंठि मिरच

पीपल राल शिरीष दारुहल्दी हल्दी इन्हों को बकराके मूत्रमें खरलकरि इसको अंजनमें व स्नानमें नस्यमें व लेपमें बरतनेसे व उबटना लानेमें बरतनेसे अपस्मारको व बिषको व उन्मादको व कृत्याको व दुर्दशाको व ज्वरको व भूतबाधाकोहरै और राजद्वारमें बशीकरण है और इन्हों में घृतको पकाइ गोमूत्र के संग सेवनेसे भी पूर्वोक्त रोगोंको हरै ॥ ब्राह्मयादिरस ॥ ब्राह्मी कोहला बच शंखाहूली इन्होंके अलग अलग रसोंमें कूट शहद मिलाइ पीनेसे उन्मादको नाशै है॥ ब्राह्मयादिकल्क ॥ ब्राह्मीरस बच कूट शंखाहूली नागकेशर इन्हों का नस्य व अंजन करनेसे उन्मादको व भूतोन्मादको व अपस्मार को हरै ॥ सितकुसुमवलादियोग ॥ सफ़ेद फूलोंकी बाला ३॥ तोला लेइ चूर्णकरि दूधमें घालि ऊँगाकी जड़ मिलाइ अच्छीरीति से पकाइ ठंढाकरि रोज प्रभातकालमें पीनेसे उन्मादरोग को नाश करै जल्दी ॥ दशमूलादियोग ॥ दशमूलके काढ़ामें घृत मिलाइ व मांसका रस मिलाइ पीनेसे व सफ़ेद सिरसम राईका चूर्णमें घृत मिलाइ नस्यलेनेसे उन्मादजावै। व शंखपुष्पीके रस के पीने से व कडुआ तेलके नस्य व मालिश करनेसे उन्मादरोग जावै ॥ भूतोन्माद लक्षण ॥ पुरुषके भूतादिक लाग्योहोय तो तिसपुरुषकी बाणी बिचित्र अलौकिकहोय उसके शरीरकी चेष्टा भी बिचित्रहोय और उसकापराक्रमभी बिचित्रहोय और उसकाज्ञान बिज्ञानभी बिचित्र होय यह लक्षणहोय तो भूतादिकका लक्षण वाके उन्मादजानिये॥ अथ जिसके शरीरमें कोई देवता प्रवेशहुआहोय ताकेउन्माद का लक्षण ॥ सब बातोंसे वह हँसे तुष्टरहे और आप पवित्ररहे सुंदर पुष्पादिक की माला धारण करै और सुंदर इतर सूंघाकरै और उसकी आंख मीचेनहीं और बिगरपढ़े संस्कृत बोलै अरु शरीरमें तेजबढ़े और जो मांगे तिसे बरदे अरु ब्राह्मणहोजाय ये लक्षण जिसमेंहोयँ तामें देवता प्रवेश उन्माद जानिये॥ अथ जिसके शरीर में असुर प्रवेश होय तिसके उन्माद का लक्षण ॥ पसीनाआवे ब्राह्मण गुरु देवताओंमें दोष काढ़े कुटिलदृष्टि होय किसीतरह का भय होय नहीं खोटे मार्गमें दृष्टीहोय किसीतरह तृप्ति होय नहीं भोजनादिक में दुष्टा-

त्माहोय ये लक्षण जिस में होयँ तिसमें असुर प्रवेश जानिये ॥ गंधर्वप्रवेश हो जिसके ताके उन्माद का लक्षण ॥ दुष्टात्मा होय और मलिन बन में रहैं सोराजी रहै आचारमें मनरहै गावनानाचना सुहावैथोड़ा बोलै ये लक्षण होयँ तो गंधर्व लागो जानिये ॥ अथ यक्षग्रस्त उन्माद लक्षण ॥ लालनेत्र हो और अच्छे बारीक लालकपड़ोंको धारणकरै गम्भीर हो तीव्रबुद्धिहोय कमबोलै सबबातोंको सहै तेजस्वीहोय जो मांगै सो देवै ये यक्ष ग्रस्त उन्मादके लक्षण हैं ॥ अथ पितरोंका दोष होय तिसके लक्षण ॥ डाभके ऊपर पिंड २ धरै सतोगुणी होय तर्पण करता रहै मांसमें व गुड़में व खीरके भोजन में रुचि रहै ये लक्षण होयँ तो पितरों का दोष जानिये ॥ सर्प ग्रह ग्रस्त उन्माद लक्षण ॥ जो कभी कभी सर्पकी नाईं पृथ्वी में लम्बा पसरै और सर्पकेसमान जीभ से मुखको चाटै अरु क्रोधकरै गुड़ शहद दूध खीर इन्हों के खाने की बारबार इच्छा करै वह सर्प्प ग्रह ग्रस्त उन्माद जानिये ॥ अथराक्षसप्रवेशका उन्माद लक्षण ॥ जिसके राक्षस उन्मादहोय तिसकी मांस और लोहूमें रुचिरहै बचन दुष्टपनेसे वोलै घना शूरवीरपना करै क्रोध बहुत करै बहुत बलवान् होय रात्री में बहुत फिरै शुद्धि हीन होय ये लक्षण राक्षस उन्मादके हैं ॥ अथब्रह्मराक्षसप्रवेशउन्माद लक्षण ॥ देवता ब्राह्मण गुरु इनसे बैर राखै वेद और वेदान्तका जाननेवाला आप होजाय और अपने शरीरमें आपहीपीड़ाकरै और मारैनहीं ये लक्षणहोयँ तो ब्रह्मराक्षस प्रवेश लक्षणहै ॥ औरपिशाच लगाहोय ताकोलक्षण ॥ ऊंचाहाथराखै शरीरकृश होजाय कुछ कुछ मिथ्या बकै शरीर में दुर्गंधिआवै अपवित्र रहै चंचल होजाय बहुत खाय अरु बनमें रहनेको मनकरै भ्रमै बहुत रोवै ये लक्षणहोयँ तो पिशाच उन्मादलक्षणहै ॥ अथ उन्माद का असाध्य लक्षण॥ आंख मोटीरहै बहुत डोलबोकरै झाग मुखमें आवै नींद बहुत आवै बारम्बार ओष्ठ चाटै गिर गिर पड़ै कांपै और जो वह पर्वत हाथी आदि से बचै तो १२ बर्षतक जीवै। देवता संबंधी उन्मादों के ग्रहणकाल और पूर्णमासीको अजार घनाहोय तो देवता दोष जानिये और सांझको कोई दुःखहोय तो असुरदोष जानिये प्रतिपदा

को यक्ष दोष प्रकटहो है ८ कोगंधर्वदोष प्रकटहो है ३० अमावसको पितृदोष ५ सर्पदोष प्रकटहोहै १४ को पिशाचदोष होहै ॥ अथ इन सब के प्रवेशकी रीति ॥ जैसे मनुष्यादिकों को प्रतिबिम्ब दर्पणादिक में प्रवेश होहै तैसेही प्राणीमात्र में शीत उष्ण धँसिजाय है जैसे आतशीकांचमें सूर्यकी किरण प्रवेशकर अग्निको उपजावै है तैसे-ही मनुष्यादिकन के शरीर में भूत प्रेतादिक प्रवेश करजाय है ॥ निशादि घृत ॥ दारुहल्दी हल्दी त्रिफला सारिवा बच सफ़ेद सिर-सम हिंग शिरस मालकांगणी सफ़ेद कचनार मजीठ शुंठि मिरच पीपल देवदारु ये समानभाग लेइ घृत गोमूत्र इन्हों में सिद्धकिया घृतको खानेसे उन्माद जावै ॥ कल्याणकघृत ॥ कडूंभा त्रिफला रेणु-का देवदारु एलवा सालिपर्णी धमासा दारुहल्दी हल्दी सफ़ेद सारिवा सारिवा धवकेफूल कालाकमल इलायची मजींठ जमाल-गोटाकीजड़ अनारकीछाल बायविड़ंग पृष्ठिपर्णी कूट चन्दन पद्माख तालीसपत्र कटैली तमालपत्र जावित्री इन्हों को प्रत्येक तोला तोला भरलेइ कल्क बनाय चौगुना पानीमें कल्क घृत ६४ तोला मिलाय पकाय खानेसे अपस्मार को व ज्वर को व शोष को व खांसी को व मन्दाग्निको व क्षय को व बातरक्त को व खेहरको व तृतीयक ज्वर को व चातुर्थिकज्वरको व ज्वरको व बायुकी बवासीर को व मूत्रकृच्छ्र को व बिसर्प को व कंडूको व पांडु को व उन्मादको व बिषको व प्र-मेह को व भूतोन्माद को हरै है और बंध्या स्त्री के पुत्र पैदा करै और उमर बल को बढ़ाय दरिद्रता को व राक्षसादि सबग्रहों को नाशै इसका नाम कल्याण घृत है यह नपुंसकपना को नाशैहै ॥ हिंग्वादि घृत ॥ हींग कालानोन शुंठि मिरच पीपल ये ८ तोले इन्होंमें चौगुना दूध घृत मिलाय पकाय घृत को खाने से उन्माद जावै ॥ सारस्वत घृत ॥ त्रिफला सफ़ेद कटैली धमासा मजीठ सारिवा बच ब्राह्मी पाढ़ा कटैली रानमूंग रानउड़द लालसांठी सफ़ेद सांठी सहदेई सूर्य्यफूल बेल आवली सफ़ेद गोकर्णी ये प्रत्येक चार चार तोलेलेइ इन्होंको १ द्रोणभर पानीमें पकाय चतुर्थांशकाढ़ा रक्खै तिसमेंतगर रेणुकाबीज बच कूट पिपली सेंधानोन ये मिलाय और निरोगी

समान वर्ण बच्छावाली गौका दूध मिलाय घृत ६४ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि पुष्ययोगमें चिकना बरतन में घालि पीने से व मालिशसे बुद्धिको व स्मृति को व उमर को व पुष्टि को बढ़ावे और राक्षसादि व बिषको हरे इसका नाम सारस्वत घृतहै ॥ उन्मादगज-केशरी ॥ पारा गंधक मनशिल इन सबों के बरोबर धतूराकाबीज इन्होंको पीसि बचके काढ़ामें ७ भावनादेइ पीछे रासनाके काढ़ामें ७ भावनादेइ चूर्ण करनेसे उन्माद गजकेशरी रस सिद्धहो है इस रस को १ माशा भर लेइ घृत में मिलाय खानेसे उन्माद को व अ-पस्मारको व भूतोन्माद को व ज्वर को नाश करै। पर्पटी रसकोभेड़ के दूधमें मिलाय खानेसे उन्माद को व अपस्मार को हरे यह पारा-शरमुनिने कहा है ॥ बिगतोन्माद लक्षण ॥ मन बुद्धि इंद्रियां धातु प्र-कृति ये स्वच्छहों तो उन्माद गया जानिये। और जो अपस्मार रोगमें औषध कहे हैं वही उन्माद मेंभी बरतै ॥ भूतोन्माद में अंजन ॥ शिरसकाफूल लहसुन शुंठि सफ़ेद सिरसम बच मजीठ हल्दी पिप-ली इन्हों को बकराके मूत्र में पीसि गोली बनाय छाया में सुखाय इसगोलीको पानीमें घिस नस्यलेने से उन्मादरोग जावे ॥ भूतभैरव रस ॥ पारा हरताल मनशिल लोहभस्म सुरमा तांबा भस्म गंधक ये समान भागलेइ बकराके मूत्रमें पीसि पीछे सबोंसे दुगुना गंधक मिलाय लोहाके पात्रमें घालि पकाय पीछे १ माशाभर खावे घृत के सङ्ग यह अपस्मार को व उन्मादको हरे और इसको खाय शुंठि मिरच पीपल हींग इन्होंके चूर्णके सङ्ग घृत को खावे व मनुष्य के मूत्रमें कालानोन मिलाय पीवे यह भूतभैरव रस भूतोन्मादको हरे और भूतोन्मादमें रसको खाय धतूराके ५ बीजों में घृतमिलायखावै॥ भूतरावघृत ॥ हड़ बहेड़ा आमला शुंठि मिरच पीपल इन्द्रयव बच हल्दी दारुहल्दी इलायची चाब देवदारु नीलातूतिया कटुकी कूट मजीठ मनशिल पद्माख कटैली धमासा मुलहठी परवल केशर बाला रीठा सिरसम आपटा रसोत पिपलामूल मोहा के फूल कैथ बलिया लसूण तगर ये समान भाग लेइ बकरीका मूत्र दहीमिलाय घृतको सिद्धकरि पानमें व मर्दनमें व नस्यमें बरतने से भूतोन्माद

को व भूतभयको व ग्रहपीड़ाको व राक्षसको व डाकिनीको हरै यह जगत्के कल्याणके वास्ते रचाहै जैसे मंत्र तारकोंको ॥ धूप ॥ ऋच्छ के बाल गीदड़केबाल सेहकेबाल हींग इन्होंको बकराके मूत्रमें पीसि धूप देनेसे बलवान् भी ग्रह शांतहोय और गुह्यक व प्रमथ इन्हों के आराधनसे व देव ब्राह्मणोंके पूजनसे आगंतुक उन्माद शांत होवै व सिरस करंजकेबीज इन्होंको शहद घृतके सङ्ग और भक्ष्यपदार्थों से भूतादिपीड़ा शांतहोय ॥ भूतोन्मादचिकित्साशास्त्रार्थ ॥ दोष अवस्था प्रकृति देश काल बल असक्तपना इन्हों को देखि चिकित्सा करनेसे भूतोन्माद जावै। देवगंधर्व पितर इन्होंकेदोषसे उन्मत्तहो तो बुद्धिमान् नस्य अंजन तेजरूप और क्रूरकर्म करै नहीं और घृत का पानकरै व सूर्यके जप व होम आदिकरै। देवकीपूजाबलि नैवेद्यशान्तिनिमित्त होम मंत्र दान पुण्याहबाचन ब्रतनियम जप मंगल प्रायश्चित्त मणि औषधि इन्होंको धारण नमस्कार महादेव व विष्णुका पूजन इन्होंसे भूतोन्मादजावै ॥ महापैशाचिकघृत ॥ जटामांसी सुगंधजटामांसी लघुनीली कोंच बच बनप्सा सेवती भूमि आमला गठोणा कटुकी हड़ डुकरकंद बड़ीसोंफ शाक गोखुरू महा शतावरि ब्राह्मी दोनों प्रकारकी नाकुली कुटकी थोहर सालपर्णी मूषाकर्णी इन्होंके कल्कमें घृतको पकाय खाने से चातुर्थिक ज्वर व उन्माद व ग्रहबाधा व अपस्मारको हरै यह महापैशाचिक घृत अमृतके समानहै और बुद्धिको स्मृतिको व बालकोंके अंगोंको बढ़ावे है ॥ कल्याणकघृत ॥ कल्याण घृतसे व नारायण तेलसे व वृहन्नारायण तेलसे उन्माद रोगजावै ॥ उन्मादमें पथ्य ॥ गेहूं मूंग लाल चावल जलकीधारा गरमदूध सौबार धोया घृत पुराना वा नया घृत कछुआका मांस खांड़ रसाला पुराना कोहला परवल ब्राह्मी बथुआ धानकीखील दाख कैथ फणस ये उन्मादके रोगमें पथ्यहैं ॥ अथअपथ्य ॥ मदिरा बिरुद्ध भोजन गरम भोजन और नींद भूख तीस छींक इन्होंके वेगोंको रोकना तीक्ष्ण व कडुवी बस्तुका खाना इन्होंको बैद्य उन्माद रोगमें त्यागकरवावै ॥

इतिश्रीरविदत्तवदरीनिवासिनाकृतंनिघण्टरत्नाकरभाषायांउन्मादप्रकरणम् ॥

अपस्मारकर्मविपाक ॥ गुरु व ऽवढाको धनकोचारै व प्रतिकूल वरतै वह अपस्मार कहे मृगी रोगीहो प्रायश्चित्त। चांद्रायण ब्रत को करनेसे आरामहोवे व ब्राह्मणोंका श्वासके रोकनेसे अपस्मार रोगीहोवे प्रायश्चित्त। दान होम जपादिकरनेसे शांतहोय ॥ ज्योतिषशास्त्राभिप्राय ॥ जिसके जन्मकाल में ८ स्थान पर शनि मंगल सूर्य्यहोवैं उसके नानाप्रकारकी पीड़ायुत अपस्मार रोगहोवे इन्हों की शांति वास्ते पूर्वोक्त जपादिकरावे ॥ अपस्मार निदान ॥ चिंताशोकादिकरके क्रोधहुये जो बातपित्तकफ सो हृदयकी नसोंमें बैठिस्मरण मात्रको नाशकरि मृगीकेरोगोंको उत्पन्नकरैहै वह मृगीरोग चारप्रकारकाहै वातका १ पित्त का २ कफका ३ सन्निपातका४॥ मृगीरोग का पूर्वरूप अरु लक्षण ॥ हियोकांपै अरु सूनाहोजाय पसीनाआवे ध्यानलगजाय मूर्च्छाआवे ज्ञानजातारहै नींद आवे नहीं ये लक्षण होयँ तो जानिये इसके मृगीरोग होयगा। उसे सर्वत्र अंधकारहीदीखेऔर स्मरणजातारहै और हाथपांवको आदिले सबअंगोंकोपृथ्वी ऊपर पटकाकरै तब जानिये मृगीरोग अबहोगा। वायुकी मृगी का लक्षण। कंपहोय दांतचाबै मुखमेंझागआवे अतीसारहोय कालापीलादीखै ये लक्षण बातकी मृगीकेहैं ॥ पित्तकी मृगीकालक्षण ॥ मुख में पीड़ा झाग आवे और शरीरकी त्वचाअरुमुख पीलापड़जाय ये लक्षण पित्तकी मृगीकेहैं ॥ कफकी मृगीकेलक्षण॥ मुखमें सफेदझाग आवे शरीर की त्वचा में यह रोग सदाहीहै परन्तु रोगोंका समय आवे तो कोपकरै अरुमुख नेत्र यह सब सुफेद पड़जायँ शीतलागे रोमांचहोय और उसे सफेदही सफेद दीखै ये लक्षण कफकी मृगी केहैं ॥ सन्निपातकी मृगीका लक्षण। ये पीछे कहे जो लक्षण सो सब जिसकेहोंतो सन्निपातकी मृगीजानिये। अथमृगी केअसाध्यलक्षण। जिसका शरीर बहुतफरकै और क्षीणहोजाय और भृकुटी चढ़वालगजाय और नेत्रोंकी प्रकृति और होजाय ऐसामृगीवाला मरजाय। अथमृगीको समय॥ १२ दिनमें आवेतो बायुकीजानो १५ दिनमें आवे तो पित्तकी जानिये १ महीना में आवेतो कफकीजानिये यहां दृष्टान्तहै जैसे इन्द्रजलको बरसै है तब सभीवस्तुउगै परन्तु यवगेहूं

चना आदि पृथ्वी ऊपर शरद ऋतुही में ऊगें तैसे शरीर मधुक घृत मुलहठी ८ तोला लेइ कल्ककरि २०४८ तोला आमलाके रस में ६४ तोला घृतको सिद्धकरि खाने से पित्तके अपस्मार को हरै॥ कासघृत॥ कासतृणका काढ़ा ईषकारस शिवणीका रस ८ गुणामें जीवनीय गणकी औषध प्रत्येक तोलातोलाभरलेइ घृत ६४ तोला मिलाइ पकाइ खानेसे बातपित्तके अपस्मारकोनाशै॥ बचादिघृत॥ बच अमलतास करंज आमला हींग गठोणा लघुगोखुरू इन्होंका कल्क में सिद्धकरि घृतको खानेसे बात कफ के अपस्मार को हरै॥ मधुबचायोग॥ दूध चावल को खानेवाला मनुष्य बचकेचूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे बहुतदिनोंका घोररूप अपस्मारजावै॥ मुस्तकमूल॥ योग॥ उत्तरदिशा में गया नागरमोथा की जड़ को गौकेदूधमें पीसि खानेसे अपस्मारको नाशकरै और इस में समानवर्ण बच्छावाली गौके दूध को वरतै॥ कूष्मांडकादियोग॥ मुलहठीके चूर्णको कोहला की गिरी के रसमें खरलकरि पीनेसे ३ दिनतक अपस्मारकोनाशै॥ भैरवरसायन॥ बच। गिलोय शुंठि मिरच पीपल मुलहठी सतरुद्राक्ष॥ सेंधानोन कटैलीकाफल समुद्रफल लसूण इन्होंको पीसि नस्यलेने से अथवा कल्ककरि नाकके पुटमें देनेसे अपस्मारको व कफको व बायुको व मस्तक पीड़ाको व बड़को व तंद्राको व भ्रम को व जाड्यको व मोह को व सन्निपात को व कर्णरोग को व अक्षिभंग को व पीनसको व हलीमककोनाशै यहभैरवरसायनरस विट्ठल वैद्यने प्रगट किया है॥ स्मृतिसागररस॥ पारा गंधक हरताल मनशिल तांबा भस्म इन्होंकोशुद्धकरि व मूर्च्छितकरि चूर्णको बचकेरसमें २१ बार भावना देइ पीछे ब्राह्मीके रसमें २१ भावनादेइ पीछे ज्योतिष्मतीके रसमें १ भावनादेइ यह स्मृति साररसहै इसको घृतकेसंग १ माशा खानेसे अपस्मार को हरै॥ पानीयकल्याणघृत॥ हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आमला १ तोला हलदी १ तोला दारुहलदी १ तोला पित्तपापड़ा १ तोला दोनोंसारिवा २ तोला धौकेमूल व राल १ तोला सालपर्णी १ तोला पृष्ठपर्णी १ तोला देवदारु १ तोला रालवाल १ तोला तगर १ तोला कडुंभा १ तोला जमालगोटा की जड़ १

तोला अनारछाल १ तोला नागकेशर १ तोला नीलाकमल १ तोला इलायची १ तोला मजीठ१तोला बायबिडंग १ तोला कूट १ तोला पद्माख १ तोला जावित्रीफूल १ तोला सफ़ेदचंदन १ तोला तालीस पत्र १ तोला कटैली १ तोला इन्हों का कल्क करि चौगुनापानी मिलाइ घृत ६४ तोला गेरि सिद्ध करि खाने से ज्वरको व क्षयको व उन्मादको व बातरक्तको व खांसीको व मंदाग्निको व खेहरको व कमरके शूलको व तृतीय चातुर्थिक ज्वरको व मूत्रकृच्छ्रको व पांडुको व सांपआदि के जहरको व मीठातेलिया आदि विषोंको व बिसर्पको व प्रमेहको नाशकरै और वंध्याखाइ तौ पुत्रहोवै और भूत यक्ष राक्षसादिको हरै॥ शंखपुष्पीघृत॥ शंखाहूली वच कूट ब्राह्मी रस इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे बहुत दिनोंका अपस्मार व उन्मादजावै॥ सैंधवादिघृत॥ घृत १ तोला सेंधा १ तोला हींग १ तोला गोमूत्र १२ तोला इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे अपस्मार व हृद्रोगजावै॥ ब्राह्मीघृत॥ ब्राह्मीके रसमें वच कूट शंखपुष्पी पुराना घृत इन्होंमें घृतको पकाइ खानेसे अपस्मार जावै॥ कूष्मांडघृत॥ एकभागघृत १८ भाग कोहलाके रसमें पकाइ पीछेमुलहठीके चूर्ण के संग खानेसे अपस्मारजावै॥ पंचगव्यघृत॥ गौके गोबरका पानी दही बिजौरा दूध गोमूत्र इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खानेसे चातुर्थिक ज्वरको व उन्माद को व अपस्मारकोनाशै॥ अपस्मारनस्य॥ राल कंवडल इन्होंका नस्यलेनेसे अपस्मार जावै व निर्गुंडीके रसमेंअक्रोड़को पीसिनस्य व अंजनलेनेसे अपस्मारजावै कुत्ता गीदड़ बिलाव कपिलागौइन्होंकेपित्तोंकी अलग २नस्यलेनेसे अपस्मारजावै॥ अंजन॥पुष्यनक्षत्रमें कुत्ताका पित्तकाढ़ि अंजन करनेसे व इसमें घृत मिलाय धूपलेनेसे अपस्मार जावै व मनशिल रसोत कबूतरकी बीट इन्होंकेअंजनसे अपस्मार व उन्मादजावै। व मुलहठी हींग वच थोहरदूध सिरस लहसुन कूट इन्होंके नस्य व अंजन करनेसे उन्माद व अपस्मारजावै परन्तु इन्हों को बकराके मूत्रमें पीसिबरतै। व करंज देवदारु सफ़ेद सिरसम कांगनी बच हींग मजीठ त्रिफला शुंठि मिरच्च पीपल राल इन्होंको बकराके मूतमें पीसि पान में व अंजनमें व

नस्यमें बरतनेसे उन्माद व अपस्मार व भूतबाधा जावै व नौला उ-
ल्लू बिलाव गीध किड़ाड़ासांप काक इन्होंकातुंड पांख बिष्ठाकी धूप-
लेनेसे अपस्मार जावै और अपस्मार बहुतदिनोंका हो तो कष्टसाध्य
जानिये तिसे इन रसोंसे शांतकरै और इसरोगमें हियाकांपै और
नेत्रों में पीड़ाहोइ पसीनाआवै और हाथपैर शीलेहों तब दशमूल
का काढ़ादेइ कल्याण घृतका पानकरावै॥ त्रिकत्रयलेह॥ हड़ बहेड़ा
आमला शुंठि मिरच पीपल दालचीनी इलायची तमालपत्र। जी-
वनीयगण इन्होंकालेह बनाय चाटने से अपस्मारको व उन्माद को
व वातव्याधि को नाशै॥ कल्याणचूर्ण॥ शुंठि मिरच पीपल चवक
चीता मिरच त्रिफला सेंधानोन पिपली बायबिड़ंग करंज अज-
मान जीरा धनियां इन्हों का चूर्ण गरमपानी के संग खाने से वात
कफ को व अपस्मार को व बवासीर को व संग्रहणी को नाशकरै
इसका नाम कल्याण चूर्ण है यह जठराग्नि को दीपन करै है॥ लेप
व दाग॥ सिरसम को गोमूत्र में पीसि इस का लेप व उबटना हित
है और धूमा व तेज नस्य देने से व दाहसे व कपोलों में सूई के
छेदन से अपस्मारजावै व अंतवारको २ भौवर कीड़े लाय कंठ
व भुजामें धारणकरै तो उग्र अपस्मारजावै॥ चन्दनादिअवलेह॥
चन्दन तगर कूट दालचीनी इलायची तमालपत्र बथुआ मजीठ
शतावरि दाख पाढ़ा हड़ राल कौंचबीज मूर्वा अतीश रासना कडूंभा
कंकोल जीवक मेदा पुष्करमूल नागरमोथा बाला मोचरस बंश-
लोचन दारुहल्दी अमली हड़ बहेड़ा आमला बायबिड़ंग कटुकी
दालचीनी तमालपत्र नागकेशर निंब कचनार तालीसपत्र महा-
मेदा देवदारु कमल बलिया भारंगी बेर अनार शिवणी सिंघाड़ा
हल्दी कपूर छोरताग कटेली ये समान भाग लेय खांड़ घृत शहद
इन्हों को मिलाय लेहकरि १ तोला रोज खाने से अपस्मार को
व उन्माद को व क्षय को व गुल्म को व पाण्डुको व खांसी को व
श्वासको व प्रदरको व पेटको व बालकों के रोगकोहरै और स्त्रियों
कोहितहै॥ शास्त्रार्थ॥ अपस्मार में पहिलेबमनकराय पीछे बातिक
अपस्मारमें बस्ति कर्म करै और पित्तके अपस्मारमें रेचनदेवै और

कफके अपस्मार में बमनदेवै॥ पलंकषातैल ॥ रास्ना बच हड़ थोर आग आक शिरस जटामांसी सुगन्ध जटामांसी कलहारी हींग कालानोन लहसुन मूर्वा चीता कूट पक्षियों का मांस चौगुनाबकरा मूत्र इन्हों में तेल को पकाय मालिशकरने से अपस्मार को नाश करे॥ कटभ्यादितेल ॥ मालकांगनी निंब मीठासहिंजना दालचीनी इन्होंके काढ़ा में गोमूत्र मिलाय तेलकोसिद्धकरि मालिश करने से अपस्मार जावै॥ शिग्रुतेल ॥ सहिंजना कूट बच जीरा लहसुन शुंठि मिरच पीपल हींग ये समभाग लेय बकराके मूत्रमें मिलाय तेलको पकाय मालिश करने से व नस्यलेनेसे अपस्मारजावै। तेल व घृत ६४ तोला जीवनीयगणके औषधों का चूर्ण मिलाय और २०४८ तोला दूधमें पकाय बरतनेसे अपस्मार जावै व कडुआतेल १ भाग बकराकामूत्र ४ भाग इन्हों को पकाय तेलकी मालिश से व गौ के गोबरकेपानी व गोमूत्र पानी इन्होंमें तेलको पकाय मालिशकरनेसे अपस्मारजावै॥ अपस्मार में पथ्य ॥ लालधान मूंग गेहूं पुरानाघी कछुयेका मांस मरुदेशके मांसकारस दूध ब्राह्मीकेपत्ते बच परवल बड़ाकोहला बथुआ मीठाअनार सहिंजना दूधकापेड़ा दाख आमला फालसा तेल और गधा घोड़ा गौ इन्होंकामूत्र आकाशकाजल हड़ ये मृगीरोगमें मनुष्योंको पथ्यकहेगयेहैं॥ अथमृगीरोगमेंअपथ्य॥ चिन्ता शोक भय क्रोधअशुद्ध भोजन मद्य मछली विरुद्ध अन्न तेज गरमतथा भारीभोजन बहुत स्त्रीसंग श्रम पूजनेयोगकी पूजा न करना पत्तोंकाशाक कंदूरी आषाढ़फल भूख प्यास नींद इनकेबेग इनसबोंको मृगीरोगवाला त्यागकरै॥ वातव्याधिकर्मविपाक ॥देवका व ब्राह्मण का धनचोरानेसे व इन्हेंको पीड़ादेनेसे व गुरु से द्रोहकरने से बातरोगीहोय हैं इसमें उपाय से आराम होइ॥ बातहर ॥ जो गुरुसे बैरराखै वह बातरोगीहो। प्रायश्चित्त। गोविंदइत्यादि नाम मन्त्र से जप व होम करावै॥ धनुर्वातहर॥ जो इच्छाहीन व अक्षत योनि ऐसी स्त्री से बलकरि समागमकरै उसकी सबसंधियोंमें पीड़ा होय और मन्दाग्नियुत धनुर्बात रोगीहोवै व ज्वरीहोय। प्रायश्चित्त। इसकीशांति के वास्ते भैंसकादानकरै औ कृच्छ्रातिकृच्छ्र चान्द्राय-

णका व्रतकरे और सूर्यनामसे जपकराय बित्त माफिक ब्राह्मणोंको भोजन कराय गोविंद अनन्त अच्युत इन तीनों नामोंकोजपै और विष्णु सहस्त्रनाम का पाठ विधि से करावे और अच्युत अनन्त गोविंद इस मन्त्र का तीसहजार जप करावे ॥ पक्षबातहर ॥ सभा में मिथ्या पक्षपात करनेवाला अर्धंगी होयहै। प्रायश्चित्त। सोना नवमाशा ब्राह्मणको दानदेइ वैष्णवश्राद्धकरावे और सतनजाका दान करि गोदानकरे इससे शांतिहो ॥ रक्तबातहर ॥ जो लालकपड़े मूंगा इन्हों को चोरावे वह रक्तबात रोगीहोवे। प्रायश्चित्त। पद्मराग कपड़े इन्हों सहित भैंसका दान करे ॥ रक्तबातपित्तहर ॥ अन्यकी सवर्ण स्त्री से भोगकरने से वातरक्त व बातपित्त रोगहोय है। प्राय-श्चित। ४ तोला व २ तोला व १ तोला सोनाकी लक्ष्मीनारायण की मूर्त्ति बनाय दान देवै यह लक्ष्मीनारायण की मूर्त्ति सबकामना देइहै ॥ बातपित्तहर ॥ जो ब्राह्मण क्षत्री वैश्य हो के लहसुन गाजर तालफल इन्होंकोखावे वहबातपित्तरोगीहो। प्रायश्चित्त। चान्द्रायण व्रत के करने से शांति होवे ॥ ज्योतिषशास्त्रकाअभिप्राय ॥ जिसकी जन्मपत्रीमें कर्कराशिपै सूर्य्यहो तो बात रोगीहो व चोरीकरे व चं-चलमतिवाला होय और शनिकी दृष्टिभीहो तो निन्दकहोवे और जन्मकालमें शनि केतु एकराशिपै हों तो बात पित्तरोगीहो व हीन मनुष्यों के संग उग्रविग्रह हो और विदेशमें गमनकरे और ॥ वायु प्रशंसा ॥ वायुजीवों को जिवावे है और वायुबलरूप है और वायु मनुष्यों का आधार व पोषक है और यह संसार वायुरूप है और वायु प्रभु है जिसके कोप से ८० प्रकार के बात रोग पैदाहोय हैं औरइन्होंकी औषध सामान्यहै स्नेहन स्वेदन से आरामहोय है परन्तु विस्तारपूर्वक कहतेहैं ॥ बातव्याधिनिदान ॥ कषायलीतीखी कड़ुवीबस्तु खायेसों निर्बल बस्तुके भोजनसों रूखी बस्तुके खानेसे खेदसूं शीतल भोजन से घने मैथुन से धातुके क्षीणपने से मलमूत्र के रोक ने से भयसे घने लोहू के निकलने से मांसके क्षीणपने से घना बमन बिरेचनसे आम के दोष से वृद्धावस्था से मनुष्यों को वर्षा ऋतुमें तीसरे पहर अथवा पहरके तड़के बलवान् वायुमनुष्य

के घुसके नानाप्रकार का रोग सबअंगमें अथवा एक २ अंगमें करै है॥ बायुकापूर्वरूप॥ इनवायुरूपरोगोंका नहीं प्रकटहोना यहीपूर्वरूप बायुरूप बायुका प्रकटरूप यह है अंगकानाश शरीर का हलकापन संधियों का संकोच हाड़ और संधियों का फरकनसे बंदहोना व टूटनारोमांचहोना व प्रलाप पसली पीठ व शिर इनमें पीड़ा गंजापन पागलपन कुबड़ापन शोजा नींदकानाश गर्वकानाश व वीर्यकानाश व स्त्रीकी रजका नाशहोना कंप व अंगोंका सोना शिर नाक नेत्र गल इन्होंका मुड़जाना शरीर का टूटना शूल व आक्षेपक व मोह व आयास यानी परिश्रम इनको आदिले रूपको कुपितहुआ वायु प्रकट करैहै और हेतु विशेष व स्थान विशेषहोके अन्य रोगोंकोभी उत्पन्न करैहै॥ बातचिकित्सोपक्रम॥ तेलकी मालिशसे वस्वेदनसे व वस्तिकर्म से नस्यलेनेसे अवलेहसे जुलाबसे चिकना खट्टा सलोना मीठा पुष्ट ऐसे पदार्थोंके खानेसे बातरोग शांतहोवै और पित्तयुक्त वायुमें शीत अरुगरम औषधदेवै और कफयुक्तवायुमें रूखा व गरम ऐसा औषध व भोजन देवै और एकला वायु में चिकना व गरम भोजन तथा औषधदेवै और जो बातका रोग चिकना गरम रूखा शीतल इन्हों से शान्त न हो तो वह रोग कुपित लहू का जानना॥ दूसरा प्रकार॥ मीठा व सलोना खट्टा चिकना गरम इन पदार्थों के खाने से और नींद और सूर्यकी किरणसे व वस्तिकर्म्म से स्वेदनसे तृप्त करनेसे गरमपानीसे मालिशसे अंगोंको दाबनेसे कुपितवायु शांत होय॥ तीसराप्रकार॥ वातरोग असाध्य है दैव योगसे आराम होता है इसमें वैद्यजन अनुमान चिकित्साकरै प्रतिज्ञा से नहीं॥ कोष्ठगत बातलक्षण॥ उदरमें रहता जो दुष्टवायु सो मलमूत्र रोकदेयहै और हियारोग गुल्मरोग बवासीर पसली और अंडवृद्धि इन रोगों को उपजावैहै॥कोष्ठलक्षण॥ आमाशय पक्काशय अग्न्याशय मूत्राशयरुधिराशय हृदयउदक याने पेटफेफड़ा इन्होंकी कोष्ठसंज्ञाहै॥ आमाशयोक्त॥ दूसरे दिनसेले छहदिन पर्यंत आमाशयोक्त षट्चरणयोग देवै॥ कोष्ठबातचिकित्साक्रम॥ कोष्ठगत बातविकार में दूधको पीवे। और शुंठि मिरच पीपल कालानोन जीरा हड़ नोन सुहागा खारी

नोन सैंधानोन मनयारीनोन सारिवा कटेली पाठा इन्द्रयव चीता इन्होंका चूर्ण दही मदिरा मस्तु कांजी इन्होंको खानेसे मंदाग्निको व कोष्ठबातको नाशकरे ॥ चिकित्सा ॥ पाचनीय रस व अन्य पाचक औषध खाइ मलोंको पकावे परंतु बिशेषकरि कोष्ठगत बात में दूध को पीवै ॥ आमाशय गतबात लक्षण ॥ हिया में पसवाड़ा में पेट में नाभिमें पीड़ाहोय प्यास लागे डकार बहुत आवैं बिशूचिका और खांसीहोय कंठमुख सूखजाय श्वासहोय ये लक्षण आमाशयमें प्राप्त बायुके हैं ॥ आमाशय लक्षण ॥ नाभि व स्तन कहे चूँचियां इन्हों के बीचमें मनुष्यके आमाशय होय है ऐसेशारीरकके जाननेवाले महा निपुण बैद्य कहते हैं ॥ आमाशय गत बातचिकित्सा ॥ इसमें भोजनसे पहिले दीपनपाचन औषध देवै और बमन व तीक्ष्ण रेचनदेवै और पुराने मूंग चावल यव इन्हों को खावै ॥ आमाशय बात ॥ इसमें छर्दि निंद ये उपचारकरै और ७ राततक पानीकेसंग षट्चरणयोग देवै ॥ षट्चरण योग ॥ चीता इंद्रयव पाठा कटुकी अतीश हड़ इन्हों का चूर्ण महाब्याधि बातकोहरै इसका नाम षट्चरणयोगहै ॥ तीनकाढ़े ॥ अजमोद हड़ कचूर पुष्करमूल इन्हों का काढ़ा व बेल फल गिलो- य शुंठि देवदारु इन्होंका काढ़ा व बच अतीश पिपली मनयारी नोन इन्होंका काढ़ा ये आमबातको हरते हैं। व गिलोय मिर्च इन्हों के चूर्णको गरमपानी के संग खानेसे व शुंठि देवदारु इन्होंके चूर्णमें गुड़ मिलाइ खानेसे कोष्ठ की बायुका नाशहोवै ॥ पक्काशयस्थ बायु लक्षण ॥ आंत बोलै पेटमें शूल और अफारा मलमूत्र कष्टसेउतरै पीठ व शिर व कण्ठइन्होंमें पीड़ाहोय ये पक्काशय गतवायुकेलक्षण ॥ चिकित्सा ॥ पक्काशय गतवायुमें अग्निकी दीपनकरावै और उदा- वर्त्त की कही सब क्रियाकरै और सचिकूण जुलाबदे और जो बायु पेटमें होय तो खार व चूर्णसे अग्निको दीपनकरै और कुक्षिमें बायु हो तो शुंठि इन्द्रयव चीता इन्हों का चूर्ण गरम पानी के सङ्गदेवै और पक्काशय में बायु हो तो स्नेहन व रेचन वस्तिकर्म सलोने भोजन देवै। हृदय बात गिलोय मिरिच इन्हों को पीसि प्रभातमें गरम पानी में मिलाय कछुगरमकर पीनेसे हियाकी बात दूरहो

व असगन्ध बहेड़ा गिलोय इन्हों को गरमपानी में पीसि गुड़मिलाय खानेसे हियाकी बात दूर होय व देवदारु शुंठि इन्होंकेचूर्ण को गरम पानी के सङ्ग खाने से हियाकी बात दूरहोय॥ सर्वांगवात लक्षण॥ अंग फुरै व मुड़जाय और शरीर में पीड़ा बहुत होय ये सर्वांगबायुके लक्षणहैं॥ चिकित्सा॥ सर्वांगगत बायुको व एकअंगमें बायुको तेलकी मालिशकर गरम जलसे न्हाना दूरकरै है अवशिष्टबात प्रलापवायुमें व भीरुतापबायुमें व प्रसुप्तिवायुमें चित्त विभ्रमवायुमें स्वेदनाशवायुमें बल क्षीण वायुमें घृत गुग्गुल देनाश्रेष्ठ है शब्दकी अज्ञानता वायुमें कल्याण लेहहितहै और शीतरूपवायु में व रोमहर्षबायुमें नसोंगतवायुमें कडुवा चिकना स्वेदन मर्दन ये सबहित हैं और बायु गुदा से न सरता हो व डाकर आती हो व आंत बोले तो निरूह बस्ति देवै और अंगों को कठिन करनेवाले स्निग्ध पदार्थों से स्नान करावै॥ कुरंटकादि काढ़ा॥ पीलाबांसा शुंठि देवदारु इन्हों के काढ़ा में अरण्ड का तेल मिलाय पीने से बायु पीड़ित मनुष्य बहुत जल्दी अच्छा हो॥ महारास्नादि॥ रास्ना अरण्डजड़ गिलोय बच पीलाबासा चाव कोंचके बीज नागरमोथा भारंगी अजमोद अजवाइन पाठा देवदारु बायबिड़ंग काकड़ाशिंगी शुंठि बाला मूर्वाकटुकी मजीठकाला व सफेद अतीश कचूर हड़ बहेड़ा आमला पिपली जवाखार लालचन्दनअमलतास कायफल कूड़ा ये समानभागलेइ अष्टमांश काढ़ा रक्खै यह महारास्नादि कौशिकमुनिने कहाहै यहसर्वांगबातको व एकांग बातको व श्वासको व खांसीको व पसीनाको व शीतको व तन्द्राको व शूलको व तूनीको व प्रतूनीको व गलरोगको व एकांग वात को व कंपको व खल्लीबातको व बिश्वाचीको व श्लीपदको व आमबातको व सूतिका रोगको व सुप्तिबातको व जिह्वास्तंभ को व अपतान को व स्फोटनको व मथनबातको व क्लीव बातको व आक्षेपकको व कुब्ज बातको व सूजनको व अफाराको व अपतंत्रको व आर्दितको व खुंड़ बातको व हनुग्रहको व गृध्रसीको व पादशूलको व बातकफब्याधि को हरै यह महादेवजीने कहाहै॥ दूसरा प्रकार॥ रास्ना २भाग धमा-

सा १ भाग बाला १ भाग अरण्डजड़ १ भाग देवदारु १ तोलाक-
चूर १ तोला बच १ तोला बासा १ तोला शुंठि १ तोला हड़ १ तोला
चाव १ तोला नागरमोथा १ तोला सांठी १ तोला गिलोय १ तोला
बरधारा १ तोला सौंफ १ तोला गोखुरू १ तोला असगंध १ तोला
अतीश १ तोला अमलतास १ तोला शतावरि १ तोला पिपली १
तोला पियाबासा १ तोला धनियां १ तोला दोनों कटैली २ तोला
इन्होंका काढ़ाकरिशुंठिका चूर्ण मिलाय पीनेसे व जोगराज गुग्गुल
के सङ्गपीने से व अजमोदादि चूर्ण के सङ्गपीने से व अरण्ड तेलके
सङ्गपीने से सर्बांग कंपको व कुब्जकवातको व पक्षाघातको व अ-
पबाहुकको व गृध्रसी को व आमबात को व श्लीपद को व अ-
पतान को व अन्तर्बृद्धि को व आध्मान को व जंघावात को व
जानु वातको व अर्दित को व शुक्रदोष को व लिंगवातको व ब-
न्ध्यापना को व योनिरोग को हरै और गर्भ को धारण करावै॥
महावलादिकाढ़ा॥ गंगेरणजड़ शुंठि इन्होंके काढ़ामें पिपलीकाचूर्ण
मिलाय पीनेसे शीतको व कंपको व दाहको हरै इसको २ दिन व
३ दिन तक पीवै॥ पंचमूलादियोग॥ पंचमूलका काढ़ा व दशमूल
का काढ़ा व रूक्षस्वेद व नस्य इन्होंसे मन्यास्तंभ बायु जावै॥ बाजि
गन्धादि काढ़ा॥ आसगंध बला मोटीबला लघुबला दशमूल शुंठि
नखी बेर रास्ना इन्हों के काढ़ासे बायुका नाशहोय॥ समीरदावानल॥
भिलावाँ के टुकड़े १॥ तोला पानी ४ तोला इन्हों का काढ़ाकरि
चतुर्थांश राखै इस में खांड़ ॥ तोला घृत २ तोला दूध ४ तोला
मिलाइ पीनेसे यह बात रोगोंको हरै॥ गुदास्थित बायुकार्य॥ गुदा
में बायु हो तो मल मूत्र अपान बायु इन्हों का प्रतिबंध हो औरशूल
व आध्मान व पथरी व जंघा गोड़ा कंठ पीठ मस्तक हिया इन्हों में
शूल व सोजा को पैदाकरै॥ चिकित्सा॥ गुदाश्रित बायु दुष्टहो तो
उदावर्त्त में कहे औषधादि करै॥ चिकित्साक्रम॥ दशमूल के काढ़ा
में व बिजौरा के रस में एरंडके तेलको मिलाय पीनेसे बस्ति व कूष
गुदा इन्हों की दुष्ट बायु जावै॥ श्रोत्रादि गतलक्षण॥ कान आदि इं-
द्रियोंमें बायु कुपित होतो उन्हीं इंद्रियोंको नाशै॥ चिकित्सा॥ इन्हों

में बातनाशक इलाजकरै और स्नेह पान मालिश मर्दन लेप ये करावै ॥ जृम्भा ॥ मुहँका एकश्वास प्रथम मुहँ में पीजाइ पीछे वह श्वास उलट काढ़िदे आलस और नींद ये लिये आवै तिसे जँभाई कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ शुंठि पिपली मिरच अजवाइन सेंधा ये सब अलग २ पीसिखानेसे जँभाई को नाश करते हैं और सुन्दर पलँग ऊपर शयन करनेसे जँभाई बेग शांतहोवै ॥ चिकित्सा ॥ कडुवातेल की मालिश से व स्वाद भोजनके खानेसे व नागरपान के खाने से जँभाई बेग शांत होवे ॥ प्रलापक ॥ आपका कुपथ्यसे कुपित बायु अर्थ रहित क्युंका क्यूं बचनबोलै तिसे प्रलापक कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ तगर पित्तपापड़ा अमलतास नागरमोथा कटुकी बाला आसगंध ब्राह्मी मुनक्का चंदन दशमूल शंखाहूली इन्होंकाकाढ़ाकरि देनेसे प्रलाप शांतहोवै ॥ रसाज्ञाननिदान ॥ जो मीठा रस आदि ले छह रसों के खाने में यथार्थ ज्ञान जाता रहै तिसे रसाज्ञान होवे ॥ चिकित्सा ॥ सेंधा शुंठि मिरच पीपल फालसा आम्लवेतस व इमली इन्हों का चूर्ण इस से जीभ को घर्षणकरै व चिरायता कटुकी इन्द्रयव कूड़ाछाल ब्राह्मी पलाश राई कालाजीरा पिपली पिपलामूल चीता शुंठि मिरच इन्होंका अदरखके रसमेंकल्ककरि जीभ ऊपर मलनेसे रसाज्ञान दूरहोवै ॥ किरातादि कल्क ॥ चिरायताके कल्क को जीभपर मलनेसे जीभकी शून्यता को हरै ॥ त्वक्शून्यतालक्षण ॥ जिसको शीत गरम कोमल कठिन को ज्ञान जातारहै तिसे त्वचा शून्य कहते हैं ॥ चिकित्सा ॥ इस में फस्त करावे और नोन घरका धूमा इन्हों का लेपकरै ॥ रक्तबायु लक्षण ॥ शरीर में पीड़ा घनी हो और बर्ण बदलजाइ शरीर माड़ा होजाइ अरुचि हो और अंगपर कील पैदाहों भोजन किया नादअंगोंका स्तंभहो ये रक्तगत बायुके लक्षण हैं ॥ मांसगत बायु ॥ शरीरभारीहो पीड़ाहो और स्तंभित हो और शरीर मुष्टि व दंडसे हत सरीखा होजाय ये लक्षण मांस गत बायु के हैं ॥ मेदगत बायुलक्षण ॥ यह बायु शरीर में गांठोंको पैदाकरै और कम पीड़ावाले ब्रणहों ॥ अस्थिगत बायुलक्षण ॥ संधियों में पीड़ाहोय मांस जलजाइ नींद आवे नहीं निरंतर पीड़ारहै ये हाड़

गतबायुके लक्षण हैं॥ मज्जागत बायुलक्षण ॥ इसमेंपीड़ानिरंतरबनी रहै॥ शुक्रगत बायुलक्षण ॥ स्त्रीसङ्ग करने में जल्दी बीर्य्य गिरपड़े व बीर्य्यको व गर्भको बांधे व गर्भको बिकृतरूप पैदाकरै ये लक्षण हैं॥ सप्तधातुगतबायुचिकित्सा ॥ त्वचामें बायुहोतो स्नेहपानमालिश स्वेदकरावै और रक्तमें बायु होतो शीतल लेप जुल्लाब रक्तमोक्ष ये करावै और मांसमेद में बायुहोतो जुल्लाब निरूहण वस्ति देवै और हाड़मज्जा में बायु होतो स्नेहपान व स्नेहकी मालिशकरावै॥ केतकादितेल ॥ केवड़ा बाला गंगेरण इन्होंका रस तुषका पानी इन्होंमें मीठेतेल को पकाय मालिशकरनेसे हाड़ की बायु को दूर करै। शुक्रगतबायुमें आनंद देनेवाले अन्नपानादि देवै॥ शिरगतबायु॥ नाड़ियोंमें शूलचलै नाड़ी कड़ीहोजाइ और बाह्यायाम अंतरायाम खल्लीबात कुब्जबात इन बिकारोंको पैदाकरै॥ चिकित्सा ॥स्नेहपान तेलकी मालिश मर्दनलेप पीड़ाबन्धना फस्त ये नाड़ियों के बायु को नाशैं॥ स्नायुगतवायुलक्षण॥ शूल आक्षेपकबात कंप स्तम्भ ये नसोंके बायुकेलक्षणहैं और नसों में गत बायु सर्बाङ्ग में व एकांगमें बायुको पैदा करैहै॥ चिकित्सा॥ स्वेद पिंडी बांधना दाग देना बांधना मलना ये कर्म नसोंकीवायुको हरैं॥ संधिगतबायुलक्षण॥ यह संधिमें जाय संधिको नाशकरि शूलसोजा को पैदाकरै ॥ सामान्य चिकित्सा॥ इसमें दाह स्वेद पीड़ाबन्धन ये हितहैं॥ इन्द्रवारुणीचूर्ण॥ कडुंभा की जड़ में पिपली गुड़ मिलाइ एक तोला भर के खाने से सन्धि की बायु दूरहोवै॥ पित्त कफाश्रितप्राण॥ पित्त से प्राणबायु दुष्ट हो तो छर्दि दाहको पैदा करै और प्राणबायु कफ से युत दुष्टहो तो दुर्बलता तन्द्रा गिला अंगपना मुंहबिरसपना इन्हों को पैदा करै है॥ पित्तकफाश्रितउदान॥ पित्तसे उदान बायु दुष्टहो तो दाह मूर्च्छा भ्रम ग्लानि इन्होंको पैदाकरै है और कफसे उदान बायु दुष्ट हो तो पसीना नहीं आवै रोमावली खड़ी हो मन्दाग्नि शीत इन्हों को पैदाकरै है॥ पित्तकफाश्रित समान॥ पित्तसे समान बायु दुष्टहो तो स्वेद दाह गरमी मूर्च्छा इन्हों को पैदा करै और कफसे समान बायु दुष्टहो तो मलमूत्र रुके रोमावली खड़ीहोशीत

को पैदाकरै ॥ पित्तकफाश्रितअपान ॥ पित्तसे समान बायु दुष्टहो तौ दाह अंगफरकना परिश्रम इन्हों को उपजावै। और समान बायु कफसे युत दुष्टहो तो शरीरको स्तंभनकरै दण्डक सोजाशूलइन्हौं को उपजावै ॥ चिकित्सा ॥ बातपित्त में बातपित्त नाशक क्रियाकरै और वातकफमें बातकफ नाशक क्रियाकरै ॥ आक्षेपकलक्षण ॥ धमनीनाड़ियों में रहता जो बायुसो कुपित हो बारम्बार शरीर को कंपावै इसवास्ते इसको आक्षेपक कहते हैं। आक्षेपकके ४ भेदहैं पित्त बातका १ कफबात २ केवल बात ३ अभिघातजवात ४ ऐसे हैं॥ केवलबातजाक्षेपक ॥ हाथ पैर माथा पीठ कटितट इन्हों को बायु स्तंभितकरि दण्डकीसीभांति करदेयहै इसवास्ते दण्डककहै हैं यह असाध्य है॥ सामान्य चिकित्सा ॥ इसमें शिराको वेधै व बातनाशक क्रियाकरै और तेज औषधोंको नाकमें फूकनेसे चढ़ावै व नस्यदेवै इन्हों से संज्ञा प्राप्त करै ॥ आक्षेपक चिकित्सा ॥ बालिया का काढ़ा दशमूलका काढ़ा यव कुलथी बेर इन्होंका काढ़ा दूध ये आठआठ भागलेइ मीठा तेल १ भाग मधुरगण १ तोला सेंधा १ तोला अगर १ तोला राल १ तोला शुंठि १ तोला देवदारु १ तोला मंजीठ १ तोला पद्माख १ तोला कूट १ तोला इलायची १ तोला नागबला १ तोला सारिवा १ तोला जटामांसी १ तोला शिलाजीत १ तोला तमालपत्र १ तोला तगर १ तोला लघुसारिवा १ तोला बच १ तोला शतावरी १ तोला आसगन्ध १ तोला सौंफ १ तोला सांठी १ तोला इन्होंको मिलाय काढ़ाकरि सोनाके व चांदीके व चीनीके बरतनमें घालि रक्खै पीछे मालिश से यह महाबला तेल बहुत जल्दी सब तरहके आक्षेपकोंको व बातब्याधिको हरै और हिचकीको व श्वास को व अधिमंथको व गुल्मको व खांसीको हरै और ६ महीने लाने से अण्डवृद्धिको हरै और बलको देखि बिचार बरतनेसे सूतिकारोग को हरै और गर्भकी इच्छा करने वाली स्त्री व धातुक्षय वाला पुरुषभी बरते तोभी हितहै और बायुक्षीणको व मर्म में चोटलगे को व अङ्गका भङ्ग व भिन्न इन्होंमें हितहै। इसको राजा धनाढ्यसुखी सुकुमार आदि सब बरतैं ॥ आक्षेपकभेदअपतंत्रक ॥ वायलबस्तु के

सेवनसे कोपको प्राप्तभयो जो बात सो अपने स्थानको छोड़ि हियामें जाय प्राप्त होय शिर और कनपटी में पीड़ा करै कमान धनुष की भांति शरीरको नवायदे और वह मोह को प्राप्त हो और बड़े कष्टसे ऊंचे प्रकार श्वासले और वाको नेत्र फटजाय व मिटजाय और उसका कण्ठ कबूतरकीसीनाईं बोलै संज्ञाजातीरहै ये अपतंत्र के लक्षण हैं ॥ चिकित्सा ॥ इसमें रेचन निरूह वस्ति बमन ये लेवे नहीं और तेज नस्य लेनेसे कफबातसे रुके श्वासको बाहिरकरावे इससे संज्ञा प्राप्त हो ॥ हरीतक्यादि लेह ॥ हड़ बच रास्ना सेंधा आम्लबेतस घृत अदरखरस इन्होंका लेह बनाय चाटनेसेअपतंत्र कोहरै और आम्लबेतस न मिले तो अमली व चूकादेवै ॥ मरीचादिचूर्ण ॥ मिरच सहोंजनाके बीज बायबिड़ंग फणस इन्होंके चूर्णसे शिर का रेचन करने से अपतंत्र जावै ॥ दण्डापतानक ॥ कफसे युक्त बायु धमनी नाड़ियोंमेंजाइ दण्डकी नाईं स्तंभनकरै यह दंडापतानकहै यह कष्ट साध्य है ॥ अपतानक ॥ नेत्र फटेसे होजाइ संज्ञाजाती रहै कंठमें कफबोलै संज्ञा आवै तब चैन पड़ै और हिया से बायुहटै तब सुखहो और हियामें आवै तब मोहहो इस अपतान बायुसे संयुक्त असाध्य है और यह स्त्री के गर्भपात से व पुरुष के बहुतलोहू निकलनेसे होयहै व बहुत चोट लगनेसे होयहै ॥ चिकित्सा ॥ इसअपतानकमें जो नेत्र फटेनहों व कंपनहीं हो और खट्वा पै पड़ने हारा नहो तो इलाजकरै। इसमें दशमूल का काढ़ा पिपली चूर्ण से युत पीवै और जीर्ण काढ़ा हुआ बाद मांसरस संयुक्त भातको खावै ॥ चिकित्सा प्रक्रिया ॥ पहिले तेलकी मालिश कराय पहसीना देवै पीछे तेज नस्यदेइ फस्त खुलाइ घृतकापान करावै और भोजनसे पहिले दहीमें मिरचोंका चूर्ण मिलाय पीनेसे व स्नेहबास्ति करनेसे अपतानक जावै ॥ धनुर्बात लक्षण ॥ धनुष कमानकी समान शरीर होजाय और शरीरको बर्ण और से और होजाय और मुंहमुचजाइ देहशिथिलहोजाइ चेत जाता रहै पसीना आवै यह धनुर्बात है इस रोग वाला १० दिनजीवै ॥ दूसराप्रकार ॥ कंठरुकै कमानकी नाईं बांका होजाय हृदय में पीड़ाहो और दंत बँधजाइँ मुंहमें शोषहो ठंढीबस्तु

की इच्छा बनीरहै ये धनुर्बातके लक्षण हैं॥ कुब्ज लक्षण॥ कोप को प्राप्त हुआ जो बायुसो हिया ऊंचोकरदे और हियामें पीड़ाघनीहो तिसे कुब्ज कहते हैं। नये कुबड़ेको बातनाशक औषधों से व स्नेहों से व मांसके रससे इलाज करै और ज्यादह कुबड़ाहो तो असाध्य है॥ अंतरायामल॥ पैरकी अंगुली टंकुना पेट हिया गला इन्होंमेंरहता जो बायु सो बड़ी नसों के समूह शरीरके माहिं पकावै पीछे उस के नेत्र फटि निश्चलता होजाइ डाढ़ी मुड़े नहीं और पसवाड़ो टूटोसो होजाइ कफ पड़ै शरीर कमानकी नाईं भीतरको होजाइतिसे अंत-रायामकहते हैं॥ बाह्यायाम लक्षण॥ बहुत बायल बस्तुके खानेसे कु-पितहुआ जोबायु सो शरीरकी सगरीनसों व कांधा पीठको सुखाइ मनुष्यके शरीरको बाहरलीतरफ कमानकी नाईं बांकाकरि और उ-सके हियाको जंघाको तोड़डालै इसे बाह्यायाम कहते हैं॥ सामान्य॥ इन दोनुओं में अर्दितमें कहे औषध करै॥ दूसराप्रकार॥ बाह्यायाम अंतरायाम पशलीशूल कटिशूल खल्लीवात दंडापतानक इन्होंको स्नेह व स्वेदकर्म करि नाशै॥ चिकित्सा॥ बाह्यायाम अंतरायाम धनुर्बात कुब्जबात इन्हों को प्रसारणी तेलका मालिश करि शांत करै और बात ब्याधि नाशक कर्मोंसेभी इन्होंको शांतकरै॥ सर्जतेल॥ रालके तेलकी मालिशसे व दशमूलके काढ़ाके पान व नस्यलेनेसे धनुर्बात दूरहोइ॥ एरण्डादि काढ़ा॥ एरंडजड़ बालाजड़ दोनोंकटै-ली कालानोन शुंठि मिरच पीपल हींग बिजौराकी जड़ सेंधा इन्होंके काढ़ासे धनुर्बात नाशै॥ पक्षबधकहैं अधरंग॥ किसी कारणसे कुपित जो वायु सो मनुष्य के आधे शरीरको पकड़ि सब शरीर की नसोंको सुखाइ को ईसा आधाअङ्गको नाशै और उसी आधेअंगकी नसों को निपटढीली और निकम्मी करदे और उन्हों को शून्यकरदेइ ति-से पक्षाघात कहैहैं और कोई एकांगरोग कहतेहैं॥ सर्वांगरोग लक्षण॥ सम्पूर्ण शरीरमें बायुकुपित हो स्थित होवै याने नाड़ी व नसों को शोषि शरीरमें निरुपयुत हो इस वास्ते सर्बांग रोग कहते हैं और पक्षाघात बायुपित्तसे हो तो दाह मूर्च्छासंताप उपजे और पक्षाघात बायु कफसेहो तो शीत सोजा भारीपना ये उपजतेहैं और केवल बायु

का पक्षाघात कष्टसाध्य होय है और पित्त कफ युत बायु से उपजा पक्षाघातसाध्यहोयहै और गर्भिणीस्त्रीके व प्रसूतास्त्रीके व क्षयीवाले के व रक्त भरनेवाले के पीड़ा रहित पक्षाघात उपजे तो असाध्यहै माषादिकाढ़ा॥ उड़द कौंच एरंडजड़ लघुबलिया इन्हों के काढ़ा में हिंग व सेंधानोन मिलाइ पीने से पक्षाघातकोहरै और इसमें हिंग १ माशा सेंधा १ माशा जीरा३ माशामिलावै॥ ग्रंथिकादितैल॥ पिपलामूल चीता पिपली शुंठि रास्ना सेंधानोन इन्होंकाकाढ़ा व माषादि काढ़ा इन्हों में तेल को पकाइ मालिश करनेसे पक्षाघात दूरहोवै॥ माषादितैल॥ उड़द कौंच अतीस एरंड जड़ रास्ना शतावरी सेंधा इन्होंकाकल्क और उरद बला इन्होंके चतुर्थांश काढ़ामें तेलकोमिलाइ पकाइ मालिश करने से पक्षाघात जावै॥ माषादिसप्तक॥ उरद बला कौंच सुगंध तृण रास्ना असगंध एरंडजड़ इन्हों के काढ़ा में हिंग सेंधा मिलाइ प्रभात में कछुक गरम गरम पीनेसे यह पक्षाघात को व मन्यास्तंभको व कर्णनादको व अर्दितको नाशकरै॥ माषतैल॥ पिपलामूल चीता पिपली रास्ना कूट नागरमोथा सेंधा उरद इन्हों के काढ़ा में तेलको सिद्ध करि मालिश करने से पक्षाघात जावै॥ कपिकच्छ्वादिकाढ़ा॥ कौंचकेबीज बलिया एरंडजड़ उरद शुंठि इन्हों के काढ़ा में सेंधानोन मिलाइ नाकसे पीनेमें पक्षाघातको व शिरोग्रह को व हनुग्रह को व अर्दित को व संधिबात को व मन्यास्तंभ को हरै॥ गुग्गुलपक्षाघातपर॥ पिपलामूल शुंठि चाव चीता पाढ़ा बायबिड़ंग इंद्रयव हिंग बच भारंगी पित्तपापड़ा गजपिपली अतीस सिरस जीरा स्याहजीरा अजमोद ये समानभाग लेइ इन्हों से दुगना त्रिफला और इन्होंके बराबर गुग्गुल मिलाइ खानेसे पक्षाघातको हरै॥ रालतेल॥ रालका चूर्णकरि नलीके यंत्रसे तेलकाढ़ि मालिश करने से पक्षाघात को हरै। व कडुवी तुम्बी के बीजों में सिद्धकिया तेल व निंबोलियों में सिद्धकिया तेल की मालिश से व गीदड़ कबूतर मुरगा इन्हों के पीता के लेप करने से पक्षाघात शांतहो॥ शुंठीचूर्ण॥ शुंठि का चूर्ण २८ तोला गौका दूध २८ तोले में बराबर का घृत मिलाइ भूनै पीछे लहसुन २८ तोले लेइ

पीसि मिलाइ खानेसे पक्षाघात को व हनुस्तंभ को व कटिभंग को व बाहुपीड़ाको व बातरोग को नाशकरै ॥ अर्दितकहेलकवालक्षण ॥ ऊंचेस्वर से बोलने से व कठिन पदार्थों के खाने से और बहुतहँसै और बहुत जँभाई लेनेसे और शिरपै बहुत बोझा उठानेसे और बिषम सोना और बिषम भोजनसे मनुष्यके शिरमें नाकमें ओंठ में ठोढ़ीमें मस्तकमें नेत्र की संधिमें रहै जो बायु सो मनुष्यके मुख में अर्दितरोग को पैदाकरैहै सो उस पुरुष का मुख आधा बांको होजाय और उस का कांधा मुड़ेनहीं देखा जावै नहीं और उस के कांधा में और दाढ़ी में और दांतोंमें पीड़ारहै औ शिर हालबोकरै अच्छी तरह बोला जावेनहीं तिसे अर्दित कहते हैं सो बायुका १ पित्तका २ कफका ३ ऐसे ३ प्रकार का है ॥ बातार्दित ॥ लाल घनी पड़ै शरीर में पीड़ा घनी हो शरीर कांपै घनो फरकै होड़ी मुड़ै नहीं बोला जावे नहीं ये बातार्दित के लक्षण हैं ॥ पित्तका अर्दित लक्षण ॥ मुंह पीलाहो ज्वरहोय आवै प्यासलगे मोहहोतो पित्तका अर्दित जानिये ॥ कफका अर्दित लक्षण ॥ कपोल शिर कांधा इन्होंमें सोजाहोतो कफार्दित जानिये ॥ चिकित्सा ॥ स्नेहपान नस्य बातनाशक भक्ष्यपदार्थ की पिंडी बांधना स्वेदनकर्म ये अर्दित में हित हैं। व दशमूल के काढ़ा में व बिजौरा के रस में व बला के काढ़ा में व पंचमूलके काढ़ा इन्होंके संग दूधपीनेसे बातार्दित जावै। व उड़दकी पीठीको नोनी घृतके संग खाइ व मांस रसमें दूधमिलाय पीनेसे व दशमूल के रसको पीनेसे अर्दित जावै॥ पित्तार्दित ॥ चिकने पदर्थोंको खानेसे व शीतल इलाजसे व घृतवस्ति व घृतकी सेकसे व फस्त करानेसे पित्तार्दित जावै। व वाका मुंहवाला दाह संयुक्त हो तो बात पित्त नाश करनेवाली क्रियाकरै ॥ कफार्दित ॥ अर्दित रोगीको कफक्षय हुये पीछे पुष्टऔषधदेवै और अर्दितरोग में सोजा होय तो बमन करावै व लहसुनका कल्क तिलोंके तेल में मिलाय खानेसे अर्दितरोगजावै जैसे वायुसे मेघ व त्रिफलानिंबोलीकारस बांसा परवल इन्होंके काढ़ामें गुग्गुल मिलाय प्रभातमें पीनेसे अर्दित बायुजावै ॥ अर्दित साध्याऽसाध्य ॥ क्षीणपुरुषके और

जिसके नेत्रनहींमिचे तिसके अप्रकटभाषण करनेवालाके ३ बर्ष से उपरांत कांपनेवालेके अर्दितरोग महाअसाध्य होयहै औरइनसब आक्षेपकादिक वायुरोगोंमेंरोग वेगगयेपीछेसुखहोय ॥ दूसराप्रकार ॥ उड़दके बड़े नूणीके घीकेसाथ सात ७ रात्रितक खाने से ॥ असाध्य लहसुनविधि ॥ लहसुनकारस ४ तोले वा २ तोले हींग १माशा जीरा १ माशा सेंधानोन १ माशा कालानोन १माशा शुंठि १माशामिरच १ माशा पीपल १ माशा इन्होंको पिलायअग्निबलदेख खावै ऊपरअरंडकी जड़का काढ़ा पीवै इसयोगको एकमहीना तक सेवने से सर्वांगबात उरुस्तंभगृध्रसीशूल हृद्रोग कृमिरोग कटिरोग पीठरोग पेटकावायु इन्हों को दूरकरै ॥ हनुग्रहलक्षण ॥ दांतनकोपाडके जीभ में घनी घसने से सूखा चबेना आदिके चबाने से चोटके लगने से ठोढ़ी जड़में रहती जो वायु कुपित होयके मुखमें फटोही राखदे व बंदही राखदे तब पुरुष कष्टसे बोलै और कष्टसे चबेनाको चाबै ॥ चिकित्सा ॥ दशमूल पीपली इन्होंके काढ़ासे व पीपल वृक्षके रस में पीपलीका चूर्ण मिलाय पीनेसे हनुग्रह अरु हनुस्तंभ मन्यास्तंभ व अर्दित इन्होंको दूरकरै व बंदहुआमुख व ठोढ़ीको चिकणे पदार्थों का बफारा देके खोलै और फटेहुये मुखको वैद्य अच्छी रेती से यथार्थ प्राप्तकरै व पीपली अदरख इन्होंको बारंबार चाब गरमपानी के संग प्यूनासे मुंहको भीतरसे शुद्धकरै व लहसनको छील तिलों के तेलमें पीस सेंधालवण मिलाय खानेसे हनुग्रह जावै ॥ रसोन्वटक ॥ लहसुनका गोलाकरि उड़दकी दालकी पीठीमें मिलाय सेंधानोन अदरख हींग मिलाय बड़े बनाय तिलके तेलमें पकाय सहज२ अग्निबल देख खाने से हनुग्रह जावै ॥ अभ्यंजन ॥ मीठे तेल को पकाय मालिशकरि कोमल पसीनालेइ और तेलकी बस्ति शिरमें धारणकरने से हनुग्रह जावै प्रसारणी कहै याने खींपका तेल खींप ४०० तोले एक द्रोण भर पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा रक्खै और काढ़ाके समान दही व कांजी तेल मिलावै और तेलसे चौगुना दूधमिलावै तेलसे आठवां हींसा औषधों का कल्क मिलावै वे औषध ये हैं मुलहठी पिपलामूल चीता सैंधव बच खींप देवदारु

रासना गजपीपल भिलावां सौंफ जटामासी इन्होंका कल्क मिलाय तेलको पकाय मालिश करनेसे बात कफ रोगको कुब्जबायुको खंजबायु को पंगुबायु को गृध्रसी को अर्दित को हनुग्रह को पीठ शिर नाड़ इन्होंके स्तम्भको बिषम बायुको नाशकरै ॥ मन्यास्तंभ ॥ दिन के सोनेसे विकृत अन्न खाने से बिगड़े जल में न्हाने से बुरीतरह ऊपर को देखने से बायु जो है कफसे मिल कांधा को मुड़नेदे नहीं तिसको मन्यास्तंभ कहिये ॥ चिकित्सा ॥ दशमूलके काढ़ासे व पंचमूलके काढ़ा से व रूखे पदार्थ कासीना से व नस्यसे मन्यास्तम्भ जावे व मीठातेल व घृत को गला पै मलि आक के पत्ते बांधे व अरंड के पत्ते बांध ज्यादह स्वेदनकरै व मुर्गा के अंडे के पानीको सेंधानोन मिलाय गलापै मलनेसे मन्यास्तंभ जावै ॥ जिह्वास्तंभ ॥ बाणी में बहनेवाली जो नस तामें रहता जो बायु सो कुपितहोय जीभमें स्तंभकरै है सो वह जीभ जल अन्न के खानेमें व बोलने में समर्थ न होवैहै इसको जिह्वास्तंभ कहैहैं ॥ चिकित्सा ॥ इसमें दोषका बलदेख बातब्याधि नाश करनेवाली चिकित्सा करै व अर्दितबायु की कही चिकित्सा करै ॥ कल्याणका अवलेह ॥ हल्दी बच कूट पीपली शुंठि जीरा अजमोद मुलहठी इन्होंको पीस शहद घृत मिलाय इक्कीस राततक चाटने से अच्छीतरह बोलै व मेघ व नक्कारा व कोयल इन्होंके समान गम्भीर शब्द बोलै और इसके सेवनसे बहरा व गूंगा अच्छा हो ॥ शिरोग्रह ॥ बायुलहू से मिल मस्तक की नसोंको रूखीकरै उन्होंमें पीड़ाकरै नसोंको कालीकरै यह शिरोग्रह असाध्यहोहै ॥ चिकित्सा ॥ इसमें नाड़ीगत बायुकी चिकित्सा करै व दशमूलके काढ़ामें पकाया तेलकी मालिश व शिरोवस्तिकर्मकरै ॥ गृध्रसीलक्षण ॥ पहिले कूलामें पीड़ाहोय पीछे गुदा जंघा कटि पीठ गोड़ा पैर इन्हों को क्रमसे स्तंभन करै और पीड़ा करै बारंबार ग्रहण करै और पग बहुत सहज उठै तिसे गृध्रसी कहिये सो दो दो प्रकार की होहै बायु की १ बात कफ की २ ॥ बातगृध्रसीलक्षण ॥ पीड़ा बहुत हो देहबांका होजाय गोड़ा जांघ और संधि इन्होंमें शूलचले और ज्यादहस्तंभनकरै तो बायुकी गृध्रसी जानिये ॥ बातकफगृध्रसीलक्षण ॥

शरीर भारी रहै मंदाग्नि होय तन्द्रा होय मुखसे लारगिरै अन्न से बैर हो तिसे बात कफकी गृध्रसी जानिये॥ गृध्रसीचिकित्सा॥ इस में जुलाब व बमन कराय आम रहित दीप्ताग्निवाले को वस्तिकर्म करावै व आदि में वस्तिकर्म न करै बमन रेचन कराये बिना नहीं तो स्नेहवस्ति ब्यर्थजाय जैसे राखमें घीकोहोमैं तैसे॥ एरंडतेलयोग॥ प्रभात में गोमूत्र में अरंडीका तेल मिलाय एक महीनातक पीनेसे गृध्रसी व उरुग्रह को नाशकरै तेल व घृत को अदरख व बिजौरा इन्होंके रसमें व आम्लबेतस के गुड़में मिलाय पीनेसे कटि और जांघ और पीठ शिर गला इन्होंकाशूल व गुल्मको व गृध्रसीको व उदावर्त्त को हरै एरंड के बीजोंको छोल दूध में खीरबनाय खाने से गृध्रसी कटिशूलको हरै॥ गृध्रसीहरतैल॥ सेंधा ८ तोला शुंठि २० तोला पिपलामूल २० तोला चीता भिलावां गीरी ८ तोला कांजी ८८ तोला तेल ६४ तोला मिलाइ पकाइ तेलकी मालिश करने से गृध्रसी को व उरुग्रह को व बवासीर को व सब बातबिकारों को नाशकरै॥ शिरोवेधगृध्रसीपर॥ लिंग वस्ति के नीचे चार अंगुल नाड़ीको बेधनकरै और इससे शांत न हो तो पैरकी चिटनीअंगुली को जलावै॥ निम्बकल्क॥ बकायनकी जड़के कल्क को बर्त्तने से गृध्रसी जावै व पिपली पिपलामूल भिलावां इन्हों के कल्क में शहद मिलाइ उरुस्तम्भ को हरै व पंचमूल के काढ़ा में निशोथ का चूर्ण मिलाइ पीने से गृध्रसी को व गुल्म को नाशै॥ गृध्रसीचिकित्सा॥ एरंडजड़ बेलजड़ दोनों कटैली इन्हों के काढ़ा में कालानोन मिलाइ पीनेसे अंडशूल को व बस्तिशूल को व बहुतकालकी गृध्रसी शूल को हरै। व गोमूत्रमें एरंडका तेल पिपलीचूर्णमिलाय पीने से बहुत कालकी बात कफ सम्बन्धी गृध्रसी जावै। व बासा जमालगोटा जड़कटैली अमलतास इन्हों के काढ़ा में एरंड तेल मिलाइ पीनेसे गृध्रसी दूरहोय। व बकायन के सतको पानी में पीस पीनेसे असाध्य गृध्रसी जावै। व निर्गुण्डी के पत्तों के रस को कोमल अग्निपर पकाइ पीनेसे असाध्य गृध्रसी को नाशै॥ रास्नागुग्गुल॥ रासना ४ तोला गुग्गुल ५ तोला घृतमें पीस गोली बनाइ खाने से

गृध्रसी दूर होवै ॥ रास्नाकाढ़ा ॥ रास्ना गिलोय अमलतास देवदारु गोखुरू अरंडजड़ सांठी इन्होंके काढ़ामें शुंठिका चूर्णमिलाइ पीनेसे जंघा पीठ शिर गला बांस पशुली इन्हों का शूल दूरहो ॥ पथ्यागुग्गुल ॥ हड़ १००। बहेड़ा २००। आंवले ४००। ऐसे फल लेइ गुग्गुल ६४तोलाले इन्होंको एकद्रोणभर पानी में भिगोय प्रभातमें पकाय आधारक्खै पीछे लोहा के पात्र में पकाय वायविड़ंग २तोला जमालगोटाकीजड़ २ तोला त्रिफला २ तोला निशोथ २ तोला शुंठि २तोला मिरिच २तोला मिलाय तैयारकरै पीछे इसको यथेष्ट भोजन करनेवाला और ठंढापानी पीनेवाला खावैतो गृध्रसी को नयाखंजवाय को तिल्ली को पेटरोग को पंगलाय को पांडु को खाज को छर्दि को बातरक्त को हरै यह पथ्यादिक गुग्गुल पृथिवी में प्रकट है यह नाग याने हाथी समान मनुष्य में बल घोड़ासमान बेग पैदाकरै और उमर व नेत्रों की दृष्टिको बढ़ावै पुष्टिकरै बिष को हरै छाती फटीहुई को जोड़ै यह वैद्यों ने सब रोगों में हित कहा है व असगन्ध में मिश्री मिलाय घृतके संग खाने से कमर के शूल को हरै ॥ एरंडतैलयोग ॥ असगन्ध बला शुंठि दशमूल इन्होंकेकल्क में एरंड तैल को पकाय पीनेसे व वस्तिकर्म में बर्त्तने से गृध्रसी को हरै ॥ बिश्वाचीलक्षण ॥ हाथकी अंगुलीनीचे जो कंग्रानाड़ीहै तिसमें रहता जो बायु सो कुपितहोय भुजा के पीछे खाजकरि हाथको निकम्माकरदे तिसे बिश्वाची कहिये ॥ चिकित्सा ॥ दशमूल बला उड़द इन्होंके काढ़ामें तेल व घृत मिलाय शामके वक्त भोजनकरि इसका नस्यलेनेसे बिश्वाची व अपबाहुकदूरहोइ ॥ माषतैल ॥ उड़द सेंधा बलियार रास्ना दशमूल हींग बच शतावरि इन्होंके काढ़ामें तेलको पकाइ शुंठिके चूर्णकेसंग खानेसे बाहुशोक अपबाहुक बिश्वाची पक्षाघात व अर्दित इन्होंकोहरै और इसको भोजनकरकेसेवै ॥ क्रोष्टुशीर्षलक्षण ॥ बातलहूसे जोगोड़ामें सोजा व पीड़ाहो तिसेक्रोष्टुशीर्षकहैहैं और गोड़मोटाहोजाय तो क्रोष्टुशीर्षवत् कहैहैं ॥ चिकित्सा ॥ गिलोय गूगल त्रिफला इन्होंके काढ़ाको पीनेसे व दूधमें अरंडीकातेल मिलायपीनेसे व धाराकाचूर्ण खानेसे क्रोष्टुशीर्षजाय ॥ सामान्यचिकि-

त्सा॥ तीतरके मांसकेरसमें गूगलमिलाय पीनेसे व बातरक्तनाशक क्रियासे क्रोष्टुशीर्षदूरहोइ॥ खंज व पंगुलक्षण॥ कटि में रहता जो बायु सो जांघ की नसों को पकड़ स्तंभित करदे तिसे खोड़ा बायु कहिये और कटि में रहता जो बायु सो जांघ की नसों को ग्रहण कर दोनों जांघों का नाश करें चलने दे नहीं तिसे पंगुल बायु कहिये॥ चिकित्सा॥ इन नये रोगवाले को जुलाबसे व स्थापन वस्ति से व पसीनासे गूगल सेवनसे स्नेहपीनेसे वस्तिसेशुद्धकरै॥ कलापखंजलक्षण॥ जिससमय चलै तब शरीरकांपै और लंगड़ासा दीखै और नसोंने अपना ठिकाना छोड़दियाहो तो कलापखंज कहिये॥ चिकित्सा॥ इसमें खंज पंगुबायु के कहेहुये कर्मकरै और बिशेष करके स्नेहन कर्म करै॥ चिकित्सा॥ कर्म जो कलापखंज के निदान पूरे न मिलें तो लहसन खाय रोगको नाशकरै॥ बातकंटकनिदान॥ ऊंची तिरछी जगह में पैर धरते पीड़ाहोय पीछे टंकनों में पीड़ा आयरहै तिसे बातकंटक कहिये॥ चिकित्सा॥ इसमें बारम्बार फस्त करावै व अरंडी का तेल पीवै व सुइयों को गरमकर दागदेवै॥ पादाहलक्षण॥ बात पित्त लहू ये तीनों मिल पैर के तलुवामें खाज चलाय दाहको पैदाकरैं तिसे पाददाहकहिये॥ चिकित्सा॥ इसमें बिशेषकरि बातरक्तकी कहीहुई क्रियाकरै व मसूरकी दालको पीस गरमकर शीतल पानीमें तिसका पैरके तलवोंमें लेप करनेसे पाददाहजावै व नूड़ी घीसे पैरोंको चुपड़ि अग्निपै तपानेसे जल्दी पाददाह शांत होवै॥ लेप॥ गिलोय अरंडके बीज इन्होंको दहीमें पीस पैरोंमें लेपकरनेसे व बकायनका फल व निंबोलीको पीस लेपकरनेसे पाददाहजावै॥ पादहर्षलक्षण॥ जाके दोनोंपैर झंझनाहटकर सोजाय तिसे पादहर्षकहिये। यह कफ बातसे होवैहै॥ चिकित्सा॥ इसमेंकफबातनाशक औषध करै॥ बाहुशोषनिदान॥ कांधामें रहता जो बायु सोकुपितहो भुजाको सुखायदे और स्तंभिकरदे और पीड़ाकरै तिसे बाहुशोष कहिये॥ चिकित्सा॥ इसमें भोजन करि वृहत् कल्याण घृत को खावै व बलियार की जड़के काढ़ा में सेंधालवण मिलाय पीने से बाहुशोष को व मन्यास्तंभ को हरै॥ रसोन्कल्क॥ दूध व तेल घृत

मांस इन्होंके संग अलग २ खानेसे व सांठी चावल के संग लह-सन को दोदो तोले प्रतिदिन वृद्धि से खावै ७ दिन तक तो बात-ब्याधिको व बिषमज्वर को व शूलको गुल्म को मंदाग्निको प्लीहा को हाथ पशुली माथा इन्हों के शूलको व शुक्रदोष को हरै ॥ बाहु शोषचिकित्सा ॥ बलियार के काढ़ा में सेंधा लवण मिलाय पीने से वउड़दके रसकी नस्यलेनेसे बाहुशोषदूरहोवै ॥ अवबाहुकलक्षण ॥ कं-धामें रहता जो बायु सो कुपितहोय कफ को सुखाय नसोंमें संकोच करि अवबाहुक रोगको पैदाकरैहै ॥ चिकित्सा ॥ ठंढेपानी में मंजीठ व गूगल को पीस नस्य लेने से अवबाहुक व मन्यास्तम्भ व कन्धेके समीपके रोग दूरहोवें व बलियार नींबकी जड़ इन्होंके काढ़ामें कों-चका रस मिलाय पीनेसे व उड़दके काढ़ाकी नस्य लेनेसे अवबा-हुकमिट बज्रके समान अच्छी बाहु होजावै। माष तैल ॥ उड़द अ-लसी यव पियाबांसा कटैली गोखुरू सहोंजना जटामांसी कौंच के बीज बाला बिदौला कुपाशका शणका बीज कुलथी बेरबड़बेरी का इन्होंकेकाढ़ामें बकराकेमांसका रस और शुंठि पीपली सौंफ एरंड जड़ सांठी हरड़ बेल रासना बलियार गिलाय कुटकी इन्होंका चूर्ण मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरने से अवबाहुकनाशहोयअल-सी देवदारु शुंठि इन्होंके चूर्णको गुड़मेंमिलाय गोलीबनायखाने से अवबाहुकजावै संशयनहीं ॥ माषतैलादि मर्दन ॥ माषतैलसे व लह-सन के रससे व बाहुके मालिशकरनेसे व दशमूल उड़द इन्हों के काढ़ासे अवबाहुकजावै ॥ मूक मिम्मिण व गद्गदनिदान ॥ कफसेसंयुक्त वायु व धमनी नाड़ी शब्दको बहनेवाली तिन्हें आच्छादनकर मनु-ष्यों को गूंगा व नाकही में बोलना व गद्गदरोगों को पैदा करै है ॥ सा-रस्वत घृत ॥ घृत ६४ तोला सहोंजना ४ तोला बच ४ तोला सेंधा-नोन ४ तोला धवकेफूल ४ तोला लोध ४ तोला इन्होंको बकरीके दूधमें पकाय घृतको सिद्धकरि बिधि पूर्बक सेवने से यह सारस्वत घृत गूंगापन को व मिम्मिण व गद्गद रोग को हरै और बुद्धि को व स्मृतिको बढ़ावै व वाणीकेदोषकोहरैहै व दशमूलके काढ़ा में हींग पोष्करमूल का चूर्णमिलाय पीने से मिम्मिणवाणी को हरै है॥ तूनी

लक्षण ॥ मलमूत्र के स्थानमें रहै जो वायुसो गुदा लिंगमें पीड़ाकरै तिसे तूनीकहिये ॥ प्रतूनीलक्षण ॥ गुदा लिंगमें रहैजो पवन सो वाने पीड़ाकरि पेडूमें जायपीड़ाकरै तिसेप्रतूनी कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ इन्हों मेंस्नेहवस्तिकरावे व नोन घृतमें मिलाय खावै व पिप्पलादि चूर्ण पानीकेसंगखावै व हींग सेंधानोन गरमपानीमें मिलायपीवै व घृतमें हींग सेंधामिलाय पीवै ॥ आध्मानलक्षण ॥ सबपेटमें अफारा घनाहो और पीड़ा बहुतहोजाय और अधोबायुरुकजाय तिसे आध्मानकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमेंपहिले लंघनकराय अग्निको दीपन कराय पाचन देवै पीछेफलबर्त्ति वस्तिकर्मकरावै ॥ नाराचचूर्ण ॥ पिपली १ तोला निशोत ४ तोला मिश्री ४ तोला इन्होंका चूर्णबनाय खानेसे आध्मान जावै ॥ दारुषट्कलेप ॥ देवदारु बच कूट शतावरीहींग इन्हों को निंबु रसमें पीस गरमकरि पेटके ऊपर लेपकरनेसे अफारा दूर हो। व शूलजावै ॥ महानाराच रस ॥ हड़४ तोला अमलतास४ तोला आमला ४ तोला जैपाल ४ तोला कटुकी ४ तोला थोहरदूध ४ तोला निशोत४ तोला नागरमोथा ४ तोला इन्हों को ५१२ तोले पानीमेंपकायअष्टमांश काढ़ाकरै पीछे छिलेहुये जमालगोटाके बीज ४ तोला महीनेकपड़ा में बांधि काढ़ामें पोटली को छोड़ि सहज २ पकाय पीछे जमालगोटा के बीज ८ भागशुंठि ३ भाग मिरच २ भाग पारा २ भाग गन्धक २ भाग इन्हों को १ पहर तक खरल करै पीछे इस नाराच रसको १ रत्ती प्रमाणखावै ठंढे पानीके संग ये रोग दूर होवैं अफारा शूल बायु का रोध प्रत्याध्मान उदावर्त्त गुल्म पेट के रोग ये सब नाश होवैं और जुलाब का बेग शांत हुये पीछे दहीभात मिश्रीखावै अथवा दहीभात सेंधानोनखावै ॥ प्रत्याध्मानिदान ॥ पसली और हियामें अफारा होवेनहीं और नाभिसे लेय पेट तक अफाराहो तिसेप्रत्याध्मानकहिये ॥ चिकित्सा ॥ इसमें बमन लंघन दीपन बास्तिकर्म्म ये करवावै ॥ बाताष्ठीला निदान ॥ नाभि के नीचे पवनकी गांठ पत्थर सी बँधजाय वह गांठ मलमूत्र कोरोकदे ताको बाताष्ठीलाकहिये ॥ प्रत्यष्ठीलालक्षण ॥ नाभिकेनीचे पवनकी गांठ पाषाण सरीखी और तिरछी उठके मलमूत्रको रोकदे

और पीड़ा घनीकरै तिसे प्रत्यष्ठीला कहिये॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ भूनी हींग पीपलामूल धनियां जीरा बच चाव चीता पाडल कचूर अमली सेंधानोन मणयारीनोन कालानोन शुंठि मिरच पिप्पल जवाखार सुहागाखार अनार हड़ पोखरमूल आम्लबेतस सफेदजीरा हपुषा इन्हों के चूर्णको अदरख के रसमें और बिजौराके रसमें भावनादेय खानेसे दोनोंतरह के आष्ठीले दूरहों। और इस चूर्णसे वाताष्ठीला प्रत्यष्ठीला गुल्म अंतर बिद्रधी ये रोग शांत होवें॥ दूसराप्रकार॥ हींग आम्लबेतस बच शुंठि मिरच पीपल चावचीता पीपलामूल कचूर अमली अजमोद कंकोल पाडला जीरा असगन्ध पोखरमूल मोटी शेरणी जवाखार सुहागाखार चिरौंजी हड़ ये समभागलेय चूर्णकरि खानेसे हिचकीको व अफाराको व मलवद्धताको व अंडवृद्धिको व खांसीको व श्वासको व मंदाग्निको व अरुचिको व प्लीहाको व बवासीरको व शूलको व गुल्मको व हृद्रोगको व अश्मरीको व पांडु को हरै॥ हिंग्वादियोग॥ हींग बच मणयारी नोन शुंठि जीरा हड़ चीता कूट ये सब एकोत्तरभाग वृद्धिसे लेय चूर्णबनाय खानेसे गुल्मको व पेटरोगको व अष्ठीलाको व हैजाको नाशै॥ नादेयादिकाढ़ा॥ नादेयी कूड़ाकीछाल, आक, सहोंजना, बड़ीकटैली, थोहर, बेलफल, भिलावां पलाश, नींब, पित्तपापड़ा, ऊंगा, कदम्ब, चीता, बासा, नागरमोथा, पाडल इन्होंके काढ़ामें सेंधानोन हींगमिलाय पीनेसे गुल्मको व पेटके रोगको व अष्ठीलाकोहरै॥ बिडंगासव॥ वायबिड़ंग २० तोला पीपलामूल २० तोला पाडल २० तोला आमला २० तोला बाला २०। तोला कूड़ाकीछाल २० तोला इन्द्रयव २० तोला रासना २० तोला भारंगी २० तोला लेय १४मन १३ सेर पानीमें पकाय आठवांहिस्सा रक्खै ठंढा हुये बाद ३०० तोला शहद मिलाय धवके फूल ८० तोला शुंठि मिरच पीपल ३२०० तोला दालचीनी तमालपत्र इलायची ८ तोला प्रत्येकलेय राल ४ तोला धतूराबीज ४ तोला बाला ४ तोला लोध ४ तोला इन्होंकोमिलाय घीसेचिकने बरतनमें घालि १ महीना तकधरै पीछे इसको खानेसे प्रत्यष्ठीलाको व भगंदरको व उरुस्तंभको व अश्मरीको व प्रमेहको व गंडमालाको व विद्रधिको व आढ्य-

वातको व हनुस्तम्भको नाशकरै ॥ वस्तिवातलक्षण ॥ पेडूकी वायु कुपितहो मूत्रअच्छीतरह उतरताहो ताकोरोंकदे और मूत्रकृच्छ्रादि अनेक बिकारोंको पैदाकरै तिसे वातवस्ति कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ वलियारकीछालके चूर्णको मिश्रीमें मिलाय १ तोलाखावै दूध १६ तोला के संग वस्तिबात दूरहोवै ॥ हरीतक्यादिचूर्ण ॥ हड़ बहेड़ा आमला इन्होंकेचूर्ण में लोहाकाभस्म मिलाय शहदमें मिलाय चाटनेसे वस्तिबात जावै ॥ यवक्षारचूर्ण ॥ जवाखारके चूर्णको खांड़में मिलाय खानेसे मूत्रनिग्रह जावै ॥ कूष्मांडबीजयोग ॥ कोहलाके बीज ककड़ी केबीज इन्होंकोपीसि वस्तिपर लेपकरने से मूत्रनिग्रह शान्त होवै ॥ आमलक्यादियोग ॥ आमलाको पीसि वस्तिभाग पर लेपकरने से मूत्रनिग्रह दूरहोवै ॥ चन्दनादिवर्त्ति ॥ कपड़ाकीबत्तीको चन्दन सफ़ेद मेंभिगोय लिंगमें व योनिके मुखमेंदेनेसे व कपूरकीबत्ती इन्हीं स्थानों में देनेसे मूत्रनिग्रह दूरहोवै ॥ वस्तिवायुकुपितचिकित्सा ॥ इसवायु में वस्तिको शुद्धकरै ॥ कंपवायु ॥ सम्पूर्ण अंगोंको कँपाय शिरको ज्यादै कँपावै तिसे कंपवायु कहतेहैं ॥ खल्लीलक्षण ॥ जोबात पैर जंघा गोड़े हाथ इन्होंकीजड़कोढीला व शूलकरदे तिसेखल्लीकहे हैं ॥ चिकित्सा ॥ कूट सेंधानोन इन्हों का कल्क चूका के तेल में मिलाय गरम कर मालिशकरनेसे खल्ली वात को व शूलको हरै ॥ स्थान नामलक्षणबातव्याधिनिदान ॥ बाक़ीरहे वायों को स्थान के अनुरूप नामधरै और इन्हों में पित्तादिकों का संसर्ग जानो वे बातभेद कहतेहैं अल्पकेश बाचालपना गुड़गुड़शब्दपेटमें पशुलीशूल मलकागाढ़ापना मलकी अप्रवृत्ति स्तंभ रूखापना माड़ापना शरीरका कालापना शीत रोमहर्ष शरीर दूखना अंगशूल हड़फूटनी नाड़ियोंका फुरणा अंगमर्द अंगसूखना अंगसंकोच अंगभ्रंश मोह चित्तकाचंचलपना निद्रानाश स्वेदनाश बलहानि डरना शुक्रक्षय स्त्री धर्मका नाश परिश्रम ऐसे प्रकारके रूपोंको कुपितहुआ वायुपैदाकरै है और हेतु व स्थान के योगसे नानाप्रकारके रोगोंको पैदाकरैहै ॥ चिकित्सा ॥ इन्होंको चिकित्साबातव्याधि सरीखीकरै ॥ लशुनसेवन ॥ अन्नोंके पदार्थोंकेसंग व मांसके पदार्थकेसंग व गेहूंके पदार्थकेसंग व यवके सत्तू के संग

व दूधकेसंग व तेलकेसंग व घृतकेसंग शीतनाशवास्ते लहसनों को खावै ॥ शुंठ्यादिकाढ़ा ॥ शुंठि एरंडजड़ देवदारु गिलोय कुरंट इन्हों का काढ़ा पीने से संधिकीबायु जावै ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल के काढ़ामें व शुंठिकेकाढ़ामें एरंडका तेलमिलायपीनेसे बातरोग जावै ॥ कटिबातपरलाडू ॥ आलिंब खसखस खजूर मेथी तिल दोनों सौंफ भिलावांकीगिरी बादाम गोंदबब्बूलका चिरोली येप्रत्येक ४ तोलालेइ गुड़ ३२ तोला घृत ३२ तोलामिलाय लाडूबांधखानेसे कटिबात को नाशै और वीर्यको कठिनकरि बढ़ावै इसके लाडू २ तोलाकेबनावै ॥ चिकित्साउरुस्तंभपर ॥ रूखेपदार्थके पसीनासे व मालिशसे व गूगुल के सेवन से व पीपली पीपलामूल भिलावां इन्होंके कल्कमें शहदमिलाय खानेसे उरुस्तंभदूरहोवै ॥ सामान्यसंज्ञा ॥ मर्दनसे व वस्तिकर्मसे व काढ़ासे व रुक्ष स्वेदसे कुब्जको व अंगसंकोच को व अंगटूटनाको अंगग्रह को व शरीरशूलको दूरकरै व स्नेहपीने से अपतानको जीतै और घाव के इलाजसे व्रणायामको जीतै व चावलों में मांसरसमिलायखानेसे अंगकी रुक्षताको व अंगस्तंभको व कंपको व कृशताकोहरै व शरीरके माड़ापनाको व शरीरकेफुरणाको व शरीर के भ्रन्शको स्नेह का मालिश कराइ जीतै और धातुक्षीण धातुनाश धातुज्यादै निकसनामें बिड्ग्रहमें वद्धविट् में स्नेहका पान हितहै ॥ ऊर्ध्वबातलक्षण ॥ कुपथ्यके सेवनेसे अधोवायु कुपितहो मुख के कफ सों मिल बारम्बार डकार ज्यादैलेवै इसको ऊर्ध्वबात कहते हैं ॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि १० भाग भिदारा १० भाग हड़ ५ भाग भूनी हींग ४ भाग सेंधानोन १ भाग चीता १ भाग इन्होंका चूर्णकरि खानेसे दारुण ऊर्ध्वबातको नाशकरै व पीपलामूलको दूधमें पीसि बसाकेरसमें मिलायपीनेसे ऊर्ध्वबातको नाशकरै ॥ त्रिकशूललक्षण ॥ कटिके तीनोंहाड़ोंमें और पीठके तीनोंहाड़ोंमें और पाशुके हाड़ों में पीड़ा होवै तिसे त्रिकशूल कहतेहैं ॥ चिकित्सा ॥ बालुकास्वेद से व खाटपैपौढ़ नीचे गोबरके आरनोंकी अग्निजलाइ सेंक से त्रिकशूल दूरहोवै ॥ आभादित्रयोदशांगगूगल ॥ ककरोलीके बीज असगंध शेरणी गिलोय शतावरि गोखुरू रासना पिपली सौंफ कचूर अज-

मान शुंठि ये समभागलेइ चूर्णकरि इन सबोंके बराबर शोधाहुआ गूगललेय और गूगलसे आधाघृतलेइ मिलाय १ तोलाभरप्रभात में मदिराकेसंग व गरमपानीकेसंग व दूधकेसंग वमांसकेरसकेसंग खावै यह त्रिकग्रह को व जानुग्रहको व हाथकेवायु व पैरोंके बायुको व नसोंकेवायुको व कोष्ठ के वायुको व मज्जाके वायुको व सन्धि के वायुको व हाड़केवायुको व बातकफके रोगोंको व वायुसे उपजेरोगों को व हीयाके शूलको व योनिदोषको व टूटेहाड़को व हड़फूटनीको व खंजबातको व गृध्रसीको व पक्षाघातकोहरै यहउत्तम औषधिपुराने वैद्योंनेकही है ॥ रसोनाष्टक ॥ पकेलहसुनकोछीलि गूलिकादिबीचसे फाड़ि रातिको दहीमें मिलाय बरतनमें घालिरक्खै पीछेपानीमें प्रभात धोइ पोंछि शिलापर पीसि कल्ककरि इसकल्कसे ५ भाग इन्हों के चूर्ण को मिलावै कालानोन अजवाइन भुनी हींग सेंधानोनशुंठि मिरच पीपली जीरा ये समभागले चूर्णकरिमिलावै और मीठातेल कल्कसे चौथाहिस्सा मिलाइ प्रभात में १ तोला भक्षणकरै दोष बलाबल देखिखावै और एरंड की जड़ के काढ़ा के संग खावै यह सर्व्वांगबातको व एकांग बातको व अर्दितको व अपतंत्रको व अपस्मारको व उन्मादको व उरुस्तंभ को व गृध्रसी को व छाती पीठ कमर पसली कूष इन्होंकी पीड़ाको व कृमिरोगको हरै। और इस पर मदिरा मांस खट्टारस इन्हों को नेमसे सेवन करै और कसरत घाम क्रोध घना पानी गुड़ स्त्री संग इन्हों को लहसन खानेवाला त्यागै। और अतिसारी प्रमेही पांडुरोगी राजरोगी छर्दिरोगी अरोचकी गर्भिणी मूर्च्छावाला बवासीरवाला रक्तपित्ती क्षयी शोषी इन्हों को भी यह लहसन औषधदेवै नहीं और पित्तरोगमें देवैतो प्रयोग के अंत में छोटी हड़ों को खाइ जुलाब देवै और जुलाब देवै नहीं तो कुष्ठ व पांडुरोग उपजै और स्त्री का दूध पीनेवाले बालक को भी यह रसोनाष्टक देवै इससे बहुत सुख होवै ॥ व्रणायाम ॥ सब शरीर गत बायु मर्म्मके घाव को प्राप्तहोइ अपने बेग से देहको नवायदेवै तिसे व्रणायामकहिये यह महाअसाध्यहोयहै ॥ कुब्जलक्षण ॥ कोपको प्राप्तहुआ जो बायु सो हियाको ऊंचाकरदे और हियामेंपी-

ड़ाघनीकरदे तिसे कुब्जककहिये॥ कष्टसाध्यलक्षण॥ हनुस्तंभ अर्दित आक्षेपक पक्षाघात अपतानक ये बहुतकालमें सिद्धहोवैं वा न होवें। और ये रोग बलवान्रोगीके उपद्रवों रहितउपजैं तो चिकित्साकरै॥ बातरोगअसाध्य॥ विसर्प दाह मूत्र मल अधोवायु इन्हों का रोध मूर्च्छा अरुचि मन्दाग्नि इत्यादि उपद्रवों को उपजाय मांस बलको क्षीणकरि पक्षबधआदि रोग पीड़ादेहैं और सूजन सुप्तखाल भग्न कंप अफारा इन्हों से युत मनुष्यको बातब्याधि नाश करै है और जिसके बायुअब्याहतगतिहो वह १०० वर्षतकजीवै॥ बत्तिसीकाढ़ा॥ रायशण गिलोय एरंडजड़ देवदारु हड़कचूर वलियार वच पाढ़ा सोंफ सांठी पंचमूल अतीस मुण्डी भिलावां धमासा अजमान पोहकरमूल असगन्ध लज्जावंती गोखुरू बासा खिरणी भिदारा शतावरी ब्राह्मी खींप क्षीर कंचुकी ये समभाग लेय काढ़ाबनाय पीपली चूर्ण के संग व योगराज गूगलके संग व अजमोदादि चूर्णके संग व अरण्डी के तेलके संगपीनेसे बातरोगको व कफरोगको व प्रतानक को व मन्यास्तंभको व शोषको व पक्षाघातको व अर्दितको व आक्षेपकको व कुब्जकको व हनुग्रहको व स्वरभंग को व आढ्यवातको व मूकबातको व खंजबातको व अवबाहुकको व गृध्रसीरोगको व जानुभेदको व गुल्मशूलको व कटिग्रहको व आमबातको व निरामबात को व सातधातुगत बातको व बातको व आवृतको व अनावृतको व बातरक्तको यहि ३२ औषधों का काढ़ा हरै यह अत्रि गोत्र में उत्पन्न कृष्ण वैद्यने कहा है॥ लघुरास्नादि काढ़ा॥ रायशण गिलोय एरंडजड़ देवदारु शुंठि इन्होंकाकाढ़ा पीनेसे सर्वांगवातको व मज्जा बातको व हाड़गत बातको व मांसगत बातकोहरै॥ लघुरास्नादिकाढ़ा॥ दूसरारायशण एरंडजड़ देवदारु बच शुंठि धमासा हड़ अतीस शुंठि नागरमोथा शतावरि बांसा इन्होंका काढ़ापीनेसे खांसी को वआम बातको व कफबातको व संधिबातको व मज्जाबातको व हाड़ों की बातको व नसकीबातको व सर्वांग बातको निश्चयहरै॥ रास्नादिचूर्ण॥ रायशणकूट तगरशुंठि मिरच पीपल चवक चीता पिपलामूल कचूर पाढ़ा बच सारिवा चिरायता त्रिफला बलिया दशमूल निरगुंडी एरंड

जड़ हींग आम्लबेतस अदरख रानतुलसी ककरोली जवाखार सुहागाखार सेंधानोन मणयारीनोन कालानोन इन्होंका चूर्णकरि पोहकरमूलके काढ़ामें सिद्धकिया तेलकेसंग खानेसे ८० प्रकारके बातोंको हरै ॥ आभादिचूर्ण ॥ किकरोलीबीज गिलोय रास्ना शतावरी महाशतावरी शुंठि सौंफ आसगन्ध शेरणी भिदारा अजमाण अजमोद ये समभाग लेय चूर्णकरि २ तोलाखावै अनुपान मदिरा व मांसरस व तक्र व गरम जल व घृत व दही मंड येहैं यह हाड़ के बायु को व संधिके वायुको व नसके बायुको व मज्जाके बायुको व कमर के बायु को व गृध्रसी को मन्यास्तंभ को व हनुग्रह को व कोष्ठगत रोगोंको नाशकरै यह आभादिचूर्ण सब बातरोगोंकोहरै है॥ रास्नादिचूर्ण ॥ रास्ना शतावरी देवदारु कंकोल कलहारी पिपली रक्तचंदन मजीठ वृद्धि सेंधानोन पद्माख आसगंध गिलोय पाढ़ा नागरमोथा इलायची शालपर्णी सौंफ अजमोद शुंठि कूट ये समभागलेय चूर्ण करि गरम पानीके संग खाने से खाल हाड़ नसें इन्हों में बातरोग के वेगको हरै॥ शिग्रुमूलादिचूर्ण ॥ सहोंजनाजड़ पीपली रास्ना शुंठि गोखुरू सेंधानोन चीता एरंडजड़ इन्होंका चूर्णकरि गोली बनाय १ गोली रोज़ खानेसे सर्वांग बायुको नाश करै॥ अजमोदादिचूर्ण ॥ अजमोद पीपली रास्ना गिलोय शुंठि सौंफ आसगंध शतावरी ये समभागलेय चूर्णकरि घृतके संग खानेसे हिया कोठा कंठ इन्हों में कुपित वायुको हरै ॥ कुष्ठादिचूर्ण ॥ कूट इंद्रयव पाढ़ा चीता अतीस हल्दी इन्होंके चूर्णको गरम पानीकेसंग खानेसे अनेकतरहके बायुको हरै॥ शुंठ्यादिचूर्ण ॥ शुंठि मिरच देवदारु इन्होंका चूर्ण इन्हेंहींकेकाढ़ा के संग खानेसे देहके उपद्रव करनेवाले बायोंकोहरै ॥ रास्नादिचूर्ण ॥ रास्ना सांठी शुंठि गिलोय एरंडजड़ इन्होंका काढ़ा पीनेसे सप्तधातु बातको व आमबात को हरै ॥ द्वात्रिंशकगुग्गुल ॥ शुंठि मिरच पीपल त्रिफला नागरमोथा बायबिड़ंग चवक चीता दालचीनी इलायची पिपलामूल शेरणी देवदारु त्रिफला पोहकरमूल कूट अतीस दारुहल्दी हल्दी किकरोली जीरा शुंठि शतपत्री धमासा कालानोन बायबिड़ंग जवाखार सुहागाखार गजपीपली सेंधानोन ये सब

बराबर भागलेय और इन सबोंके बराबर गूगुल लेय पीछे रीतिसे बेरकी प्रमाण गोली बनाय घृतके संग व शहद के संग खाने से प्रभातमें यह आमबातको व उदावर्त्तको व अंत्रबृद्धिको व गुदकृमि को हरै और महाज्वर से पीड़ितको व भूतबाधा ग्रसितको अच्छा करै और अफारा को व उन्माद को व कुष्ठको व पसली शूलको व हृद्रोग व गृध्रसीको व हनुस्तंभको व पक्षाघातको व अपतानकको व सोजाको व तिल्लीको व कामला को व अपचीको हरै यह द्वात्रिंशक गूगुलहै धन्वंतरीने कहाहै सब रोगोंको हरैहै ॥ योगराजगूगुल ॥ शुंठि ४ माशे पीपल ४ माशे चाव ४ माशे पिपलामूल ४ माशे चीता ४ माशे भुनीहींग ४ माशे अजमोद ४ माशे सिरसम ४ माशे जीरा ४ माशे स्याहजीरा ४ माशे रेणुकबीज ४ माशे इन्द्रयव ४ माशे पाढ़ा ४ माशे बायबिड़ंग ४ माशे गजापिपली ४ माशे कुटकी ४ माशे अतीस ४ माशे भारंगी ४ माशे बच४माशे मूर्वा४ माशेइन्हींका चूर्ण करि इनसबोंसे त्रिगुणा त्रिफलालेवै पीछे सबोंकेतुल्य शोधा गूगुल लेय औररांगाभस्म ४ तोला चांदीभस्म ४ तोला शीशाभस्म ४ तोला लोहभस्म ४ तोला अभ्रक भस्म ४ तोला मंडूर भस्म ४ तोला रससिंदूर ४ तोला इन्होंको मिलाय गुड़ के पाकसरीखा पकाय एक गोलाबनाय घृत से चीकने बरतनमें घालिरक्खै पीछे रोज ४ माशे की गोली बनाय खावै यह योगराजगूगुल त्रिदोष को हरै और रसायनहै और इसमें मैथुन व खाने व पीनेका त्याग नहीं है यह सब बातरोगोंको व कुष्ठको व बवासीरको व संग्रहणी को व प्रमेह को व बातरक्त को व नाभिशूलको व भगंदरको व उदावर्त्त को व क्षयको व गुल्मको व अपस्मारको व उरुग्रहको व मन्दाग्नि को व श्वासको व खांसी को व अरुचि को व बीर्यदोषको व स्त्री के रजदोषको हरै और पुरुष खाय तो बीर्यबांधि संतानपैदाकरै और स्त्री खावै तो गर्भरहै और इसको रास्नादि काढ़ाके संग खानेसे अनेक प्रकारका बायु रोग दूर होवै और यह काकोल्यादि काढ़ा के संग खानेसे पित्तको हरै और अमलतास के काढ़ा के संग खानेसे कफको हरै और दारुहल्दीके काढ़ा के संग खानेसे प्रमेहको हरै

और गोमूत्रकेसंग खानेसे पांडुरोगकोहरै और शहदकेसंग खाने से मेदोवृद्धि को हरै और नींबकी छालके काढ़ा के संग खाने से कुष्ठ को हरै और गिलोयके काढ़ाके संग खानेसे बात रक्तको हरै और पीपलीके काढ़ाके संग खानेसे शोथ व शूलको हरैहै और पाटला के काढ़ाके संग खानेसे मूषाके विषको हरैहै और त्रिफलाके काढ़ा के संग खानेसे नेत्र रोगको हरै और सांठीके काढ़ाके संग खानेसे सब तरहके पेटके रोगोंको हरै ॥ षडशीतिगूगुल ॥ सपेदकुरंट धमासा अतीस देवदारु दोनों कटैली चाव बासा पीपली नागरमोथा बच्च धनियां शतावरी छोटी बलिया बड़ीसौंफ देवदारु हड़ शुंठिगिलोय कचूर अमलतास गोखुरू सांठी मोगरी कुटकी पीपलामूल भारंगी बिदारी मुण्डीका सालु अजमोदा काकड़ाशिंगी आमला मुसली रेणुकबीज काकोली अजमान खुरासानी अजमान निशोत जमाल-गोटा चीता काकड़ाशिंगी तालमखाना लालधमासा बड़ा पंचमूल वेलतरु कूट काला अगर जावित्री जायफल इलायची नागकेशरि दालचीनी चिरायता केशरि लौंग कडूभा हलदी सेंधानोन मांदार जड़ बायबिड़ंग पिसोला सूर्य्यमुखी गजपीपल ऊंगा कोंचकेबीज करंजकी जड़ ये सम भागलेय और इन सबोंके तुल्य रास्ना कि-करोलीके बीज इन्होंसे दुगुनी और इन सबों के सम भाग सोधा गूगुल और पारा गन्धक सिंगरफ सुहागाखार लोह भस्म अभ्रक भस्म तांबा भस्म बंगरस सिंदूर शीशा भस्म सोनामाखी मंडूर भस्म ये सब गूगुलके चतुर्थांश लेवै और पहिले षटकुढ़ाकेकाढ़ामें गूगुलको सोधकरि गेरै पीछे इन्होंको मन्द २ आगसे पकाय जब तक कड़ानहो तबतक पीछे गोलीबनाय १६ माशाकी घृत शहदमें मिलाय खानेसे सात धातुगतबायुको व नाड़ी नस संधिगतबायुको व आमवातको व निरामवात को व कफवातको व केवलवात को व राजरोग को व मन्दाग्निको व ज्वरको व धातुगतज्वरको व गुल्म को व जानु जंघा हीया पेट कूषि इन्हों के वात को व प्रमेह को व कांधा ठोड़ी कान भृकुटी माथा नेत्र शंखस्थान इन्होंके बायु को व मूत्रकृच्छ्रको व शूलको व अफाराको व अश्मरीकोहरै औरयह भेदक

वातोंको निश्चयहरै यह षड़शीतिगूगुल भोजवैद्यनेकहाहै क्षीयमाण शिष्यकेअर्थ और इस राजयोगको ऐसातैसासेगुप्तकरै और इसको १ वर्षतक सेवन करनेसे नपुंसक भी प्रमदाकोभोगै और इससे परे बाजीकरण नहीं है और इसके सेवनसे बहुत ज्यादे गुणहोय है॥ विश्वादिगूगुल॥ शुंठि एरंड जड़ दारुहलदी कूट सेंधानोन रास्ना गिलोय येसमभागलेइ और इन्होंसे दुगुना गूगुललेइ गोलीबांधि १ गोली रोज खाने से अमवात को हरै और इसपै पथ्य से रहै॥ दूसराप्रकार॥ शुंठि पिपलामूल बायबिड़ंग देवदारु सेंधानोन रास्ना चीता अजमान मिरच कूट हड़ ये समभागलेइ और दुगुणागूगुल मिलाइ घृतमें गोली बनाइ खानेसे बायुको व हैजाको व गुल्म को व शूलको व कम्पको व गृध्रसीकोनाशकरै॥ रास्नादिगूगुल॥ रास्ना गिलोय सत एरंडजड़ देवदारु शुंठि ये समभागलेइ और सबोंके तुल्य गूगुलमिलाय पीसिखानेसे बायुको व शिरके रोगको व नाड़ी व्रणको व भगन्दरको नाशकरै॥ दूसरीयोगराजकीवटी॥ शुंठि पीपला मूल चाव मिरच चीता भुनीहींग अजमोद सिरसम जीरा स्याहजीरा रेणुकबीज इन्द्रयव पाढ़ा बायबिड़ंग गजपीपली कुटकी अतीस भारंगी बच मूर्वा तमालपत्र देवदारु पीपली कूट रास्ना नागरमोथा सेंधा इलायची गोखुरू हड़ बहेड़ा धनियां आमला दालचीनी बाला जवाखार तिल ये समभागलेइ और इनसबों के समान गूगुललेइ घृतमें मलि एक गोला बनाइ घृतके चीकने बरतनमें धरै पीछे ४ माशा की गोली बनाइ रोज खाने से यह योगराज गूगुल विशेष करि बुढ़ापाको व वातव्याधिको हरै और इसपै मैथुन भोजन पान का त्यागनहीं है और यह वातरोगको व आमवातको व अपस्मार को व वातरक्तको व कुष्ठको व दुष्टव्रणको व बवासीरको व प्लीहाको व गुल्मको व पेटके रोगको व आनाहको व मन्दाग्निको व श्वास को व खांसीको व अरुचिको व प्रमेहको व नाभिशूल को व कृमि को व क्षयको व हृद्रोगको व शुक्रदोष को व उदावर्त्तको व भगंदर को नाशकरै और इसको तीनमाशेसे लेइ १ तोलातक ७ दिनतक खानेमें बढ़ै और रास्नादिकाढ़ाके सङ्ग पीनेसे वातरोगको नाशकरै

और दारुहलदीके काढ़ाकेसङ्ग प्रमेहकोहरै और काकोल्यादि काढ़ा के सङ्ग पित्तकोहरै और अमलतास के काढ़ा के सङ्ग कफको हरै और शहद के सङ्गमें येवृद्धि को हरै और नींबके काढ़ाकेसङ्ग कुष्ठ को हरै और गिलोयके काढ़ा के सङ्ग वातरक्तको हरै और पीपला मूलके काढ़ाके सङ्ग शूलकोहरै और पाटलाके काढ़ाके सङ्ग मूषा के बिषको हरै और त्रिफलाकेकाढ़ा के सङ्ग भयंकर नेत्रकी पीड़ाकोहरै और सांठीके काढ़ाकेसङ्ग सबप्रकारके पेटके रोगोंकोहरै ॥ रसोनसंधान ॥ लहसनकोछोलि कूटिलेइ इससे आधाभाग स्वच्छकिये तिल और लहसनसे चतुर्थांश गौका तक्रमिलाइ तिसमें शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४तोला धनियां ४ तोला चाव ४तोला चीता ४ तोला गजपीपली ४तोला दालचीनी ४ तोला इलायची४तोला पीपलामूल ४ तोला तमालपत्र ४ तोला तालीसपत्र ४ तोला खांड़ ३२ तोला जीरा २० तोला स्याहजीरा २० तोला मुलहठी १६ तोला गुड़ १६ तोला अदरक १६तोला घृत ३२तोला मीठातेल२ तोला कांजी ८० तोला सिरसम १६ तोला राई १६ तोला हींग १ तोला पांचोनोन ५ तोला इन्होंको मिलाइ दृढ़बरतनमें घालिअन्न सेभरे कोठामें गाड़ै पीछे १२ दिन उपरान्त काढ़ि अग्नि बल बिचारखावै और मदिरा कांजी मीठारस इन्होंका अनुपान करै और औषध जीर्णहुये बाद मनोबाञ्छित दहीपीठी बर्जित भोजनकरैइस को १ महीनातक सेवनसे सबप्रकार के वातरोग नाश होवैं और ८० वातोंको व ४० पित्तके रोगोंको व २० कफके रोगोंको व २० प्रमेहोंको व सोजाको व योनिशूलको हरै और छुटि संधिको व टूटे हाड़को जोड़ै और बलवर्ण इन्होंको बधावै और हियामें आनन्द करै और पुष्टाईकरै और बीरजको बधावै ॥ भुजंगीगुटिका ॥ अजमान का फूल १६ तोला शुंठि ८ तोला तेजबल ८ तोला इन्होंकोपीसि पुरानेगुड़में गोली बांधि १० माशाकी रोज़ खानेसे वात समुदाय को हरै और इसपै पथ्यसेरहै और इसकानाम भुजंगीबटीहै ॥ दूसरा प्रकार ॥ तेजबल ६४ तोला दूध ५१२ तोला इन्होंको पकाइ खोहा बनाइ इसमें शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पीपल ४ तोला हड़

४ तोला शतावरी ४ तोला बायबिड़ंग ४ तोला चीता ४ तोला पीपलामूल ४ तोला अजमोद ४ तोला बच ४ तोला कूट ४ तोला असगंध ४ तोला देवदारु ४ तोला घृत ४ तोला इन्होंकोमिलाइ गोलीबांधि शहद घृतके सङ्ग खाने से सब वातके रोगोंको नाशैहै॥ निर्गुंडयादिबटी॥ पीपलामूल पीपली देवदारु बायबिड़ंग चीता सेंधानोन अजमोद के फूल अजमोद मिरच ये समभागलेइ गुड़में गोलीबनाइ २१ दिनतक एक रोज खानेसे बायुरोग को नाशकरै॥ अमरसुन्दरीबटी॥ शुंठि मिरच पीपल हड़ बहेड़ा आमला पीपलामूल पित्तपापड़ा चीता लोहभस्म दालचीनी तमालपत्र इलायची नागकेशर पारा गन्धक मीठा तेलिया बायबिड़ङ्ग करकरा नागरमोथा ये समभागलेइ दुगुने गुड़में गोलीबनाय चनासमान खानेसे अपस्मार को व सन्निपात को व श्वास को व खांसी को व बवासीर को व ८० प्रकार के बायुकेरोगों को व उन्माद को दूरकरै॥ अजमोदादिबटी॥ अजमोद १ भाग पीपली १ भाग बायबिड़ंग १ भाग सौंफ १ भाग नागरमोथा १ भाग मिरच १ भाग सेंधानोन १ भाग हड़ ५ भाग शुंठि १० भाग भिदारा १० भाग गुड़ ३६ भाग पहिले गुड़ पाकसरीखापकाइ चूर्णमिलाइ गोली १तोला की बनाइ खाने से संधिवात को व आमवातको नाशकरै और गोलीको गरम पानी के संगलेनेसे सबवात को व आढ्यवात को हनुस्तम्भको व शिरोग्रह को व अपतान को व भृकुटी शंख कान नाक नेत्र जीभ इन्हों के स्तम्भ को व कलाप खंज पंगला सर्वांग एकांग इन्होंमें गतबायु को व अर्दितको व पादहर्षको व पक्षाघातकोहरै॥ लघुराजमृगांक॥ मिरचका चूर्ण घृत तुलसी का रस इन्होंको मिलाइ खाने से सब वातरोग शांतहोवैं जैसे भगवान् अपने भक्तों के दुःखको हरैं इसे लघुमृगांक कहतेहैं व चूर्ण काढ़े गोली घृत तेल इन्होंकीयोजनासे व कामीपुरुषों को सुन्दर स्त्रियों के आलिंगन से वातब्याधि शांत होवै॥ दूसराएरंडपाक॥ एरंडके बीजोंकातुष दूरकरि आठगुणादूध में पकाइ सुखाइ बारीकपीसै पीछे घृतमें मन्दअग्नि से पकाइ खोहा करै पीछे शुंठि मिरच पीपल लौंग इलायची दालचीनी तमालपत्र

नागकेशर असगंध रास्ना षड्गंधा पित्तपापड़ा शतावरी लोहभस्म सांठी हड़ बाला जावित्री जायफल अभ्रकभस्म ये समभागलेइ खोहामें मिलाइ खांड़युतकरि पाकसरीखा तैयारकरै यहएरंडपाक प्रभातमें खानेसे ८० प्रकारके बायुरोगोंको व ४० प्रकारके पित्तरोगों को व ८ प्रकारके उदररोगोंको व २० प्रकारके प्रमेहरोगोंको व ६० प्रकारके नाड़ीव्रणोंको व १८ प्रकारके कुष्ठोंको व ७ प्रकारके क्षयरोगों को व ५ प्रकारके पांडुरोगों को व ५ प्रकारके श्वासको व ४ प्रकार के संग्रहणी को व नेत्ररोग को व गलग्रहको व अनेकप्रकारके वात रोगको हरै है इसको शुक्लपाक कहते हैं॥ एरंडपाक॥ एरंडबीज गोला ६४ तोला दूध ५१२ तोले में पकाइ मंद आगसे पीछे घृत ३२ तोला खांड़ १३२ तोला शुंठि१ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला दालचीनी १ तोला इलायची १ तोला तमालपत्र १ तोला नागकेशर १ तोला पीपलामूल १ तोला चीता १ तोला चाव १ तोला सौंफ १ तोला लघुसौंफ १ तोला कचूर १ तोला बेल १ तोला अजमोद १ तोला जीरा १ तोला स्याहजीरा १ तोला दारुहल्दी १ तोला हलदी १ तोला असगंध १ तोला बलियार १ तोला पाढ़ा १ तोला शेरणी १ तोला बायबिड़ंग १ तोला पुष्करमूल १ तोला गोखुरू १ तोला कूट १ तोला त्रिफला १ तोला देवदारु १ तोला भिदारा१ तोला ककरोलीबीज १ तोला अरलु १ तोला शतावरी १ तोला इन्हों का चूर्णमिलाइ तय्यारकरि खाने से वात व्याधिको व शूलको व सोजा को व पेटरोगको व अफाराको व वस्तिवातको व गुल्मको व आमवातको व कटिग्रहको व उरुस्तंभको व हनुस्तंभ को नाशकरै॥ रसोनपाक॥ लहसन ६४ तोला लेइ और इन्होंका तुषदूरकरि तेजगन्धनाशके वास्ते रातिकोतक्रमें भिगोइ प्रभात में काढ़ा पीसि दूध में पकाइतय्यारकरै पीछेघृत १६ तोला मिलाइ शीतल होनेपर रासना १ तोला शतावरी १ तोला बासा १ तोला गिलोय १ तोला कचूर १ तोला शुंठि १ तोला देवदारु १ तोला भिदारा १ तोला अजमोद १ तोला चीता १ तोला सौंफ १ तोला सांठी १ तोला हड़ १ तोला बहेड़ा १ तोला आमला १ तोला पीपली १तोला बायबिड़ंग

१ तोला शहद १६ तोला इन्होंको मिलाय खानेसे आढ्यवातको व हनुग्रह को व आक्षेपकको व भग्नवातको व कटिवातको व उरुस्तंभ को व हृद्रोगको व सर्वांग वातको व संधिगत वातको व ८० प्रकारके वातरोगोंको नाशकरै ॥ कुवेरपाक ॥ तुणिको ६४ तोला पानीमें रात्रि कोभिगोइ चौगुणे दूधमें पकाइ सुखाइ प्रभात को घृत में मन्द २ अग्निसे पकावै पीछे ठंढे होनेपर शहदमें डालै पीछे दालचीनी २ तोला तमालपत्र २ तोला नागकेशर २ तोला इलायची २ तोला शुंठि २ तोला मिरच २तोला पीपल २ तोला जावित्री २ तोला जायफल २ तोला लौंग २ तोला बायबिड़ंग २ तोला सौंफ २ तोला जीरा २तोला नागरमोथा २तोला बलियाजड़ २तोला हलदी २तोला दारुहलदी २ तोला लोहभस्म २ तोला तांबाभस्म २ तोला इन्हों को डालै पीछेइसे ४ तोला रोजखावै यह सबतरहके वातरोगोंको व मंदाग्निको व बलक्षयको व प्रमेहको व मूत्रकृच्छ्रको व अश्मरीको व गुल्मको व पांडुकोहरै व पीनसको व संग्रहणीको व अतीसारको व अरोचक को हरै और कामको और कांति पुष्टि इन्होंको वधावै इसको कुवेरपाककहते हैं ॥ लशुनपाक ॥ लहसनोंका तुषदूरकरि द्रोण भर दूधमें पकाइ पीछे १६ तोले घृतमें मन्द २ अग्निसे पकाइ मधुवर्णहो तब खांड़ १२८ तोले शुंठि १ तोला मिरच १ तोला पीपल १ तोला दालचीनी १ तोला तमालपत्र १ तोला इलायची १तोला नागकेशर १तोला पीपलामूल १तोला चवक १तोला चीता १तोला बायबिड़ंग १ तोला हल्दी १ तोला दारुहल्दी १ तोला शेरणी १ तोला भिदारा १ तोला पुष्करमूल १ तोला अजमोद १तोला लौंग १ तोला देवदारु १ तोला सांठी १ तोला गोखुरू १ तोला नींब १ तोला रास्ना १ तोला सौंफ १तोला शतावरी १तोला कचूर १ तोला असगन्ध १ तोला कोंचकेबीज १ तोला इन्होंका चूर्णमिलाइ पीछे अग्निबल देखि खानेसे यह लहसनपाक सब वातरोगोंको व शूल को व अपस्मारको व छाती फटनेको व गुल्म को व पेटरोग को व छर्दिको व प्लीहाको व अण्डवृद्धिको व कृमिको व मलवद्धको व अफाराको व सोजाको व मंदाग्निको व बलक्षयको व हिचकीको व

श्वासको व खांसीको वअपतंत्रको व धनुर्वातको व अन्तरायामको व पक्षाघातको व अपतानकको व अर्दितको व आक्षेपकको व कुब्जक को व हनुग्रहको व शिरोग्रहको व बिश्वाचीको व गृध्रूसीको व खल्ली वातको व पंगुवातको व संधिवातको व बधिरपनाको व सब शूलोंको जल्दी नाशै और वातव्याधि हाथी को यह सिंहरूप होइ भगावे और कफ व्याधिकोहरै और बलपुष्टिकोपैदाकरै ॥ लेप ॥ वातरोगी का जौनसा अंगपीड़ितहो उसकोशस्त्रसे छीलि तिसपर चिरमटियों के कल्ककी पींड़ीबांधे इससे अववाहुक बिश्वाची गृध्रूसी अन्यवात सम्बंधी पीड़ानाशहोवैं ॥ मर्दनवनस्य ॥ अदरककेरसमें अजमानका चूर्णमिलाइ अंगके मालिश करनेसे व नस्य लेनेसे वातकोप शांत होवै ॥ स्वेदविधि ॥ कपासका बिंदौला कुलथी तिल यव एरंड उड़द अलसी सांठी शणकेबीज इन्होंको अलग २ कांजीमें युतकरि पोटली के सेंकसे कपूर अङ्गरोग को व दाहको व पेटके रोगको व ठोढ़ी नितंब हाथ पैर अंगुली टंकण इन्होंके स्तम्भको व कटिशूल को व आमसहित वातरोगोंकोहरै ॥ पींड़ीबांधना ॥ रास्ना शतावरी देवदारु कूट उड़द तेल बच कुलथी दशमूल इन्हों की पिंडीबनाइ बांधनेसे वातरोगोंको यहहरै ॥ स्वेद व लेप ॥ गरम २ मक्षिकामांसके वेसवारसे सेंककरि पसीनालेने से वातनाशहो व फांगलीके रससे वात युक्त अंगको लेपन करनेसे आरामहोवै ॥ लेप व स्वेद ॥ नसदर सेंधानोन कालाबोल मीठातेल कूट समुद्रफल जमालगोटाकी गिरी अफीम खरेंटी बलिया इन्होंके चूर्णको नींबूकेरसमें खरलकर पीछे गरमकर लेपन करनेसे सङ्ग उपजे ८० प्रकारके वायुरोगों को हरै ॥ शतपुष्पादिलेप ॥ सौंफ देवदारु कूट सेंधानोन हींग इन्होंको आकके दूधमें खरलकरि लेपकरनेसे हाड़की बातको व संधीकी बातको व कटिबातको ३ दिनमेंहरै ॥ लेप ॥ देवदारु हींग शुंठि सौंफ सेंधानोन बच इन्होंको आक के दूधमें खरलकरि लेपकरनेसे १ दिनमें हाड़ के बायुको यहहरै ॥ वातहापोटली ॥ पुवाड़केबीज अरण्डकेबीज निंबोली धवकेफूल अशोकवृक्षकीछाल गोला करंजुवाकेबीज बिंदौला सहोंजनाकी छाल दोलाफल सिरसों अकोलफल रास्ना कुलथी

तिल लहसन बच हींग राई शुंठि इन सबों का चूर्णकरि चूर्ण मिलाय घृतमें व तेल में मलि पोटली बांधि अग्नि पर सेंक शरीरपै लगानेसे बायुकोहरे ॥ महासाल्वणयोग ॥ कुलथी उड़द गेहूं अलसी तिल सिरसों सौंफ देवदारु निर्गुंडी कलौंजी जीरा एरंड की जड़ बेलपत्रकीजड़ रास्ना सहोंजना जटामांसी पीपली नादुरकी सेंधा लवण मणियारीलवण कालानोन साँभर खारीलवण अमलवेतस खीप असगन्ध गंगेरन लघुबलिया दशमूल गिलोय कौंचबीज ये औषध पूरीपूरी या कममिलैं तो कमलेवै कूटासिजाय कपड़ामेंघालि पोटली बनाय सेंककरने से यह महासाल्वणयोग सम्पूर्ण वात पीड़ाकोहरै ॥ कढ़ी ॥ मालकांगनी पीपलामूल लालचन्दन चाव चीता लौंग चमेली कूट मजीठ सौंफ सिरसों निर्गुण्डी अजमोद नींबू हल्दी शुंठि तक्र कांजी इन्होंका चूर्णकरि कढ़ी बनाय खानेसे वात रोगको हरै जठराग्निको बढ़ावै॥स्वेदलेपाबिधि॥ एरंडजड़ आकजड़ करंजुवाकीजड़ मूर्वा बलिया अरणी लालचन्दन थोहर निर्गुण्डी ताड़ देवनल सहोंजना चूका गोकरणी असगन्ध इन्होंके पत्तेलेइ कांजी गोमूत्र आम्लवेतस इन्होंको मिलाय बरतनमें घालि गरम कर पसीना लेनेसे तत्काल वात रोगी को सुख होइ ॥ लेप ॥ निर्गुण्डी करंजुवा पित्तवाली औषध इन्होंको पीसि लेप करने से व पानी गरम में मिलाय सेचन करने से व पिंडी बनाय बांधने से वात रोग शांतहोवै ॥ रसोनकल्क ॥अच्छेपकेहुये लहसनोंका तुष दूरकरि बीच से फाड़ि अंकुरदूर करि दुर्गंध नाशकरनेके वास्ते रातसे तक्रमें भिगोय रक्खै पीछे प्रभातमें काढ़के पीसि कल्कबनावै कालानोन भुनी हींग अजमाण सेंधानोन शुंठि मिरच पीपल जीरा इन्होंको समभागलेइ चूर्णकर कल्कसे पांचवां हिस्सा मिलावै पीछे अग्निबल ऋतुदोषको विचार १ तोला हमेशाखावै ऊपर एरंडका काढ़ा पीवै यह सर्वांग वायुको व एकांगवायुको व अर्दितको अपतंत्रको व अपस्मार को उन्मादको उरुस्तंभको गृध्रसीको व छातीपीठ पशली कूख इन्होंकी पीड़ाको हरै और इसपै अजीर्ण धूप क्रोध ज्यादै पानीपीना दूध गुड़ इन्हों को रसोन कल्क खाने वाला त्याग देवै और मदिरा मांस

खट्टारस इन्होंको निरंतर सेवै३ रसोनकल्क शुद्ध लहसन के कल्क में तिलोंकातेल मिलाय खानेसे दारुण बातरोगको व बिषमज्वरको नाशकरै ॥ लक्षण ॥ लहसनको घृतमें पीसि खानेसे व इन्द्रयव चीता शुंठि इन्होंको घृतके संग खाने से संपूर्ण बात बिकार दूर होवै ॥ स्वच्छन्दभैरवरस ॥ शोधापारा लोहभस्म सोनामाखी भस्म गंधक हरताल छोटीहड़ एरंड निर्गुण्डी शुंठि मिरच पीपल सुहागाखार शोधा मीठा तेलिया ये सब सम भाग लेवै इन्हों को निर्गुण्डी के रस में एक दिन खरलकरै पीछे १ दिन मुण्डीके रस में खरल करि दो रत्ती की गोली बांधि खावै ऊपर गिलोय देवदारु शुंठि एरंडजड़ इन्हों के काढ़ा में गूगल मिलाय पीवै यह रस वायुरोग को नाश करै ॥ समीरपन्नग ॥ अभ्रक भस्म गन्धक मीठातेलिया शुंठि मिरच पीपल पारा सुहागाखार ये समभाग लेवै पीछे भंगरा के रस में सात भावना देइ पीछे अदरख के रस के संग व मिश्री त्रिकुटा के चूर्ण के संग तीन रत्ती खाने से महाबात रोगों को हरै और इस की नस्य लेने से मूर्च्छा जावै ॥ वातविध्वंसनपारा ॥ गन्धक शीशा रांग लोह तांबा अभ्रक इन्होंकी भस्म पीपल सुहागा शुंठि मिरच पीपल इस क्रम से सम भाग लेवै एक पहर तक महीन पीस पीछे साढ़े चार भाग मीठा तेलिया मिलाय ज्यादा खरल करै पीछे शुंठि मिरच पीपल त्रिफला चीता भंगरा कूट इन्होंके रसमें तीन तीन भावना देवै पीछे निर्गुण्डीरस आककारस बड़ाआमला अदरख नींबू इन्हों के रसमें अलग २ भावना देइ खाने से २ रत्तीभर वायु को शूलको कफरोगको संग्रहणीको सन्निपातको अढ्यवातको प्रसूतिवातको हरै ॥ वात राक्षस ॥ पाराभस्म गन्धकभस्म लोहाभस्म अभ्रकभस्म तांबा भस्म ये सब सम भाग लेइ खरल करै पीछे सांठी गिलोय चीता तुलसी त्रिकुटा इन्होंके रसोंमें अलग २ तीन २ दिन भावना देवै लघु पुट में पकाय शीतल होनेपर काढ़ि २ रत्तीभर खाने से यथा रोगोक्त अनुपानों के संग उरुस्तंभ को वातरक्तको गात्रभंग को आमवात को हनुवात को वेदनावातको पक्षघात को कंपवातको सर्व संधिगतवातको सुप्तवातको वातशूलको उन्मादको हरै और

यह अनुपानों के संग ८० प्रकार के वातोंकोहरै॥ वातारिरस ॥ पारा एकभाग गन्धक दोभाग त्रिफला तीनभाग तीता ४ भाग गूगल ५ भाग इन्हों का चूर्णकरि अरंडी के तेल में खरल करि १ तोला भरकी गोली बनाय प्रभात में खावै ऊपर शुंठि अरंडकी जड़ इन्हों का काढ़ापीवै और अरण्डी के तेलकी मालिश पीठके करि पसीना लेवै और दस्तावर सचिक्कण गरम भोजन खवावै औ निर्वात स्थान में बसै यह रस १ महीनातक सेवने से वायुरोगोंको नाश करै और इसमें स्त्री संगको त्याग करना उचितहै ॥ समीरगजकेशरी ॥ नई अफीम कुचला के बीज नई मिरच ये समभाग लेइ चूर्णकरि १ रत्ती खावै ऊपर नागरपान खाने से कुब्जकवातको व खंजवातको व सर्वजवातको व गृध्रसीको व अववाहुकको व सूजन को व कंपको व प्रतानक को व हैजाको व अरोचको व अपस्मार को नाशकरै॥ मृतसंजीवनीरस ॥ सिंगरफ ३ भाग मीठातेलिया २ भाग सुहागा खार १ भाग जमालगोटा १ भाग इन्होंको अदरखकेरसमें खरलकरि २ प्रहरतक पीछे आक के दूध में खरल करै पीछेशतावरी के रसमें खरलकरि २ रत्तीभरखानेसे वातरोग व उरुस्तंभकोव आमवातको व संग्रहणीको व बवासीरको व आठ प्रकारके ज्वररोगोंको यहनाश करै जैसेसूर्य अंधेरा को तैसे ॥ वातारिरस ॥ पारा सोना हीरा तांबा लोह सोनामाखी हरताल सुरमा तूतिया अफीम ये समभाग लेइ औरपांचोनोन१भागलेइ थोहरकेदूधमें १दिनखरलकरिपीछेसंपुटमें घालि कपड़माटीदेइ भूधर यंत्रमें पकाइपीछे १ माशा रसको अदरख के रसमें मिलाइ चाटने से वातकोनाशै और इसपै पिपलामूलके काढ़ामें पीपल का चूर्णबुरकाइ पीवै यह सब आक्षेपकादि बिकारों को हरै यह रस वातारी जगत् में विख्यातहै ॥ वातगजांकुश ॥ पाराभस्म लोहभस्म गन्धक हरताल सोनामाखीभस्म हड़ काकड़ाशिंगी मीठातेलिया शुंठि मिरच पीपल अरणी सुहागाखार ये समभाग लेइ इन्होंको मुण्डी के रससें १ दिन खरल करि पीछे निर्गुण्डीके रसमें खरलकरि २ रत्तीकीगोलीबनाइ खानेसेसब प्रकारके वातरोगदूरहोवैं और यहवातगजांकुश साध्यअसाध्यवात

रोगको हरै व्याधि गजकेशरी पारा गन्धक हरताल मीठातेलिया शुंठि मिरच पीपल हड़ बहेड़ा आमला सुहागाखार जमालगोटा के बीज ये अलग २ माशे ४ लेइ बारीक चूर्णकरि भंगरा केरसमें ७ दिनतक खरलकरि पीछे निर्गुण्डीरसमें ७ भावना देइ पीछेका-कमाचीके रसमें ७ भावना देइ मिरचके समान गोली बनाइ दोषों को विचारिदेवैदूधकेसाथ यहआठप्रकारके ज्वरोंकोहरै व ८० प्रकार के वातरोगोंको निर्गुण्डीरस व नागरमोथा के काढ़ाके संगहरै और गुरके संग खाने से ४० प्रकार के पित्तरोगों को हरै और रोगो-क्त अनुपानोंके संग खाने से रोगमात्र को हरै ॥ सूर्यप्रभागुटी ॥ चीता४ तोला हड़ ४ तोला बहेड़ा ४ तोला आमला ४ तोला नींब ४तोला परवल ४तोला मुलहठी४तोला दालचीनी४तोला नागके-शर ४तोला अजमान४तोला अम्लवेतस४ तोला चिरायता४तो-ला दारुहल्दी ४ तोला इलायची ४ तोला नागरमोथा ४ तोला पित्तपापड़ा ४ तोला रसोत४ तोला कुटकी ४ तोला भारंगी४तोला चाव ४ तोला पद्माख ४ तोला खुरासानी अजमाण ४ तोला पिप-ली ४ तोला मिरच ४ तोला जमालगोटा ४ तोला कचूर ४ तोला शुंठि४तोला पोहकरमूल ४तोला वायबिड़ंग ४तोला पिपलामूल ४ तोला जीरा ४ तोला देवदारु तमालपत्र कुड़ाकी छाल रास्ना धमासा गिलोय निसोत कौंच के बीज तालीसपत्र अम्लवेतस सें-धानोन मणियारीनोन कालानोन धनियां अजमोद सौंफ सोना-माखी जायफल वंशलोचन असगन्ध अनारकी छाल कंकोल वाला जवाखार सज्जीखार मिरच ये सब चार ४ तोलेलेवै शिला-जीत ३२ तोले गूगल ८ तोले लोहभस्म ३२ तोले सोनामाखी भस्म ८ तोले इन सबों का चूर्ण करि घीके चीकणे बर्तनमें घालि धरै पीछे अग्निबल देख खाने से बातव्याधिको व उरुस्तम्भको व अर्दित गृध्रसी विद्रधी श्लीपद गुल्म पांडु हलीमक पांचप्रकारकी खांसी मूत्रकृच्छ्र गलरोग अफारा अस्मरी अंडवृद्धि संग्रहणीअप-बाहुक अरुचि पसलीशूल पेटकारोग भगन्दर हृद्रोग शूलऊर्द्धकंप विषमज्वर छातीकाफटना मुखरोग प्रमेह रक्तपित्त कामला बातो-

त्पन्न कफोत्पन्न द्वन्द्वज इन्हों को हरे और इसकी गोली १६ माशे की बनाके खावे इसपर अन्न मनोबांछित खावे यह भास्करीगोली महादेवजीनेकहीहै औरअग्निकोदीपनकरैहै ॥ लघुवातविध्वंसमात्रा॥ पारा सुहागाखार गन्धक पाषाणभेद मीठातेलिया कौड़ीकी भस्म हरताल शुंठि मिरच पीपली ये समभाग लेइ धतूराकेरसमें खरल करि एकरत्ती की गोली बनाय खाने से सन्निपात को व बायु को कफको शीतको व मंदाग्निको श्वासको व शूलको व खांसीको हरै ॥ वह्निकुमार रस ॥ सुहागाखार पारा गन्धक शंखभस्म कौड़ी भस्म ये समभागलेइ मीठातेलिया ३ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको भंगरा के रसमें खरलकरि इस वह्निकुमार रसके खानेसे सम्पूर्णबातरोग व श्वास मंदाग्नि कफ तिल्ली ये जावैं ॥ वातविध्वंस ॥ पारा एकभाग गन्धक तांबाभस्म लोहभस्म सोनामाखीभस्म जमालगोटा हरताल शुंठि मिरच पीपल ये समभागलेवै मीठातेलिया २ भागलेवै पीछे निर्गुण्डी जमीकंद आक अरणी भंगरा धतूरा इन्होंके रसमें सात२ भावना देवै पीछे प्रभातमें २रत्ती द्रव्य मिरचों के चूर्णके संगखाने से गोड़ा जांघ कमर समीप पैरका टांकना होठ शिर कांधा इन्होंके स्तंभको व हनुस्तंभको त्रिकस्तंभ शुष्कबात जिह्वास्तंभ बाहुस्तंभ पादस्तंभ अधोवायु सर्वाङ्गबात को जल्दीहरै जैसे नारायण अपने भक्तोंकी दीनताको दूरकरैहैं तैसे॥ समीरपन्नग ॥ पारा हरताल सोना-माखीभस्म लोहभस्म गन्धक हड़ शुंठि मिरच पीपल अरणी रास्ना काकड़ाशिंगी मीठातेलिया सुहागा ये समभाग लेवै तुलसी के रस में खरलकरि मुंडीके रसमें खरलकरि तीन २ रत्तीकी गोली बनाय सेंधानोन शुंठि चीताकारस इन्होंकेसंग खानेसे बायुकोहरै ॥ वातारिरस ॥ पारा १भाग गन्धक २ भाग मीठातेलिया ३ भाग पीपल ४ भाग रेणुकबीज ३ भाग इन्होंको मिलाय १ रत्ती प्रमाण गोली बनाय खानेसे सब बातरोगों को नाशकरै ॥ दूसराप्रकार ॥ मीठाते-लिया १ भाग सुहागा २ भाग मिरच ४ भाग इन्होंको पीसि अ-दरख के रसमें मिलाय मिरचों के चूर्णके संग ३ रत्तीखाने से सब बातरोगों को नाशकरै ॥ रसेन्द्रचिन्तामणि ॥ पारा ५ भाग तांबा १

भाग गन्धक ५ भाग इन्होंकी कज्जली बनाय नागरपान की बेल केरसमें मिलाय तांबाके पात्रकी पीठपर लेपि संपुटमेंदेइ गजपुटमें पकाय काढ़ि २रत्तीभरको शुंठि मिरच पीपल इन्हों के चूर्ण के संग खानेसे अर्द्धांगबातको व कंपबातको व दाहको व संतापको व मूर्च्छा को व पित्तको दूरकरे ॥ कालकंटकरस ॥ हीरा १ भाग पारा २ भाग अभ्रक ३भाग सोना ४ भाग तांबा ५ भाग पोलाद ६ भाग मंडूर ७ भाग इन्होंकी भस्म लेइ खट्टारसमें ३ दिन भिगोय पीछे द्रव्य के समान तीनोंखार पांचोंनोन लेइ पीछे निर्गुण्डीके रसमें ३ दिन खरल करै पीछे सुखाय मीठातेलिया अष्टमांश सुहागा अष्टमांश मिलाय नींबूरसमें १ दिनतक खरलकरै ऐसे कालकंटकरस तय्यार होहै इससे सबरोग शांतहोवैं और २ रत्तीभर को अदरखके रसके संग देनेसे सन्निपात को हरै और घृतके संग खानेसे बातरोगोंको हरै और निर्गुण्डीकी जड़काचूर्ण और भैंसागूगुललेइ घृतमेंमिला-य १६ माशेकी गोलीबनाय खावै ऊपर घृत गरमभोजन देवै यह १५ दिन सेवनकरने से बातरोगोंको नाशै संशय नहीं और सन्नि-पातमें इसको खाय ऊपर आककी जड़का काढ़ा पीवै ॥ त्रिगुणाख्य रस ॥ गन्धक ८भाग और शोधापारा अग्निपै पकाया १भाग हड़ चूर्ण १भाग इन्होंको मिलाय सातरत्ती पहिलेदिनखावै पीछे १रत्ती रोजबढ़ावै इक्कीसरत्तीतक ऊपर दूध घी खांड़ चावल इन्होंकापथ्य ले यह कफवातको हरै १५ दिन सेवन करने में इसका खानेवाला निर्बातस्थानमेंरहै ॥ अर्केश्वर ॥ पारा १भाग गन्धक २ भाग इसको तांबा गरमपात्रमें घालि दूसरा तांबाके पात्रसेढँकि अग्निमें पकाय ऊपरवाले पात्रमें लगाहुआ को खुरचि आकके दूधमें १२ भावना देवै पीछे त्रिफला के जलमें १२ भावना देवै २ रत्तीखावै त्रिफला के संग यह सुप्तिवायुको हरै इसमें पथ्यकी बस्तुकोखावै और खार तीक्ष्णबस्तु दही मांस उड़द बैंगन शहद इन्होंकोबर्जै ॥ एकांगबीर॥ शोधागन्धक पाराभस्म लोहभस्म रांगभस्म शीशाभस्म तांबाभस्म अभ्रकभस्म पोहलादभस्म शुंठि मिरच पीपल इन्हों को पीसि त्रि-फला त्रिकुटा निर्गुण्डी अदरख चीता सहिंजना कूट आमला कुचिला

आक कांगडूंभा बेल अदरख इन्होंकेरसमें तीन २ भावनादेवै ऐसे एकांगबीर रसोंकाराजा सिद्धहोहै यह खानेसे पक्षघात अर्दित धनुर्वात अधरंग गृध्रसी विश्वाची अपबाहुक इन्होंको व सबबातरोगों कोहरैहै इसमें संदेहनहीं ॥ बातरक्तपैरस ॥ पारा शुद्धगन्धक ये सम भागले इनदोनोंकेबराबर अभ्रकभस्म इनतीनोंकेबराबर गूगल चारोंकेबराबर गिलोयसत इन्होंको मिलाय निर्गुण्डी गोखुरू गिलोय इन्होंके काढ़ोंमें सात २भावनादेवै पीछे ३रत्तीप्रमाण खानेसेबातरक्त कोहरै इसपर काकोलीकीजड़का काढ़ाका अनुपान है तालकभस्म हरतालभस्म २भाग पारा १ भाग तुरठी ५ भाग इन्हों को घटुली रसमें खरलकरि गोलाबनाय सिकोराके संपुटमें देय कपड़माटीकरि गजपुटमें पकाइ सुंदररूप देखि विचारि १ चावलपरिमाण मात्रा लेने से बात बिकार दूर होवै ॥ गंधकरसायन ॥ शोधा गंधकको गौ के दूध में भिगोय पीछे दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर गिलोय हड़ बहेड़ा आमला शुंठि भंगरा अदरख इन्होंके काढ़ोंमें आठआठ भावनादेइ पीछे बराबरकी मिश्रीमिलानेसे गंधकरसायन तैयार हो है इसको १ तोला रोज सेवने से वीर्य अग्नि पुष्टि देह दृढ़ता इन्होंको बढ़ावै और कुष्ठ कंडुविष दोष घोर अतीसार संग्रहणीबातरक्त शूलजीर्णज्वर सबप्रमेह तीव्रबातव्याधि अंडवृद्धि सोमरोग संपूर्णरोग इन्होंकोनाशै और बुद्धि उमर केशोंका कालारंग करै और देवोंसमान कांति को पैदाकरै ॥ लघुविषगर्भतेल ॥ तेल २५६ तोला तुषका पानी २५६ तोला और कनेर धतूरा निर्गुण्डी आककी जड़ इन्हों के काढ़ा में तेल को सिद्धकरि पीछे धतूराके बीज ४ तोला कूट ४ तोला कलहारी ४ तोला मीठा तेलिया ४ तोला गूलर ४ तोला रास्ना४तोला कनेर ४ तोला मालकांगनी ४ तोला वृहद्दती ४ तोला मिरच ४ तोला जटामांसी ४ तोला वच ४ तोला चीता४ तोला शिरसम४ तोला देवदारु ४तोला दारुहल्दी४तोला हल्दी ४ तोला एरण्डजड़ ४ तोला लाख ४ तोला त्रिफला ४ तोला मंजीठ ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे यह विषगर्भतेल बातके रोगोंको हरैहै॥ दूसराप्रकार ॥ ध-

तूरारस ८० तोला मीठातेल ८० तोला कांजी ६४ तोला कूट १ तोलावच १ तोला चीता १ तोला बड़ाआमला ६ तोला मिरच ६ तोला मीठा तेलिया ६ तोला धतूराकेबीज २७ तोला सेंधानोन २७ तोला इन्होंको मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरने से वायुको पक्षाघातको हनुस्तंभको कांधास्तंभको कटिग्रहको पीठ त्रिक शिरइन्हों के कंपको सर्वांगग्रह वातको दूरकरै ॥ महाविष गर्भतैल ॥ धतूरानिर्गुण्डी तूंबी सांठि एरण्ड असगन्ध पुआड़बीज चीता सहोंजना कावली कलिहारी नींब बांझककोड़ी दशमूल शतावरी लघुकरेला सारिवा मुण्डी विदारीकंद थोहर आक मेढ़ाशिंगी लालकनेर सपेदकनेर वच काकमाची ऊंगा बलिया गंगेरणी बड़ीबलिया कटैली महाबला वासा सोमवेल चांदवेल ये प्रत्येक चार चार तोला लेइ १०२४ तोले पानीमें मिलाय चतुर्थांश काढ़ारक्खै पीछे शुंठि मिरच पीपल कुचिला रास्ना कूट अतीस नागरमोथा देवदारु मीठातेलिया जवाखार सुहागाखार सेंधानोन मणियारीनोन कालानोन खारीनोन सांभरनोन तूतिया कायफल पाठा नसदर मेंदी बनफसा धमासा जीरा गंढूभा इन्होंका चूर्ण १६ तोले मिलाय मीठातेल ६४ तोले मिलाय मंदाग्नि से पकाइ मालिशकरनेसे छाती पीठ कमर जांघ संधि टकना इन्होंकी पीड़ा व वायुको आढ़यवायु को गृध्रसी को महावातको सर्वांगवात को दंडापतानकको कर्णनादको सून्यवात को नाशकरै जैसेबनमें सिंहसेमृगादिक डरभाजतेहैं तैसे औरघोड़ा हाथी पशु इन्होंका विषयक चोटको भी यह महाविष गर्भतेलहरै नरकीभी व पशुकीभी संशयनहींहै॥प्रसारिणीतेल ॥ ४०० तोला खीप कापंचागलेइ इसका सतकाढ़ितिसमें दही २५६ तोला खाटीकांजी ५१२ तोला शुंठि २० तोला रासना ८तोला खीप ८ तोला इन्होंका चूर्णमिलायसहज २ कोमलअग्निसे पकाइ और कोइककेमतमें मीठा तेलकोमिलावै व नहीं मिलावै पीछे इसकोमालिशमें व नस्यकर्म में बरतनेसे एकांगवात सर्वांगवात अपस्मार उन्माद विद्रधि मंदाग्नि त्वचागत वायु नाड़ी संधिगत वायु हाड़की संधिकेवायु वीर्यरजगतवायु सबवात इन्होंको नाशकरै और इसकी मालिश घोड़ा हाथी

मनुष्यइन्होंके वायुकोभी हरै इसमें संशयनहीं। और इन्द्रियोंकोज-
गावै और बंध्याकेसंतानको उपजावै और बूढ़ाबालकस्त्री राजाइन्हों
का हितकरै और इसतेलकोपीनेसे पांगुला व कुबड़ा अच्छाहोवै॥ना-
रायणतेल॥ बेलपत्र अरणी सहोंजना पाडल नींबकीछालखीप अस-
गन्ध दोनों कटैली बलिया बड़ाबलिया सांठीये प्रत्येक ४० तोलेलेइ
इन्होंको ४०९६तोले पानी में सिझाइ चतुर्थांशकाढ़ारक्खै पीछेतैल
भरा पात्रमेंगेरै पीछे सौंफ देवदारु जटामांसी शिलाजीत वच चंदन
तगर कूट इलायचीशालपर्णी पृष्ठिपर्णी रानमूंगरानउड़द दालचीनी
तमालपत्रनागकेशर रास्नाअसगन्धसेंधानोन सपेदसांठी येप्रत्येक
आठआठ तोलेलेइ चूर्णकरिडाले पीछे शतावरीरस तैलके समान
डालै पीछे गौकादूध अथवा बकरीका दूधचौगुना मिलाय तैलको
तय्यारकरि इसको पीनेमें व वस्तिकर्ममें व मालिशमेंव भोजनके
संग वनस्यकर्ममें बरतनेसे घोड़ा हाथी पांगला नरबातभग्न हाथ
टूटापैर टूटा इन्होंको अच्छाकरै और गुदाके बायोंको व नीचरल।
अंगके बायोंको व नाड़ीके बायोंको व दंतशूलको व हनुस्तम्भकोव
कंधास्तम्भ को व अपतंत्रको व एकांगग्रहणको व सर्वांगग्रहणको
व इन्द्रिय के क्षीणताको व वीर्य नष्टको व ज्वरक्षीणको व लालजि
ह्वको व स्वरभंगको व अल्पबुद्धिको व अल्पसंतानको व बंध्या
स्त्री को व अंडबातको व अंत्रवृद्धिको यह नारायणतेल सुखदेवै॥
दूसराप्रकार॥ असगंध वलिया बेलपत्र जड़ पाढ़ाजड़ दोनोंकटैली
गोखरू गंगेरण नींब सहोंजना सांठी खीप अरणी ये सबचालीस
चालीसतोलेलेइइन्होंको चारद्रोणपानीमेंपकाइ चतुर्थांशकाढ़ारक्खै
इसमेंमीठातेल २५६ तोलेशतावरीरस २५६ तोलेगौकादूध १०२४
तोले कूट इलायची लालचन्दन मूर्वावच जटामांसीसेंधानोनअस-
गंध वलिया रास्ना सौंफ देवदारु शालपर्णी पृष्ठपर्णी रानमूंग रान
उड़दतगरयेसबआठआठतोले लेइकल्कबनाइपात्रमें डालैइन्हों में
तेलको सिद्धकरि नस्यमें वमालिशमें वपीनेमेंव वस्तिकर्ममें वर्त्तनेसे
पक्षघातका व हनुस्तंभकोव मन्यास्तंभको व गलग्रहको व खल्लीवात
को व बधिरपनाकोव गतिभंगको व गात्र इन्द्रियइन्होंका शोष व नाश

कों व लोहूवीर्यज्वर इन्होंके क्षीणताको व अंडबृद्धिको व कुरंडको व दंत रोगको व शिरोग्रहको व पसली शूलको व पंगुलापनको व बुद्धिहानि को गृध्रसीको व अनेक प्रकारके बातरोगोंको व सर्वांग बातोंको हरै और इसके प्रभावसे बंध्याके पुत्रहोवै और इसकी मालिशसे मनुष्य घोड़ा हाथी इन्होंको सुखउपजे जैसेनारायण दुष्टदैत्योंका नाशकरै तैसे यह नारायणतेल बात व्याधिसंबंध रोगमात्रोंको नाशकरै और यह बहुत उत्तमहै ॥ शतावरीतैल ॥ शतावरी बलियाजड़ मोटीबलिया जड़ शालपर्णी पृष्ठिपर्णी एरंडजड़ असगंध गोखुरू बेलजड़ कास कुरंठा येसब छह्छहतोले लेइ द्रव्यसे चौगुणापानीमें पकाइ चतुर्थांश बाकीरक्खे पीछेतेल ६४तोलेगौकादूध६४तोलेशतावरीरस६४तोले पानी ६४ तोले शतावरी देवदारु जटामांसी तगर सपेदचंदन सौंफ बलियाजड़ कूट इलायची शिलाजीत कमल ऋद्धि व बाराहीकंद मेदा व मुलहठी मोहाकीछाल काकोली व असगंध जीवक ये सबतोला तोला भरलेइ कल्ककरिडालै और अरंडीतेलचौगुणा मिलाइ तेलको सिद्धकरै गौके गोसोंकी अग्निसे पीछे इसको वर्त्तने से स्त्रीसंगमें बल बढ़ै और नारीपुत्रको उपजावै और योनिशूल अंगशूल शिरशूल कामला पांडु बिष दोष गृध्रसी तिल्लीका शोष प्रमेह दंडापतानक दाह बातरक्त पित्तबात प्रदर आध्मान रक्तपित्त इन्होंकोहरै यह अत्रिगोत्रक कृष्णवैद्यकोकहाहै ॥ माषतैल ॥ उड़द ६४ तोले पानी २५६तोला मेंपकाइ चतुर्थांश रक्खै तिसमें चौगुणा दूधमिलाइ ६४ तोले मीठा तेल जीवनीय गणोक्त औषधोंका कल्क सौंफ सेंधानोन रास्ना कौंचबीज मुलहठी बलिया शुंठि मिरच पीपल गोखुरू येसब तोलातोला भरलेइ कल्ककरि मिलाइ तेलको सिद्धकरि वर्त्तनेसे पक्षाघात अर्दित बायु कर्णशूल बधिरपन तिमिररोग सन्निपातज रोग हस्तकंप शिरःकंप बाहुशोष अवबाहुक कलापखंजको हरै इसतेलको पान मालिश बस्तिकर्म इन्होंमें वर्त्तै ॥ चौथाबिषगर्भतैल ॥ कालेतिलोंकातेल सिरसम तेल अरंडीतेल ये १ द्रोण भरलेइ लोहाके पात्र में घालै पीछे धतूरा कनेर आक कलहारी कूट थोहर बकायन निशोत जैपाल देवडांगरी खींप मालकांगनी सहोंजना केतकी सांठी कुलथी उड़द कपास

काबिंदोला येसब आठआठ तोलेलेइ डाले पीछे भंगरारस १२८तोले लाखरस १२८ तोले बकरामांस १२८ तोला शणकेबीज १२८ तोला व्याघ्रचरबी१२८ तोले बराहकीचरबी १२८ तोले गीदड़की चरबी १२८ तोले मीठातेलिया ३२ तोले मंजीठ १२८ तोले शुंठि मिरच पीपल हड़ बहेड़ा आमला कूट रास्ना जटामांसी कचूर वच चीता देवदारु बकुची इन्द्रयव गिलोय बायबिड़ंग पित्तपापड़ा नागर मोथा पीपली पिपलामूल चाब चीता शुंठि आजमान अमलतास खैरसार महुआछाल मुलहठी अजमोद तगर सेंधानोन लालचंदन हल्दी दारुहल्दी मोम दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर सपेदचंदन येसब आठआठ तोलेलेइ पूर्वोक्तमेंडालि तेलकोसिद्धकरै पीछे लोहभस्म अभ्रकभस्म रांगभस्म सेंधा हीराकसीस मैनशिल शिंगरफ कालाअगर जवादा शिलाजीत गेहूँ केशर कस्तूरी येसब सिद्धतेलमें सुगन्ध वास्तेडालि इसको बर्त्तने से ८० प्रकारके बायु आमबात कफबातबिकार कटि गोड़ा जांघ पिंडी इन्होंमें गतवायु गृध्रसी हनुस्तंभ मन्यास्तंभ कंप पक्षाघात पंगुबायु अवबाहुक इन्होंको नाशकरै॥ लघुनारायणतेल ॥ इलायची बलिया तगर लालचन्दन दारुहल्दी कड़ंभा दगड़फूल कूट मूर्वा बायबर्णा इन्हों का काढ़ा मीठातेल दूध मिलाय सिद्धकरि पीछे शतावरीरस मिलाय मालिश करने से बायुकोहरै॥ शतावरी नारायणतेल ॥ शतावरी शालपर्णीपृष्ठ पर्णी कचूर बलिया एरंडजड़ दोनोंकटेली करंजुवा कासकीजड़ कुरंट जड़ येसब चालीस चालीस तोलेलेवे इन्होंको १०२४ एकहजार चौबीसतोले पानीमेंपकाय चतुर्थांश बाकीरक्खै पीछेसांठीबच दारुहल्दी शतावरी चन्दन कालाअगर शिलाजीत तगर कूट छोटी इलायची जटामांसी तुलसी बलिया असगंध सेंधानोन रास्ना मंजीठ नागरमोथा गठोना पित्तपापड़ाये दो२तोलेलेय पीछे गौकादूध १२८ तोले बकरीकादूध १२८ तोले शतावरीरस६४तोले तिलकातेल६४ तोले सारीमेंमिलाय तेलको सिद्धकरि पीछे कछुकशीतलहोनेपरलौंग नख राकोल बायबिड़ंग जीरा दालचीनी कुटकी कपूर मैनशिल करंडु केसो कस्तूरी इन्होंकाचूर्ण तेलमें बुरकाय वर्त्तै इसको मालिश करने

से वायुसे पीड़ित घोड़े मनुष्य हाथी अच्छेहोवें और सबबात विकारों कोहरै और इसके पीनेसे शरीर दृढ़होय और इसके प्रातपसे खिकच भी गर्भकोधारणकरै और स्त्रीका तो क्या कहनाहै और इससे हियशूल पसलीशूल आधाशीशी अपची गंडमाला बातरक्त हनुग्रह कामला अस्मरी पांडुउन्माद इन्होंको नाशकरै यह जगत्पर कृपाकरि नारायणने कहाहै इसवास्ते इसका नाम नारायणहै॥ दूसरा॥ शतावरी तेल कूट दारुहल्दी इलायची राल तगर दालचीनी तमालपत्र पित्तपापड़ा नख जटामांसी मालकांगनी बाला चन्दन बच शिलाजीत मंजीठ देवदारु रोहिषतृण अगर नागबला रास्ना असगन्ध शतावरी सांठी सौंफ सेंधानोन इन्हों का कल्क बनाय गौका दूध शतावरीरस तिलोंका तेल इन्होंको मिलाय तेलकोसिद्धकरि वर्त्तनेसे बातरोग शांतहो यहतेल वैद्यों का मान्याहुआ है॥ दशमूलादि तेल॥ दशमूलके काढ़ा में बराबर का दूधमिलाय पीछे बलिया नागरमोथा तालीसपत्र इलायची चन्दन दारुहल्दी कांगनी बाला मंजीठ लाख कूट बच तगर इन्हों के कल्कमें मीठातेल मिलाय तेलकोसिद्ध करि बर्त्तनेसे बलधातु कांति रुचि अग्नि इन्होंको बढ़ावै और बायु रोगको हरै और राजा बूढ़ा बालक स्त्री इन्होंको सुखदेय॥ तीसरा प्रसारिणीतेल॥ खींपका पंचांग ३०० तोले व लज्जावन्तीका पंचांग १,२०० तोले शतावरी ४०० तोले असगन्ध ४०० तोले केतकी ४०० तोले दशमूल ४०० बलियाजड़ ४०० पीयाबासा ४०० तोले अो पानी १०२४०० तोलेमें पकाय १०२४ तोले काढ़ाबाकीरक्खै पीछे २०४८ तोले कांजी मिलावै दहीका पानी १०२४ दूध १०२४ तोले सफेद ईखका रस १०२४ बकराका मांस १०२४ तिलोंका तेल १०२४ तोले भिलावां तगर शुंठि पीपल चीता कचूर बच लज्जावंती मूर्वा पीपलामूल देवदारु शतावरी इलायची दालचीनी बाला केशर कस्तूरी मंजीठ भिलावां नख अगर कुंदरू हल्दी लौंग रोहिषतृण चन्दन कंकोल नीली नागरमोथा दारुहल्दी कूट तमालपत्र कचूर पित्तपापड़ा सरल कालाअगर पद्मकेशर मालकांगनी बाला जीवक ऋषभक मेदा महामेदा काकोली शीर्षकाकोली रानमूंग

रानउड़द सफेदमूसली कालीमूसली बोल नागकेशर रसोत कुटकी जावित्री पुत्राड़ शाल्लकीरस ये सब वारा२ तोले लेय पीछे इन्होंका कल्क बनाय पूर्वोक्तमें मिलाय तेलमें सिद्धकरि मंदाग्निपर दृढ़पात्र में सिद्धकरके इसको छः प्रकार वर्त्तनेसे रोगियों को अच्छा है यह मालिश त्वचागत वायुको हरै पीनेसे कोष्ठगत वायुको हरै भोजन के संगलेनेसे सूक्ष्मनाड़ीगत वायुको हरै और नस्यलेनेसे ऊर्ध्वगत वायुको हरै बस्तिलेने से पक्वाश्रित वायुको हरै निरूह लेनेसे सर्व शरीरकी वायुको हरै यह बालकों को किशोर मनुष्यों के हाथियों को घोड़ोंको गौवोंको अमृत समानहै और इसतेलके सींचनेसे सूखे हुये वृक्ष फिर हरेहोके शाखा व फल लगैं और इसको पीनेसे बूढ़ा जवानहोय और बंध्या सन्तानको उत्पन्नकरै बिना पुत्रवाला पुरुष पीवै तो पुत्रको पैदाकरै और ८० प्रकार के वायुरोग ४० प्रकार के पित्तरोग और २० प्रकारके कफरोगों को व सन्निपातों को जल्दी नाशकरै और इसी तेल के प्रतापसे अन्धक वृष्णिकुलमें यादवों के पुत्रउत्पन्नभये हैं और इसके प्रारम्भमें विष्णुभगवान्‌के अर्थ बलि- दानकरै॥ चौथाप्रसारणीतेल॥ खींप व लज्जावन्तीके काढ़ा में गौका दूध तक्र दहीका पानी दही कांजी मीठातेल इन्हों को मिलाय पीछे शुंठि नागरमोथा बालाकूट जटामांसी शतावरी देवदारु कालावाला शिलाजीत रास्ना गुड़ सारिवा सेंधानोन बेलफल एरंडजड़ रानमूंग सांठी रुद्राक्ष मोचरस अमलतास मुलहठी सहँजना गिलोय दारु- हलदी हड़ करंजुवा मेदा हलदी त्रिफला चीता अरंडवीज इन्होंका कल्क मिलाय तेलको सिद्धकरि वर्तनेसे बातरोग पक्षाघात बातसम्ब- न्धी व्याधि अफारा हनुग्रह गृध्रसी बिश्वाची अपबाहुक शोष हीया व मस्तक रोग शुष्कबात अंगभंग प्रबल बातरोग इन्होंको हरै॥ पंच- म प्रसारणीतैल॥ खींप व लज्जावंती २५६ तोले १०२४ तोले पानी में काढ़ाकरि २५६ तोले बाकीरक्खै तेल २५६ तोले दही २५६ तोले कांजी २५६ तोले दूध ५१२ तोले और चीता पीपलामूल मुलहठी सेंधानोन बच सौंफ देवदारु रास्ना गजपीपली लज्जावंती की जड़ मिलावां जटामांसी इन्होंका कल्क मिलाय तेलको सिद्धकरि वर्तने

से बात कफरोग जावै और स्त्री पुरुष के ८० प्रकारके वायु जावें और कुब्ज स्तिमित पंगलापन गृध्रसी अर्दित ठोड़ी मंगर शिरगल इन्होंके स्तंभको हरै ॥ पंचमविषगर्भतैल ॥ मीठातेलिया पुष्करमूल कूट वच भारंगी शतावरि लहसुन शुंठि बायबिड़ंग देवदारु असगन्ध अजमोद मिरच पीपलामूल रास्ना लज्जावन्ती सहँजना की छाल गिलोय हंसपदी हड़ दशमूल निर्गुण्डी सौंफ पाढ़ा कौंच के बीज कडुंभा बड़ीसौंफ ये चार तोले लेय चौगुने पानी में पकाय चतुर्थांश बाकीरक्खै पीछे मीठातेलिया ४ तोले बारीक पीसि मीठे तेलको सिद्धकरि मालिशकरने से सब बातरोग संधिबात सन्निपात त्रिकग्रह पृष्ठग्रह कटिग्रह पक्षाघात अर्द्धाङ्ग गात्रकम्प कुब्जक धनुर्वात गृध्रसी अपतानक इन्होंकोहरै ॥ छठा विषगर्भतैल ॥ निर्गुण्डी रस ६४ तोले भङ्गरारस ६४ तोले धतूरारस ६४ तोले गोमूत्र६४ तोले वच कूट धतूराके बीज कांगनी कायफल ये दो २ तोले और इन सबों के बराबर मीठा तेलिया इन्हों में ६४ तोले मीठा तेल मिलाय सिद्धकरि मालिश करने से बातरोगों को हरै जैसे हेमन्तऋतुमें मृगाक्षी स्त्रीका आलिंगन जाड़ाकोहरै॥ दार्व्यादितैल ॥ देवदारु १ भाग कूट २ भाग पीपली ३ भाग रास्ना ४ भाग शुंठि५ भाग चीता ६ भाग कटैली ७ भाग गूगल ८ भाग इन्हों के काढ़ा में केलाकारस दूध मिलाय तेलको सिद्धकरि मालिशकरनेसे सब अङ्गोंको पीड़ा देनेवाले बातरोगोंको दूरकरै॥ दशमूलतैल ॥ खंभारी अरणी बेलपत्रकी जड़ सहँजना पाढ़ा गोखुरू शालपर्णी दोनोंकटैली पृष्ठिपर्णी इन्हों के काढ़े व कल्क में तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे अनेकप्रकारके वायुरोग शांतहोवैं व अरंडजड़ निर्गुण्डीरस मुंडी सहँजनाकी जड़ शतावरि गडौंभा दोनोंकटैली लालअरंडकी जड़ ये दश २ तोले लेय काढ़ेमें तिलोंका तेल सिद्धकरि मालिश करने से हाड़ नसखाल व सब अङ्गोंके बायुको नाशकरै व मालकांगनी रानमेथी स्याहजीरा अजमान तिल इन्होंको बराबरले यन्त्र द्वारा तेलकढ़ाय तेलको शरीरमें मालिश करने से सब बातव्याधि शांतहोवैं॥ लघुमाषादितैल ॥ उड़द सेंधानोन बलिया जड़ दशमूल

हींग बच शतावरी शुंठि इन्होंमें तेलको सिद्धकरि मालिश करनेसे सब बायु शांतहोवे॥ विजयभैरवतैल॥ पारा गन्धक मनशिल हरताल ये समान भागलेय कांजी में खरल करे कल्क बनाय सूक्ष्मबस्त्र पे लेपकरि तिसकी बत्ती बनाय तेलमें भिगोय ऊपरला भागमें प्राप्त करे और बत्तीके नीचे पात्ररख तिसमें जो तेलपड़े तिसकीमालिश से व खानेसे बातरोगों को व बाहुकम्प को व शिरकम्प जंघाकम्प एकांग बात को हरै इसमें द्रब्यसे चौगुने मीठे तेलमें बातीको भिगोवे॥ प्रसारणीतैल॥ शरद्ऋतुमें खींप व लज्जावंतीका पंचांग ४०० तोलेलेवे महाबला ४०० तोले शतावरि ८०० तोले बालियाजड़ ४०० तोले असगन्ध ४०० तोले कौंचकेबीज ४०० तोले केतकी ४०० तोले इन्होंको चारद्रोण भर पानीमें पकाय काढ़ाकरे पीछे तिलोंकातेल २५६ तोला मांसकारस २५६ तोला दही २५६ तोला दूध २५६ तोला और तगर कूट मैनफल नागकेशर नागरमोथा बच रास्ना सेंधानोन पीपली जटामांसी मंजीठ मुलहठी जीवक ऋषभक मेदा महामेदा सौंफ थोहर शुंठि देवदारु काकोली क्षीरकाकोली बलिया भिलावां ये सब दो २ तोले इन्होंका कल्क करि मिलाय मध्यम प्रकारसे तेलको सिद्धकरि पीनेमें व बस्तिकर्म म व मालिशमें व भोजनकेसङ्ग वर्त्तनेसे बायुके बिकारोंको हरै और कुब्ज बायुको पंगुबायुको शुष्कबायुको टूटीसन्धि हाड़को धनुर्बात को अच्छा करै और बातरक्त रोगीको व बायु करके नष्टचित्तवाले को स्त्री सङ्गसे नष्टबीर्य वाले को यह बाजीकरण उत्तम है॥ व्याघ्रतैल॥ भगेरा या सिंह का मस्तक व शिरकोलेइ कूटिकरि पानी में बहुत पकाय चौथाहिस्सा रक्खै पीछे पानी से आधातेल और गौ का दूध बकरीकादूध मदिरा कांजी मस्तु ये तैलके समान भागलेइ मिलाय पकाइ देवदारु बच कूट तगर चन्दन नागरमोथा मंजीठ पोहकरमूल रास्ना दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर सेंधा नोन पीपल मिरच शुंठि जटामांसी पियावासा बाला असगन्ध कौंचकेबीज चीता बंशलोचन शतावरि गाखुरू केतकी मूर्वा मुलहठी गेरू जायफल लौंग जावित्री कुटकी पीपलामूल संफेद अतीस सौंफ

सांठी जीवनीयगणोक्त औषध रालेबोल नागकेशर अगर काला नख मीठातेलिया इन्होंका कल्कबनाइ तेलसे चतुर्थांशघाले पीछेमन्दाग्निपर पकाइ मालिश करने व वर्त्तनेसे ८० प्रकारके बायु रोगोंको व बुढ़ापाको व घोड़ोंकी बायुको व हाथियोंके शोषको नाशकरै और बलवीर्य तुष्टि पुष्टि मेधा अग्नि इन्होंको बढ़ावे और श्रुतिभ्रंशको व खंजबातको व क्रोष्टुशीर्षको व कटिग्रहको व मन्यास्तंभको व हनुस्तंभको व मेदबातको हरै और बंध्यास्त्रीके पुत्रको उपजावे और नपुंसकों के कामदेव पैदाकरै यह अश्विनीकुमारों ने कहा है और इसीतरह मृत्ताक्षैका तैलभी सिद्धकरे ॥ महाबलातैल ॥ बलियाकी जड़काकाढ़ा दशमूलका काढ़ा यव गेहूँ कुलथी इन्होंका काढ़ा दूध ये सब आठ आठ भागलेइ पीछे तैल मधुरगणोक्त औषध सेंधानोन ये मिलाइ तगर राल सरलवृक्ष देवदारु मंजीठ चन्दन कूट इलायची बेर कालासहोंजना हड़ आमला जटामांसी शिलाजीत तमालपत्र तगर सारिवा बच शतावरि असगन्ध सौंफ सांठी इन्होंका कल्क मिलाइ तैलको पकाइ उतार ठण्ढा होनेपर सोनाके व चांदी के व माटीके बरतन में घालि बरतनको ढकि एकान्त स्थानमें रखदेवै यह बला तैल विख्यातहै बातके सब विकारोंकोहरैहै और बलबिचारि इस तैलकी मात्रासूतिकाके वास्ते देनेसे सुखउपजै और गर्भचाहनेवालीस्त्री व क्षीणवीर्य्य पुरुष क्षयी छर्दिवाला मर्मदुखनेवाला मर्महतवाला टूटाहाड़वाला टूटीसन्धिवाला इसको सेवनेसे सुखपावे और सब आक्षेपकादि बायुरोगोंको हरै और इससे धातुपुष्टहोवै व फिर जवानी आवै यह तैल राजा व राजमन्त्रीके वास्तेहै हमेशेको ॥ दूसराशतावरितैल ॥ शतावरिरस ६४ तोला मीठातैल ६४ तोला दूध ६४ तोला बरणा ४ तोला सहोंजना ४ तोला देवदारु ४ तोला शिलाजीत ४ तोला जटामांसी ४ तोला इन्होंका कल्कमिलाइ तैलको सिद्धकरि वर्त्तैं इसको नारायणतैल कहते हैं इसकी मालिशसे अनेक प्रकारकी बात व्याधि शान्त होवै ॥ तीसराप्रकार ॥ दूध १२८ तोला मीठा तैल ६४ तोला शतावरि रस ६४ तोला बच कूट चन्दन देवदारु कावली घण्टोली रास्ना मंजीठ इलायची रुदंती शि-

लाजीत असगन्ध जटामांसी बलिया ये दोदोतोलेलेय कल्ककरि मिलाय तैलको सिद्धकरि वर्तनेसे एकांग बात सर्बांगबात टूटेहाड़ टूटीसंधि तृषा कुब्जबात बामनाबात पंगलाबात इन्हों को व सबबातों को यह शतावरितैल मालिशसे दूरकरै ॥ चौथाप्रकार ॥ शतावरिकी जड़का यन्त्रसे काढ़ारसलेय तिसमें तिलोंकातैल २५६ तोला दही २५६ तोला दूध २५६ तोला सौंफ बच कूट जटामांसी शिलाजीत चन्दन मालकांगनी पद्माख नागरमोथा बाला कालाबाला कायफल सेंधानोन मुलहठी लोध कलहारी लालचन्दन मूषाकर्णी इलायची मुरा लज्जावंती कमलकी नाल पद्मकेशर बिशेषधूप राल जीवकऋषभक कचूर पतङ्ग पित्तपापड़ा दारुहल्दीकचूर सारिवा मंजीठ मुलहठी ये सब चार चार तोले लेइ कल्कबनाय मिलाय तैलको सिद्धकरि मध्यम प्रकारसे पीछे इसको मालिशमें व नस्यमें व पान में व भोजनमें व वस्तिमें बर्त्तनेसे बायुकीपीड़ा पक्षाघात अधिमंथ अर्दित कर्णशूल ऊरुस्तंभ कटिग्रह कम्पबायुसूतिकारोग मन्यास्तंभ धनुर्बात कंपबायु अस्थिभङ्ग सर्बांगबात धातुशुष्क कारक बायु धातुशोष स्त्रीकेकपड़ेबन्ध में बीर्य क्षीणबन्ध्या गाभिणी इन्होंकोसुख उपजे और बीर्य्यबल आरोग्य इन्होंको बढ़ावे यहशतावरी तेल सब बातबिकारोंको दूरकरै ॥ चन्दनादितैल ॥ चन्दन पद्माख कूट बाला देवदारु नागकेशर तमालपत्र इलायची दालचीनी जटामांसी तगर बाला जायफल घंटाफल केशर जावित्री नख गूगल कस्तूरी अजमान दगड़फूल अदरख रङ्ग पतङ्ग पोहकरमूल नागरमोथा लाल चन्दन सारिवा कचूर कपूर मंजीठ लाख मुलहठी कुटकी सौंफ शतावरी मूर्वा असगन्ध शुंठि कमलकेशर बिशेषधूप पाठाजड़ कालाअगर पित्तपापड़ा सफ़ेदलज्जावंती लौंग कंकोल येसबदोदो तोलेलेय दशमूलकाकाढ़ा६ भागलेयदूध६ भागयवबेरकुलथी बलियाजड़एक एकभाग लेय चौदाभागमीठातेल इन्होंको मिलायतेलको सिद्धकरि पकै तब जल्दीउतार पाहिले सुगन्धितधूपसे अच्छे बर्तनमें धूपदेय पीछे तेल कोरक्खैयह चन्दनादि तेलकुमार अवस्थावालेको धनवान् को सुखीको स्त्रियोंको गर्भ की इच्छाकरनेवाली स्त्रियोंको सुखदेवै है

और ८० प्रकारके बायरोग बातरक्त सूतिकारोग बालकोंके रोग मर्म रोग हाड़टूटना धातुक्षयइन्होंको हरै और जीर्णज्वर दाहज्वर शीत ज्वर बिषमज्वर शोक अपस्मार कुष्ठरोग बंध्यारोग बातव्याधिमात्र कंडुरोगखाजरोग इन्होंको हरै और रूखीदेहवालेको व श्वित्री कुष्ठ वालेको बहुतदिन मालिश करनेसेकांति लावण्यपुष्टि इन्होंकोबढ़ावै है और इसकेसेवनसे कन्धा कण्ठके बीचमें रोग न उपजै और बुढ़ापा नहीं आवै और ये चन्दनादि तेल संसारके कल्याणके वास्ते बड़ेमुनि आत्रेयजी महाराजने कहाहै ॥ माषादितैल ॥ उड़द १२८ तोले दशमूल २०० तोले बकराकामांस १२० तोले इन्होंको एक द्रोणभर पानीमें पकाय चतुर्थांश बाकी रक्खै पीछे तिलों का तेल १२८ तोले दूध २५६ तोले जीवनीय गणोक्त ओषधें मंजीठ चाब चीता कायफल शुंठि मिरच पिपली पीपलामूल रास्ना आमला गोखुरू कौंच अरंडजड़ शतावरि सेंधा खारीनोन कालानोन देवदारु गिलोय कूट असगन्ध बच कचूर येसब एकएक तोलालेय कल्ककरि पूर्वोक्तमें मिलाय मंदाग्निसे तैयारकरै इसकी मालिशसे पक्षाघात अर्दित हनुस्तंभ कर्णशूल मस्तकशूल त्रिदोषका तिमिररोगहाथ पैर मस्तक कंधाकान इन्होंका बहरापनाकलापखंज पंगुवात गृध्रसीअपबाहुक वा सबप्रकारके बायुबिकारइन्होंको नाशकरै इसकोपीनेमें वस्तिकर्ममें मालिशमें नस्यकर्ममें व कर्णादिकोंकेघालनेमें वर्तै यहमाषादितैल पुराने मुनियोंनेकहाहै ॥ महानारायणतैल ॥ तिलोंकातेल १०२४तोलेलेइ बड़ पीपल आंब जामन पिलखन इन्होंके पत्तोंके कल्कसे तेलको शुद्धकरै पीछे गौकादूध व बकरीकादूध१०२४तोले शतावरीरस१०२४ तोले दशमूल बलिया रास्ना सहौंजना कमल सांठी निर्गुडी बड़ाबलिया छोटाबलिया खींप व लज्जावंतीअसगन्ध पीयाबांसाडाभकीजड़ करंजवा चन्दन लोध बच आसाणा पलसअर्जुन अरंडजड़ वरणा छोटारालबृक्ष बड़ारालबृक्ष सिरस ऊँगा बांसा जटामांसी बहेड़ा कचनार कैथा नींब चिरौंजी आलकी लकड़ी पाषाणभेद अम्लतासदूधी अनार गूलर सम्हला कुअरैकापट्ठादालचीनी मालती माधवी यवकासत्तू बेरकीगुठली कुलथी कौंच आक

त्रिदौला गिलोय थोहर केतकीकीजड़ धतूराकेबीज कलहारी पारसी पीपल चीता बकाण नींब पीपलवृक्ष बड़ पिलखन नांदरूखि जामन गोरख मुंडी टंकारी मूसली लाललज्जावंती बहेकलये सबचालीस २ तोले लेइ इन्होंसे आठ गुणे पानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांश बाकीरक्खे तिसमें तिलोंका तेल मिलाय पकावें फिर तिसमें बकरा मेढ़ा हिरण अरु सुन्दर नेत्रवाला मृग सावर शूसा सेह गादड़ी गोह सिंह भगेश रीछ बरहड़ा शूर गैंड़ा भैंसा घोड़ा बानर मोटानकुल बिलाव मूषा बड़ामींडक यानेभदि बतक तीतर लाव खंजरीट चकोर उरलू मोर बनकामुरगा गीध नीलटांच चकुवा कारंडव याने बड़ाकाक कबूतर सारस बन कुंजि परेवा और रोहित मद्गुर शिलिंद्र शृंगक इल्लिश गर्गर वर्म्मी कथिका कबिका इन्हीं प्रकारों की मछली बड़ीमछली शिशुमारमच्छ शांकुचीमच्छ मगरमच्छ घंटिकाकार इनके अभाव में जलगिंडोवा इन्हों में से जितने मिलैं उतनों का मांस लेवे १०२४ तोले काढ़ाकरि तेल में मिलावे पीछे रास्ना आसगन्ध सौंफ दारुहल्दी कूट शालिपर्णी पृष्ठिपर्णी मुद्गपर्णी माषपर्णी कालाअगर केशर सेंधानोन जटामासी हल्दी दारुहल्दी शिलाजीत पोहकरमूल चन्दन इलायची मुलहठी तगर नागरमोथा तमालपत्र भंगरा जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीरकाकोली बच कचूर सांठी मूर्वा दालचीनी कायफल गठौना पद्माख कमल की नाल जायफल केतकी नागदमनी एकांगी मुरा शरल वृक्ष गिलोय बाला धमासा कौंचके बीज नख बकायन नागरमोथा अर्जुन चिरायता बादाम खजूर चिरफल धव के फूल पीपलामूल पित्तपापड़ा परवल कल्हारकमल अरणी बनप्सा लज्जावंती इन्द्रयव रसौंत किकरौली के बीज बरणा दाख पीपली द्रोणी सांठी पित्तपापड़ा बायबिड़ंग कनेर निशोथ नीलाकमल पद्माख मेथी केलाकंद चीता गोखुरू तालमखाना कंकोल दारुहल्दी कसुंभा के फूल अगर शिलाजीत मोम लौंग कपूर कस्तूरी बालाअंबर ये सब दोदो तोले लेइ कल्क बनाय तेलको सिद्धकरे और शुभ नक्षत्र शुभलग्न शुभमुहूर्त्तमें ब्राह्मणों को और वैद्यराजोंको प्रसन्न

करि श्रीनारायण का और महादेवजीका पूजन कर सोना के व चांदी के व तांबा के व लोहाके पात्र में घालि रक्खै पीछे इस को मालिशमें अंजनमें नस्यमें निरूहवस्ति में स्नानमें पीनेमें खाने में जैसारोग देखै तैसे बरते बहुत कहना करके क्याहै इस तेलकी योजना करनेसे ८० प्रकार की बातव्याधि दूरहोवे और बुढ़ापाजावै और शरीर में बल न पड़े सफेद बाल कालेहोजायँ नेत्रोंका तेज गरुड़की तुल्य होजाय और ऊंचा सुनने को बहिरापनेको कर्णनादको हाथकम्पको शिर कम्पको प्रलापको बुद्धि भ्रंशको नाशकरै और इस के सेवनसे मनुष्यके शरीर में धातुबढ़े जैसे जलके सेवनसे वृक्षके डाली पत्तेबढ़ें तैसे और जिस स्त्री का कच्चागर्भ गिरपड़े व प्रसूतवालीको व पैरावाली को व घनीसंतान होने से क्षीण होगई हो तिस को यह तेल सेवन अच्छाहै और इसके सेवनसे वंध्याके पुत्रहो और गर्भपात होवे नहीं और योनिरोग प्रदररोग शांतहोवै और इसतेल से उत्तम संसारमें औषधनहीं है बलबीर्यको बढ़ावैहै और पुष्टकरै है और यह बड़ा रसायन है पहिले देवता और राक्षसोंके युद्धमेंबलवान् दैत्योंने देवताओंकी हाड़संधि शरीर तोड़दिये मोड़ बींधदिये ऐसे दुःखित देवतोंको देखकर देवोंके और मनुष्योंके सुखके वास्ते महानारायण तेलकहाहै ॥ दूसराप्रकार ॥ बलियाजड़ असगन्ध बड़ी कटैली गोखुरू सहिंजना नींब बड़ाबलियार कटैली कांटिला गंगेरन अरणी रास्ना कौंचकेबीज निर्गुण्डी अरंडजड़ पियाबासा स्याह जीरा लज्जावंती पाढ़ा इन्होंकीजड़को कूटि८१९२तोलेपानीमेंपकाय चतुर्थांशकाढ़ारक्खै मीठातेल ५१२ तोले गौकादूध व बकरीकादूध ५१२ तोलेशतावरीरस ५१२ तोले इन्होंकोमिलाय कपड़ासेछानि पीछे रास्ना असगन्ध सौंफ दारुहल्दी कूट शालिपर्णी शिलाजीत कालाअगर नागकेशर सेंधानोन जटामासी हल्दी दारुहल्दीदगड़ फूल पुष्करमूल चन्दन इलायची मुलहठी तगर बाला तमालपत्र भँगरा जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि २ वृद्धि काकोली क्षीर काकोली जांटी ढांक सांठी एलवालुक कचूर मूर्वा दालचीनी कमल की नाल पद्माख कमलकन्द जायफल केतकी नागदमणी देवदारु

शरलवृक्ष मदिरा जीवंतीशाक चन्दन पीतबाला धमासा कौंचके बीज नख बकाण ताड़केमस्तकका गाभा चिरायता खजूर नागरमोथा ये सब छह छहतोले लेइ तगर ८ तोले मजीठ ८ तोले इन्हों का कल्क करि मिलावै फेर हिरण कुरङ्ग सुन्दर नेत्रवालामृग मोर गोह सूसा शाका चकुवा बतक लावा सारस क्रौंच बगुला टिटाटबली कंबुबर्ण अनूपदेशके कछुवे मोटेरोहित शवनेत्र कसआढ्य मुद्गर शृङ्गिकापाठीन कालियक तोड़िक इत्यादिक जलकीमछली व ऊषर जमीन की मछली और शिशुमार कुरुदादिकमच्छ जलचरजीव बिलमेंरहनेवाले सर्पादिक आकाशके फिरनेवालेपक्षीइन्होंमेंसेयथा योग्यलेइ मांसकारस पूर्वोक्तमें मिलाय तेलको सिद्धकरि सुन्दर मुहूर्त्त सुन्दर नक्षत्र सुन्दरलग्नमें ब्राह्मण व वैद्योंको प्रसन्नकरि तांबे के पात्रमें पहले कपूर कस्तूरी केसर इन्होंकी धूपदेइ ग्लानि व दुर्गन्धि दूरकरनेके वास्तेसुन्दरभोजनके सङ्ग यज्ञघृतकेसमान पीनेमें नस्यमें निरूहणवास्तिमें भोजनमें मालिशमेंबर्तनेसे उन्माद शोकक्षत रक्तपित्त श्वास भ्रम मूर्च्छा खांसी अग्निबात ठोड़ीकीजड़ में दांत की जड़में कृमि शरीरकीपीड़ा दाह तालुशूल नेत्रशूल कर्णशूल बहिरापना ज्वरकी पीड़ा इन्द्रियोंकी मन्दता मन्दाग्नि धातुक्षय खाज कटिग्रह अपस्मार गृध्रसी अर्द्धांगबायु हस्ताभिघात पादाभिघात मस्तकशूल माड़ापना प्रमेह नाककानके विकार सबबातव्याधिभूतोन्माद कृत्योन्माद ग्रंथिबिकार सद्योव्रण अस्थिभंग नाड़ीव्रणइन्हीं कोनाशै और शरीरका वर्ण सोनाकेसमान उपजावै और बन्ध्यपुरुष व बन्ध्यानारी इसकी मालिशसे अच्छापुत्रको उपजावै और ग्रीष्म ऋतुके घामसेजला वकठा वृक्ष सींचनेसे फिर हराहोय और ऐसा कोई रोग नहीं है कि इसकी मालिश से नहीं जावै यह नारायण तेल श्रीनारायण ने अपनी जबान से कहा है॥ जम्बुकादि तैल॥

बूढ़ेगीदड़को लेइ पैर पेट मध्यभागकी आंतोंको त्यागे काटि अन्य अङ्गोंकोकूटि चौगुनेपानीमें काढ़ाकरि चतुर्थांशपानीरक्खै औरइसी के समान मीठातेल मिलावै और पीछे बकराके रोम मूँड़ि सींग शिरको बर्जिके अन्य शरीरकोलेइ और मुरगाके मांसकीआंतोंको

दो द्रोणभर पानीमें पकाय चतुर्थांश बाकीरक्खे इनदोनों जीवों के मांसोंके काढ़े अलग २ बनवावे और तेलके समान शतावरीरस व दूध बकरीदूध मस्तु उत्तममदिरा येसब तेलके समानलेइऔरशालि-पर्णी पृष्ठिपर्णी बलिया लघुशतावरी एरंडजड़ बड़ीकटैलीजड़ काश जड़ पियाबासाजड़ करंजवाजड़ खीप व लज्जावंती असगन्धताड़ जड़ सांठी रास्ना गोखुरू पाढ़ा पाटला नींब आक इन्होंकीजड़ बड़ी दंती कटभी कचनार नागकेशर ऊंगा अकोड बेलजड़ सहोंजना नागरमोथा करंज बासा धमासा परवल निर्गुण्डी मुंडी तूंबी कलिहारी सहोंजना पील खजूर कटैली चिरमठीकीजड़ भिदारा गिलोय शङ्ख-पुष्पी भङ्गरा कुद बड़ कूड़ावाला मैनफल कोंच थोहर बकाएण गडूंभा शिरस मैनशिल येसब चारचार तोलेलेय काढ़ाचतुर्थांश बनाइ तेल समान मिलावै पीछेचन्दन देवदारु कूट जटामासी सांठी करंजवा रास्ना निशोथ पित्तपापड़ा सहोंजना गूगल दालचीनी इलायची त-मालपत्र नागकेशर मजीठ हल्दी दारुहल्दी नागरमोथा धौंकेफूल प-तङ्ग जवाखार सुहागाखार बच इलायची शिलाजीत शुंठि मिरचपीप लपांचोनोन येसब दोदोतोलेले कल्कबनाइमिलाइ तेलकोसिद्धकरि मंदअग्निसेपीछे सुगन्धवास्तेलौंग जायफल कस्तूरी कपूर शिलाजी-त नख बाला काला अगर तगर तमालपत्र जावित्रीइन्होंकोपीसि तेल में मिलावै पीछेइसको वर्तनेसे८० प्रकारके बातरोगजावें और सूजन शूल कटिशूल कुब्जबात खंजबात अधोभागगत बाय मस्तकशूल मन्यास्तम्भ हनुस्तंभ गलग्रह बातरोग एकांगबात अस्थिभङ्ग सं-धिभङ्ग पक्षाघात अर्दित हनुग्रह बहिराबात गुङ्गबात मिम्मिणबात कामला पांडु खल्लीबात शूल कटिग्रह हस्तकम्प शिरकम्प गात्रकम्प मस्तकशूल कलापखंज बातगृध्रसी अवबाहुक कर्णनाद दण्डापता-नक सूतिकाबात इन्होंको नाशकरै और बालक का मांस बढ़ै और जवानको बल बीर्य अग्निको बढ़ावे और अंत्रबृद्धि को व अण्डबृद्धि को व अपचीको नाशै और योनिदोषको व शूलको व लोहूके बिकार को व अफाराको व बातरक्तको हरै और बातग्रस्त घोड़ोंको व बात भग्न हाथियोंको व बातग्रस्त मनुष्योंको यहतेल रोगसे छुटावै और

सब बातबिकारोंको व हाड़के बायको व संधिवायको व बातक्षीण-
ताको व बवासीरको व भगन्दरको व भूतपीड़ा को व ग्रहपीड़ा को
व पिशाच पीड़ाको व दुष्टग्रह पीड़ाको व दादरोगको व विचर्चिका
को व पामको व कुष्ठको व खाजको व घावको नाशकरै यहशृगाला-
दि तैल बहुतसी पीड़ाकोहरैहै इसतेलसे सबरोग नाशहोवैं॥ तीसरा
माषादितैल॥ उड़दका काढ़ा६४ तोला बलियाका काढ़ा ६४ तोला
रास्नाकाकाढ़ा६४ तोला दशमूलकाकाढ़ा६४ तोलायवकाकाढ़ा६४
तोला बेरकीगुठलीका काढ़ा ६४ तोला कुलथीका काढ़ा ६४ तोला
बकराके मांस का रस ६४ तोला मीठातेल ६४ तोला दूध २५६
तोला रास्ना १ कौंच सेंधानोन शतावरी एरण्डजड़ नागरमोथा
जीवनीय गणोक्त औषध बलियार शुंठि मिरच पीपल ये सब एक १
तोलालेइ मिलाय तैलको सिद्धकरि बर्त्तनेसे हस्तकम्प शिर कम्प
बाहुकम्प अवबाहुक इन्होंको दूरकरै और इस तैलको वस्तिमें व
मालिशमें व नस्यकर्ममें बरतै यह माषादितैल कांधाके ऊपरवाले
भागके रोगोंको दूरकरै॥ रास्नापूतिकतैल॥ दशमूल बलिया दारु-
हल्दी असगन्ध शतावरी अरण्ड निर्गुणी अरणी ईषकी जड़ पिया-
बासा चीता करंजवा अङ्कोल मूली सांठी पीलु अर्कपुष्पी धमासा
जटामासी कुचला लाल अरण्ड लाल आक यवकेसत्तू बेरकी गु-
ठली कुलथी ये सब भागले और इन सबों के तुल्य रास्ना और
सबों के तुल्य करञ्जवा इन्होंका काढ़ा अष्टमांश बाकी रक्खै और
काढ़ा से चौथा हिस्सा मीठा तेल इतनाहीं बकरी का दूध गूगल
तगर जटामासी त्रिकुटा त्रिफला दालचीनी इलायची तमालपत्र
नागकेशर कचूर बायबिड़ंग देवदारु हींग रास्ना बच कुटकी पाढ़ा
मुलहठी चीता गहुला पिपलामूल चन्दन चाब अजमाइन लौंग
चमेली कूट मजीठ सौंफ शिरसम जायफल रोहिषतृण पाढ़ा बाला
इन्होंका चूर्ण तेलसे छठाहिस्सा लेइ कल्कबनाइ पूर्वोक्तमें मिलाय
सुन्दर मुहूर्त्त सुन्दर नक्षत्रमें तेलको छान पीछे पीनेमें व मालिश
में व शिरोवस्तिमें बर्त्तने से धनुर्बात अन्तरायाम गृध्रसी अपबा-
हुक आक्षेपक व्रणायाम विश्वाची अपतन्त्रक आढ्यबात हनु-

स्तम्भ नाड़ीबात अपतानक और भृकुटी शङ्खस्थान कान नाक नेत्र जीभ इन्होंका स्तम्भ दारुक कलापखञ्जता पंगुबात सर्वांग बात अर्दित पक्षाघात पादहर्ष सुप्तबात इन्होंको नाशकरै इसमें संशय नहीं है यह रास्ना पूतिकतेल आत्रेयजी महाराज ने रचा है॥ बला तेल ॥ बलिया जड़ आठ प्रस्थ लेइ तिसमें ३२ प्रस्थ पानी मिलाय पकाय चतुर्थांश बाकी रहै ऐसा काढ़ा लेय और दशमूल कुलथी यव बेरकीगिरी इन्होंके काढ़े भी बलिया के काढ़ेके समान जुदे २ लेवै और ये काढ़े सब आठ २ भागलेवै और तेल १ भाग गौकादूध ८ भाग जीवनीयगण में कही औषधें शतावरि मजीठ देवदारु कूट शिलाजीत तगर अगर सेंधानोन बच सांठी जटामासी सफ़ेदसारिवा कालीसारिवा तमालपत्र सौंफ असगन्ध इलायची इन्होंका चूर्ण तेलसे चौथा हिस्सा मिलाय तेलको सिद्ध करि वर्त्तनेसे गर्भ की इच्छा करने वाली स्त्रियों को व क्षीण बीर्य्य वाले पुरुषोंको व कसरतसे क्षीण अङ्गवाले पुरुषोंको व सूतिका स्त्रियों को यह तेल सुखउपजावे है और राजाको व सुखी पुरुष को यह तेल विशेष करके सुख उपजावै है॥ माषादि तैल ॥ उड़द यव अलसी कटैली केवांचकेबीज पियाबासा गोखुरू सहोंजना ये सब सत्ताईस २ तोले लेय इन्हों को चौगुने पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रक्खे बिंदोला बेर की गुठली शण के बीज कुलथी ये चौवन चौवनतोले लेय चौगुने पानीमें पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रक्खे पूर्वोक्त में मिलावै पीछे ६४ तोलेबकराके मांस को २५६ तोले पानीमें पकाय चतुर्थांश बाकीरक्खे पूर्वोक्तमें मिलावै और गिलोय कूट शुंठिरास्ना अरंड सांठी पिपली सौंफ बलियारखीप जटामासी कुटकी येसब दोदो तोलेलेय पूर्वोक्तमेंमिलाय तिलोंका तेल ६४ तोले मिलाय कोमलअग्निसे पकाय बर्तनेसे ग्रीवास्तम्भ अपबाहुक अर्द्धांगवायु आक्षेपकबायुउरुस्तम्भ अपतानक अंगुलियोंका कांपना शिरकाकांपना बिश्वाचीलकवाइन्होंको व सबबातविकारोंको यह माषादितेलहरै है॥ सुगन्ध तेल ॥ तगर अगर केतकी केशर कुन्दरू पालक शाकभेद लौंग दालचीनी कस्तूरी शरलवृक्ष

देवदारु इलायची नख नागकेशर कमलिनी बाला शिलाजीत रेणुका बरियार इन्होंके काढ़ामें तेल दूध मिलाय तेलको पकाय वर्तने से राजा स्त्री बूढ़ा बालक इन्होंको सुखदेवै और वात बिकारों को नाशकरै॥ एलादि तेल॥ इलायची तालीसपत्र शरलवृक्ष शिलाजीत देवदारु रेणुका खुरासानी अजमान चमेली नड़कुकरोदा हेमपुष्प बोल पीतलोद कमलकीदण्डी शरलद्रव पालक नख वाला लौंग कूट नागरमोथा कर्कट चन्दन बेलफल जायफल लाल सांठी केशर मूर्बा शिलाजीत पीलावाला इन्होंके चूर्णमें बलियार का काढ़ा दूध दही मिलाय तेलको मन्दाग्नि से पकाय वर्तने से वातरोग जावै और बल वर्ण अग्नि इन्होंको बढ़ावै॥ महालक्ष्मीनारायणतेल॥ शतावरी बेरकी गुठली मोगरा बड़ा बलियार अरण्ड हींगपत्री धतूरा कलिहारी रानमोगरा कूड़ा हेंदी पाढ़ा गर्दभशींगी मुलहठी बिजौरा चमेली जावित्री थोहर बलिया बायबिड़ंग पुआड़ सौंफ असगन्ध बाराहीकन्द वासनी लालअरण्ड धानियां नांदरुषी पतंग पीपली गंगेरन घंटालि अनार ऊंगा शालमली शम्भल निर्गुण्डी कडुवीतरोई कास पांगली कौंच भारंगी निशोथ जमालगोटा की जड़ अरणी कुसरी गूंदनी करन्दा कटेली काला कूड़ा जवासा रूखी अलसी बेत शाल मोटाशाल सफेद चिरमटी घोंटी गडुंभा मूर्बा पीपली कमलिनी रुदंती दशमूल इनसबोंकीजड़ लेइ अगस्त वृक्ष चन्दन ऊंगा भिलावां करंजवा सिंघाड़ा पुआड़ करेली गूलर इन्होंके बीजलेय आमला सहोंजना कीकर महुवावृक्ष हींगन नेपती कदम्ब अमलतास रक्तसार बड़बेरी टेमुरणी कचनार गूलर तापसी सफेद तापसी अंकोल बड़ा अंकोल सल्लीकीखैर भेडी बहेड़ासफेद खैर पीपल वृक्ष हड़ इनवृक्षों के पंचांग लेय और भिलावां पलस मेढ़ासींगी किहिनी नकछिकनी गेली कोकम्ब अर्जुन नींब थोहर कुआरकापट्ठा द्रोणपुष्पी कुम्भी लालअर्जुनवृक्ष बरण बावला अरंड मोखा इन्होंकी छाललेय और केला विदारीकन्द शतावरी आलुक्षीर कन्द असगन्ध मुञ्जसबेल बांझककोडी बाराहीकंद खजूर मूसलीकंद अमरकंद जमींकंद इन्होंके कन्दलेय और गिलोय बासा बेल रान

उड़द कांगनी मालकांगनी पित्तपापड़ा मेढ़ाबेल बासनवेली चिरमटी भँगरा मुण्डी निर्गुण्डी छोटीनिर्गुंडी परवलकरूपरवल उतरणी सूर्य्यमुखी इन्होंका पंचांग लेय चिरायता दबणीकाली गोकर्णी सफ़ेद गोकर्णी लज्जावंती खैर भांग कुआरकापट्ठा छोटीगंगावती बड़ी गंगावती भिदारा बिष्णुक्रांता सुगन्धा लंबा गरुड़बेल सहदेई गोपी छोटी बड़ीगोपी मोटीबलिया सारिवा मोटीहिरणखुरी हिरणबेल मालकांगनी मूर्बा नागदमनी महुआ इन्होंके पंचांग औरजड़लेय नागरमोथा भद्रमोथा आमकीगुठली औरअंकुर बड़काअंकुर शकरकंदीधवकेफूल मोरशिखा पीलीकेतकी इन्होंकेअंकुरलेइ अनारकौंचकौटी लोखण्डी मूल कैथ ये सबचार २ तोलेलेय ३ द्रोणभरपानीमें पकाय चतुर्थांशकाढ़ारक्खै तिलांका १९२ तोला जटामासी मजीठ कालाबाला देवदारु हल्दी दारुहल्दी दालचीनी चन्दन लौंग नागकेशर गूगल कायफल पतंग तगर बच कालाअगर असगंध कालानोन नख गोरोचन लालचन्दन तुरटीकूट बायबिड़ंग मुलहठी सेंधानोन देवदारु तालीसपत्र जायफल धनियां मलयागिरि चन्दन मीठा तेलिया कमलाक्ष जावित्री बाला कमल अजमान निंबोलीकीगिरी पद्मकेशर चीतारेणुका चाव बावची मुलहठी जवाखार सौंफ चिरफल पीपली कुटकीकचूर बाफली जीयापोता भिलावां धतूराकेबीज भंगरा निशोथ अमली गूगल जीरा राल रास्ना करकरा अनारकीछाल मुनक्का दाख कुरंड नींब धनियां धमासा ब्राह्मी शुंठि चिरायता तालमखाना गजपीपली अजमान अजमोद इन्द्रायण कौंचकी जड़ लोध छोटाकरेला मेंथी काकड़ाशींगी येसब एक एक तोलालेय बहुत बारीकपीसिसुन्दरपात्रमें घालि काढ़ाकरि गौका अथवा बकरीका दूध ३८४ तोले मिलाय शतावरी का रस ३८४ तोला लाखका काढ़ा ३८४ तोले इन्होंको मिलाय तांबा के पात्रमें तेलको पकाय सुगंधि करनेके वास्ते कपूर केशर गहुला कपूर कचरी जावित्री मोगरा गन्धकचूर चमेली इन्होंको मिलाय पीछे कांचकेपात्रको लोबानसे धूपितकर तिसमें तेलकोघालि राजाके मकानमें बैद्य धरावे इसको पीनेमें बस्तिकर्म में भोजनमें नस्यमें मालिशमें बर्तै इससे हाथी व

मनुष्यका बातरोगजावै और बाताष्ठीला गलग्रह हनुग्रह शिरोग्रह गृध्रसी पादशूल पक्षाघात कान नाक भृकुटी माथा इन्होंकेशूल उरुस्तंभअर्दित बधिरता एकांगरोग अपतानक मन्यास्तंभ त्रिकशूलहृदयशूल गूंगाबात आक्षेपकबात जिह्वास्तंभ गतिभंग कुब्जबातदंतशूल चूंचियोंकारोग गुल्म गुदा कमर पैर इन्होंकाभ्रंस खल्लीबात सुप्तीबात बिश्वाची वृषणबात धातुबातकंपबात व सबबातरोगोंकोहरै और बीर्य्यकोबढ़ावै औरजवानपनाकोप्राप्तकरै नपुंसकपनाकोनाशै और बुद्धि पुष्टि प्राण आयु इन्होंकोबढ़ावै और बंध्याकेपुत्रपैदाकरै और ज्वर क्षय दुर्भाग्यता इन्होंकोहरै यहतेलराजाजनोंके योग्यहै इसका नाम महालक्ष्मीनारायणतेलहै॥ रास्नादिघृत ॥ रास्ना पुष्करमूल सहोंजनाकी जड़ चीता सेंधानोन गोखरू पीपली इन्हों का कल्क बनाय इन्होंसे चौगुना दूधमें घृतको पकाय असगंधके चूर्ण केसंग खानेसे असाध्यबायुको व तीव्रधातुक्षयकोनाशकरै॥ पंचतिक्त घृत ॥ नींब गिलोय बासा परवल कटेलीये ४० चालीस२तोलेलेय इन्होंको १०२४ तोले पानीमें पकाय अष्टमांश बाकी रक्खै पीछे तिसमें घृत ६४ तोले और रास्ना बायबिड़ंग देवदारु गजपीपली जवाखार सुहागाखार सौंफ चाव कूट मालकांगणी मिरच कूड़ाकी छाल चीता अजमान कुटकी पुष्करमूल वच पीपलामूल मजीठ अतीश निशोत अजमोद ये सब एकएकतोलालेय इन्होंकाकल्क शोधा गूगल ५ तोले इन्होंको मिलाय घृतको सिद्धकरि खाने से जियादे बढ़ा बाय संधि हाड़ मज्जा इन्होंके बायु कुष्ठ नाड़ीव्रण अर्बुद भगन्दर गंडमाला कांधा व कंठके समीपका बायु गुल्म बवासीर प्रमेह क्षय श्वास खांसी पीनस सूजन पांडुबिद्रधी बातरक्त इन्होंकोनाशकरै ॥ बातरोगमें पथ्य ॥ कुलथी उड़द गेहूं लालचावल परवल सहोंजना बेंगन अनार फालसा राब घृत दूधकी लाट दूध की खुरचन बेर लहसन दाख नागरपान लवण चिड़ाकामांस व मुरगा व मोर व तीतर इन्होंके मांस औ जांगल देशके पशुवों का मांस और सिलिंध पर्बत नक्र गर्गर खड्डीश झख इनभेदोंकीमछली जैसी आवश्यकता श्रमआचरणहो तैसेही पदार्थ बातब्याधिमेंपथ्य

है ॥ अपथ्य ॥ चिन्ता जागना मलमूत्रके बेगधारण छर्दिकी औषध परिश्रम उपवास चना मोठ सामककी पीठी मोटेचावल बनकेअन्न कांगणी नागरमोथा तलाव व नदीका जल बांसका अंकुर शहद कड़ुवा व खट्टारस मैथुन हाथी घोड़ाकी सवारी घणाफिरना खाटका सोवना ये सामान्य बातब्याधिमें अपथ्यहैं और आध्मान व अर्दित बात रोगमें बिशेष करि दुष्ट पानी से स्नान व दांतों को घिसना इन्हों को बर्जदेवे यह अपथ्यबर्ग सबग्रंथों का मत देख के कहा है बातरोगोंमें इन्होंके सेवन मनुष्योंको सुख न देवैहै और बातरोग असाध्य हो है परन्तु दैवयोगसे सुसाध्य होजावे इसमें अच्छे बैद्य चिकित्सा उन्मानसे करेहैं और प्रतिज्ञा से नहीं औरपथ्याऽपथ्य अन्य ग्रंथ के मत से कहते हैं नवीन प्रकार का ऐसे जानो ॥ अथ बातब्याधि में पथ्य ॥ तेल लगाना मलना वस्तिकर्म स्नेह गोतामार के न्हाना दाबना संशमन पूर्वदिशा की पवन का बचाना दागना प्रलेप पृथ्वीमें सोना न्हाना बैठना तैल द्रोणी अर्थात् काष्ठ आदि के बनेहुये किसी पात्रमें तेलभरके गलेतकडूबिके खड़ाहोना व बैठना शिरकावस्ति सोना नासलेना घामसंतर्पण बृंहण की खाट अर्थात् फटेदूधकाखोवा दधिकूर्चिका अर्थात् दही दूध मिलाय औटि कर बनीहुई खुरचन घी तेल बसा मज्जा मीठे खट्टे और खारीरस नये तिल तथा गेहूं एक बर्षके पुराने सांठीधान कुलथीका रस मदिरा गांवके गौ खिच्चर ऊंट गधा बकरा आदिले अनूपदेश के सुअर भैंसा बारहसिंगा गैंड़ा हाथी आदि जलकेहंस बतक चकवा मद्गुर आदि बिलके बासियों में मेंढक गोह नौला श्वाबिद आदि जंगलियों में चिरोठा मुरगा मोर तीतर आदि मछलियों में शिलिंद पर्वत नक्र गर्गर कवैया इल्लिश एरंड चुली की कछुवा सूस तिमिंगिल रोही मद्गुर सिंगबार्मि खुड्डीश झष परवर सहिंजना बैंगनलहसन दोनोंप्रकार के अनारपका ताड़फल पका आम नींबू दाख नारंगी महुवा पसरनि गोखुरू शुक्लाक्षी देवदारु दूध तथा दूधकापेड़ा अरंडीका तेल गोमूत्र रात्र मगण पान जौकी कांजी अमिलीकी कोंप चीकने गरम लेप आमाशयमें प्राप्त होनेपर शेष

करि बमनपक्काशय तथा मांस में स्थित होनेपर चिकना विरेचन प्रत्याध्मान तथा आध्मान होनेपर बर्तिलंघन उचित है॥ अष्ठीलामें गुल्मकी बिधि॥ बीर्य्यमें स्थित होनेपर क्षयकी दूर करनेवाली क्रिया करनी चाहिये त्वचा मांस रुधिर तथा शिरोमें प्राप्तहोनेपर रुधिर निकलवाना योग्यहै बातब्याधि के उत्पन्न होनेपर श्रमदेश तथा आचरण के अनुसार मनुष्योंको पथ्यहोताहै॥ अथ वात रोग में अपथ्य॥ चिन्ता बहुत जागना वेगरोकना बमन श्रम लंघन चना मटरतृणधान्य कंगनी जब वांसके फल कोदो सावांकाचून कुरबिन्दनाम अन्नबिशेष व घुघुरीसाधारण तृण धान्य रमास मूंग तलाब तथा नदी का जल करील जामनी कसेरु तलक सुपारी कमलकी जड़ भटवांस ताड़फलकी मींगी शालूक तेंदु करेला कोमल ताड़का फल सेमी पत्र शाक गूलर शीतल जल गधी का दूध बिरुद्ध अन्न खार सूखा मांस रुधिर निकालना शहद कसायले कडुवे तथा चर्परेरस स्त्री संग हाथी घोड़ाकी सवारी भ्रमण करना खाट आध्मान और अर्दित रोगवालेको बिशेषकरके न्हाना बुराजल दांतोंकाघिसना कहाहुआ यहगणसंपूर्ण बातरोगों में मनुष्योंको आनन्द देनेवाला नहीं होता॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरबिदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायां बातव्याधिप्रकरणम्॥

बातरक्त कर्मबिपाकसे ज्योतिश्शास्त्राभिप्राय॥ जन्म काल में दशमस्थान में मंगलहो और शनि की दृष्टि हो तो बातरक्तरोग उपजै॥ शमन॥ पूर्वोक्तग्रहदोष शांतिके अर्थ जपादिक करानाउचितहैं॥ बातरक्तनिदान॥ नोन खट्टारस कडुआ रस खार चिकना गरम ऐसे पदार्थोंको सेवन से और अजीर्णमें भोजन करनेसे और क्लिन्न सूखाजलमें उपजे शाक मछली अनूप देशके जीवोंका मांस कुलथी पिण्याक उड़द मोठ शाकादिक ईषरस दही कांजी सूक्त तक्र मदिरा आसव बिरुद्ध भोजन बुरा भोजन क्रोध दिनकासोना

रात्रिकाजागना इन्होंकेसेवनसे बिशेषकरके सुकुमारके तथा मिथ्या भोजनादिक करनेवाले के व सुखी व मोटापुरुषके बातरक्त कुपित होहै ॥ बात रक्तप्राप्ति ॥ हाथी घोड़ा ऊंट इन्हों की सवारी पर चढ़ भजाने से और बहुत गरम अन्नखानेसे व भूखारहनेसे कोपहुआ रक्त दग्ध होके व रुधिर दुष्ट होके दोनों पैरों में इकट्ठा होहै और बायुसे मिलदुःखदेहै इसवास्ते इसेबातरक्तकहैहैं ॥ बातरक्त का और दोषसम्बन्धी लक्षण ॥ तैसेही दूषित बायुकेसंग पित्त व कफ दुष्टरक्त से मिल बात पित्त रक्तको बातकफ रक्तको पैदाकरैहै और पैरोंको स्पर्श सुहावै नहीं और पीड़ा व शोषहो और सूतेरहै और पित्तमें उग्रदाह हो और जियादे गरम स्पर्श हो लाल सोजा हो कोमलहो कफसे दुष्ट रक्तमें पैरोंमें खाजचले पसीना आवै सोजाहो मोटेहोवे और स्तब्धहो और सब दोषोंका दूषित रक्तमें सबकेरूप दीखतेहैं पूर्बरूप ॥ पसीना बहुतआवै अथवा आवैनहीं शरीर कालापड़जाय और स्पर्श का ज्ञान रहै नहीं थोड़ीसी चोटमें पीड़ा घनी हो संधि शिथिल होजावै आलस्य आवै शरीर गीलासा रहै और शरीरमें फुनसीहोजावै और गोड़ा जांघ पींडी कटि कांधा हाथ पैर इन्होंकी संधिमें पीड़ाहो अथवा इन्होंमें स्फुरण होवै इन्हों में हड़फूटनी हो और शरीरभारीहो और शरीर शून्यहो और संधियों में खाज हो शूलहो बारम्बारदाहहो होके कभी नाशको प्राप्तहो और शरीरका वर्णबदलजाय और शरीरमें लालमण्डलहोजाय यहबातरक्तकापूर्व रूपहै बातरक्त अन्य संसर्ग उपद्रव बाताधिक बातरक्तमें शूलचले अंगफुरै अंगमें हड़फूटनीहो सोजाहोजाय रूखा और काला शरीर होजायक्षणक्षणमें बढ़ै घटै और नाड़ी संधि अंगुली इन्होंका शंका हो और अंगग्रहहो हो ज्यादे पीड़ाहो शीत पदार्थको सेवनेसे दुःख हो कंप स्तंभ शून्यताहो ऐसेजानो ॥ रक्ताधिक तथा पित्ताधिक बातरक्त लक्षण ॥ रक्ताधिक बातरक्त में सोजा हो घनी पीड़ा हो अंग गीलो रहै और चाम तांबासमानहो निरंतर चिमचिमकरै चीकना व रूखा पदार्थ खाने से रोग शांत नहीं हो सर्बकाल खाज व ग्लानिबनीरहै ऐसेजानो और पित्ताधिक बातरक्तमें दाहरहै मोह व पसीनाआवै

मूर्च्छाहो मदचढ़ारहै प्यासलगै स्पर्श नहीं सहाजाय अंगढीला रहै सोजाहो और पकजा और शरीर जियादे गरमहो ऐसेजानो॥ कफरक्त निदान॥ कफाधिक बातरक्तमें अंगजड़रहै व शून्यता व भारीरहै और ठंढापना चीकनापना शरीर में पैदाहो और थोड़ीपीड़ाहो ऐसे जानो और द्वन्द्वज में दो दोषोंके लक्षणजानो सन्निपातके वातरक्तमें सब दोषोंके लक्षण होतेहैं अंगनियम बातरक्त रोग पहलेपैरोंमें होय अथवाहाथोंमें होय पीछे कोपहोय सबअंगोंमें फैलजायहै जैसेजहरीला मूसाका जहरफैलै तैसे॥ बातरक्तका असाध्य लक्षण॥ पैरके तलुआसे गोड़ातक फुनसियां होवैं और रुधिरझिरै और अनेकतरहकेउपद्रवभी होवैं और बल मांस जठराग्नि ये सबनष्ट होजायँ वह बातरक्त असाध्य होहै और यही १ वर्षतक जाप्यहै पीछे महाअसाध्य है॥ बातरक्त के उपद्रव॥ नींदआवै नहीं रुचि जातीरहै श्वासहो मांस गलजाय और माथामें पीड़ा हो मूर्च्छा हो थोरी पीड़ाहो तृषालगै ज्वररहै औरमोहहोवै हिचकीचलै शरीरकांपै पांगलाहोजाय अंगुली गलजावै विसर्प्परोग उपजै फुन्सी पकजावै पीड़ा हो घूमनी आवै औरग्लानिहो अंगुली टेढ़ीहोजाय फोड़ामें दाहहो और मर्मस्थानों में शूलचलै और अर्बुदरोग उपजै इन उपद्रवोंसेयुक्त बातरक्त असाध्यहै अथवा अकेलामोहयुक्तभी बातरक्त असाध्यहोहै॥ साध्यासाध्य॥ अल्प उपद्रववाला बातरक्त जाप्यहै और उपद्रवोंसे रहित वातरक्त साध्यहै और एकदोषका बातरक्त साध्यहै और दो २ दोषोंका नवीन वातरक्तजाप्यहै और सन्निपातका बातरक्त असाध्य और सबउपद्रवों करकेयुक्त बातरक्त असाध्यहोहै॥ सामान्यचिकित्सा॥ इसरोगवालेको पहले स्निग्धकरि पीछे बारंबार लोहू कढ़ायडालै परन्तु ऐसा अनुमानमाफिक लोहूकढ़ावै अकवायबढ़ैनहीं और बलको और दोषोंको विचारिवायुकीरक्षाकरै और बातरक्तमें उग्रदाह और हड़फूटनहोतो जोकलगवाय लोहूकढ़ावै और बातरक्तमें चिमचिमाहट खाजशूलपीड़ा होतो शींगीतुम्बीलगाय लोहूकढ़वावै अथवा फस्तखुलावै अथवा अन्यदेश में जायवासकरै और बातरक्तरोगीकाशरीर रूखाहो व क्षययुक्तहो व वायुकी प्रकृतिवालाहो तो लोहूकढ़ावैनहीं

औरवायु की रक्षा न करे तोगम्भीर सोजा स्तंभ कम्प ग्लानि मस्तक में रोग वायुके रोग इन्होंके समूह पैदाहोवे और लालवोलका पिण्डसे सिद्धकिया तेलकी मालिशकरे और कुटकी आदि घृतमें मिलायपीवै और पानी की सेकलेप फस्त जुलाब वमन येभी करावे तब बातरक्त शांतहोवे इसरोगमें स्निग्धकरा बिना लोहूकढ़ावे तो अनेकतरहके बातरोग उपजें और मृत्यु भी होजावे तो आश्चर्य्यनहीं इसवास्ते अनुमान माफिक लोहू कढ़ाय डाले ज्यादे नहीं और पित्ताधिक बातरक्त में स्नेहयुक्त औषधदे जुलाबकरावे और बाहिर प्रकट बातरक्त में मालिश लेप पानी सेचन पिंडी बंधन ये उपचार करि शांतकरे और गम्भीर वातरक्तमें जुलाब निरूहवस्ति स्नेहपान इन्होंसेआराम करावे ॥ भोजन व रस ॥ पुराना यव गेहूं चावल सांठी चावलइन्हों का भोजन और लवा तीतर बटेर इन्हों के मांसके रसका पान इससे बातरक्तशांतहोवे॥यूष॥तुरी धान चना मूंग मसूर कुलथी इन्होंकायूष में घृत मिलाइपीनेसे बातरक्त शांतहोवे॥ भाजी॥ कुरडू बेतका अंकुर काकमाची शतावरी बथुआ पोइशाक कालानोन इन्होंकोमांसके रस में और घृतमेंभूनि बरतनेसे बातरक्तशांतहोवे। और पहले वमन रेचन आदि पंचकर्म्म कराइ पीछे गिलोयके काढ़ामें सिद्धकिया शिलाजीतकोखानेसेबातरक्तशांतहोवे॥वासादिकाढ़ा॥ वासा गिलोयअमलतास इन्होंके काढ़ामें अरण्डीके तेलको मिलाय पीनेसे सबअंग में उपजा बातरक्त शांतहोवे ॥ मंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ कूड़ा गिलोय नागरमोथा वच शुंठि हलदी दारुहल्दी वासा पित्तपापड़ा सारिवा अतीश धमासा गडूंभा वाला कटैली नींब परवल कूट कटुकी भारंगी वायविडंग चीता मूर्वा देवदारु इन्द्रयव भंगरा पिपली बनफ्सा पाढ़ा शतावरी खैर हड़ बहेड़ा आमला चिरायता वकाण आसना अमलतास कालानिशोत बावची चंदन वरण करंजवा कोटक ये समान भागलेय काढ़ाबनाय रोज पीनेसे जल्दी त्वचाके दोष को व अठारहप्रकार के कुष्ठ रोगोंको शांतकरै और बातरक्तको व शुन्नबहरी को व विसर्पको व विद्रधीको व सबरक्तदोषोंको हरै ॥ लघुमंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ हड़ बहेड़ा आमला कुटकी वच दारुहल्दी

गिलोय नींब इन्होंकाकाढ़ा बातरक्तको व पामको व कापालिक कुष्ठ को व रक्तमंडलको दूरकरै ॥ पटोलादिकाढ़ा॥ परवल हड़ बहेड़ा आमला कुटकी गिलोय शतावरी इन्होंका काढ़ा बनाय पीनेसे दाहसंयुक्त बातरक्तको दूरकरै ॥ बासादिकाढ़ा॥ वासा गिलोय कुटकी इन्हों का काढ़ा बातरक्तकोहरै॥ एरंडतैलयोग ॥ गिलोयके काढ़ामें अरण्डी का तेलमिलाय पीने से अथवा वर्धमान पीपलीके सेवनेसे अथवा गुड़में मिलाय हड़के चूर्णको खानेसे बातरक्त को शांतकरै और इस पर पथ्यसेरहै ॥ दार्व्यादिकाढ़ा ॥ दारुहल्दी गिलोय कुटकी वच मजीठ नींब हड़ बहेड़ा आमलाइन्होंको नवकर्षलेइ काढ़ाबनायपीनेसे बातरक्तको व कुष्ठरोगको शांतकरै ॥ वत्सादिन्यादिकाढ़ा ॥ गिलोयके काढ़ामें गूगुल मिलाय पीनेसे बातरक्तको शांतकरै॥ पित्ताधिकवातरक्तपर ॥ काश्मरीकी छाल दाख अमलतास लालचन्दन काकोली क्षीर काकोली इन्होंका काढ़ा शीतलमें खांड़ शहद मिलाय पीनेसे बातरक्त शांतहोवै ॥ काकोल्यादिकाढ़ा ॥ काकोली गिलोय इन्हों का काढ़ा कछुक गरम बलबिचारिपीनेसे २१दिनतक बातरक्तशांतहोवै और इसपर पथ्यसेरहै व मोम मजीठ राल इन्होंके तेलकी मालिश से व रक्ताबोल से सिद्ध तेलकी मालिश करने से बातरक्तकी पीड़ा शांतहोवै॥ गुडूचीयोग ॥गिलोयका स्वरस व कल्क व चूर्ण व काढ़ा इन्हों के सेवने से बातरक्त शांत होवै॥ गुडूच्यादिकाढ़ा ॥ गिलोय बावची टाकली नींब हड़ हल्दी आमला वासा शतावरी बाला खरैटी मुलहठी महुआ तालमखाना परवल कालाबाला मजीठ लाल चन्दन इन्होंका काढ़ाबनाय पीनेसे बातरक्तको व खाजको व कुष्ठको व रक्तमण्डलको व बातबिकारोंको व रक्तविकारोंको नाशकरै यहकाढ़ा मुनियोंने दयाकरि प्रकाशकियाहै॥ वृषादिकाढ़ा ॥ बासा अमलतास गिलोय इन्होंके काढ़ामें अरंडीकातेलामिलाय पीनेसे बातरक्तबिकारको व सबअंगोंको सोजाको व दाहसंयुक्त बातरक्तकोनाशै ॥ त्रिवृतादिकाढ़ा॥ निशोत विदारीकंद ईष इन्होंकाकाढ़ा व गिलोयका स्वरस पीनेसे बातरक्त शांतहोवै॥ पथ्यायोगवगुडूचीकाथ॥ तीन व पांचहड़ोंके चूर्णको गुड़में मिलाय खावै ऊपर गिलोयका काढ़ापीने से बातरक्त

शांतहोवै ॥ बातरक्तपरकाढ़ा ॥ गिलोयके काढ़ामें अरण्डीका तेल मिलाय पीनेसे व अरण्डकी जड़ बासागिलोय इन्होंके काढ़ापीनेसे बातरक्त शांतहोवै ॥ बातरक्तपर पिंडादिकाढ़ा ॥ मोम मजीठ काली उपलसरी राल इन्होंके काढ़ामें तेल मिलाय तय्यार करि वरतने से बातरक्त नाश होवै अथवा अरण्ड जड़ गिलोय इन्होंके काढ़ा में अरंडी तेल मिलाय पीनेसे बातरक्त शांतहोवै ॥ मंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ बच हड़ बहेड़ा आमला कुटकी हल्दी नींब गिलोय देवदारु निसोत खैर इन्होंका काढ़ा पीने से बातरक्त व कुष्ठ शांत होवै ॥ दूसरामंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ नींब बासा हड़ बहेड़ा आमला चीता हल्दी दारुहल्दी गिलोय चिरायता लालचंदन कुटकी कैथ बकुची अमलतास मूर्वा गडूंभा धमासा वायविडंग वनफ्सा पाढ़ा इन्होंके काढ़ापीनेसे बातरक्तके विकारोंको शांत करै ॥ खदिरकाथ ॥ खैरकाकाढ़ाबनाय दोनोंकालोंमें देवै और निर्वातस्थानमें बसै और घृत चावलोंकापथ्यसेवै यह सबप्रकारके कुष्ठोंको व आमबातको व बातरक्तकोशांतकरै ॥ मंजिष्ठादिकाढ़ा ॥ मजीठ नागरमोथा कूड़ा की छाल गिलोय कूट शुंठि भारंगी कटैली बच नींब हल्दी दारुहल्दी त्रिफला कुटकी परवल मूर्वा वायविडंग आसाणा चीता शतावरी वनफ्सा पीपल इंद्रयव बासा भंगरा देवदारु पाढ़ा खैरकीछाल निसोत लालचन्दन वरणा चिरायता बावची अमलतास अकोट बकायण करंजवा अतीस बाला गडूंभा धमासा सारिवा पित्तपापड़ा इन्होंका काढ़ा बनाय पीपल गूगल मिलाय पीनेसे अठारह प्रकार के कुष्ठ रोगोंको व बातरक्तको व लकुआको व आतशकको व श्लीपदको व शुनवहरी को व पक्षाघात को व मेद के रोगको व नेत्ररोग को शांत करै ॥ अमृतादिकल्क ॥ गिलोय कुटकी शुंठि मुलहठी इन्होंके कल्क बनाय शहद में मिलाय गोमूत्रके संग खानेसे कफसहित बातरक्त को शांतकरै ॥ लांगल्यादिचूर्ण ॥ कलहारीकाकन्द शुंठि मिरच पीपल नोन इन्होंके चूर्ण बनाय शहद और गो के घृतमें मिलाय १० माशे भर रोज खानेसे अनेकप्रकारका रक्तविकार को व पाददोष व पैरोंमें हड़ फूटनको व मर्मगत दुःखको व असाध्य बातको रक्त व

भयंकर कुष्ठको दूरकरै ॥ मुंड्यादिचूर्ण ॥ मुण्डी कूट की इन्हों के चूर्ण मेंशहदघृतमिलायखानेसेबातरक्तशांतहोवै ॥ पद्मकादितेल॥ पद्माख बाला मुलहठी हलदी इन्होंकेकाढ़ामें शाल मजीठ घीकुवार काकोली सफेदचन्दन इन्होंकाकल्कमिलाय तेलकोसिद्धकरिबरतनेसे वातरक्त संबंधीदाहको यहशांतकरै ॥ गुडूच्यादितेल ॥ गिलोयकाकाढ़ा व कल्क और लाखकारस व मुलहठी काश्मरीकेरसमेंतेलको सिद्धकरिबरतने सेबातरक्तशांतहोवै ॥मिरचादितेल ॥मिरच हरताल नारियल आकका दूध कलहारीकुचला हलदीनदीवड़ नींब नागरमोथा कूड़ा इन्होंके काढ़ामें चौगुणा गोमूत्रमिलाय तेलको सिद्धकरिबरतने से वातरक्त शांतहोवै॥ वृहन्मरिचादितेल ॥ मिरच निसोतजमालगोटाकीजड़आक का दूध गोबरकापानी देवदारु हल्दी दारुहल्दी जटामासी कूट चन्दनगडूंभा कनेरकीजड़ हरताल मनशिल चीताकलहारी वायविडंग कौंचकेबीज शिरस कूड़ानींब सप्तपर्णी गिलोय थोहर अमलतास करंजवा खैर पीपल वचकांगणी येप्रत्येक ४ तोले मीठातेलिया ८ तोलाकडुआतेल २५६ तोला गोमूत्र १०२४ तोलालेइ पीछे इन्हों को माटीके व लोहाकेपात्र में कोमल अग्निसेपकायपीछे मालिश करनेसे कुष्ठके घाओंको व बातरक्तके बिकारोंको व पामको व विस्फोटकको व विचर्चिकाको शांतकरै ॥ पिण्डतेल ॥ मजीठ सारिवा राल मुलहठी मोम दूध उड़द इन्होंका तेलकाढ़ि मालिशकरने से बातरक्तजावै ॥ गुडूच्यादितेल॥४०० तोले गिलोयको ४०९६ तोले पानीमेंपकाय चतुर्थांशबाकीरक्खै पीछे गौकादूधएकद्रोणभरमिलाय पीछे तिलोंकातेल २५६तोला मिलाय मन्द २ अग्नि से पकाय पीछे मजीठ मुलहठी कूट जीवनीयगणोक्त औषध इलायची बिजौरा दाख जटामासी थोहर नखरेणुकबीज मुंडी त्रिकुटा शालिपर्णी भूमिआमला काकड़ासिंगी पीपल शतावरी विष्णुक्रांता तमालपत्र नागकेशर बाला दालचीनी पद्माख कमल चन्दन इन्होंका कल्क मिलाय तेलको सिद्धकरि पीनेमें व मालिशमें व अनुबासन बस्ति में बरतनेसे बातरक्तको और बातरक्तके बिकारोंको व उपद्रवोंकोहरै और धनपुत्रकोबढ़ावै और स्त्रियोंकोगर्भदेहै और बातपित्तपसीना

खाज शूल पाम शिरःकंप अर्दित ब्रणदोष इन्होंको यह गुडूचीतेल हरैहै ॥ पद्मकादितेल ॥ पद्मकाष्ठ बाला मुलहठीहल्दी इन्होंकेकाढ़ा में राल मजीठ शतावरी काकोली चन्दन इन्होंका चूर्ण और तेल मिलाय तेल को सिद्धकरि वरतनेसे बातरक्तका नाशहोवै ॥ गुडूच्यादितैल ॥ गिलोय काढ़ा में लाख का रस मिलाय तेलको सिद्ध करि बरतने से व मुलहठी काश्मरी के रस में सिद्धकिया तेल को बरतने से बातरक्त शान्तहोवै ॥ शताह्वादितैल ॥ शतावरी कूट नई मुलहठी इन्हों में अलग २ तेलको सिद्धकरि बरतने से बातरक्त शान्तहोवै ॥ बातरक्ततैल ॥ सारिवा राल मुलहठी इन्हों के काढ़ा में अरंडीका तेल मिलाय बर्त्तने से बातरक्तको दूर करै ॥ पिण्डतैल ॥ सारिवा राल मुलहठी मोमपानी एरंडतेल इन्हों को मिलाय तेल को सिद्धकरि बर्त्तनेसे बातरक्तशांतहोवै ॥ दशपाकबलातैल ॥ बलिया का काढ़ा व चूर्ण व कल्कमें तेल और चौगुना दूधमें तेलको सिद्ध करि यह दशपाक तैल वातरक्तहरै और धन और बीर्य्यको बढ़ावै और बीर्य्य बिकार को व योनि बिकारों को व बातरक्त बिकारों को शांतकरै ॥ बलातैल ॥ बलियारकाकाढ़ा व कल्कमेंदूध तेल सम भाग मिलाय तेलको सिद्धकरि बरतने से बातरक्त को हरै और इस को शतपाक व सहस्रपाक बनाय तैयार करै और यहरसायनहै और इन्द्रियोंको प्रसन्न करैहै और जीवन है और बृंहणहै और स्वरको बढ़ावैहै और बीर्य्य दोषको व लोहू दोषको हरै है ॥ नागबलातैल ॥ मोटीबलिया४००तोलापानी १०२४ तोले मिलाय पकायचतुर्थांश रक्खै पीछे बालाका काढ़ा ४०० तोला बकरीकादूध ४०० तोला लेय और मुलहठी महुआ इन्होंका अलग २ कल्क २० तोले लेय तेलको पकाय पिचकारीद्वारा बरतनेसे ७ रात्रितक बातरक्तको शान्तकरै और इस तेलको दशदिनतक खावैतो बातरक्तआदि रोग जल्दी शांतहोवैं यहतेल अश्विनीकुमारोंने कहाहै ॥ अरनारतेल ॥ कांजी २५६ तोलातेल ६४ तोला रालकाकाढ़ा ६४ तोला इन्होंको पकायतेलको सिद्धकरि बरतने से बातरक्त ज्वरदाह इन्हों को हरै ॥ बलादिघृत ॥ बालिया मोटीबलिया बनफ्साकौंच शतावरी काकोली

क्षीरकाकोली रास्ना मुनक्कादाख इन्होंका कल्क बनाय घृत और चौ-गुना दूध मिलाय घृतकोसिद्धकरि बरतनेसे बातरक्त शांतहोवै॥ गुडू-च्यादिघृत ॥ गिलोय का काढ़ा व कल्क और घृत दूध ये बराबर लेय घृत को सिद्धकरि बरतनेसे बातरक्त शांत होवै ॥ गुडूच्यादिघृत ॥ गि-लोय के काढ़ा व कल्कमें शुंठिमिलाय घृतको मन्द२ अग्निसे पकाय बरतनेसे बातरक्तको व आमबात को व आढ्यबात को व कृमि रोग को व कुष्ठको व घावको व बवासीरको व गुल्मको जल्दी शान्त करै॥ शतावरीघृत ॥ शतावरी का कल्क घृत दूध ये बराबर लेय और घृत से चौगुना शतावरी का रस मिलाय घृत को सिद्धकरि बरतनेसे बात-रक्त शान्त होवै व गिलोय का स्वरस और कल्क इन्होंमें घृतको सिद्ध करि पीनेसे भयंकर बातरक्तभी जावै ॥ अमृतादिघृत ॥ गिलोय४०० तोला पानी एक द्रोणभर में पकाय घृत ६४ तोला गिलोय का कल्क३२तोला और चौगुना दूधमिलाय मन्द२अग्नि ऊपर पकाय खानेसे बातरक्तको व कुष्ठको व कामलाको व तिल्लीको व खांसीको व ज्वरकोहरै ॥ अमृतादिघृत ॥ गिलोयमुलहठी दाखत्रिफलाशुंठि बलि-या बासा अमलतास सांठी देवदारु गोखुरू कुटकी पीपल काश्मरी फल रास्ना तालमखाना एरंड दारुहल्दी कमल ये समभाग लेय क-ल्क बनाय घृत ६४ तोला आमलारस ६४ तोला दूध १९२ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरि बरतनेसे भोजनमें व पानीमें यह बहुत दोषों से उपजा बातरक्त को व मूर्च्छा को व उत्तान व गंभीर बात रक्तको व त्रिक् जंघा उरु गोड़ा इन्होंके बायुको व क्रोष्टुशीर्षबायुको व महाशूलको व आमबातको व महारोगकीपीड़ाको व मूत्रकृच्छ्रको उदावर्त को व प्रमेहको व बिषम ज्वरको व बात पित्त कफके विकारों को हरै और बर्ण बल उमर इन्हों को बढ़ावै यह घृत अश्विनी कु-मारों ने कहा है॥ अश्वगंधपाक ॥ पहले ४० तोले असगंध का चूर्ण करि पीछे शुंठिका चूर्ण २० तोले लेय पीछे पीपल १० तोला लेय मिरच ४ तोला इन्हों को बारीक पीसि पीछे दालचीनी ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला ४ लौंग ४ तोला भैंसकादूध २०० तोला शहद १०० तोला गौ का घृत ५० तोला खांड़ १२०

तोला और पहलेदूध खांड़ घृत शहद ये एकत्र मिलाय पीछे पूर्वोक्त चूर्ण मिलाय पकाय और जब कछड़ीके चिपकनेलगै तब चातुर्ज्जात मिलाय और जब चावलों का आकार होजावे तब सिद्ध जानै जब दूधसे घृत अलग दीखै तबउतारि पीछे पीपलामूल जीरा गिलोय लौंग तगर जायफल बाला काला चन्दन खिरणी कमल धनियां धौके फूल बंशलोचन आमला कैथ कपूर सांठी असगन्ध चीता शतावरी इन्होंका चूर्ण आधा आधा तोला लेय पूर्वोक्त में मिलाय ठंढाकरि चीकने बरतन में घालि पीछे रोज २ तोले भर भोजन करै और मनोबांछित भोजन खावै यह खांसीको व श्वासको व अजीर्ण को व बातरक्तको व तिल्लीको व मदको व मेदरोगको व आमबात को व सूजन को व शूलको व बात की बवासीर को व पाण्डु को व कामला को व संग्रहणी को व गुल्म रोग को व बात कफ जनित रोगोंको नाशकरै दृष्टान्त जैसे सूर्य्योदय में अंधेरा नाश होवै तैसे और इसको १महीनातक सेवनेसेबूढ़ाजवानहोवै और मंदाग्निवालों कोहितहै औरबलकोउपजावैहै और बालकोंकेअंगोंकोबढ़ावैहै और स्त्रियोंकोपुष्टकरैहै और प्रसवसमयमें स्त्रियोंकेचूचियोंमें दूधकोबढ़ावै है और जितने स्तनमोटे और दूधनबढ़े तितने इसघृतको दूधकेसंग खावै और क्षीणनरोंको और अल्पबीर्य्यवालोंकोहितहै और कामदेव को और जठराग्निको दीपनकरै है और सबप्रकार की ब्याधियों को शान्तकरैहै यहसर्वोत्तमघृतहै ॥ प्रपौंडरीकादिलेप ॥ पुण्डरीकवृक्ष मजीठ दारुहल्दी मुलहठी चन्दन मिश्री इलायची सत्तू मसूर बाला पद्माख,इन्होंके लेपकरने से शूलको व दाहको व विसर्प्पको व सूजन को शान्तकरै ॥ लेपवअभ्यंग ॥ तिलोंको बारीकपीसि भूनि पीछे दूध में मिलाय लेपकरनेसे व एरंडकेफलोंको बारीकपीसि और भूनिदूध में मिलाय सिझाय लेपकरनेसे व शतावरी की जड़का लेपकरने से वाताधिक शूलशांतहोवै और गोमूत्र दूध मदिरा इन्होंके संग सिद्ध किये घृतकी मालिश करने से पूर्वोक्त रोग जावै और मधुसूक्त को सिद्धकरि सेवनेसे व मालिशसे सन्निपाताधिक बातरक्त में हित है और घरका धुआं बच कूट शतावरी हलदी दारुहलदी इन्हों के

लेपसे कफाधिक वातरक्तका शूलजावै और इसीलेपको बहुतकाल तक सेवनेसे वातरक्त शांतहोवै ॥ शताह्वादिलेप ॥ दोनोंशतावरी मुलहठी गड़ूभा बलिया चिरौंजी कचूर मोथा घृत बिदारीकन्द मिश्री इन्हों के लेप से वातरक्त शांत होवै ॥ सहस्रधौतघृत व रालयोग ॥ हजारबार धोये घृतकी मालिश से व घृतमें रालमिलाय गरमकरि ठंढालेपकरनेसे वातरक्तशांतहोवै ॥लोणयाचेउद्वर्त्तन॥ भैंसकानोनीघृत गोमूत्र दूध सेंधानोन इन्हों को खरलमें एकत्र मिलाय गरम करि देहके ऊपर मालिश करनेसे देहकी हड़फूटनी मिटै ॥ सर्षपादिलेप ॥ सफ़ेद सिरसमको बारीक पीसि लेपकरने से व व्रणे सहोंजना इन्होंको कांजीमें पीसि लेपकरनेसे वातरक्तशांतहोवै ॥ कनकादिलेप ॥ धतूरा नागबेल मालतीके पत्ते मूर्वा मनशिल इन्हों को तेलमेंपीसि लेप करने से कुष्ठको व खाजको व विसर्प्पको व पैरोंकी हड़फूटनको व मुहँपरके कालेदागों को हरै ॥ पंचामृतरस ॥ पारा १ भाग गंधक १ भाग अभ्रकभस्म २ भाग गूगल ४ भाग गिलोयकासत ८ भागलेइ पीछे इन्होंको निर्गुण्डी गोखुरू गिलोय कोकिला इन्होंके रसोंमें अलग२ सात भावना देइ पीछे ६ रत्तीतक देनेसे वातरक्तको शांत करै और इसपर अनुपान कोलिस्ता का काढ़ा पीवै ॥ हरतालरस ॥ हरताल २ भाग पारा १ भाग तुरटी ५ भाग लेइ पीछे इन्हों को बसूचाकी जड़के रसमें भावना देइ गोलाबनाय सकोरा में घालि संपुट में देइ कपड़माटीलगाय सुखाय गजपुटमें फूंकदेवै पीछे आकृति देखि बारम्बार बिचारि १ चावलभरदेनेसे रुधिरबिकार शांत होवै यह ग्रंथकारको यतिलोगों से प्राप्तहुआहै ॥ कैशोरगूगल ॥ नया भैंसा गूगल ६४ तोला गिलोय ६४ तोला त्रिफला ६४ तोला इन्होंका पानी में काढ़ा बनाताजावै और कड़छी से चलाता जावै जब आधा बाक़ीरहै तब अग्निसे उतारि कपड़ासे छानि फिर अग्नि पर चढ़ाय सिद्धकरि कछुक कड़ारूप होनेपर उतारि ठंढाकरि हड़ का चूर्ण ८ तोला त्रिकुटाचूर्ण ६ तोला बायबिड़ंग २ तोला निसोत १६ माशे जमालगोटाकी जड़ १६ माशे गिलोय ४ तोला इन्हीं को बारीक पीसि गौके घृतसे चीकने बर्तनमें घालि गुप्तरक्खै पीछे

देवता और अतिथिआदिकी पूजाकरि और अग्निबलाबलबिचारि मात्रालेवै और मनोबांछित भोजनकरै और औषधलेनेका काल नियम नहीं है यह एकदोष के बातरक्तको व दोदोषोंके बातरक्तको व तीनदोषों के बातरक्तको व पुराने बातरक्तको व भग्नसूतिको व सूखे बातरक्तको व स्फुटित बातरक्त को व घावको व खांसी को व कुष्ठको व गुल्मको व सोजाको व पेटके रोगको व मेदरोग पांडुरोग मंदाग्नि दस्तबंध प्रमेह दोषों को हरै और निरंतर इस के सेवने से समय में रोग समूह शांतहों और यह बुढ़ापाको दूरकरि किशोर अवस्था को प्राप्तकरै है॥ माहिषगूगल॥ गिलोय ६४ तोला हड़ ६४ तोला बहेड़ा ६४ तोला आमला ६४ तोला गूगल ६२ तोला इन्होंका पानीमें काढ़ा बनाय चतुर्थांशबाक़ीरक्खै पीछे कपड़ा से छानि फिर कड़ाहोय तबतक पकावै पीछे जमालगोटा की जड़ शुंठि मिरच पीपल बायबिड़ंग गिलोय त्रिफला दालचीनी येप्रत्येक दो २ तोलेलेय और निसोत १ तोला इन्होंकाचूर्ण करि पूर्वोक्त काढ़ामें मिलाय सिद्ध करि कछुक गरमरहे तबपात्रमेंरक्खै पीछे अग्नि बल जानि मात्रालेनेसे बातरक्त कुष्ठ बवासीर मंदाग्नि दुष्ट घाव प्रमेह आमबात भगन्दर नाड़ीबात सूजन संपूर्ण बातरोग इन्होंको यह हरै यह माहिषगूगल अश्विनीकुमारों ने कहाहै॥ तालकेश्वररस॥ हरताल के अभ्रकसरीखे पत्रेबनाय पीछे इन्हों को सांठीकेरसमें १ दिनतक खरलकरि करड़ा होनेपर टिकियाबनाय धूप में सुखावै पीछे सांठीके पंचाङ्गकी राखबनाय वह राख हांड़ीमें घालि तिसमें टिकरी धर ऊपर राख घालि दाबिकर सिकोरासे ढकि खामि कै सुखाय रक्खै पीछे हांड़ीको चुल्हीपै चढ़ाय निरंतर ५ दिन राततक तीव्र अग्निसे पकावै पीछे स्वांग शीतल होने पर १ रत्तीभर खावै ऊपर गिलोय का काढ़ा पीवै यह उपद्रव सहित बातरक्त को अठारह प्रकार के कुष्ठोंको फिरंगरोग आतशक बिसर्प मंडल पाम खाज बिस्फोटक बातरक्त बिकारों को हरै और इसका सेवने वाला नोन खटाई कडुवारस अग्नि धूप इन्हों को बर्जि देवै और नोन त्यागनेकी सामर्थ्य न हो तो सेंधानोन

खाय और मीठे रसको सेवै ॥ अमृतभल्लातकावलेह ॥ जलमें गेरेहुये डूबजावैं वे भिलावे श्रेष्ठ होयहैं और उन्हों के मुखका नाकू दूर करै ऐसे भिलावे १२८ तोले लेय फांककरि बीच का द्रव्य दूरकरि एकद्रोण पानी में चढ़ाय और गिलोय १२८ तोले लेय पूर्वोक्त पानीमें मिलाय काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकीरक्खै पीछे कपड़ा से छान शुंठि गिलोय बावची कौंचकेबीज नींब हड़ आंवला हलदी लालनिसोत मजीठ मिरच शुंठि पीपल अजमान सेंधानोन नागरमोथा दालचीनी इलायची नागकेसर पित्तपापड़ा तालीसपत्र बाला कालाबाला चन्दन गोखुरूकेबीज कचूर लाल चन्दन ये सब दो२ तोले लेय चूर्णकरि पूर्वोक्त में मिलावै पीछे इसको मट्टी के नये बरतनमें घालि रक्खै प्रभातके भोजन जीर्ण हुये पीछे यह अमृत भल्लातकावलेह ४तोले पानीके संगखावै और जिसकी प्रकृतिको सुहावै तिसको देवै अन्य को नहीं यह बातरक्त व बातरक्त विकारोंको संपूर्ण कुष्ठों को बवासीर को बिसर्प मंडल खाज बायु के बिकार लोहूके बिकार इन्होंकोहरै और इसका खानेवाला कसरत धूप अग्नि खटाई मांस दही स्त्री संग तेल की मालिश व मार्गगमन इन्होंको त्यागदेवै ॥ योगसारामृत ॥ शतावरि बलिया चिरमठी की जड़ बिदारा सांठी गिलोय पीपल असगंध गोखुरू येसब चालीस चालीस तोले लेय इन्होंकाचूर्ण बारीककरि चूर्णसे आधीमिश्री मिलाय शहद१२८तोले घृत ६४ तोले इन्होंकोमिलाय पीछे इलायची दालचीनी नागकेशर इन्होंकाचूर्ण ४तोले मिलाय पीछे अग्निबल देखिखानेसे नष्टेंद्रिय विक्लेंद्रिय बातरक्तक्षय कुष्ठ पित्त बातरक्तविकार और बातपित्तकफरोग इन्होंकोहरै और शरीरमें बलीपड़ैनहीं सफ़ेद बालहोवेंनहीं और यह योगसारामृत लक्ष्मी व कांतीको बढ़ावैहै॥ सर्वेश्वररस ॥ पारा १तोले सिंगरफ १तोले तांबाभस्म८तोला गंधक ८तोले इन्होंको बिजौरेकेरसमें खरलकरै पीछे कुचला आक धतूरा थोहर कनेर इन्होंकेरसोंमें सात२भावनादेय पीछे गोलाबनाय अग्नि से पसीनादेय बालुकायंत्रमेंरख दोदिनतकपकाय शीतलहोनेपै आधातोला मीठातेलियामिलाय पीपली १ तोले १रत्तीभर अथवा २

रत्तीभर खानेसे बातरक्तकोहरै और इसपै रक्तकोपकरनेवाले व पित्तलपदार्थोंको वर्जिदेवै ॥ अर्केश्वररस॥पारा १६तोले गंधक ४८तोले तांबाकीटिकड़ी १ तोले पीछे पारा गंधककी कजलीकरि बर्तन में घालि राखसे बर्तनको पूरणकरि पीछे बर्तनके मुखकोबंदकरि कपड़माटीदेय चुल्हीपरचढ़ाय २पहरतक तीव्रअग्निदेवै पीछे ठंढाहोने पर चूर्णकरि पीछे आककेदूधमें १२पुटदेय पीछे त्रिफला चीता का कड़ासिंगी इन्होंकेरसोंमें तीन२पुटदेय पीछे २ रत्तीभरदेनेसे बातरक्त मंडल शून्य बहरीकोहरै इसपै नोन खटाईको बर्जिदेवै बातरक्तमेंपथ्य ऊपरहोके जायतो तेललगाना सींचना उपनाहसहितमें प्रलेपन गम्भीरमें स्नेहपान आस्थापन और बिरेचन सबप्रकारकेमेंसुई जोंक सींगीवातुम्बीसे रुधिरका निकाल नासौबेरके धोयेहुये घीका लगाना भेंड़के दूधका सीचना जौ सांठी नीवार धान्य कमललाल धान्य गेहूँ चना मूंग मटर भेंड़ बकरी भैंस तथा गौका दूध लवा तीतर बटेर मुरगा आदि विष्कर अर्थात् पंजा से पृथ्वीको खोदकर खानेवाले पक्षी तोता पपीहा कबूतर चिड़ाआदि प्रतुद अर्थात् चोंचसे दाने को फोड़कर खानेवाले पक्षी पोईशाक केवैया बेतकी कोंपल पुनर्नवाका शाक बथुआ करेला चौराई पसरनि धतूरा पुराना कुम्हड़ा घीसंपाक पल्लव परवल अण्डीका तेल दाखसफ़ेद शक्कर मक्खन सोमलता कस्तूरी सफ़ेद चन्दन शीशम अगर देवदारु सरलबृक्ष इनके तेलका मलना चर्फ़री बस्तु ये सब बातरक्त रोगमें मनुष्यों को पथ्य है॥ अथ अपथ्य॥ दिनमें सोना आगकातापना कसरत घाम स्त्रीसङ्ग उड़द कुलथी रयास मटर खारका सेवन अण्डाके उत्पन्न और अनूपदेशके जीवोंका मांस विरुद्ध वस्तु दही ईख मूली मद्य कांजी कड़ुई वस्तु गर्म भारी तथा अभिष्यन्दी पदार्थ नोन सत्तू इनको बातरक्त रोगमें वैद्य न देवै ॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांबातरक्तप्रकरणम् ॥

ऊरुस्तम्भनिदान ॥ शीतल बस्तुको खानेसे गरम और पित्तलानी बस्तुके खानेसे सूखी भारी चिकनी बस्तुके खाने से दिन के सोने

से रात्रि के जागने से घनी भूख से अथवा थोड़े अजीर्ण में पीछे कही बस्तुओंके खानेसे कफमेदसे मिली बायु सो कुपित्तहोय पित्त को बिगाड़ि पुरुषके दोनों जङ्घाओंको स्तम्भित करदे और सूनी करदे याने यह जङ्घा और की है हालने चालने देवै नहीं और पीड़ा चिंता आलस्य छर्दि अरुचि ज्वर ये भी होवें पैरोंके उठाने में कष्ट होवै तिसे ऊरुस्तम्भ व आढ्यबात कहते हैं ॥ पूर्वरूप ॥ नींद बहुत आवै ध्यान लगिजाय कुछ ज्वरांश हो रोमांच होवै छर्दि होवै दोनों जांघोंमें पीड़ाहो ये लक्षण हों तो जानिये कि ऊरुस्तंभ रोग होवैगा ॥ ऊरुस्तम्भ लक्षण ॥ बात शंकावालोंको बिनाजाने सचिक्कीन इलाज करनेसे दोनोंपैर सोजावैं और उन्हींमें पीड़ाहोय बड़ेकष्टसे दोनों पगउठैं दोनों जंघामें पीड़ाहो धरतीमें पगधरते पीड़ाहो शीतरुपर्शकोजानैंनहीं काठकीसी जांघहोवै दूरी सी दीखै अन्य के से जांघ व पैर और जांघ दूसरे सरीखे मानैं ये लक्षण ऊरुस्तंभकेहैं असाध्यलक्षण ॥ जिस ऊरुस्तंभवाले रोगीके दाह और पीड़ाहोवै और शरीर कांपै वह मरजावै और नया ऊरुस्तम्भका इलाज करै ऊरुस्तम्भसामान्यचिकित्सा ॥ जो कफ को शमन करै और बायु को कुपित्त नकरै यह सब ऊरुस्तम्भमें औषधकरै। इसमें स्नेह फस्तवमन वस्तिकर्म जुलाब इन्होंको बर्ज्जि देवै जो इन्होंको सेवन करै तो कष्ट उपजै इस वास्ते सम्पूर्णकालमें स्वेदन लंघन रूक्षणइन्हों कोसेवै और आममेद कफ इन्हों की अधिकता होनेसे वायुको सम करै और ऊरुस्तम्भके आदिमें रूखा कफ नाशक इलाजकरै पीछे बातके नाशवास्ते चिकित्साकरै ॥ अन्न ॥ पुराने श्यामाकपुरानाकोदुपुरानेरानहरीक पुराने चावल जांगल देश के मांस शाक ये सब ऊरुस्तंभमें हितहैं और घृत नोन इन्हों को बर्ज्जि देवै और नोन इर्ज्जित बथुआके शाक की भाजी और पुराने चावल रूखा पदार्थ इन्होंके सेवनसे ऊरुस्तंभ शांतहोवै और रूखेपदार्थके सेवनसेबात का कोप और नींदका नाशहोवै तो स्नेह स्वेद कराय बातादि को शांतकरै और इस रोगीको झरनामें व शीतल जलवाली नदीमें व सुन्दर तालाब में बारम्बार तिरावै ॥ भल्लातकादि काढ़ा ॥ भिलावां

पीपल पिपलामूल इन्होंका काढ़ा बनाय शहद संयुत करि पीने से भयंकर ऊरुग्रहको हरे व पिपलीका चूर्ण गोमूत्र में मिलाय पीने से ऊरुग्रह शांतहोवे ॥ ग्रंथिकादिकाढ़ा ॥ पिपलामूल धामणा पीपल इन्होंका काढ़ा शहद संयुतकरि पीनेसे यह ऊरुस्तंभको हरे ॥ भल्लातकादिकाढ़ा ॥ भिलावां गिलोय शुंठि देवदारु सांठी दशमूल इन्हों का काढ़ा ऊरुस्तंभको हरे ॥ पुनर्नवादि काढ़ा ॥ सांठी शुंठि देवदारु हड़ भिलावां गिलोय दशमूल इन्होंका काढ़ा पीने से अथवा गोमूत्रयुत पीनेसे ऊरुस्तंभ शांतहोवे ॥ शेफालिकादिकाढ़ा ॥ निर्गुण्डी के पत्तोंके रसमें पीपलका चूर्ण मिलाय पीनेसे व कफ़नाशक औषधोंको सेवने से ऊरुस्तंभ शांतहोवे ॥ वचादिकाढ़ा ॥ बच अतीस कूट चीता देवदारु पाढ़ा मालकांगनी नागरमोथा स्वर्णक्षीरी कटैली इंद्रयव अमलतास मूर्वा कुटकी एरंड अरणी अक्रोड़ नींब चिकना असाणा सांखिणी हड़ बहेड़ा आमला सातला मिरच ये समभागलेय काढ़ा बनाय शहद संयुतकरि पीनेसेऊरुस्तंभ को हरै जैसेवृक्षको इन्द्रका बज्र तैसे और इन्होंके चूर्ण को शहद में मिलायखानेसे ऊरुस्तम्भ को हरै और इस काढ़ाके संगासिद्धमोदकको खानेसे ऊरुस्तंभ शांत होवै ॥ त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला चाव कुटकी इन्होंके चूर्णमें शहद मिलाय चाटनेसे व गोमूत्रमें गूगल मिलाय पीनेसे ऊरुस्तंभ जावै वृद्ध्यादितैल ॥ वृद्धि शुंठि देवदारु इन्होंको समभाग लेय चूर्ण करि गरमपानीके संग खाने से जल्दी ऊरुस्तंभ को नाशकरै ॥ त्रिफला चूर्ण ॥ त्रिफला कुटकी इन्होंका चूर्ण शहद में मिलाय चाटनेसे व कल्कु गरमपानीके संग षट्चरण चूर्णको खानेसे ऊरुस्तम्भजावै॥ शिलाजीतयोग ॥ शिलाजीत गूगल पीपल शुंठि इन्होंको गोमूत्र के संग व दशमूलके काढ़ाके संग खानेसे ऊरुस्तम्भ जावै ॥ ग्रन्थिकादिकल्क ॥ चाव हड़ चीता देवदारु इन्होंके कल्कमें शहद मिलाय खाने से ऊरुस्तम्भ जावै ॥ पिप्पल्यादि कल्क ॥ पीपली पीपलामूल भिलावां इन्होंके कल्कमें शहद मिलाय पीनेसे ऊरुस्तम्भ जावै॥ पीपलीयोग ॥ बर्द्धमान पीपलीको शहद व गुड़के संग खानेसे व जमींकंदकी मदिराको पीने से ऊरुस्तम्भ जावै गोमूत्रमें खार मि-

लाय पसीनालेनेसे रूखा अन्नखानेसे व सिरसम करंजुवा इन्होंको गोमूत्र में पीसि शरीर पै लेप करनेसे ऊरुस्तम्भ जावै ॥ ऊरुस्तम्भयोग ॥ असगंध आक इन्होंकी जड़ व नींबकी जड़ देवदारु शहद सिरसम बंबई की मिट्टी इन्हों को मिलाय गरम करि पिंडा बनाय बांधने से ऊरुस्तम्भ जावै ॥ ऊरुस्तम्भपैलेप ॥ शहद सिरसम बंबई की मिट्टी इन्हों को मिलाय लेपकरने से ऊरुस्तम्भ जावै ॥ कुष्ठादितैल ॥ कूट उत्तम धूप बाला सरल वृक्ष देवदारु नागकेशर रानतुलसी असगंध इन्हों के काढ़ा व कल्कमें सिरसमके तेल को पकाय शहद युक्त करि पीनेसे ऊरुस्तम्भ जावै ॥ सेंधवादितैल ॥ सेंधानोन ८ तोले शुंठि ८ तोले पीपलामूल ८ तोले चीताजड़ ८ तोले भिलावां ८८ तोले कांजी २५६ तोले तिलोंका तेल ६४ तोले मिलाय पकाय पीनेसे गृध्रसी ऊरुस्तम्भ संपूर्ण वातविकार इन्होंको शांत करै ॥ कटुतिक्ततैल ॥ बलिया नागबलिया पीपलामूल शुंठि ये सब आठ २ तोले ऊंटकटारा ३२ तोले इन्होंका कल्क बनाय करुआ तेल ६४ तोले दही ६४ तोले मिलाय तेलको सिद्धकरि बर्त्तनेसे ऊरुस्तम्भ जावै त्रिफलादिगूगल॥ हड़ बहेड़ा आमला निसोत जमालगोटा लघुनीली अमलतास ये सो २ तोले लेय कूट चारद्रोण पानी में काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाक़ी रक्खे पीछे तिसमें २०० तोले गूगल मिलाय फेर पकावै जितनेमें करड़ाहो उतने बार पकावै पीछे इसमें दालचीनी इलायची नागकेशर शुंठि मिरच पीपल त्रिफला तमालपत्र अजमान जीरा गजपीपली चीता सेरणी कालाजीरा कलौंजी अजमोद अमली आम्लवेतस कालानोन इन्हों को चार २ तोले मिलाय चूर्णकरै पीछे १० माशे की गोली बनाय १ हमेशा खानेसे ऊरुस्तम्भ ऊरुग्रंथी गंडमाला उदररोग ये शांत होवैं और इसी विधिसे शिलाजीत को भी युक्तकरै ॥ गुंजागर्भरसायन ॥ पारा १ तोले गंधक ४ तोले चिरमठी मीठा तेलिया निंबोली अरणीचार २ माशे जमालगोटा १ माशे इन्होंको जावित्री बिजौरा धतूरा काकमासी इन्होंके रसोंमें एक दिन तक खरलकरि गोलीबनाय २ रत्ती प्रमाण घृतके सङ्गखावै और हींग सेंधानोनके सङ्गखावै तो जल्दी

ऊरुस्तम्भको हरै इसमें मण्डमार चावलका पथ्यदेवै॥ लहसुनयोग॥ सुन्दर कुटाहुआ लहसुन ४ तोले अथवा २ तोले हींग जीरा सेंधानोन कालानोन शुंठि मिरच पीपल इन्हों का चूर्ण ४ तोले व २ तोले चूर्णके समान अरंडी का तेल मिलाय अग्नि बल विचारि खानेसे १ महीना तक सम्पूर्ण बातरोगोंकोहरै और एकांगबात सर्वांगबात ऊरुस्तंभ गृध्रसी कमर पीठ हाड़ इन्होंके बायुको व अर्दित बायुको अपतंत्रकको धातुगतज्वर जीर्णज्वर हाथपैरके शीतको हरै॥ ऊरुस्तंभ में पथ्य॥ रूखी सब बिधिस्वेदन कोदों लालधानयव कुलथी समावनकोदों प्राचीन सहिंजना करेला परवल लहसुनसुनिषशाक शाककेवैया बेतकीकोंपल नींबकेपत्ते शालिंच शाकबथुवा हड़ बैंगन गरमजल शम्याकशाक तिलकी खली मठा आसव मीठी कडुई चर्फरी और कसायली वस्तु दूधकासेवन गोमूत्र शक्तिकेअनुसार कसरत मोटीबस्तुका दबाना निर्मल कुण्डमें तिरना नदियों के धारके सन्मुख तिरना कफकाघटाना बातकारोकना यहऊरुस्तंभरोगमें पथ्यहै भारीशीतल चीकनाविरुद्ध अहित भोजन जुलाब स्नेहन बमनफस्त वस्तिकर्म ये सब ऊरुस्तंभके रोगोंमें अपथ्यहैं॥

इतिश्रीबेरीनिवासकराबिदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायांऊरुस्तंभप्रकरणम्॥

आमबातकर्मविपाक॥ जो अग्निहोत्रका नियमलैके त्यागदेवै सो आमबात रोगीहो तिसके दोष शांतिके वास्ते १०००० गायत्री जप करावै वैदिक उपचार पूर्वोक्त दोषशांतिके वास्तेतिलोंमें घृत मिलाय अग्निमें हवनकरै सोना व अन्नकादानकरै आप को गरीब मानै गायत्री का जप करावै बिष्णुका स्मरण करै ज्योतिःशास्त्राभिप्राय जिसके जन्मपत्रीमें आठवें स्थान में बृहस्पतिहो वह आमबातरोगीहो तिस बृहस्पतिके दोषशांतिके वास्ते पूर्वोक्त जपदानादिकरावै॥ आमवातनिदान॥ बिरुद्ध अन्नादिक खानेसे मंदाग्नि वालेपुरुष के कुपथ्य से और चिकने अन्नके खानेसे और बिरुद्धचेष्टाकरने से और मार्ग में कभीभी गमन नहीं करनेसे कसरत करनेसे वायु करके प्रेराहुआ आमकफ स्थानमें जाय ज्यादा विदग्धहुआ धमनी नाड़ि-

यों को प्राप्तहो फिर बातपित्तकफसे दूषित अन्नकारस नानावर्ण और पिच्छलरूपनाड़ी के स्रोतोंसे भिरै और बातकफ दोनों एक बार कोपको प्राप्तहों त्रिकसंधिमें प्रवेश होय शरीर को स्तब्धकरै तिसे आमबातकहिये॥ आमबातकासामा० ॥ अंगटूटै अरुचि होय तृषालगै शरीरभारीहो आलस्य आवै ज्वरहो अन्नपकै नहीं अंगोंमें सूजनहो येलक्षण आमबात के जानिये॥ आमवातकालक्षण॥ कोप को प्राप्त हुआ जो आमबात वह सबरोगोंमें कष्टसाध्य होय है और इसका दोषलिखतेहैं हाथपैर शिर टकना त्रिकस्थान और जांघोंकी संधियोंमें प्राप्तहोकर पीड़ाहो और इन्हीं स्थानोंमें सोजाहो और बिच्छूके डंकके समान पीड़ाहो और अग्निमंद होजावै उत्साह जातारहै अरुचिहो शरीरभारीरहै मुखका स्वाद जातारहै मूत्र बहुत उतरै कुक्षिमें कठिनता होके शूलहो नींद आवै नहीं वमनहो तृषा अधिक लगै भ्रम और मूर्च्छाहो मल उतरै नहीं शरीर जड़ होजाय आंतबोलाकरै अफाराहो और बातव्याधिके कहेहुये और भी उपद्रवहों और जिस्में पित्तअधिकहो ऐसा आमबात में दाहहो और पीलापन हो और बाताधिक आमबात में शूलहो कफाधिक में जड़ताहो शरीरभारीरहै खाजचलै॥ साध्यासाध्य विचार॥ एक दोषका आमबात साध्य दो दोषका जाप्य और तीनदोषका संपूर्ण देहमें बिचरनेवाला सोजाकष्ट साध्यहोयहै॥ सामान्यचिकित्सा॥ लङ्घन पसीनालेना कडुवेदीपन पदार्थ जुलाब स्नेह पान वस्तिकर्म रुक्ष पसीना बालूरेतकी पोटलीकासेंक और स्नेह रहित पींड़ी का बांधना येसब आमबातमें श्रेष्ठहैं॥ रास्नादि काढ़ा॥ रास्ना देवदारु अमलतास शुंठि मिरच पीपल अरण्डजड़ सांठी गिलोय इन्होंके काढ़ामें शुंठिका कल्क मिलाय पीनेसे आमबात जावै॥ दूसराकाढ़ा॥ रास्ना गिलोय शुंठि एरण्ड जड़ दारुहल्दी इन्हों का काढ़ा बनाय एरण्ड का तेल मिलाय पीनेसे आमबात जावै॥ तीसरा काढ़ा॥ रास्ना गिलोय अमलतास देवदारु दशमूल इन्द्रयव इन्होंके काढ़ा में अरण्डीतेल मिलाय पीनेसे आमबात शांतहोवै॥ महौषधादिकाढ़ा॥ शुंठि गिलोय इन्होंके काढ़ासेवनेसे पुराना आमबात जावै॥ महा-

रास्नादिकाढ़ा॥ रास्ना ३ भाग अरण्डी जड़ बासा धमासा कचूर दारुहल्दी बलियार नागरमोथा शुंठि अतीस हड़ गोखुरू अमलतास सौंफ धनियां सांठी असगन्ध गिलोय पीपल भिदारा शतावरी बच कुरंटा चाव दोनों कटैली ये एक एक भागलेइ इन्हों का काढ़ा बनाय अष्टमांश बाक़ीरक्खै पीछे इसमें शुंठिका चूर्ण मिलाय अग्नि बलदेखि पीनेसे सम्पूर्ण बातरोग आमबात पक्षाघात लकुआ कम्पबायु कुब्जकबायु संधिगतबायु गोड़ा जांघों को पीड़ा गृध्रसी हनुग्रह ऊरुस्तम्भ बातरक्त विश्वाची क्रोष्टुशीर्षबायु हृद्रोग बवासीर योनिरोग वीर्य्यरोग मेढ्रगतबायु बंध्यारोग इन्होंको शांत करै औ स्त्रियोंको गर्भदेवै इससे उपरांत अन्य औषध नहीं है यह महारास्नादिकाढ़ा ब्रह्माजीने कहाहै॥ रास्नादिकाढ़ा॥ रास्ना अमलतास देवदारु घंटोली गिलोय गोखुरू अरण्डकी जड़ इन्होंके काढ़ामें शुंठिकाचूर्ण मिलाय पीनेसे अति भयंकर आमबात जावै जैसे प्रकाशमान दीपक से अन्धकार तैसे॥ रास्नाद्वादशकाढ़ा॥ रास्ना गिलोय शतावरी बासा अतीस हड़ शुंठि धमासा एरण्डजड़ देवदारु बच नागरमोथा इन्होंका काढ़ा पीनेसे आमबात कटि गोड़ा त्रिक जांघ पैर टांकना इनअङ्गोंके बायोंको हरै॥ रास्नासप्तकाकाढ़ा॥ रास्ना गिलोय अमलतास देवदारु गोखुरू एरण्डजड़ सांठी इन्होंके काढ़ा में शुंठिकाचूर्ण मिलाय पीनेसे जांघ गोड़ा पीठ त्रिक पसली इन्हों का शूलजावै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ शुंठि गोखुरू इन्होंका काढ़ा प्रभात में सेवनकरनेसे आमबात व कटिशूल को हरै और पाचकहै और पीड़ाको नाशैहै॥ सांठ्यादिकाढ़ा॥ कचूर शुंठि हड़ बच देवदारु अतीस गिलोय इन्होंकाकाढ़ा पाचनरूप आमबातको नाशै इसपैरूखा भोजनकरावै॥ पिप्पल्यादिकाढ़ा॥ पीपल पीपलामूल चाव चीता शुंठि इन्होंका काढ़ा पीनेसे भयङ्कर बातजावै॥ दशमूलादिकाढ़ा॥ दशमूल के काढ़ामें व शुंठिके काढ़ामें अरण्डी का तेल मिलाय पीनेसे कटि कूखि बस्ति इन्होंका शूल जावै॥ अजमोदादिचूर्ण॥ अजमोद बायविड़ंग सेंधानोन देवदारु चीता अजमोद पीपलामूल सौंफ पीपल मिरच ये प्रत्येक दश२माशे लेय छोटीहरड़ैं ४तोले शुंठि ८॥तोले

भिदारा८॥तोले इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीके सङ्ग लेनेसे सोजादूर हो और पीड़ा सहित आमबातको नाशै संधिपीड़ा गृध्रसी कटि पीठ गुदाजांघ इन्होंकी पीड़ाकोहरै तूंबीबायु मतूनीबायु बिश्वाचीबायु कफ बातके रोग इन्होंको दूरकरै अथवा इसचूर्णके बराबर गुड़ मिलाय गोलीबांधि बरतै ॥ पंचसमचूर्ण ॥ शुंठि हरड़ैं पीपल कालानोन निसोत ये सम भाग लेय बारीक चूर्णकरि खानेसे शूल अफारा उदर रोग आमबात बवासीर ये जावैं ॥ पंचकोलचूर्ण ॥ शुंठि मिरच पीपल चाव चीता इन्होंके चूर्णको गरमपानीके संग खानेसे मंदाग्नि शूल गुल्म आम कफ अरुचि इन्हों को हरै ॥ त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला शुंठि इन्हों का बारीक चूर्णकरि मस्तु कांची तक्र पेयामांस रस इन्हों में एकको ऐसेकी सङ्ग लेनेसे आमबातको व संधिगत सोजाको हरै॥ आरग्बधपत्रचूर्ण॥ अमलतासके पत्तोंको सिरसमके तेलमेंभूनि चावलों में खानेसे आमबात जावै ॥ पुनर्नवादिचूर्ण ॥ सांठी गिलोय शतावरि मुंडी कचूर देवदारु शुंठि इन्होंके चूर्णको कांजीकेसङ्ग लेनेसे दुष्टआमबात व गृध्रसी शांतहोवै॥ त्रुट्यादिचूर्ण ॥ छोटीइलायची लौंग शुंठि बच पीपल बायबिड़ंग नागरमोथा हरड़ैं तमालपत्र गूगल ये सम भागलेय और निसोत ३ भागलेय और सबोंके बराबर मिश्री मिलाय चूर्ण तैयारकर खाने से बिगड़ेहुये आम पाड़ि रोग शांत होवै॥ अलंबूषादिचूर्ण ॥ गोरख मुण्डि १ भाग गोखुरू २ भाग हरड़ैं ३ भाग बहेड़ा ४ भाग आमला ५ भाग शुंठि ६ भाग गिलोय ७ भाग इन सबों के बराबर निसोत मिलाय चूर्ण करि मदिरा मस्तु तक्र कांजी गरमपानी इन्होंमें एकको एसाके संग खानेसे आमबात सोजा बात रक्त ये शांत होवैं ॥ भल्लातादिचूर्ण ॥ भिलावां तिल हरड़ैं इन्हों के चूर्ण को गुड़में मिलाय खाने से व शुंठि का चूर्ण गुड़में मिलाय खानें से आमबात व कटिशूल शांत होवै ॥ वैश्वानरचूर्ण॥ सेंधानोन २ भाग जवाखार २ भाग अजमोद २ भाग शुंठि ५ भाग हरड़ैं १० भाग इन्होंका बारीक चूर्ण करि मस्तुकांजी गोमूत्र मदिरा गरम पानी इन्हों में एकको एसासंगलेने से आमबात गुल्म हृद्रोग वस्तिरोग जानुरोग प्लीहा शूल अफारा बवासीर इन्होंको शांतकरै

है और यह वैश्वानरचूर्ण बायुको अनुलोमन करैहै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग चाव सनियारीनोन शुंठि मिरच ज़ीरा पुष्करमूल ये भाग बृद्धि सेलेय खानेसें आमबातको हरै ॥ चित्रकादिचूर्ण ॥ चीता कुटकी पाढ़ा इंद्रयव अतीस गिलोय देवदारु बच नागरमोथा शुंठि अति बिष हरड़ैं इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे आमबातको हरै ॥ नागरचूर्ण ॥ शुंठिका चूर्ण १० माशे भर कांजीके सङ्गखाने से आमबातको व कफबातको शांतकरै ॥ अजमोदादि मोदक व चूर्ण ॥ अजमोद मिरच पीपल बायबिड़ंग देवदारु चीता शतावरि सेंधा-नोन पीपलामूल ये प्रत्येक चार २ तोलालेय शुंठि ४० तोला बि-दारा४०तोला हरड़ैं २०तोला इन्होंका बारीक चूर्णकरि बराबरके गुड़ में मिलाय गोलीबनाय व चूर्णबनाय गरमपानी के सङ्ग बरतने से यह आमबातके बिकारोंको जलदी शांतकरैहै और अफाराशूल तूनी प्रतितूनी गृध्रसी गुल्म कटि पीठ इन्होंका फुरना हाड़बायु जांघबायु सोजा संधिबायु आमबात बिकार इन्होंको हरै जैसे सूर्य्य अँधेरेको तैसे ॥ सिंहनादगूगल ॥ सोनामाखी १२ तोला त्रिफला ४ तोला गन्धक ४ तोला गूगल ४ तोला अरण्डीतेल १६ तोला इन्होंको लोहाकेपात्रमें वैद्यजन पकाय इसको घृत तेल मांसरस इन्होंमें एक कोई के सङ्ग शक्तिअनुमान खाने से बातपित्त कफ लंगड़ापना पांगला दुर्जयश्वास पांचप्रकार की खांसी कुष्ठ बातरक्त गुल्मशूल उदररोग दुःसाध्य आमबात इन्होंको नाशकरै इसके नित्यसेवने से बुढ़ापाजावै और बलीपड़ै नहीं और सफेद बाल होवैंनहीं इसमें सांठीचावलोंको खावै यह सिंहनाद रोगरूपी हाथीको नाशकरै॥ हरी-तकीगूगल ॥ हरड़ैं शुंठि भिदारा ये समभागलेय और गूगलदोगुना लेय पीछे इन्होंको अरण्डीके तेलमें खरल करि १ दिन तक खाने से आमबातको हरै ॥ योगराजगूगल ॥ चीता पिपलामूल अजमान सौंफ़ बायबिड़ंग अजमोद जीरा देवदारु चावल इलायची सेंधा-नोन कूट रास्ना गोखुरू धनियां त्रिफला नागरमोथा शुंठि मिरच पी-पल दालचीनी बाला जवाखार तालीसपत्र तमालपत्र ये समभाग लेय चूर्णबनाय और बराबर का गूगल मिलाय घृतमें खरल करि

चिकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे अनुमानके माफिक खावै ऊपर मनोबांछित भोजनकरै यह प्लीहा गुल्म उदर रोग अफारा व बवासीर इन्होंको हरै और अग्निको दीपनकरै और तेजबल इन्होंको बढ़ावै यह आमबातको हरै और इसको १ दिनतक खरलकरि बरतै॥ सिंहनादगूगल ॥ बारीक किया गूगल ६४ तोला सिरसम का तेल ४ तोला घृत ४ तोला हरड़ें ६४ तोला बहेड़ा ६४ तोला आमला ६४ तोला इन्होंको १५४८ तोले पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा रक्खे पीछे फिर अग्निपर पकाय शुंठि मिरच पीपल हरड़ें बहेड़ा आमला नागरमोथा बायबिड़ंग देवदारु गिलोय चीता निसोत जमालगोटाकी जड़ चाव ज़मींकन्द येसमान भागलेय पारागन्धक दो दो भाग इन्होंकी कजलीकरि पीछे जमालगोटा १००० काअंकुर दूर करि और भीतरकी जीभको दूरकरि शोधके पूर्वोक्तमें मिलाय चूर्णतय्यारकरि २ माशे खावै ऊपर गरम पानीको पीवै यह अग्नि को दीपनकरै यह बड़वानलके समानहै धातुओंकोबढ़ावै बुद्धिबलको बढ़ावै और आमबात शिरोबात ग्रंथिबात भगन्दर गोड़ा जांघ हाड़ कटि इन्होंका बात पथरी रोग मूत्रकृच्छ्र भग्नवस्ति बात पेटबात आम्लपित्त कुष्ठ प्रस्वेद पसीना आना पांचप्रकारकी खांसी श्वास क्षय विषमज्वर श्लीपद पक्तिशूल पांडुरोग कामला सूजन अन्त्रबृद्धि शूल बवासीर इन्होंको हरै यह सिंहनाद गूगल अमृत के समानहै ॥ अभयादिगुटी ॥ हरड़ें सेंधानोन अमलतास गड़म्भी की जड़ शुंठि गड़ुम्भाकी मज्जा इन्होंको खरलकरि लोहाके पात्रमें घालि चूल्हेपै चढ़ाय मन्द मन्द अग्निसे पकाय बेरकी गुठलीके समान गोली बनाय गरमपानीके सङ्ग खानेसे आमबातका नाशहो इसपै दही चावलका पथ्य ले और इन गोलियोंको दोष बिचार के देवै॥ एरंडादिगुटी ॥ एरंडका बीज व मज्जा शुंठि मिश्रीये सम भाग लेय गोली बनाय खानेसे प्रभातके समय आमबात जावै ॥ हारीगुटी ॥ पारा गन्धक लोहभस्म तांबाभस्म तूतिया सुहागाखार सेंधानोन ये समभागलेय चूर्णकरै और इन्हों से दुगना गूगल लेय गूगलसे चौथा हिस्सा त्रिफलाका चूर्णलेय और इसीके समान चीताकाचूर्ण

लेय इन्होंको घृतमें खरलकरि दोमाशाकी गोलीबनाय खावै ऊपर त्रिफलाका जलपीवै यह गोली आमबात को हरै यह गोली पाचनीय और भेदिनी है और आमबात बिकार गुल्मशूल पेटरोग यकृत प्लीहा आष्ठीला कामला पांडु हलीमक आम्लपित्त सोजा श्लीपद अर्बुद ग्रंथी शूल शिरशूल गृध्रसी बातरोग जलगंड गंडमाला कृमिकुष्ठ इन्होंको हरै ॥ एरंडयोग ॥ एरण्डके बीजों को शोधि पीसि दूधमें खीरबनाय खानेसे आमबात कटिशूल गृध्रसी इन्होंको हरै ॥ एरण्डयोग ॥ गजेन्द्ररूप आमबातको शरीररूपी बनमें बिचरनेवाले को अरण्डीका तेलरूपी सिंह हरै है ॥ हरीतकीयोग ॥ अरण्डी के तेलमें हरड़ोंका चूर्ण मिलाय खावै तो आमबात अन्त्रबृद्धि गृध्रसी ये जावें ॥ अहिंस्रादिपिंडी ॥ अहिंस्राकोवीकीजड़ सहोंजनाकीजड़ सांपकी वंबईकी माटी इन्होंको गोमूत्र में पीसि पिंडा बनाय बांधनेसे आमबातशांतहोवै ॥ पानी ॥ आमबातमेंप्यास उपजें तो पञ्चकोलोंकाकाढ़ा देनाहितहै ॥ एरण्डमूलयोग ॥ एरण्डकीजड़ त्रिफला गोमूत्र चीताकी जड़ मीठा तेलिया इन्होंका चूर्णकरि घृतके सङ्ग खानेसे आमबात दूरहो ॥ रसोनयोग ॥ लहसन ४ तोले हींग शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन जीरा कालानोन बांयबिड़ंग इन्होंको तेलमें मिलाय प्रभात में एकतोलाभर खानेसे आमबात शांतहोवै ॥ पारदभस्मयोग ॥ पारा एक भाग रांग २ भाग इन्हों को सिकोरा में घालि १२ पहर तक अग्नि में पकाय भस्म करि पीछे नींब के सोंटा से बारम्बार रगड़ि तैयार करै ऐसे पीले रङ्गकी भस्म होवै इसको रोगोक्त अनुपानोंके सङ्ग खावै यह उत्तम वैद्यसे ग्रंथकारको नुसखा मिलाहै इसको वैद्य लोग गुप्तरक्खैं ॥ आमबातविध्वंसरस ॥ पारा ४ भाग गन्धक १ भाग इन्होंसे षोड़शांश मीठातेलिया इन्होंको चीताके काढ़ामें खरलकरि १ बल्लप्रमाणदेनेसे बातरोग शांतहोवै और अपस्मार उन्माद सर्वांगपीड़ा एकांगबात आमबात हनुस्तम्भ शीत इन्होंको हरै ॥ बातारिरस ॥ पारा गन्धक त्रिफला चीता गूगल ये क्रमबृद्धि से लेय इन्होंको अरण्डके पत्तोंकेरसमें खरलकरि इसको १ तोला अरण्डी के तेलके सङ्गलेवै ऊपर गरमपानीपीवै यह आमबातको हरै इसपर

दूध मूंगको बर्ज्जि देवै ॥ उदयभास्कररस॥ पारा गन्धक शुंठि मिरच पीपल दोनोंखार पांचोंनोन सुहागाखार ये समभागलेय इनसबोंके तुल्य जमालगोटा लेय बिजौराके रसकी भावनादेय सुखाय महीन चूर्णकरि २ रत्ती प्रमाण देनेसे आमबातको नाशै इसपै गौकादूध पथ्यहै व मूंग दूधदेय और अन्नको बर्ज्जै जबतक आमकासोजारहै॥ शतपुष्पादिलेप ॥ सौंफ बच शुंठि गोखुरू बरणाकी छाल सांठी देव-दारु कचूर मुंडी खीप अरणी मैनफल इन्हों को सूक्ष्म व कांजी में पीसि गरम २ लेप करनेसे आमबात शांतहोयहै ॥ रसोनादितैल ॥ दही मस्तु गुड़ दूध उड़दकी पीठी थोरमगाल लहसुन ये ४००चार सै २ तोलेलेय इन्होंका एकद्रोणभरपानीमें काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाक़ी राखि कपड़ासे छानि तांबा के पात्रमें घालि अग्निपै पकाय तिसमें२५६तोलेअरंडीकातेलमिलाय और हड़ बहेड़ा आमलाशुंठि मिरच पीपल हींग इलायची चीताकी जड़ मनियारी नोन काला-नोन बायबिड़ंग अजमान पिपलामूल इन्हों का चूर्णकरि मिलाय तेलको सिद्धकरि बर्त्तनेसे आमबात शांतहोवै ॥ रसोनासव ॥ लहसन ४०० तोले तिल १६ तोले हींग शुंठि मिरच पीपल जवाखार साजीखार पांचोनोन सौंफ कूट पिपलामूल चीता अजमोद अज-मान ज़ीरा ये चार चार तोले लेय इन्होंका बारीक चूर्णकरि पीछे इन सबोंको घीके चीकने बर्त्तन में घालि मुख बंदकरि अन्नके भरे हुये कोठेमें १६ दिन तक दाबदेवै और कोई के मतमें इस आसव में ३२तोले अरंडी का तेल ३२ तोले कांजी भी मिलावै पीछे बर-तनको काढ़ि १ तोलाभर आसवको खावै ऊपर पानी व मदिरा पीवै यह आमबातको व सर्बांग बातको व मृगीरोगको व मंदाग्नि खांसी श्वास ज्वर इन्हों को नाशै ॥ लहसुनरस ॥ लहसुन का रस १ तोला गौका घृत १ तोला इन्होंको मिलाय पीने से आमबात शांत होवै जैसे अग्निसे रूई॥ दूसरारसोनासव ॥ लहसन का कल्क ४०० तोले तिलोंका कल्क २००तोले इन्होंको गौके तक्रके पात्रमें घालि और तक्रभी घालि रक्खै पीछे शुंठि मिरच पीपल धनियां चाव चीता गज-पिपली अजमोद दालचीनी इलायची पिपलामूल ये चार २ तोले

खांड़ ३२ तोले जीरा २० तोले स्याहजीरा १६ तोले राई १६ तोले हींग ४ तोले पांचोनोन २० तोले अदरखका रस १६ तोले घृत ३२ तोले तिलोंका तेल ३२ तोले कांजी ८० तोले श्वेतशिरसम १६ तोले मुलहठी ३२ तोले इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्त बर्त्तनमें घालि मुंहबंद करि अन्नके भरेहुये कोठा में दाबि १२ दिन पीछे काढ़ि प्रभातमें अग्निबल बिचार खावै ऊपर मदिरा व कांजीका अनुपान करै और जीर्णहोनेपर मनोबांछित भोजनकरै दही पीठी बर्ज्जित इसको १ महीनातक सेवनसे सर्बब्याधि जावे और इसके सेवनसे ८० प्रकार के बायुरोग ४० प्रकार के पित्तरोग २० प्रकार के कफ रोग नाशहोवैं और योनि शूल कुष्ठ भगंदर प्रमेह उदररोग बवासीर गुल्म क्षयी इन्होंको हरै और रुचि बल को बढ़ावै॥ वृहत्सैंधवादि तेल॥ सेंधानोन हरड़ै रास्ना सौंफ अजमान साजीखार मिरच कूट शुंठि कालानोन मनियारीनोन बच अजमोद जीरा पुष्करमूल मुलहठी पीपली ये दो २ तोले लेय बारीक चूर्णकरि पीछे ६४ तोले अरंडीका तेल सौंफका काढ़ा ६४ तोले कांजी १२८ तोले दही का मस्तु १२८ तोले इन्होंको मिलायमंदअग्नि से पकाय तेलको सिद्ध करि पीनेसे व मालिशसे बर्त्तनेसे आमबात जावै और इसको बस्ति कर्म में भी बर्तै और यह जठराग्नि को बढ़ावै और बातरोग वंक्षण स्थान का शूल कटि गोड़ा जांघ संधि इन्होंके शूल हृदयशूल पसली शूल कफरोग अन्यबातरोग इन्होंको नाशकरै॥ एरंडतेल॥ अरंडीके फलोंके तेलको पीनेसे कटिशूल शांतहोवै॥ शुंठिघृत॥ शुंठिका चूर्ण दूध इन्होंमें सिद्धकिया घृत पुष्टिकरैहै और दही शुंठि इन्होंमें सिद्ध किये घृतको खानेसे बिसमूत्रप्रतिबंध नाशहोवे और दहीका मस्तु शुंठि में सिद्धकिये घृतको खानेसे अग्नि दीपन होवै और कांजी शुंठि में सिद्धकिया घृतको खानेसे अग्निबढ़ै और आमबात नाश होवै॥ शुंठिखण्ड॥ शुंठि ३२ तोले घृत १६ तोले दूध २५६ तोले मिश्री २०० तोले त्रिकुटा दालचीनी इलायची तमालपत्र ये चार २ तोले इन्हों का चूर्ण करि अग्निबल बिचारि खानेसे आमबात जावै और धातु बढ़ै बल उमरकी वृद्धिहोवै और बली पड़ैनहीं बाल सफेद होवैं

नहीं॥ दूसराप्रकार॥ शुंठि ४००तोले घृत ८० तोले दूध ८१९२ तोले मिश्री २०० तोले शुंठि मिरच पीपल दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेसर पीपलामूल कालाअगर जावित्री जायफल कचूर पाषाणभेद तांबाभस्म रांगाभस्म सोनामाखीभस्म मंडूर लोहकांत ये चार २ तोले लेय मिलाय मन्द २ अग्निपर पकाय लेहबनाय खानेसे बलबर्ण उमर इन्होंको बढ़ावै और बली पड़ैनहीं बालसफ़ेद होवैंनहीं और आमबातको हरै और सौभाग्य को बढ़ावै॥ मेथीपाक॥ मेथी ३२ तोले शुंठि ३२ तोले इन्होंका चूर्णकरि कपड़ासे छानि व दूध २५६ तोलाभरमें घृत ३२ तोले मिलाय जब तक करड़ा होवै तबतक पकाय हौले २ तय्यार करै पीछे इसमें मिश्री २५६ तोले मिलाय अग्निपर से उतारै पीछे मिरच पीपल शुंठि पीपलामूल चीता अजमान जीरा धनियां कलौंजी सौंफ जायफल कचूर दालचीनी तमालपत्र नागरमोथा ये सब चार २ तोले लेय शुण्ठि ६ तोले मिरच ६ तोले इन्होंका चूर्णकरि मिलाय तय्यारकरैयहमेथी पाक ४ तोले खावै और अग्निबलको बिचारै यह आमबातको व सब बातरोगोंको शांतकरै और त्रिषमज्वरको व पांडुरोगको व कामलाको व उन्मादको व अपस्मारको व प्रमेहको व बातरक्तको व आम्लपित्तको व शिरकी पीड़ाको व नासिकाके रोगको व नेत्ररोग को व प्रदरके सूतिकारोगको हरै संशयनहीं यह शरीरको पुष्ट करै है और बलबीर्यको बढ़ावै है॥ सौभाग्यशुंठिपाक॥ शुण्ठि ३२ तोले घृत ८० तोले गौकादूध १२८ तोले खांड़ २००तोले शुंठि मिरच पीपल दालचीनी इलायची तमालपत्र ये चार २ तोले मिलाय स्नेह विधिसे पाकबनाय तय्यारकरै यह शुंठि रसायन व सौभाग्य शुंठि आमबातको हरै और कांतिको बढ़ावै और धातुको बढ़ावै और उमरको बढ़ावै और बली पड़नेदेवै नहीं और बालोंकोसफ़ेद होने देवै नहीं और बन्ध्यापन को हरै॥ शुंठ्यादिपुटपाक॥ शुंठिको अरंडके पत्तोंके रसमें पीसि पुटपाककी विधिसे पकाय रसनिचोड़ि शहदमिलाय चाटनेसे आमबातकी पीड़ाशांतहोवै॥ आमबातपथ्य॥ रूखा स्वेदन लंघन स्नेहपान बस्तिकर्म लेप विरेचन गुदाकी वर्ती

एकसालके उत्पन्न धान तथा कुलथी पुराना मद्य जंगली जीवोंका मांस बात तथा कफकीनाशक सबवस्तु मठा पुनर्नवा अरंडीकातेल लहसुन परवल शालिंचशाक करेला बैंगन सहोंजना गरमजल आक गोखुरू भिधारा भिलावां गोमूत्र अदरख कडुये तीखे तथा दीपन पदार्थ ये सब आमबातके रोगीके लिये हितहैं ॥ इतिपथ्यम् ॥ अथअपथ्यम् ॥ दही मछली दूध पोईशाक उड़दकाचून बुराजल पूर्वका पवन विरुद्ध भोजनअहित बस्तु वेगका रोकनाजागना विषमभोजन भारी तथा अभिष्यंदी बस्तुओंको आमबातका रोगीत्याग देवै ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरबिदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायां
आमबातप्रकरणम्समाप्तम् ॥

अजीर्णशूलकर्मविपाक ॥ जो ब्राह्मण होके शूद्रके व दुर्वृत्त ब्राह्मणोंके अन्नको भोजन करै वह अजीर्णी व शूल रोगी होवै ॥ प्लीहशूल ॥ जो अपने विश्वास करनेवालेको विषदेवै वह प्लीहारोगीहोवै॥ पेटशूल ॥ जो वेदपाठी ब्राह्मण कछु याचनादि करै दमादि युत हो ऐसे ब्राह्मणको बुलाय दानदेवै नहीं वह पेटशूली व आध्मानरोगी होवै ॥ शमन ॥ रोगकी शांतिवास्ते कृच्छ्रातिकृच्छ्र चांद्रायणव्रतको करै ॥ अरुचिशूल ॥ जो द्रव्यपात्र होके श्रद्धाहीन हो और दानदेवै नहीं व तमोगुणसे दान करै वह अरुचि रोगी व शूलरोगी होवै ॥ शमन ॥ रोगको बिचारिचांद्रायण व कृच्छ्रचांद्रायण ब्रत व प्राजापत्यब्रत व हवन आदि कर्म ये सब करानेसे रोग शांतहोवै व जो गौ ब्राह्मण इत्यादिको मारै वह दूसरे जन्ममें शिरो रोगी व कर्ण रोगी व शूलरोगी व अरुचिरोगी होवै ॥ शमन ॥ इस रोगकी निवृत्ति वास्ते १ बर्षतक व २ बर्षतक व ३ बर्षतक घृतब्रतकरिअंतमें गौ सोनाका दानकरै ॥ कटिशूलकर्मविपाक ॥ जो गौ बैल पै सवारी करै वह कटिशूल रोगीहोवै इसकी शांति वास्ते चांद्रायण व कृच्छ्र चांद्रायण व कृच्छ्रातिकृच्छ्र चांद्रायण ब्रतकरै और सूर्यके मंत्र को जपकरै ॥ कर्णशूल ॥ जो पिता माताके मैथुन को सुनै वह कर्णशूलीहोवै व बहरा होवै व उसके कपाल में असह्य शब्द उत्पन्न

होवै ॥ शमन ॥ शूलकी शांतिकेअर्थ २० तोला सोना कुटुंबीब्राह्मण कोदेवै और विष्णुदेवताके मंत्रोंका जापकरै ॥ हस्तशूल ॥ जोपूर्वजन्म में द्विजहोके नास्तिक होजावै और सन्ध्या कर्म को त्याग देवै वह हस्तशूली होवै इसकी शांति वास्ते सोना १२ तोले भर दानदेवै॥ शमन ॥ हस्त शूलकी शांतिवास्ते अपनी शक्तिके अनुसारब्राह्मणों को भोजनदेय सोना दक्षिणादेवै पीछे सूर्यमंत्रका जापकरै ॥ नयन-शूल ॥ जो स्त्रियोंको नंगी देखै व सूर्य्य को उदयहोते व अस्तहोते देखै वह नेत्ररोगी होवै वह दिशाओंको देखनेमें समर्थ होवैनहीं ॥ शमन ॥ वर्चोमेदेहि इस मंत्रकोजापकरै १०००८ अथवा वय सु-पर्णा इस मंत्रको पढ़िकरि अभिषेककरै ॥ शूलेकर्मविपाक ॥ जोदूसरे को दुःखदेनेकी इच्छाकरै वह शरीर से माड़ाहो व शूलरोगी होवै इसकी शांतिवास्ते अन्नकादान रुद्रमन्त्रका जापकरै ॥ शूलनिदान ॥ बायुपित्त कफ सन्निपात आम इन भेदोंसे पांचप्रकारके और द्वंद्वज भेदोंसे तीन प्रकारके ऐसे शूल आठ प्रकारके होहैं इन सब शूलों में प्रायताकरि बायु प्रधानहै ॥ बातशूललक्षण ॥ खेदसे घोड़े आदिके दौड़ानेसे अति मैथुनकरनेसे बहुत जागनेसे जलादिक के अत्यन्त पीने से मटर मूंग अड़हर कोदो और सूखीबस्तु इन्हों को ज्यादा खानेसे अजीर्णमें भोजन करनेसे चोटलगनेसे कषैली तीखी कड़वी औषध भीजाअन्न विरुद्धबस्तु सूखामांस इन्होंके खानेसे सूखेशाक के खाने से और मलमूत्र मैथुन इन्हों के बेग को रोकने से और अधोबायुके रोकनेसे शोकलङ्घनके करनेसे बहुत हँसनेसे बायु बढ़ करि हृदय दोनोंपसली मुखसंधि इन स्थानों में शूल चलावै और अजीर्णमें प्रदोष में संध्या समयमें बादलों के होनेमें शीतकाल में बहुत शूलहोवै बारम्बार थँभजावै और फिर चलनेलगै मलमूत्र रुकजावै शूलचलै पीड़ा बहुतहोवै ये लक्षण बातशूलकेहैं यह प-सीना मालिश मर्दन इन्होंसे और चीकने गरम भोजनसे शांतहोवै है ॥ बातशूलचिकित्सा ॥ बातशूल को जानकरि स्नेह स्वेदनसे शांत करै और खीर खिचड़ी चीकना भोजन मांसका भोजन इन्हों से बायुका उपचार करै और बायु शीघ्रकारीहै इसवास्ते इसको जल्दी

जीतै और बहुत करके बायु शूलमें पसीनादेय शांतकरै॥ वातशूलमें यूष॥ अरंडीका तेल संयुक्त कुलथीका यूष बनाय तिसमें शुंठि मिरच पीपल लावा तीतरका मांस हींग कालानोन अनार की छाल इन्होंका चूर्ण मिलाय पीनेसे बायुशूल शांतहोवै॥ दशमूलादिकाढा॥ दशमूलके काढ़ामें अरंडीका तेल हींग कालानोन मिलाय पीने से पेटका अफारा सहित बातशूल जावै॥ बिश्वादिकाढा॥ शुंठि अरंडकी जड़ इन्होंके काढ़ामें हींग कालानोन घालि पीनेसे शूलशांत होवै॥ बलादिकाढा॥ बलियार सांठी अरण्डकी जड़ दोनों कटैली गोखुरू इन्होंके काढ़ामें हींग नोन मिलाय पीवै तो बातशूलजावै॥ वातशूलेकल्क॥ चावलों के तुष के पानी में तिलों का कल्क बनाय पोटलीमें घालि बारंबार पेटऊपर फेरनेसे शूलशांतहोवै॥ बीजपूरा स्वरस॥ पकाहुआ बिजौराके रसमें सेंधानोनमिलाय पीनेसे दारुण हृदयशूल मिटै इसपै पथ्यअन्नको भोजनकरै॥ तुंबरादिचूर्ण॥ चिरफल हरड़ै हींग पुष्करमूल सेंधानोन मनियारी नोन काला नोन इन्होंको यवोंके काढ़ा में मिलाय पीनेसे बातशूलजावै॥ हरीतक्यादिचूर्ण॥ हरड़ै अतीश हींग कालानोन बच इन्द्रयव इन्होंकाचूर्ण एक तोलाखावै ऊपर गरमपानीपीनेसे बातशूलजावै॥ सौबर्चलादिचूर्ण॥ कालानोन आम्लवेतस मनियारीनोन सेंधानोन अतीश त्रिकुटा इन्होंके चूर्णको बिजौराके रसमें मिलायखानेसे गुल्म व शूलजावै॥ उशीरादिचूर्ण॥ बाला सेंधानोन हींग अरंडकी जड़ ये समभाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे बातशूल जावै॥ अरण्डादिचूर्ण॥ सफ़ेद अरंड कीजड़ हींग सेंधानोन ये समभाग लेय गरम पानिकेसंग खानेसे बातशूल जावै॥ मन्दारमूलिकादिचूर्ण॥ आककी जड़का चूर्ण दूधमें मिलाय खानेसे व सहदेईकी जड़का चूर्ण व गोकर्णीकी जड़का चूर्ण खानेसे दूधके संग बातशूलजावै॥ यवान्यादिचूर्ण॥ अजमान सेंधानोन हींग यवाखार कालानोन हरड़ै इन्होंको गरम पानी के संग लेनेसे बातशूल शांत होवै॥ करंजादिचूर्ण॥ करंजवा कालानोन शुंठि हींग ये समभाग लेय थोड़े गरम पानीकेसंग लेनेसे तत्काल बातशूलजावै॥ गुडूच्यादिचूर्ण॥ गिलोय

मिरच इन्होंका चूर्णकरि गरम पानीके संग खानेसे हृदय शूल बातशूल जावै इसपै पथ्यरूप भोजन करै ॥ दूसराप्रकार ॥ गिलोय मिरच इन्होंके चूर्णमें बिजौरा का रसमिलाय शीतल पानीके संग खानेसे हृदयशूल शांत होवै ॥ उशीरादिचूर्ण ॥ बाला पिपलामूल ये समभागलेय चूर्णकरि गौके घृतके संग खानेसे भयंकर हृदयशूल शांतहोवै ॥ सुवर्चलादिचूर्ण ॥ कालानोन हरड़े हींग अजमोद साजी खार यवाखार इन्होंका चूर्णकरि दूध व कांजी के संग खानेसे शूल रोगकोहरै ॥ दूसराप्रकार ॥ कालानोन जीरा आम्लवेतस ये समभाग लेय मिरचका चूर्ण १० भाग इन्होंको विजौराके रसमें भिगोय पीछे जलकेसंग खानेसे बायुशूल जावै ॥ एरंडमूलादिचूर्ण ॥ अरंडकी जड़ धनियांमणयारीनोन हरड़े हींग इन्होंका चूर्णकरि पानीके संग खानेसे शूल व गुल्म को हरै ॥ सौवर्चलादिगुटी ॥ कालानोन १ तोला अमली २ तोला जीरा ४ तोला मिरच ८ तोला इन्होंको विजौरा के रसमें पीसि गोलीबनाय खानेसे बात शूल जावै ॥ बिल्वादिगुटी ॥ बेलअरंडकी जड़ तिल इन्होंको नींबूकेरसमें घोटि गोलीबनाय मेंढ़ासींगीके रसकेसंग खानेसे बातशूलजावै ॥ सोमाग्निमुखरसगुटी ॥ पांचोंनोंन समभाग लेय अदरक के रसमें १५ दिनतक पकावै पीछे चना समान गोली बनाय खानेसे बातशूल जावै ॥ मृगशृंगोद्भवभस्म ॥ बहुत जिसमें शोरुवा ऐसा मृगका सींगलेय अग्निमें भस्मकरि एक तोला भर घृतमेंमिलाय चाटनेसे व अरणीको गुड़ में मिलाय खानेसे बातशूल जावै ॥ अग्निमुखरस ॥ पारा गंधक अभ्रक तांबा आम्लबेतस मीठातेलिया हरड़े बहेड़ा आमला पांचोंनोन ये समभागलेय इन्हों को धतूरा नागबेली कटेली भांग पलसी जांटी बांसा ऋद्धि रास्ना लाल ऊंगा कपूर अदरक इन्हों के रसोंमें एक एक दिन भावना देने से अग्नि मुखरसहोहै पीछे इसको ३ रत्तीभर हमेशाखानेसे बातशूल व बाताबिकार जावै और हरड़े बच हींग कूड़ाकीछाल नोन ये समभागलेय चूर्णकरि १ तोला हमेशै इसपैगरम खाना यह अनुपान है ॥ उदयभास्कररस ॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म मैनाशिल गंधक हरताल हींग मुरदाशंख

नागरमोथा ये समभाग लेय पीछे थोहर आकधतूरा निर्गुण्डी रास्ना इन्हों के रसों में एक एक दिन खरलकरि सुखाय गोला बनाय वस्त्रमें लपेट मिट्टीलगाय सुखाय गजपुटमें पकाय फेर बकरा के मूत्रमें पीसि पहिलेकी तरह पुटमें पकावै ऐसे ४ बारपकावै पीछे २ रत्ती भरलेय घृत शुण्ठि में मिलाय खाने से बातशूल जावै अथवा तिलोंका खार कूट शहद इन्होंमें मिलाय खानेसे बातशूल जावै अथवा कावलीके चूर्ण के संगखावै ॥ नाभिशूललेप ॥ मैनफल को कांजीमें पीसि नाभिमें लेपकरने से अथवा बेलफल अरंडी तिल इन्होंको बिजौरा के रस में पीसि पोटली बनाय सेंकने से बात शूल जावै ॥ बातशूललेप ॥ राई सहँजना की छाल इन्होंको गौके तक्र में पीसि लेपकरने से बातशूल शांतहोवै ॥ मृत्तिकासेंक ॥ माटीको जल में पकाय कड़ी होने पर बस्त्र में घालि अग्निद्वारा सेंककर पसीना लेने से बातशूल शांत होवै ॥ नाभिलेप ॥ हींग तेल सेंधानोन इन्हों को गोमूत्रमेंपकाय नाभिस्थानपै लेपकरनेसे पीड़ासंयुक्त शूल शांत होवै ॥ पित्तकेशूलकालक्षण ॥ खारी और मिरच आदि बहुत तीक्ष्ण वस्तु गरमवस्तु तिलखल कुलथी खटाई इन्होंके खानेसे क्रोध और खेल मैथुनके करने से मदिरा और कांजी के पीनेसे धूपके सेवनेसे और अग्नि सम्बन्धी आयाससे भुने अन्नके भक्षणसे पित्त कुपित हो शूल को प्रकट करैं है तब तृषादाह नाभिमें पसीना मूर्च्छा भ्रम क्रोध ये होवैं और दुपहरा अर्द्धरात्रि ग्रीष्मऋतु शरदऋतु इतने समय में अधिक शूल चलै तो जानिये पित्तका शूलहै इसको शीतल पदार्थों के सेवने से व स्वादुपदार्थों के सेवने से शांत करै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ पित्तशूली को परवल ईख का रस पिवाय बमन करावै पीछे पित्त के गुल्म में कहाजुलाब देवै और पित्तशूली को पानीमें गोता दिवावै और कांसी के बरतन को जल में भरि शूल की जगह ऊपर रखनेसे आराम होवै व गुड़ चावल यवाखार घृत दूध व जुलाब जांगल देश के मांस ये औषध पित्तशूल में श्रेष्ठहैं ॥ नाभौभांड़धारण ॥ स्फटिक के पात्र व तांबा व चांदीके पात्रमें पानी भर शूल की जगह ऊपर रखने से पित्तशूल शांत होवै व पित्तना-

शक जुलाब व सूसा लावापक्षीके मांसकारस ये पित्तशूलकोनाशै॥ शतावर्यादिकाढ़ा॥ शतावरि मुलहठी बलियारडाभ की जड़ गोखुरू इन्हों का काढ़ा बनाय ठंढा करि गुड़ शहद खांड़ मिलाय पीने से पित्तरक्त दाह शूल इन्हों को शांत करै और दाह तत्काल जावै॥ बृहत्यादिकाढ़ा॥ कटेली गोखुरू एरंड जड़ कुशा कांस कसइ इन्हों का काढ़ा तत्काल शूलको हरै॥ त्रिफलादिकाढ़ा॥ हरड़ै १ भाग बहेड़ा २ भाग आमला ३ भाग अमलतास ४ भाग इन्हों का काढ़ाबनाय खांड़ शहद मिलाय पीने से रक्तपित्त को व पित्तलको हरै॥ त्रिफलादिकाढ़ा॥ त्रिफला नींब व मुलहठी कुटकी अमलतास इन्होंके काढ़ामें शहदामिलाय पीने से पित्तशूल जावै॥ त्रायमाणादि काढ़ा॥ वनपसा पीपलामूल निशोत मुलहठी हरै हैं अमलतास आमला दाख कोरंटा इन्होंका काढ़ापित्त शूलको हरै॥ शतावर्यादि रस॥ शतावरीके काढ़ामें दूध व शहदमिलाय प्रभातमें पीने से दाह पित्तशूल पित्तरोग ये जावें॥ धात्र्यादिचूर्ण॥ आँवलाके चूर्णमें शहद मिलाय खानेसे व हरड़ोंके चूर्णमें घृत गुड़ मिलायखानेसे पित्तशूल जावै॥ धान्यादिस्वरस॥ आमलाके व विदारीकंदके व त्रायमाण के व मुनक्का दाखोंके रसमें खांड़ मिलायपीनेसे पित्तशूलशांत होवै॥ कफजशूललक्षण॥ अनूप देशके मांसमछली पेड़ाआदि दूधकीवस्तुमैदा की बस्तुइनबस्तुओंके खानेसेऔर गंडेके चूसनेसे मधुररसके पीने से कफकारी बस्तुओंकेखानेसे कफकोपकोप्राप्तहो शूलको पैदाकरैहै तबहृदय दूखै बमनसी आवैखांसी और पीड़ा भोजनमें अरुचि पेट में पीड़ा माथा में बायुशरीर भारी भोजन करने में पीड़ा मल उतरै नहीं और बसंतऋतुमें प्रभातसमय में अधिक शूलचलै यह कफके शूलका लक्षणहै॥ सामान्य चिकित्सा॥ चावलजांगलदेश का मांस लहसुन परवल मांसका रस मदिरा पुरानेगेहूं ये कफशूल में हित हैं॥ एरंड मूलादि काढ़ा॥ एरंडकी जड़ ८ तोले लेय ६४ तोले पानी में काढ़ाबनाय यवाखार मिलाय पीनेसे पशली शूल व कफशूलदूरहोय॥ बीजपूररस॥ बिजौरा के रसमें गुड़मिलाय खानेसे हृदरोग बातशूल गुल्म ये जावें॥ कफशूलचूर्ण॥ कायफल पुष्करमूल का-

काड़ाशिंगी नागरमोथा शुंठि मिरच पीपल कचूरइन्होंको अलग२ व इकट्ठी कूट चूर्ण करि अदरक शहद में मिलाय चाटने से कफ शूल वायु शूल अरुचि छर्दि खांसी श्वास क्षयी इन्होंको दूर करै ॥ वृहत्कटफलादिचूर्ण ॥ कायफल पुष्करमूल काकड़ाशिंगी पीपली इन्होंको शहदमें मिलाय चाटनेसे श्वास खांसी कफशूल ज्वर ये शांतहोवैं ॥ पथ्यादिचूर्ण ॥ हरड़ै बच चीता कुटकी इन्हों का चूर्ण गोमूत्रमें मिलाय खानेसे जल्दी कफ शूलको हरै ॥ मुस्तादिचूर्ण ॥ नागरमोथा बच कुटकी हरड़ै भिलावा ये सम भाग लेय चूर्ण करि गोमूत्र के संग खाने से कफशूल कोहरै और आमकोपकावै ॥ लवणादिचूर्ण ॥ कफ शूल वाले को पहिले लंघन करावै पीछे सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन हींग पीपल पिपलामूल चाव चीता शुंठि इन्होंका चूर्णकरि थोड़े गरम पानी के संग खानेसे कफशूलकोहरै ॥ सर्वांगसुंदररस ॥ पाराभस्म तांबाभस्म मैनशिल सोना माखी हरतालनोन कालानोन मनियारीनोन खारीनोन सेंधानोन ये सम भाग लेय पारासे दशवां हिस्सा सोना की भस्म लेय और पारा के बराबर मीठातेलियालेय इन्होंकोमिलाय पीछे कुचला अरणी बासा भांग लालसाकिनी रान तुलसीजल पिपली धतूरा इन्होंके रसोंमें भावना देय टिकियाबनाय शिकोरामेंघालि संपुटितकरि तुषाग्निपुटमें पकाय शीतलहोनेपर काढ़ि घृत शुंठिकेसंग चाररत्तीभरखानेसे गुल्मको व कफशूलको शांतकरै ॥ आमशूललक्षण ॥ अफारा और पेटमेंगुड़गुड़ाशब्दहो हृदयकटाजाय वमनआवै शरीरभारीहो मंदपनाहो कफके सबलक्षणमिलें मुखसे कफपड़ैये आमशूलके लक्षणहैं ॥ आम शूलसामान्याचिकित्सा ॥ आमशूलमें कफशूलनाशकरनेवाली क्रिया करै और आमनाशक औरअग्निकोबढ़ानेवाले अन्नोंकोसेवै ॥ चित्रकादिकाढ़ा ॥ चीता पीपलामूल अरंडकी जड़ शुंठि धनियां इन्होंके काढ़ामें हींग सेंधानोन मनियारीनोन मिलाय पीनेसे आमरोग शांत होवै ॥ त्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला राई इन्होंकेचूर्णमें शहद घृतमिलाय खानेसे सबशूलजावैं ॥ दीप्यादिचूर्ण ॥ अजमान सेंधानोन हरड़ै शुंठि ये चार२ तोलेलेय चूर्णकरि खानेसे शूल व मंदाग्निदूरहोवै ॥ बिल्व

मूलादिचूर्ण ॥ बेलजड़ अरंडजड़ चीताजड़ शुंठि हींग सेंधानोन इन्होंका चूर्णकरिखानेसे तत्कालशूलजावै ॥ दार्व्यादिलेप ॥ दारुहल्दी हरड़े अट शतावरी हींग सेंधानोन इन्होंको तक्रमेंपीसि थोड़ागरमकरि पेटकेऊपर लेपकरनेसे शूलजावै व अरंडीकातेल ६ भाग लहसुन ८भाग केग १ भाग सेंधानोन ३ भाग इन्होंकोमिलाय १ तोलाभरखानेसे आमशूलशांतहोवै ॥ हिंग्वादियोग ॥ हींग १ भाग सेंधानोन ३ भाग अरंडीकातेल ९ भाग लहसुनकारस २७ भाग इन्हों को मिलाय पीनेसे गुल्म उदावर्त आमशूल ये जावैं ॥ कूष्मांडक्षार ॥ कोहलाको छीलि टुकड़े करि धूप में सुखाय बर्तनमें घालि बर्तन को खांमि चुल्ही परचढ़ाय अग्निसे पकावै ऐसा करै कि भस्म नहो सके अंगारही बनारहै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि चूर्ण करि दोमासे भरमें शुंठिचूर्ण मिलाय गरमपानीकेसंग खानेसे यह महाशूल व असाध्यशूलकोहरै ॥ द्वंद्वज शूलकालक्षण ॥ पेड़ूहृदय कंठदोनों पशलियोंमें शूलहोतोकफबातका जानिये और कूषि हिया नाभि इन्होंमें शूलहो तो कफपित्तकाजानिये और दाहज्वर संयुक्तहोय तो बातपित्तका जानिये ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ द्वंद्वजशूलमें स्नेहादिक दो योगोंको योजनाकरै सन्निपात में ३ योगोंकी योजनाकरै ॥ द्वंद्वजशूलकाढ़ा ॥ दोनों कटैलीडाभकी जड़ कांस इक्षुबालिका गोखुरू अरंडकीजड़ इन्होंके काढ़ामें शहद खांड़ मिलाय पीनेसे बात पित्तका शूलजावै ॥ पटोलादिकाढ़ा ॥ परवलत्रिफला नींब इन्होंके काढ़ामें शहदमिलाय पीनेसे पित्तकफज्वर छर्दि दाहशूल इन्होंको शांत करै ॥ द्राक्षादिकाढ़ा ॥ दाखबांसाइन्हों का काढ़ा कफपित्तकी पीड़ाकोहरै और कफपित्तशूलको जुलाबवमन से भी शांतकरै ॥ एरंडमूलादिकाढ़ा ॥ एरंडकाफल एरंडकीजड़दोनों कटैली गोखुरू शालपर्णी पृष्ठिपर्णी सहदेई पृष्णिपर्णी क्षुरालिका सिंहपुच्छी येसमभागलेय यवाखार मिलाय काढ़ा बनाय पीने से द्वंद्वज शूलको व सर्व शूलकोहरै ॥ लहसुनकल्क ॥ लहसुनका कल्क बनाय प्रभातमें मदिराके संगपीनेसे बातकफ शूलजावै व खारीपानी में पीपल सेंधानोन मिलाय पीनेसे दुर्ज्जयशूलको हरै ॥ सन्निपातशूल लक्षण ॥ जो पीछे कहेहुये सब लक्षण मिलें तो सन्निपात काशूल

जानिये यह विषवज्र के समान दुःसाध्यहै ॥ त्रिदोषशूलचिकित्सा ॥ शंख की भस्म सेंधानोन हींग त्रिकुटा इन्होंका चूर्ण करिगरम पानी के संगखानेसे सन्निपात शूलजावै ॥ विदारी रस योग ॥ विदारीकारस अनारकारस शुंठि मिरच पीपल लहसुन इन्हों के चूर्णमें शहद मिलाय खाने से सन्निपात का शूल जावै ॥ अक्षादिस्वरस ॥ बहेड़ा आमला हरड़े इन्हों के रस में लोह भस्म गुड़ मिलायपीनेसे सन्निपात का शूलशांतहोवै ॥ वैश्वानरयोग ॥ तांबा मिरच मीठातेलिया पीपली पीपलामूल ये समभागलेय इन्होंको अदरकके रसमें और बिजौराके रसमें घोटकरि १ दिनपीछे २ रत्तीभरखावै व भुना हींग करंजवाकेबीज शुंठि लहसुन इन्होंको अरंडी के तेलमेंपीसि १ तोलाभर खानेसे सन्निपात शूलकोहरै ॥ सर्वजाशूलमेंशास्त्रार्थ ॥ बमन लंघन पसीना पाचन फलवर्ती खार चूर्णगोली येशूलकोनाशैहैं और वातशूल में निरूह वस्तिदेवै और पित्तशूलमें दूधकाजुलाब और कफ मूलमें कडुआकसैलारसदेवै ॥ शूलमेंस्वरस ॥ शतावरी केस्वरस में शहद मिलाय पीनेसे शूल शांतहोवै ॥ बीजपूरादिस्वरस ॥ बिजौरा के रसमें शहद दूध मिलाय पीनेसे हृदयशूल वस्तिशूल पशलीशूलकोठा की बायुकोहरै ॥ मातुलिंगस्वरस ॥ बिजौरा कारस घृत हींग सेंधानोन इन्होंको थोड़ा गरमकरि पीनेसे यहमलोंको अनुलोमन करै और कूषि हिया पशली इन्होंकी पीड़ाको हरै ॥ वृहत्यादिकाढ़ा ॥ कटेली तिर्फलबेल बिजौरा इन्होंकी जड़का काढ़ामें पाषाणभेद मिलाय गौ कादूध मिलाय ठंढाकरि पीनेसे शूलशांत होवै ॥ एलादिकाढ़ा ॥ इलायची हींग यवाखार सेंधानोन इन्हों के काढ़ा में अरंडीका तेलमिलाय पीनेसे कमरशूल हृदयशूल पेटशूल नाभिशूल पीठशूल कूषि शूल शिरकाशूल कानशूल नेत्रशूल इन्होंको शांतकरै ॥ मातुलिंगादि काढ़ा ॥ बिजौराकारस व सहोंजनाके काढ़ामें यवाखार शहद मिलाय पीनेसे पशलीशूल हृदयशूल वस्तिशूल ये शांतहोवैं ॥ अजमोदादि काढ़ा ॥ अजमोद बचहींग मनियारीनोन कालानोन शुंठि पीपली दुलारी कटैली बिजौराकेबीज धनियां ये समभागलेय काढ़ा बनाय पीने से अनेक प्रकारके शूल नाशहोवैं ॥ एरंडादिकाढ़ा ॥ एरंडजड़

बेलजड़ दोनों कटैली बिजौरा इन्होंकी जड़ पाषाणभेद त्रिकुटा इन्होंके काढ़ामें यवाखार हींगनोन अरण्डी तेल इन्हों को मिलाय पीनेसे श्रोणी कटि जांघ इन्हों के शूलोंको हरे ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला के काढ़ा में गोमूत्रशहद दूधलकड़ पाषाणभेद इन्हों का चूर्ण और अरण्डीका तेलमिलाय पीनेसे शूलशांतहोवै ॥ पथ्यादि काढ़ा ॥ हरड़ै इन्द्रयव पुष्करमूल हींग जटामासी अतीश इन्हों को काढ़ा थोड़ा गरम पीवै तो आमशूल कफशूल शान्त होवै ॥ सर्वशूलमेंयवागू ॥ भुनेमूंगों की दाल धान की खील सेंधानोन धनियां जीरा इन्होंको पानीमें पकावनेसे यवागू होता है यह पाचनी है और भूखको बढ़ावै है शूलको हरैहै त्रिदोष को नाशै है गर्भवाली स्त्री को बालकको बूढ़ेकोहितहै और पीपली पीपलामूल चाव चीता शुंठि इन्होंके चूर्णके संग यवागू को खावै तो अग्निदीपनहो और खायापचै ॥ रेचनार्थवर्ति ॥ घरकाधूमा मनियारीनोन हींग जमालगोटाकी जड़ पीपली मुरदाशंख सेंधानोन गुड़ त्रिफला इन्हों की वर्त्ति बनाय गोमूत्रमें भिगोय गुदामें चढ़ानेसे पीड़ा सहित मलकी गांठ जल्दी पड़ै ॥ तुरंगीपुरीषरसयोग ॥ घोड़ी की लीदको मलि रस काढ़ि हींगमिलाय पीनेसे व कुल्थीके काढ़ामें हींग शुंठि मनियारीनोन इन्होंका चूर्णमिलाय पीनेसे भयंकर शूलजावै ॥ विश्वजलादिकाढ़ा ॥ शुण्ठि के काढ़ामें अरण्डी का तेल हींग कालानोन इन्हों का चूर्ण मिलाय पीनेसे शूल शांत होवै यह अनुभव से कहा है ॥ कुबेरादिचूर्ण ॥ बहेड़ा १ शुण्ठि १ हींग १ हरड़ै सागर गोटा की गिरी ३ भाग इन्होंका चूर्णकरि अरंडीके तेलमें मिलाय पकाय पीनेसे अनेक तरहके शूल शांत होवैं यह ब्रह्मास्त्र के समान चूर्ण है यह नृसिंह का पुत्र जयदेव वैद्यने कहा है ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग बिजौरा सेंधानोन कालानोन खारीनोन बच शुंठि मिरच पीपल पिपलामूल चाव चीता कचूर अमली अजमान कंकोल पाढ़ा रान तुलसी मूली शेरणी यवाखार सुहागा खार अनार हरड़ै इन्हों का चूर्ण खानेसे बिबंध हुचकी आध्मान बध्मखांसी श्वासमंदाग्नि अरुचि प्लीहा बवासीर सर्वशूल गुल्म गलरोग हृद्रोग पांडुरोग इन्हों को

हरै ॥ नाराचचूर्ण ॥ पिपली १ तोला निसोत ४ तोला मनियारी नोन ४ तोला इन्होंका चूर्णकरि शहदकेसंग १ तोलाभर खानेसे आध्मान मलबंध पेटरोग कफ पित्त शूल इन्होंको शांतकरै ॥ क्षारयोग ॥ केशू मूला अर्जुन धत्र ऊंगा केला इन्होंकी जड लेय और तिल जीवंती धतूरा हलदी कोहलाकीबेल बांसा जमींकंद इन्होंको तेज अग्निमें भस्मकरि इस राखको पानीमें घालि रक्खै पीछे पानीको नितारि पीनेसे शूल अफारा मलबंध गुल्म कफसंबंधी रोग कामला विद्रधी हृदयशूल पांडु संग्रहणी सोजा बवासीर पीनस मंदाग्नि भारीतिल्ली प्रमेह इन्होंको शांतकरै और पेटमें पाषाण समान रोगोंको भी जल्दी भस्म करै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग १ तोला बहेड़ा २ शुंठि ३ सागर-गोटा ४ ऐसे प्रमाण लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे व गुड़ हरड़े घृत लहसुन २ येदोनोंयोग बरतनेसे शूलकोनाशै ॥ तुंबरुण्या-दिचूर्ण ॥ धनियां व चिरफल सेंधानोन कालानोन खारीनोन अजमोद पुष्करमूल जवाखार छोटी हरड़े भुनी हींग बायविडंग ये सम भाग लेय महीन चूर्णकरि गरम पानीके संग खानेसे व यवोंके काढ़ा के संग खानेसे सबतरहके शूलरोग गुल्म आध्मान पेट रोग इन्हों को शांतकरै ॥ पंचसमचूर्ण ॥ शुंठि छोटीहरड़े पिपली निसोत कालानोन ये समभागलेय महीन चूर्णकरि खानेसे शूल अफारा पेटरोग बवा-सीर आमवात इन्होंको हरै ॥ विश्वादिचूर्ण ॥ शुंठि साजीखार हींग पाढ़ा ये सम भाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे सबशूल शांतहोवैं ॥ वचादिचूर्ण ॥ बच साजीखार हींग कूट इंद्रयव ये सम भाग लेय गरमपानीके संग खानेसे संपूर्ण शूल जावैं ॥ अजमोदादि चूर्ण ॥ अजमोद बच कूट आम्लबेतस सेंधानोन साजीखार हरड़े त्रिकुटा ब्रह्मदंडी नागरमोथा कालानोन शुंठि नोन खारीनोन इ-न्होंके चूर्णको तक्रके संग खानेसे सबशूल शांतहोवैं ॥ वचादिचूर्ण ॥ बच २ भाग मनियारीनोन ३ भाग हरड़े ६ भाग शुंठि ४ भाग हींग ८ भाग कूट ७ भाग चीता ५ भाग अजमान ५ भाग इन्होंकाचूर्ण ब-नाय शहद के संग पीनेसे सबतरहके शूलरोग शांतहोवैं और अफा-रा पेटरोग गुल्म बवासीर श्वास खांसी संग्रहणी पांडु इन्होंको शांत

करै॥ यवान्यादिचूर्ण॥ अजमान सेंधानोन देवदारु जवाखार काला-नोन शुंठि अरंडकीजड़ हींग खारीनोन ये समभाग लेय चूर्णकरि गिलोय के काढ़ाके संग खाने से सब शूल शांत होवैं॥ अजमोदादि चूर्ण॥ अजमोद हरड़ै पाढ़ा शुंठि मिरच पीपल ये सम भाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संगखानेसे अजीर्ण शूल शांतहोवै॥ रुचकादि चूर्ण॥ कालानोन हींग शुंठि ये समभाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे कफबात पीड़ा और हृदय पीठ पेट इन्हों के शूल हैजा ये शांतहोवैं और इसको यवोंके रस के संग लेवै तो मल बँध जावै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग पिपलामूल धनियां चीता बच चाव अरणी पाढ़ा कचूर अमली सेंधानोन कालानोन मनियारीनोन शुंठि मिरच पीपल साजीखार जवाखार अनारकीछाल हरड़ै पुष्करमूल आ-म्लबेतस शेरणी जीरा रानतुलसी इन्होंका चूर्णकरि अदरख के रसमें व बिजौराके रसमें भावनादेय खानेसे आध्मान संग्रहणी ब-वासीर गुल्म उदावर्त्त बाताध्मान विष पेटरोग मूत्रकृच्छ्र तूनि प्रति-तूनि अरुचि उरुस्तंभ मतिभ्रम अंतःकरणका भ्रम बधिरपना अ-ष्ठीला प्रत्यष्ठीला श्वास खांसी हृदय कूषि वंक्षण कटि पेट आंत ब-स्थि चूंची कांधा इन्होंका शूल पसलीशूल वायुशूल कफशूल इन्हों को हरै यह अश्विनीकुमारोंने कहाहै॥ शंखवटी॥ अमलीका खार २१तोला नोन४ तोला सेंधानोन ४ तोला कालानोन ४ तोला मनि-यारीनोन ४ तोला खारीनोन ४ तोला सुहागाखार ४ तोला इन्हों का चूर्ण करि १२८ तोले नींबूके रसमें तपाये शंख के टुकड़े ४० तोले बुझावै बारसात पीछे सुखाय चूर्ण करि हींग ४ तोला शुंठि ४ तोला मिरच ४ तोला पिपली ४ तोला गन्धक ४ तोला पारा२ तोला मीठातेलिया २ तोला पीछे इन सबोंको नींबूके रसमें खरल करि तीनदिन पीछे बेर की गुठली प्रमाण गोली बनाय गरम पानी के संग खावै तो सब शूल गुल्म अजीर्ण परिणाम शूल अतीसार संग्रहणी इन्होंको नाशै॥ गोमूत्रमंडूर॥ मंडूरको गोमूत्र में सिद्धकरि त्रिफला चूर्ण मिलाय और शहद घृतमें मिलाय खानेसे सन्निपात का शूल शांत होवै॥ सूर्यप्रभावटी॥ त्रिकुटा पिपलामूल बच हींग

जीरा स्याहजीरा मीठा तेलिया ये समभाग लेय नींबूके रसमें और अदरख के रस में खरलकरि मिरच के समान गोली बनाय प्रभात में गरमपानीके संग खानेसे आठ प्रकार के शूलको हरै ॥ शंखादि चूर्ण ॥ शंखभस्म करंजवाके बीज हींग शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन ये सम भाग लेय चूर्णकरि गरमपानीके संग खानेसे सब तरह के शूलोंको हरै ॥ क्षारयोग ॥ आम्लबेतसकी गिरी सेंधानोन शुंठि हींग तिर्फल अजमान देवदारु ये समभाग लेय बरतनमें घालि चुल्ही ऊपर चढ़ाय अग्नि जलानेसे खार होवै तिसे ईंटसे बारीक पीसि खानेसे तीव्र शूल जावै ॥ चित्रकादिबटक ॥ चीताजड़ नोन पाढ़ा शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन कालानोन खारीनोन मनियारी नोन सांभरनोन जीरा धनियां जटामासी अजमान पिपलामूल ये सम भागलेय जंबीरी नींबुओंके रसमें गोली बनाय खानेसे हृदय शूल पसलीशूल आमशूल अरुचि ८० प्रकारके बातरोग इन्होंको यह नाशै ॥ हरीतक्यादिवटी ॥ हरड़ै शुंठि मिरच पीपल कुचला के बीज गन्धक हींग सेंधानोन ये समभाग लेय गोलीबनाय आधेतोलाकी प्रभातमें खानेसे १ गोली रोज जन्मसे उपजाशूलको नाशै और संग्रहणी अतीसार अजीर्ण मंदाग्नि इन्होंको गरम पानी के संग खानेसे दूरकरै ॥ कुबेराक्षवटी ॥ सागरगोटा १ तोला शुंठि १ तोला कालानोन आधातोला भूनीहींग आधातोला इन्होंको सहोंजनाकी जड़का व लहसुन के रसमें घोटि स्वच्छ अंगारों से पकाय खानेसे आठप्रकारके शूल शांतहोवैं ॥ अगस्तिवटी ॥ हरड़ै ४० तोलालेय तुषों के काढ़ामें सिझाय पीछे मीठातेलिया कुचलाके बीजों के संग सिझाय पीछे हरड़ोंको काढ़ि शुंठि मिरच पीपल जवाखार सुहागा-खार अजमान अजमोद खुरासानी अजमान बायबिडंग हींग सेंधा-नोन कालानोन मनियारीनोन ये सब बराबर तोलेलेवै चूर्णकरि नींबू के रसमें खरलकरि गोली बेरकी गुठली प्रमाण बनाय खानेसे शूल गुल्मकृमि मंदाग्नि प्लीहा आमवात इन्होंको दूरकरै ॥ गरलादिवटी ॥ अफीम चीता शुंठि जीरा बच मिरच हींग इन्होंको भंगराके रस में खरलकरि गोली बनाय खाने से शूल मूढ़बात मंदाग्नि शूनबहरी

इन्होंको यह हरै॥ बचादिगुटी॥ बच शुंठि जीरा मिरच मीठा तेलि-या हींग चीता दालचीनी ये समभाग लेय चूर्ण करि भँगरा के र-समें चना प्रमाण गोली बनाय खानेसे शूलको नाशकरै और मं-दाग्नि को व बायु को शांत करै जैसे सूर्यअंधेरेको तैसे॥ कुबेराक्षपा-क॥ सागरगोटाको तीन दिन कांजी में भिगोय चौथा हिस्सा नोन मिलाय पकाय पीछे फोड़ि गिरी काढ़ि सेंधानोन शुंठि मिरच पी-पल इन्हों के चूर्णसे पूरणकरि पीछे कांजीसे छिड़किसुखाय खाने से रुचिको पैदाकरै और शूलकोहरै॥ सप्तविंशतिगूगल॥ जवाखार सुहागाखार शुंठि मिरच पीपल हरड़े बहेड़ा आमला हलदी रुद्रा-क्ष नागरमोथा सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन चिरफल पीपला-मूल चीता छोटीइलायची चीताकीजड़ चाब कूट सोनामाखीकी भ-स्म पुष्करमूल बायविड़ंग अतीस गजपीपल ये समभागलेय औ-र सबोंके समान गूगललेय इन्होंकी घृतमें गोली बनाय पीछे दूध पानी कांजी मूंगोंका यूष इन्होंमें एकको येसाकी संगगोलीको खा-नेसे बायुहृदय पसली पीठ कटि आंड संधि कोखि काख इन्होंका शूल कुष्ठ किलास कुष्ठ पांडु क्षयी अपस्मार उर्ध्ववात उन्माद आ-मबात सूजन प्रमेह इन्होंकोशांतकरै॥ लोहभस्मयोग॥ हरड़ों को गोमूत्रमें पकाय सुखाय लोहाकाचूर्ण युतकरि और गुड़में मिलाय खानेसे सर्बप्रकार के शूलरोग शांतहोवैं॥ गंधकरसायन॥ त्रिफला चूर्ण ४ तोले गंधक २ तोले लोहभस्म १ तोले इन्होंका चूर्णकरि ८ माशेभर में शहद घृतमिलाय चाटने से सबशूल शांतहोवै और बातविस्फोटक इन्होंकोहरै और तीनमहीने तक सेवने से नाशहुये बालफिरउपजैं॥ शूलकुठाररस॥ सुहागाखार पारा गंधक त्रिफला शुंठि मिरच पीपल हरताल मीठातेलिया तांबा जमालगोटा इन्हों को भंगराकेरसमें खरलकरि दोरत्ती की गोलीबनाय मिरचोंके चू-र्णके संग व अदरखके रसकेसंग खानेसे सबशूलोंको नाशै जैसे विष्णुका सुदर्शनचक्र राक्षसोंको तैसे॥ अग्निकुमाररस॥ पारा गंधक सुहागाखार ये समभाग लेय मीठातेलिया ३ भाग कौड़ीकीभस्म २ भाग शंखभस्म २ भाग मिरच ८ भाग इन्होंको नींबूके रस में

खरलकरि दो रत्तीकी गोलीबनाय खानेसे शूलको हरै अनुपान के संग खानेसे सन्निपात शूलको हरै ॥ क्षारताम्ररस ॥ तांबाभस्म ४ तोला गन्धक ४ तोला अमलीकाखार ८ तोले इन्होंको मिलाय पीसि गरमपानी के संग खानेसे सबशूल दूरहोवें ॥ सोमनाथताम्र ॥ पारा गन्धक ये सम भाग इनदोनुवोंसे आधा हरताल हरताल से आधा मैनशिल तांबाकेपत्र पाराकेसमान पीछे पारा गंधककी कज्जली करि तांबाकेपत्रोंको कई बार लेपनकरि पीछे सकोरामें नोन घालि तिसपरपत्रेधरि ऊपरनोनधरि दूसरेसिकोरासे संपुटितकर गर्भयंत्रमें तीनपहरतकपकाय शीतल होनेपर काढ़ि रोगोक्त अनुपानों के संगखानेसे रोगमात्रको हरै और विशेष करि परिणामशूल पेट शूल पांडुज्वर गुल्म प्लीहा यकृत क्षय मन्दाग्नि प्रमेह शूल संग्रहणी इन्होंकोहरै ॥ गदमददहनरस ॥शीशा रांग पाराअभ्रक सिंगरफ मैनशिल तूतिया तांबा गन्धक सोना इन्होंकी भस्म खपरिया इन्हों को मिलाय आकके दूधमें खरल करि गोला बनाय सिकोरामें नोनघालि ऊपर गोलारखि फिर नोन धरि दूसरे सिकोरा से संपुटितकरि कपड़माटीदेय गजपुट में फूंक देवै पीछे शीतल होनेपर काढ़ि अदरख वासा निर्गुण्डी इन्होंके रसमें भावनादेय पीछे तुलसीके रस व पीपलीके चूर्णकेसंग खानेसे पसली शूल मन्दाग्नि अरुचि सन्निपात हृदरोग गुल्म मेह कफ वायु सर्व रोग ज्वर इन्होंको हरै यह रस त्रिलोकमें उत्तमहै और नागलोकमें उत्तमहै और नागोंको प्रिय है और रक्त पित्तको नाशैहै ॥ शंखादि ॥ शंख पीली कौड़ी शुंठि मिरच पीपल जवाखार सज्जीखार सुहागाखार हड़ बहेड़ा आमला लज्जावंती नोन सेंधानोन कालानोन खारीनोन मनियारीनोन गन्धक जीरा अजमान हींग ये प्रत्येक दो २ तोलेलेय इलायची लौंग चीता लोहभस्म पाराभस्म तांबाभस्म ये एक एक तोला लेय चूर्ण करि दो माशे भरखावै ऊपर ठंढा पानीपीवै यह शूल गुल्म प्लीहा अजीर्ण मन्दाग्नि अम्लपित्त इन्हों को नाशै ॥ विद्याधराभ्रलेह ॥ बायविडंग नागरमोथा हड़ बहेड़ा आमला गिलोय जमालगोटाकेबीज निसोत चीता शुंठि मिरच पीपल शंखिया ये एकएकतोलालेय औरगोमूत्रमें

सिद्धकी पुरानीकीटी १६ तोला कौड़ीभस्म १६ तोला कालाअभ्रक भस्म ४ तोला पारा १ तोला इन सबोंको खरल करि अगस्त वृक्ष के पत्तोंके रसमें ७ भावनादेय पीछे १ तोला गन्धक मिलाय शहद घृतमें घोटि चीकने बरतन में घालि रक्खे पीछे अग्निबल देखि १ व २ व ३ माशेतक खावै ऊपर गौका दूध व ठंढा पानी पीवे यह मंदाग्नि व परिणामशूल अन्नजशूल क्षय आम्ल पित्त संग्रहणी जीर्णज्वर रक्तपित्त कुष्ठ इन्हों को नाशै इसको रोगोक्त अनुपानों के संग खानेसे रोगमात्र जावै ॥पीड़ारिरस ॥ अभ्रकभस्म ३ तोला गन्धक २ तोला जमालगोटा ३ तोला सुहागाखार २ तोला इन्होंको नींबू के रसमें खरल करि बेरकी गुठली समान गोली बनाय गुड़ कांजी के संग खानेसे आमशूल कृमिशूल इन्होंको हरै इसपै तक्रचावल का पथ्य करै और दस्तबंद होनेके वास्ते शीतलक्रिया करै॥ शुल्वसुंदररस ॥ कंटक बेधि तांबा १ तोला पारा १ तोला गन्धक २ तोला पीछे पारा गन्धक की कज्जली करि तांबे के पात्र में कज्जली का लेपनकरायसुखाय सिकोरामें नोनघालि तिसपैतांबेके पत्तेरखि ऊपर नोन धरि दूसरे सिकोरासे ढाकि कपड़माटी करि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपरकाढ़िद्रव्यसे सोलहवां हिस्सा मीठातेलिया मिलाय पीछे धतूराकातेल अरंडीकातेल चीताकारस शुंठि मिरच पीपल इन्होंके काढ़ामें भावनादेय सुखाय ३ रत्तीभर पूर्वोक्त अनुपानकेसंग खानेसे बात व बातबिकार शूल कफरोग पक्तीशूलइन्हों को नाशैयह पार्वती महादेव की आज्ञा है ॥ षण्मुखरस ॥ पारा गन्धक तांबाभस्म सज्जीखार ये समभाग लेय नींबूके रस में ७ दिन तक भावना देय तिरफल भी पारा के समान मिलावे पीछे इन्हों को दारुण घाम में खरलकारि संपुटमेंघालि ३ बार लघुपुटमेंपकावे पीछे इसमें त्रिकुटा पाराके समान मिलाय ३ रत्तीभर खानेसे सबशूलजावैं ॥ महाशूलहररस ॥ पारा गन्धक सुहागा खार सफेद कांच कपूर साबर के सींगकी भस्म तांबाभस्म कौड़ी भस्म मनियारी नोन छोटे शंख कीभस्म हिरण के सींगकी भस्म शंखभस्म समानभागलेय आकके दूधमें पीछे थोहरके दूधमें एक २ दिन खरलकारि सुखाय मीठातेलि-

या शुंठि मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण मिलाय पीछे रसको मिरच घृत के संगखानेसे महाशूल क्षयी संग्रहणी पाण्डुरोग मंदाग्नि ये जावें॥ त्रिनेत्ररस ॥ सुहागाखार हिरणके सींगकीभस्म तांबाभस्म पारा भस्म सोनाभस्म इन्होंको अदरख के रसमें एक दिन खरलकरि संपुटमें रखि आरनोंकी अग्निमें पकाय शीतल होनेपर काढ़ि एक माशाभर रसको शहद घृतमें मिलाय खावें ऊपर सेंधानोन जीरा हींग शहद घृत इन्होंकी चटनी चाटै यह पंक्तिशूलको एकमास में हरै॥ गदकेसरीरस॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग इन्होंको १ पहर खरलकरि द्रव्यके समान शोधातांबा का थोथा गोला बनाय पूर्वोक्त द्रव्यसे भरदेवे पीछे माटीके बरतनमें नीचे ऊपर नोन बीच में गोलारखि बरतनके मुखको खामि गजपुट में पकाय शीतल होने पै काढ़ि गोला सहित बारीक चूर्णकरि दो रत्ती भर पानके टुकड़ाके संग खानेसे सर्वशूलजावें और हींग शुंठि जीरा बच मिरच इन्होंका चूर्ण एक तोला भर गरम पानी के संग खाने से असाध्य शूल दूरहो-वै॥ शूलगजकेसरी॥ पारा गन्धक मीठातेलिया कौड़ीभस्म सेंधानोन सुहागाखार पीपल शुंठि इन्होंको नागबेल के रसमें खरल करि दो रत्तीभर खानेसे शूलजावे॥ गजकेसरी॥ कौड़ीकाखार मीठातेलिया सेंधानोन त्रिकुटा इन्होंको पानके रसमें खरलकरि १ रत्तीभरखाने से वातशूल परिणामशूल आमशूल इन्हों को नाशै॥ पथ्यादिरस॥ हरड़ै सुहागाखार शुंठि मिरच पीपल चीता मनियारीनोन गन्धक सेंधानोन ये समानभाग लेय सबोंके समान कुचलाके बीज इन्होंको खरलकरि गोलीबनाय खानेसे शूल अफारा मलबंद गुल्म खांसी कफ आम वात अजीर्ण पेटरोग अरुचि स्वरभंग शूल इन्होंकोनाशै जैसे सिंहहाथीको॥ परिणामशूलनिदान॥ भोजन पचनेके समयमेंउप-जै तिसे परिणामशूलकहेहैं इसका लक्षण संक्षेपसे कहतेहैं कफ अप-ने स्थानसे छूटि शीतके संग बढ़ि बायुको ग्रहण करि भोजनजरे पीछे शूलको पैदाकरै है वहशूल पेट कूखि पसली नाभि वास्ति स्तनोंका बीच पीठ मंगर की जड़ इन स्थानों में अलग २ व एककाल सपूर्ण जगह प्रकट होवै और भोजन जराबादशूल शांत होहै सांठीचावल

व्रीहि अन्न चावल इन्हों के भोजन से बढ़े है यह परिणामशूल महारोगहै वैद्योंको दुर्विज्ञेयहै और अन्न रस बहनेवाले मार्गमें बिकार पैदा करैहै ॥ बातिकपरिणामशूल ॥ पेटमें अफाराहो गुड़ २ शब्द हो मलमूत्र बंध होजावै ग्लानिहो शरीर कांपै चिकना गरम पदार्थसे शांतहोवैं यह बातिकपरिणामशूल के लक्षणहैं ॥ पैत्तिकपरिणामशूल निदान ॥ तृषा दाह ग्लानि पसीना ये हों कडुआ खट्टा सलोना इन्होंसे बढ़े शीतल पदार्थों से शांतहोवै तिसे पैत्तिकपरिणामशूल कहिये ॥ कफजपरिणामशूल ॥ छर्दि होल मोह थोड़ाशूल देरतकरहै कडुवा तीखासे शांतहो तिसे कफजपरिणामशूल कहिये ॥ द्वंद्वजसन्निपातलक्षण ॥ दोनों के लक्षणवाला द्वन्द्वजपरिणामशूलकहिये तीनों के लक्षणवाला सन्निपातपरिणामशूलकहिये इस में मांस बल अग्नि नष्ट होजायँ तो असाध्य जानिये ॥ शूलकेउपद्रव ॥ पीड़ा तृषा मूर्च्छा अफारा शरीरभारी अरुचि खांसी श्वास हिचकी ये शूलके उपद्रवहैं ॥ असाध्यलक्षण ॥ एकदोषकाशूलसाध्य २दोष का कष्टसाध्य ३ दोषका उपद्रवों युत असाध्यहोहै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ पहिले लंघन पीछे बमन जुलाब बस्तिकर्म इन्हों से परिणामशूलनाश होहै ॥ बातादिपरसामान्यचिकित्सा ॥ स्नेह कर्म से बातज जावै जुलाब से पित्तकाशूल जावै बमन से कफकाशूल जावै स्नेहसे दो दोषोंका जावै बमन रेचन स्नेह तीनों से सन्निपातकाशूल जावै ॥ त्रिफलादिकाढ़ा ॥ त्रिफला अमलतास इन्हों के काढ़ामें शहद खांड़ मिलाय पीनेसे पित्तशूल रक्तपित्त दाह प्रदर ये जावैं ॥ बमन ॥ पहिले कंठ पर्य्यंत मदिरा और ईषकारस पीवै पीछे मैनफल नींब इन्होंका काढ़ा पीनेसे बमन होय रोग शांतहोवै ॥ परिणामशूलकल्क ॥ बिष्णुक्रांता की जड़के कल्कमें मिश्री शहद मिलाय ७ दिन खानेसे परिणामशूलजावै ॥ शुण्ठिकल्क ॥ शुंण्ठि तिल गुड़ इन्होंका कल्ककरि दूधके संग ३ दिन खानेसे परिणामशूल आमबात ये जावैं ॥ बिरेचन ॥ निसोत जमालगोटा व अरंडीकातेल इन्होंके जुलाब लेने से परिणामशूल जावै ॥ बमन ॥ कंठपर्य्यंतदूध मैनफलके काढ़ाको पीवै व ईषके रसको पीवै व नींब के रस को पीवै कड़वी तूंबी के रस को

पीवै व कोशकार के रस को पीवै इन्हों से बमन होय शूलजावै॥ गुड़ादिचूर्ण॥ गुड़ तिल अदरक इन्होंका मोदक बनाय खाने से व हींग हरड़ै बच वायबिड़ंग इन्होंका चूर्ण गरमपानी में खानेसे आनाहशूल हृद्रोग हैजा गुल्म बायु इन्होंको हरे॥ सामुद्रादिचूर्ण॥ सांभरनोन सेंधानोन यवाखार सुहागाखार कालानोन रुमस्यामका नोन मनियारीनोन जमालगोटा की जड़ लोहभस्म कीटभस्म निशोथ जमीकन्द दही गोमूत्र दूध इन्हों को मन्दाग्नि से पकाय शक्ति प्रमाण चूर्ण गरमपानी के संग खावै पीछे जीर्ण भोजन हुये बादि घृतमें भुनामांस दही इन्होंको खावै यह नाभिशूल हृदयशूल गुल्म तिल्ली शूल बिद्रधी अष्ठीला कफबात अन्नद्रव जरत्पित्तअजीर्ण संग्रहणी इन्हों में उपजे शूल व सब शूल इन्होंको हरे इसके समान शूल नाशक औषध नहीं है॥ इन्द्रवारुण्यादिचूर्ण॥ गडूभाकी जड़में शुंठि मिरच पीपल इन्होंका चूर्ण मिलाय घोड़ा के व नरके मूत्रके संग खानेसे असाध्यशूलजावै॥ एरंडादिभस्मयोग॥ एरंडकी जड़ चीता शंख सांठी गोखुरू ये समानभाग लेय संपुट में घालि पकाय गरमपानी के संग खानेसेशूलजावै॥ पिप्पल्यादियोग॥ पीपल शुंठि घृत ये चौंसठ २ तोलेदूध २५६ तोले इन्हों को पकाय घृत के खानेसे परिणामशूल जावै॥ त्रिपुरभैरवरस॥ पारा २ भाग सोना १ भाग इन्हों की कजलीकरि तांबाके पत्रे १२ भाग लेय इन पत्रोंपर कजली लेपकरि नीचे ऊपर गन्धकका चूर्णचार२ तोलेधरि बीचमें पत्रेधरि और हिरणके सींगकाचूर्ण मिलाय चारोंतरफपीछे ब्राह्मी के रससे सिंचन करि बरतनमें घालि १ दिन पकाय पीछे उड़दके समान रसको शहद घृतमें मिलाय खानेसे परिणाम शूल जावै और इसको अरंडीतेल त्रिकुटा चूर्णके संग खावै तो सबशूल नाश होवै॥ शूलदावानलरस॥ पारा ४ तोला गन्धक ४ तोला मीठातेलिया ४ तोला मिरच शुंठि पीपल हींग कालानोन ये आठ २ तोले सांभरनोन ३२ तोले अमलीखार ३२ तोले शंखखार ३२ तोले पहिले शंखको नींबूके रसमें ७ बार बुझाय बरतै पीछे इनसबों को नींबू के रसमें १ दिन तक खरलकरि बेर समान गोली बनाय

खानेसे सबशूल अजीर्ण पेटरोग असाध्य शूलरोग इन्हों को नाश करै॥ परिणामशूलमेंमंडूर॥ लोहकीट ३२ तोले गोमूत्र २५६ तोले के बीच पकाय खाने से जल्दी परिणाशूल जावै॥ तारमंडूर॥ बाय-बिडंग चीता चाव त्रिफला त्रिकुटा ये समभागलेय इन सबोंके स-मान लोहकीटी की भस्म लेय और सबों से दूना गोमूत्र गोमूत्र से दूना गुड़ इनसबों को मंदाग्निपै पकाय गोलाहो तब उतार चीकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे ८ माशे भोजनके आदि मध्य अन्त में खानेसे दारुणपरिणामशूल कामला पांडुरोग सोजा मेदरोग बात-रोग बवासीर ये जावैं यह शूल रोगियों पर कृपाकरि तारवैद्यने प्रकट किया है॥ भीममंडूर॥ यवाखार पीपली शुंठि मिरच पीपला-मूल चीता ये चार२ तोले लेय कीटी भस्म ६४ तोले लेय लोहा के पात्रमें ५१२ तोले गोमूत्र घालि पकावै जब कड़छीके चिपकनेलगै तब उतारै पीछे एक २ तोलाकी गोली बनाय ७ रात्रि भोजन के आदि मध्य अन्तमें खानेसे परिणामशूल जावै॥ लोहगूगल॥ त्रिफ-ला नागरमोथा त्रिकुटा बायबिड़ंग पुष्करमूल बच चीता मुलहठी ये चार २ तोले लेय चूर्णकरै लोहभस्म ३२ तोले गूगल ३२ तोले इन्हों को घृतमें मिलाय १ तोले की गोली बनाय खावै ऊपर गरम पानी पीवै यह परिणामशूल पुराने अन्नसे उपजा पांडु कामला हलीमक इन्होंको नाशै॥ नारिकेलकक्षार॥ रस सहित नारियल को लेय तिसमें नोनभरि कपड़ा मट्टीलगाय सुखाय गोसोंकी अग्निमें जलाय पीछे बारीक चूर्णकरि पीपलीके चूर्णके संग खानेसे परिणाम शूल बायुशूल पित्तशूल कफशूल इन्होंको शांतकरै॥ पथ्यादिलोह॥ हरड़ै शुंठि इन्होंका चूर्ण लोहभस्म इन्हों को शहद घृतमें मिलाय खानेसे सन्निपातका परिणामशूल शांत होवै॥ लोहादिलेह॥ लोह १ भाग त्रिफला ३ भाग गुड़ ८ भाग गोमूत्र ३२ भाग इन्हों को गुड़की पातसरीखी पांतिबनाय शक्ति माफिक खानेसे क्षय पका-हुआशूल शांतहोवै॥ कृष्णादिलोह॥ पीपली हरड़ै लोहभस्म इन्हों का चूर्ण शहद घृतमें मिलाय खानेसे परिणामशूल तत्काल जावै॥ दूसराकृष्णादिलोह॥ पीपल हरड़ै लोहभस्म ये समभागलेय गुड़के

संग खाने से परिणाम शूल मंदाग्नि पेटरोग इन्हों को नाशै ॥ शंबुकादिगुटी ॥ शंखकी भस्म मिरच पांचोंनोन ये समभाग लेय कलंबुक के रस में गोली बनाय प्रभात में अग्निबल देखि खाने से परिणामशूल जावे ॥ चतुस्समलोह गन्धक ॥ तांबाभस्म पाराभस्म लोहभस्म ये सब चार २ तोले लेय ४८ तोला घृत दूध ४०० तोला इन्होंको मिलाय पकाय पीछे बायबिड़ंग त्रिफला चीता त्रिकुटा इन्होंका चूर्ण चार २ तोले लेय पूर्वोक्त में मिलाय सुन्दर बर्त्तन में घालि रक्खे अपने को शुभदायक मुहूर्त्त में सूर्य्य गुरु की पूजाकरि घृत शहद में मिलाय १ उड़द प्रमाण रोज बढ़ता हुआखावै ८ उड़द प्रमाण तकअन्न पान दूध व नारियलके रसके संग खावै पुराने चावल पुरानी मूंग मिश्री मांसरस अबिरुद्धमांस लहसुन इन्होंको खावै यह हृदयशूल पशलीशूल आमबात कटिग्रह गुल्म शूल यकृत तिल्ली मन्दाग्नि क्षय कुष्ठ श्वास खांसी बिचर्चिका पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंको शांतकरै॥ बिड़ंगादिमोदक॥ बायबिड़ंग चावल त्रिकुटा निशोथ जमालगोटा की जड़ चीता इन्हों के चूर्ण में गुड़ मिलाय गोली बनाय प्रभात में गरम पानी के संग खाने से यह सन्निपातशूल परिणामशूल को नाशै और जठराग्निको बढ़ावै॥ तिलादिबटी ॥ तिल शुंठि हरड़े शंखभस्म ये समभाग लेय २ भाग गुड़में मिलाय १ तोला की गोली बनाय प्रभातमें ठंढेपानी के संग खावै तो शूल शांतहोवै इसपै दूध चावल भोजन करै और इसको सायंकाल में खानेसे पुरानापरिणामशूल शांत होवै॥ खंडामलकरस॥ कोहलाको बारीक कतरि बस्त्रमें घालि निचोड़ि २०० तोला भर लेय घृतमें पकावै पीछे इसमें आमका रस ३२ तोले खांड़ ३२तोले कोहलाकारस ६४ तोले इन्हों को मिलाय पकावै जब कड़छी के चिपने लगै तब उतारै पीछे पीपल ८ तोले जीरा ८ तोले शुंठि ८ तोले मिरच ४ तोले तालीसपत्र धनियां दालचीनी तमालपत्र इलायची नागकेसर नागरमोथा ये सब एक २ तोला लेय शहद ३२ तोले इनसबों को मिलाय बर्त्तनमें घालिरक्खै पीछे इस को खाने से सन्निपात का परिणाम शूल छर्दि आम्ल पित्त मूर्छा

खांसी श्वासअरुचि हृदय शूल रक्त पित्त ये शांतहोवैं ॥ जीर्णशूलपै गुड़ ॥ ऊंटकटारि सहोंजनाकी जड़ सफेदऊंगा सेंधानोन ये सम भाग लेय दुगुने गुड़में मिलाय खानेसे अजीर्ण शूल दूर होवै ॥ शंबूकभस्मयोग ॥ क्षुद्रशंख की भस्म गरम पानी के संग लेने से परिणाम शूल नाश होवै जैसे विष्णु से राक्षसादि ॥ शूलमें योग ॥ भूमिबड़की जड़ थोड़े गरमपानी के सङ्ग खाने से व कांजी में नोन मिलाय पीने से व घृतमें सेंधानोन मिलायपीनेसे व काला नोन गरम पानीकेसङ्ग खानेसे नयाशूल शांतहोवै ॥ मदनादिलेप ॥ मैनफल कुटकी इन्होंको पानीमें पीसि थोड़ा गरमकरि नाभि ऊपर लेप करनेसे शूल शांत होवै ॥ रसादिलेप ॥ पारागंधक मीठातेलिया तांबाभस्म सेंधानोन सुहागा खार फटकरी मिरच शीशा भस्म ह-रताल मैनशिल जमालगोटा गूगल तूतिया नौसादर ये समभाग लेय कांजीमें खरलकरि पेट ऊपरलेप करनेसे जल्दी शूलदूरहोवै॥ शतपुष्पादिलेप ॥ सौंफ देवदारु आकदूध कूट हींग सेंधानोन इन्हों को पानी में पीसि पेट ऊपर लेप करने से पेटशूल कटिशूल संधि शूल इन्हों को तीन दिन में नाश करै ॥ कुबेराक्षयोग ॥ अकेलासा-गरगोटा ३०० शूलोंको नाशै और इसमें लहसुन हींग सेंधानोन इन्होंको मिलाय बरतै तो अनन्तशूलोंकोनाशै ॥क्षारयोग ॥ बांझक-कोड़ी कलहारी ये समभागलेय सौंफ २ भागलेय इन्होंकाचूर्णकरि तीन दिनतक नींबूके रसमें भावना देय संपुटमें धरि गजपुट में पकाय काढ़ि इसखारको मिरच घृतके सङ्ग खाने से १ तोला रोज यहजल्दीशूलकोशांतकरै ॥ खण्डपिप्पली॥ पीपलीकाचूर्ण १६ तोला घृत २४ तोला मिश्री ६४ तोला शतावरि ३२ तोला दूध १६० तोला इन्होंको पकाय लेह बनाय ठण्ढा होने पर दालचीनी इला-यची तमालपत्र नागरमोथा धनियांशुंठि जटामासी स्याहजीराजीरा हरड़ै आमला ये बारह तोले लेय पीछे मिरच ६ तोले खैरसार ६ तोले शहद ६ तोले हरड़ै ६ तोले बहेड़ा ६ तोले आमला ६ तोले इन्होंका चूर्ण मिलाय अग्निबल विचारि खानेसे शूल अरुचि ह-त्रास छर्दि आम्लपित्त इन्हों को दूरकरै और अग्नि को बढ़ावै ॥

मातुलुंगादिघृत ॥ घृत १ भाग बिजौरा कारस ४ भाग दही १ भाग शूकामूला बेरीकी छाल बिजौराकीछाल इन्होंका काढ़ा १ भाग अनारकारस १ भाग बायबिड़ंग सेंधानोन सुहागाखार शुंठि मिरच पिपली चाब चीता अजमान पाढ़ा मूला इन्होंका चूर्ण १ तोला पीछे इनसबोंके कल्कमें घृतको सिद्धकरि बर्त्तनेसे हृदयशूल पशलीशूल कूषिशूल श्वास खांसी हिचकी बध्मं गुल्म प्रमेह बवासीर बातब्याधि सामान्य शूल इन्हों को दूरकरे ॥ तैल ॥ नारायण तेलका बस्तिकर्म करनेसे सबशूल शांतहोवैं ॥ अन्नद्रवजशूललक्षण ॥ भोजन जीर्णहुये व नहीं हुये जो शूल उपजै और भोजन करने से और लङ्घन से शांतहोवै नहीं तिसे अन्न द्रवज शूल कहिये ॥ अन्नद्रवशूललक्षण ॥ इसमें जबतक कडुआ पीला खट्टे अन्न की छर्दि न आवै तब तक स्वस्थतो होवै नहीं ॥ बमनबिरेचन ॥ जरत् पित्तशूलमें पित्तपड़े तो बमन करावे और कफ पड़े तो जुलाबदेवै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ जरत् पित्तका और अन्नद्रवजशूलका समान इलाज है और समारनही पथ्यहै और जब आमपकाशय शुद्धहोवै तब अन्नद्रवज शूल शांतहोवै ॥ माषेंडरी ॥ नोन सहित उड़दके बड़े बनाय तेलमें पकाय पीछे घृतके संग खानेसे अन्नद्रवज शूलजावै ॥ धात्रीलोह ॥ आवँलाके चूर्णको बराबर मुलहठीके चूर्णके संगलोहाकी भस्मको खानेसे व शहद के संग खानेसे अन्नद्रवज शूल दूरहोवै ॥ पायस ॥ सांवा अथवा कोदू अथवा कांगणी व चावल इन्होंमें दूधकी खीर बनाय खानेसे अन्नद्रवज शूल शांत होवै ॥ अन्नईष ॥ जमीकंद कोहला मटर सत्तू व पीठी के पदार्थ इन्हों के सेवनसे अन्नद्रवजशूल शांतहोवै ॥ अन्न ॥ कुलथीकी पीठी व बचका चूर्ण व चनोंकी पीठी व कोदू व सत्तू इन्होंको व चावलको दही के सङ्ग खानेसे अन्नद्रवज शूल शांत होवै ॥ अन्न ॥ गेहूंका चून घृत गुड़ इन्हों को पकाय पीछे मिश्री मिलाय ठंढेदूधके सङ्ग ४८ दिन खाने से अन्नद्रवज शूल जावै ॥ सामान्य ॥ यह अन्नद्रवज शूल महा रोग है इसकी चिकित्सा मुश्किलसे होवै है इस वास्ते इलाजमें ज्यादह यत्नकरि आरामकरावै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ अन्नद्रवजमें और जरत् पित्तमें जठराग्नि

मन्द होताहै इसवास्ते अन्नपान स्वल्प करावे ॥ भक्षण ॥ मटर यवों का सत्तू गेहूँ सांवा हरीक चोला राजउड़द उड़द कुलथी कांगणी चावल दही लप्सरस दूध गौका घृत भैंसका घृत बथुआ करेला बांझककोड़ीफल मोर हिरण रोहित मच्छ कपिंजल इन्हों के मांस ये इन दोनों रोगोंको हरे है ॥ गुड़मण्डूर ॥ गुड़ आमला हरड़े ये चार २ तोले लेय लोहकीटी १२ तोले इन्हों को शहद घृतमें मिलाय १ तोलाभर रोज खानेसे भोजनकी आदि मध्य अन्त में यह अन्नद्रवजशूल जरत् पित्तशूल आम्ल पित्त इन्होंको हरैहै और परिणामशूल १ बर्षसे उपजे को हरे है ॥ शतावरीमण्डूर ॥ लोह कीटी भस्म३२तोला शतावरिरस ३२तोलादही ३२तोला दूध ३२ तोला गौकाघृत १६ तोला इन्हों को पकाय जब पिंड सरीखा हो तब उतारि भोजनके आदि में व मध्यमें खानेसे बायुशूल पित्तशूल परिणाम शूल इन्होंको यह हरे संशय नहीं ॥ शूलरोगमेंपथ्य ॥ बमनस्वेदन लङ्घन गुदाकी बर्त्ति वस्तिनींद जुलाब पाचन एकबर्षके उत्पन्न धान बाद्यमण्ड गरमदूध जङ्गली जीवोंके मांसकारस परवर सहोंजना करेला बैंगन पकाहुआ आम दाख कैथ बिजौरा चिरौंजी शालिंच शाक बथुआ समुद्रकानोन कालानोन हींग शुंठि मनियारीनोन शतावरी लहसुन लौंग अरंडीका तेल गोमूत्र गरम पानी बिजौरा कारस कूट हल्दी खारोंका चूर्ण येसब शूल रोगमें पथ्यहै ॥ अपथ्य ॥ बिरुद्ध अन्नपान जागना बिषम भोजन रूखी चर्परी कसायली शीतल तथा भारी बस्तु कसरत स्त्री भोग मदिरा दाल होनेवालेअन्न नोन कडुवी बस्तु बेग के रोग का शोक क्रोध ये सब शूल रोग में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायांशूलप्रकरणम्समाप्तम् ॥

आनाहउदावर्त्तकर्मविपाक ॥ जो देवता ब्राह्मणों के मकानों को और तालाब कूप धर्मशाला जीवोंकीबंबई इन्होंको तोड़ फोड़डाले तिसको बायस नाम ग्रह ग्रहण करै तिसका लक्षण पेट फूल जावै उदावर्त्तज्वर अरुचि पैरोंमेंदाह ये सबहोवैं ऐसेजानो ॥ ज्योतिश्शा-

अभिप्राय ॥ जिसकी जन्मपत्रीमें पापग्रहोंकेमध्यमें चन्द्रमाहो और ७ सातवें स्थानमें शनैश्चरहोवे तब श्वास क्षय बिद्रधिगुल्मतिल्ली ये सब उपजैं ॥ उदावर्त्तनिदान ॥ अधोबात बिष्ठा मूत्र जंभाईअश्रुपात छींक डकार बमन मैथुन भूख प्यास श्वास नींद इन तेरहों के बेग को रोकै तो उदावर्त्त रोग उपजै ॥ बातनिरोधजन्यउदावर्त्त ॥ अधोवायु मूत्र मल इन्होंको रोधहोवे और पेट फूल जावे ग्लानि होवे शूल चलै और पेटमें बायु के रोग उपजैं ये अधोवायु के रोकनेसे उपजे उदावर्त्त के लक्षण हैं ॥ मलनिरोधजन्यउदावर्त्त ॥ पेट में गुड़-गुड़ा शब्दरहै शूल होवे पेडूमें पीड़ाहो मलउतरै नहीं डकार बहुत आवै मल मुखमें निकल आवे ये लक्षण मल रोकने के उदावर्त्तके हैं ॥ मूत्ररोकनकेउदावर्त्तकेलक्षण ॥ पेडू और लिंगमें शूलहो मूत्रकष्ट से उतरै मस्तकमें पीड़ा होय पीड़ाही से शरीर सीधा नहीं होय पेटमें अफाराहो तो मूत्र रोकनेका उदावर्त्त जानिये ॥ जँभाई रोकने के उदावर्त्तके लक्षण ॥ जिसकाकांधा गलारुकजाय मस्तक के बिकार होयँ जंभाई बहुतहोय बायुके बिकार होय नेत्र नासिका कानपीड़ा बहुतहोय ये लक्षण होयँ तो जंभाई रोकनेके उदावर्त्त रोगजानिये॥ अथअश्रुपातरोकनेकाउदावर्त्त ॥ आनंद अथवा शोकके अश्रुपातों को रोकै तो उसका माथाभारीरहै नेत्रके रोगहोयँ पीनसहो ॥ छींकरोकनेकेउदावर्त्तकेलक्षण ॥ कंधा मुड़ैनहीं माथेमें शूलहो आधाशीशीहो सब इंद्रियां दुर्बलहोजायँ ॥ डकाररोकनेके उदावर्त्तके लक्षण ॥ कंठऔरमुख भोजनसे भरादीखे अधिकमोहशरीर में व्यथा और बायु के बहुत विकारहों पवन निकले नहीं ॥ छर्दि रोकने के उदावर्त्त के लक्षण ॥ शरीरमें खुजली और चिकदेपड़जायँ अरुचि होय मुखऊपर झाईं पड़जायँ सूजन पांडुरोग ज्वरकोढ़ होय हृदय दूखे विसर्परोग होय॥ शुक्र रोकनेके उदावर्त्त के लक्षण ॥ पेडूगुदा पोतोंइंद्री इन्हों में पीड़ा और सूजनहोय मूत्ररुकजाय वीर्य्य और रुधिरइन्द्रीमेंसेगिरनेलगे पथरीका आजारहोय नेत्रका विकारहोय ॥ क्षुधारोकने के उदावर्त्त के लक्षण ॥ तंद्रा हाड़ों में फूटन बिनाश्रम के श्रमीहोय शरीर क्षीण पड़जाय दृष्टिमंद होजाय ॥ तृषारोकने के उदावर्त्त के लक्षण ॥ कंठ

मुखसूखै थोड़ा सुनेहृदयमें पीड़ाहोय व॥ श्वास रोकनें के उदावर्त्त के लक्षण॥दौड़नेमेंश्वासहोआवैउसको रोकनेके जिसकेयहलक्षणहोय उसके हृदादूखे मोह बहुत होय पेटमें गोलेकारोगहोय॥ निद्रारोकनेके उदावर्त्त के लक्षण॥ जंभाई बहुत आवै अंग में हड़ फूटन बहुत होय नेत्र और माथा बहुतभारीरहै तन्द्राहोय॥ रुक्षादि कुपितवातज उदावर्त्त०॥ कोष्ठमें रहै जो वायु वहरूखे कसैले कडुये भोजनसेकुपितहो जल्दी उदावर्त्तको पैदाकरैहै और मेदको ले चलनेवालीजो नसें वे अधोवायु और मलमूत्रकोउलांघिजाकरिमलको सुखादेयहै और हृदयपेडूमें शूलचलावे शरीर भारीरहै अधोवायु औरमलमूत्र अत्यन्त कष्टसे उतरै श्वासखांसी दाह पीनस मोह तृषा ज्वर बमन हिचकी मस्तकका रोगहौलदिली शुनब्रहरी और बातके बहुत से रोग उपजैं और तृषाकरके पीड़ित होवै शरीरक्षीण पड़जावै शूल बहुतचलै मलकी बमनकरै और अनेक प्रकारके बहुतसेरोगउपजैं और बातके कोपसे उपजे विकार पैदाहोवैं ऐसा उदावर्त्त महाअसाध्यहै इस उदावर्त्तवालारोगी निश्चयमरजावै इसमेंसंशयनहींहै॥ अधोबातज उदावर्त्त चिकित्सा॥ इसउदावर्त्तमें स्नेह पान स्वेदन वस्तिकर्म अनुलोमन औषध ये हितहैं॥ मलनिरोधज उदावर्त्त चिकित्सा॥ इसमें जुलाबरूपअन्नऔषध अभ्यंगस्नान स्वेदबस्ति ये हित हैं॥ मूत्रनिरोध उदावर्त्त चिकित्सा॥ इस में दूधपानी मिलाय पीवै व कटैलीका स्वरस व अर्ज्जुन वृक्षकेकाढ़ा को पीनेसे यह उदावर्त्त शांतहोवै ककड़ीके बीजोंको पानीमें पीसि सेंधानोन मिलाय पीनेसे व खांड़ व ईषका रस व दूध व दाखकारसइन्होंको पीनेसेमूत्रकृच्छ्र व पथरी रोगशांतहोवै॥ जृंभानिरोधज उदावर्त्त चिकित्सा॥ इसमें स्नेह पान व स्वेदन करै॥ आंसूनिरोधज व छींक निरोधजउदावर्त्तचिकित्सा॥ बातनाशकरनेवाली क्रियाकरनेसे और नेत्रोंके पानीको ज्यादाबाहिरकाढ़नेसें और शयनकरनेसे और सुन्दर कथादिके सुननेसे आंशू निरोधका उदावर्त्तजावै और छींकरोकनेके उदावर्त्तमें तीक्ष्णपदार्थ की सुगन्ध व नस्यसूर्य्य साम्हने देखना और छींकोंका लेना स्नेहपान पसीना येसबहितहैं॥ जृम्भाजनित्तउदावर्त्तचिकित्सा॥ स्नेहादि

पान और स्वेदन जृम्भाके उदावर्त्तको शांत करें और असमोक्षज उदावर्त्तको शयन मदिरा सुन्दरकथा इन्होंसे शांतकरै ॥ दूसराछींकजनितउदावर्त्तचिकित्सा ॥ इसमेंनासिकामें ईखकापत्तादेय छींकलेवै और कंधा ऊपरभाग मोक्षउदावर्त्त में अभ्यंग स्वेदन धूमपान ये सब करावै ॥ उद्गारछर्दि निरोधजउदावर्त्तचिकित्सा ॥ डकार रोकने के उदावर्त्त में चिकने पदार्थ को चिलममें धरि धूमा पीवे और छर्दि जनित उदावर्त्त में बमन लङ्घन जुलाब तेलकी मालिश वस्ति की शुद्धि करनेवाले औषधों के काढ़ा में चौगुनापानी और एक गुना दूधमिलाय पीवै ॥ डकारकेउदावर्त्तपर ॥ इसमें बातनाशक घृत देवै और चिकने पदार्थोंका धूमापीवै ॥ छर्दिरोधज उदावर्त्तपर ॥ इसमें स्नेह पानकरै और भोजनकरि बमनलेवै और धूमा लङ्घन फस्त इन्हों को सेवै ॥ भूखप्यासरोकनेकेउदावर्त्तचिकित्सा ॥ भूखजनित उदावर्त्त में चिकना गरम हलका रुचिकारक थोड़ा भोजन सुगंधित फूलोंका सूँघना ये सब हितहैं और तृषाके उदावर्त्तमें शीतल क्रियाकरै और कपूरसे सुगन्धित ठण्ढापानीको थोरा २ हलवे २ पीवै ॥ श्रमनींदकाउदावर्त्तचिकित्सा ॥ श्रमश्वास के उदावर्त्तमें बिश्राम और मांसरसादि सहित चावलों का भोजनकरै और नींदके उदावर्त्त में दूध मिश्री मिलाय पीवै पीछे सुन्दरशय्यापर पौढ़ि पैरोंको अच्छीतरह दबावै और रमणीक कथाको सुनै और सुखपूर्वक शयनकरै ॥ सामान्य ॥ उदावर्त्त रोगमें रूखा अन्न व पान कसरत जुलाब वस्ति शुद्धकारक औषध चौगुणापानी में दूधको पकाय पीना ये सब इलाजकरै ॥ विधारादिलेप ॥ भिदारा गोपीचन्दन करंजवा सारिवा इन्हों को गोमूत्रमें पीसिलेप करनेसे उदावर्त्त नाशहोवै ॥ रसोनादिप्राशन ॥ लहसुन मदिरा इन्हों को मिलाय प्रभातमें इच्छासे पीवै तो गुल्म उदावर्त्त शूल इन्होंको नाशकरै और दीपनहै और बल को बढ़ावैहै ॥ कदलीफलयोग ॥ धमासा के स्वरसमें केशर के काढ़ा को मिलाय पीनेसे व काकड़ीके बीजोंको पानीमेंपीसि केलाकीघड़ मिलाय खानेसे उदावर्त्त जावै ॥ पंचमूलक्षीर ॥ पंचमूलमें सिद्धदूध को व दाखके रसको पीनेसे मूत्रकृच्छ्र पथरी इन्होंको शांतकरै ॥ सुवर्चलादि

पेय॥ तिर्फलके चूर्णको मदिरामें मिलाय व गोमूत्रमें मिलाय व इलायचीके चूर्णको मदिरा व दूध में मिलाय पीने से पूर्वोक्त रोग जावै॥ धात्रीस्वरस॥ आमलाका स्वरस व काढ़ा तीनदिन पीनेसे व घोड़ाकी व गधाकीलीदकेरसको पीनेसे उदावर्त्त जावै॥ वट्यादियूष॥ पीपलीकायूष व पीपलामूल के रसमें घृत मिलाय पीनेसे उदावर्त्त व बातगुल्म शांत होवै॥ शामादिकाढ़ा॥ हल्दी जमालगोटाकी जड़ रुदती थोहर कालाभिदारा गिलोय निसोत सातवीण शांखबेल क-टैली अमलतास बेलफल कपिला करंजवा गूलर इन्हों के काढ़ा व कल्कमें घृत व तेलमिलाय खानेसे उदावर्त्त पेटरोग अफारा जहर-गुल्म इन्होंकोनाशै॥ नाराचचूर्ण॥ मिश्री ४ तोला निसोत १ तोला पीपली २ तोला इन्होंके चूर्ण में शहद मिलाय भोजनसे पहले १ तोला भर खानेसे दारुणमलवंधको व उदावर्त्तको हरै यह सुन्दरहै और राजाओंके योग्यहै॥ दंत्यावर्ति॥ जमालगोटाकी जड़ मैनफल पीपली मनियारीनोन कूट घरकाधूमा इन्होंको पीसि वत्तीबनाय घृत से भिगोय गुदामें चढ़ानेसे गुदाकी पीड़ा अफारा उदावर्त्त को हरै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग १ भाग बच २ मनियारीनोन ३ शुंठि ४ जीरा ५ हरड़ै ६ पुष्करमूल ७ कूट ८ ऐसे भाग लेय चूर्ण बनाय खाने से गुल्म उदररोग अफारा हैजा इन्हों को नाशै॥ भद्रदार्व्वादिचूर्ण॥ देवदारु नागरमोथा मूर्वा हल्दी मुलहठी इन्होंका चूर्ण १ तोला भर खावै ऊपर तालाब के पानी को पीवै यह उदावर्त्तको नाशै॥ हरीतक्यादिचूर्ण॥ हरड़ै पीलू निसोत इन्हों का चूर्ण घृतके सङ्ग खानेसे उदावर्त्त को नाशै॥ गुड़ाष्टक॥ त्रिकुटा पीपलामूल नि-सोत जमालगोटाकी जड़ चीता इन्हों के चूर्णको गुड़ में मिलाय प्रभात में खाने से बल वर्ण अग्नि इन्होंको बढ़ावै और उदावर्त्त तिल्ली गुल्म सोजापांडु इन्हों को नाशै॥ शुष्कमूलादि घृत॥ सूखामूला अदरख सांठी पंचमूल अमलतास इन्होंके काढ़ामें घृतको सिद्धकरि पीनेसे जल्दी उदावर्त्त शांत होवै॥ त्रिकुटादिबर्त्ति॥ त्रिकुटा सेंधानोन सिरसम घरकाधूमा कूट मैनफल इन्होंके चूर्णको शहदमें व गुड़में पकाय अँगूठा समान बत्तीबनाय घृतमें भिगोय गुदामें चढ़ानेसे

अफारा उदावर्त्त पेटरोग गुल्म इन्होंको शांतकरै ॥ मदनफलादिवर्ति ॥ मैनफल पीपली कूट बच सफ़ेद सिरसम इन्होंको गुड़ दूधमें पीसि वत्ती बनाय गुदामें चढ़ानेसे उदावर्त्त नाशहोवै ॥ हिंग्वादिबर्ति ॥ हींग शहद सेंधानोन इन्होंकी वत्तीबनाय घृतमें भिगोय गुदामें चढ़ानेसे उदावर्त्त नाशहोवै ॥ उदावर्त्तमें पथ्य ॥ हलका भोजन और पाचन ये उदावर्त्तमेंहितहैं ॥ अपथ्य ॥ विष्टम्भकारक और भारी बिरुद्ध कषायला इन्हों को उदावर्त्तमें निरंतर वर्ज्जिदेवै ॥ आनाहनिदान ॥ पेट में आमके व मलके बढ़नेसे अथवा अधोवायुके रोकनेसे अथवा शरीर में दुष्ट पवनके रोकनेसे व पेटमें संचित आमवमल कुपित बायुसे वारंवार बंधकरि चल ना हुआ अपने स्थान में नहीं आयसकै तिसको आनाहनाम अफारा रोग कहिये ॥ आमजन्य आनाह ॥ इसमें तृषा पीनस शिरके संपूर्ण बिकार दाह होवै और आमाशयमें शूलहोवै और शरीर भारी और हृदयका स्तंभहो और डकारआवै नहीं और कटि पीठ मलमूत्र इन्होंका स्तंभहो और शूल मूर्च्छाहो मलयुक्त छर्दिआवै ॥पक्काशयजअफारा॥ पक्काशयमें अफाराहोतो श्वास और अलसोक्त लक्षण उपजैं ॥ उदावर्त्त असाध्यलक्षण ॥ तृषासे पीड़ित और क्लेशपावना क्षीण शूलयुक्त और मलकी छर्दि करनेवाला ऐसे उदावर्त्त रोगीको वैद्य त्याग देवै ॥ शास्त्रार्थ ॥ बायुसे उपजे अफारामें स्नेहन स्वेदन निरूहण वस्ति ये हितहैं और मलसे उपजे अफारामें अफारा की नाशक क्रिया करै और अफारामें यथायोग्य पथ्यापथ्य को सेवै ॥ चिकित्सापरिभाषा ॥ उदावर्त्त व अफारामें कार्य कारण समान होनेसे समानही चिकित्साकरै ॥ आनाहअभ्यंग ॥पानीमें स्नानमदिरा मुरगाका मांस चावलोंका पेय निरूहबस्ति मैथुन इन्होंकोसेवै और भूखबढ़ानेवाला हितचिकना बकराकामांसयुत भोजन ये अफारामें हितहैं और अफारामें प्यासबढ़े तो मन्थ व ठण्ढी यवागूको पीवै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग १ बच २ कूट ५ साजीखार ७ बायबिड़ंग ९ ऐसे प्रमाणसे इन्होंको लेय चूर्णकरि गरमपानी के सङ्ग खानेसे अफारा हैजा हृद्रोग गुल्म अर्धांगवायु इन्होंको नाशकरै ॥ फलचूर्ण ॥ रेचन करनेवालेफल व जड़ हींग आककीजड़ दशमूल त्रिफला थोहरजड़

चीता सांठी ये समभागलेय और पांचोंनोन सबोंके बराबर मिलाय और बराबरका घृत मिलाय धानकी खीलोंका चूर्ण और नोन मिलाय शङ्खमें भरि संधियोंको खामि लिपि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपर काढ़ि अन्नकेसङ्ग व पानीके सङ्ग खाने से अफाराकी पीड़ा को हरै ॥ तुंबरुचूर्ण ॥ धनियां हरड़ैं हींग पुष्करमूल सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन अजमान जवाखार बायविड़ंग ये समभागलेय और निसोत तीनभाग लेय इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीकेसङ्ग खाने से अफारा आठतरहके पेटरोग बिड्बंध इन्होंको नाशै ॥ वचादिचूर्ण ॥ बच हरड़ैं चीता जवाखार पिपली अतीस कूट इन्होंका चूर्णकरि गरमपानीके सङ्ग खानेसे व जलयुत उत्तमभोजनके खानेसे अफारा मूढ़बात इन्होंको नाशै ॥ त्रिवृतादिगुटी ॥ निसोत पिपली हरड़ैं ये क्रम से २।४।५ भागलेय चूर्णकरि गुड़में मिलाय गोली बनाय खानेसे दारुण अफारा शांतहोवै ॥ स्नुह्यादिवटी ॥ निसोत हरड़ैं पिपली इन्हों को थोहरके दूधमें भिगोय पीछे गोली बनाय गोमूत्रके सङ्ग खानेसे अफाराको नाश करै ॥ दारुषट्कादिलेप ॥ देवदारु आदि छः औषधों को कांजी में पीसि लेप करने से अफारा नाश होवै यह पूर्व वैद्यों ने कहाहै ॥ दारुषट्कादियोग ॥ देवदारु बच कूट शतावरी हींग सेंधानोन इन्होंको कांजीमें पीसि लेप करनेसे अफाराको नाशै ॥ स्थिरादिघृत ॥ शालपर्ण्यादिगण सांठी अमलतास चिरायता करंजवा इन्होंका काढ़ा ८ तोले लेय और केलाका रस ६४ तोला घृत ६४ इन्होंको मिलाय घृतको सिद्धकरि बरतनेसे कुपित बायु शांतहोवै ॥ उदावर्त्त और अफारामें पथ्य ॥ स्नेहन स्वेदन विरेचन वस्तिकर्म फलवर्तितेल लगाना जो जिनसे बिष्ठा मूत्र और बात उत्पन्न होताहै ऐसी सब वस्तु ग्राम्यजल अनूप देशके रस अरण्डीका तेल बारुणी मदिरा कोमल मूली अमलतास निसोत थोहरकेपत्ते अदरख बिजौरा जवाखार हरड़ैं लौंग हींग दाख गोमूत्र नोन अधोबात के रोकनेसे उत्पन्नमें स्नेहन स्वेदनवर्ति वस्तिकर्म बातहरनेवाले अन्न पान और बिष्ठाके रोकनेसे उत्पन्नमें वस्तिकर्म स्वेदन तेललगाना गोतामारके न्हाना फलवर्ति विष्ठाके फोड़नेवाले अन्नपान और मूत्र

वेगके उत्पन्न में तीनप्रकारका वस्तिकर्म स्वेदन तेललगाना गोता मारके न्हाना घीका निचोड़ना और डकार के रोकने के उत्पन्न में हिचकीके दूरकरनेवाली विधिकरै और खांसी के रोकने से उत्पन्न में खांसीकी नाशक विधिकरनी चाहिये छींकके रोकनेसे उत्पन्न में स्वेदन धूमपान भोजनके पीछे घृतका पीना और छींकका प्रवृत्त करना नासलेना तेललगाना प्यासके रोकनेसे उत्पन्नमें शीतलअन्न पान जँभाईके रोकनेसे उत्पन्नमें बातनाशक बिधिकरिये नींदकेरोकनेसे उत्पन्नमें दूध सोना शरीरका दाबना भूखके रोकनेसे उत्पन्न में चिकना थोड़ा हलका भोजन आंशूके रोकनेसे उत्पन्न में आंशूका निकालना सोना मदिरा प्यारी कहानी श्रमके श्वाससे उत्पन्न में बिश्राम और बातकी नाशक बस्तुबीर्यके रोकनेसे उत्पन्नमें वस्तिकर्म तेललगाना गोतामारके न्हाना मुरगा सांठीचावल मदिरा दूध और जवानीसे गर्बित स्त्री बमनसे उत्पन्नमें लङ्घन धूमाखाये हुये का बमन श्रमसूखे अन्नपान बिरेचन फस्त खुलाना ये पथ्य महर्षियोंने उदावर्त्त में कहेहैं ॥ अपथ्य ॥ बमन बेगका रोकना फली से उत्पन्नअन्न कोदो नारीशाक कमलकीजड़ जामुनिकाफल ककड़ी तिलकी खल सबप्रकारके आंब्र करेला टींट चूनकीबनीबस्तु विष्टंभी बिरुद्ध कषायली तथा भारीबस्तु इनसबोंको उदावर्त्तमें त्यागै और सबपाचनबस्तु और लङ्घन उदावर्त्त में हित हैं इन्हींको अफारामें भी यथा योग्य बुद्धिमान योजितकरै जो अपथ्य पहले उदावर्त्तवाले को कहे हैं उन सबोंको अफाराका रोगीत्यागदेवै ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकवैद्यरबिदत्तकृतनिघण्टरत्नाकरभाषायां उदावर्त्तआनाहप्रकरणम् ॥

गुल्मरोग कर्म विपाक ॥ जो गुरुसे जांचज्ञावृत्ति रक्खै वह गुल्म रोगीहोवै इसकी शांतिवास्ते १ महीनातक पयोव्रत्तकोसेवै ॥ गुल्म निदान ॥ मिथ्या आहार और मिथ्याबिहार करने से बात पित्त कफ दुष्टहो पुरुष या स्त्रीके पेटसेलेके प्रहूतक गोलेकेसदृशएकगांठको उत्पन्नकरैहै वह बात १ पित्त २ कफ ३ सन्निपात ४ रुधिर ५ इनभेदोंसे

पांच प्रकारकाहै कोष्ठकेविषे जिसस्थानमें गुल्म होताहै वह स्थान लिखतेहैं दोनों पसलीमें हृदयमें नाभिमेंपेडूमें ॥ गुल्मकारूप॥ हृदय और पेडूके बीचमें गांठहो और फिरै वा न फिरै गोलाहोय बढ़जावै उसको गुल्म कहतेहैं ॥ संप्राप्ति ॥ यहस्त्री पुरुषोंके पांचप्रकारकाही होहै ॥ पूर्वरूप ॥ डकार बहुतआवै मलवद्धताहो और अन्नमेंबासना रहैनहीं और बचनको सहैनहीं आंतबोलै पेट में गुड़गुड़ा शब्दहो और अफाराहोवै पेट मोटा लम्बाहोजावे गुल्मका पूर्वरूपके लक्षण है ॥ गुल्मका साधारणरूप ॥ अरुचिहो और मलमूत्र दुहरा उतरै बायुसे आंतबोलै पेटमें अफाराहो बायुकी ऊर्ध्वगतिहो यह लक्षण सब गुल्मरोगोंमें होहै ॥ निदानपूर्वबातगुल्म ॥ रूखे अन्नों को खाने से विषमाशन से मूत्र रोकने से शोच करनेसे चोट लगनेसे मलके क्षीण होने से लंघन करने से विरुद्ध चेष्टासे बलवानके साथ युद्ध करनेसे बायुका गोला उत्पन्न होहै और जो गोलेके स्थानमें पीड़ा घटै बढ़ै और अधोबायुकी प्रवृत्ति अच्छी तरहसे होवै नहीं और मल उतरै नहीं मुख और गला सूखै शरीरकी कांति कालीहोजाय शीत ज्वर होवै हृदय कुक्षि पसली शिर इन सबों में पीड़ाहो और हृदयमें भोजन पचे पीछे पीड़ा अधिक हो और भोजन करे पीछे थोड़ी हो और कसैले कडुये रससे पीड़ा बढ़ै ये लक्षणहों तो बात का गुल्म जानिये ॥ बातगुल्मशास्त्रार्थ ॥ इस रोग वाले को पहले घृत पानादि से स्निग्ध करि पीछे स्वेदन कराय पीछे स्निग्ध औषधोंसे रेचन कराय पीछे निरूह वस्ति अनुवासन वस्ति को वैद्य देवै पीछे औषधोंकोसेवै ॥ सामान्य चिकित्सा॥ स्नेहन स्वेदन जुलाब इत्यादि क्रियासे गुल्मको शिथिल करै ऐसे गुल्मका इलाज करै ॥ सामान्यउपचार ॥ बात गोला की नाशक चिकित्सा करै जो कफ कुपितहो तो लेखन औषध और चूर्णादिक कफनाशक औषधकरै और जो पित्त प्रकुपित हो तो जुलाबदेवै और जो दोषनाशक औषधोंसे आराम न हो तो गुल्म में शिरामोक्ष करावै ॥ मातुलिंगादि योग ॥ बिजौराकारस हींग अनारकीछाल मनियारीनोन सेंधानोन इन्होंका चूर्णकरि मदिराके संग पीनेसे बायुका गोलाजावै ॥ शून्या-

दियोग ॥ शुंठि २ तोला बिजौरा ८ तोला तिल ४तोला गुड़४तोला इन्होंका चूर्णकरि गरम दूधके संग खानेसे बातगुल्म उदावर्त्त योनि शूल इन्होंको नाशै ॥ केतकीक्षार योग ॥ साजीखार कूट केतकीखार ये समभाग लेय चूर्णकरि मीठातेल के संग खानेसे दारुण बात गुल्मकोहरै ॥ बारुणीमंडयोग ॥ एरंडतेल को बारुणीमदिरा के संग पीनेसे व अरंडीतेलको दूधकेसंग पीनेसे बातगुल्म शांतहोवै॥ बात गुल्मेहपुष्पादिघृत ॥ शेरणी जीरा स्याहजीरा पीपलामूल चीता विदारीकंद बड़बेरीछाल इन्होंके रसमें घृतको पकाय खाने से बात गुल्म अरुचि श्वास शूल पेटका अफारा ज्वर बवासीर संग्रहणी योनिदोष इन्होंको शांतकरै॥ चित्रकादिघृत॥ चीता शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन बिदारीकंद चाव अनारकीछाल अजमाण पीपलामूल जीरा शेरणी धनियां ये समभाग लेय काढ़ाकरि पीछे घृत दही कांजी वेरी मूला इन्होंके रस मिलाय पीछे इन्हों में घृतको सिद्धकरिखाने से बातगुल्म दुर्बलपनापेटकागुड़ २ शब्द इन्होंको नाशै ॥ हिंग्वादि घृत ॥ हींग कालानोन शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन अनारकीछाल पोखरमूल जीरा धनियां आम्लबेतस चीता असगंध बच निर्गुंडी कचूर ये प्रत्येक तोले २ भरलेय इन्होंकाकाढ़ा ६४ तोलेभरमेंघृतको पकाय ठंढा होनेपर खानेसे २ तोलेभर यह बातगुल्म शूल अफारा इन्होंकोनाशै॥ त्र्यूषणादिघृत ॥शुंठि मिरच पीपलहरड़े बहेड़ा आमला धनियां बायविड़ंग चाव चीता इन्होंके कल्कमें घृत दूध मिलाय घृतको सिद्धकरि वरतनेसे बातगुल्म नाशहोवै ॥ तेलअमलतासका ॥ तेल आधातोलाभर पीने से गुल्मकोहरै ॥ कुष्ठादितेल ॥ सपेदकूट १भाग हींग१ भाग जवाखार १ तोले त्रिफलाचूर्ण १० भाग इन्हों का गो मूत्रमें कल्क बनाय तिसमें अमलतासका तेल और थोहर का दूध मिलाय पकायतेलको सिद्धकरि १ तोले रोजखानेसे दस्त लगै पीछे तक्र चावलोंका पथ्यकरै और इसतेलको चारदिनके अंत मेंदेवे हमेशा नहीं यह गुल्म जलोदर तिल्ली शूल सोजा इन्हों को नाशकरै है ॥ बिडंगादिकल्क ॥ बायबिड़ंग अनारकीछाल हींग सेंधा-नोन इलायची कालानोन इन्होंको बिजौराके रसमें पीसि कल्ककरि

१ तोले मदिराके सङ्गखानेसे बातगुल्म नाशहोवै अथवा प्राणनाथ रसको देनेसे बात गुल्म जावै॥ गुग्गुलयोग॥ गूगुलको गोमूत्रके सङ्ग पीनेसे बातगुल्म व शूलनाशहोवै॥ कुलित्थादिक्काथ॥ कुलथी कपूर कचरी चावल दूध तक्र मस्तु अरणी हरड़ै धनियां बाला इन्होंके काढ़ाके पीनेसे पूर्वोक्तरोग नाशहोवै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग सेंधानोन अमिली राई शुंठि ये समभागलेय चूर्णकरि इसहिंगुपंचकको खाने से बातगुल्म नाशहोवै॥ बातगुल्ममेंबिरेचन॥ अरंडी के तेलमें दूध और छोटी हरड़ैका चूर्ण मिलाय पानकरि जुलाबलेवै और तैला-दिक चिकना पदार्थ से पसीना लेवै यह बात गुल्मको नाश करै॥ शिखिबाड़वरस॥ पाराभस्म तांबाभस्म अभ्रक भस्म गन्धक सोना-माखी जवाखार इन्होंको चीताके रसमें १ दिन खरलकरि ३ रत्ती प्रमाण खावै नागरपानके रसकेसङ्ग यह बात गुल्मकोहरै॥ पथ्य॥ तीतर मोर मुरगा क्रौंच बतक इन्होंके मांसका रस घृत चावल म-दिरा सुरामण्ड ये सब बात गुल्ममें हित हैं॥ पित्तगुल्मलक्षण॥ क-डुआ तीखा खट्टा गरम इनरसोंके सेवनेसे क्रोधके करने और मद्य के पीनेसे अग्नि और धूपके सेवनेसे आमके बढ़नेसे चोटके लगने से रुधिरके बिगड़नेसे इनबस्तुओंसे पित्तका कोप होताहै तब ज्वर होवै तृषालगे शरीरमें पीड़ा शूल दाह व्रण गोलेके हाथ लगने में अधिक पीड़ा और भोजनके पचनेके समयमें बहुत पसीना आवै ये लक्षण पित्तका गोलाके हैं॥ द्राक्षादिचूर्ण॥ पित्त गुल्ममें दाखोंके रसमें छोटी हरड़ों का चूर्ण और गुड़ मिलाय खावै व खांड़ सहित त्रिफलाके चूर्णको खावै॥ पित्तगुल्ममेंबिरेचन॥ त्रिफला के काढ़ा में निसोत काचूर्ण मिलाय खानेसे अथवा कपिलाको मिश्रीमें व शहद में मिलाय खानेसे व छोटी हरड़ोंको मुनक्का दाखोंके सङ्ग खाने से व गुड़के सङ्ग खानेसे पित्तगुल्म जावै॥ गुल्ममेंपथ्य॥ चावल गौ व बकरीकादूध परवल घृत दाख फालसा आमला खजूर अनार खांड़ बलियार का काढ़ा ये पित्तके गुल्ममें पथ्य हैं॥ द्राक्षादिघृत॥ दाख मुलहठी खजूर बिदारीकंद शतावरी फालसा त्रिफला ये चार २ तोले लेय पानी २५६ तोले में काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकी रक्खै

पीछे आमलाकारस घृत ईषकारस दूध हरड़ोंका कल्क ये अलग २ काढ़ासे चतुर्थांश मिलावै पीछे इन्होंमें घृतको सिद्धकरि खांड़ शहद चतुर्थांश मिलाय खाने से पित्तगुल्म व सर्वगुल्म शांत होवै॥ आमलक्यादिघृत॥ आमला के रसमें चतुर्थांश घृतको पकाय खाने से व हरड़ोंके काढ़ा में घृत को पकाय खाने से पित्त गुल्म जावै॥ त्रायमाणघृत॥ बनफ्सा १६ तोलेका पानी १६० तोलेमें काढ़ा बनाय पंचमांश बाकीरहै तब कपड़ासेछानि पीछे छोटीहरड़ै कुटकी नागरमोथा बनफ्सा धमासा दाख बिदारी कोरफड़ गिलोय चंदन कमल ये सब एक एक तोला लेय और आमलाका रस ३२ तोला दूध ३२ तोला घृत ३२ तोला इन्हों के काढ़ामें मिलाय घृतको सिद्ध करि खाने से पित्तगुल्म रक्तगुल्म विसर्प पित्तज्वर हृद्रोग कामला कुष्ठ इन्होंको नाशै॥ कफगुल्म निदान व लक्षण॥ ठंढी भारी चिकनी वस्तुओं के खाने से और बैठे रहनेसे दिनमें सोनेसे कफका गोला उत्पन्न होहै और सब दोष कुपित्त हो गोला उत्पन्न हो तिसे सन्निपात का गोला जानिये। और जिसमें अल्प शीतज्वरहो अंगोंमें पीड़ाहो लालपड़ै खांसी अरुचिहो औरशरीर भारीहो ठंढकलगै अल्प पीड़ा होवै और गोला कठिन हो ये लक्षण कफके गोला के हैं॥ सामान्य चिकित्सा॥ कफगोलाका और बातगोलाका समान इलाजहै और कफनाशक औषधोंसे भी कफगोलाको नाशै॥ यवानीचूर्ण॥ अजमान मनियारीनोन इन्होंको तक्रमें मिलाय पीनेसे कफगुल्म जावै और मलमूत्रको अनुलोम न होय मलमूत्र साफहोवै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग पिपलामूल धनियां जीरा बच चाव चीता पाढ़ा कचूर अमली मनियारीनोन कालानोन सेंधानोन जवाखार सुहागाखार अनार छोटी हरड़ै पुष्करमूल आम्लबेतस शेरणी स्याहजीरा ये समभाग लेय चूर्णकरि अदरखके रस में व बिजौराके रस में भिगोय गरम पानी के संग खाने से गुल्म आध्मान बवासीर संग्रहणी उदावर्त प्रत्याध्मान पेटरोग पथरीतूनी प्रतितूनी अरुचि ऊरुस्तंभ मतिभ्रंश बधिरपना अष्ठीला प्रत्यष्ठीला हृदय कूखि आंडसंधि कमर पेट वस्ति स्तन कांधा पसली इन्हों का शूल बात कफ संबंधी शूल इन्हों को

नाशै यहअश्विनीकुमारोंने कहाहै ॥ पिप्पल्यादिघृत ॥ पिपली पिपलामूल चाव चीता शुंठि ये चार२ तोले लेय इन्हों के काढ़ा में जवाखार ४तोला घृत ६४तोला दूध १सेर मिलाय घृत को सिद्ध करि बरतनेसे कफका गुल्म संग्रहणी पांडुरोग तिल्ली खांसी ज्वर इन्हों को नाशै ॥ कफगुल्मपथ्य ॥ कुलथी सांठी चावल यव बन के पशुओं का मांस रस मदिरा तेल घृत बतक ये पदार्थ कफगुल्ममें हितहैं ॥ तिलादिलेप व सेंक ॥ तिल एरंडजड़ अलसीकेबीज सिरसम इन्होंको पानीमें पीसि पेट ऊपर लेपकरने से और आकके पत्तोंसे सेंकनेसे कफ गोला शांतहो ॥ सेंक ॥ अरंडकेपत्तोंको व आककेपत्तों को गरम करि बारंबार सेंक करनेसे कफ गोला शांत होवै ॥ दशमूलादितैल ॥ दशमूल पिपली दाख हरड़े आमला ये चार२ तोले लेय काढ़ा बनाय एरंडतेल ६४तोले मिलाय गौ का दूध ३८४तोले मिलाय पकाय तेलको बरतनेसे कफका गोलाजावै ॥ त्रिवृतादिसर्पिः ॥ निसोत हरड़े बहेड़ा आमला जमालगोटाकीजड़ दशमूल येचार२तोलेलेय चौगुने पानी में काढ़ा बनाय चतुर्थांश रहै तब घृत अरंडी तेल दूध ये मिलाय घृत को सिद्ध करि शहद युत बरतनेसे कफ के गोला को नाशै ॥ विद्याधररस ॥ गंधक हरताल सोनामाखी अभ्रकभस्म मनशिल शोधापारा ये समभाग ले इन्हों को पिपली के काढ़ा में और थोहर के दूध में १ दिन भावना देय पीछे शहद मिलाय आधा तोलाभर खाने से गोला व तिल्लीको नाशै इस पै गोमूत्रका अनुपान है ॥ नाराचरस ॥ शोधापारा शोधागंधक जैपाल हरड़े बहेड़ा आमला शुंठि मिरच पीपल इन्हों का चूर्णकरि शहद में मिलाय आधातोला खाने से गुल्म पेटरोग इन्होंको नाशकरै ॥ द्वंद्वज गुल्म निदान व लक्षण ॥ दो दोषोंसे उत्पन्न गोलामें बलाबल देखि औषध देवै ऐसे द्वंद्वजभी तीन प्रकारके गुल्म होय हैं ॥ द्राक्षादिकल्क ॥ दाख चंदन मुलहठी पद्माख बिदारीकंद इन्होंको चावलोंके पानीमें पीसि कल्क बनाय शहद संयुक्त करि खाने से कफबातका गुल्म जावै ॥ सैंधवादितैल ॥ सेंधानोन चीता जमालगोटाकीजड़ इंद्रयव ये चार २ तोले लेय इन्होंको १२८ तोले गोमूत्र में अष्टमांश काढ़ाबनाय

बराबरकातेल मिलाय पूर्वोक्तोंके कल्कमें मिलाय तेलको सिद्धकरि बरतनेसे अनुपानके संग यह द्वंद्वज गोलाको नाशै ॥ नाराचरस ॥ पित्तकफके गोलामें नाराचरसको देनेसे सुखउपजै ॥करंजादिपुटपाक॥ चाव चीता शुंठि मिरच पीपली गडूंभा सेंधानोन इन्होंको बारीक पीसि करंजवा व बड़के पत्तोंसे पुटपाककरि बिधिसे पकाय पीछे रस निचोड़ि २ तोलेभर शहद में खावै यहगुल्म पेटरोग द्वंद्वजरोग इन्हों को हरै सन्निपातगुल्म महाशूल दाहयुतहो और पाषाण समान कठिनऊंचागोलाहोवै और घनीदाहसे भयंकररूपहो वहगोलारूप गांठ मनकोविगाड़ि शरीरकोदुर्बलकरै और अग्निकेबलको नष्टकर-देवै तिसके सन्निपातकागोलाजानो यहअसाध्यहै सामान्यबुद्धिमान् वैद्य सन्निपातके गोलाको त्यागि अन्यगोलाका इलाजकरै और जो सन्निपातके गोलामें चिकित्साकरै तो त्रिदोषनाशक चिकित्साकरै ॥ वरुणादिकषाय ॥ बरुणादिकाढ़ा सन्निपात के शूलकोहरैहै और हृदय शूल पसलीशूल कांधाशूल इन्होंको उपद्रव सहितोंकोनाशैहै ॥ वरु-णादिकाढ़ा ॥ बरुणादि गणोक्त औषधोंकेकाढ़ामें रूखकादि गणोक्त औषधोंका चूर्ण मिलाय पीनेसे जो नहीं पकताहो ऐसा विद्रधीरोग शांत होवै ॥ वायबर्णादिकाढ़ा ॥ बरणा शिवलिंगी बेलफल ऊंगा चीता अरणी बड़ीअरणी दोनों सहिंजने दोनोंकटैली तीनोंकोलिस्ता मूर्वा काकड़ासिंगी चिरायता मेढ़ासिंगी करूतोरईकीजड़ अथवा पत्तेकरं-जवा शतावरी इन्होंकाकाढ़ा बनाय पीनेसे कफमेद रोगको हरै और गुल्म मस्तकशूल अंतर्विद्रधि इन्होंको नाशकरै ॥ काढ़ा ॥ अरणीके काढ़ामें गुड़ मिलाय गरम २ पीनेसे सन्निपातका गोलाजावै व आ-नंदभैरवरस से जावै ॥ राजवृक्षादि पुटपाक ॥ अमलतास थोहर आक करंजवा जामन पाडल हल्दी अमली पीपली सांठी ऊंगाजड़ येसमभागलेय पुटपाक बिधिसे पकाय रस निचोड़ि १ तोलाभर को ४ तोला गोमूत्र के संगखाने से सन्निपातका गुल्मरोग जावै ॥ अभयादियोग ॥ हरड़ै सेंधानोन इन्होंके चूर्णको तक्र में मिलाय भो-जनकेअंतमेंपीनेसे व त्रिफला कालानोन इन्होंकाचूर्ण १ रत्ती प्रमा-ण खानेसे व दूधमें त्रिफला मिलाय पीनेसे व मुंडीकी जड़के रसको

तक्रके संग व गरम पानी के संग पीने से सन्निपातगुल्म जावै ॥ संप्राप्तिपूर्वकस्त्रीगुल्म ॥ नवीन प्रसूता स्त्री अहित भोजनकरै व स्त्रीका कच्चागर्भ गिरपड़ै इन्होंसे ऋतुसमय अथवा ऋतुविना भी उसस्त्री के बायु रुधिरको ग्रहणकरि गोलेको उत्पन्न करैहै उसगोलेमें अति पीड़ा और दाहहोवै और पित्त के गोलाके संपूर्ण लक्षण मिलैं और अंग बिनाही सब पेटमें पिंड सरीखा फिरै और शूलचलै और गोलेमें गर्भके संपूर्ण लक्षण मिलैं तिसे रुधिर का गोलाजानिये परंतु उस स्त्री का दशवां महीना व्यतीत होचुकै तब बैद्य उस गोले का उपाय करै ॥दन्त्यादिगुटी ॥ जमालगोटा की जड़ हींग जवाखार तूंबीबीज पीपली गुड़ इन्हों को थोहरके दूधमें गोली १ तोला प्रमाण की बनाय खाने से रक्तगुल्मको नाशै और रक्तका स्राव करै ॥ पलाशघृत ॥ पलाशके खार में सिद्धघृत को पीनेसे स्त्रीकायह गोला नाशहोवै ॥ शताह्वादिकल्क ॥शतावरि करंजवाकीछाल दारुहल्दी भारंगी पीपल इन्हों के कल्क को तिलोंके काढ़ाके संगखाने से रक्तगुल्म शांतहोवै ॥ तिलोंकाकाढ़ा ॥ तिलोंके काढ़ामें गुड़ घृत शुंठि मिरच पीपल भारंगी इन्होंका चूर्णमिलाय पीनेसे स्त्री के रक्त गोलाको व वीर्यनाशकोहरै॥ भारंग्यादिचूर्ण ॥भारंगी पीपली करंजवा की छाल पीपलामूल देवदारु इन्होंके चूर्णको तिलोंके काढ़ामें मिलाय पीनेसे रक्तगुल्मकी पीड़ानाशहोवै ॥ तिलमूलादिचूर्ण ॥ तिलकी जड़ सहिंजनाकीजड़ ब्रह्मदण्डीकीजड़ मुलहठी शुंठि मिरच पीपल इन्होंके चूर्णकोसेवनेसे नष्टपुष्प बातगुल्म इन्होंकोदूरकरि स्त्रियोंको सुखदेवै ॥ मुंड्यादिचूर्णरेचन ॥ मुण्डी बंशलोचन इन्होंकाचूर्ण मिश्री शहदमें मिलाय देनेसे रक्तका गोलाजावै जुलाब लगिकरि और गरम औषधों से गोलाका इलाजकरै व गोलामें से लोहू कढ़वावै और ज्यादा लोहू निकसै तो बंदकरावै ॥ गुल्मकाअसाध्यलक्षण ॥ जो गोला क्रमसे उत्पन्न होय संपूर्ण पेटमें व्याप्तहोय शूलको उत्पन्नकरै और सर्व नाड़ियोंसे बँधा कछुवाकी समान कठोरहोवै शरीरदुर्बल होजाय भोजन में रुचि जातीरहै लारपड़ै खांसी छर्दि अरतिज्वर तृषा तन्द्रा पीनस इन्हों से भी युतहो तो असाध्य जानो अथवा

ज्वर श्वास छर्दि अतीसार इन्होंसे पीड़ितहो और हृदय नाभि वस्ति पैर इन्हों में सूजनहो और अन्नद्वेष अकस्मात् गुल्म की ग्रंथिका नाशहो और दुर्बलपना हो ऐसा गुल्म रोगी अवश्य मरै॥ दूसरा प्रकार॥ जिन कारणों से गुल्महो तिनकारणों से बिद्रधी होवै नहीं विद्रधी मांस व रक्तको दूषितकरि उपजे है और गुल्म दोषों को कुपितकरि उपजै है विद्रधी पकै है और गोला पकै नहींहै॥ तीसराप्रकार॥ गोला की गांठका नाशहो और श्वास शूल तृषा अन्न द्वेष दुर्बलपना इन्हों से संयुक्त गोला अवश्य मारदेवै और नाड़ियों से बँधाहुआहो कठोरहो ऊंचाहो सब पेट में ब्याप्त होवै और लार पड़ै खांसी अरुचि तृषा छर्दि ज्वर इन्हों से संयुक्त हो और ज्वर श्वास खांसी पीनस तन्द्रा छर्दि भ्रान्ति इन्हों से भी युक्त हो और गुदा नाभि हृदय नाभि वस्ति पैर इन्हों में सूजन हो और शरीर माड़ा होवै अतीसार शूलभीचलै ऐसा गुल्मरोगी असाध्यहोयहै॥ पुनर्नवादिकल्क॥ सफ़ेद सांठीकीजड़ सेंधानोन ये समभाग लेय घृत में व शहदमें मिलाय खानेसे गुल्म जलोदर इन्होंकोनाशै॥ चित्रकादिकाढ़ा॥ चीता पिपलामूल अरण्ड की जड़ शुंठि इन्होंके काढ़ामें हींग मनियारीनोन सेंधा नोन मिलाय पीने से शूल अफारा विड्बंध इन्होंको नाशै॥ नादेयादिकाढ़ा॥ नादेयी इन्द्रयव आक सहँजना कटैली शुण्ठि थोहर मिरच भिलावां बड़ीकटैली केशू नींब ऊंगा चीता बांसा कदंब पाढ़ा नोन इन्होंके काढ़ा में हींग मिलाय पीनेसे गुल्म उदररोग अष्ठीला इन्हों को नाशकरै॥ पारदादिगुटी॥ पारा गन्धक तूतिया जमालगोटा पीपली अमलतासयेसमभागलेय इन्हों को थोहर के दूधमें खरल करि उड़द प्रमाण गोली बनाय खानेसे स्त्रियोंकागुल्म व उदररोगजावै॥ मूलिकादिधारण॥ कलहारी ऊंगा व गडूंभा की जड़ इन्होंके चूर्णको खाने से स्त्रियों का योनिशूल व पुष्पवन्ध इन्होंकोनाशै॥ निम्बादिगुटी॥ नींब अरंडबीज इन्होंकोनींब कीछालके रसमें पीसि गोलीबनाय इसका योनिमें लेपकरनेसे योनि शूल जावै॥ सठ्यादिकांकायनगुटी॥ कचूर पुष्करमूल जमालगोटा चीता ये २५६ तोले लेय शुंठि बच ये चार २ तोले लेवै निसोथ

३ तोले शिंगरफ ३ तोले यवाखार ८ तोले आम्लवेतस ८ तोले अजमाण १ तोले जीरा १ तोले धनियां १ तोले पीपल ३२ तोले अजमोद ३२ तोले इन्होंका चूर्ण करि बिजौरा के रसमें गोली बनाय रक्खै पीछे गोली १ व २ व ३ थोड़ेगरम पानीके संग खाने से व खट्टा रस मदिरा यूष घृत दूध इन्हों में एकको येसाके संग खाने से गुल्म को नाशै यह कांकायन गोली है॥ यवान्यादिगोली॥ अजमान जीरा धनियां मरिच शीतला अजमोद कलौंजी ये सोलह २ माशे लेय और हींग २ तोले पांचो नोन २० माशे निसोथ ३ तोले ८ माशे जमालगोटा कचूर पुष्करमूल बायबिड़ंग अनार की छाल आमला पीपली आम्लबेतस शुंठि ये चार २ तोले लेवै पीछे बिजौरा के रसमें गोली बनाय घृत दूध नींबूरस गरम पानी इन्हों में एककोयेसाके संग खाने से यह कांकायन गोली गुल्म को नाशै और मदिरा के संग बायुगोलाकोहरै और गोखुरूके काढ़ा के संग पित्तगोला को हरै और गोमूत्र के संग कफ के गोला को हरै और दशमूल के काढ़ाके संग सान्निपात गोलाको हरै और ऊँटनीका दूध व स्त्रियों के दूधके संग रक्तकेगोलाको नाशै और रोगोक्तअनुपानों के संग हृद्रोग संग्रहणी शूल कृमि बवासीर इन्होंको नाशै॥ स्वर्जिकाबटी॥ साजीखार ४ माशे गुड़ ४माशे इन्होंकी गोलीबनाय खाने से गुल्म रोग जावै॥ प्रबालपंचामृत॥ मूंगा मोती शंख मोतीवाली सीपी कौड़ी इन्होंमें सब समभाग और मूंगा २ भागले और इन सबोंके बराबर आकका दूध मिलावै पीछे इनसबों को बरतन में घालि मुखऊपरमा लिसादेय खाम्नि गजपुटमें पकाय शीतल होने पर करंडमें भरिरक्खै पीछे ३ रत्ती रोज़ सेवने से गुल्म को नाशै और अफारा गुल्मोदर तिल्ली खांसी मूत्ररोग श्वास मंदाग्नि कफ बात की ब्याधि अजीर्ण हृद्रोग संग्रहणी अतीसार मेहरोग पथरी इन्होंको नाशै इसमें संदेह नहीं है जैसे गुरुका बचन सत्य है तैसे और इसपै पथ्य सुन्दरलेवै चित्तवृत्तिके अनुसार यह प्रबालपंचामृत सब रोगोंको हरै है॥ हिंग्वादिघृत॥ हींग पुष्करमूल धनियां हरड़े पीपली सेंधानोन यवाखार शुंठि ये समभागलेय चूर्णकरि

पीछे यवाखारका पानी मिलाय १ सेर घृत मिलाय पकाय खाने से पीड़ासहित गुल्म जावै ॥ धात्रीघृत ॥ आमला के रस में बायबिड़ंग का कल्क मिलाय घृतको पकाय पीछे मिश्री सेंधानोन मिलाय खानेसे सबगुल्म शांत होवैं ॥ षट्पलाख्यघृत ॥ पीपली पीपलामूल चाव शुण्ठि चीता यवाखार ये २४ तोले लेय कल्ककरि घृत २४ तोले और दशमूल एरण्डमूल भारंगी इन्हों का काढ़ा दूध दही चौबीस २ तोले मिलाय घृत को पकाय खाने से गुल्म पेटरोग अरुचि भगंदर मंदाग्नि खांसी ज्वर क्षय मस्तकशूल कफ बातोत्पन्न व्याधि इन्होंको नाशै ॥ दधिकयोग ॥ बिड़नोन अनार सेंधानोन चीता शुंठि मिरच पीपल जीरा हींग कालानोन चूक अमली आम्लवेतस विजोराका रस ये एक२ तोला और घृत दही चार२ तोले लेय इन्होंको मिलाय घृतको सिद्धकरि बरतने से गुल्म को व तिल्ली को हरै ॥ स्नुहिक्षीरादिघृत ॥ थोहर का दूध ८ तोले घृत ३२ तोले कपिला ४ तोले सेंधानोन २ तोले निसोथ ४ तोले आमला १६ तोले पानी ६४ तोलेमें मंदाग्नी से पकाय पीछे १ तोला रोज़ खाने से पेटरोग प्लीहा कच्छपरोग गुल्म बातगुल्म पांच प्रकार का गुल्म इन्होंको हरै जैसे पवन बादलोंको तैसे और यह गुल्मविकारों को नाशकारक रचा है जैसे राक्षसों के नाश वास्ते ब्रह्माजीने वज्र ॥ अग्निमुखचूर्ण ॥ हींग १ भाग बच २ भाग पीपली ३ भाग शुंठि ४ भाग अजमान ५ भाग हरड़े ६ भाग चीता ७ भाग कूट ८ भाग इन्होंका चूर्णकरि मदिरा दही मस्तु सुरा गरम पानी इन्होंमें एककोयेसाके संग लेनेसे उदावर्त्त अजीर्ण तिल्ली पेट रोग अंगपाक विष खाना बवासीर इन्हों को नाशै और दीपन है शूल गुल्म खांसी श्वास क्षयी इन्होंको भी नाशै और यहचूर्णकहीं भी निष्फलजावै नहीं ॥ पिप्पल्यादिचूर्ण ॥ पीपली पीपलामूल चीता जीरा सेंधानोन इन्होंका चूर्णकरि मदिरा के संग खानेसे भयंकर गुल्म को जल्दी हरै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग बच मनियारीनोन शुंठि जीरा हरड़े पुष्करमूल कूट ये भाग वृद्धिसे लेय चूर्णकरि खाने से गुल्म पेटरोग अजीर्ण हैजा इन्हों को नाशै ॥ चित्रकादिचूर्ण ॥ चीता

शुंठि हींग पीपली पीपलामूल चाव अजमोद मिरच ये एक एक तोला लेय और साजीखार यवाखार सेंधानोन कालानोन खारी नोन मनियारीनोन रूमस्यामकानोन ये आठ २ माशेलेय मिलाय चूर्णकरि विजौरा के रस में भिगोय पीछे अनार के रसमें भिगोय घाममें सुखाय खाने से यहचूर्ण गुल्म संग्रहणी आमविकार इन्हों को नाशै और अग्निको दीपनकरै रुचिको उपजावै कफ को नाशै त्रिफलादिचूर्ण॥ त्रिफला धतूरा सप्तला नीलिनी बच बनप्सा हपुषा कुटकी निसोथ सेंधानोन पीपली इन्हों का चूर्णकरि गरम पानी के संग व मांसके रसकेसंग खानेसे सर्बगुल्म पेटरोग तिल्ली कुष्ठ बवासीर सोजा इन्होंको नाशै॥ कुमारीयोग॥ कुवारकापट्ठाका गिर ६ माशे भरमें गौ का घृत मिलाय और शुंठि मिरच पीपल हरड़ै सेंधानोन इन्होंका चूर्णमिलाय खानेसे गुल्म शांत होवै॥ नाराचचूर्ण॥ सौंफ बच कूट छोटीसौंफ जीरा धनियां सुहागाखार यवाखार पीपलामूल कचूर अजमान कलौंजी सनाह असगन्ध गडूंभा चीता ये समभाग लेय निसोथ २ भाग जमालगोटा ३ भाग शंभल ३ भाग इन्होंका चूर्णखानेसे दस्तलगनेसे गुल्म आनाह विष अजीर्ण श्वास खांसी गलग्रह सूजन बवासीर संग्रहणी पांचप्रकारका गुल्म इन्होंको नाशै॥ पूतिकादिचूर्ण॥ करंजवाके पत्ते चिवूड़ चाव चीता शुंठि मिरच पीपल नोन इन्हों का चूर्णकरि दही में पीसि पीछे मस्तु के संग खानेसे गुल्म पेटरोग सोजा पांडु इन्हों को नाशै॥ हस्तिकर्णादिचूर्ण॥ हस्तिकर्णी १ तोला भर का काढ़ा जलोदरको नाशै और तिलोंकी जड़का काढ़ा बनाय तिसमें ब्रह्मदंडीजड़ मुलहठी शुंठि मिरच पीपली इन्होंका चूर्ण मिलाय पीनेसे गुल्मजावै॥ हिंग्वादिचूर्ण॥ हींग शुंठि मिरच पीपली पाढ़ा हंसपादी हरड़ै कचूर रान तुलसी अजमान अमली आम्लवेतस सारिवा पुष्करमूल धनियां जीरा चीता बच अभ्रकभस्म लोहाभस्म सोनामाखी भस्म लौंग धनियां यवाखार सुहागाखार नोन सेंधानोन चाव ये समभाग लेय चूर्णकरि प्रभात में अन्नके संग व मदिराके संग व गरम पानीके संग खाने से पशली हृदय वस्ति इन्हों के शूल गुल्म बात कफ

आनाह मूत्रकृच्छ्र गुदा योनिशूल संग्रहणी बवासीर तिल्ली पांडुरोग अरुचि छातिका बंध हिचकी खांसी श्वास गलग्रह इन्होंको नाशै इस चूर्णको बिजौराके रसमें व अनारके रसमें व अदरखके रसमें खरलकरि गोली बनाय बरतै ॥ विद्याधररस ॥ पारा गंधक हरताल तांबाभस्म सोनामाखी भस्म तूतिया इन्होंको खरलमें पीसि पीछे पीपली के काढ़ा में और थोहरके दूधमें और बकराके मूत्रमें भावना देनेसे विद्याधर रस तैयार होयहै इसको ३ रत्तीभर खाने से कफका गोला नाश होवै इसमें रोगोक्त पथ्य करै और रक्तगुल्ममें पहले रक्तमोक्ष कराय पीछे सन्निपात गुल्मका इलाजकरै ॥ बड़वानलरस ॥ कडुआ काढ़ामें घृत शुंठि मिरच पीपल गुड़ ये मिलाय पीनेसे पुष्परोध रक्तगुल्म ये जावैं व विद्याधर रससे रक्तगुल्म व पुष्परोध शांत होवै ॥ गुल्मोदरगजारातिरस ॥ पारा गंधक पिपली हरड़ैं तूतिया अमलतास ये समभाग लेय चूर्ण करि थोहर के दूध में खरल करि ४ रत्ती रोजखानेसे स्त्रियोंके जलोदरको नाशै इसपर पथ्य चावल दही काहै। और अमलीके रसको पानकरै यह भैरव जीने कहाहै ॥ उद्दामाख्यरस ॥ १ तोला पारा को शंखपुष्पीके रसमें व सर्पाक्षीके रसमें एकदिन खरलकरि शोधा जमालगोटा का कल्क मिलाय पांचपुट देय तैयार करै पीछे २ रत्तीभर घृत के संग खाने से गुल्मको नाशै और मुनक्का दाख हरड़ैं इन्होंके काढ़ाके संग खाने से पित्तके गुल्मको नाशै और पित्तकारक और दाहकारक पदार्थों को वर्ज्जिदेवै ॥ गुल्मभैरस ॥ शोधापारा गन्धक जमालगोटा त्रिफला शुंठि मिरच पीपल ये समभाग लेय चूर्णकरि शहद में मिलाय चाटनेसे और ऊपर गरम पानी पीने से गुल्म को नाशै ॥ नागादिगुटी ॥ शीशाभस्म रांगभस्म अभ्रकभस्म लोहाभस्म ये समभाग लेय और सबों के समान तांबाभस्म लेय इन्हों को बिजौरा के रसमें खरलकरि १ रत्ती की गोली बनाय शहदके संग व अदरखके रसके संग व जवाखार सुहागाखार इन्हों में एककोयेसाके संग सेवने से अजीर्ण आम्लपित्त हृदयशूल पेटशूल पसलीशूल इन्हों को और सबतरहके गुल्मोंको नाशै इसको गुल्मकुठार रस कहतेहैं॥ गुल्मरस॥

पारा गंधक कौड़ी तांबा शंख बंग अभ्रक कांतलोह तीक्ष्णलोह मंडूरलोह शीशाभस्म शिंगरफ सुहागाखार ये समभाग लेय इन्हों से त्रिगुणी पुरानीकीटी लेय गोमूत्रमें शोधि पीछे इन्होंको त्रिफला भंगरा अदरख इन्होंके रसोंमें भावनादेय पृथक् २ पीछे बांसा त्रिफला गिलोय कमलकन्द सांठी इन्हों के आठगुणे रसों में भावना देय अग्नि ऊपर पकाय घनरूप होनेपर १ रत्ती प्रमाण गोली बनाय रोगोक्त अनुपानोंके संग खानेसे ज्वर पांडु तृषा रक्तपित्त गुल्म क्षय खांसी स्वरभंग मंदाग्नि मूर्च्छा बातरोग आठप्रकारका प्रमेह रोग उपद्रवयुत पित्तरोग इन्होंको नाशै ज्यादा कहनेसे क्याहै यह सब ब्याधियोंको नाशैहै ॥ बज्रक्षार ॥ नोन सेंधानोन बांगड़खार जवाखार कालानोन साजीखार ये समभाग लेय चूर्णकरि आक थोहर इन्होंके दूधमें भावनादेय इससे आकके पत्तोंको लेपनकरि बरतन में घालि मुखबंदकरि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपर काढ़ि चूर्ण करि इससे आधाभाग शुंठि मिरच पीपल हरड़ें बहेड़ा आमला जीरा हलदी चीता इन्होंका चूर्ण मिलाय तैयार करने से बज्रक्षार होताहै यह महादेवजीने कहाहै पेटरोग गुल्मशूल सोजा मन्दाग्नि अजीर्ण इन्हों में ८ माशे खावै और बाताधिक पूर्वोक्त रोगों में गरम पानी के संग खावै और पित्ताधिक पूर्वोक्त रोगों में घृतके संग खावै और कफाधिक पूर्वोक्त रोगोंमें गोमूत्रके संगखावै और सन्निपात युत पूर्वोक्त रोगोंमें कांजी के संगखावै ॥ क्षारगुल्मादिपर ॥ साजीखार जवाखार ये दोनोंखार अग्नि समानहैं और भी खार गुल्म बवासीर संग्रहणी इन्होंको हरैहैं वे कहतेहैं आकखार १ अमलीखार २ थोहरखार ३ केलाखार ४ सहोंजनाखार ५ ये सब दीपन पाचन हैं और कृमिको व पुरुषत्वको व शर्कराको व पथरीको नाशैहैं॥ वर्ति॥ अधोबायु व मल इन्हों के अवरोध में नोन आकदूध सिरसम मिरच इन्होंकी बत्तीबनाय गुदामें चढ़ावनी श्रेष्ठहै॥ चविकासव॥ चाव २००तोला चीता १००तोला रुदंती पुष्करमूल बच हंसपादी कचूर पटोलपत्र त्रिफला अजमान कूड़ाकीछाल इंद्रवारुणी धनियां रास्ना जमालगोटा ये सब चालीस२ तोले लेय बायबिड़ंग नागर-

मोथा मजीठ देवदारु शुंठि मिरच पिपली ये बीस बीस तोले लेय इन्होंको ११४मन २५ सेर पानीमें मिलाय पकाय अष्टमांश बाकी रहनेपर गुड़ १२०० तोले धवकेफूल ८०तोले चातुर्जात३२तोले लौंग ८ तोले शुंठि मिरच पीपल ८ तोले कंकोल ८ तोले इन सबों को घीके चिकने बरतनमें १ महीनातक घालि रक्खे पीछे प्रभात में ४ तोला खाने से सब गुल्मविकार २० प्रकार का प्रमेह पीनस क्षयी खांसी अष्ठीला बातरक्त पेटरोग अंत्रवृद्धि इन्होंको नाशकरै॥ कुमारीआसव ॥ कुवारपट्ठा का रस २०४८ तोला गुड़ ४०० तोला भांग १०० तोला पानी १०२४ तोलेमें मिलाय काढ़ा बनाइ चतुर्थांश बाक़ी रहनेपर शहद २५६ तोला धवकेफूल ६४ तोला इन्हों को घीके चिकने बरतनमें घालि पीछे जायफल लौंग कंकोल कवाबचीनी जटामांसी चाव चीता जावित्री काकड़ासिंगी बहेड़ा पुष्करमूल इन्होंका कल्क प्रत्येक ४ तोले मिलावे पीछे तांबाभस्म २ तोला लोहभस्म २ तोला मिलाय मुखको बंदकरि बरतनको धरती में व अन्नके कोठा में २१ दिन गाड़ि देवै पीछे काढ़ि अग्निबल बिचार रोज़ प्रभात में पीनेसे पांचप्रकारकी खांसी श्वास क्षयीरोग आठप्रकारके पेटके रोग ६ प्रकारका बवासीर बातव्याधि अपस्मार अन्य असाध्य रोग आठप्रकार का गुल्म रोग नष्टपुष्प इन्हीं को नाशै और जठराग्नि को दीपन करै और कोठाके शूल को नाशै यह आसव वृहस्पतिजीने कहाहै ॥ दन्तीहरीतकीतैल ॥ हरड़ें १०० तोला जमालगोटा १०० तोला चीताजड़ १०० तोला इन्होंकाकाढ़ा बनाय अष्टमांश बाक़ीरहनेपर गुड़ १०० तोला निसोलका चूर्ण १६तोला तेल १६ तोला शुंठि ४ तोला पिप्पली ४ तोला इन्हों को मिलाय लेह सरीखा बनाय शीतल होनेपर शहद १६ तोला दालचीनी ४ तोला नागकेशर ४ तोला इलायची ४ तोला तमालपत्र ४ तोला इन्हों का चूर्ण मिलाय पीछे इसलेह को ४ तोले एक हरड़ के संग खावै इससे चिकना कोठाहोय सुख से दस्त लगे यह झीहा सोजा गुल्म बवासीर हृद्रोग पांडुरोग संग्रहणी विषमज्वर कुष्ठ अरोचक इन्हों को नाशै ॥ चिंचाशंखवटी ॥ अमलीखार ४ तोला थोहरखार४

तोला आकखार४तोला शंखभस्म ४८तोला हींग२तोला सेंधानोन ४ तोला कालानोन ४ तोला मनियारी नोन ४ तोला खारीनोन ४ तोला सांभरनोन ४तोला मृत्तिकानोन ४८तोला साजीखार २तोला जवाखार २ तोला इन्होंको बिजौरा नींबूके रसमें खरलकरि पीछे चीताके रस में ३ दिन खरलकरि पीछे भंगरा निर्गुण्डी गोरखमुंडी अदरख इन्होंके रसोंमें खरलकरि एक एक दिन पीछे वेरकी गुठली समान गोली बनाय प्रभात में एकरोज खानेसे सबगुल्म सबशूल अजीर्ण हैजा मंदाग्नि इन्होंको जल्दी नाशै इसपै पथ्य खटाई तेल रहितहै यह गोली बिशेषकरि संग्रहणी को नाशै है ॥ क्षारादिचूर्ण ॥ सुहागाखार जवाखार चीता शुंठि मिरच पीपल नीली पांचोंनोन इन्होंका चूर्णकरि घृतके संग खाने से सबगुल्म पेटरोग इन्होंको नाशै ॥ सूर्यपुटीशंखद्राव ॥ जंबीरीनींबूकारस १ सेर लाल काकमाची की जड़ ४ तोला साजीखार ६ माशे त्रिफला ४ तोला नसदर २ तोला इन्होंको कांचकी शीशीमें भरि सूर्यकी धूपमें १४ दिन रखने से शंखद्राव होताहै यह दारुण गुल्म पेटरोग मलबद्धता इन्होंको हरै है ॥ द्वितीयशंखद्राव ॥ फटकड़ी ४ तोला सेंधानोन ४ तोला जवाखार ८ तोला नसदर ८ तोला सोरा १६ तोला हीराकसीस २ तोला इन्होंको डमरूयंत्र में घालि चुहली ऊपर राखि बड़बेरी की लकड़ियों से अग्नि जलाय चतुराई से द्रवको काढ़े यह शंखद्राव गुल्मादि सब रोगों को नाशै है॥ तीसराप्रकार ॥ सेंधानोन ८ तोला जवाखार ८ तोला नसदर ८ तोला सोरा १६ तोला फटकड़ी ४ तोला हीराकसीस २ तोला इन्हों को डमरुयंत्र में घालि चुहली ऊपर चढ़ाय खैरकी लकड़ियों की अग्नि जलाय द्रव रूप अग्नि समान पानी सरीखा लेवै यह सब धातुओं को व कौड़ियों को गलादेवै गुल्म आदिक को जल्दी नाशकरै ॥ क्षाराष्टक ॥ पलाश थोहर ऊंगा अमली आक तिल इन्होंके खार साजीखार जवाखार ये गुल्म शूल इन्होंको हरैहैं और अजीर्ण को पकावैहैं ॥ शरपुंखक्षार ॥ शरपुंखीका खार हरड़ोंकाचूर्ण ये दोनों चार२ माशे खानेसे गुल्मको नाशै॥ गुल्ममेंपथ्य ॥ स्नेहन स्वेदन विरेचन वस्तिकर्म बांहकीनसका

बेधना लंघन लेपन तेल लगाना स्नेह पकेहुये का फोड़ना एकबर्ष के पुराने कलम धान लालधान खांड़ कुलथी यूष मरुदेश के मांस का रस मदिरा गौ तथा बकरी का दूध दाख फालसे छुहारा अनार आम भारंगी आम्लवेतस मठा अरंडीतेल लहसन कोमल मूली शालिंच शाक बथुआ सहँजना जवाखार हरड़ें हींग बिजौरा शुंठि मिरच पीपल गोमूत्र चिकने गरम धातुओं के बढ़ानेवाले हलके तथा दीपन अन्न बातकाघटाना ये सब गुल्मरोगमें पथ्य हैं॥ अपथ्य॥ उड़द आदिफली के अन्न जौआदि शूकधान्य सब बातके बढ़ाने वाली बस्तु विरुद्ध भोजन सूखामांस मूली मछली मीठेफल सूखा शाक फली का अन्न बिष्टंभी तथा भारीबस्तु अधोबायु विष्ठा मूत्र श्रमका श्वास आंशू इनसबोंका रोकना वमन जलपीना ये सब गुल्ममें अपथ्यहैं॥

इतिबेरीनिवासकवैद्यरविदत्तकृतनिघण्टरत्नाकर भाषायां गुल्मप्रकरणम्॥

हृद्रोगकर्मविपाक॥ कपड़े आई स्त्री आदिका देखाहुआ अन्न के खानेसे उदरमें कृमिपड़ें॥ प्रायश्चित्त॥ गोमूत्र यवोंकाभोजन इन्हों को ७ रात्रि सेवने से शुद्धहोहै और अभक्ष्यको खाने से हृदय में कृमि उपजें हैं इसकी शांति वास्ते भीष्मपंचकों का ब्रत करावे जो घोड़ा को व हाथी को मारै तिसकी कुक्षि में कृमिपड़ें और जिस स्त्री का पति मरजावे वह नीले बस्त्रोंको धारण करनेसे नरकमें मरिके वसैहै और जन्मान्तरमें कुक्षिमें कृमिपड़ैं॥ ज्योतिःशास्त्राभिप्राय॥ जिसके जन्म कालमें चौथेस्थानमें पापग्रहहों तिसके छातीफटना ‥ पीड़ा बालकपनामें व्याधि होवे और नख केशों को धारणकरै ‥ शूरबीरहो॥ हृद्रोगनिदान॥ बहुत गरम और भारी बहुत खट्टी कसैली बहुत तीखी इन बस्तुओं के खानेसे बहुत श्रमके करनेसे ‥ चोट के लगनेसे बहुत पिटने और चिन्ता करनेसे मलमूत्र के ‥ नेसे हृदयका रोग उत्पन्न होहै सो पांचप्रकार का है॥ संप्राप्ति॥ ‥

खानेका रस जो प्रथम हृदय में जाय उस रसको बात पित्त कफ त्रिगाड़ कर हृदय में पीड़ा करै उसको वैद्य लोग हृद्रोग कहते हैं ॥ बातजहृद्रोग ॥ हियामें पीड़ा फैलजाय और सुई कैसा चभकाचलै और हियामें भेरणोसो फिरै और हियामें पत्थर और कुहाड़ाकीसी चोट लगै फटासा दीखै यह बातका हृद्रोग जानिये ॥ पंचमूलकाढ़ा ॥ इसमें स्नेहका पानकराय वमनकरावै अथवा दशमूलकेकाढ़ामें स्नेह सेंधानोन मिलाय पीनेसे बातजहृद्रोगजावै ॥ पिप्पल्यादिचूर्ण॥ पिपली इलायची बच हींग जवाखार सेंधानोन कालानोन शुंठि अजमान इन्हों का चूर्ण ४ तोला खावै ऊपर कांजी कुलथी का पानी दही मदिरा मांस स्नेह इन्हों में से एकक्रोयेसा को पीवै इसमें वमन व रेचन लगिकरि बातजहृद्रोग नाशहोवै ॥ पुष्करादिकल्क ॥ पोहकरमूल त्रिजौरा मूल शुंठि कचूर हरड़ै इन्होंके कल्कको दूध व कांजी व घृत व सेंधाके पानीके संग खानेसे बातजहृद्रोग जावै ॥ पुनर्नवादितैल ॥ सांठी दारुहल्दी पंचमूल रास्ना यव बेरीकी छाल कैथ बेलफल इन्हों के काढ़ामें तेलको पकाय मालिश व खाने से बातजहृद्रोग शांतहोवै ॥ पित्तजहृद्रोगनिदान ॥ तृषा बहुतलगै दाहलगै हृदय दूखै कंठसे धूमा निकलै मूर्च्छाहो शरीर शीतल होजावै पसीना आवै मुखसूखजाय ये लक्षण पित्तके हृद्रोगकेहैं ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ शीतललेप पानीका सेचना जुलाब ये पित्त के हृद्रोग में हित हैं ॥ द्राक्षादिचूर्ण ॥ पित्तके हृद्रोग में रेचन से शुद्धकरि पीछे दाख मिश्री शहद फालसा इन्होंसे युक्त ऐसे अन्नपान हित है ॥ श्रीपर्ण्यादिरेचन व बमन ॥ कायफल मुलहठी शहद खांड़ गुड़ इन्हों के पानी से वमन व जुलाब लेनेसे पित्तका हृद्रोग नाश होवै ॥ हारहूरादिचूर्ण ॥ कालीदाख हरड़ै इन्हों के चूर्ण में बराबरकी खांड़ मिलाय ठंढेपानी के संग खानेसे पित्तका हृद्रोग शांतहोवै ॥ अर्ज्जुनादिक्षीर ॥ अर्ज्जुन वृक्षकी छालके काढ़ामें दूधको सिद्धकरि पीनेसे व मिश्रीके संग व पंचमूली के काढ़ा के संग दूधको पीनेसे व बाला के काढ़ा में सिद्ध दूधको पीने से व मुलहठी में सिद्ध दूधको पीने से पित्त का हृद्रोग नाशहोवै ॥ कसेरुकादिकाढ़ा ॥ कचूर शेवाल शुंठि पुण्डरीकवृक्ष मुल-

हठी कमलकीदंडी बेलकीगांठ इन्हों के चूर्णमें घृत शहद मिलाय खाने से पित्त के हृद्रोग को नाशै॥ कफजहृद्रोगनिदान॥ हृदय भारी रहै मुखमेंसे कफ बहुतनिकसै भोजनमें रुचिजातीरहै शरीरजकड़ होजाय मुखमीठारहै मन्दाग्निहो हृदयमें कफ जमजाय ये लक्षणहों तो कफका हृद्रोगजानिये॥ सामान्यचिकित्सा॥ कफके हृद्रोगमें पहले पसीना देय वमन कराय लंघन कराय कफनाशक औषधों से चिकित्सा करै दोषका बलाबल बिचार करि॥ त्रिवृत्तादिचूर्ण॥ निसोत कचूर खरैटी रास्ना शुंठि हरड़ै पोहकरमूल इन्हों के काढ़ा व चूर्ण को गोमूत्र के संग खाने से कफका हृद्रोग जावै॥ सूक्ष्मैलादिचूर्ण॥ छोटी इलायची पिपलामूल इन्हों को घृतमें मिलाय चाटने से उपद्रव सहित कफके हृद्रोग को नाशै॥ सन्निपातजहृद्रोगनिदान॥ ये तीनों के सब लक्षण मिले होयँ तो सन्निपातका हृद्रोगजानिये॥ चिकित्सा॥ इसहृद्रोग में पहले लंघन कराय पीछे सब हृद्रोग नाशक अन्नको खावै और घृत व चूर्ण कहैंगे उन्हों से सन्निपातज हृद्रोग को शांत करै॥ कृमिजहृद्रोगनिदान॥ आंतों में कृमिहों पीछे कुपथ्य का करने वाला मनुष्य तिल दूध गुड़ आदिले मीठी बस्तु खावै तब उसके मर्मस्थानों में पीड़ाहोय हृदय दूखै और सड़जाय तब उसकी आत्मा बहुत दुःखपावे और मन में क्लेशहो बहुत थूकै हृदयमेंशूलचलै भोजनमें अरुचिहो नेत्र कालेपड़जायँ शरीरसूखजावै ये कृमि के हृद्रोगके लक्षणहैं॥ हृद्रोगकेउपद्रव॥ पिपासास्थान में ग्लानिहो भ्रमहो शोषहो ये हृद्रोग उपद्रव हैं और कृमिजहृद्रोग में पूर्वोक्त कफका कृमिरोग के उपद्रवहोवै स्तंभ घोरज्वर हृदयरूखा व भारी और स्पर्शको सहैनहीं और आध्मान कुक्षि हृदय अधोवायु विष्ठा मूत्र इन्हों का निरोध तंद्रा अरोचक शूल ये लक्षण होवैं॥ सामान्यचिकित्सा॥ कृमिज हृद्रोगमें पहले लंघन रेचन कराय पीछे कृमिरोगोक्त उपचारकरावै॥ गोमूत्रपान॥ गोमूत्र में बायबिड़ंग कूट इन्होंका चूर्ण मिलाय पीने से हृदय के जमे हुये कीड़े असाध्य भी गिरपड़ैं॥ दुग्धपान॥ गौका दूध ९६ तोला अग्नि ऊपर पकाय ४८ तोले बाकी रहनेपर उतारि ठंढाकरि मिश्री २ तोले शहद २ तोले

घृत२ तोले पीपली चूर्ण १ तोले इन्हों को मिलाय दूधको पीनेसे सन्निपात का हृद्रोग ज्वर खांसी क्षयी इन्हों को नाशकरै ॥ पुष्करादिकाढ़ा ॥ पुष्करमूल बिजौरा पलाश अजमान कचूर देवदारु शुंठि जीरा बच इन्होंके काढ़ामें जवाखार साजीखार सेंधानोन कालानोन ये मिलाय गरम२ पीनेसे हृद्रोग नाशहोवै ॥ दशमूलादिकाढ़ा ॥ दशमूल के काढ़ा में जवाखार सेंधानोन मिलाय पीने से हृद्रोग गुल्म शूल खांसी श्वास इन्होंकोनाशै ॥ एरण्डादिकाढ़ा ॥ एरण्डजड़ ८ तोला आठगुणा पानीमें काढ़ा बनाय जवाखार मिलाय पीनेसे हृदय कुक्षि कमर इन्हों के शूलको नाशकरनेवास्ते सिंह के नखके समान है ॥ बाह्लीकादिकाढ़ा ॥ हींग शुंठि चीताजड़ जवाखार हरड़ै कूट मनियारी नोन पीपली कालानोन पोहकरमूल इन्हों को काढ़ा बनाय पीनेसे हृद्रोग मन्दाग्नि मलबद्धता इन्होंकोनाशै ॥ नागरादिकाढ़ा ॥ शुंठिका काढ़ा गरम२पीनेसे अग्निबढ़ै और श्वासखांसी वायुशूलहृद्रोगइन्हों कोनाशकरै ॥ नागबलादिदुग्धपान ॥ गंगेरणकी जड़ को गौके दूधमें पकायपीनेसे हृद्रोग श्वास खांसी इन्होंकोनाशै व शम्भलकीछालको दूधमें सिझाय पीनेसे १ महीनातक रसायन है और बलको बढ़ावै है और इस को १ वर्ष सेवन करै तो १०० वर्ष जीवै ॥ हिंगुपंचकचूर्ण ॥ शुंठि कालानोन अनार की छाल आम्लबेतस भूनीहींग ये समभाग लेय चूर्णकरि खानेसे हृद्रोगको नाशै यहभेड़ नामक मुनिने कहाहै ॥ पुष्करचूर्ण ॥ पुष्करमूलके चूर्णको शहदमें मिलाय चाटनेसे हृद्रोग श्वास खांसी हिचकी इन्होंको नाशै ॥ हरिणशृंगभस्म ॥ शराव संपुटमें हरिणके सींगकी भस्मकरि गौके घृतमें मिलाय पीनेसे हृदयशूलको नाशै ॥ हिंग्वादिचूर्ण ॥ हींग बच मनियारीनोन शुंठि पिपली कूट हरड़ै चीता जवाखार कालानोन पुष्करमूल इन्हों के चूर्णको यवोंके काढ़ाकेसङ्ग पीनेसे हृद्रोगको नाशै ॥ ककुभत्वक्चूर्ण ॥ अर्ज्जुन वृक्षकी छालके चूर्णको घृत व दूध व गुड़के शर्बत के संग खानेसे हृद्रोग जीर्णज्वर रक्तपित्त इन्होंकोनाशै इसके सेवनसे चिरंजीवीहोवै ॥ कुटक्यादिचूर्ण ॥ कुटकी मुलहठी इन्होंके चूर्णको गरमपानी के संग खानेसे जीर्णज्वर रक्तपित्त हृद्रोग इन्होंको नाशै ॥

हरीतक्यादिचूर्ण ॥ हरड़े बच रास्ना पिपली शुंठि नागरमोथा पुष्कर-मूल इन्होंका चूर्ण हृद्रोगको नाशै ॥ पाढ़ादिचूर्ण ॥ पाढ़ा बच जवा-खार हरड़े आम्लबेतस धमासा चीता शुंठि मिरच पीपल हरड़े बहेड़ा आमला शुंठि पुष्करमूल अमली अनारछाल बिजौराकीजड़ ये समभाग ले बारीक चूर्णकरि गरमपानी व मदिराकेसंग खानेसे हृद्रोग बवासीर शूल गुल्म इन्होंको नाशै॥ गोधूमादिचूर्ण ॥ गेहूं अर्जुन वृक्षछाल इन्होंका चूर्णकरि बकरीके दूध व घृतमें पकाय शहद खांड़ मिलाय पीनेसे दारुण हृद्रोग शांतहोय॥ बल्लभकघृत॥ हरड़े ५० लेय कालानोन ८ तोला चूर्णकरि घृत ६४ तोला और घृतसे चौगुने दूधमें घृतको सिद्धकरि बरतनेसे हृद्रोगको नाशकरै ॥ यष्ठ्यादिघृत ॥ मुलहठी मोटीखरैटी बाला अर्जुन इन्होंमें घृतको सिद्धकरि बरतने से हृद्रोग क्षयी रक्तपित्त श्वास खांसी ज्वर इन्होंको नाशकरै॥ बला-दिघृत ॥ खरैटी मोटीखरैटी अर्जुन इन्होंके काढ़ामें मुलहठीकाचूर्ण मिलाय घृतको सिद्धकरि बरतनेसे हृद्रोग बातरक्त क्षयी रक्तपित्त इन्होंको नाशै ॥ हृदयार्णव ॥ पारा गन्धक तांबाभस्म इन्होंको त्रिफ-लाके काढ़ामें १ दिन खरलकरि पीछे काकमाचीके रसमें खरलकरि गोली बनाय खानेसे हृद्रोगको नाशै ॥ रसायन॥ पारा गन्धक अभ्रक इन्होंकीभस्म समभागलेय अर्जुनवृक्षकीछालके रसमें २१ भावना देय घाममें सुखाय पीछे उड़द प्रमाण शहदके संग खानेसे बातज-हृद्रोग पित्तजहृद्रोग कफजहृद्रोग सन्निपातज हृद्रोग कृमिजहृद्रोग इन्होंको नाशै ॥ हृद्रोगमेंपथ्य ॥ स्वेदन विरेचन बमन लङ्घन वस्ति कर्म यवागू लालधान जङ्गली मृग तथा पक्षियोंके मांसकायूष मूंग तथा कुलथीका रस राग कांबलिक खांड़ व गजपिपली परवर के-लेका फल पुरानाकोहला आंब अनार अमलतासका शाक नवीन मूली अरंडीका तेल आकाशकाजल सेंधानोन दाख मठापुराना गुड़ शुंठि अजमान लहसुन हरड़े कूट धनियां कालाअगर अदरख बेर कांजी शहद बारुणीरस कस्तूरी चन्दन पन्ना नागरपान ये सब हृद्रोगमें पथ्यहैं॥ अपथ्य ॥ तृषा बमन मूत्र अधो बायु बीर्य खांसी ड्कार श्रमका श्वास मल आंशू इन्होंके बेगोंका रोकना सह्याचल

और बिंध्याचलसे निकलीहुई नदियोंका जल भेड़कादूध बुराजल कसायली बस्तु बिरुद्ध भारी गरम चर्परा तथा खट्टा भोजन पुराने पत्तोंका शाक खार महुआ दतून फस्तखुलाना ये हृद्रोगमें अपथ्यहैं॥

इतिबेरीनिवासकराबिदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांहृद्रोगप्रकरणम्॥

मूत्रकृच्छ्रकर्मविपाक॥ गुरुकी पत्नी के संग भोगकरने से मूत्रकृच्छ्र उपजैहै इसका प्रायश्चित शास्त्र विधिसे करावे व पशुयोनि के संग भोगकरनेसे मूत्रकृच्छ्र उपजे है इसमें शुद्धि वास्ते ३ तिल पात्र दानकरावे व तिलों से पात्रको भरि सोना घालि ब्राह्मण को प्रभातमें देनेसे दुःस्वप्न नाशहोवे॥ ज्योतिःशास्त्राभिप्राय॥ जन्मकाल में सातवें स्थान शनिहो और राहुकी दृष्टिहो तो मूत्रकृच्छ्र रोग उत्पन्न होवै॥ मूत्रकृच्छ्रनिदान॥ खेदके करने से तीक्ष्ण वस्तु और रूखी बस्तुके खानेसे और मदिराके पीनेसे नाचने से दुष्ट घोड़ेपर चढ़नेसे नदीके जीवोंका मांस खाने से अजीर्णसे मूत्रकृच्छ्र रोग आठप्रकारका उत्पन्न होयहै॥ संप्राप्ति॥ कोपको प्राप्त हुआ जो बात पित्त कफ वह आप अपनेही कारणोंसे पेटमें प्राप्तहो मूत्र के मार्ग में बहुत पीड़ाकरिके बड़े कष्टसे कीनठकरि मूत्र उतारैहै और मूत्र बन्द होनेमें कम और मूत्रकरने में अधिक पीड़ा होवै उसकोमूत्रकृच्छ्र कहते हैं॥ बातजमूत्रकृच्छ्रनिदान॥ जांघों और पेडूकी संधि में और वस्ति लिंग इन्होंमेंपीड़ा अधिकहो और थोड़ा२बारंबारमूत्र उतरै यह बातका मूत्रकृच्छ्र जानिये॥ चिकित्सा॥ स्नेह अभ्यंजन निरूह वस्ति पसीना एंड़ीबंधन उत्तरवस्ति पानीकीसेंक स्थिरादि औषधोंकेरस ये बातके मूत्रकृच्छ्रमेंहितहैं॥ काढ़ा॥ गिलोय शुंठि आमला असगन्ध गोखुरू इन्होंका काढ़ा पीनेसे बातके मूत्रकृच्छ्रको नाशै॥ एलादिचूर्ण॥ इलायची पाषाणभेद शिलाजीत गोखुरू काकड़ीबीज सेंधानोन केशर इन्होंके चूर्णको चावलोंके धोवनके संग पीने से असाध्य मूत्रकृच्छ्र शांतहोवै॥ पित्तमूत्रकृच्छ्र निदान॥ पीला लाल और गरममूत्र बहुतकष्टसे चीसचलकरि उतरै दाहयुक्त बारम्बार तिसेपित्तका मूत्रकृच्छ्र जानिये॥ कुशकासादि काढ़ा॥ कुशा कास डाभ

शरईष इन्होंका काढ़ा पित्त मूत्रकृच्छ्रको नाशै वस्ति को शुद्ध करै और इनपांचोंमें दूधको सिद्धकरि पीने से लिंगका दुष्ट लोहू नाश होवै ॥ शतावरिकाढ़ा ॥ शतावरि कास कुश गोखुरू विदारीकंद चावल ईषकारस पीलाबांसा इन्हों का काढ़ा बनाय शीतल होने पर शहद मिश्री मिलाय पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र जावै ॥ एर्वारुबीजपान ॥ काकड़ीकेबीज मुलहठी दारुहल्दी इन्होंकाचूर्ण चावलों के धोवन संग खानेसे व आमलाके रस में दारुहल्दीका चूर्ण शहद मिलाय पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्र नाशै ॥ द्राक्षादिकल्क ॥ दाख मिश्री इन्होंके कल्कको मस्तुके संग खाने से व गरमदूध में गुड़ मिलाय पीनेसे पित्तका मूत्रकृच्छ्रजावै ॥ नारिकेलजलपान ॥ नारियल के रस में गुड़ धनियां मिलाय पीनेसे दाहसहितमूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त इन्हों कोनाशकरै ॥ रक्तनारिकेलजलपान ॥ लालनारियल के रसमें निंबोलीकेबीज मिश्री इलायची बीज मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्रको नाश करै ॥ कफजमूत्रकृच्छ्र निदान ॥ पेडू और लिंग दोनों भारीहों और दोनोंमें सूजनहो मूत्रमें झागआवै और मूत्र कष्टसे उतरै यहकफज मूत्रकृच्छ्र है ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ खारी तीक्ष्ण गरम औषध अन्न पान स्वेदन लंघन वमन निरूहणवस्ति और तक्र कटु तिक्त औषधों में सिद्धकिया तेल वस्तिकर्म ये कफके मूत्रकृच्छ्र में हित हैं ॥ एलाचूर्ण ॥ इलायचीको गोमूत्र व मदिरा व केलाके रस के संग पीनेसे कफका मूत्रकृच्छ्रजावै ॥ सितवारुणकादि चूर्ण ॥ कुरडूकेबीजों को तक्रके संगपीनेसे व मूंगाकी भस्मको चावलों के धोवन के संग खानेसे कफका मूत्रकृच्छ्रजावै ॥ सन्निपातमूत्रकृच्छ्र निदान ॥ तीनों के लक्षण मिलैं तो सन्निपातका मूत्रकृच्छ्र जानिये यह अति कष्ट साध्यहै इस में बिचारकरि चिकित्साकरै जो कफाधिक सन्निपात मूत्रकृच्छ्रहो तो वमन हितहै और पित्ताधिक सन्निपात मूत्रकृच्छ्र हो तो जुलाब हितहै और वाताधिक सन्निपात मूत्रकृच्छ्र हो तो वस्तिकर्म हितहै ॥ क्वाथ ॥ दोनोंकटैली पाढ़ा मुलहठी इन्द्रयव इन्हों का काढ़ा सन्निपात के मूत्रकृच्छ्र को नाशै ॥ क्वाथ ॥ शतावरि की जड़के काढ़ामें खांड़ शहद मिलाय पीनेसे त्रिदोषका मूत्रकृच्छ्रजावै॥

दुग्धयोग ॥ दूधमें गुड़को मिलाय थोड़ा गरम करि पीने से सब मूत्रकृच्छ्र शर्करा बातरोग इन्हों को दूर करै ॥ यवक्षार ॥ जवाखार ५ माशा मिश्री में मिलाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवे संशय नहीं ॥ गोकंटकादि लेह ॥ पंचांग सहित गोखुरू को बारीक पीसि ४०० तोले लेय काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकी रहने पर मिश्री २०० तोला मिलाय पकाय घृत सरीखा होजाय तब उतारि तिसमें शुंठि पीपली छोटीइलायची जवाखार नागकेशर जावित्री अर्जुन वृक्ष की छाल कांकड़ी बंशलोचन ये बत्तीस तोले ले मिलाय चटनी बनाय रोज चाटने से मूत्रकृच्छ्र दाह मूत्रबन्ध पथरीमूत्रकृच्छ्र रक्तप्रमेह इन्हों को नाशकरै ॥ शल्यजमूत्रकृच्छ्रलक्षण ॥ मूत्रके ले चलनेवाली नसों में किसीप्रकारकी चोट लगने से मूत्र रुकजावै व भयंकर मूत्रकृच्छ्र हो इसके लक्षण बातजमूत्रकृच्छ्र के समान हैं ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ इस में बातज मूत्रकृच्छ्र का इलाजकरै व बड़ पीपल पापरी आंब जामन इन्होंकी छालको पीसि थोड़ा गरमकरि लेपकरनेसे अभिघातका मूत्रकृच्छ्र जावै ॥ लोहभस्मयोग ॥ लोहकीभस्म को बारीक पीसि शहद में मिलाय तीनबार चाटनेसे मूत्रकृच्छ्र को नाशै इसमें संशय नहीं ॥ रसपान ॥ पारा २ रत्ती में जवाखार मिश्री मिलाय तक्रके संग पीनेसे सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र वेग शांत होवैं ॥ पुरीषज मूत्रकृच्छ्र ॥ जो पुरुष मलकीबाधा को रोकै उसके बायु कुपित होके पेडू और पेटमें अफारा करै और लिंगमें पीड़ा अधिक करै और मूत्रकष्टसे उतरै ये लक्षण मलके मूत्रकृच्छ्रके हैं ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ इस मूत्रकृच्छ्र में स्वेदचूर्ण मालिश वस्ति ये उपचार हित हैं और वीर्य को बंध करनेवाली बिधि करावै ॥ क्वाथ ॥ गोखुरू के काढ़ा में जवा-खार मिलाय पीने से निश्चय बहुत दिनका मूत्रकृच्छ्र दूर होवै ॥ आमलक्यादि क्वाथ ॥ आमलाके काढ़ा में गुड़ घालि पीनेसे श्रमपित्त रक्त दाह शूल मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशै और तृप्तिकरै ॥ एलाचूर्ण ॥ मदिरा व आमलाके रसके संग छोटी इलायची को पीनेसे व कुरडू के बीजोंको तक्रके संग पीनेसे मूत्रकृच्छ्र जावै ॥ खर्जूरादिचूर्ण ॥ खजूर आमला पीपली शिलाजीत इलायची मुलहठी पाषाणभेद चन्दन

काकड़ीबीज धनियां इन्हों के चूर्ण में मिश्री मिलाय मुलहठी के काढ़ाके संगखाने से अंगदाह लिंगदाह गुदादाह बंक्षणदाह वीर्य्य दाह शर्करा पथरीशूल इन्होंको नाशै और बल बीर्यको बढ़ावै॥ त्रिफलादिकल्क॥ त्रिफलाको बारीक पीसि बरणा कंकोल सेंधानोन ये मिलाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र पीड़ा नाशहोवै॥ अश्मरी जन्य मूत्रकृच्छ्र॥ पथरी और शर्करानाम रेत ये दोनों अंडमें रहै हैं इन्हों से मूत्रकृच्छ्र होयहै वह पथरी पित्तकरिकै पची बायुकरिकै रूखी कफसेरहित पथरी का रूप होय निकलते मूत्रको रोकैहै इसमें पसीना आदि बातनाशक कियाकरै॥ क्वाथ॥ पाषाणभेदका काढ़ा पथरीकेमूत्रकृच्छ्र को नाशै॥ एलादिक्वाथ॥ इलायची पीपली मुलहठी पाषाणभेद रेणुकाबीज गोखुरू बांसा अरण्डकीजड़ इन्हों के काढ़ामें पाषाणभेद व खांड़ मिलाय पीने से पथरीका मूत्रकृच्छ्र जावै॥ शुक्रजमूत्रकृच्छ्र॥ बीर्य्य के रोकनेसे मूत्रका मार्ग रुकजाय तो पुरुषके पेडू और लिंगमें शूल चलै और वीर्य सहित बहुत कष्टसे मूत्र उतरै तिसे बीर्य रोकनेकामूत्रकृच्छ्र जानिये॥ शास्त्रार्थ॥ इस मूत्रकृच्छ्र में शिलाजीत शहद मिलाय चाटना हितहै व दूध में मिश्री घृत मिलाय प्रभात में पीना हितहै व वीर्यदोषकी शुद्धिवास्ते मदवाली स्त्रीसे भोगकरना हितहै॥ तृणपंचमूलघृत॥ पांचोंतृणों की जड़ में घृतको सिद्धकरि पीनेसेभी पूर्वोक्तरोग शांतहो॥ बलादिक्षीर॥ खरैटी हींग दूध इन्हों में घृत को सिद्धकरि बरतनेसे मूत्रदोष बीर्यदोषको नाशै॥ पथरीशर्करानिदान॥ अश्मरी शर्करा ये तुल्यरूप उत्पत्तिहै परन्तु शर्कराके विशेषलक्षण कहते हैं सुनो पथरी पित्तसे पचतीहुई बायुसे सूखतीहुई कफसे छुटीहुई भिरती तिसे शर्कराकहतेहैं हृदयमें पीड़ा शरीरकांपै कुक्षिमेंशूल चलै मन्दाग्नि होजाय मूर्च्छा आवै दारुणमूत्रकृच्छ्रहो॥ मूलपंचक योग॥ कुश कास ईष शर कसई इन्हों की जड़को पीनेसे मूत्राघात मूत्रपथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशै व शिलाजीत पाषाणभेद पीपली इलायची इन्हों का चूर्ण पानी के संग खानेसे मूत्रकृच्छ्रको हरै व हल्दी मुलहठी मूर्वा नागरमोथा देवदारु इन्होंका चूर्ण १ तोला ले कल्क बनाय दूधकेसंग पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै व इलायची

पाषाणभेद शिलाजीत पीपली इन्होंका चूर्ण चावलोंके धोवनकेसंग खानेसे व गुड़के सङ्गखाने से असाध्य मूत्रकृच्छ्र रोगी भी अच्छा होवै व अङ्कोल तिलकाखार इन्होंमेंशहद मिलाय दहीके सङ्गखाने से मूत्रकृच्छ्र जावै॥ दाडिमादिरस पान॥ अनारकारस इलायची सफ़ेदजीरा इन्होंके चूर्णको खाइ ऊपर नोनयुत मदिराको पीनेसे मूत्रकृच्छ्रनाशहोवै॥ निदिग्धिकारसपान॥ जवाखारमें मिश्रीमिलाय खाने से मूत्रकृच्छ्र जावै व कटैली के रसमें शहद मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्रनाशहोवै॥ यवक्षारपान॥ तक्रमें जवाखार मिलाय पीने से मूत्रकृच्छ्र अश्मरी इन्होंको नाशै॥ यवक्षारपान॥ जवाखार १ माशा कोहलाकारस ४ तोला खांड़ १ तोला इन्होंको मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै॥ पाषाणभेद क्वाथ॥ पाषाणभेद निसोत हरड़े धमासा पुष्करमूल गोखुरू पलाश सिंगाड़ा काकड़ी बीज इन्होंका काढ़ापीने से मूत्रकृच्छ्रको नाशकरै॥ हरीतक्यादिक्वाथ॥ हरड़े गोखुरू अमलतास पाषाणभेद धमासा इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीने से मूत्रकृच्छ्र दाह पीड़ा इन्होंको नाशकरै॥ पाषाणभेदादिकाढ़ा॥ पाषाणभेद अमलतास धमासा छोटीहरड़ै गोखुरू ये समभागलेय काढ़ा बनाय शहद संयुक्तकरि पीनेसे पीड़ा दाहयुक्त मूत्रकृच्छ्र को नाश करै॥ गोक्षुरादिकाढ़ा॥ जड़ सहित गोखुरूके काढ़ामें मिश्री शहद मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र गरमबायु ये दूरहोवैं॥ हरीतक्यादिकाढ़ा॥ छोटीहरड़े धमासा अमलतास गोखुरू पाषाणभेद इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे बायुरोध दाहपीड़ासहित मूत्रकृच्छ्र इन्हों को नाशकरै॥ यवादिकाढ़ा॥ यवकेसत्तू अरण्डकी जड़ पांचोंतृण पाषाणभेद शतावरि हरड़े इन्होंके काढ़ामें गुड़ मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र गुल्म इन्होंको नाशै॥ कण्टकादिघृत॥ गोखुरू अरण्डजड़ कुश कास दर्भ शर महाशतावरि काकड़ी ईष इन्होंके रसमें घृतको सिद्ध करि आधागुड़ मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र अश्मरी मूत्राघात इन्हों को नाशै॥ शतावर्यादिघृत॥ घृत ६४ तोला शतावरिरस १२८ तोला इन्हों को बकरीके दूध २५६ तोले में पकाय पीछे गोखुरू लघुगोखुरू गिलोय धमासा कास कटैली इन्होंके काढ़े निराले निराले

८ तोले बनाय मिलाय पीछे मुलहठी त्रिकुटा गोखुरू त्रायमाण दूधी शिलाजीत पाषाणभेद दालचीनी इलायची तमालपत्र इन्हों के चूर्ण प्रत्येक ३ तोलेलेय मिश्री ८ तोला शहद २ तोला इन्हों को मिलाय फिर पकाय खानेसे मूत्रकृच्छ्र मूत्रदोष शर्करा इन्होंको नाशै यह शतावरि घृत पुराने वैद्यों ने कहा है ॥ त्रिकंटकादिगूगल ॥ आठगुणा गोखुरूके काढ़ामें विधिसे गूगल को पकाय पीछे त्रिफला त्रिकुटा नागरमोथा इन्होंकाचूर्ण गूगलके प्रमाण मिलाय गोली बनाय खानेसे प्रमेह मूत्राघात बातकृच्छ्र पथरी शुक्रदोष सर्वबात इन्हों को नाशकरै जैसे मेघोंको बायु तैसे ॥ स्वदंष्ट्रादिलेप ॥ गोखुरू की जड़ काकड़ीके बीज इन्हों को कांजी में पीसि वस्ति ऊपर लेप करने से तत्काल मूत्रकृच्छ्र नाश होवै ॥ किंशुकस्वेद ॥ एरण्ड तेल से पहले वस्तिको स्निग्धकरि पीछे केशूके फूलोंको पानीमें सिझाय वस्ति ऊपर बांधनेसे मूत्रकृच्छ्र शांत होवै ॥ आखुबिट्कल्क ॥ मूषा की मींगनीको पानीमें पीसि थोड़ा गरमकरि वस्तिऊपर लेप करने से मूत्रकृच्छ्र जावै ॥ त्र्यूसादि ॥ काकड़ी के बीजों के लेपसे व केशू के फूलों में पकाये पानीकी धारासे व कपूरके लेपसे व चिड़ियाकी बीटके लेपसे व शिलाजीत के लेपसे व काकड़ीके पानीसे पसीना लेनेसे व कछुक गरमतेलकी धारासे व गरम पानी की धारासे मूत्रकृच्छ्र नाश होवै ॥ मन्थादियोगत्रय ॥ मन्थमें मिश्री मिलाय पीने से व गरम दूधमें मिश्री घृतको मिलाय पीनेसे व आमला के रस में ईषके रसको मिलाय पीने से व आमला के रसमें शहद घालि पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै व काकड़ीबीज मुलहठी दारुहल्दी इन्होंको चावलों के धोवनमें पीसि पीने से व मुनक्का दाखोंको रात्रि को पानीमें भिगोय प्रभात पीने से व छोटीइलायची को मदिरा के सङ्ग व आमलाके रसके सङ्ग पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशहोवै ॥ हरिद्रादियोग ॥ हल्दी गुड़ १ तोला खाइ ऊपर कांजी पीनेसे व बांझककोड़ी कन्द १ तोला लेय शहद मिश्रीके संग खानेसे पथरीकोनाशै यह महादेवजी ने कहा है ॥ भ्रष्टेक्षुरसपान ॥ ईषको गरम करि रस निचोड़ि तिसमें मूषाकी बीट मिलाय पीने से मूत्रकृच्छ्र नाश होवै

संशय नहीं ॥ कुटजयोग ॥ कुड़ाकी छालको गौके दूधमें पीसिपीनेसे भयंकर मूत्रकृच्छ्र भी शांतहोवै ॥ लघुलोकेश्वर ॥ पाराभस्म १ भाग गन्धक ४ भाग इन्होंकी कजलीकरि कौड़ीमें भरि पारा से चौथाई सुहागा को दूधमें पीसि तिससे कौड़ी के मुखकोबंदकरि बरतन में घालि गजपुटमें पकाय शीतल होनेपर काढ़ि चूर्णकरि ४ रत्तीघृतमें खावै पीछे २१ मिरचोंका चूर्णकरिजावित्री की जड़ ४ तोले इन्हों को बकरीकेदूधमें पकाय मिश्री मिलाय पीना यह अनुपान है यह मूत्रकृच्छ्रको नाशकरै ॥ चन्द्रकलारस ॥ पाराभस्म तांबाभस्म अभ्रकभस्म ये प्रत्येक १ तोलालेय गन्धक २ तोला इन्होंकी कजलीकरि इसको नागरमोथा अनार दूब केतकीकाअंकुर सहदेयी घीकुवारपट्ठा पित्तपापड़ा रामशीतला शतावरि इन्हों के रसोंमें एक एकदिन भावनादेय पीछे कुटकी गिलोयसत पित्तपापड़ा वाला मधुमालती बेलफल चन्दन सारिवा इन्हों के चूर्ण को मिलाय पीछे दाखों के काढ़ामें ७ भावना देय चिकने बरतनमें घालि रक्खै पीछे चना समान गोली बनाय खानेसे सब पित्तरोग वातपित्तरोग अंतर्बाह्यदाह इन्होंको नाशै यहचन्द्रकलारस रसोंका राजाहै इसको विशेष करि ग्रीष्मकाल और शरत्कालमेंसेवै और मन्दाग्निको दूरकरै महादाह ज्वरको नाशै भ्रम को मूर्च्छा को जल्दी नाशकरै स्त्रीके पड़ता लोहू को बन्दकरै और ऊर्ध्वगत रक्तपित्तको व अधोगत रक्तपित्तकोनाशै और लोहूकी छर्दिको व सबप्रकारके मूत्रकृच्छ्र रोगों को नाश करै इसमें संशय नहीं। व पाराभस्म सोनाभस्म वैक्रांतभस्म ये समभाग ले इन्होंको शिवलिंगी मोर मांसी इन्हों के रसों में २ पहर खरल करि गोला बनाय सुखाय गजपुट में पकाय पीछे अरनों की अग्नि से महापुटमें पकाय अनुपान के संग खाने से मूत्रकृच्छ्र नाश होवै ॥ बृहद्गोक्षुराद्यवलेह ॥ गोखुरू ४०० तोला डाभकी जड़ ४०० तोला पाषाणभेद ३२ तोला गिलोय २० तोला अरंड जड़ ३२ तोला शतावरि ४० तोला पद्मकन्द ८० तोला असगन्ध ८० तोला इन्होंको कूटि १०२४ तोले पानीमें काढ़ा बनाय चतुर्थांश रहनेपर कपड़ा से छानि तिसमें गौकाघृत ६४ तोला शिलाजीत ६४ तोला

मिलाय पकाय तिसमें काली मुसली शतावरि शुंठि मिरच पीपली हरड़े बहेड़ा आमला छोटी इलायची जटामांसी बाला नागकेशर पत्राख जावित्री दालचीनी मुलहठी बंशलोचन जायफल काला-बाला निसोत लालचन्दन धनियां कुटकी जवाखार सुहागा नाग-बेल काकड़ासिंगी पुष्करमूल कचूर दारुहल्दी शीशाभस्म लोह भस्म बंगभस्म ये सब चार २ तोले लेय चूर्णकरि मिलाय अग्नि बलबिचारि खानेसे सुख उपजे इसको चिकने बरतनमें घालि धरै पीछे ४ तोला रोजखाने से पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात मूत्रबंध २० प्रकारका प्रमेह शुक्रदोष नष्टशुक्र अम्लपित्त धातुक्षय उष्ण बात बातकुण्डली इन्होंको नाशै जैसे सूर्य अंधेरेको तैसे इससे पर और औषध नहीं है इसपै पथ्यसे रहै यह कृष्णात्रेयजीने कहाहै ॥

मूत्रकृच्छ्र पथ्य ॥ बातसे उत्पन्न मूत्रकृच्छ्रमें तेललगाना निरूहवस्ति स्नेहन गोतामार के नहाना शीतललेप ग्रीष्मऋतुकी विधि वस्ति विधि विरेचन और कफसे उत्पन्नमें स्वेदन बिरेचन वस्ति कर्म्म खार यव और तेज तथा गरम उपचार करै त्रिदोष से प्रथम तेल लगाके पीछे तीनों दोषोंकी शांति करनेवाली क्रिया करनी चाहिये मूत्राघातके बिकारसे उत्पन्न बातके मूत्रकृच्छ्रकी क्रिया करनी चाहिये बीर्य रुकने से उत्पन्नमें शहदके साथ शिलाजीतको चाटना चाहिये विष्ठाके रोकनेसे उत्पन्नमें स्वेदन चूर्ण तेल लगाना वस्तिकर्म करना उचितहै इस पीछे दोषोंके अनुसार यहगुणकहते हैं पुराने लालधान गौका दूध दही तथा माठा मरुदेशका मांस मूंगका रस मिश्री पुराना कोहला परवल अदरख गोखुरू घीकुवार पट्टा खजूर नारियल ताड़ इनसबों के शिर हरड़े ताड़फलकी मींगी खीरा छोटी इलायची शीतल जल तथा भोजन नदीके तटका जल कपूर ये सब मूत्रकृच्छ्रमें पथ्यहैं ॥

अपथ्य ॥ मदिरा श्रम स्त्रीसंग हाथीघोड़े की सवारी सबप्रकारका बिरुद्ध भोजन विषमभोजन पान मछली नोन अदरखतेलकी भुनीबस्तु तिल कीखली हींग तिल सिरसम मूत्रके बेगका रोकना उड़द करील बहुत तेजतथा विदाहीवस्तु रूखी और खट्टी बस्तु ये मूत्रकृच्छ्रमें अपथ्यहैं॥

इतिबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांमूत्रकृच्छ्रप्रकरणम्॥

मूत्राघातनिदान॥ मूत्र पुरीषादि बेगों के बिघातसे बातादि दोष कुपितहो १३ प्रकारके बात कुण्डलिकादि मूत्राघातउपजैहैं॥ मूत्राघातकेद्वादशभेद॥ बातकुण्डलिका १ अष्ठीला २ बातवस्ति ३ मूत्रातीत ४ मूत्रजठर ५ मूत्रोत्संग ६ मूत्रक्षय ७ मूत्रग्रन्थि ८ मूत्रशुक्र ९ उष्णबात १० मूत्रसाद ११ बिड्बिघात १२ ऐसे १२ प्रकारके हैं॥ बातकुण्डलिकालक्षण॥ रूखी बस्तु के खाने से और मलमूत्र शुक्रके धारणसे बात वस्तिमें जाय पीड़ाकरै और मूत्रकी नसों में जाय बिचरै और कुपितहो तब कफमूत्रके छिद्रको रोकै और लिंग के मुखमें कुण्डलीके आकार होरहै तब पुरुष थोड़ामूतै और मूतने में ज्यादा पीड़ा हो यह बातकुण्डलिका होय है यह मरण तुल्य दुःख देयहै कष्टसाध्यहै॥ अष्ठीलालक्षण॥ पेडू में पीड़ाहो गुदा की पवन चलै नहीं गुदामें पवनकी गांठ पत्थरसी होजाय उस स्थान में पीड़ा बहुत हो और वह पवन मल मूत्रको रोकदे यह अष्ठीला होयहै॥ बातवस्तिकालक्षण॥ जो पुरुष मूत्रके वेगको रोकै उसके पवन पेडूमें जाके मूत्रकी नसोंके मुखको रोकदे मूत्र उतरने दे नहीं पेडू और कुक्षिमें पीड़ाकरै उसको बातवस्ति कहिये यह कष्टसाध्य है॥ मूत्रातीतलक्षण॥ मूत्रको बहुत बार रोकै देर तक करै नहीं तब पुरुषके मूत्र मंद उतरै उसको मूत्रातीत कहिये॥ मूत्रजठरलक्षण॥ जो पुरुष मूत्रके बेगको रोकै तिसके गुदा की अपानवायु उदर को पवन से भरके नाभिके नीचे अफारा रोग करिकै बहुत पीड़ा करै उसे मूत्रजठर रोग कहिये॥ मूत्रोत्संगकालक्षण॥ पेडू अथवा लिंग की नसोंमें जो मूत्र उसको करैनहीं तब उस पुरुषके मूत्रके द्वारा पीड़ा सहित अथवा बिन पीड़ा थोड़ा रुधिर उतरै तिसे मूत्रोत्संग कहिये॥ मूत्रक्षयकालक्षण॥ जिस पुरुषका शरीर खेद करके रूखा पड़जाय उसके पेडूमें रहते जो बातपित्त कफ वह पीड़ा और दाह सहित मूत्रको नाशकरै है उसको मूत्रक्षय कहिये॥ मूत्रग्रंथिकालक्षण॥ पेडूके बीचमें गोल और स्थिर और छोटे आमला के समान गांठ अकस्मात् उपज आवै तिसे मूत्रग्रंथि कहिये॥ मूत्रशुक्रलक्षण॥ मूत्र का वेग लग रहाहो और मैथुन करनेको स्त्रीके पास जावै तब उस

की वायु शुक्रके स्थानसे भ्रष्टकरै है मूत्रके पहले अथवा मूत्रके पीछे अरने उपले की राखके पानी सदृश होके गिरै तिसे मूत्र शुक्र कहिये ॥ उष्णवातका लक्षण ॥ स्त्रीके संगसे खेदसे धूप में रहनेसे पुरुषके पेडूमें रहते जो बातपित्त वह पेडू लिंग गुदाको दग्ध करै तब हल्दीके सदृश मूत्र उतरै अथवा रुधिर लिये बड़े कष्टसे मूत्र उतरै तिसे उष्णवात कहिये ॥ मूत्रसादका लक्षण ॥ पुरुषके कुपथ्य करिके पेडूमें रहता जो वायु सो पित्त और कफ को बिगाड़ै है तब उसके मूत्र बहुत कष्टसे उतरै पीला अथवा लाल सफेद बहुत गाढ़ा गरम गोरोचन सदृश चूनेकी राख सदृश थोड़ा उतरै शरीर सूख जावै तिसे मूत्रसाद कहिये ॥ विड्विघातका लक्षण ॥ जो पुरुष बहुत रूखो अन्नखाय सो दुबलाहो मल सहित मूतै और उसके मूत्र में मल कैसी दुर्गंध आवै और बहुत कष्टसे मूत्र उतरै तिसे बिड्विघात कहिये ॥ असाध्यलक्षण ॥ कफसे उपजा मूत्राघात असाध्य होयहै व शोष गौरव युत चिकना सफेद घनरूप मूतै सो भी असाध्य जानो वस्तिकुंडलिका लक्षण ॥ बहुत जल्दी दौड़नेसे लंघन करने से बहुत खेदसे पेडूमें किसी प्रकारकी चोट लगने से पेडू में गांठ पड़जाय तब उठते पीड़ाहो और गांठ बैठी हुई हलै नहीं गर्भ कैसी भांति रहै शूलहो फड़कै दाह अधिकहो उस गांठको हाथसे दाबै तो मूत्र की बूंद उतरै और बहुत पीड़ाहो तब मूत्रकी धार निकलै और शस्त्र के चोट लगने कैसी पीड़ाहो तिसे वस्तिकुंडलिका कहिये यह घोर रोग शस्त्र बिषके समान है इसका इलाज कुशल वैद्य करै इसमें पित्ताधिक हो तो वस्तिमें दाह शूल मूत्रका वर्ण बदल जावै इसमें कफ अधिक हो तो शरीर भारी रहै सोजाहो चिकना कठिन सफेद मूत्र उतरै ॥ साध्यासाध्य लक्षण ॥ कफसे रुका गलवस्तिहो पित्ताधिकहो तो असाध्य जानों जिसमें नेत्रादिक भ्रांतिनहींहो वह साध्य होयहै जो कुंडलीके आकार नहींहो वहभी साध्यहै और वस्ति कुंडली के आकार होजाय तो तृषा मोह श्वास ये उपजैं ॥ मूत्राघातसामान्य चिकित्सा ॥ पीड़ा सहित मूत्राघातमें स्नेह स्वेद देइ पीछे स्नेह को जुलाब देवै पीछे उत्तरवस्ति कर्म करै और जो मूत्रकृच्छ्रमें व पथरी

रोगमें औषध कहाहै वह सब मूत्राघात में श्रेष्ठ है॥ गोक्षुरादिवटी ॥ शुंठि मिरच पीपल हरड़े बहेड़ा आमला ये सम भाग लेय सबके समभाग गूगुल लेय गोखुरूके काढ़ामें गोली बनाय दोषकाल बल बिचारि १ गोली रोज खावै इसपै कोई तरहका परहेज नहीं मनोबांछित कर्म करे यह २० प्रकारका प्रमेह बातरोग बातरक्त मूत्राघात मूत्रदोष प्रदर इन्होंका नाश करै पेयादि पकायके शीतल किया दूध जटामांसी चन्दन चावलोंका धोवन मिश्री इन्होंको मिलाय पीनेसे रक्त सहित उष्णबात शांतहोवे॥ एर्वारुबीजादि कल्क ॥ काकड़ीके बीज १ तोले लेय कल्क बनाय सेंधानोन मिलाय कांजीके संग खानेसे मूत्राघात शांतहोवे॥ सामान्य चिकित्सा ॥ पीड़ा सहित मूत्राघात में उत्तर वस्ति देवै अति मैथुन रक्तस्रावपर ज्यादह मैथुन करनेसे जिसके लिंगसे रक्तपड़ै तिसे मैथुन का उपराम चाहिये और पुष्टिकारक औषधोंका सेवन करै व अनुपानोंके संग पाषाणभेदको देनेसे मूत्रकृच्छ्र शांतहोवे और लिंगमें रोग होतो शीतल उपचार करै व बीरतर्वादि गणोंके काढ़ामें शिलाजीत मिलाय पीनेसे व धमासाके काढ़ा को पीनेसे व बासाके काढ़ा को पीनेसे पूर्वोक्त रोग जावै व गोखुरू अरंड शतावरि इन्हों के काढ़ा को पीनेसे शूलसहित मूत्राघात जावै व गुड़ घृत दूध इन्होंको मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र नाशै॥ वीरतर्वादि काढ़ा ॥ अर्जुनवृक्षकी छाल १ वांदा २ कास ३ तीनों वाँसे ६ दोनोंडाभ ८ देवनल ९ गुंद्रातृण १० शिवलिंगी ११ अरणीजड़ १२ मूर्वा १३ पाषाणभेद १४ सहिंजना १५ गोखुरू १६ ऊंगा १७ कमल १८ ब्राह्मी १९ ये वीरतर्वादि गणहैं इन्होंके काढ़ा पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात बायुरोग इन सबों को नाश करै सशूल मूत्राघात पर देवनल कुशा कास ईष इन्हों की जड़ों का काढ़ा बनाय शीतल करि मिश्री मिलाय पीनेसे पीड़ा सहित मूत्राघात नाश होवै॥ त्रिफलादि काढ़ा ॥ त्रिफलाके काढ़ा में नोन पारा मिलाय पीने से १३ प्रकारके मूत्राघात नाश होवैं ॥ गोधावन्यादिकाढ़ा॥ ऋषभक पृष्ठिपर्णी इन्होंकी जड़ोंके काढ़ामें घृत तेल गौका दूध ये मिलाय पीनेसे जल्दी मूत्राघातको नाशकरै॥ दशमूलादिकाढ़ा॥

दशमूलके काढ़ामें शिलाजीत मिश्रीमिलाय पीनेसे बात कुंडलिका अष्ठीला बात वस्ति इन्होंको नाशकरै ॥ गोक्षुरादिकाढ़ा॥ गोखुरूके काढ़ामें शिलाजीत गूगुल मिलाय पीनेसे मूत्रक्षय मूत्रशुक्र मूत्रोत्संग इन्होंको नाशकरै ॥ दूसरा प्रकार ॥ पञ्चांग सहित गोखुरू का काढ़ा वनाय मिश्री शहद संयुक्तकरि पीने से मूत्रकृच्छ्र शूल जावै वरुणादिकाढ़ा ॥ वरणा गोखुरू शुंठि इन्होंके काढ़ामें गुड़ जवाखार मिलाय पीनेसे मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात पथरीज मूत्रनिग्रह मूत्रशर्करा इन्होंको दूरकरै ॥ शतावर्य्यादिस्वरस ॥ शतावरी गोखुरू भूमिआमला इन्होंकी जड़ोंके काढ़ामें १ माशा जवाखार २ माशा सोरा २ रत्ती सुहागा मिलाय पीनेसे भयंकर मूत्राघात नाशहोवै ॥ तिलक्षारयोग ॥ तिलके खारको दूधमें मिलाय शहद संयुक्तकरि पीनेसे मूत्राघात की पीड़ा दाहवालाकेभीरहै नहीं व ताड़की जड़को चावलोंके धोवन में पीसि मिश्री मिलायपीनेसे मूत्रकी उष्णबातको नाशै ॥ कर्पूरवर्ति ॥ कपूरकी रजसेयुत महीन कपड़ाकी बत्तीबनाय हलवे२ लिंगमें चढ़ाने से मूत्राघातको नाशै ॥ निर्दग्धिकास्वरस ॥ कटैलीके स्वरसमें तक्रमिलाय पीनेसे अथवा रात्रि को पानी में केशर को भिगोय प्रभातमें कल्क वनाय शहद संयुक्तकरि खानेसे मूत्राघात नाशहोवै ॥ शिलाजतुयोग ॥ शोधेशिलाजीतमें मिश्री कपूर मिलाय खानेसे मूत्रजठर मूत्रातीत इन्होंको नाशै ॥ कर्कटीविजादिचूर्ण ॥ काकड़ीके बीज सेंधा नोन हरड़े वहेड़ा आमला ये समभाग ले चूर्णकरि गरम पानी के संगखानेसे मूत्ररोध नाश होवै॥ भद्रादिचूर्ण ॥ लाल शिवणी पाषाणभेद शतावरि चीता कुटकी काकोली कमलाक्ष गोखुरू इन्होंका बारीक चूर्णकरि मदिरा के संग पीनेसे मूत्राघातको नाशै ॥ स्वगुप्तादि चूर्ण ॥ सफेद लज्जावंती मुनक्का दाख काला ईष नीली ये समभाग लेय और दूध घृत शहद ये आधा २ भागलेय खरलकरि मिलाय पीनेसे १ तोलाभर ऊपरसे दूधको पीवै यह बीर्यक्षयके बिकारों को नाशै और बन्ध्या को पुत्र देवै ॥ उसीरादिचूर्ण ॥ कालाबाला बाला तमालपत्र कूट आमला सफेद मूसली इलायची रेणुकाबीज दाख केशर नागकेशर कमलकेशर कपूर चन्दन लालचन्दन त्रिकुटा मु-

लहठी धानकीखील असगन्ध शतावरि गोखुरू काकड़ासिंगी जावित्री कंकोल खुरासानी अजवायन ये समभाग लेय चूर्णकरि एक भाग चूर्ण २ भाग घृत खांड़में मिलाय खावै अथवा दो गुना शहद राबमें मिलाय प्रभातमें खावै यह क्षयी रक्तपित्त पाददाह प्रदर मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र रक्तस्राव ८० प्रकारके वायुरोग इन्होंको नाशै विशेषकरि प्रमेहको नाशकरै ॥ क्षौद्रादिघृत ॥ शहद आधाभाग दूध १ भाग घृत १ भाग मिश्री १ भाग दाख १ भाग सफेद लज्जावन्ती ईषरस पीपली चूर्ण तालमखाना ये समभाग लेय इन्हों को मिलाय मथकरि पीछे १ तोला भरखाय ऊपर दूधको पीनेसे शुक्रदोष रक्तदोष इन्होंको नाशै इसको सेवनेसे. वंध्या स्त्री गर्भको प्राप्त होवै गोक्षुरादिघृत ॥ धनियां गोखुरू इन्होंका काढ़ा व कल्कमें घृतको सिद्धकरि खानेसे मूत्राघात मूत्रकृच्छ्र दारुण शुक्रदोष इन्होंको दूरकरै चित्रकादिघृत ॥ चीता सारिवा खरैटी लघुनीली अनन्तमूल दाख गिलोय पीपली त्रिफला मुलहठी आमला इन्हों को प्रत्येक तोला तोलाभर कल्क लेय घृत २५६ तोला पानी १०२४ तोला दूध १०२४ तोला इन्हों को मिलाय पकाय घृत को सिद्धकरि शीतल होने पर मिश्री ६४ तोला वंशलोचन ६४ तोला मिलाय पीछे दोषका बलाबलदेखि पीनेसे मूत्रग्रंथि मूत्रसाद उष्णवात रक्तप्रदर मूत्राघात वस्तिकुंडली इन्हों को नाशै इसको सेवने से स्त्रीगर्भ को प्राप्तहोवै और रक्तदोष योनिदोष मूत्रदोष शुक्रदोष इन्हों को नाश करै ॥ मूत्राघातमेंपथ्य ॥ तेललगानास्नेहन विरेचन वस्तिकर्म स्वेदन गोतामारके न्हाना उत्तर वस्ति अर्थात् पिचकारी पुराने लालधान मरुदेशका मांस मदिरा माठा दूध दही उड़दकायूष पुरानाकोहला परवर अदरख तालफलकी मींगी हरड़ै कोमल नारियल सुपारी खजूर नारियल ताड़इन्होंके मस्तक ये सब दोषके अनुसार मूत्राघात में पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ सब विरुद्ध अन्न कशरत मार्ग में चलना रूखी विदाही तथा विष्टंभीवस्तु स्त्री संग वेगका रोकना बांसका अंकुर बमन ये सब मूत्राघात में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तविरचितनिघण्टरत्नाकरभाषायांमूत्राघातप्रकरणम्॥

अश्मरी नाम पथरीरोग कर्मबिपाक ॥ जो परस्त्री गामीहो उसके मृगीरोग व पथरी रोग उपजै ॥ शमन ॥ सोनाकादान करनेसे शांति होवै यहदान सब रोगोंमें श्रेष्ठहै ॥ ज्योतिश्शास्त्राभिप्राय ॥ जन्म पत्रमें वृहस्पति के गृह में बुधहो और सूर्य्यकी दृष्टिहो तो शूल प्रमेह पथरी रोग ये उत्पन्नहोवैं बुधकी शांतिवास्ते पूर्वोक्त जपादि हितहै ॥ अश्मरी निदान ॥ वातकी १ पित्तकी २ कफकी ३ बीर्यकी ४ ये चारोंकफसे विशेषकरि मिलीहोयहै यमरूप होतीहै ॥ संप्राप्ति ॥ पेडूमें रहता जो बायु सोपेडूमें बीर्यमूत्र पित्त कफ इन्होंको सुखाय पथरीको उत्पन्नकरै है ॥ दृष्टांत ॥ जैसे गौके पित्तेमें गोरोचन बढ़जाय तैसे मनुष्यके पथरी पड़जावै ॥ पथरीकापूर्वरूप ॥ पथरी रोग सान्निपातसे उत्पन्न होताहै पथरीवाले पुरुष के मूत्रमें मस्तवकरे कैसी गंधआवे पेडूमें अफारा हो पीड़ाहो मूत्र वहुत कष्टसे उतरै ज्वर और भोजनमें अरुचिहोय सब पथरीका पूर्वरूपका लक्षणहै ॥ सामान्यलक्षण ॥ नाभि में मूत्रकी नसोंमें पेडू में पीड़ा बहुतहो मूत्रकी धार बँधी गिरैनहीं और मूत्रका मार्ग रुकजावै जब यह पथरी मूत्र के मार्ग से सरक जाय तब उस पुरुष को सुखहो तब बहुत पीड़ा सहित रुधिर मिला मूत्र उतरै वातकीपथरीका लक्षण ॥ जिसमें मूत्रके समय अधिक पीड़ाहो दांतों को चाबै मूत्रकरते समय कांपै लिंग और नाभिमें पीड़ाहो मूतते पुकार उठै और मल करदेवै मूत्र बूंद २ उतरै पथरीका रंग कालाहो पथरीमें कांटेसे होवैं ये लक्षण बातकी पथरीके हैं ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ वाताश्मरीका पूर्वरूपमें स्नेहपान श्रेष्ठहै ॥ शुंठ्यादि चूर्ण ॥ शुंठि अरणी पाषाणभेद कूट बरणा गोखुरू हरड़े अमलतास इन्हों के काढ़ा में हींग जवाखार सेंधानोन मिलाय पीने से बाताश्मरी मूत्रकृच्छ्र मन्दाग्नि कटि उरु गुदा लिंग अंड इन्होंका बात इन सबोंको नाशकरै यवादिघृत ॥ यव बेर कुलथी कतक फल इन्होंके चतुर्थांश काढ़ामें घृतको पकाय खानेसे बातकी पथरी नाश होवै ॥ वीरतर्वादि काढ़ा ॥ वीरतर्वादि काढ़ा में गुड़ जवाखार मिलाय पीनेसे बात की पथरी नाशहोवै अन्न खार कांजी पेया काढ़ा दूध ये बातकी पथरीमें खानेसे हितहैं ॥ वरुणमूलक्वाथ ॥ बरणा की जड़ के काढ़ामें बरणाका कल्क

मिलाय पीने से व सहिंजना की जड़का काढ़ा थोड़ा गरमकरि पीने से वातपथरीको नाशकरै ॥ पित्तकीपथरीकेलक्षण ॥ पेडू अग्निकेसमान ऐसा जलै मानों पकगयाहै पथरी वदाम के छिलके के समान और पीली लाल सफेदाई लिये हो और भिलावां की गीरीसरीखी हो ये पित्तकी पथरी के लक्षण हैं ॥ पाषाणभेद क्वाथ ॥ पाषाणभेद के काढ़ामें शिलाजीत मिश्री मिलाय पीनेसे पित्तकी पथरीको नाशै जैसे वृक्षको इन्द्रका बज्र तैसे ॥ कफाश्मरीनिदान ॥ पेडूमें पीड़ा बहुत हो और पेडू शीतल भारीहो और उसकी पथरीचिकनी और गीली मधुवर्णहो व सफेद कुक्कुटके अंडेकी वराबरहो तिसे कफकी पथरी कहिये ये त्रिदोषज पथरी विशेषकरि बालकोंके उपजैहै क्यों कि बालक डंडेवासी धूलि सहित बुरे पदार्थों को सेवतेहैं सो पथरी का काढ़ना बहुत मुश्किल है ॥ बालकोंकीशिग्रुक्वाथ ॥ सहिंजनाकी छाल व बरणाकी छालके काढ़ामें जवाखार मिलाय पीनेसे कफकी पथरी नाशहोवै जैसेवृक्षवज्रसे ॥ शुक्राश्मरीलक्षण ॥ जिसपुरुषको मैथुनकरने की इच्छाहो वह वीर्यको रोकै किसी प्रकार जाने नदे उसके शुक्र-की पथरी उपजे और लिंग पोतोंके बीचमें वह पवन वीर्यकोसुखाय पथरीकरै फिर वह पथरी पेडूमें पीड़ाकरै तिसे शुक्रकी पथरी कहते हैं ॥ इसकेउपद्रव ॥ पेडूमें शूलचलै मूत्रकृच्छ्रहो अंडकोषमें सोजाहो वीर्यका नाशहोवै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ इसमें पथरी नाशक क्रिया करै ॥ यवक्षारयोग ॥ जवाखार गुड़ इन्होंको रोगोक्तपथ्यरूप वृक्ष का पुष्प व फलकेरसमें मिलाय पीनेसे मूत्राघात शुक्राश्मरी इन्होंको नाशकरै ॥ कुटकयोग ॥ कुड़ाकी छालको दही में मिलाय खाने से और पथ्यअन्नको सेवनेसे पथरी गिरपड़ै ॥ शर्कराश्मरीनिदान ॥ वस्ति का छिद्र बंदहोनेपर पथरी सरीखी जो शर्करा है वह वायु से रेत सरीखी हो अनुलोमरूपहो मूत्रके संग बाहर निकसैहै और प्रति-लोम होनेमें बंधहोयहै मूत्रके स्रोतों में प्रवृत्तहो उपद्रवोंको पैदाकरैहै दुर्बलपना ग्लानि माड़ापना कुक्षिशूल अरुचि पांडुवर्ण गरमवायु तृषा हृद्रोग छर्दि इन्होंको उपजावै ॥ शर्कराश्मरीकाअसाध्यलक्षण ॥ जिसके नाभि पोतोंमें सूजनहो और मूत्रबंधहो शूलचलै ऐसीशर्करा

पथरी मारदेवै ॥ पाषाणभेदरस ॥ शोधापारा १ भाग गन्धक २ भाग इन्होंको सफेद सांठीके रसमें १ दिन खरलकरि भूधरयंत्रमें पकाय पीछे पाषाणभेदमें मिलाय चूर्णकरि खाने से पथरी को नाश करै॥ त्रिविक्रमरस ॥ तांबाकी भस्मको बकरी के दूध घृत में पकाय लेवै पीछे पारा गन्धक समभाग मिलाय निर्गुंडीके रसमें १ दिनखरल करि गोलाबनाय १ पहर बालुकायंत्रमें पकाय २ रत्तीभरदेनेसे शर्करा पथरीको नाशै इसपै बिजोराकी जड़का काढ़ा पीना अनुपानहै ॥ रसभस्मयोग ॥ बिदारीकन्द गोखुरू मुलहठी नागकेशर ये सम भाग लेय काढ़ाबनाय शहद पाराकीभस्म मिलाय खाने से साध्य व असाध्य मूत्रकृच्छ्रनाशहोवै ॥ लघुलोकेश्वररस ॥ पाराभस्म १भाग शोधा गन्धक ४भाग इन्होंकी कजलीबनाय कौड़ीमेंभरै पीछे पारासे चुशारी सोहागाको बकरीके दूधमें पीसि कौड़ीके मुखकोबंद करि पीछे कौड़ीको बरतनमें घालि कपड़माटीदेय गजपुटमें पकाय शीतलहोनेपर काढ़ि चूर्णकरि मिश्री के संग खाने से मूत्रकृच्छ्र को नाशकरै ॥ गन्धर्वादिकल्क ॥ सफेद अरंड दोनों कटेली गोखुरू कालाईष इन्होंकी जड़ोंको दहीमें पीसि कल्क बनाय मधुर रसके संग खानेसे पथरीको हरै ॥ तिलादिक्षार ॥ तिल ऊंगा केला केशू यव इन्होंके खारोंको भेड़के मूत्रके संग पीनेसे मूत्राश्मरी व मूत्र शर्करा नाशहोवै ॥ शिलाजीतयोग ॥ शिलाजीत में शहद मिलाय खानेसे व जवाखार गोखुरूको खानेसे अश्मरी रोग व पथरीजन्य मूत्रकृच्छ्र नाश होवै ॥ हिंग्वादियोग ॥ हींग इलायची दूध घृत इन्हों को मिलाय पीनेसे मूत्ररोग शुक्ररोग इन्होंको नाशै ॥ शृंगबेरादिकल्क ॥ अदरख जवाखार हरड़ै दारुहल्दी काला सहिंजना इन्होंको बकरी के दहीमें पीसि खानेसे भयंकर पथरी भी गिरपड़ै तिलक्षारादियोग ॥ तिल ऊंगा करेला यव केशू इन्हों के खार सम भागलेय गजपुट में पकाय पीछे ४ माशे राखको बकरीके दूधके संग खानेसे व आनन्द भैरवी गोलीको खानेसे ७ दिनमें पथरीको नाशकरै इसमें संशय नहीं॥ मंजिष्ठादिचूर्ण ॥ मजीठ काकड़ीके बीज जीरा सौंफ आमला बेर गंधक मनशिल ये समभाग लेय चूर्ण करि

१ तोला भर हमेशह शहदके संग खानेसे पथरी निश्चय नाशहोवै॥ त्रिकंटकादिचूर्ण॥ गोखुरूके चूर्णको शहदमें मिलाय भेड़के दूधके संग ७ दिन पीनेसे पथरी नाशहोवै॥ केशरयोग॥ केशर को पुराने घृतमें खरल करि ३ दिन खानेसे लिंगकी शर्करा गिरपड़ै॥ पाषाणभेदीरस॥ जिसके आदिमें कटि कुक्षिदेशमें पीड़ाहो तिसके निरोधसे गरम मूत्रहो ऐसे लक्षणोंवाली पथरी में पाषाणभेदीरस योग्य है॥ तिलपुष्पक्षारयोग॥ तिलों के फूलोंके खारमें शहद दूध मिलाय तीन दिन पीनेसे व बिजौराके रसमें सेंधानोन मिलाय पीनेसे पथरी नाश होवै॥ गोपालकर्कटीमूलकल्क॥ गोपाल काकड़ी को पानी में पीसि ३ रात्रि पीने से पथरी को जल्दी नाशै॥ अर्कपुष्पी का कल्क॥ सूर्यमुखी को गौके दूधमें पीसि प्रभात में ३ दिन खाने से दाहयुत दारुण पथरी को नाशै॥ शतावरीमुलरस॥ शतावरि की जड़ के रस में गौके दूधको मिलाय पीनेसे पुरानी पथरी भी गिर पड़ै॥ बरुणादि काढ़ा॥ बरणाकीछाल शुंठि गोखुरू जवाखार गुड़ इन्होंके काढ़ाको ठंढाकरि पीनेसे मूत्राश्मरी शर्करा मूत्रकृच्छ्र मूत्राघात इन्होंको नाश करै व इलायची मुलहठी गोखुरू रेणुकबीज अरंडकी जड़ बासा पिपली पाषाणभेद इन्होंके काढ़ामें शिलाजीत मिश्री मिलाय पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंको नाशकरै॥ काढ़ा॥ वरणाके काढ़ामें गुड़ मिलाय पीनेसे पथरी वस्ति शूल ये सब शांतहोवैं॥ शिग्रुमूलकाढ़ा॥ सहिंजनाकी जड़के काढ़ाको कछुक गरमकरि पीनेसे पथरी नाशहोवै व मोरशिखाकी जड़कोचावलोंके धोवनके संग पीसि खानेसे पथरी नाशहोवै इसपै दूध चावल का भोजन करै॥ शुंठिकषाय॥ शुंठि के काढ़ा में हल्दी गुड़ मिलाय पीनेसे पुरानी शर्करा भी लिंगद्वारसे भर पड़ै॥ शुंठ्यादिकाढ़ा॥ शुंठि अरणी ऊंगा सहिंजना वरणा गोखुरू हरड़ै अमलतास इन्होंके काढ़ामें हींग जवाखार सेंधानोन मिलाय पीने से पथरी मूत्रकृच्छ्रको हरै और दीपन पाचनहै॥ आकल्लादिकाढ़ा॥ करकरा गोखुरूकीजड़ तुलसीरस पाषाणभेद अरंड की जड़ पिपली मुलहठी तकाजड़ निर्गुंडी लौंग शुंठि इन्होंका काढ़ा बनाय इलायची का चूर्णमिलाय ७ दिन पीनेसे पीड़ा

सहित शर्करा पथरी इन्होंको नाशकरै व भेड़का दूध शहद मिलाय पीनेसे पथरीजावै व निसोतके चूर्णमें इंद्रयवका चूर्णमिलाय दूधके संग व चावलोंके धोवनके संग खाने से पथरी नाशहोवै ॥ कुलथिकाथ ॥ कुलथी का काढ़ा ८ तोले शरपुंखी सेंधानोन २ माशे मिलाय पीनेसे पथरी मूत्रके संग गिर पड़ै और शर्करा भी शांतहोवै यह अनेकबार देखाहै ॥ कूष्मांडस्वरस ॥ कोहला के रसमेंहींग जवाखार मिलाय पीनेसे वस्तिशिस्नका शूल पथरी शर्करा इन्होंको नाशकरै बरुणादिघृत ॥ वरणा ४०० तोले कूटि १ द्रोणभर पानी में काढ़ा चतुर्थांश बाकीरहनेपर घृत ६४ तोले मिलाय पकाय पीछे बारुणी १ तोला केला १ तोला बेल १ तोला तृणपंचक १ तोला गिलोय १ तोला शिलाजीत १ तोला काकड़ीबीज १ तोला दूध १ तोला तिलका खार १ तोला केशूकाखार १ तोला जुइ १ तोला इन्होंको मिलाय घृतकोसिद्धकरि देशकाल बिचारि पीनेसे शर्करा पथरी मूत्रकृच्छ्र इन्होंकोनाशै और अजीर्णमें दही मस्तुके संगलेवै ॥ पाषाणभेदपाक ॥ पाषाणभेद ६४तोले लेय चूर्णकरि कपड़ासे छानि २५६ तोला गौकेदूधमें मंदाग्निसेपकाय पलटासेचलाताजावै जब ज्यादह कड़ाहो तब इलायची लौंग पिपली मुलहठी गिलोयहरड़ै रेणुकाबीज गोखुरू बांसा शरपुंखी सांठी जवाखार बहेड़ा जटामांसी सप्तलाकमल वंगभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म कपूर कचूर तमालपत्र नागकेशर दालचीनी शिलाजीत ये दो दो तोलेलेय चूर्णकरि मिश्री ९६ तोला इनसबोंको पूर्वोक्तमें मिलाय शीतल होनेपर शहद ६४ तोला मिलाय चीकना बरतन में घालिधरै पीछे प्रभात में आधा तोला रोज खावै और तीक्ष्ण तैलादिक को बर्जै यह ४ प्रकार की पथरी को व मूत्रकृच्छ्र खुड़ बात मूत्राघात प्रमेह मधुप्रमेह अधोरक्त वस्तिगत कुक्षिगत पित्त इन्होंको नाशै और तीव्रपथरी वालेको बिशेष कर सुखदेवै यह ब्रह्माजीने रचिकर च्यवन मुनिको बतायाहै ॥ बरुणादिगुड़ ॥ जो कीड़ोंको नहीं खायाहो और नयाहो चिकना पवित्र स्थानमें उपजाहो ऐसासुंदर वरणा ४०० तोले लेवै अच्छे मुहूर्त में पीछे चौगुना पानी में काढ़ा बनाय चतुर्थांश बाकीरहनेपर बरा-

बरका गुड़मिलाय दृढ़बर्त्तन में पकाय शीतल होनेपर शुंठि काकड़ीकेबीज गोखुरू पीपली पाषाणभेद पद्माख कोहला बहेड़ा मनशिल बथुआ सहिंजना दाख इलायची लघुपाषाणभेद हरड़े बायबिड़ंग ये चार २ तोले लेय चूर्णकरि पूर्वोक्तमें मिलाय पीछे शक्ति मुवाफ़िक खानेसे सब दोषों की पथरी जल्दी गिरै ॥ अश्मरीपथ्य ॥ वस्तिकर्म बिरेचन बमन लंघन स्वेदन गोतामारके न्हाना जलका छिड़कना यव कुलथी दोबर्षके पुराने धान मदिरा मरुदेश के जीवों का मांस रस पुराना कोहला कसेरू गोखुरू बरणा शाक अदरख पाषाणभेद जवाखार पित्तपापड़ा गिलोय पथरीका निकालना ये सब पथरी रोगमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ मूत्र तथा वीर्यके वेगको रोकना खट्टा बिष्टंभी रूखा तथा भारी अन्नपान बिरुद्धपान तथा भोजन ये पथरी में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांपथरीप्रकरणम् ॥

प्रमेहकर्मविपाक ॥ चांडाली स्त्री के संग भोग करने से प्रमेह रोग उत्पन्न होवै अथवा भूख तिससे पीड़ित होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ यव मध्य तीन चांद्रायण ब्रतकरै पीछे इदमापः प्रवहत इत्यादि मन्त्रका मेधातिथि ऋषिहै ऐसा ध्यानकरि और इसका जापकरि पीछे घृतका अग्निमें होमकरै ॥ सशूलमेहकर्मविपाक ॥ गौ आदिसे अभिगमन कहे भोग करनेसे शूलसहित प्रमेह उत्पन्नहोवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इसमें शांतपन ब्रतादिकरै ॥ बातमेहकर्मविपाक ॥ अमावास्या पूर्णिमा आदि पर्व तिथिमें स्त्रीसंग करनेसे व कुमारी कन्याके साथ भोग करने से बातप्रमेह रोग उत्पन्न होवै इसकी शांति वास्ते चांद्रायण ब्रतकरै ॥ मधुमेहकर्मविपाक ॥ जो पुरुष मातृगामी हो निरन्तर वह मधुमेह रोगीहोवै जो पितृबधू कहे मौसी आदि से भोगकरै वह जलमेह रोगीहोवै जो भगिनीसे नित्यभोगकरै वह इक्षु मेहरोगी होवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ इन पापोंकी शांतिके वास्ते ६ वर्ष

व ५ वर्ष व ३ वर्ष कृच्छ्र चांद्रायणादि ब्रतकरै ॥ प्रमेहनिदान ॥ अधिक बैठनेसे और सोवनेसे और नवीन पानी पीवनेसे बकरा भेड़ कामांस और गुड़ आदि बहुत मिठाई और बहुत दही और कफकारी वस्तु इन्होंके खानेसे श्रम और बहुत मैथुन करने से धूपके रहनेसे बिरुद्ध और गरम भोजनके करनेसे बहुत मदिराके पीनेसे कडुआरसके खानेसे पुरुषके प्रमेहरोग उत्पन्न होता है ॥ कफादि प्रमेहसंप्राप्ति ॥ पेडूमें प्राप्त जो मेदमांस कफका जल तिन्होंको कफ दूषितकरके कफप्रमेहको उत्पन्नकरैहै ऐसी बायुभी अपनी अपेक्षा आपसों क्षीण जो कफपित्त तिन्होंको पेडूमें प्राप्तकरि और शुद्धजो मांसका स्नेह उसकी और शरीरके जल पेडूकी नसोंके मुख में प्राप्तकरि बायुके प्रमेहको पैदाकरैहै ॥ कफादिजन्यप्रमेहसाध्यासाध्य ॥ कफके १० प्रमेह साध्य हैं याने सामान्य यत्नसे जावे हैं और पित्त के ६ प्रमेह जाप्यहैं अर्थात् यत्नसे दबैरहैं पित्तका बिषमयत्नहै क्योंकि दोष दूष्यके बिषमपनेसे ऐसे दोष दूषितहैं और बायुके ४ प्रमेह असाध्य हैं पित्त ये नहीं क्योंकि मज्जाकोले आदि गम्भीर धातुहैं और सर्बशरीर व्यापीहैं और शरीरके बिनाशकारी हैं इस कारण बायुका प्रमेह असाध्यहै ॥ प्रमेहमेंदोषदूष्यसंख्या ॥ कफ पित्त बायु ये दोषहैं और मेद शुक्र क्लेद मांस आलस मज्जारस बल सब धातुओंके सार मांस ये दूष्यहैं इन्होंके योगसे २० प्रकारके प्रमेह उपजैहैं ॥ पूर्वरूप ॥ दांत तालु जीभ इन्होंमें मैल अधिकहो हाथ पैर में दाह और देह चीकनीहो तृषा बहुतलगै मुख मीठारहै येलक्षण हों तो जानिये प्रमेह होगा ॥ प्रमेहकासामान्यलक्षण व कारण ॥ बहुत ठंढा और पतला और मैला मूत्रहो और दोष दूष्यको बिचारि प्रमेहका निश्चयकरि चिकित्साका आरम्भकरै ॥ प्रमेहके बिंशतिभेद ॥ उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सांद्रप्रमेह ३ सुराप्रमेह ४ पिष्टप्रमेह ५ शुक्रप्रमेह ६ सिकताप्रमेह ७ शीतप्रमेह ८ शनैःप्रमेह ९ लालाप्रमेह १० क्षारप्रमेह ११ नीलप्रमेह १२ कालाप्रमेह १३ हारिद्रप्रमेह १४ मांजिष्ठप्रमेह १५ रक्तप्रमेह १६ वसाप्रमेह १७ मज्जाप्रमेह १८ क्षौद्रप्रमेह १९ हस्तिप्रमेह २० ये क्रमसेजान लेने ॥

कफके १० प्रमेहोंके निदान॥ निर्मल सफेद और बहुत शीतल गंध रहित जलके सदृश कछुक मदरंग और चिकना मूतै तिसे उदक प्रमेह कहतेहैं ईषके रसके समान मीठाहो तिसे इक्षुप्रमेह कहते हैं और जैसे बासीपानी बासनमें धराहुआ ठंढा होताहै वैसा ठंढामूतै तिसे सांद्रप्रमेह कहते हैं और जिस के मूत्र में मदिराकेसी दुर्गंधि आवै और उसकामूत्र ऊपर तो निर्मल हो नीचे मदरंगा हो तिसे सुराप्रमेह कहते हैं चावल आदि के चूनके पानी सदृश सफेद कष्ट से मूतै और मूततेहुये रोमांचहो तिसे पिष्टप्रमेह कहतेहैं वीर्यसहित मूतै तिसे शुक्रप्रमेह कहते हैं जिसके मूत्र में बालू की कणी केसी कफकी फुटक आवै तिसे सिकताप्रमेहकहते हैं जो बारम्बार बहुत शीतल मूतै तिसे शीतप्रमेहकहतेहैं जो हलवे २ निपटकममूतै तिसे शनैःप्रमेह कहते हैं लारकी तांती समान मूतै तिसे लालाप्रमेह कहते हैं॥ पित्तप्रमेहके ६ प्रकार॥ क्षारमेह १ नीलमेह २ कालमेह ३ हारिद्रमेह ४ मांजिष्ठमेह ५ रक्तमेह ६ ये पित्तके हैं॥ क्षारादिप्रमेह लक्षण॥ जिसके मूत्रमें खारकेसी गंध और वर्णहो और खारके पानी के सदृशमूतै तिसे क्षारप्रमेह कहतेहैं जिसका मूत्र नीलके रंगके समान उतरै तिसे नीलप्रमेह कहते हैं स्याही के समान कालामूतै तिसे कालप्रमेह कहतेहैं हल्दीकेरंगके समान कडुआ दाहकोलिये मूतै तिसे हारिद्रप्रमेह कहतेहैं जो मजीठ के पानीकेरंगके सदृश मूतै और दुर्गंध बहुत आवै तिसे मांजिष्ठ प्रमेह कहते हैं जो रक्त के समान दुर्गंध युक्त मूतै तिसे रक्तप्रमेह कहते हैं॥ बायुके प्रमेह ४॥ वसामेह १ मज्जामेह २ हस्तिमेह ३ मधुमेह ४ ये बायुकेहैं॥ वसादिमेहोंके लक्षण॥ शुद्धमांसका जो घृतको और उसके रंगके सदृश मूतै तिसे वसाप्रमेह कहतेहैं हाड़ोंकी मज्जाको लिये और उसके रंगके सदृश मूतै बारबार तिसे मज्जाप्रमेह कहते हैं कषैला और शहदके सदृश मीठा और रूखामूतै तिसे क्षौद्रप्रमेह कहतेहैं मस्त हाथी जैसे हलवे २ जल को छोड़े और मूत्र बेग होवै नहीं और निरन्तर लिंगसे भिरता रहै तिसे हस्तिप्रमेह कहते हैं॥ कफ के प्रमेहोंका उपद्रव॥ अन्न पचैनहीं भोजनमें अरुचि और छर्दि आवै

नींद खांसी बहुत उपजै पीनस हो ये कफके प्रमेहों के उपद्रव हैं ॥ पित्तके प्रमेहों का उपद्रव ॥ पेडू और लिंगमें पीड़ाहो अंडकोशफटने लगै ज्वर दाह तृषा मूर्च्छा अतिसारहो खट्टी२ डकार आवै ये पित्तके प्रमेहों के उपद्रव हैं ॥ वायुके प्रमेहों के उपद्रव ॥ जिस में उदावर्त रोगहो शरीर कांपै हृदयदूखै सब रसोंके खाने की इच्छा रहै पेटमें शूलहो नींद आवैनहीं शरीर सूखजावै श्वास खांसी हो ये वायुके प्रमेहोंके उपद्रवहैं ॥ असाध्यलक्षण ॥ बातपित्त कफोंकेउपद्रव संयुक्तहो और प्रमेहकी पिटिका संयुक्त हो तिसे असाध्य जानिये वह मरै ॥ स्त्रीके प्रमेह नहीं होता तिसका कारण ॥ हरमहीना स्त्रीको कपड़े आते हैं तिसकरि सब शरीरके दोष शुद्धहोजातेहैं इसवास्ते स्त्री के प्रमेह रोग नहीं उपजता ॥ असाध्यलक्षण ॥ जो मनुष्य प्रमेह व मधुप्रमेह युक्त उत्पन्न हो तिसका इलाज नहीं और कुलसंबंधी रोग योनि पितृ पितामहादिक के उपजै तो उनकाभी इलाज नहीं असाध्य जानो ॥ मधुमेहोत्पत्तिकारण ॥ सब प्रमेहोंका इलाज न हो तो मधुप्रमेह होजाय इसवास्ते मधुप्रमेह असाध्य है ॥ दोप्रकार मधुप्रमेहकाकारण ॥ मधुप्रमेह में शहद सरीखा मूत्र उतरै १ दूसरा धातुओं का क्षयहोनेसे वायु क्रुद्धहो दोषोंके मार्गको रोकदेवै॥ आवरणलक्षण ॥ दोष चिह्नों से आवृत्त जो मेह सो दोष युक्त वायुके लक्षणों को अकस्मात् दिखावै सो क्षणमें क्षीणदीखै और क्षणमें पुष्टदीखै यह कष्टसाध्य है ॥ मधुमेहप्रवृत्तिनिमित्त ॥ संपूर्ण प्रमेहोंमें विशेषकरि मधुरमूतै तिसका सब शरीर मीठाहो इसवास्ते सब प्रमेहोंकी मधुप्रमेह संज्ञाजानों ॥ लोध्रादिकाढ़ा ॥ लोध हरड़ै कायफल नागरमोथा बायबिड़ंग पाढ़ा अर्जुन धमासा कदंबकीडाली अजमान बायबिड़ंग दारुहल्दी नागरमोथा संभल ये चारों काढ़े शहद संयुतकरि पीनेसे कफ प्रमेहोंको नाशकरै ॥ कफप्रमेह पर१० काढ़े ॥ हरड़ै कायफल नागरमोथा लोध इन्हों का काढ़ा १ पाढ़ा बायबिड़ंग अर्जुन धमासा इन्होंका काढ़ा२ दारुहल्दी हल्दी तगर बायबिड़ंग इन्होंका काढ़ा ३ कदंब शाल अर्जुन अजमान इन्होंका काढ़ा ४ दारुहल्दी बायबिड़ंग खैर धौके फूल इन्हों का

काढ़ा ५ देवदारु कूट चन्दन अर्जुन इन्होंका काढ़ा ६ दारुहल्दी अरणी त्रिफला पाढ़ा इन्होंका काढ़ा ७ पाढ़ा मूर्वा गोखुरू इन्हों का काढ़ा ८ अजमान वाला गिलोय हरड़ै इन्होंका काढ़ा ९ जामुन आमला चीता सप्तपर्णी इन्होंका काढ़ा १० ये दश काढ़े शहद संयुत पीनेसे जल प्रमेह इक्षुप्रमेह सांद्र प्रमेह सुरा प्रमेह पिष्टप्रमेह शुक्रप्रमेह सिकताप्रमेह शीतप्रमेह शनैःप्रमेह लालाप्रमेह इन्होंको नाशकरै ॥ शनैर्मेहपर ॥ त्रिफला गिलोय का काढ़ा शनैःप्रमेह को नाशै ॥ पिष्टमेह ॥ हल्दी दारुहल्दी इन्हों का काढ़ा पिष्टप्रमेह को नाशै ॥ सिकतामेह ॥ नींबका काढ़ा सिकता प्रमेहको नाशै ॥ उदकप्रमेह ॥ पारिजातका काढ़ा उदकप्रमेह को नाशै ॥ सांद्रमेह ॥ सप्तपर्णी का काढ़ा सांद्रमेहको नाशै ॥ लालाप्रमेह ॥ त्रिफला अमलतास मुनक्का दाख इन्होंका काढ़ा लालाप्रमेहको नाशै ॥ शुक्रप्रमेह ॥ दूब शेवाल क्षुद्रमोथा करंजवा कसेरू इन्हों का काढ़ा व अर्जुन चन्दन का काढ़ा पीनेसे शुक्रप्रमेहको नाशै ॥ शीतप्रमेह ॥ पाढ़ा गोखुरूका काढ़ा शीतप्रमेह को नाशै ॥ इक्षुप्रमेह ॥ नींब का काढ़ा इक्षुप्रमेहको नाशै ॥ सुराप्रमेह ॥ शंभलका काढ़ा सुराप्रमेह को नाशै ॥ पित्तमेहपरचारकाढ़े ॥ लोध अर्ज्जुन वाला पतंग इन्हों का काढ़ा १ नींब वाला हरड़ै आमला इन्होंकाकाढ़ा २ आमला अर्ज्जुन नींब कूड़ा इन्होंका काढ़ा ३ काला कमल जीरा हल्दी अर्ज्जुन इन्होंका काढ़ा ४ इन चारों काढ़ों में शहद मिलाय पीनेसे पित्तके ६ प्रमेह नाश होवैं ॥ पित्तप्रमेहपर ६ काढ़े ॥ वाला लोध अमरकंद चन्दन इन्होंका काढ़ा १ वाला नागरमोथा आमला हरड़ै इन्हों का काढ़ा २ परवल नींब आमला गिलोय इन्होंका काढ़ा ३ नागरमोथा हरड़ै पुष्करमूल इन्होंका काढ़ा ४ लोध वाला दारुहल्दी धौकेफूल इन्होंका काढ़ा ५ शुंठि कमल अर्ज्जुन सौंफ इन्होंका काढ़ा ६ ये छहों काढ़े मांजिष्ठप्रमेह १ हारिद्रप्रमेह २ नीलप्रमेह ३ क्षारप्रमेह ४ कालप्रमेह ५ रक्तप्रमेह ६ इन्होंको नाशै ॥ क्षारमेह ॥ त्रिफला के काढ़ा को पीने से क्षारप्रमेह जावै ॥ हारिद्रमेह ॥ अमलतास का काढ़ा हारिद्रप्रमेह को नाशै ॥ मांजिष्ठमेह ॥ मजीठ चन्दनका काढ़ा

मांजिष्ठप्रमेह को नाशै ॥ शोणितमेह ॥ गिलोय कुचला के बीज काश्मरी खजूर इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे शोणितप्रमेह जावै ॥ दुष्टरक्तजप्रमेह ॥ खजूर काश्मरी फल कुचला के बीज गिलोय इन्हों का काढ़ा ठंढाकरि शहद मिलाय पीनेसे रक्तप्रमेहको नाशै ॥ नीलमेह ॥ सालसादि काढ़ा व पीपलकी छाल का काढ़ा नीलप्रमेहको नाशै ॥ सर्पिमेह ॥ कूट पाढ़ा हींग कुटकी इन्हों का चूर्ण व गिलोय चीता इन्होंका काढ़ा बसाप्रमेह को नाशै ॥ छिन्नादिकाढ़ा ॥ गिलोय चीता इन्होंका काढ़ा व पाढ़ा कूड़ा हींग कुटकी कूट इन्होंका काढ़ा बसाप्रमेहको नाशै ॥ हस्तिमेह ॥ कुचलाबीज कैथ सिरसम केशू पाढ़ा मूर्वा धमासा इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे हस्तिप्रमेह जावै ॥ हस्तिप्रमेह ॥ हाथी घोड़ा बड़ैलासुअर गधा ऊंट इन्होंके हाड़ों का खार हस्तिप्रमेहको नाशकरै ॥ बसामेह व हस्तिमेह ॥ अरणी का काढ़ा बसाप्रमेहको नाशै और पाढ़ा सिरसम धमासा मूर्वा केशू कुचलाके बीज कैथ इन्हों का काढ़ा हस्तिप्रमेह को नाशकरै ॥ क्षौद्रमेह व बसामेह ॥ सुपारी खैर इन्होंके काढ़ामें शहद मिलाय पीने से क्षौद्रप्रमेह नाशहोवै । और गिलोय चीता इन्होंका काढ़ा व पाढ़ा कूड़ा हींग कुटकी कूट इन्होंका चूर्ण खानेसे बसाप्रमेह नाशहोवै ॥ द्वितीययोग ॥ चुका मेदा इन्हों के काढ़ा में शहद मिलाय पीनेसे बसाप्रमेह जावै वा अरणी का काढ़ा वा कालाशीशमका काढ़ा बसाप्रमेहको नाशै ॥ कफपित्तजप्रमेहपर ॥ कपिला सप्तपर्णी अर्ज्जुन बहेड़ा रोहित कूड़ा इन्होंके फूलोंको दहीमें पीसि शहद मिलाय पीने से कफपित्तप्रमेह नाशहोवै ॥ कफबातजप्रमेहपर ॥ हरड़ै कायफल नागरमोथा लोध लालचन्दन बाला इन्हों के काढ़ामें शहद व हलदीका चूर्ण मिलाय पीनेसे कफबातजप्रमेह नाशहोवै ॥ पित्तबातजप्रमेहपर ॥ बायबिड़ंग दारुहल्दी हल्दी खैर बाला सुपारी इन्होंका काढ़ा प्रभात में पीनेसे पित्तबातका प्रमेह नाशहोवै ॥ त्रिफलादिकाथ ॥ त्रिफला देवदारु दारुहल्दी नागरमोथा इन्हों का काढ़ा शहद सहित व गिलोय का स्वरस शहद सहित पीनेसे सबप्रमेहों को नाश करै ॥ त्रिफलादि काढ़ा ॥ त्रिफला

देवदारु दारुहल्दी गड़ूभा नागरमोथा इन्हों के काढ़ा में हल्दी शहद मिलाय पीने से सब प्रमेह नाश होवैं ॥ पलाशपुष्पकाढ़ा ॥ केशूके फूलों के काढ़ामें मिश्री मिलायपीने से २० प्रकारके प्रमेह नाशहोवें ॥ प्रमेह चिकित्सा ॥ आमलाकेकाढ़ामें हल्दी शहद मिलाय पीनेसे व बड़के अंकुरोंके काढ़ामें शहदमिलायपीनेसे व पाषाणभेदके काढ़ा में शहद मिलाय पीने से प्रमेह नाशहोवे ॥ विड़ंगादिकाढ़ा ॥ बायबिड़ंग हल्दी मुलहठी शुंठि गोखुरू इन्होंके काढ़ा में शहदमिलाय पीनेसे भयंकर प्रमेहभी नाशहोवे ॥ अन्यप्रकार ॥ कूड़ा की छाल आसनाकी छाल नागरमोथा त्रिफला इन्होंकाकाढ़ा सब प्रमेहोंको नाश करै ॥ प्रमेहमें चणकयोग ॥ हल्दी दारुहल्दी त्रिफला इन्होंके कल्कको ३ दिनघाममेंधरै पीछे कल्क को माटी के बरतन में घालि दोलिका यंत्रमें एक मुष्टिभर चणेघालि ६० घड़ी राखि पीछे हमेशा वर्द्धमान खानेसे असाध्य प्रमेहभी नाशहोवे ॥ प्रमेहमें ४ योग ॥ त्रिफला चूर्ण शहदमें मिलाय चाटनेसे व शिलाजीत व लोहभस्म व कीटी इन्होंको अलग अलग खानेसे प्रमेह रोग नाश होवै ॥ शालादिकल्क ॥ अर्ज्जुन नागरमोथा कपिला इन्होंका कल्क १ तोला आमला का रस शहदमें मिलाय खानेसे सबप्रमेह नाश होवैं ॥ बंग व नागभस्मयोग ॥ गिलोय रसमें शहद बंगभस्म मिलाय खानेसे प्रमेहको नाशै व शीशाकी भस्म खाने से प्रमेह को नाश करै ॥ द्विनिशादिहिम ॥ दारुहल्दी हल्दी त्रिफला इन्होंको कूटि रात्रि को पानीमें भिगोय प्रभातमें शहद मिलाय पीनेसे प्रमेह का शूल नाशहोवे ॥ गुडूची व धात्रीरसयोग ॥ गिलोयके रस में शहद मिलाय पीनेसे व आमलाके रसमें शहद हल्दी चूर्ण मिलाय पीने से प्रमेह शांत होवै ॥ अंकोल्यादियोग ॥ अंकोलीकी कली आमला हल्दी शहद इन्हों को मिलाय चाटने से २० प्रकार को प्रमेह शांत होवै सत्यहै इसमें संशय नहीं ॥ भूधात्र्यादियोग ॥ भूमिआमला दालचीनी इलायची तमालपत्र बीस मिरच इन्होंको पीसि खाने से असाध्यप्रमेहभी ७ रात्रि में नाशहोवे संशयनहीं ॥ कतकबीजयोग ॥ कतकबीज १ तोला लेय तक्रमें पीसि खानेसे प्रमेहगण को हरै

जैसे राम रावणको तैसे ॥ शाल्मली स्वरस ॥ शंभलकी छालकास्वरस में हल्दीका चूर्ण शहद बंगभस्म मिलाय पीनेसे प्रमेहों को नाशै जैसे सिंह हाथियोंको ॥ एलादिचूर्ण ॥ इलायची शिलाजीत पिपली पाषाणभेद इन्होंकेचूर्णको चावलों के धोवनके संग खाने से प्रमेह नाशहोवै ॥ कर्कव्यादि चूर्ण ॥ काकड़ीबीज त्रिफला सेंधानोन ये समभागले चूर्णबनाय गरमपानी के संग पीने से मूत्ररोध को नाशकरै ॥ त्रिफलाचूर्ण ॥ १ हरड़े १ बहेड़ा २ आमले ४ भाग व ३ भाग इसे त्रिफला कहते हैं यह सोजा प्रमेह विषमज्वर कफ पित्त कुष्ठ इन्होंको नाशै और दीपनी है और त्रिफला शहद घृत में मिलाय खाने से नेत्ररोगों को नाश करै ॥ गूगल ॥ त्रिकुटा त्रिफला नागरमोथा गूगल ये समभाग लेय गोखुरू के काढ़ा में गोलीवनाय देशकालको विचारि खावै ये गोली अनुलोमन करैहै इसपै परहेज नहींहै मनोबांछित भोजनकरै यहप्रमेह बातरोग बातरक्त मूत्राघात मूत्रदोष प्रदर इन्होंको नाशै ॥ गोक्षुरादिगूगल ॥ गोखुरू ११२ तोलेका छःगुना पानी में काढ़ाबनाय आधा रहने पर उतारडालै पीछे शोधागूगल २८ तोले मिलाय फिर पकावै गुड़के पाकसमान होनेपर त्रिकुटा त्रिफला नागरमोथा इन्होंका चूर्ण २८ तोले मिलावै पीछे गोलीबनाय खानेसे प्रमेह मूत्रकृच्छ्र प्रदर मूत्राघात बातरक्त बातरोग शुक्रदोष पथरी इन्होंको नाशकरै ॥ चंद्रकलावटी ॥ इलायची कपूर शिलाजीत आमला जायफल गोखुरू शम्भल पाश बंग लोहभस्म ये समानभाग लेय गिलोय शम्भल इन्होंके काढ़ामें भावनादेय २ माशेरोज शहदमें मिलाय चाटने से सब प्रमेहको नाशै ॥ चंद्रप्रभावटी ॥ मिरच त्रिकुटा त्रिफला जवाखार साजीखार सुहागाखार चाव चीता सारिवा पिपलामूल नागरमोथा कचूर सोनामाखी दालचीनी बच देवदारु गजपिपली चिरायता जमालगोटा बीज हल्दी तमालपत्र इलायची अतीस ये एक एक तोलालेय लोहभस्म ८ तोला वंशलोचन ४ तोला गूगल ४०तोला शिलाजीत ३२ तोला इन्होंको मिलाय १० माशेकी गोली बनाय पीछे शहद घृत में मिलायखावै ऊपर तक्र मस्तु गोघृत मीठारस

इन्होंमें से एककोयेसाका अनुपानकरै यह बवासीर प्रदर ज्वर विषमज्वर नाड़ीव्रण पथरी मूत्रकृच्छ्र विद्रधी मन्दाग्नि उदररोग पांडु कामला क्षयी भगन्दर पिटिका गुल्म प्रमेह अरुचि शुक्रदोष उरःक्षत कफ बात पित्त इन रोगोंको नाशकरै। और बूढ़ाको जवानकरै बल पराक्रमको बढ़ावै इसपै अन्न मार्ग गमन मैथुन मनोवांछित करै यह चंद्रप्रभा गोली संसारमें विख्यातहै आनन्द देवैहै चंद्रमा समान कांतिको शरीर में बढ़ावै है ॥ सिंह्यामृतघृत ॥ कटैली १०० तोला गिलोय १०० तोला इन्हों को कूटि ऊखलमें ४ चार द्रोण पानीमें पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रहनेपर घृत ६४तोला मिलाय पकाय पीछे त्रिकुटा त्रिफला रास्ना बायबिड़ंग चीता काश्मरीजड़ करंजवाजड़ इन्हों का बारीक चूर्ण बनाय पूर्वोक्त में मिलाय दूध चावल के संग शक्ति प्रमाण खानेसे प्रमेह मधुप्रमेह मूत्रकृच्छ्र भगन्दर आलस्य अंत्रवृद्धि कुष्ठ क्षयी इन्हों को नाशै ॥ हरिद्रातैल ॥ हल्दी काढ़ा २५६ तोला दूध १२८ तोला कूट असगंध लहसुन हल्दी पिपली इन्हों का कल्क तिलों का तेल ६४ तोला इन्हों को मिलाय तेलको सिद्धकरि और कपास के बिंदोलाकी गीरी आंकोलीजड़की छाल और फूल केतकबीज हरड़ें इन्होंको चौगुणा पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ाबनाय पूर्वोक्तमें मिलाय और केतकी रस मिलाय फिर पकाय पीछे १तोला रोजखानेसे २० प्रमेहोंको नाशै ॥ पूगपाक ॥ नागकेशर नागरमोथा चन्दन त्रिकुटा आमला चिरोंजी कोकिलाक्ष लज्जावंती दालचीनी इलायची तमालपत्र जीरास्याहजीरा शिंगाड़ा बंशलोचन जावित्री लौंग धनियां बहुला ये प्रत्येक तोला तोला भरले सुपारी ३२ तोला इन्होंका चूर्णकरि ६६ तोला दूधमें पकाय पीछे गौकाघृत १६तोला मिश्री२००तोला आमला १६तोला शतावरि १६तोला इन्होंका चूर्ण मिलाय मन्द अग्निसे पकाय शुभ दिनमें पीछे चिकने बरतनमें घालि धरै पीछे अग्निबल बिचारि प्रभातमें खानेसे यहप्रमेह जीर्णज्वर आम्लपित्त रक्तस्राव बवासीर मन्दाग्नि इन्होंको नाशै और पुष्टि वीर्य को बढ़ावै और स्त्रियोंको गर्भदेवै और प्रदर नाश होवै और मेदआम इन्हों

को नाशकरै ॥ अश्वगंधादिपाक ॥ असगंध ३२ तोला गौकादूध ६सेर दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर ये प्रत्येक तोला तोला जायफल केशर वंशलोचन मोचरस जटामांसी चन्दन लालचन्दन जावित्री पिपली पिपलामूल लौंग कंकोल मेढ़ासिंगी अखरोट की मज्जा भिलावांबीज शिंगाड़ा गोखुरू रससिंदूर अभ्रकभस्म शीशाभस्म बंगभस्म लोहभस्म ये सब तीन तीन माशे मिलाय मन्दाग्निसे पकाय पीछे शक्तिमाफ़िक खानेसे सर्व प्रमेह जीर्णज्वर शोष गुल्म पित्तरोग बातरोग इन्होंको नाशै बीर्य को बढ़ावै और पुष्टि अग्नि कांति इन्होंको बढ़ावै और मनुष्यों के चित्तको प्रसन्न करै ॥ शाल्मपाक ॥ एक द्रोण दूध में शंभल की छाल का चूर्ण १६ तोले पकाय मन्दाग्निसे पीछे गुड़ ६४ तोला मिलाय पाक बनावै पीछे दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर लौंग जायफल नागरमोथा बंशलोचन धानियां शुंठि पिपली मिरच असगन्ध हरड़ैं लोहभस्म इन्होंका चूर्णमिलाय पीछेसेवनेसे हृद्रोग क्षयी शोष बातरोग हिचकी असृक्शोष २० प्रकार का प्रमेह शिरोविकार इनरोगोंको नाशकरै ॥ द्राक्षापाक ॥ दाख ६४तोला दूध ६४ तोला मिश्री ६४ तोला इन्होंको मिलायपकाय पीछे दालचीनी इलायची तमालपत्र नागकेशर त्रिकुटा कस्तूरी लोहभस्म अभ्रकभस्म केशर जावित्री जायफल कपूर चांदीभस्म कुस्तुंवरी चन्दन येसब दो२ तोलेलेय चूर्णकरि पूर्वोक्त में मिलाय पीछे प्रभात में रोज़ २ तोले सेवनेसे शरीर को चिकनाकरै और बीर्यकोबढ़ावै और प्रमेह पित्त रोग मूत्राघात बिड्बंध मूत्रकृच्छ्र रक्तपीड़ा नेत्रपीड़ा हृदय पैर हाथ तलवा इन्हों के दाह येसब नाशहोवैं और मनुष्यों को सुख देवै ॥ अभ्रकयोग ॥ चन्द्रिकारहित अभ्रकभस्म त्रिफला हल्दी इन्हों के चूर्ण में शहदमिलाय चाटनेसे जल्दी सब प्रमेहनाशहोवैं ॥ नागभस्मयोग ॥ शोधाशीशा भस्म २ रत्तीभरमें आमलाचूर्ण हल्दी शहद मिलाय खाने से सब प्रमेह नाशहोवैं ॥ गंधकयोग ॥ गंधक को गुड़के संग १ तोलाभर खाय ऊपर दूधको पीने से २० प्रकार के प्रमेह और पिटिका नाशहोवैं ॥ शिलाजीतयोग ॥ शिलाजीत को

दूध मिश्री में मिलाय प्रभात में पीने से सब प्रमेह २१ दिन में नाशहोवैं ॥ स्वर्णमाक्षिकभस्मयोग ॥ सोनामाखी का भस्म शहद में मिलाय चाटनेसे सब प्रमेहोंको नाशै और सोनामाखी की भस्मको गिलोयसतमें मिलाय खाने से पित्तप्रमेह नाशहोवै ॥ बहुमूत्रमेहनिदान ॥ शरीरमाड़ाहोजाय पसीनाआवै अंगमेंगंधआवै और हाथपैर जीभ नेत्र कान इन्होंमेंदाहरहै अंग शिथिलरहैं अरुचिहोय पिटिका उपजै कंठ तालु ओष्ठ इन्हों में शोषहो और दाहरहै और शीतल पदार्थोंकी इच्छाबनीरहै शरीरकारंग सफ़ेदहोय और ज्यादा माड़ा होताजावै परिश्रम युतरहै पीलामूत्र उतरै और मूत्र ऊपर माखी आदि देरतकबसैं ये बहुमूत्रप्रमेहके लक्षणहैं ॥ दूसराप्रकार ॥ पसीना आवै अंगमें गंधउपजै शरीर शिथिलहोजावै और शय्या आसन शयन इन्होंकी इच्छाबनीरहै हृदय नेत्र जीभ कान इन्होंमें दाहरहै अंग घनरहै केश नख वढ़जावैं शीतलपदार्थकी इच्छाबनीरहै कंठ तालुमें शोषरहै मुख मीठारहै हाथ पैरों में दाहरहै और मूत्र ऊपर कीड़ी आयबसैं और तृषा प्रमेह नानाप्रकारके विकारउपजैं और सबप्रमेहउपजैं व कफप्रमेहउपजै वायुकरि दोषक्षयहोतसंते व कफ पित्तप्रमेह उपजै व बातप्रमेह उपजै बातकेप्रमेह असाध्य पित्तप्रमेह जाप्य कफकेसाध्य जो प्रमेह दुष्टनहो वहसाध्य ॥ त्रिफलादियोग ॥ त्रिफला बांस पान नागरमोथा पाढ़ा इन्होंकाकाढ़ामें शहदमिलाय खानेसे बहुमूत्रप्रमेहको नाशकरै जैसे अगस्त्यमुनिसमुद्रोंकोतैसे॥देवदार्व्यारिष्ट ॥ देवदारु २००तोला बांसा ८० तोला मजीठ इन्द्रयव जमालगोटाकीजड़ तगर हल्दी दारुहल्दी रास्ना बायबिडंग नागरमोथा सिरस खैर शंभल ये चालीस २ तोले लेय और अजमोद कूड़ाकी छाल सफ़ेद चन्दन गिलोय कुटकी चीता ये ३२ बत्तीस २ तोलेलेय इन्होंको आठ८ द्रोण पानीमें पकाय अष्टमांश बाक़ी रहने पर शीतलकरि धवकेफूल ६४तोला शहद१२००तोला शुंठि मिरच पीपल ८तोला दालचीनी इलायची तमालपत्र ये१६तोला माल कांगनी १६तोला नागकेशर ८तोला इन्होंका चूर्णकरि पूर्वोक्तकाढ़ा में मिलाय चिकने बरतन में १ एकमहीना तकघालि धरै पीछे इस-

को पीनेसे दारुण प्रमेह बातरोग बवासीर संग्रहणी मूत्रकृच्छ्र खाज कुष्ठ इन्होंको नाशकरै॥ लोध्रासव॥ लोध कचूर पुष्करमूल इलायची मूर्वा बायविडंग त्रिफला अजमान चाव कांगनी सुपारी गडूंभा चिरायता कुटकी निसोत तगर चीता पीपलामूल कूट अतीस पाढ़ा काकड़ासिंगी नागकेशर इन्द्रयव नख तमालपत्र मिरच भद्रमोथा ये प्रत्येक तोला तोलाभरलेय इन्हों को एकद्रोणपानीमें पकाय चतुर्थांशरहनेपर बराबरका शहद मिलाय चिकने बरतनमें घालि धरै १५ दिनपीछे ६ तोले रोज़ पीनेसे कफ पित्त प्रमेह पांडु बवासीर संग्रहणी अरुचि किलासकुष्ठ दूसराकष्ट इन्होंको जल्दी नाशकरै॥ तालकेश्वररस॥ पाराभस्म बंगभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म इन्होंको शहदके संग खरलकरि पीछे उड़दसमान शहदके संगखानेसे बहु मूत्रप्रमेह जावै॥ बंगेश्वररस॥ शोधापारा १ भाग गंधक १ भाग बंगभस्म २ भाग इन्होंको खरलकरि २ रत्तीभर मिश्री शहदकेसंग खावै और खारारसबर्ज्जित पथ्य को सेवै यह सब प्रमेहोंको नाश करै॥ आनन्दभैरवरस॥ मीठातेलिया मिरच पीपल सुहागा शिंगरफ ये समभागलेय चूर्णकरि खानेसे १ रत्ती सब प्रमेहों को नाशै॥ प्रमेहवद्धरस॥ पाराभस्म लोहाभस्म कांतभस्म शोधाशिलाजीत सोनामाखीभस्म मनाशिल शुंठि मिरच पीपल हरड़ै बहेड़ा आमला कंकोलबीज कैथ हल्दी इन्होंको भंगरा के रसमें भिगोय २० बार पीछे सुखाय शहद में मिलाय ४ माशे रोज़ खाने से प्रमेहको नाशै इसपै अनुपानकहतेहैं बकायणकेबीज ६ चावलोंकाधोवन ४ तोलाघृत ८ माशे इन्होंको मिलायपीना॥ हरिशंकररस॥ पाराभस्म अभ्रकभस्म इन्होंको आमलाकेरसमें ७ बार खरलकरि खानेसे सबप्रमेहनाशहोवें॥ मेघनादरस॥ पाराभस्म लोहकांतभस्म गंधक पोलाद सोनामाखी भस्म त्रिकुटा त्रिफला शिलाजीत मनाशिल अंकोलबीज हल्दी कैथ येऔषध समभागलेय भंगराकेरसमें २१ भावनादेय ४ माशेशहदके संगखावै सबप्रमेह नाशहोवै॥ नींबबीजकल्क॥ बकायण के बीजोंको चावलोंके धोवनमें पीसि घृतकेसंगखानेसे पुरानाप्रमेह शांतहोवै॥ मेहारीरस॥ बंगभस्म पाराभस्म समभागलेय शहदमेंमिलाय २ रत्ती

खानेसे पुरानाप्रमेहनाशहोवै ॥चन्द्रोदयरस॥ अभ्रकभस्म गंधक पारा बंगभस्म इलायची शिलाजीत येसमभागलेय कपूरकेसंगखरलकरि खानेसे २० प्रमेह कामलापित्त इन्होंको नाशकरै॥ बंगेश्वररस ॥ पारा एकभाग बंग ३ भाग गंधक ३ भाग इन्होंको कुवारपट्ठा के रसमें १ दिन खरलकरै पीछे गोलीबनाय बरतनमें घालि मुखको बंधकरि बालुकायंत्रमें १दिनतीव्रअग्निसेपकाय शीतलहोनेपर ब्राह्मण और देवताओंकोपूजि रसकोपीपलीचूर्ण शहदमेंमिलायखानेसे सबप्रमेह नाशहोवैं ऊपर दूधचावलोंका पथ्यकरै खाटा खारारसको बर्जिदेवै॥ मेहकुंजरकेसरी॥ पारा गंधक लोहभस्म अभ्रकभस्म शीशाभस्म बंग भस्म सोनाभस्म बज्रभस्म मोतीभस्म इन्हों को मिलाय चूर्ण करि शतावरिरसमें खरलकरि घाममें सुखाय गोलाकरि शराव सम्पुट में धरि ऊपर माटी गारा लेपि गोबर की अग्नि से गजपुट में पकाय शीतल होनेपर काढ़ि खरल में बारीक पीसि देवता और ब्राह्मणों का पूजनकरि शीशी में घालिधरै पीछे ४ रत्तीखाय ऊपर ठंढापानी पीवै यह १८ प्रकार के प्रमेहोंको १ महीनामें नाशै और तुष्टि तेज बल वर्ण बीर्य अग्नि इन्हों को बढ़ावै यह दिव्य रसायन है संशय नहीं॥ पंचलोहरसायन ॥ अभ्रकभस्म लोहकांतभस्म शीशाभस्म बंगभस्म इन्होंको भाग वृद्धिसेलेय खरलमें घालि ताड़नड़ बाराही कंद शतावरि लालचंदन इन्हों के काढ़ा में अलग २ भिगोवै एक एकपहर पीछे चना प्रमाण गोली बनाय नौनीघृतकेसंग प्रभात में खानेसे सब प्रमेहों को नाशै इसपै चावल परवल तांडुला बथुआ मत्स्याक्षी मूंगयूष कच्चाकेलाफल ये पथ्यहैं और यह बवासीर संग्रहणी मूत्रकृच्छ्र पथरी कामला पांडु सोजा अपस्मार क्षत क्षय रक्त खांसी इन्होंकोनाशै॥ महाबंगेश्वररस ॥ बंगभस्म कांतभस्म अभ्रकभस्म धतूराफूल ये समभाग लेय कुवारपट्ठा के रसमें ७ बार भावनादेय खानेसे २० प्रकारके प्रमेहों को नाशकरै और मूत्रकृच्छ्र सोमरोग पांडुरोग पथरी इन्होंकोनाशै यहनागार्ज्जुनने रचाहै॥ बंगभस्मरस॥ बंगभस्म शिलाजीत इन्होंको मिलायखानेसे प्रमेह धातुक्षय दुर्बलपनानष्टशुक्र इन्होंकोनाशकरै और इसीको अभ्रकभस्ममें जायफल

सूर्यमुखीफूल पद्मकंद लौंग इन्होंमें मिलाय खानेसे पुत्र पैदाहोवै॥ बसन्तकुसुमाकर॥ सोना भस्म २ भाग चांदीभस्म २ भाग बंगभस्म ३ भाग शीशाभस्म३ भाग कांतलोहभस्म३ भाग पाराभस्म३ भाग अभ्रकभस्म ३ भाग मूंगाभस्म ३ भाग मोतीभस्म ३ भाग इन्हों को गौकादूध ईषरस बांसारस चन्दन बाला कालाबाला हल्दी केला कन्दरस इन्हों के रस व काढ़ों में सात २ भावना देय पीछे कमल मालती फूल कस्तूरी इन्होंके रसोंमें भावनादेनेसे बसन्त कुसुमाकर तय्यार होयहै ४ रत्ती रसको घृत मिश्री शहदमें मिलाय चाटनेसे पली पलित प्रमेह इन्होंको नाशै और बुद्धि उमर काम सुख पुष्टि वीर्य इन्होंको बढ़ावै और सन्तानको पैदाकरै और क्षयी खांसी तृषा उन्माद श्वास रक्तपित्त विष इन्होंको शांतकरै और मिश्री चन्दनके सङ्ग खाने से आम्लपित्तादि रोगोंको नाशै और पाण्डुशूल मूत्राघात पथरी इन्होंकोनाशै यह योगवाही है सेवने से कांति श्री बल इन्होंको बढ़ावै इसके सेवनेमें यथेष्ट भोजनकरै और १०० स्त्रियों से भोगकरै और कामदेवसे मदोन्मत्तहो अनेक स्त्रियोंको प्रसन्न व विह्वलकरदेवै इसकेसमान उत्तम मित्ररूप औषधनहींहै॥ जलजामृतरस॥ वंशलोचन शिलाजीत गिलोयसत बङ्गभस्म सफेदगोकर्णी बीज इन्होंको विदारीकन्द त्रायमाण इन्होंके रसोंमें तीनतीन भावनादेय मिश्रीमिलाय खानेसे प्रमेह शूलको हरै॥ प्रमेहपिटिका॥ प्रमेह वाले रोगियों के सब सान्धियोंविषे दशप्रकारकी पिटिकाहोय है शराविका १ कच्छपिका २ जालिनी ३ बनिता ४ अलजी ५ मसूरिका ६ सर्षपिका ७ पुत्रिणी ८ बिदारिणी ९ बिद्रधि १० ये शरीर कुढंगे आदि मर्मस्थानों में उपजे हैं॥ पिटिकाकारण॥ जो जो दोष संयुत प्रमेह हो सो सो दोषवाली पिटिका उपजे और बिना प्रमेह भी कहीं पिटिका मेद जन्यउपजे है और जबतक गांठबन्धनहीं तब तक पिटिका लक्षण निश्चयहोवै नहीं॥ १० दशापिटिकालक्षण॥ फुनसी ऊपर तो ऊंची और जिसके बीचमें खड़ाहो तिसे शराविका कहिये और पीछे कहे मर्मस्थानों में सिरसम सरीखी फुनसी दाहको लिये कछुआके आकारहो तिसेकच्छपिका कहिये व जिसफुनसीमें बहुत

दाहहो और मांसके समूहमें हो तिसे जालिनी कहिये व जिस फुन्सीके भीतर पीड़ा हो और वह फुन्सी बड़ी हो और पीठ पीछे अथवा पेटमेंहो तिसे बनिताकहिये व जो फुन्सी लाल और कालीहो बहुत फटीपीड़ा अधिकहो तिसे अलजी कहिये व जो फुन्सी मसूरके प्रमाणहो और मसूरकैसे रङ्गकीहो तिसे मसूरिका कहिये व जो फुन्सी सिरसम प्रमाणहो और सिरसम कैसाही रंगहो तिसे सर्षपिकाकहिये व जो फुन्सी उठतेही वड़ी उठे तिसे पुत्रिणी कहिये व जो फुन्सी बिदारीकन्दके सदृश गोलहो और कड़ीहो और वैसाही रंगहो तिसे बिदारिका कहियें व जो फुन्सी विद्रधीके लक्षणोंसे युत हो तिसे बिद्रधी कहिये ॥ असाध्यपिटिका ॥ गुदा हृदय मस्तक कांधा पीठ मर्म्मस्थान इन्हों में उपद्रव सहित पिटिका मन्दाग्निवाले के उपजै तो असाध्य जानो ॥ प्रमेहसाध्यलक्षण ॥ जिसकाल में प्रमेह रोगीका मूत्र गाढ़ा न हो और चीकना न हो स्वच्छ हो कड़ुवा हो ऐसा रोगी साध्य जानो ॥ पिटिकाकेउपद्रव ॥ तृषा खांसी मांस का संकोच हिचकी मन्दज्वर त्रिसर्प्प मर्म का रोकना ये उपद्रव हैं ॥ पिटिकाचिकित्सा ॥ इसमें पहिले रक्तमोक्षकराय और पकीहुइओं का पाटन कराय पीछे कषायोंका पानहितहै व ब्रणनाशक काढ़ा वस्तिकर्म मूत्रकारक उपचार रक्तमोक्ष ब्रणकी क्रिया ये सब हितहैं ॥ न्यग्रोधादिचूर्ण ॥ बड़ गूलर पीपली सहोंजना असलतास मिलावां आंब कैथा जामुन चिरौंजी अर्जुन धौकेफूल महुआ मुलहठी लोध वरणा नींब परवल मेढ़ासिंगी जमालगोटाकीजड़ चीता तूरी करंजुवा त्रिफला कूड़ा आसना ये सम भाग लेय चूर्ण बनाय शहद में मिलाय खानेसे २० प्रकारका प्रमेह सब प्रकारके मूत्रकृच्छ्र पिटिकारोग ये नाशहोवैं इसपै त्रिफलाके रसको पुनुमानहै ॥ पिटिकालेप॥ गूलरके दूधको व बाकुचीके दूधको पिटिका ऊपरलेपकरनेसे पिटिका नाशहोवै ॥ पथ्य ॥ पहिले लंघन बमन बिरेचन प्रोद्वर्तन शमन दीपन इन्हों का सेवन कराय पीछे नीवार धान्य कांगनी यव बांसकाफल कोदौ सामाज्वारि कुरुविंद मटर गेहूँ धान कलमधान पुरानी कुलथी मूंग अरहर चना इन्होंका यूष व रस तिल खील पुरानीमदिरा श-

हृद बाब्य मण्ड मठा गधाका तथा भैंस का मूत चिरोटा कबूतर शशा तीतर लवा मोर बाघ हिरण बटेर तोता आदि जंगली जीवों का मांस सहोंजना परवर करेला ककेड़ा ताड़फल कटैलीका फल गूलर लहसन नवीनकेला शालिंच शाक गोखुरू मूषापर्णीआकके पत्ते गिलोय त्रिफला कैथ जामुन कसेरू कमल तथा नील कमल की जड़ व बीज खजूरि नारियल तथा ताड़वृक्षका मस्तक त्रिफला भिलावां कत्था इन्द्रयव चर्परे तथा कषायलेरस हाथी घोड़ाकीसवारी बहुत फिरना सूर्यकातेज कसरत ये प्रमेहमें पथ्य हैं ॥ अपथ्य ॥ मूत्र कावेग धुआं पीना स्वेदन रक्त मोक्ष सदा बैठना दिनमें सोना नवीन अन्न दही अनूप देशका मांस पीठी स्त्री संग कांजी सेंधानेका जल तेल दूध घृत गुड़ तूंबी ताड़फलकी मींगी बिरुद्ध भोजन कोहला ईष बुराजल मीठे खट्टे और खारी रस अभिष्पंदी बस्तु ये सब प्रमेह में अपथ्य हैं ॥

इतिश्रीबेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितनिघण्टरत्नाकर
भाषायांप्रमेहप्रकरणम्॥

मेदोनिदान ॥ बहुत रोज आराम के करने और बैठे रहने और दिनके सोने से कफकारी बस्तु और मधुर अन्न घृतको आदि ले चीकनी वस्तुके खाने से मेदबढ़ताहै तब पुरुष कुछ कामनहीं कर सक्ता क्योंकि और जो हाड़ मज्जा बीर्य्य आदि धातु हैं वे मेद के बढ़ने से पुष्ट होवें नहीं और पुरुष निकम्मा होजावे ॥ बर्द्धमानमेदकेउपद्रव ॥ जिसके मेदबढ़े तिसके क्षुद्र श्वास तृषा मोह ये होवें और कुणाहतासोवै शरीर में पीड़ाहो छींक और पसीना आवे शरीर में दुर्गंध आवे मैथुन करनेकी सामर्थ्य होवे नहीं ये मेदवाले के लक्षण हैं ॥ मेदकास्थान ॥ प्राणीमात्रके पेटमें मेदरहताहै इसकारणमेद पेटको बढ़ावै है ॥ मेदवृद्धिमेंदीप्ताग्निकारण ॥ मेद से ढका हुआ है मार्ग जिस का ऐसा जो बायु सो कोष्ठही में बिचरकरि अग्नि को दीप्त करि भोजनही की वासना रक्खे तब मनुष्य के बहुत खाने से अनेक भयङ्कर रोग बहुत दिनों में उत्पन्नहोते हैं ॥ बढ़ामेदमेंनाशका-

रण ॥ मेद वृद्धिमें अनेकप्रकार के उपद्रव करने वाले जोअग्नि पवन वही देहको दग्धकरै जैसे अग्नि पवनकी सहायतासे वनदग्ध करै तैसे ॥ अतिमेदबढ़नेकापरिणाम ॥ मेदवृद्धि हुआ बादि जल्दी बातादि दोष नानाप्रकारके प्रमेह पिटिका भगन्दर विद्रधी इत्यादि बिकारों को उत्पन्नकरि मनुष्यको मारदेहै ॥ स्थूललक्षण ॥ मेदमांस जब बहुत बढ़े तब पुरुषके चूतड़ उदर स्थान बढ़के थल २ हालैं पुरुषका बल मांस उत्साह जातारहै तिसे स्थूल कहिये ॥ हरीतक्यादि ॥ हरड़े लोध नींबपत्ते करंजवाकीछाल अनारकीछाल जामुन इन्होंका काढ़ा स्त्रियोंको व पुरुषोंको श्रेष्ठहै ॥ सामान्ययोग ॥ गिलोय भद्रमोथा तक्र नींब इन्होंकासेवन व शहदका सेवन दुर्गंधिको नाशै चव्यादिचूर्ण ॥ चाव जीरा शुंठि मिरच पीपल हींग कालानोन चीता इन्होंका चूर्ण शहदमें मिलाय खानेसे व सत्तुओंको शहदमें पीने से मेदरोग जावै और जठराग्निको दीपनकरै ॥ फलत्रिफलादिचूर्ण ॥ त्रिफला त्रिकुटा तेल सेंधानोन इन्होंको मिलाय खानेसे कफ मेद बायु इन्हों को नाशै ॥ सामान्यचिकित्सा ॥ कमसोना मैथुन कसरत चिन्ता इन्हों को ज्यादा सेवने से मोटापना नाश होवै ॥ नवकगुग्गुल ॥ शुंठि मिरच पीपल चीता नागरमोथा त्रिफला बायविड़ंग गुग्गुल ये समभाग लेय खाने से आमवात के विकारों को नाशै और त्रिफला के काढ़ामें शहद मिलाय पीनेसे मेदरोग नाशहोवै ॥ मेद उपचार ॥ गरमपानी को ठंढाकरि शहद मिलाय पीनेसे मेदरोग नाश होवै व चावलोंका मांड़ गरम २ पीनेसे मोटा शरीर माड़ा होवै ॥ तालपत्रक्षार योग ॥ ताड़के पत्तोंका खार हींग चावलोंका मांड़ इन्होंको मिलाय पीनेसे मेदवृद्धि नाशहोवै ॥ मोचरसादिलेप ॥ समुद्रझाग मोचरस इन्होंको मिलाय लेप करनेसे देहका दारुण दुर्गंध नाश होवै ॥ हरीतक्यादि उद्वर्त्तन ॥ हरड़ोंको पीसि शरीरपर उबटनामलि पीछे स्नान करनेसे देहका पसीना नाश होवै ॥ शीतलादि उद्वर्त्तन ॥ कंकोल लोध सिरस बाला केशर इन्होंका उबटना मलनेसे पसीना बंदहोवै व सिरस रोहिसतृण नागकेशर लोध इन्होंके कल्कको शरीरपर मलनेसे पसीना नाशहोवै व कांगणी लोध बाला चन्दन इन्होंके कल्क को

शरीरपर मलनेसे त्वचादोष पसीना दुर्गंध इन्होंको नाशै ॥ क्वाथ ॥ त्रिफलाके काढ़ामें शहद मिलाय बहुत दिन पीनेसे मेदरोग नाश होवै ॥ त्र्यूषणादिलोह ॥ त्रिकुटा त्रिफला चाव चीता मनियारीनोन सोरा बावची सेंधानोन कालानोन इन्होंके उड़द प्रमाण चूर्णमें शहद घृत मिलाय चाटनेसे मोटापा नाशै और जठराग्नि को दीपन करै और मेदप्रमेह कुष्ठ कफव्याधि इन्होंको नाशै इसमें कोई तरहका परहेज नहींहै यह चूर्ण उत्तम रसायन है ॥ उबटना ॥ कांगणी लोध हरड़ें चन्दन इन्होंका उबटना दुर्गंधको नाश करै ॥ बब्बूलादि उद्वर्त्तन ॥ बबूलके पत्तोंको पानीमें पीसि शरीर पर उबटना मलि पीछे हरड़ोंके चूर्णको मलि स्नान करनेसे पसीना नाश होवै व जामुनकी छाल अर्जुन के पत्ते कूट इन्होंके चूर्ण को पानी में पीसि रोज शरीर ऊपर मलनेसे पसीना दुर्गंध ये नाशहोवें ॥ बांसादिलेप ॥ बाँसाके रसमें शंखका चूर्ण मिलाय लेप करनेसे व बेलपत्तों का लेप करनेसे शरीर की दुर्गंध नाश होवै ॥ त्रिफलादितैल ॥ त्रिफला अतीस मूर्बा निसोत चीता बांसा नींव अमलतास बच सप्तपर्णी हल्दी गिलोय इन्द्रयव पीपली कूट सिरस शुंठि निर्गुंडीरस तेल इन्हों को पकाय तेलको सिद्धकरि पान नस्य कुरला वस्ति इन्होंमें बरतनेसे स्थूलता आलस्य खाज कफरोग इन्होंको नाश करै ॥ महासुगन्धतैल ॥ चन्दन केशर वाला कांगणी कचूर गोरोचन शिलाजीत अगर कस्तूरी कपूर जावित्री जायफल कंकोल सुपारी लौंग निलीनड़ कूट रेणुकाबीज तगर क्षुद्रमोथा बघेराका नख थोहर पाच पीला बाला दमना पुंडरीकवृक्ष कपूर कचरी ये सब चार २ माशेले मीठातेल ६४ तोला इन्होंको पकाय तेलको सिद्धकरि बरतनेसे पसीना दुर्गंध खाज कुष्ठ इन्होंको नाशै और इसकी मालिशसे सत्तर ७० बर्षका बूढ़ा जवान होवै और वीर्य बढ़ाय स्त्रियों को सुखदेवै कांति बढ़ै रूपबढ़ै १०० स्त्रियोंके संग भोगकरै और वंध्यापुत्रको पैदा करै नपुंसक पुरुषहोवै विना पुत्र वालेके पुत्र उपजै इसका सेवनेवाला १०० बर्षतक जीवै बड़वाग्निरस ॥ शोधापारा गंधक तांबाभस्म हरताल बोल ये समभाग लेय आकके दूधमें १ दिन खरलकरि पीछे २ रत्ती रसको शहदमें

मिलाय चाटनेसे अतिमोटापा नाशै इसपर ४ तोले दूधमें ४तोले पानी मिलाय पीना अनुपान है ॥ रसभस्मयोग ॥ पाराकी भस्म २ रत्तीभर लेय शहदमें मिलाय चाटनेसे मेदका मोटापा नाशै इसपै कछुक गरमपानीका पीना अनुपान है ॥ त्रिमूर्तिरस ॥ पारा गन्धक लोहभस्म ये समभाग ले इन्होंको निर्गुंडीके पत्तोंके रसमें भावना देय पीछे मुसली कन्दके रसमें भावनादेय पीछे उड़दसमान रसमें लोधका चूर्ण शहद मिलायखावै ऊपर शुंठि मिरच पीपल पीपला-मूल चाव चीता त्रिफला पांचोंनोन बावची इन्होंका चूर्णखाना यह अनुपानहै यह मेदरोग सोजा मन्दाग्नि आमवात कफरोग इन्हों को नाश करै ॥ मेदपरसामान्य उपचार ॥ श्रम चिन्ता मैथुन मार्गं-गमनजागरण स्त्रीसङ्ग यवभोजन सांवांभोजन ये मोटापाकोनाशैंहैं॥ मेदरोगमेंपथ्य ॥ चिंता श्रम जागना स्त्रीसङ्ग उबटना लंघन घाम हाथी घोड़ेकी सवारी भ्रमण करना बिरेचन बमन धातुओं का घटाना पुराने बांसके फल कोदौं सांवां कांगणी ज्वार यव कुलथी चना मसूर मूंग मटर शहद खील कडुये चर्परे कसायलेरस मठा मदिराभांगा मछली जल बैंगन त्रिफला गूगुल लोह सिरसके बीज लोध हरड़े इन्होंका देहमेंलेप त्रिकुटा सिरसमका तेल इलायची सबरूखीवस्तु मुख्यतेल पत्रशाक अगरकालेप तपाजल शिलाजीत ये सब मेद रोगमें पथ्यहैं ॥ अपथ्य ॥ नहाना रसायनधान गेहूं सुखसे रहनादूध ईषका बिकार गुड़ उड़द अधाना स्वेदन मछली मांस दिनमें सोना मालासुगन्ध मीठी वस्तु सब भोजनके पीछे जलपीना अत्यंत तामें बिशेषकरि बमन ये सब मेदरोगमें अपथ्य हैं ॥

इतिवेरीनिवासकरबिदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्ट
रत्नाकरभाषायांगुल्मप्रकरणम् ॥

उदरकर्मबिपाक ॥ जो ब्रह्मा बिष्णु शिव इन्होंमें एकको बड़ामानि दूसरेका निरादरकरै वह उदररोगसे पीड़ितहोवै ॥ प्रायश्चित्त ॥ कृच्छ्र व अतिकृच्छ्र चान्द्रायण ब्रतकोकरि पीछे महादेवजीको सहस्रधारा कलशसे स्नानकरावै ॥ जलोदरकर्मबिपाक ॥ राजाने अथवा अन्यने

धर्मनिश्चय में नियुक्तकिया पुरोहित व मन्त्री अन्यथा कर्मकोकर देवै वह जलोदरसे पीड़ित होवै तिसका प्रायश्चित्त कहते हैं ॥ शमन ॥ वह तीनमहीने तक पयोव्रतकरै याने दूधपानके आश्रयरहे पीछे सहस्र १००० धाराके कलशसे महादेवजी को स्नान करावै पीछे १०० ब्राह्मणोंको भोजनकरावै तब पाप नाशहोवै ॥ उदरकर्मविपाक ॥ गर्भपातन कराने से यकृत तिल्ली जलोदर ये रोग उपजे हैं इन्होंकी शान्ति वास्ते प्रायश्चित्त कहते हैं ॥ शमन ॥ सोना चांदी तांबा ये चार २ तोले सहित जल धेनुकादान ब्राह्मणों को देने से शान्तिहोवै ॥ प्लीहोदरकर्मविपाक ॥ जो तनख्वाहले पढ़ावै और नौकर चाकरोंको पढ़ावै व कन्याको दोषलगावै वह प्लीहरोगीहोवै इसकी शान्तिके वास्ते लक्ष्मीसूक्तका जाप ब्राह्मणोंके मुखसेकरावै ॥ उदररोगनिदान ॥ उदररोग ८ प्रकारकाहै सो मन्दाग्निवाले पुरुषके निश्चयहोयहै और अजीर्णसे अनन्तरोग उपजैहैं ऐसी २ वस्तुके खानेसे उदररोग होताहै और दोषोंका समूह और मैल और आमका संचय कोष्ठमेंहोय तो पुरुषके उदररोगहोताहै ॥ उदरकीसंप्राप्ति ॥ कुपथ्यके संचयको प्राप्तहुआ जो वात पित्त कफ सो जलके लेचलनेवाली नसोंको रोकैहै और हृदयकी पवन और अग्नि गुदाकी पवन इन्होंको बहुत दूषित करि उदररोगको पैदा करै ॥ उदररोगका सामान्य लक्षण ॥ पेटमें अफाराहो चलने फिरनेकी सामर्थ्य जातीरहै शरीर दुर्बल और मन्दाग्निहो शरीरमें सूजन और हाड़ोंमेंहड़फूटन हो मलमूत्र अच्छीतरह उतरै नहीं शरीरमें दाह और तन्द्रा हो येलक्षण उदररोगके हैं ॥ उदररोगकीसंख्या ॥ वातका १ पित्तका २ कफका ३ सन्निपात का ४ प्लीहाका ५ मलबन्ध होनेका ६ चोट लगनेका ७ जलोदरका ८ ऐसे आठ प्रकारके हैं इन्हों के लक्षण अलग अलग सुनो ॥ वातोदरलक्षण ॥ जिस पुरुष के पैर हाथ नाभिमें सूजनहो कुक्षि पशली कटि पीठि संधि इन्हों में पीड़ा हो और रूखा खांसै शरीर भारीरहै मल उतरैनहीं शरीरकीखाल नख नेत्र काले पड़जावें पेटमें पीड़ा और अफाराहो पेट बोला करै ये लक्षण वातोदर के हैं वातोदर बलकालको बिचारि इसमें स्थिरादि

घृतका पानकरै और स्नेह स्वेदन विरेचन करावै और औषध से ग्लानि उपजे तो कपड़ासे वेष्टन करावै और शाल्वण पींड़ीबन्धन करावै पेयायूषरस अन्न इन्होंका सेवनकरावै॥ तक्रपान॥ तक्रमें पीपली चूर्ण सेंधानोन मिलाय पीनेसे बातोदर नाशहोवै और तक्रमें मिश्री मिरचोंका चूर्ण मिलाय पीनेसे पित्तोदर नाशहोवै और तक्र में अजमान जीरा सेंधानोन ये मिलाय पीने से कफोदर नाशहोवै और तक्रमें त्रिकुटा जवाखार सेंधानोन मिलाय खाने से सन्निपात का उदर रोग नाशहोवै॥ चूर्णकषाय॥ दशमूलके काढ़ामें अरंडीकातेल मिलाय पीने से व गोमूत्रमें त्रिफलाका चूर्णमिलाय पीनेसे गोमूत्र में दशमूलका काढ़ा मिलाय पीनेसे बातोदर सूजन शूल इन्हों को नाशकरै॥ शिलाजतुचूर्ण॥ दशमूलके काढ़ामें दूध शिलाजीतमिलाय पीनेसे व ऊंटके दूध को पीनेसे व बकरी के दूधको पीने से जल्दी बातोदर नाशहोवै॥ कुष्ठादिचूर्ण॥ कूट जैपाल जवाखार शुंठि मिरच पीपल सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन वच जीरा अजमान हींग सज्जीखार चाव चीता शुंठि इन्होंका चूर्णकरि गरमपानी के संग खाने से बातोदर पीड़ानाशै॥ समुद्रादिचूर्ण॥ खारीनोन सेंधानोन कालानोन जवाखार अजमान पीपली चीता शुंठि हींग बायबिड़ंग ये समभाग लेय चूर्णकरि घृतमें मिलाय खानेसे बातोदर गुल्म अजीर्ण बायु विकार संग्रहणी बवासीर पाण्डु भगन्दर इन्हों को नाशै॥ बातोदरघृत॥ दशमूल रास्ना शुंठि देवदारु लालसांठी सफ़ेदसांठी इन्होंके काढ़ामें घृतको सिद्धकरि खानेसे बातोदर नाश होवै॥ पित्तोदरलक्षण॥ जिसमें ज्वर मूर्च्छा दाह तृषा येहोवैं मुखकडुवा घुमेर अतीसार ये सबरोगहों और शरीर की खाल पीली हरी होवै शरीरमें पसीना आवै और दाहहो घूमाको लिये डकारआवै त्वचाका स्पर्श कोमलहो और त्वचा पकीसी दीखै ये लक्षण पित्तोदर के हैं॥ चिकित्सा॥ इस रोगमें बलवान्‌को पहिले दूधमें निसोत का कल्क मिलाय व अरंडीका काढ़ा पिवाय जुलाब दिवावै॥ त्रायन्त्यादिघृत॥ त्रायमाण अमलतास इन्होंके काढ़ामें मधुर औषध मिलाय घृतको सिद्धकरि खानेसे पित्तोदर नाश होवै॥ पित्तादिघृत॥

निसोत त्रिफला इन्होंके काढ़ामें घृतको सिद्धकरि पीनेसे व पृश्निपर्णी खरैटी कटैली लाख शुंठि इन्हों के काढ़ा में घृतको सिद्धकरि खानेसे पित्तोदर नाशहोवे ॥ कफोदरलक्षण ॥ जिसके शरीरमें पीड़ाहो सोवे वहुत सूजनहो शरीर भारीरहै हियादूखे भोजनमें अरुचिहो देरमेंपचे शरीर ठंढारहै और पेट बोलाकरै ये लक्षण कफोदरके हैं ॥ चिकित्सा ॥ कफोदरीको पहिले पीपली के कल्क में सिद्धघृतका पान कराय पीछे थोहरकेदूधसे जुलाबदेवे पीछे शुंठि मिरच पीपल गोमूत्र अरंडीतेल नागरमोथा इन्होंके काढ़ासे आस्थापन वस्ति व अनुवासन वस्ति दिवाय पीछे लोहकीटी सिरसम आमलाकेबीज इन्हों को पीसि पेट ऊपर लेपकरावे पीछे कुलथीके काढ़ामें त्रिकुटाचूर्ण घालि भोजनकरावे पीछे गरमपानी से बारम्बार पेटको सिकावे व कुलथीके काढ़ामें त्रिकुटा दूध मिलाय भोजनकरानाभी हित है पीछे गोमूत्र पान अरिष्टपान लोहचूर्ण दूधमें अरंडीतेल इन्होंके सेवनसे कफोदरको शांतकरै ॥ सान्निपातोदरनिदान ॥ दुष्ट स्त्री जिसको नख रोम मूत्र मैल आर्त्तव इन्हों से युत अन्नपानको खवावै अथवा जिसको वैरी विष आदि खवावै और दुष्टपानी और दूषित विषको सेवनेसे रक्त और बातादि दोष कुपितहो सन्निपातके उदररोगको पैदाकरैं ॥ चिकित्सा ॥ हरड़ै निर्गुण्डी इन्होंका गोमूत्रमें कल्क बनाय खाने से सम्पूर्ण उदररोग तिल्ली प्रमेह बवासीर कृमि गुल्म इन्होंको नाशै ॥ नागरादितैल ॥ शुंठि त्रिफला ये चौंसठ २ तोले लेय घृत २५६ तोले अथवा तेल २५६ तोले इन्हों को दहीके मस्तुके सङ्ग पकाय खानेसे सम्पूर्ण उदररोग कफगोला बायुगोला ये शांतहोवैं ॥ सन्निपातोदरदूष्योदरसंज्ञकलक्षण ॥ वह पूर्वोक्त सन्निपात लक्षण वाला दूष्योदर बात घाम दुर्दिन इन्हों के सम्बन्ध से कोपको प्राप्तहो दाह को पैदाकरे और मूर्च्छा मोह पांडु कार्श्य शोष तृषा इन रोगोंको उपजावे तिसे दूष्योदर कहते हैं ॥ शंखिनीघृत ॥ जड़सहित शङ्ख बेलीके रसमें सिद्धघृत को पीने से व जमालगोटाकी जड़ रुदंती इन्हों के काढ़ामें तेल को सिद्धकरि पीनेसे जुलाबलगि दूष्योदर नाशहोवे ॥ प्लीहोदर का लक्षण कहतेहैंसुनो ॥ गरम बस्तुके खाने और गरम बस्तु

के पीनेसे दुष्टहुआ जो रुधिर और कफ सो प्लीह को बढ़ावैहै पीछे बढ़ाप्लीहा बाईं पसलीमें उदर का रोग याने तिल्लीको उत्पन्न करैहै इससे पीड़ित मनुष्य के मन्दाग्नि जीर्णज्वर कफ पित्तके लक्षणोंसे उपजै और बल जाता रहै पाण्डु वर्ण होजाय ये लक्षण प्लीहोदरके हैं॥ प्लीहोदरचिकित्सा॥ स्नेह स्वेद जुलाब ये तिल्ली में हितहैं और बायें हाथ की कोहनी के अभ्यंतर वर्त्ती जो नाड़ी है तिसके फस्त खुलानेसे तिल्ली रोगजावै और दाहने हाथकी इसी नाड़ी के फस्त खुलानेसे यकृत्रोग नाश होवै व मणिबंध में समुत्पन्न वामांगुष्ठ है तिसकी नाड़ी को गरम शरसे दग्ध करने से प्लीह रोग शांत होवै अंगूठा ऊपर जगहको मणिबंध कहते हैं॥ शरपुंखामूलकल्क॥ शरपुंखीकी जड़के कल्कको तक्रमें मिलाय पीने से बहुत दिनोंका बढ़ा प्लीहरोग नाश होवै॥ तक्र॥ तक्रमें पीपली शहद मिलाय पीने से प्लीहा नाश होवै॥ रोहितादिकल्क॥ रोहिततृण हरड़ै इन्हों के कल्क को गोमूत्र के सङ्ग पीनेसे प्रमेह बवासीर कृमि गुल्म इन्होंको नाश करै॥ पिप्पल्यादिकाढ़ा॥ पीपली मिरच आम्लवेतस इन्हों के काढ़ा में सेंधानोन मिलाय पीने से सोजा प्लीहा इन्हों को नाशै॥ शाल्मलिपुष्पपाक॥ शम्भल के फूलोंको रातिके वक्त गरम पानी में भिगोय प्रभातमें राईचूर्ण मिलाय पीनेसे प्लीहारोगनाशहोवै॥ लवणादितक्र॥ सेंधानोन २० तोला हल्दी २० तोला राई २० तोला इन्हों का चूर्ण करि बरतन में घालिधरै पीछे तक्र ४०० तोले घालि मुखबंध करि ३ दिन धरै पीछे २० तोला रोज़ पीनेसे २१ दिन तक प्लीह रोगको नाशै॥ शुक्तिक्षारयोग॥ समुद्रकी सीपीके खारको दूधके सङ्ग पीने से व पीपली चूर्ण दूधके सङ्ग पीने से प्लीह को नाशै॥ एरण्ड भस्म योग॥ पंचांग सहित अरण्डको बरतनमें घालि मुख बंधकरि गजपुटमें पकाय १ तोला राखको गोमूत्र ४ तोलेमें मिलाय पीनेसे प्लीहरोगको नाशकरै॥ भल्लातकादिमोदक॥ भिलावां हरड़ै जीरा गुड़ इन्होंका लड्डूकरि ७ रात्रि तक खानेसे प्लीहाको नाशै॥ लशुनादि॥ लहसुन पीपलामूल हरड़ै इन्होंका चूर्णकरि गोमूत्रमें मिलाय कुरले करने से तिल्लीरोग नाशहोवै॥ सौभांजनकयोग॥ सहँजनाके रसमें

सेंधानोन चीताकीजड़ पीपली जवाखार इन्होंका चूर्ण मिलाय पीनेसे तिल्लीरोग नाशहोवै ॥ रक्तस्रावदाग ॥ रक्तस्रावकराय आकके दूधमें सेंधानोन मिलाय लेपकरनेसे व अग्निद्वारे दागदेनेसे प्लीहरोग जावे ॥ शंखनाभिचूर्ण ॥ जंबीरी नींबूके रसमें शङ्खकी नाभिकाभस्म १० माशे मिलाय पीनेसे कछुआ सरीखा प्लीहरोग नाशहोवै ॥ कुष्ठादिचूर्ण ॥ कूट वच शुंठि चीता अजमान पाढ़ा अजमोद पीपली ये समभाग लेय चूर्ण करि १० माशे गरम पानी के सङ्ग खाने से प्लीहोदर उदावर्त्त इन्हों को नाशै ॥ लघुहिंग्वादिचूर्ण ॥ भुनीहींग शुंठि मिरच पीपली कूट जवाखार सेंधानोन इन्होंका चूर्ण बिजौराके रसके संग खानेसे प्लीह शूल व बायु को नाशै ॥ सिंध्वादिचूर्ण ॥ सेंधानोन पीपली चीता शिलाजीत जीरा इन्होंका चूर्ण सहँजना रसके संग खाने से उग्र तिल्ली रोग नाशहोवै ॥ नागबटी ॥ तिलोंकी दंडी अरंडजड़ इन्हों का खार भिलावां पीपली ये समभागलेय सबों के बराबर गुड़ मिलाय अग्निबल देखि खानेसे प्लीहको व यकृत्को व गुल्मको नाशै और जठराग्निको बढ़ावै ॥ विडंगादिचूर्ण ॥ बायबिडंग अजमान चीता ये समभाग देवदारु २ भाग शुंठि सांठी निसोत ये चार २ भाग इन्होंका चूर्णकरि गरमदूधके संग पीनेसे व गोमूत्रके संग पीने से भयंकर प्लीह रोग नाश होवे ॥ यवासादिचूर्ण ॥ अजमान चीता जवाखार वच जैपालबीज पीपली इन्होंका चूर्णकरि गरम पानी के संग व मदिराके संग पीने से प्लीहरोग नाशहोवे ॥ वज्रक्षार ॥ कालानोन जवाखारनोन सांभरनोन सेंधानोन सुहागाखार साजीखार ये समभाग लेय चूर्णकरि पीछे माटीके बरतनमें आकके पत्ते बिछाय ऊपर चूर्णघालि ऊपर आकके पत्तोंसे ढकि मुख बंधकरि गारालपेटि गजपुटमें पकायदेवै शीतल होनेपर चूर्ण करि त्रिकुटा बायबिड़ंग राई त्रिफला चाव भुनीहींग ये मिलाय चूर्ण करि अग्नि बलदेखि तक्र के संग खानेसे सब पेटरोग सूजन गुल्म अष्ठीला मंदाग्नि अरुचि प्लीहा यकृत इन्होंको नाशकरै ॥ क्षारादि योग ॥ करंजवाका खार मनियारीनोन पीपली इन्होंका चूर्ण अग्नि बल बिचार प्रभात में खानेसे यकृत् प्लीहको नाशै ॥ क्षारभावनापी-

पली ॥ केशूके खारमें पीपलीको भिगोय खानेसे गुल्म प्लीहा इन्हों को नाशै और अग्निको दीपन करै ॥ अर्कपत्रक्षार ॥ आकके पत्ते सेंधानोन इन्होंको मटकना में घालि गजपुटमें पकाय खार करि दहीके मस्तुके संग पीनेसे प्लीहोदरको नाशै ॥ अग्निमुख लवण ॥ चीता निसोत जैपालबीज त्रिफला कालानोन ये सम भाग लेय सबोंके समान सेंधानोन लेय इन्हों को थूहरके दूध में भिगोय थो-हर का बरतन में घालि गारा लपेट अग्नि में पकाय सुंदरदग्ध होने पर काढ़ि पीछे तक्र के संग पीनेसे यकृत् प्लीह इन्होंको नाशै यह अग्निमुख लवण अग्नि को बढ़ावै है ॥ रोहित घृत ॥ रोहित ४०० तोला बेर २५६ तोला इन्हों को द्रोणभर पानी में पकाय चतुर्थांश काढ़ा बाकी रहने पर घृत ६४ तोला बकरीका दूध २५६ तोला शुंठि मिरच पीपल त्रिफला हींग अजमान धनियां मनिया-रीनोन बायबिड़ंग चीता हपुषावच जीरा सांवरनोन अनार देव-दारु सांठी गडूंभा जवाखार पुष्करमूल ये प्रत्येक तोला २ भर लेय कल्क बनाय मिलाय घृत को सिद्ध करि दृढ़ बरतनमें घालि धरै पीछे ४ तोलेभर रस खावै ॥ यूष ॥ दूध गोमूत्र इन्होंमें एकको येसाकी संग यह यकृत् प्लीह शूल मंदाग्नि कुक्षिशूल पसलीशूल कटिशूल अरुचि बिड्बंधशूल पांडु कामला छर्दि अतीसार तंद्रा ज्वर इन्होंको नाशै विशेषकरि तिल्लीको नाश करै ॥ चित्रकादिघृत ॥ चीताकी जड़ ४०० तोले लेय काढ़ाबनाय घृत ६४ तोले लेय कांजी १२८ तोले दहीका मस्तु २५६ तोले पीपली पीपलामूल चा-व चीता शुंठि तालीसपत्र जवाखार नोन सेंधानोन मनियारीनोन कालानोन अजमान अजमोद जीरा स्याह जीरा मिरच ये प्रत्येक तोला तोला भर लेय इन्होंमें घृतको सिद्धकरि प्रभातमें पीनेसे प्लीह सोजा पेटरोग बवासीर इन्होंको नाशै विशेषकरि अग्निको बढ़ावै॥ रक्तस्राव ॥ पीठका रक्तकढ़ानेसे प्लीहरोग नाशहोवै ॥ शिराबेध॥ प्लीह रोगमें बायें हाथकी शिरा खुलाना मुख्यहै ॥ यकृतोदर ॥ दहिना पासु के नीचे और नाभीके ऊपर मांसका पिंडसरीखा बिकार उपजै तिसे यकृत् रोग कहते हैं ॥ दोषसम्बन्ध ॥ इसमें उदावर्त्त शूल अफारा मोह

तृषा दाह ज्वर भारीपना अरुचि कठिनपना ऐसेहोयहै यकृत् पर सेंधानोन राई ये समभाग लेय पीसि गोमूत्रके संग एक तोला रोज खानेसे प्लीहा यकृत् इन्होंको नाशै ॥ पिप्पलिकल्क ॥ पीपलीके कल्क में घृत चौगुना दूध मिलाय पकाय अग्निबल बिचारि खानेसे यकृत् नाशहोवै ॥ सामान्य चिकित्सा ॥ जोइलाज प्लीहोदरमें कहाहै वह सब यकृत्रोग मेंभी करै और इसमें दहिने तरफकी फस्त खुलावे ॥ बद्ध-गुदोदर ॥ जो मनुष्य विनाशोधा अन्नखाय उसमें बाल कांकररेत धूल मिलेहों उसके दोषोंको लिये मलका संचयहो उसमनुष्यके कष्टसे थोड़ा २ गुदा द्वारा मैलउतरै और उसका हृदय नाभि बढ़जावे तिसे बद्धगुदोदर कहतेहैं ॥ हपुषादि चूर्ण ॥ हपुषा जीरा अजमान सेंधानोन इन्होंके चूर्णको खानेसे बद्धगुदोदर नाश होवै ॥ वस्तिप्रकार ॥ पहिले स्वेद कराय पीछे तेज औषधों से व तेल नोन इन्होंसे निरूहण व अनुवासन वस्तिदेवै ॥ उत्तरवस्ति ॥ इसमें उदावर्त्तमें कही चिकित्सा करै और अनेकप्रकारकी वत्ती बनाय गुदामें चढ़ावै व तीक्ष्ण औ-षधोंसे जुलाबदेय वातनाशक विधि करावे ॥ क्षतोदर ॥ जो मनुष्य पाषाणको आदिले रेतसे मिला अन्न खावै उसमनुष्य के आंतों को काढ़ि अन्न जल सदृशहोकर गुदाके द्वारा निकलै और उसकी गुदा रात्रिदिन वहाकरै और उसका पेड़ू बढ़ै और पेड़ूमें पीड़ाहो तिसे क्षतोदर कहते हैं ॥ वेधक्रिया व पानाक्रिया ॥ क्षतोदर में व बद्धोदरमें पाटन क्रिया व वेधन क्रियाकरै और पेटमें जलहो तो वैद्य रोगीके मित्र जाति दारा राजा इन्होंकी आज्ञालेय शस्त्रक्रियाकरै ॥ वेधस्था-न ॥ वैद्य सबोंकी आज्ञा लेय रोगीको सुवेष्टित करि नाभिके नीचे ४ अंगुल जगह पर बेधकरावै ॥ वेधकरणाका प्रकार ॥ जव सरीखा शस्त्रसे अंगुली मध्यवेधकरि दोमुख की नलीलगाय जलको काढ़ि डालै ॥ जलकाढ़न विषय नियम ॥ एक दिनमें सब दोषों को न काढ़ै क्योंकि खांसी श्वास ज्वर तृषा गात्रभंग कम्प अतिसार ये बिकार उपजै नहीं ऐसा बिचार करि तीसरे दिन व पांचवें दिन थोड़ा २ वारम्वार काढ़ता जावै ॥ पानीकाढ़ने का घावपरलेप ॥ घाव में दोष प्रवेश होने से पहिले स्रावकराय तैल नोन से पीछे रेशमी कपड़ा

से व चाम से बांधि देवै ॥ जलोदर लक्षण ॥ घृत को खाय बस्ति-कर्म कराय जुलाब लेय बमन करके शीतल जलको मनुष्य पीवै उसको जलकी बहनेवाली जो नसें सो दूषितहो और स्नेह करिके लिपी जो वही नसें तिन्हों में जलोदरको उत्पन्न करैहै और उस शीतल जलसे उत्पन्न हुआ जलोदर सो नाभि के और पास गोल और चीकना होय पानीकी भरी मसकसमान बहुत बढ़ै तब मनुष्य उसमें बहुतदुःखीहो और उसका शरीर कांपै और पेट बारंबारबोलै ये लक्षण जलोदर के हैं ॥ तक्र ॥ शुंठि मिरच पीपली खारीनोन ये मिलाय तक्रको पीनेसे जलोदर नाशहोवै॥ जलोदरादिरस ॥ पीपली मिरच तांबाभस्म हल्दी ये समभागलेय और सबोंकेसमान जैपाल लेय इन्होंको थोहरके दूधमें १ दिन खरलकरि पीछे ४ माशे व ६ माशे खानेसे जुलाब लगकर जलोदरशांतहोवै ॥ जलोदरपर ॥ इसमें बारम्बार जुलाबदेय पानीको काढ़ता जावै व पानी निकास पीछे पेट फूलारहै तो स्नेह बस्तिकर्म कराय सुखदेवै और लंघनकराय घृत नोन रहित पेयाका पानकरावै ॥ षण्मासनियम ॥ इससे उपरांत ६ महीनातक दूधका सेवन न करै तीन महीनेतक केवल दूध को पीवै पीछे तीनमहीने अन्न में दूधमिलाय पीवै अन्न कोदों श्यामाक दूध हलका अन्न इन्होंके १ बर्ष सेवनसे जलोदर नाशहोवै ॥ साध्या-साध्यबिचार ॥ सब उदर बिकार आदिसे कष्टसाध्य होय है बलवान् के जलोदर नयाहो तो यत्न साध्य है पुराना तो असाध्य होय है व बद्धगुदोदर १५ दिन उपरांत असाध्यहोयहै और जलोदरसदाही असाध्यहोयहै औरक्षतोदरभी असाध्यहोयहै॥ असाध्यलक्षण ॥पस-लियोंमें शूलचलै नेत्रोंऊपरसोजाहो और लिंग बांकाहोजाय और शरीरकीखाल गलजावै शरीरका रुधिर मांस सब जातारहैमंदाग्नि हो ऐसा जलोदरी असाध्यहोयहै ॥ दूसरालक्षण ॥ पसलियोंमें शूल चलै और पसली टूटीसी होजावै अन्न से रुचिजातीरहै शरीर में सूजन और अतीसारहो उदरखालीहो भरासादीखै ऐसाजलोदरी असाध्यहोयहै ॥ असाध्यलक्षण ॥ जिसकी खालगीलीहो नेत्र छोटे होजायँ औ भृकुटी कुटिल होजावै बल मांस अग्नि रक्त ये क्षीण

होवैं और कोठामें रोगहोवै सोजाहो अतीसार हो पसली में शूल अन्न द्वेष दस्त लगतेरहैं ऐसा जलोदरी असाध्यहोयहै ॥ शास्त्रार्थ॥ रेचन वमन पाचन ये कराने से जलोदर शांतहोवै ॥ रेचन ॥ पेट रोग पेटमें मलके संचयसे उपजैहै तासे जुलाब देनीहितहै सो दूध में अरंडीका तेल मिलाय व गोमूत्रमें मिलाय बारंबार पीनाहितहै॥ ज्योतिष्मती तैल ॥ मालकांगणी के तेल को दूध में मिलाय रोज़ पीनेसे जलोदर नाशहोवै ॥ गोमूत्रयोग ॥ गोमूत्रको सेवने व पीने व बरतने से जलोदर शांतहोवै ॥ उदरपर ॥ १००० हरीतकियों को गोमूत्रके संग खाने से व १००० पीपलियों को थोहरके दूध में भिगोय खानेसे अथवा वर्द्धमान पीपलीको खानेसे व दूधकेसंगशिलाजीतखानेसे व गूगलको दूध व अदरखरसके संगखानेसे व चीता देवदारु इन्होंका कल्क बनाय दूधकेसंग खानेसे जलोदरादि रोग नाशहोवै ॥ वर्द्धमान पीपली ॥ तीन पांच सात दश इतनी रोज़वृद्धि से पीपली को खाने से श्वास खांसी ज्वर पेटरोग बवासीर बात क्षय क्षयी इन्होंको नाशै व आठप्रकारके गोमूत्रादि को पीने से व वफारालेने से व वर्द्धमान पीपलको दूधके सङ्गखाने से उदर रोग नाशहोवै व ऊंटनीके दूध को पीवै जीर्ण होतसंते और अन्नादिक को त्यागे १ मासतक व १ ऋतुतक व १५ दिनतक दूधको पीवै पानीको भी वर्ज्जै यह पेटके रोगोंको नाशकरै व समुद्र की सीपी का खार जवाखार सेंधानोन इन्हों को गौके दहीके सङ्ग खाने से सब पेटरोग नाश होवै व गडूंभा शंखिनी जैपाल जड़ निसोत त्रिफला हल्दी वायविड़ंग कापिला इन्होंके चूर्णको गोमूत्रके सङ्ग पीने से पेटके रोग नाश होवैं ॥ जलोदरपरयोग ॥ चाव जैपाल चीता बायविड़ङ्ग शुंठि मिरच पीपल इन्होंके कल्कको दूधकेसङ्ग व अदरख के रस के सङ्ग खानेसे व देवदारु चीता इन्हों का काढ़ा व चाव शुंठि इन्होंका काढ़ा पीनेसे पेटके रोगोंको नाशकरै ॥ देवदार्व्यादिलेप॥ देवदारु केशूकेफूल आककीजड़ पीपली सहोंजना असगन्ध इन्हों को गोमूत्रमें पीसि पेटऊपर हलवे२ लेपकरनेसे पेटरोगनाशहोवै ॥ कषाय ॥ अदरख के रसको पानीके सङ्ग पीने से व देवदारु चीता

इन्होंका काढ़ा व चाव नागरमोथा इन्होंका काढ़ा पीनेसे पेटके रोगों को नाशकरै ॥ चव्यादिकाढ़ा ॥ चाव चीता शुंठि देवदारु इन्होंके काढ़ा में निसोतका चूर्ण मिलाय पीने से उदरके रोग नाशहोवैं व थोहरके दूधमें पीपली का चूर्ण मिलाय खरलकरि चाटै ऊपर मीठे पदार्थको खावै यह पेटके रोगोंको नाशकरै सात रात्रिमें ॥ देवद्रुमादि ॥ देवदारु सहोंजना मसूर असगन्ध इन्हों को गोमूत्र में पीसि खाने से पेटके रोग कृमि सोजा दूष्योदर इन्हों को नाशकरै ॥ नारायणचूर्ण ॥ चीता त्रिफला त्रिकुटा बच अजमोद पीपलामूल हपुषा सौंफ रानतुलसी अजमाण कचूर धनियां कालाजीरा चोख पुष्करमूल साजीखार जवाखार सेंधानोन कालानोन मनियारीनोन साँभरनोन खारीनोन कूट ये समभाग लेय गडूंभा २ भाग निसोत ३ भाग जैपालजड़ ३ भाग सातला ४ भाग इन्हों का चूर्ण करै पीछे पाचन स्नेहन देय चीकनाकोठा वाला रोगी को चूर्णदेय जुलाब लगकरि सबरोग नाशहोवै और विशेषकरि हृद्रोग पांडुरोग खांसी श्वास भगंदर मन्दाग्नि ज्वर कुष्ठ संग्रहणी गलग्रह इन्हों को रोगोक्त अनुपान के संग नाशकरै और मदिरा के संग खाने से अफाराजावै और बड़ बेरी के काढ़ा के संग खानेसे गुल्म जावै और दहीके मस्तु के संग खानेसे बिड्बद्ध नाश होवै और गरम पानी के संग खाने से अजीर्ण नाश होवै और अमलियों के काढ़ा के संग खानेसे परिकर्त्तिका रोग जावै और ऊंटनी के दूधके संग खानेसे पेटका रोग जावै तथा गौके तक्रके संग खानेसे पेट के रोग जावैं और प्रसन्ना नाम मदिरा के संग खानेसे बातरोग नाश होवै और अनारके रसके संगलेनेसे बवासीर नाशहोवै और घृतके संग खानेसे दोनों प्रकार का विष नाशहोवै ॥ हपुषादिचूर्ण ॥ झाड़की जड़ त्रिफला त्रायमाण पीपली चोख निसोत थोहर कुटकी बच नीली सेंधानोन कालानोन इन्होंका चूर्णकरि गरम पानीके संग व गोमूत्र के संग व अनार के रसके संग व त्रिफला के काढ़ा के संग व मांसके रसके संग पीनेसे अजीर्ण तिल्ली गुल्म सूजन बवासीर मन्दाग्नि हलीमक कामला पांडु कुष्ठ अफारा पेटरोग इन्होंको नाश

करै ॥ उदररोगपर ॥ जवाखार सुहागाखार त्रिकुटा नीली पांचौनोन इन्होंका चूर्णकरि घृतके संग खाने से सब गुल्म पेटरोग इन्हों को नाश करै ॥ पटोलादिचूर्ण ॥ परवल हल्दी बायबिड़ंग त्रिफला ये एक २ तोला दालचीनी २ तोला सहोंजना ३ तोला नीली ४ तोला निसोत ५ तोला इन्होंका चूर्ण करि ४ तोले गोमूत्र के संग खावै जुलाब लगै पीछे हलका भोजन जांगलदेश के मांसका रस मांड पेया इन्हों का पानकरि ऊपर त्रिकुटा चूर्ण गरम दूध में मिलाय पीवै छः दिनतक ऐसे बारम्बार चूर्णकोखानेसे सब पेटरोग जलोदर कामला पांडु सोजा इन्होंको नाशकरै ॥ उदररोगपरघृत ॥ आकदूध ८ तोला थोहर का दूध २४ तोला हरड़ै सफेद निसोत शंपाक अमलतास गोकर्णजड़ नीली निसोत जैपालबीज शंखबेल चीता की जड़ ये चार २ तोले लेय काढ़ा व कल्क बनाय घृत ६४ तोला मिलाय घृतको सिद्धकरै पीछे इसघृत के जितने बूंद पीवै तितनेहीं दस्त लगैं यह कुष्ठ गुल्म उदावर्त्त सोजा भगन्दर आठप्रकार का ज्वर आठप्रकार के उदररोग इन्हों को नाशकरै जैसे वृक्षको इन्द्र का बज्र यह बिन्दुघृतहै इसकी नाभिऊपर मालिश करनेसे जुलाब लगै ॥ दशमूलघृत ॥ दशमूल निसोत कुंभी त्रायमाण चीता सहोंजना कुरंटबीज त्रिफला गिलोय अरंड की जड़ मोगरी फूल पाढ़ा भारंगी पीपली काला भँगरा रोहितत्रण धमासा ये सब चार २ तोलेलेय एकद्रोण पानी में पकाय चतुर्थांशकाढ़ा रहनेपर ६४ तोला घृत मिलाय पकाय पीनेसे सब पेटके रोग नाशहोवैं ॥ नाराचघृत ॥ त्रिफला चीताकी जड़ जैपाल कटैली थोहरदूध आकदूध बायबिड़ंग इन्होंके काढ़ा में घृत १६ तोले पकाय कोमल अग्निसे सिद्ध करि ६माशे रोजखानेसे सूजन गुल्म उदररोग अफारा तिल्ली जलोदर इन्होंकोनाशकरै ॥ विन्दुघृत ॥ चीता शंखपुष्पी कपिला सफेद निसोत हरडै काला निसोत भिदारा अमलतास जमालगोटा की जड़ जमालगोटा कड़ुई तुरई देवदाली नीली गोकर्णी त्रायमाण पीपलामूल बायबिड़ंग कुटकी चोख ये एक २ तोला लेय घृत ६४ तोला थोहरका दूध २४ तोला आकका दूध ८ तोला ये मिलाय

घृतको सिद्धकरि खाने से गुल्म कुष्ठ शूल उदावर्त्त सोजा अफारा भगन्दर आठ प्रकार के उदररोग इन्हों को नाशै इस को गौ के दूधमें व कुलथी के काढ़ामें व ऊंटकेदूधमें व गरम पानीमें मिलाय जितने बूंदोंको पीवै तितनेहीं दस्तलगि सुखउपजै और इसको नाभिऊपर लेपकरनेसे जुलाबलगै॥ त्रिवृत्यादिघृत॥ घृत ६४ तोला दूध ५१२ तोला थोहर का दूध ४ तोला निसोत ४ तोला इन्हों को मिलाय घृतको सिद्धकरि वर्त्तने से पेटकेरोग व गुल्मनाशहोवै हिंग्वादिघृत॥ हींग लहसन अदरख सहोंजनाकी छाल हरड़ै पीपलामूल जैपाल की जड़ दशमूल इन्हों के काढ़ा में सुहागाखार जवाखार पांचों ऊषण इन्हों का चतुर्थांश कल्क मिलाय घृत को सिद्धकरि वर्त्तने से पेट के रोग शांत होवैं॥ उदरपर॥ पाराभस्म ४ तोला बंगभस्म४तोला तांबाभस्म ४तोला गन्धक ४ तोला इन्होंको आकके दूधमें खरलकरि गोलाबनाय बासनमें घालि मुखबंदकरि भूधरयंत्र में पकाय खाने से प्लीह गुल्म इन्हों को नाशै यह २ रत्ती रसलेय ऊपर सफेदसांठी ४माशे घृतमेंमिलायखावै॥त्रैलोक्यडंबर॥ पारा गंधक तांबाभस्म लोहभस्म अभ्रकभस्म मीठातेलिया सुहागाखार सज्जीखार शिंगरफ कौड़ीकी भस्म ये समभागलेय आक का दूध थोहरदूध निर्गुंडी भंगरारस अदरखरस इन्हों में भावनादे खानेसे गुल्म जलोदर सोजा पांडु क्षयी शूल हैजा इन्हों को अनुपानोंके संग नाशकरै इसको २ रत्ती प्रमाण २१ दिन देनेसे रोगका नाशहोवै यह अत्रिगोत्र में उत्पन्न मार्तण्डमुनि ने कहाहै॥ उदरपर रेचन॥ भूनासुहागा मिरच पारा ये समभागले गंधक पीपली शुंठि ये दो दो भागलेय सबोंके समान जमालगोटा के बीज मिलाय खरलकरि २ रत्ती खानेसे जुलाबलागि पेटकेरोग नाशहोवैं॥ इच्छाभेदीरस॥ शुंठि मिरच पारा गंधक सुहागा ये समभाग लेय और जमालगोटा ३ भाग लेय इन्होंको खरलकरि २ रत्ती भरमें मिश्री मिलाय खावै और जितने चुल्लूपानी ऊपरपीवै तितनेहीं दस्तलगैं इसपै पथ्य तक्र चावलका है॥ शोफोदर॥ सांठी नींब परवल शुंठि चिरायता गिलोय दारुहल्दी हरड़ै इन्होंका काढ़ा पीने से सर्वांग

सोजा उदररोग खांसी शूल श्वास पांडु इन्होंकोनाशकरै ॥ हरीतक्यादिकाढ़ा ॥ हरड़ै शुंठि देवदारु सांठी गिलोय इन्होंके काढ़ामें गूगुल गोमूत्र मिलाय पीने से पेटका सोजा नाश होवै ॥ पुनर्नवादियोग ॥ सांठी दारुहल्दी हरड़े गिलोय इन्होंके काढ़ामें गोमूत्र और गूगुल मिलाय खानेसे खालकादोष सूजन उदररोग पांडु स्थूलता लालास्राव ऊर्ध्वकफरोग इन्होंको नाशकरै॥ पुनर्नवादिकाढ़ा॥ सांठी गिलोय देवदारु छोटी हरड़ै शुंठि इन्हों के काढ़ा में गूगुल और गोमूत्र मिलाय पीनेसे पेटका सोजानाश होवै ॥ शोफोदरचिकित्सा ॥ सांठी देवदारुशुंठि गोमूत्र इन्होंका काढ़ा सोजाकोनाशै व पीपली शुंठि इन्होंके चूर्णमें गुड़मिलाय खानेसे सोजा आमशूल अजीर्ण इन्होंको नाशै व गौके दूधमें त्रिफला मिलाय पीनेसे पेटका सोजानाशहोवै व भैंस के मूत्रको व दूधको गोमूत्रमें मिलाय पीने से पेटका सोजा नाशहोवै व गोमूत्र में भैंसकामूत्र मिलाय पीने से व गौके दूध में त्रिफला के चूर्ण को मिलाय खाने से व गोमूत्र को पीने से पेटका सोजादूरहोवै इसपै दूध चावलकापथ्य है॥ माहिषमूत्रपान॥ भैंस के मूत्रको गौके दूध में मिलाय पीनेसे व ऊंटनीके दूधमें पानीमिलाय पीनेसे सोजा पेटरोग इन्हों को नाशकरै इसपै खालिस जलको न पीवै ॥ बिल्वादि काढ़ा॥ बेलमूल खरैटीमूल अदरख शुंठि इन्हों के काढ़ा व कल्कमें घृतको सिद्धकरि बकरी के दूध में मिलाय खानेसे संग्रहणी बिकार सोजा मंदाग्नि अरुचि इन्होंको नाशकरै ॥ ऊपर में पथ्य ॥ विरेचन लंघन एकवर्षकी पुरानी कुलथी मूंग लालधान जंगलीमृग तथा पक्षी मिश्री मदिरा शहद ईषके रसकामद्य महुवा के फलकारसमठा लहसन अरण्डीतेल अदरख शालिंचशाक परवर करेला सांठी सहिंजनाकी फली हरड़ै पान इलायची जवाखार लोहकीटि बकरी गौ ऊंटनी और भैंस इन्होंका दूध तथा मूतहलकी तथा दीपनवस्तु कपड़े से बांधना आग से दागना बिषका साधन विशेषकर प्लीह से उत्पन्न उदररोग में बायें हाथ की नस में फस्त खोलना और क्षतसेउत्पन्नमें और बद्धोदरमें नाभिकेनीचे बिधिपूर्वक शस्त्रलगावना बात से उत्पन्न उदररोग में पहिले घृतपिलाना पीछे

तेललगाना स्नेहवस्ति देना उदररोग में दोष के अनुसार यहपथ्य गणहै ॥ अपथ्य ॥ संस्नेहन धूमपान जलकापीना फस्तखुलाना बमन सवारी दिन में सोना कसरत पिसे अन्नकी वस्तु जल के तथा अनूपदेश का मांस पत्तोंका शाक तिल गरम विदाही तथा निमकीन बस्तु महेन्द्रपर्बतसे निकलीहुई नदियोंका जल फलीसे उत्पन्नअन्न बिरुद्धअन्न बुराजल भारी तथा बिष्टंभीवस्तु विष्टंभसेउत्पन्नमें विशेष करि स्वेदन जो वैद्य अपने यश को रक्खाचाहै तो इन्होंका त्याग करावै॥पथ्य॥ कुक्षिमें सबदोषहोते मंदाग्निहोयहै इसवास्ते इनरोगों में दीपन और हलके पदार्थोंकापथ्यहै ॥ अपथ्य ॥ जलका पीना दिन का सोना भारी अभिष्पंदी भोजन ये पदार्थ अपथ्य हैं ॥ पथ्य ॥सांठी चावल गेहूं यव देवभात इन्होंका भोजन जुलाब आस्थापनवस्ति ये पेटके रोगों में पथ्यहैं ॥ पथ्य ॥ कपड़ाका बांधना दागदेना विषसेवन और विशेषकरि प्लीहके रोगसे उत्पन्न विकार में बायेंहाथकी धमनी नाड़ीका बेधहितहै बद्धोदरमें क्षतोदरमें नाभिके नीचे शस्त्रकी क्रिया उचितहै बातोदर में पाहिले घृतपान मालिश अनुवासन वस्ति ये दोषोंके अनुसार पेटके रोगमें पथ्य हैं ॥

इतिश्रीवेरीनिवासकरविदत्तवैद्यविरचितायांनिघण्ट रत्नाकरभाषायांउदररोगप्रकरणम् ॥

निघण्टरत्नाकर भाषा प्रथम खण्ड समाप्तः ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र ॥

प्रकटहो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सारभूत परमरहस्य गीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्य विनयौदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुन को परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोहनाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्तभगवद्गीता बज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको अच्छे २ शास्त्रवेत्ता अपनी बुद्धिसे पार नहीं पासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठन करने की सामर्थ्यहै वहकब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्ते हैं—और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसीपुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तबतक आनन्द क्योंकर मिलै इसप्रकार सम्पूर्ण भारत निवासी श्रीमद्भगवत्पदाब्जरसिकजनोंके चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्म्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्व्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमान् मुंशीनवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने बहुतसाधन व्ययकर फ़र्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्तजीसे इस मनोरंजन वेद वेदान्तशास्त्रोपरि पुस्तकको श्रीशंकराचार्य्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषामें तिलक रचाय नवलभाष्य आख्य से प्रभात कालिक कमल सरिस प्रफुल्लित करादियाहै कि जिसको भाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्तेहैं ॥

सारस्वत सटीक का विज्ञापनपत्र ॥

पण्डित लोगोंको उचित है कि प्रथम जिससमय छोटे २ विद्यार्थी उनके पास पढ़नेको जायें उनको अत्यन्त आदर से अपने पुत्रके समान समझकर बहुत लाड़ प्यारसे उनको अकारादि सब स्वरों और ककारादि सब व्यंजनों को पहिचनवाकर सिखायें पढ़ायें और जिससमय छोटे बालकों के खेलने का समययोग्य समझें थोड़ी देरके लिये छुट्टीभी देदियाकरें जिससे बालक आनन्द से पढ़ें इसप्रकारसे बहुत शीघ्र ऐसी सामर्थ्य करादेवें कि जिसमें बालकों को भाषा और संस्कृतके भी पढ़ने की शक्ति अच्छीतरहसे होजावे तिस पीछे अनुभूतिस्वरूपाचार्य्यकृत सारस्वत पुस्तकको इसभांति से कि जिस [illegible] फ़र्रुखाबाद निवासि स्वर्गवासि पण्डितवर उमादत्तशास्त्री और उन्नाम [illegible]न्तर्गत मुरादाबाद निवासि पण्डित शक्तिधरजीने इसका अर्थ किया है [illegible] इसमें उक्त पण्डितजनों ने प्रथम मूल, पदच्छेद, अन्वय करके

भाषा में इसभांति से अर्थ कियाहै कि जिसमें बालकों को सहजही में ज्ञान होकर पूर्ण बोध होजावे इसभांति संज्ञाप्रक्रिया, स्वरसंधि, प्रकृतिभाव, व्यंजनसंधि, विसर्गसन्धि, स्वरान्तपुँल्लिंग, स्वरान्तस्त्रीलिंग, स्वरान्तनपुंसकलिंग, हसान्तपुँल्लिंग, हसान्तस्त्रीलिंग, हसान्तनपुंसकलिंग, युष्मद् अस्मद् शब्द, अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक, समास और तद्धित को पढ़ाकर तिस पीछे सिद्धान्तचन्द्रिका और रघुवंश और कुमारसंभवादि काव्यों को पढ़ावें इस भांति के पढ़ाने से बहुतशीघ्र विद्वान् होसक्के हैं यही शोचकर श्रीभार्गववंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने बहुतसा द्रव्य व्ययकर उक्त पण्डितोंसे टीका रचाया है आशाहै कि जो विद्यार्थी इस पुस्तक को क्रमसे पढ़ेंगे वे शीघ्रही पूर्ण बोधहोकर विद्वान् होजावेंगे अन्यथा पढ़ानेसे बहुतसमय लगकर बोध नहीं होता है—क्योंकि बहुधा यही पण्डितों की रीति है कि वे स्वर व्यंजन नाममात्र को बालकों को पढ़ाकर व्याकरणका प्रारम्भ करादेते थे और बालकों को तोतेकी तरहसे कण्ठही करातेथे जब उन बालकों को अच्छीभांति अक्षर के पहिचानका ज्ञान नहीं है तो वे कैसे पूर्ण विद्वान् रट २ के पढ़नेसे होसक्के थे—आशाहै कि जो लोग इस पुस्तक के क्रमसे व्याकरण का अध्ययन करेंगे वे थोड़ेही समय में स्वल्प परिश्रम से विद्वान् होजावेंगे—जब व्याकरणमें विद्वान् होजावेंगे तो उनको ज्योतिष वैद्यक अठारहोपुराण काव्यादिमें कुछ भी परिश्रम न करनापड़ेगा थोड़ेही परिश्रम करनेमें महान् विद्वान् होजावेंगे—

केनिंगकालेजके संस्कृताध्यापक श्रीपण्डित गंगाधरशास्त्रीने भी इस पुस्तक को अवलोकनकर सार्टीफिकटके तौरपर अपनी सम्मति प्रकटकी है कि निश्चय यह पुस्तक उत्तम और बालकोंको हितैषी है ॥

मिताक्षरा भाषाटीका सहित ॥

यह पुस्तक सम्पूर्ण धर्मशास्त्रों का शिरोमणि है जिसमें आचारकाण्ड व्यवहारकाण्ड और प्रायश्चित्तकाण्ड नामक तीनकाण्डहैं जिनसे गृहस्थादि चारोंआश्रम और ब्राह्मणादि चारोंवर्णों के सम्पूर्ण कर्म धर्मादि और राजसम्बन्धी कार्यों में दायभागादि व्यवहारों में वादी प्रतिवादियों के धर्मशास्त्र सम्बन्धी मामिले और मुक़द्दमों की व्यवस्था वर्णितहै ॥